नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं

(अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म सा. का जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एव कृतित्व)

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं

(अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा का जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

सम्पादक

डॉ धर्मचन्द जैन

एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सम्पादक-मण्डल

डॉ मंजुला बम्ब

ज्ञानेन्द्र बाफना

प्रसन्नचन्द बाफना

डॉ सुषमा सिंघवी

प्रकाशक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

एवं

ऑल इण्डिया जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पारमार्थिक ट्रस्ट

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं

(अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म सा का जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एव कृतित्व)

प्रकाशक

1 अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ
घोडो का चौक, जोधपुर–342001 फोन एव फैक्स– 2636763, 2641445

2 ऑल इण्डिया जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ पारमार्थिक ट्रस्ट
10–साजन नगर (चितावद), इन्दौर–452001
फोन न 2400121–122–123

अन्य प्राप्ति–स्थान

1 सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–302003, फोन न 2565997

2 गजेन्द्र निधि ट्रस्ट– 2 ए, किताब महल, प्रथम माला 192 डॉ डी एन रोड, मुम्बई–400001
फोन न 22071581–82

3 ऑल इण्डिया श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ ट्रस्ट कालाथी पिल्लई स्ट्रीट, साहुकार पेट,
चेन्नई–600079, फोन न 25293001 25297822

4 श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, गणपति नगर जलगाव (महा) 425001
फोन न 2232315

5 श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ, 3/356, विराट नगर, जेल के पीछे बजरिया, सवाईमाधोपुर
फोन न 222147

6 कर्नाटक जैन स्वाध्याय सघ, 61–नगरथ पेठं, बैंगलोर
फोन न 22212381

7 मोतीलाल बनारसीदास बगलो रोड जवाहर नगर, दिल्ली–110007

सहयोग राशि दो सौ पचास रुपये

प्रतियोगिता हेतु प्रथम एवं द्वितीय खण्ड का
संयुक्त मूल्य रुपये १००/

प्रथम संस्करण जोधपुर, 2003

कम्प्यूटर टकण जे के कम्प्यूटर, जालोरी गेट, जोधपुर, मोबा 3117670

मुद्रण–व्यवस्था श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए–45, नारायणा, फेज–1, नई दिल्ली–110028

तृतीय खण्ड

व्यक्तित्व खण्ड



प्रस्तुत खण्ड दो स्तबकों में विभक्त है– 1. संस्मरणों में झलकता व्यक्तित्व 2. काव्यांजलि में निलीन व्यक्तित्व। प्रथम स्तबक गद्य में है तथा द्वितीय स्तबक पद्य में है।

संस्मरण लेखक की चेतना से सीधे जुड़े रहते हैं, जिनका अवगाहन कर पाठक गुणसमुद्र आचार्यप्रवर की विशेषताओं का स्वयं आकलन कर सकता है। उच्चकोटि के चारित्रनिष्ठ साधक संत, गहनविचारक एवं युगमनीषी महापुरुष के निस्पृहता, अप्रमत्तता, उदारता, करुणाभाव, गुणियों के प्रति प्रमोदभाव, वचन-सिद्धि, भावि-द्रष्टृत्व, चारित्र-पालन के प्रति सजगता, आत्मीयता, असीम आत्मशक्ति, विद्वत्ता, पात्रता की परख, दूरदर्शिता आदि अनेक गुणों का इन संस्मरणों से बोध होता है।

द्वितीय स्तबक में काव्यमय गुणगान है, जिसमें आचार्यप्रवर का साधनाशील एवं युगप्रभावक व्यक्तित्व उजागर हुआ है।

इन स्तबकों का अनुशीलन करने से यह स्वतः बोध होता है कि आचार्यप्रवर एक महान् असाधारण संत की विशेषताओं से ओत-प्रोत थे।

तृतीय-खण्ड

प्रथम स्तबक

संस्मरणों में झलकता व्यक्तित्व

(आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. पर सन्त-प्रवरों एवं श्रावकगण के प्रेरक संस्मरण)

अध्यात्मयोगी युगशास्ता गुरुदेव

• आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म सा

गगन-मण्डल में उदीयमान सूर्य का परिचय नहीं दिया जाता। उसका प्रकाश और उसकी ऊष्मा ही उसके परिचायक हैं। फूल का परिचय उसका विकसित रूप और सुगंध है, जिस पर भ्रमर-दल स्वत दौड़े हुए चले आते हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त का भी क्या परिचय दूँ वे श्रमण सस्कृति के अमरगायक, जैन सस्कृति के उन्नायक, युग को सामायिक-स्वाध्याय का अमर संदेश देने वाले महान प्रतापी आचार्य, इतिहास के अन्वेषण के साथ इतिहास बनाने वाले आदर्श महापुरुष एवं यशस्वी सन्त थे।

आपके जीवन के कण-कण मे प्रसिद्धि नही, सिद्धि का भाव समाया रहा। आपकी साधना का, प्रवचन-प्रभावना एव वीतराग-वाणी के उपदेशो का लक्ष्य प्रभाव नही स्वभाव में लाने का रहा। आपके जीवन मे विषमता नही समता का साम्राज्य रहा। आपकी अमर आत्म-साधना , सादगी, सरलता व सेवा का सम्मिलित सयोग रही। सम्प्रदाय मे रहते भी असाम्प्रदायिक रहकर आप सबको धर्म-मार्ग मे आगे बढ़ते रहने की सद्प्रेरणा करते रहे। क्रियानिष्ठ होकर भी आपमे अहकार की नही, आत्म-साक्षात्कार की भावना रही।

वे महामानव धर्म और दर्शन के ज्ञायक, सभ्यता और सस्कृति के रक्षक, न्याय और नीति के पालक , आगम-आज्ञा के आराधक, सत्य और शिव के सजग साधक, धर्म की आन-बान और शान के चतुर चितेरे, देशकाल की परिस्थितियो के प्रबुद्ध विचारक रहे। मन के श्याम पक्ष को आराधना से उज्ज्वल बनाने वाले, सामायिक-साधना रूप मन्त्र के दाता एव अज्ञानान्धकार को हटाने वाले स्वाध्याय दीप के प्रद्योतक रहे। आपके जीवन में स्वार्थ का कोई सकेत नही, परोक्ष-प्रत्यक्ष मे कोई अन्तर नही, प्रदर्शन-आडम्बर नही , लोभ-लालच नही, मात्र आत्मा को परमात्मा बनाने की टीस, साधक से सिद्ध बनाने की अन्तकामना, समाज को ऊपर उठाने की एव सुधार का दिशा बोध देने की ही अन्तर गूँज रही।

इस युग-पुरुष ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपरूप मोक्ष-मार्ग के बल पर चतुर्विध सघ को आगे बढ़ने का सदेश दिया और निर्भीकता का , सच्चाई का , वीतरागता का, सिद्धान्त पर दृढ़ रहने का, मर्यादाओं एव नियम-पालन का नूतन पाठ पढ़ाया। वे स्वय सिद्धान्त पर अटल रहे। लाउडस्पीकर के निषेध, सामाचारी के पालन और सवत्सरी आदि के सिद्धान्तो पर दृढ़ रहे। जीवन मे कभी हिम्मत नही हारी। छोटे से सघ में भी मर्यादा तोड़ने वालों को निकालते कभी हिचकिचाये नही।

युगशास्ता गुरुदेव के उच्च साधक व्यक्तित्व व कृतित्व के समक्ष बिना किसी भेद के जैन जैनेतर सभी श्रद्धावनत रहे। आपने सघ में समता के मेरुदण्ड को पुष्ट किया व स्वाध्याय के घोष का शखनाद किया। आपकी इन प्रेरणाओ को आत्मोत्थान व सघोन्नति का अनिवार्य साधन मानते हुए सभी ने स्वीकारा है और उसका मूर्तरूप अन्य परपराओं द्वारा भी स्वाध्याय सघों की स्थापना के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो रहा है। आपके रोम-रोम में प्रेम, एकता, अनुराग सचरित होता रहा तथा अतस् में करुणा का अविरल स्रोत निरतर प्रवाहमान रहा। भगवत की वाणी में ओज, हृदय में पवित्रता, उदारता एव साधना में उत्कर्षता रही। आपका बाह्य व्यक्तित्व जितना नयनाभिराम था, उससे भी कई गुणा अधिक भीतर का जीवन मनोभिराम रहा।

आपके जीवन मे सागर सी गभीरता, चन्द्र सी शीतलता, सूर्य सी तेजस्विता, पर्वत सी अडोलता का सामजस्य एक साथ देखने को मिला। आपकी वाणी, विचार एव व्यवहार मे सरलता का गुण एक अद्भुत विशेषता रही। जीवन मे कही छिपाव नही, दुराव नही। सरलता, मधुरता एव निष्कपटता का अद्भुत सगम था आपका जीवन।

गुरुदेव ने साधक जीवन मे अहकार को काला नाग मानते हुए उत्कृष्ट साधना के स्वरूप को स्वीकारा, क्योंकि जिसको काले नाग ने डस लिया हो वह साधना की सुधा पी नही सकता। गुरुदेव दया के देवता रहे। दया साधना का मक्खन है, मन का माधुर्य है। दया की रस धारा हृदय को उर्वर बनाती है। जप-साधना आधि-व्याधि-उपाधि को समाप्त कर समाधि प्रदान करने वाली है, अत आपने भोजन की अपेक्षा भजन को अधिक महत्त्व दिया। मौन-साधना आपकी साधना का प्रमुख एव अभिन्न अग रहा।

शिक्षा की अनिवार्यता को महत्त्व प्रदान करते हुए आपने फरमाया कि जीवन मे शिक्षा के अभाव में साधना अपूर्ण मानी गई है। शिक्षा का वही महत्त्व है जो शरीर मे प्राण , मन व आत्मा का है। जीवन मे चमक-दमक , गति-प्रगति, व्यवहार-विचार सब शिक्षा से ही सुन्दर होते है। ससार की सब उपलब्धियो मे शिक्षा सबसे बढ़कर है। दीक्षा के साथ भी शिक्षा अनिवार्य है। यही कारण है कि आप शिष्य-शिष्याओ एव श्रावक-श्राविकाओ को स्वाध्याय-साधना रूप शिक्षा की अनमोल प्रेरणा देते रहे।

आचार्य भगवन्त का दृढ़ मतव्य रहा कि जीवन निदा से नही निर्माण से निखरता है। निदक भी कभी कुछ दे जाता है। जैसा कि कवि का कथन है - "निंदक नियरे राखिये, ऑगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥" अत आपने निदक को भी अपना उपकारी बताया। स्तुति वालो से कहा —'तुम्हारा मेरे पर स्नेह है, अत तुम राग से कहते हो।' तो विरोध वालो से कहा -- 'विरोध मेरे लिए विनोद है।' अनुकूल - प्रतिकूल हर स्थिति मे गुलाब की तरह मुस्कराते रहना, यही समता-साधना की सही कला है, और आप उसी समता-साधना के साधक शिरोमणि रहे ।

स २०४१ के जोधपुर चातुर्मास मे क्षमापना के उपलक्ष्य मे युवाचार्य महाप्रज्ञ रेनबो हाउस पधारे तब उन्होने कहा था -"लोग कहते है आप अल्पभाषी है, कम बोलते है। पर कहाँ हैं आप अल्प भाषी ? आप बोलते है, बहुत बोलते है। आपका जीवन बोलता है, सयम बोलता है।"

अस्वस्थता की स्थिति देखकर सन्तो ने सहारा लेकर विराजने का निवेदन किया तो आचार्य भगवत बोले- "धर्म का सहारा ले रखा है।" यही बात पाली मै विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरी जी के कहने पर भगवत ने कही थी - "आपने मेरे गुरुदेव को नही देखा, नही तो ऐसा नही कहती। "

आप सघ मे रहे तब भी एव बाहर रहे तब भी सभी महापुरुषो का आपके प्रति समान आदर भाव रहा। आचार्य श्री आत्माराम जी म. आपके लिये 'पुरिसवरगधहत्थीण' पद का प्रयोग करते थे। आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म समय-समय पर समस्या का समाधान मगाते थे। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म सा स्वय को साहित्य के क्षेत्र मे लगाने मे आपका उपकार मानते थे। प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म आपको विचारक एव सहायक मानते थे और प्रत्येक स्थिति में साथ रहे। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म ने आपको सिद्धातवादी एव परम्परावादी माना।

आप गुणप्रशसक व गुणग्राहक रहे तथा परनिंदा से सदैव दूर रहे और जीवन पर्यन्त इसी की प्रेरणा की। आप प्रचार के पक्षधर थे, किन्तु आचार को गौण करके प्रचार के पक्ष मे नही रहे। "जिनके मन मे गुरु बसते है, वे शिष्य धन्य हैं, पर जो गुरु के मन मे रहते है, जिनकी प्रशसा शोभा गुरु करते हैं, वे उनसे भी धन्य धन्य है।" आप श्री पर

यह कथन आपके माहात्म्य को स्पष्ट करता है।

भगवत शिथिलाचार रूप विकार की विशुद्धि कर सारणा, वारणा, धारणा के पोषक रहे। आपने संघ के सगठन, सचालन, सरक्षण, सवर्धन, अनुशासन एव सर्वतोमुखी विकास व अभ्युत्थान हेतु जीवन समर्पित कर दिया।

सतगुरु की महिमा अनत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनत उघारिया, अनत दिखावन हार॥"

सद्‌गुरु पूज्य भगवत के चरणो मे भक्तो की भीड़ लगी रहती थी। जिज्ञासु अपनी जिज्ञासाएँ लेकर आते और सतुष्टि प्राप्त कर चले जाते। आशावादी अपनी आशाएँ लेकर आते और प्रसन्नता से आप्लावित होकर जाते। श्रद्धालु अपनी श्रद्धा लेकर आते और व्रत-नियम के उपहार से उपकृत होकर जाते। भक्त अपनी भक्ति से आते और आत्मिक शक्ति लेकर चले जाते। भावुक अपने भावनायुक्त अरमान लेकर आते और भाव विभोर होकर लौट जाते। सभी समस्याओ का समाधान, आपश्री के चरणो मे होता था।

सध्या-समय सूर्य जब अस्ताचल की ओर जाता है तो उसका प्रकाश भी मद हो जाता है। किन्तु आचार्य भगवन्त सूर्य से भी अधिक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन की साध्य-वेला मे भी उनका ज्ञान सूर्य नई-नई किरणे फेककर सबको सावधान कर रहा था, समाधि-साधना चमत्कृत कर रही थी। आप आख बद करके भी चौबीसो घटे जागृत थे, आत्मस्थ थे, अपने आप मे लीन थे, अप्रमत्त थे। आपने भोजन तो छोड़ दिया, पर भजन नही छोड़ा। चौबीसो घटे माला आपके हाथ मे सुशोभित थी। अगुलियो पर ललाई आने पर, आपके हाथ से माला लेने पर भी पौर पर माला चलती रहती, परिणामस्वरूप माला फिर हाथ मे देनी पड़ती। चरणो में बैठकर ऐसा महसूस होता था कि मानो ज्ञान-सिधु के चरणों मे बैठे हैं। नित्य नवीन अनुभव मिलते रहते थे।

आपकी विशेषताओ का और गुणो का कथन करना असभव है। क्या कभी विराट् सागर को अजलि मे भरा जा सकता है ? मेरु को तराजू मे तोला जा सकता है ? पृथ्वी को बाल चरण से नापा जा सकता है ? कदाचित् ये सब सभव हो सकता है, परन्तु गुण-खान पूज्य गुरुभगवन्त के गुण-गान सभव नही।

जिनका जीवन कथनी का नही करणी का, राग का नही त्याग का सन्देश देता है , जन-जन के हृदय सम्राट् , साधको के जीवन निर्माता, भक्तो के भगवान, साधु मर्यादा के उत्कृष्ट पालक एव सरक्षक, असीम गुणों के अक्षय भडार, सयम - जीवन प्रदाता, इस जीवन के कुशल शिल्पकार परम पूज्य आचार्य भगवन्त को मैंने अपने चर्म चक्षुओ से जिस रूप मे देखा, वह महज अनुभूति का विषय है। इस जीवन मे हर क्षण उन महनीय गुरुवर्य का अनन्त उपकार रहा है, सयम के हर कदम पर उनकी महती प्रेरणा रही है, उनका वरदहस्त सदा पाथेय बन सम्बल देता रहा है । साधक जीवन की अभिव्यक्ति वाले अनेक सूत्र भगवन्त के जीवन मे साकार सिद्ध थे। उनके जीवन-सूत्र शिक्षा बन साधक-जीवन का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

सवत् २००९ के नागौर चातुर्मास मे आचार्य भगवत ने अपने जीवन मे सधा हुआ एक सूत्र दिया -

"खण निकम्मो रहणो नही, करणो आतम काम।
भणणो, गुणणो, सीखणो, रमणो ज्ञान आराम॥"

चौदह वर्ष की वय मे इस बालक ने (मैंने) नागौर चातुर्मास मे देखा कि समग्र संसार जिस समय गहन निद्रा मे सोया रहता है, उस समय भी वह अप्रमत्त साधक स्मरण व ध्यान मे लीन रहता । रात्रि १२ से ३ बजे के बीच जब भी भगवन्त जाग जाते, मैंने उन्हे सीढियों में एक पाव ध्यानस्थ खड़े होकर साधना करते पाया। भोगियो के

लिये जो निद्रा का समय है, उन आत्मयोगी महापुरुष के लिए वह निर्जरा का समय होता था। ससारी जन दिन में भी सुखपूर्वक विश्रान्ति के लिए ही तो यत्न शील रहते हैं, पर महापुरुष तो रात्रि मे भी आत्मा के अनन्त प्रकाश के प्रकटीकरण के लिये यत्नशील रहते हैं। जागरमाणा उन महामनीषी के लिए रात्रि भी दिन के समान ही थी।

श्रमण भगवान का कथन "देवावि त नमसन्ति जस्स धम्मे सया मणो" भगवन्त के जीवन मे साकार देखा। जिनके मन में धर्म रम गया है, उन दृढ सयमी श्रमण भगवन्त के चरणो मे देवता भी झुके तो आश्चर्य क्या? अनन्तपुरा आदि अनेक स्थानो पर उन पूज्यपाद के पावन पदार्पण व प्रभावक प्रेरणा से पशु बलि बन्द हो जाना जैसे अनेक उदाहरण उनके साधनानिष्ठ जीवन के प्रबल प्रभाव बताते हैं। अहिंसा, सयम एवं तप से भावित रत्नाधिक महापुरुषों के लिये न कोई भय है, न उनके जीवन मे स्व पर का कोई भेद है और न ही कोई खेद। "अहिंसा प्रतिष्ठाया वैरत्याग", जिनके रोम-रोम में दया का वास हो, प्रत्येक प्राणी के कल्याण की ही कामना हो, उन अभय के देवता से भला किसका वैर हो सकता है, नागराज एव अरण्य के राजा सिंहराज भी नत-मस्तक हो जायें तो भला आश्चर्य क्या? भव-भव से सचित कर्म शत्रु भी तो उनकी आत्मा के पुरुषार्थ या सिंहनाद के समक्ष कहाँ टिक पाते हैं। अलवर के विहार क्रम मे मैं साथ था। रात्रि में शेर की दहाड सुनी, पर शेर जैसे आया, वैसे चल दिया।

षट्कायप्रतिपालक महापुरुष स्वय तो निर्भय होते ही हैं, अपने ससर्ग, सान्निध्य मे आने वालो के लिये भी अभयप्रदाता बन जाते हैं। स २०२२ में आचार्य भगवन्त का बालोतरा चातुर्मास था। मेरी दीक्षा का दूसरा वर्ष था। उस समय भारत-पाकिस्तान की लड़ाई का प्रसग आया। भगवन्त उस समय श्रमण सघ मे उपाध्याय थे। आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी ने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज के लिए लिखवाया कि ऐसी स्थिति में कभी स्थान बदलना पड़े तो आप स्थान बदल ले। उस लड़ाई मे बाडमेर से वायुयान बालोतरा होकर जोधपुर जाते। वायुयानो की गड़गड़ाहट सुनी जाती, बम गिरते। कुछ बम जोधपुर से पहले भी गिरे, जोधपुर मे सैकड़ों बम गिरे, लेकिन नुकसान नही हुआ। आचार्य सम्राट् के समाचार आने पर भी भगवन्त ने स्थान नही बदला, निर्भयता से वही चातुर्मास किया।

सयमनिष्ठ महापुरुष कभी चमत्कार नही दिखाते। ऋद्धियॉं, सिद्धियॉं व चमत्कार तो उनके अनुचर होते है। उनका जीवन स्वय चमत्कार बन जाता है। स्वय भगवन्त से पीपाड़ मे सुना - बारह वर्ष तक यदि कोई 'तच्चित्ते तम्मणे' होकर सत्य भाषण व सद् आचरण करे तो उसे वचन सिद्धि हो जाती है। निर्मल मतिश्रुत के धारक उन महामनीषी के अल्प सभाषण मे भी भक्तो को भविष्य का सहज सकेत मिल जाता था। श्रद्धालु भक्त जन आने वाली विपत्तियो का आभास पा श्रद्धावनत हो जाते।

समत्व साधक भगवन्त जहॉं जहाँ पधारे, वैषम्य दूर होता गया। सिवाञ्ची का विवाद जो कई सन्त-महापुरुषो की प्रेरणा से न सुलझ पाया, धड़ेबन्दी भी इतनी मजबूत कि घर आया जामाता भोजन नही करे, राखी बाधने आई भगिनी भाई के घर का पानी भी नही पीये। परस्पर विभेद इतना कि विवाद का निपटारा करने बैठे पच भी एक जाजम पर बैठने को तैयार नही, लूनी नदी से रेत मगाकर उस पर बैठे। सामाजिको के मन मे कैसी गहरी खाई? सामायिक के आराधक आचार्य भगवन्त का समत्व का सच्चा सदेश सिवाचीवासी भाइयों के गले उतरा और वहा जन-जन मे स्नेह सरिता प्रवाहित हुई। समदड़ी, किशनगढ, बालेसर आदि अनेक स्थानो पर समाज में व्याप्त धड़ेबदी व कलह के बादल आपके पावन पदार्पण व प्रेरणा से छट गये।

एक बार मैंने भगवन्त से पूछा —"भगवन्! आपके उद्‌बोधन से अनुमानत कितने व्यक्तियों के जीवन को नई

दिशा मिली होगी ? प्रत्युत्तर में निस्पृहयोगी ने फरमाया – "भाई ! कर्त्तव्य करने के होते हैं, कहने के नही।"

जिनके स्वय के मन में पक्षपोषण व साम्प्रदायिकता की भावना न हो, वह महापुरुष ही समाज को समत्व व एकत्व का सदेश दे सकता है। आपके जीवन में अनेक बार ऐसे प्रसग आये जब अन्य परम्परा के असन्तुष्ट सत गुरुचरणों से विमुख हो आपकी सेवा में आये, पर आपने कभी उन्हें प्रोत्साहित नही किया, वरन् समझा - बुझा कर सत्परामर्श देकर पुन गुरु चरणानुयायी बनाया। मोहनीय के उदय से कभी किसी सम्प्रदाय का कोई सत कभी भटक गया तो हवा उड़ाने की बजाय पुन श्रावको का मार्गदर्शन कर उन्हे स्थिर ही किया व उन परम्पराओ का सम्मान व जिन शासन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखा। तभी तो सभी परम्पराओ के महापुरुषों का आपके प्रति अनन्य स्नेह व श्रद्धाभाव था। विपरीत परिस्थिति होने पर आपसे मार्गदर्शन, सहयोग व सरक्षण लेने मे किसी को कोई सकोच नही हुआ।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म सा. के एक शिष्य को रामपुरा चौकी से विहार करते समय सर्प ने डस लिया। आगे विहार करते आचार्य सम्राट् को जानकारी दी गई तो नि सकोच उन्होंने फरमाया - घबराने की बात नही, पीछे पूज्य श्री पधार रहे हैं, वे सभाल लेंगे। परस्पर कितनी उदारता ? आपके साधनानिष्ठ व्यक्तित्व पर महापुरुषो का भी कितना गहरा विश्वास ! कहना न होगा भगवन्त पधारे और स्मरण व ध्यान साधक ने कुछ ही मिनटो मे उन सत को विषमुक्त कर दिया।

स २०१२ मे भगवन्त का चातुर्मास अजमेर मे था। आचार्य सम्राट् पूज्य आनन्द ऋषिजी म. सा के कुछ सत भी वही थे। दो सत अस्वस्थ हो गये। आचार्य सम्राट् ने सतों को पत्र लिखवाया - "मेरे मे और पूज्य श्री मे कोई भेद नही है , तुम उनकी सेवा मे रहकर स्वास्थ्य - लाभ करके आओ।"

जप साधक गुरुदेव के जीवन की बुजुर्गों से सुनी हुई घटना है। जयपुर मे एक सम्प्रदाय के विशिष्ट पद वाले महापुरुष का एक सत रात्रि मे गायब हो गया। खोजबीन प्रारम्भ हुई। सत के सयम-जीवन व सघ की प्रतिष्ठा का सवाल था। श्रावकगण पूज्यपाद की सेवा मे पहुँचे, निवेदन किया । ध्यान योगी आचार्य भगवन्त ने ध्यान के बाद कुन्दीघर भैरूजी के रास्ते मे मिलने का सकेत फरमाया। श्रावकगण पहुँचे व पुन उसे गुरु चरणो मे सभलाया। ध्यान की कैसी एकाग्रता । सामान्य जन जैसे रील मे देखते हैं, आचार्य भगवन्त को ध्यान मे वैसे दृष्टिगोचर हो जाता था। ध्यान-साधना से जिनकी ग्रन्थियो का छेद हो जाता है , वह महासाधक ही साधना की ऐसी उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है।

महापुरुषो का दर्शन, वन्दन व समागम ही सकटनाशक बन जाता है। उन महापुरुष का व्यक्तित्व ही ऐसा महिमामय था, साधना ही ऐसी अत्युच्च कोटि की थी, उनके सान्निध्य के परमाणु पुद्गल ही इतने पवित्र थे, उनका आभा मडल ही इतना दिव्य देदीप्यमान था कि मानव की तो बिसात ही क्या ? सुर असुर कृत बाधाएँ भी टिक नही पाती थी। सकटग्रस्त भक्तो का सहज समाधान हो जाता था। मैंने स्वय साधक जीवन में उनके सान्निध्य मे रहते हुए अनेक भक्तों को, जिन्होंने जीवन की, सकट मुक्ति की सभी आशाएँ छोड़ दी, सहज ही सकट मुक्त होते देखा है।

मैंने उन ज्ञान सागर साधना सुमेरु गुरु भगवन्त को चर्म चक्षुओं से जो देखा है, उसका अश मात्र कह पा रहा हूँ। एक प्रवचन क्या, समग्र जीवन ही उन ज्ञान सागर के बारे में बोलता रहूँ तो भी बोलना शेष ही रहेगा। ज्ञान चक्षुओ से उन महापुरुष के अन्तर गुणो का अवलोकन अतिशय ज्ञानियों के सामर्थ्य का विषय है।

■

गुणरत्नाकर महापुरुष

• उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म सा

हमारे यहा तीन प्रकार के आचार्य कहे गये हैं। एक कलाचार्य, एक शिल्पाचार्य और एक धर्माचार्य। आचार्य भगवन्त कलाचारी, शिल्पाचारी और धर्माचारी थे। व्यक्ति को आकर्षित करने की उनमे अद्भुत कला थी। उनके ससर्ग में जो भी आता, उसे वे आगे बढ़ाते। उनके पास जो कोई आया, लेकर ही गया। कहना चाहिये—वे चुम्बक थे, आकर्षित करने की उनकी कला अपने आप मे अनूठी थी। आचार्य भगवन्त पारस थे—लोहे को सोना बनाना जानते थे। इधर-उधर भटकने वाले, दुर्व्यसनो के शिकारी और साधारण से साधारण जिस किसी व्यक्ति ने उस महापुरुष के दर्शन किए, उसके जीवन मे सद्गुण आए ही।

गुरुदेव ने चातुर्मास के लिये मुझे दिल्ली भेजा। मै नाम लेकर चला गया। दिल्ली मे कई ऐसे श्रावक थे, जिन्होंने आचार्य श्री हस्तीमलजी म के दर्शन नही किये। आचार्य भगवत का तीस वर्ष पहले दिल्ली मे चातुर्मास हुआ था, परन्तु पुराने-पुराने श्रावक तो चले गये और बच्चे जवान हो गये। दिल्ली-वासियो ने जब सतो का जीवन देखा तो उनके मन मे आया—इनके गुरु कैसे होगे? दिल्ली के श्रावक आचार्य भगवत के दर्शनार्थ आये। आकर कहने लगे—'महाराज! हमने तो भगवन्त देख लिये।' गुरुदेव हर व्यक्ति के जीवन को ऊचा उठाने वाले कलाचारी थे।

उस महापुरुष ने एक शिल्पाचार्य के रूप मे भी कइयो का जीवन निर्माण किया। मेरी दीक्षा के बाद बड़ी दीक्षा महामदिर मे हुई। गुरुदेव मूथाजी के मदिर पधारे और कहा—'मेरे को अप्रमत्त भाव मे रहकर बतलाना।' हर समय उनकी यही शिक्षा रहती थी। वे हर समय शिक्षा देते ही रहते थे।

वे महापुरुष चाहे जहाँ रहते, हर समय शिक्षा देते ही रहते। जयपुर मे रामनिवास बाग से गुजर रहे थे। उस समय शेर गरज रहा था। आचार्य भगवत ने फरमाया—'क्या बोलता है?' आचार्य भगवत से मैंने कहा—'बाबजी! शेर गरज रहा है।' गुरुदेव बोले—'मैं हूँ, मै हूँ कह कर बता रहा है कि मैं पिंजरे मे पड़ा हूँ। इसलिये मेरी शक्ति काम नहीं कर रही है। यह आत्मा भी शरीर रूपी पिंजरे मे रही हुई है। आत्मा भी समय-समय पर हुकारती है—मै हूँ अर्थात् मैं अनन्त ज्ञान से सम्पन्न हूँ, मैं अनन्त दर्शन से सम्पन्न हूँ आदि आदि।'

एक बार भगवत सुबोध कॉलेज मे खड़े थे। पास मे पत्थर गढ़ने वाले व्यक्ति पत्थर गढ़ रहे थे। पत्थर गढ़ते वह कारीगर पानी छाट रहा था। गुरुदेव ने पूछा—'यह क्या कर रहा है?' मैंने कहा—'काम कर रहा है।' आचार्य भगवन्त ने कहा —"पत्थर पर पानी डालकर नरम बना रहा है, पत्थर कोमल होगा तो गढा जाएगा।" आचार्य भगवत ने आगे फरमाया कि 'शिष्य भी कोमल होगा तो गढ़ा जाएगा।' वे हर समय जीवन-निर्माण की बात बताया करते थे। उनकी छोटी-छोटी बातो मे कितनी बड़ी शिक्षाएँ होती थी। वे शिल्पाचार्य की तरह थे।

धर्माचार्य तो वे थे ही। वर्षों तक चतुर्विध सघ को कुशलतापूर्वक सभाला और उसी का परिणाम है कि आज यह फुलवारी अनेक रगो मे दिखाई दे रही है। आज चतुर्विध सघ का जो सुन्दर रूप दिखाई दे रहा है, वह उन्ही महापुरुषो के पुण्य प्रताप से है।

आचार्य भगवत का जीवन कैसा था, आपने देखा है, आप जानते भी हैं। उनमें थकावट का कभी काम नही। वे कितना पुरुषार्थ करते थे ! वे सामायिक-स्वाध्याय के लिये अधिक बल देते थे। दिल्ली वाले आचार्य भगवत के श्री चरणों में चातुर्मास की विनती लेकर आये। उनसे कहा-'आप प्रति वर्ष विनती लेकर आते हैं तो क्यों नहीं आप सामायिक-स्वाध्याय का सिलसिला प्रारम्भ कर अपने पैरो पर खड़े होते हैं?'

आचार्य भगवत सदा कुछ न कुछ देते ही रहते। जब तक स्वस्थ रहे स्थान-स्थान पर भ्रमण कर ज्ञान दान दिया और अन्त समय में भी कितनी उदारता, विशालता ! वे परम्परा के आचार्य होकर भी कभी बंधे नही रहे। वे फरमाते-'जिनको जहाँ श्रद्धा हो वहाँ जाओ पर कुछ न कुछ करो जरूर।'

आचार्य भगवंत की विशालता अनूठी थी। वे चाहे श्रमण सघ में रहे, तब भी वही बात, श्रमण सघ में नहीं रहे तब भी वही बात। श्रमण सघ से बाहर निकले उस समय श्रावकों ने कहा-किसके बलबूते पर अलग हो रहे हो? आचार्य भगवत ने कहा-'मैं आत्मा के बलबूते पर अलग हो रहा हूँ। मै अपनी आत्म-शाति और समाधि के लिये अलग हो रहा हूँ।' उस समय लोग सोचने लगे-'कौन पूछेगा', पर आपने देखा है-आचार्य भगवत जहा भी पधारे, सब जगह श्रद्धालु भक्तो से स्थानक सदा भरे रहे। चाहे प्रवचन का समय हो, चाहे विहार का, श्रावक-श्राविकाओ का निरन्तर दर्शन-वदन के लिये आवागमन बना ही रहा। स्थानक छोटे पड़ने लग गये। उनका जबरदस्त प्रभाव था कारण कि वे सबके थे, सब उनके थे।

वे महापुरुष गुण-कीर्तन पसन्द ही नही करते। वे स्वय गुणानुवाद के लिए रोक लगा देते थे। मदनगज में आचार्य पद दिवस था। उस समय सतो के बोल चुकने के बाद मेरा नम्बर था, लेकिन आचार्य भगवन्त ने उद्बोधन दे दिया। उसके बाद मुझसे कहा- तुम्हे भगवान ऋषभदेव के लिए बोलना है। मेरे बारे मे बोलने की जरूरत नही। कैसे निस्पृही थे वे महापुरुष । वे प्रशसा चाहते ही नही थे।

चाह छाड धीरज मिले, पग-पग मिल विशेष ।

प्रशसा चाहने या कहने से नही मिलती। वह तो गुणो के कारण सहज मिलती है। आचार्य भगवन्त नही चाहते थे कि लोग इकट्ठे हो पर उनकी पुण्य प्रकृति के कारण लोगो का हर समय आना जाना बना ही रहता था। अजमेर दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर आचार्य श्री का मन नही था, पर श्रावकों की इच्छा थी इसलिये वहा दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। वे महापुरुष स्वय की इच्छा नही होते हुए भी किसी का मन भी नही तोड़ते थे। उन्होने त्याग-प्रत्याख्यान की बात रख कर श्रावक समाज के सामने त्याग-तप की रूपरेखा रख दी। उनके पुण्य प्रताप से कई बारह व्रतधारी श्रावक बने और व्यसनो का उस समय त्याग काफी लोगो ने किया।

आचार्य भगवन्त ने बचपन से लेकर अन्तिम समय तक हर क्षेत्र मे अपना कीर्तिमान स्थापित किया। दस वर्ष की अवस्था मे दीक्षित हुए। बचपन की एक ऐसी अवस्था, जब एक बच्चा अपने कपड़ो को भी अच्छी तरह से नही सम्हाल पाता है, ऐसे समय मे उन्होने पाँच महाव्रतों को अगीकार किया। अपने जीवन को गुरुओ के चरणों मे समर्पित किया। १५ वर्ष की अवस्था मे आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म सा ने उन्हे तीसरे पद के उत्तराधिकारी के रूप मे मनोनीत किया। २० वर्ष की अवस्था में चतुर्विध सघ का भार सभालना, कोई साधारण बात नहीं थी। पूज्य महाराज इतने आदरणीय थे कि सारा चतुर्विध सघ उनके एक-एक आदेश का तत्परता के साथ पालन करने के लिये तैयार रहता था। वह मानता था कि पूज्य श्री ने कुछ कह दिया वह सही है। सबका यह मानना था कि उन्होंने किया, ठीक किया, सोच-विचार करके किया है।

ज्ञान एव क्रिया के क्षेत्र मे उनमें इतनी बड़ी विशेषता थी कि जिसके कारण एक परम्परा के आचार्य होते हुए भी उनकी ख्याति पूरे जैन समाज मे जबरदस्त थी। यह भी एक कारण है कि उन्होंने नये-नये क्षेत्रों मे सफल चातुर्मास किये। समय-समय पर अपने साधक-बन्धुओ के साथ समाज मे आती हुई विकृतियो को दूर करने का प्रयास किया।

श्रावक-सघ के प्रति भी उनके मन मे दु:ख-दर्द था। इसी बात को लेकर वर्षों तक मथन के बाद उन्होने मक्खन या सार निकालकर समझाया कि ससार मे प्राणी दु:खी क्यो है, पीड़ित क्यो है, उसे खेद क्यो है? उसे दु:ख दर्द को दूर करने के लिये सामायिक और स्वाध्याय का सदेश दिया। उन्होने कहा कि मनुष्य मोह और अज्ञान के कारण दु:खी है। मोह और ममता को मिटाने के लिये तथा समता को प्राप्त करने के लिये सामायिक आवश्यक है। अज्ञान को दूर करने एव ज्ञान के प्रकाश को जगाने के लिये उन्होने स्वाध्याय करना बहुत जरूरी बताया।

आचार्यप्रवर का यही उपदेश था कि साधक स्वाध्याय द्वारा आगमो का अध्ययन, चिंतन-मनन कर स्व के ज्ञान द्वारा अपने आपको समझे। उसके लिए आपने विश्व को सामायिक और स्वाध्याय का फरमान दिया। आज सभी कहते है - गुरु हस्ती के दो सदेश, सामायिक-स्वाध्याय विशेष।

पूज्यश्री का कितना बड़ा उपकार है समाज और व्यक्ति पर। सामायिक और स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार मे जीवन समर्पित कर आपश्री ने ज्ञान और क्रिया दोनो ही क्षेत्रो मे श्रावक-श्राविकाओ को अग्रसर किया। स्वाध्याय से ज्ञान और सामायिक से समताभाव की प्राप्ति होती है। ये दोनो ज्यो-ज्यों जीवन मे अधिकाधिक स्थान पायेगे, त्यों-त्यो वीतरागभाव मे वृद्धि होगी। सामायिक और स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार मे पूज्य आचार्यश्री इस तरह समर्पित रहे कि अपने अतिम वर्षो मे वे सामायिक और स्वाध्याय के पर्यायवाची बन गए।

आचार्य भगवन्त तो कहते थे—सामायिक-स्वाध्याय का प्रणेता मै नही हूँ, भगवान् महावीर प्रणेता है। मै तो उनके बतलाये हुए सदेश को जन-जन तक पहुचाने की कोशिश करता हूँ। यह मेरे द्वारा प्रणीत किया हुआ है, ऐसा नही है। भगवन्त फरमा कर गये हैं, शास्त्र को जन-जन तक पहुँचाना है। कहने का आशय यह है कि स्वाध्याय एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर सन्मार्ग को प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्य प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म सा ने सत-सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो के लिए स्वाध्याय का बीजारोपण किया, पूज्य आचार्य गुरुदेव ने अकुरित स्वाध्याय-पौध की विशेष देखभाल कर उसे विकसित किया। आपने स्वाध्यायी तैयार करने की प्रवृत्ति को प्राथमिकता प्रदान करते हुए विभिन्न क्षेत्रो मे स्वाध्याय-सघ स्थापित करने की महती प्रेरणा की।

आज आचार्य श्री के उन्ही सत्प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप भारतभर मे स्वाध्याय-सघो की विशाल सख्या है और प्रतिवर्ष नए स्वाध्यायी तैयार होते है। महापर्व के प्रसग पर ये स्वाध्यायी-बधु आठ दिन तक बाहर रहकर प्रार्थना, प्रवचन, प्रत्याख्यान, आलोचना, प्रतिक्रमण आदि की व्यवस्था करते हैं और इस तरह धर्म की प्रभावना कर चातुर्मास से रिक्त क्षेत्रो मे धर्म की गगा बहाते हैं।

गुरुदेव फरमाते थे कि धर्म-स्थान पर आकर शाति के साथ सामायिक करे, यह धर्मस्थान की शोभा है।

आचार्य भगवान् के गुण समूह को उनकी विशेषताओ के आधार पर दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है— (१) चुम्बकीय गुण और (२) पारस पत्थर के सदृश गुण।

आचार्य भगवन्त के चुम्बकीय गुणो के कारण ही जो भी व्यक्ति एक बार उनके निकट आकर उनके दर्शन पा

जाता, उनके चरणारविन्द को स्पर्श कर लेता, वह सदा के लिये आपका श्रद्धालु भक्त बन जाता। आपके गुणसमूह की दूसरी विशेषता पारस पत्थर के तुल्य थी। पारस पत्थर जिस प्रकार लोहे को सोना बना देता है, उसी प्रकार आचार्य प्रवर के सम्पर्क में आने वाला भोगी व्यक्ति त्यागी और विराधक आराधक बन जाता था।

जो भी आचार्य श्री के सम्पर्क मे आया, उनके उपदेशो का जिसने भी अमृत पान किया, उनकी बताई हुई शिक्षाओ, उनकी दी हुई प्रेरणाओं को हृदयगम कर उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ा तो वह आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ता चला गया। आचार्य श्री भक्त में भगवान के दर्शन करते थे। उनका स्वय का कथन था कि साधक को भक्त नही बनना है, भगवान बनना है। आराधक से आराध्य, उपासक से उपास्य, साधक से सिद्ध बन जाने का मार्ग प्रशस्त करना उनका लक्ष्य था।

गुरुदेव के अनेक गुणो मे एक गुण था—उनका अप्रमत्त जीवन। प्रमाद उनके प्राय नजदीक नही आ पाया। वे यदि रात को १० बजे सोये और ११ बजे उठ गये तो फिर पूरी रात नही सोते थे। माला, ध्यान आदि मे ही समय व्यतीत करते थे।

वे अपने वचन के निर्वहन मे भी पक्के थे। 'प्राण जाय पर वचन न जाय', कथन का वे निर्वाह करते थे। जीवन के अतिम समय मे बड़े-बड़े नगरो एव डाक्टरो की सुविधाओ को त्याग कर निमाज जैसे छोटे ग्राम की ओर प्रयाण करना यही सिद्ध करता है।

एक अन्य प्रसग है। आपने अहमदाबाद का चातुर्मासावास सानन्द सम्पन्न कर जयपुर की ओर विहार किया। उस समय इतिहास-लेखन का कार्य चल रहा था। आपश्री को कुछ ही दूर स्थित एक यति जी का पुरातन ग्रथ-भडार देखना था। आपने यति जी को कहलवा दिया था। सतो को भी अपने भाव बता दिये थे। सूचना मिली कि यतिजी कही बाहर गए हुए है। इधर जयपुर मे एक दीक्षा-प्रसग था। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया-"भगवन्! यतिजी तो हैं नही। अत सीधे ही जयपुर की ओर विहार कर ले।" आपश्री ने फरमाया-"मैंने उनको वचन दे रखा है और मै अपनी ओर से वचन तोड़ूँगा नही।"

आचार्यश्री करुणा-सागर थे, उनका हृदय कमल की तरह कोमल था। वे परदुख कातर थे। 'सत हृदय नवनीत समाना' के अनुसार उनका हृदय मक्खन की तरह मुलायम था। पर-पीड़ा से तुरत पिघल जाते थे। विशेषता यह कि कोई भी दुखी, त्रस्त, सन्तप्त प्राणी उनके निकट आता, उनकी चरण-शरण ग्रहण करता तो आपश्री के आशीर्वाद से उसका समस्त दुख, सताप, कष्ट दूर हो जाता था। यह आपश्री की प्रबल पुण्यवानी का ही प्रताप था। वे स्वय किसी को कुछ कहते या बताते नही, पर जिसका उन पर, उनकी भक्ति पर, उनके वचनो पर अटल विश्वास होता था, उसका कष्ट, उसकी बाधाए स्वत दूर जाती थी।

आचार्य गुरुदेव से विद्वान् प्रभावित थे, विचारक प्रभावित थे, आगमज्ञ प्रभावित थे, सत प्रभावित थे। कौन प्रभावित नही था उनसे? जब तक श्रमण सघ मे रहे, वहा भी अपना वर्चस्व बनाए रखा। एक तेज था आपमे, सयम का तेज, ज्ञान का तेज, क्रिया का तेज, दृढ़ता का तेज। यही कारण था कि जब तक रहे, पूरे स्थानकवासी समाज पर ही नही, सम्पूर्ण जैन समाज पर आपका प्रभाव रहा।

आचार्य भगवान् आगरा पधारे। उपाध्याय कवि मुनि श्री अमरचद जी म के साथ आपका प्रवचन हुआ। मन्त्रीजी ने पहले दिन कहा—"आज हमे ज्ञान और क्रिया का समन्वय देखने को मिल रहा है।" दूसरे दिन आचार्य श्री ने प्राचीन श्रमण-सस्कृति विषय पर इतना विद्वत्तापूर्ण एवं तथ्यगत व्याख्यान दिया कि मन्त्रीजी कह उठे—"आचार्य श्री

हस्ती तो स्वय ही ज्ञान एव क्रिया के सगम हैं।"

इतना सब होते हुए भी गुरुदेव अत्यन्त सरल एव विनम्रता की मूर्ति थे। आपके उपदेशो का श्रोताओं पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता था। कारण स्पष्ट था । वे पहले करते थे, जीवन मे उतारते थे और फिर कहते थे।

गुरुदेव ने अपने सयम-काल मे विषम से विषम परिस्थितियो को भी धैर्यपूर्वक सहा। कितने ही सत विदा हो गये। कितने ही सतो की समाधि मे, उनके सथारे मे आपने साज् दिया। जिस समय मैंने दीक्षा ली थी, उस समय तक का सम्प्रदाय मे कोई भी सत आज विद्यमान नही है। बाबाजी श्री सुजानमल जी म सा, स्वामीजी श्री अमरचन्दजी म सा आदि अनेक सत गए, पर उस वक्त भी गुरुदेव विचलित नही हुए। बडे आत्म-विश्वास से सयम-जगत् मे रमण करते रहे। उनके जीवन का एक-एक गुण उनके भक्तो के जीवन मे मूर्तिमत हो, तभी उनका स्मरण सफल होगा।

ज्ञान और क्रिया मे समन्वय जिस महापुरुष ने किया था वह महापुरुष ससार से विदा हो गया, परन्तु अन्तिम समय मे भी समाधिमरण के साथ एक कीर्तिमान स्थापित किया। जन-जन को बता दिया कि मरण हो तो ऐसा हो महोत्सव की तरह। वैशाख शुक्ला अष्टमी के दिन रवि पुष्य नक्षत्र मे नश्वर देह का परित्याग कर इस ससार से विदा हो गये, परन्तु बहुत बड़ी प्रेरणा दे गये कि आप लोग भी इस तरह का जीवन जीये जिससे अन्तिम समय शान्तिपूर्वक पण्डित मरण के साथ यहाँ से विदा हो सके। लबे समय का वह अभ्यास ही उनको समाधिमरण की तरफ प्रेरित कर गया। सामायिक और स्वाध्याय का सदेश देने वाले वे स्वय ही सामायिकमय हो गये, उनके भीतर सामायिक उतर गयी। एक तो वे है जो सामायिक करते है तथा एक वे हैं जिनके जीवन मे सामायिक होती है। करने मे और होने मे बड़ा अन्तर है। करना तो क्रिया है, होना आत्म-साक्षात्कार है। अगर आत्मा के अन्दर सामायिक हो गयी तो फिर करना क्या बचा ? उन्होने इस तरह से केवल सामायिक ही नही की, अपने जीवन के अन्दर सामायिक को उतार कर लोगो की धारणा को बदल दिया। लम्बे समय के बाद मे किसी आचार्य को ऐसा समाधिमरण हुआ तो लोग कहने लगे कि आचार्य को समाधि मरण होता ही नही है, क्योकि वे झझटो मे फसे रहते है, चतुर्विध सघ की व्यवस्था के अन्दर इतने उलझे रहते है कि उनके मन मे चिन्ता बनी रहती है, जिसके कारण वे अन्तिम समय समाधि-मरण को प्राप्त नही कर पाते हैं। किन्तु व्यक्ति क्या नही कर सकता है ? चाहना के अनुसार अगर आचरण है, जीवन व्यवहार है, आत्मा मे इस तरह की सच्ची लगन है तो मनुष्य सब कर सकता है।

अपने ७१ वर्ष के सयम काल मे आचार्य भगवन्त ने आचार्य, उपाध्याय तथा सत पदो का क्रियापूर्वक निर्वहन किया। ६१ वर्ष आचार्य रहते हुये भी अपने को सदा सघ-सेवक शोभा शिष्य हस्ती ही माना।

गुरुदेव द्वारा रचित स्तवन-भजन आत्मा को ऊपर उठाने वाले है। जब आचार्य भगवन्त ने निमाज मे सथारा ग्रहण कर लिया था, तब उन्हे "मेरे अन्तर भया प्रकाश, नही मुझे किसी की आस" तथा "मै हूँ उस नगरी का भूप जहाँ नही होती छाया धूप"-जैसे भजन सुनाये गये। सुनाते-सुनाते ही सत भाव विभोर हो उठते थे।

वे केवल उपदेशक ही नही, उपदेशो को आत्मसात् करने वाले थे। हम भी कभी-कभी सोचते है कि हमने कभी किसी केवली को नही देखा। गणधरो को नही देखा,पर हमे सतोष है कि हमने आचार्य भगवन्त को देखा, हम भाग्यशाली है कि हमे उनका सान्निध्य मिला।

■

ज्योतिर्धर आचार्य

• उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म सा.*

सन् १९५२ मे जब सादड़ी मे सन्त-सम्मेलन का आयोजन हुआ, उस समय आप श्री का मगलमय पदार्पण सम्मेलन मे हुआ। सादड़ी के पवित्र प्रागण मे सर्वप्रथम मुझे आपके दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम दर्शन मे ही मै उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ। उन्होने अपनत्व की भाषा मे जो मधुर शिक्षाएँ प्रदान की, वे जीवन की अनमोल थाती हैं। उनकी अपनत्व की भावना ने ही उनके प्रति अनन्त आस्था पैदा की।

सन् १९५३ मे पुन सोजत मन्त्री मण्डल की बैठक मे आपके दर्शनो का सौभाग्य मिला। जब भी मै आपके कक्ष में दर्शनार्थ पहुँचता तब स्नेह-सुधा से स्निग्ध शब्दों मे आप मुझे हित शिक्षाएँ देते कि तुम्हे राजस्थान की गरिमा को सदा अक्षुण्ण रखना है। आपने मुझे यह प्रेरणा दी कि तुम्हारे अन्तर्मानस में साहित्य के प्रति सहज रुचि है, किन्तु यह उपयोग रखना है कि जो लेख लिखे जायें, वे आगम व स्थानकवासी मान्यता के विरुद्ध न हो। महाराज श्री की प्रेरणा से मैंने यह कार्य सहर्ष किया भी।

सन् १९५७ मे परमादरणीय उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म. तथा आप श्री के पास लगभग एक महीने तक रहने का अवसर मिला। उस समय मैंने बहुत ही सन्निकटता से आपको देखा। जप-साधना के प्रति आपकी निष्ठा को देखकर मेरा हृदय आनन्द-विभोर हो उठा। सन् १९६० मे विजयनगर मे आठ-दस दिन साथ मे रहने का अवसर मिला। 'अखण्ड रहे यह सघ हमारा' यह नारा बुलन्द किया। इस लेख मे 'श्रमण सघ अखण्ड रहे' इस सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त हुए है, वे इतिहास की एक अपूर्व धरोहर है। उन विचारो को पढ़ने से लगता है कि श्रमण सघ के प्रति कितने निर्मल विचार आपके रहे है।

सन् १९९० का सादड़ी का यशस्वी वर्षावास सम्पन्न कर हम लोग पाली पहुँचे। मै मध्याह्न मे आपकी सेवा मे पहुँचा। आपने प्रसन्न मुद्रा मे वार्तालाप किया और कहा कि मेरा शरीर अब साथ नही दे रहा है। हमने अपने जीवन मे स्थानकवासी समाज के उत्कर्ष हेतु सतत प्रयास किया है। आपको भी यही प्रयास करना है। विचारो की उत्क्रान्ति के साथ आचार की उपेक्षा न हो, यह सतत स्मरण रहे। इतिहास का जो कार्य अपूर्ण रह गया है उसे भी पूरा करने का लक्ष्य रहे।

पाली से आपका विहार सोजत होकर निमाज की ओर हुआ। स्वास्थ्य शिथिल होने पर क्षमापना पत्र भी प्राप्त हुआ जो आपके निर्मल हृदय का स्पष्ट द्योतक था।

सथारा जीवन की एक अपूर्व कला है। आध्यात्मिक साधना का सर्वोच्च शिखर है । यह व्रतराज है। जीवन की अन्तिम वेला मे की जाने वाली उत्कृष्ट साधना है। यदि कोई साधक जीवन भर उत्कृष्ट तप की आराधना करता रहे, पर अन्त समय में यदि वह राग-द्वेष के दल-दल मे फस जाता है तो उसकी साधना निष्फल हो जाती है। सथारा जीवन-मन्दिर का सुन्दर कलश है। सथारा आत्म-हत्या नही है। आत्महत्या मे कषाय की प्रमुखता होती है। अन्तर्मानस में कई इच्छाएँ होती हैं पर सन्थारे मे तो इच्छाएँ नही होती। हँसते हुए मृत्यु का वरण किया जाता है। जिन महान् आत्माओं ने भेदविज्ञान के द्वारा यह समझ लिया कि देह और आत्मा पृथक् है, वे ही इस साधना को

** बाद मे आचार्य पद से सुशोभित*

अपनाते हैं। आचार्य श्री हस्तीमलजी म ने सलेखना युक्त सन्थारा कर सहर्ष मृत्यु का वरण करने का जो सकल्प किया, वह उनके आध्यात्मिक जीवन के उत्कर्ष का द्योतक है। तेले के तप पर उन्होने दस दिन का सथारा कर जैन शासन की प्रबल प्रभावना की । आचार्य पद पर आसीन महापुरुषों को प्राय सन्थारा कम आता है, पर आश्चर्य यह कि आपको इतना लम्बा सन्थारा आया। उस सन्थारे मे आपकी जप-साधना भी चलती रही। आपके चेहरे पर अपूर्व उल्लास दमकता-चमकता रहा। अन्तिम क्षण तक अपूर्व समाधि बनी रही।

भारतीय साहित्य मे हस्ती की अपनी महत्ता रही है। वह युद्ध के क्षेत्र मे कभी भी पीछे नही हटता था। हाथियो की अनेक जातियाँ है। उनमे 'गध हस्ती' को सर्वोत्तम माना गया है। 'ज्ञातृधर्मकथा' मे राजा श्रेणिक के पास जो सेचनक हस्ती था, उसे ग्रन्थकारो ने 'गध हस्ती' लिखा है। वासुदेव श्रीकृष्ण के पास जो 'विजय हस्ती' था वह भी गन्ध हस्ती कहलाता था। जिसके गण्डस्थल से इस प्रकार का मद चूता था जिससे दूसरे हस्ती उस हस्ती के सामने टिक नही पाते थे। 'उत्तराध्ययन की टीका' में धवल हाथी का उल्लेख आता है जो शख के समान, चन्द्रमा के समान और कुन्द पुष्प के समान उज्ज्वल होता था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र मे भद्र नामक हाथी को सर्वोत्तम हाथी लिखा है। उसे जैन शास्त्रो मे गध हस्ती कहा गया। 'शक्रस्तव' मे देवेन्द्र ने भी तीर्थंकर भगवान् को 'गध हस्ती' की उपमा से अलकृत किया है। आचार्य श्री हस्तीमलजी म नाम से ही हस्ती नही थे, उन्होने जिस सयम-पथ को अपनाया उस पथ मे निरन्तर आगे बढ़ते रहे और जीवन की अन्तिम घड़ियो मे सन्थारा वरण कर कर्म-शत्रुओ को परास्त करने का जो उपक्रम उन्होने किया, वह हर साधक के लिए प्रेरणा-स्रोत है।

मै अपनी तथा श्रमण सघ की ओर से श्रद्धार्चना समर्पित कर रहा हूँ। भले ही आज उनकी भौतिक देह हमारे बीच नही है, पर वे यश शरीर से आज भी जीवित हैं और भविष्य मे भी सदा जीवित रहेगे। उनका मगलमय जीवन सदा प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

(जिनवाणी, श्रद्धाञ्जलि अक, सन् १९९१ से सकलित)

■

दूसरा कोई उदाहरण नहीं

• पं रत्न श्री घेवरचन्दजी म सा 'वीर पुत्र'

(आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चादर महोत्सव के समय २ जून १९९१ को व्यक्त विचार)

पूज्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म सा ने ६० वर्षों से कुछ अधिक समय तक सघ का सचालन किया। निरतिचार आचार्य पद का इतने लम्बे समय तक पालन करने वाले सन्त का मेरी दृष्टि मे दूसरा उदाहरण नही है और पिछले २०० वर्षों के इतिहास मे ऐसा उदाहरण पढ़ने मे नही आया। उस महापुरुष ने तेले की तपस्या सहित तेरह दिन का सथारा किया। पिछले २०० वर्षों के इतिहास मे आचार्य श्री जयमल्ल जी म सा के तीस दिन के सथारे का उल्लेख आता है, अन्यथा इस युग मे इतना लम्बा सथारा किसी आचार्य को नही आया, यह भी एक कीर्तिमान है।

मुझे पूज्य आचार्य श्री की सेवा का अवसर मिला है। सादड़ी सम्मेलन में सब आचार्यों ने पद का त्याग किया तब एक नाम पूज्य हस्तीमल जी म सा ने पूज्य श्री गणेशीलाल जी का रखा। पूज्य गणेशीलाल जी म सा ने कहा - "आचार्य कौन हो? जो शास्त्रो का पारगामी हो, युवक हो और विचरण-विहार करके क्षेत्रो को सम्भालने वाला हो। ऐसा कोई आचार्य हो सकता है तो वे पूज्य श्री हस्तीमलजी हो सकते है।"

—जिनवाणी, अगस्त १९९१ से साभार

■

साधना के शिखर पुरुष

• महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज जब तक जीए , आदर्श जीवन जीया। उनका जीवन आज भी श्रद्धा से स्मरण किया जा रहा है। भगवन्त मे गौतम की तरह ज्ञानगरिमा, सुधर्मा की तरह सघव्यवस्था, अनाथी की तरह वैराग्य और स्थूलिभद्र की तरह ध्यान था।

आचार्य भगवन्त ने अपना जीवन आचरण के साथ ऐसा ढाला कि हम आज भी श्रद्धा से उस महापुरुष को यह कहकर याद करते हैं कि उनके जीवन मे पर्वत सी ऊँचाई थी तो सागर सी गहराई थी। उस महापुरुष मे अनेकानेक गुण थे। वे प्रवचन के माध्यम से ही नही, मौन साधना से भी प्रेरणा देने वाले महापुरुष थे। उनकी प्रेरणा से हजारो स्वाध्यायी बने और हजारो-हजार लोगो ने अपना जीवन सवारा।

आचार्य भगवन्त जयपुर विराज रहे थे। कृष्ण पक्ष की दशमी को वे अखण्ड मौन रखते और ध्यान करते थे। ध्यान-साधना मे स्व-स्वभाव मे आने का उनका चिन्तन चलता ही रहता। एक दिन कृष्ण पक्ष की दशमी को आचार्य भगवन्त ध्यानस्थ हो अपनी साधना कर रहे थे, सयोगवश उस दिन जैन धर्म के मूर्धन्य मनीषी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद् डॉ दौलतसिंह जी कोठारी आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन और पर्युपासना के लक्ष्य से वहाँ पहुचे। आचार्य भगवन्त के श्रद्धाशील श्रावक श्री नथमल जी हीरावत नीचे उतर रहे थे और डॉ कोठारी साहब लाल भवन की सीढ़ियॉ चढ़ रहे थे। हीरावत साहब ने कोठारी साहब से कहा - आचार्य भगवन्त तो आज मौन साधना मे है, आपकी बात नही हो सकेगी। कोठारी साहब बोले-'कोई बात नही, मुझे दर्शन लाभ तो होगा।'

आचार्य भगवन्त ध्यान-साधना मे विराजमान थे। डाक्टर साहब वन्दन नमन कर सामने बैठ गये। वे करीब घण्टे भर वहा बैठे रहे और उसके बाद नीचे उतरे। सयोग से हीरावत साहब उन्हे फिर मिल गये। कोठारी साहब बोले - मैंने आज जो पाया है वह वर्षों मे कभी नही पा सका। आचार्य भगवन्त का जीवन बोलता है। आचार्य भगवन्त के उपदेश प्रभाव जमाने हेतु नही, स्वभाव मे लाने वाले होते थे।

आचार्य भगवन्त के जीवन मे करुणा थी वही वज्र सी कठोरता भी थी। महापुरुषो मे ऐसे विरोधी गुण भी होते है। दीन-दुखी और असहाय को देख वे द्रवित हुए बिना नही रहते और जहा कही आचरण मे ढिलाई देखते उस समय उनमे वज्रसी कठोरता देखी जाती। उस महापुरुष ने ७१ वर्ष तक निरतिचार सयम का पालन किया और अप्रमत्त जीवन जीया। उनका जीवन लड्डू की तरह सब ओर से मधुर था। लड्डू को आप जिधर से खाएँ उसमें मिठास होती है। उसी प्रकार आचार्य भगवन्त का जीवन मधुरिमा से युक्त था।

आचार्य भगवन्त ने रोग-ग्रस्त होने पर दोष लगाना तो दूर कभी मन को कमजोर तक नही होने दिया। भगवन्त के मोतियाबिन्द का आपरेशन होना था। डॉक्टर आपरेशन के पूर्व इन्जेक्शन लगाने के लिए कह रहे थे, परन्तु भगवन्त ने दृढतापूर्वक कहा -इजेक्शन की आवश्यकता नही है। भगवन्त ने बिना इजेक्शन आपरेशन करवाया और आपरेशन के पूर्व सतो को सावधान किया कि आप ध्यान रखे, आपरेशन के दौरान कही कच्चे पानी का उपयोग न हो जाये।

आचार्य भगवन्त के जीवन में सरलता, सहिष्णुता और सौहार्द के भाव थे। आचार्य भगवन्त का स २०१५ मे दिल्ली में चातुर्मास था। उस समय श्रमण सघ के प्रथमपट्टधर आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज लुधियाना चातुर्मासार्थ विराज रहे थे। श्रमण सघ के प्रथम आचार्य श्री आत्माराज जी महाराज ने पत्र मे आचार्य भगवन्त के लिए 'पुरिसवरगंधहत्थीण' विशेषण लगाया। जो विशेषण अरिहतों के लिए लगाया जाता है, श्रमण सघ के प्रथम पट्टधर ने उसका प्रयोग आचार्य भगवन्त के लिये किया। आचार्य भगवन्त के प्रति उनका विशेष प्रेम था। इसलिए लुधियाना से सदेश आया कि आप दिल्ली तक पधार गये हैं, दिल्ली से लुधियाना ज्यादा दूर नही है, आप लुधियाना पधारे। पर आचार्य भगवन्त पूज्य अमरचन्द जी मसा. की रुग्णता मे सेवा को प्रमुखता देने के कारण नही पधार सके, यह अलग बात है।

जैन जगत् के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज जेठाणा विराज रहे थे। उस समय आचार्य भगवन्त का भी जेठाणा पधारना हुआ। आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज को विहार करना था, आचार्य भगवन्त पहुचाने के लिए नीचे उतरे। जवाहराचार्य कहने लगे - आप मुझे मागलिक सुनाओ। जवाहराचार्य दीक्षा पर्याय और वय मे बड़े थे, फिर भी मागलिक श्रवण करना चाहते थे। आचार्य भगवन्त लघुता प्रकट करते रहे, किन्तु जवाहराचार्य ने कहा कि मैं दक्षिण मे जा रहा हूँ, आपकी मागलिक श्रवण करके जाऊँगा। आदर-समादर का वह कितना सुन्दर उदाहरण है।

आचार्य भगवन्त आत्म-साधक थे। जब तक जीये हर व्यक्ति के वे आस्था के केन्द्र रहे। अन्तिम समय आया तो समाधिमरण से वे चिर स्मरणीय बन गये। जिनाज्ञा के अनुसार उनका आचरण था। इसलिए बड़े बड़े आचार्य भगवन्त और सन्त भगवन्त उनका परामर्श प्राप्त करते। बड़े छोटो मे जब कुछ विलक्षणता देखते है, तभी उनकी प्रशसा होती है।

श्रमण सघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज का राजस्थान मे पदार्पण हुआ। आचार्य सम्राट् भोपालगढ़ पधारे, जहा आचार्य भगवन्त पहले से विराज रहे थे। दोनो मे कैसा प्रेम था, वह आज भी हमे प्रेरणा देता है। आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषिजी को जोधपुर पधारना था। दोनो महापुरुषो ने आगे पीछे विहार किया। सयोग ऐसा हुआ कि आचार्य सम्राट् के साथ वाले किसी सत को सर्प ने डस लिया। आचार्य सम्राट् भक्तो से बोले - तुम आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज को सूचना करो। पूज्य गुरुदेव को सर्प डसने की सूचना मिली, वे तुरन्त विहार कर वहा पहुचे। देखा तो गाव वाले सभी चिंतित और परेशान है, सत जिसे साप काट खाया, वह बेहाल है। आचार्य भगवन्त ने अपनी साधना-आराधना से कुछ सुनाया और साप का जहर उतर गया। यह चमत्कार नही साधक की साधना के बल का नमूना है।

पूज्य गुरुदेव ने सयम-साधना मे आगमवाणी को सदा आगे रखकर उसका प्रचार-प्रसार किया। उस महापुरुष के समाधिमरण की बात आपने सुनी होगी। तप-साधना मे उस युगमनीषी ने पूर्ण सजगता मे सथारे के प्रत्याख्यान अगीकार किये और सथारा स्वीकार करने के बाद उस महापुरुष ने शरीर तक से ममत्व हटा लिया। हाथ हो या पैर, वह जिस अवस्था मे है उसे हिलाया तक नही। सतों ने जिस करवट सुला दिया, उन्होंने स्वय करवट नही बदली। प्रतिलेखना के लिए जब भी आसन से उठाया जाता तो भगवन्त करुणा की दृष्टि से देख लेते। सत महर नजर रखने का निवेदन करते, पर वे आत्मरमण - आत्म चिन्तन में लीन रहते। उनकी अगुलियों पर माला थी और था स्मरण। आगमों में पादपोपगमन सथारे का वर्णन आता है, आचार्य भगवन्त का समाधिमरण ठीक वैसा ही लगता था। ऐसे महापुरुष के लिए जितना कहा जाय कम है। उस दिव्य द्रष्टा ने मेरे जैसे अनपढ़ को पामर से पावन बना दिया। ■

अध्यात्म-आलोक पूज्य गुरुदेव

• मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म सा

ससारस्थ आत्माएँ अनादि अनन्त काल से कर्म आवरण से सयुक्त होकर जन्म , जरा और मरण के चक्रव्यूह मे चक्कर लगा रही हैं। विरली आत्माएँ ही इस चक्रव्यूह का भेदन कर आत्म-स्वरूप का भानकर इसके प्रकटीकरण की ओर प्रयासरत हो पाती है। आत्मा के शुद्ध शाश्वत स्वरूप के प्रकटीकरण की ओर उन्मुख महापुरुष का जीवन स्व पर के लिये कल्याणकारी बन जाता है। ऐसे ही महापुरुष थे जीवन निर्माता सयमधनप्रदाता पूज्यपाद गुरुदेव परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा ।

मुझे उन श्री चरणो मे समर्पित होने व उनका स्नेहिल सान्निध्य पाने का सौभाग्य मिला है, यह अनन्त जन्मो मे सचित पुण्य का प्रसाद है । मॉ रूपा के लाल, केवल के बाल, बोहरा कुल शृगार, शोभा गुरु के शिष्य, रत्न वश के देदीप्यमान रत्न, जिनशासनाकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र, लक्षाधिक भक्तो के आराध्य भगवन्त , सयमी साधको के लिये भी आदर्श, सामायिक के पर्याय, स्वाध्याय गगा के भगीरथ, अष्टप्रवचनमाता द्वारा सरक्षित, महाव्रतो द्वारा साधना के उच्च शिखर पर सुशोभित , शील सौरभ से सुरभित, मौनव्रत-अनुरागी, जप-तप व सयम के आराधक, उन महामना के जीवन उपवन मे न जाने कितने गुण पुष्प खिले हुए थे, जिनकी सुरम्य छटा व दिव्य महक से समूचा जैन जगत आह्लादित था।

जिनेन्द्रप्रणीत निर्ग्रन्थ प्रवचन मे जिनकी आस्था थी तो तदनुरूप सयम-पालन मे जिनकी निष्ठा थी और ब्रह्मचर्य मे जिनकी प्रतिष्ठा थी। जो भी श्री चरणो मे उपस्थित हुआ, उसे अपना बना लेने मे जिनकी सिद्धि थी, तो सामायिक-स्वाध्याय मे जिनकी प्रसिद्धि थी। मन, वचन व कर्म मे जिनके एकरूपता थी तो प्रेरणाओ मे जिनके विविधता थी। सघशासन उनका काम था तो आत्मानुशासन मे उनका नाम था। उनकी चर्या मे आगम जीवन्त थे तो व्यवहार मे शास्त्र मर्यादा का बोध था। जिनके चिन्तन मे हर किसी के कल्याण की कामना थी, वाणी मे सूत्र की वाचना थी तो क्रिया मे शास्त्र की पालना थी। जिनके कदम जिधर भी बढ गये, हजारो कदमो के लिए वह राह बन गई, अल्प सभाषण मे जो कुछ निकला, वही प्रेरणा बन गई।

जिधर भी उनके चरण पड़े, वह धरा पावन हो गई, जिस पर भी उनकी नजर पड़ी, वह धन्य हो गया, जिसे भी उन्होने पुकारा, वह सदा के लिये उनका हो गया।

ज्ञानसूर्य हस्ती के सूत्र रूप मे फरमाये गये प्रवचन अनेको के लिये दिशा बोधक बन गये, प्रकाशपुञ्ज उस दिव्य योगी की महनीय स्नेहिल दृष्टि से भक्त कभी तृप्त ही नही हो पाते। अमृतकलश सदा प्रेरणा का पावन अमृत बाटता रहा, अध्यात्म आलोक अपने मगलमय मार्गदर्शन व प्रखर साधनादीप्त जीवन से जिनशासन की जीवनपर्यन्त प्रभावना करता रहा। जागरण का वह क्रान्तिदूत इतिहास के पन्नो पर स्वर्णिम अध्याय के रूप मे अकित है। इतिहासवेत्ता अपने जीवन के अनेक कीर्तिमानो से इतिहास को समृद्ध बना गये। वे युग से नही, वरन् युग जिनसे प्रतिष्ठित है, जिनसे जुड़कर हर कोई व्यक्ति, क्षेत्र व समय महिमामडित हो गया। क्या सयम, सरलता, निस्पृहता का वह विशिष्ट युगशास्ता युगनिर्माता ज्ञानसूर्य कभी अस्त हो सकता है? क्या वह प्रेरणा कभी मौन हो सकती है ? क्या लक्षाधिक भक्तो के हृदय मे सस्थापित वह प्रज्ञापुरुष कभी नि:शेष हो सकता है ? एक ही प्रत्युत्तर होगा,

नही ! नही ! कदापि नही ।

अनेक भक्तों की कई पीढियों के प्रतिबोधक गुरु की आगामी पीढियाँ सहज विश्वास भले ही न कर पाये कि एक साथ गुण पुष्पों की इतनी विविधता वाला जीवन उपवन कभी यहाँ महका था, पर अपने पूर्वजो से सुन कर उनके महिमामंडित जीवन का अनुमान लगा कर वे गौरवान्वित हो सकेगी। किसी शायर की ये पक्तिया उन गुणरत्नाकर के जीवन पर कितनी सटीक हैं —

आने वाली नस्ले जिसके होने का अन्दाज करेगी
वो ऐसा था शख्स निराला, सदिया जिस पर नाज करेगी।

यू तो इस दुनिया मे आना और जाना सदा लगा रहा है। अनादि काल से अनेक महापुरुषों ने अपनी जीवन ऊर्मियों से पतितो को पावन किया, भक्तो को भगवान बनाने की राह दिखाई। यह दुनिया चलती रही है, चलती रहेगी, स्वय उन गुण सिन्धु ने अपने आपको एक बिन्दु मात्र ही माना, पर यह बात अटूट विश्वास से कही जा सकती है—

यू तो दुनिया के समुद्र मे कभी कमी होती नही,
लाख गौहर देख लो, इस आब का मोती नही ॥

शास्त्रो का जिन्होने बोध कराया, स्वाध्याय की जिन्होने राह दिखाई, आगममनीषी उन गुरुदेव के जीवन मे आगम गाथाएँ मानो जीवन्त प्रतीत होती है।

पूज्यपाद ने जीवन के उषाकाल मे ही अपने आपको गुरु चरणो मे समर्पित कर दिया, पूज्य स्वामीजी हरखचदजी म सा, पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य श्री शोभाचन्दजी म सा एव सेवाभावी साधक श्री भोजराजजी म सा के अनुशासन व देखरेख मे बाल्यकाल मे उनका जीवन अनुशासन की अनूठी मिसाल बन गया, उन्होने गुरु चरणो मे यह पाठ पढ लिया कि 'छदे निरोहेण उव्वेइ मोक्ख' यानी स्वच्छन्दता के त्याग से मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिन्हे मोक्ष की ओर अनुगमन करना होता है, वे शिष्य तो सर्वतोभावेन सदा के लिये गुरु चरणो मे समर्पित हो उनके अन्तेवासी बन अपना जीवनधन उन्हे सौंप देते है। जहाँ श्रद्धा है वहाँ समर्पण होता है, शर्त नही । जहाँ समर्पण है, वहाँ स्वच्छन्दता, दुराव, लुकाव, छिपाव व मायाचारिता का भला अवकाश ही कहाँ।

गुरुचरणो मे समर्पित शिष्य छन्द रहित हो अपने चित्त को निर्मल विमल बना आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर हो जाता है। शुद्ध हृदय मे ही धर्म स्थिर रह सकता है। श्रमण भगवान महावीर ने अपनी अन्तिम धर्मदेशना मे फरमाया है — "सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।"

जिनका अन्तर निर्मल बन जाता है , जिनके जीवन मे छल, कपट व प्रपञ्च नही रहता, उनका अन्तर और बाह्य एक हो जाता है। आगम ऐसे साधको को 'जहा अतो तहा बाहिं' की उपमा से उपमित करता है। महनीय गुरुदेव ने पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य व शास्त्रो के अनुशीलन से जो ज्ञान पाया, वह उनके चिंतन व आचरण मे ढल गया, क्योंकि "ज्ञानस्य सारो विरति." । पूज्यपाद ने जो पढ़ा, उसका चिन्तन-मनन कर ज्ञान का मक्खन अर्जित किया और उसी अनुरूप साधना कर अपनी करनी मे उतारा। वे जैसा सोचते, वैसा ही करते, जैसा करते, वैसा ही बोलते। सोच, कथनी व करनी में ऐसा अद्भुत साम्य विरले महापुरुषों में ही देखने को मिल सकता है।

जिनके अन्तर व व्यवहार मे एक रूपता होती है, वे महापुरुष समय को पहिचान लेते हैं। आत्मा को जान लेने

वाले महापुरुष कालजयी महापुरुष बन जाते हैं। वे 'क्षण' मात्र को भी व्यर्थ नही जाने देते। ऐसा अप्रमत्त साधक ही सच्चा पंडित होता है। आगमकारों ने फरमाया है - 'खण जाणाहि पडिए' हे पडितो! क्षण को जानो। आत्मा को जानने वाला ही पंडित होता है। पूज्यपाद के जीवन को देखने का जिन्हें सौभाग्य मिला है, वे प्रत्यक्ष साक्षी हैं कि उनका जीवन कितना अप्रमत्त था। रुग्णावस्था के अतिरिक्त उन्हें कभी किसी ने लेटे नही देखा, प्रतिपल सजग वह महापुरुष तो सदा 'ज्ञान आराम' मे ही लीन रहता। उन्होंने कभी दीवार का टेका नही लिया, उन्हे तो 'आगम' का ही सहारा अभीष्ट था।

जीवन की क्षणभगुरता का जिन्हें अहसास हो जाता है वे महापुरुष समझ लेते हैं - " असखय जीविय मा पमायए" यह जीवन असस्कृत है, न जाने आयुष्य की डोरी कब टूट जाये, टूटी डोर को कोई कदापि जोड़ नही सकता। इसलिये साधक तो पग पग पर सावधान होकर चलता है कि सयम जीवन मे कोई दोष न लगे—

चरे पयाइ परिसकमाणो, ज किंचि पास इह मण्णमाणो।
लाभतर जीविय बूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधसी। (उत्तरा ४७)

पूज्यपाद गुरुदेव ने जीवन के उषाकाल से सन्ध्याकाल तक जिस निरतिचार सयम का पालन किया वह बेमिसाल है। वे सदा दोषो से बचते रहे। सयम मे दृढ गुरुवर्य को आपवादिक परिस्थितियो मे भी दोष इष्ट नही था। उनका निरतिचार सयम जीवन दूसरो के लिये प्रेरणाप्रदायी है। यत्किंचित्-जाने-अनजाने भी कोई दोष न लग जाय, यदि लग गया है तो उसकी भी आलोचना-शुद्धि की ओर कितनी सजगता! जागृत अवस्था मे सभी शिष्यो से क्षमा याचना कर यह भावना प्रकट करना कि मै आज तक के लगे दोषो की आलोचना करता हूँ, पुन महाव्रतो मे आरोहण करता हूँ, उनकी सजगता, सरलता, उच्च साधना का जीवन्त प्रमाण है।

उन महापुरुष के लिये वस्तुत कहा जा सकता है कि उन्होने अपनी विमल सयम-साधना से ससार सीमित कर लिया। वे निकट भवी थे, क्योकि स्वय जिनप्रवचन इसका प्रमाण है—

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयण करेंति जे भावेण।
अमला असकिलिट्ठा, ते होंति परित्तससारी॥ (उत्तरा ३६,२६०)

अर्थात् जो जिनवचनो मे अनुरक्त होते हैं, जो भावपूर्वक जिनवचनानुसार आचरण करते हैं, उनकी आत्मा कर्ममल से रहित, सक्लेश रहित एव परीत ससारी हो जाती है।

कुछ महापुरुष नजदीक से प्रभावित करते है, वे दूर से प्रभावित नही कर पाते। कुछ महापुरुष दूर से प्रभावित कर पाते है पर उनका सान्निध्य प्रभावित नही कर पाता। गुरुदेव ऐसे विरल महापुरुष थे जिनका चुम्बकीय व्यक्तित्व एव साधनामय सान्निध्य, दोनो प्रभावित करते थे। उनकी प्रभावक वाणी, हृदय की निर्मलता एव निस्पृहता भरा जीवन ऐसा था कि जो भी उनके सम्पर्क मे आता, वह सदा उनका बन कर रह जाता। उनकी अतिशय पुण्यशालिता इतनी थी कि उनकी यशकीर्ति देश-देशान्तर मे व्याप्त थी। सम्प्रदाय भेद से परे उनकी कीर्ति पताका समूचे जैन जगत में परचम फहरा रही थी। वे महापुरुष आकृति से भी रम्य थे। उनकी ब्रह्मतेज से दीप्त विहसती हुई आखो मे मानो स्नेह व कल्याण कामना का अमृत रस लहराता रहता, उनके आनन की मुस्कान भक्त घटो निहारते रहते, पर तृप्त नही हो पाते। बाल्यकाल मे ही दीक्षित उस साधक की प्रकृति भी कितनी सरल सहज कि उन्हें किसी मे दोष की कल्पना करना भी इष्ट नही लगता, देखने या सुनने मे रुचि तो बहुत दूर की बात थी। प्रभावक व्यक्तित्व का कृतित्व युगो-युगो तक साधको को प्रभावित करता रहेगा। 'सामायिक सघ' और 'स्वाध्याय सघ' उनके महान्

कृतित्व के स्वर्णिम अध्याय हैं।

ऐसे विराट् व्यक्तित्व का बोध तो अनुभवगम्य ही हो सकता है, शब्दो में नही गूथा जा सकता है । सक्षेप में यही कहा जा सकता है —

तुम्हारे नाम मे यश था तुम्हारे वचन मे रस था
त्याग और सयम की प्रतिमूर्ति, सारा युग नर बस मे था।

■

पंचाचार के आदर्श आराधक

• तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म सा

आचार्य की आठ सम्पदाओ मे पहली आचार सम्पदा है। जो सघ आज तक अक्षुण्ण चल रहा है वह विशिष्ट आचार्यों के आचार बल के कारण चल रहा है। तीर्थेश महावीर की परम्परा के अव्याबाध रूप से चलने का प्रमुख कारण है – उनकी आचारनिष्ठ साधना। आचार पाच है – ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार।

पूर्वसचित पुण्य का उदय है कि श्रेष्ठ गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी मसा. के सान्निध्य का हमे सुअवसर प्राप्त हुआ। वे पचाचार के आदर्श आराधक थे। उषाकाल की लालिमा से सन्ध्याकाल के धुधलके तक उनका सारा जीवन ज्ञानाचार के निर्मल प्रकाश से प्रकाशित था।

गुरुदेव का ज्ञान अगाध था। आगम, थोकड़े, इतिहास, सस्कृत, प्राकृत, तन्त्र-मन्त्र चाहे जिस विषय पर उनसे चर्चा की जा सकती थी। सिद्धान्तकौमुदी नामक व्याकरण ग्रथ उन्होने लघुवय मे पढ़ा था, किन्तु वृद्धावस्था मे भी उन्हे उसका ऐसा पक्का ज्ञान था, कि मानो वे उसके अधिकारी वैयाकरण हो। ज्ञान ही नही उनका साधक जीवन बरबस आगन्तुक को आकर्षित कर लेता था। भगवन्त ने २३ साल की युवावय मे केकड़ी मे शास्त्रो मे शुद्ध मान्यता क्या है, उसकी ध्वजा फहराई। अजमेर सम्मेलन में बड़े बड़े आचार्यों और सन्तप्रवरो द्वारा आचार्य भगवन्त की ज्ञान-गरिमा का आदर किया गया। सम्मेलन की अनेक समितियों मे आपको रखते हुए प्रायश्चित्त समिति का सयोजक नियुक्त किया गया। स्वय ज्ञानाराधन मे तत्पर गुरुदेव अपने शिष्यो मे भी इस प्रकार की प्रेरणा करते थे। पण्डित रत्न शुभेन्द्र मुनि जी के साथ हम सवाईमाधोपुर से सन् १९९१ के चातुर्मासोपरान्त पाली पहुँचे। गुरुदेव ने मुझे फरमाया-“महेन्द्र मुनि जी एक घण्टा सुनाते हैं, गौतम मुनि जी एक घण्टा सुनाते है, अब तू भी एक घण्टा बॉध ले। मैं अब पढ़ नही सकता इसलिए तुम मुझे निरन्तर सुनाते रहो। ” बुढ़ापे मे भी भगवन्त की स्वाध्याय एव जिनवाणी के प्रति कैसी निष्ठा! स्वय वाचन न कर सकते तो सन्तो से सुनते। भगवन्त ने हम सन्तो को भी खूब पढाया। मुझे याद है , गुरुदेव ने हमको प्रतिदिन एक-डेढ घण्टे निरन्तर पढाया। स्वस्थ रहते हुए एक भी दिन अवकाश नही । एक दिसम्बर उन्नीस सौ बयासी को जलगाव से विहार यात्रा प्रारम्भ हुई। कभी हमको विलम्ब हो गया, तो उपालम्भ मिला, परन्तु भगवन्त ने कभी देरी नही की। दशवैकालिक सूत्र और सस्कृत का अभ्यास प्रारम्भ करवाया। ज्ञान के प्रति भगवन्त की कैसी ललक थी! भगवन्त बचपन की उम्र से ज्ञानाराधन मे समय का सदुपयोग करते थे। सस्कारदाता बाबाजी हरखचन्द जी मसा से प्राप्त समय का सदुपयोग करने के सस्कार भगवन्त मे जीवनपर्यन्त रहे। उक्ति है -

क्षणश कणशश्च विद्या वित्त च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या, कणे नष्टे कुतो धनम्॥

एक-एक क्षण से समय की और एक-एक कण से वित्त की रक्षा करनी चाहिए। साधक का जीवन एक-एक क्षण का सदुपयोग करने वाला होता है। भगवन्त इसके आदर्श उदाहरण रहे हैं। उन्होंने दीक्षा के पश्चात् एक वर्ष में पाच शास्त्र कण्ठस्थ किये। ज्ञान तभी टिकता है जब उसमें ही कोई रम जाए, अन्यथा ज्ञान टिकता नहीं। गौर से

किया गया अध्ययन टिकता है इग्नोर (उपेक्षापूर्वक) किया गया अध्ययन टिक नहीं पाता।

वीरपुत्र श्री घेवरचन्द जी म.सा सन् १९८९ का चौमासा पूर्ण होने पर विहार करके आचार्य भगवन्त की स्वास्थ्य समाधि की पृच्छा करने कोसाणा पधारे। उन्होंने प्रसंगवश फरमाया–"भीनासर चातुर्मास में प्रतिदिन व्याख्यान सुनने जाता था तो भावविभोर होकर व्याख्यान सुनता था।" आचार्य श्री पद्मसागर जी म.सा भोपालगढ-जोधपुर मे प्रसग सुनाने लगे तो नागौर में आचार्यप्रवर के चरणो में किये गये अध्ययन की स्मृति करके गद्‌गद् हो गये। अन्य-अन्य परम्परा के सन्त ज्ञान की प्यास शान्त करने के लिए भगवन्त के चरणो मे प्रस्तुत रहते थे। ज्ञान के साथ अभिमान का न होना आचार्यप्रवर की मुख्य विशेषता थी। वह प्रसग कितना प्रेरक है जब चातुर्मास हेतु जयपुर भेजने से पहले खवासपुरा मे गुरुदेव ने फरमाया–"व्याख्यान के बाद श्रोताओ द्वारा की जाने वाली प्रशसा मे मुग्ध मत बन जाना। सूठ के गॉठे से कोई पसारी नही बन जाता।" साहित्य का विशाल ज्ञान है, जीवन मे आगम एकमेक हो गया है, प्रायश्चित्त ग्रन्थों के विशारद है, जैन इतिहास के प्राचीन स्रोतो की खोज कर समाज के समक्ष उपस्थित किया है। वे महापुरुष कहते है कि सूठ के गाठे से कोई पसारी नही बन जाता। बस यही लघुता प्रभुता दिलाने वाली है।

आपने देश के कोने-कोने मे स्वाध्याय का अलख जगाया। जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान और स्वाध्याय विद्यापीठ जैसी सस्थाओ की रूपरेखा समाज के समक्ष प्रस्तुत की। भगवन्त ने एक-एक व्यक्ति को श्रुतज्ञान से जोडकर आत्म-साधना मे बढ़ने की प्रेरणा की। ज्ञानाचार के शुद्ध आराधक थे पूज्य गुरुदेव।

ज्ञान का निर्मल पालन करने वाले साधक का दूसरा आचार दर्शनाचार है। सम्यक्दर्शन की आधारशिला है– सब प्राणियो को अपने समान देखना-समझना - सव्वभूयप्पभूयस्स सम्म भूयाइ पासओ ।

सम्यक्त्व की भूमिका मे पर की निन्दा नही हो सकती। उसमें सबके प्रति अपनापन होता है। पूज्य गुरुदेव ने भजन मे कहा भी है – "निन्दा विकथा नही पर घर की, जय जय हो रत्न मुनीश्वर की।" मैंने बचपन से सुना था कि यदि आपके द्वार की सीढ़ियॉ मैली है तो पड़ोसी की छत के कूड़े की आलोचना मत कीजिए। आचार्य भगवन्त का जीवन प्रेरणा प्रदान करता है कि हम पराये घर की चर्चा को प्रोत्साहन न दे। आचार्य श्री का सूत्र था गुणदर्शन, गुणवर्णन और गुणग्रहण। गुणग्रहण अपेक्षा से कह रहा हूँ, वरना गुण का प्रकटीकरण होता है । भगवन्त के रोम-रोम मे वीतराग वाणी रमी हुई थी। दर्शनाचार के आठ अगों का उन्होंने सम्यक् पालन किया।

गुरुदेव के चरणों मे लोगों का मस्तक श्रद्धा से झुक जाता था। मेरी दीक्षा के पश्चात् ब्यावर मे पुलिस का कोई उच्चाधिकारी एस पी या डी एस पी रात्रि मे गुरुदेव के दर्शनों हेतु आया। मै भी वहीं चरणो मे बैठा था। उस अधिकारी ने आचार्यदेव के चरणों मे वन्दन किया और बहुत ही गूढ ध्यान सम्बन्धी प्रश्न पूछे । गुरुदेव ने उनका ऐसा समाधान किया कि वह अधिकारी गद्‌गद् हो गया। वह जैन नही था, किन्तु अपने प्रश्नो का समाधान पाकर उसने कहा कि ऐसा सुन्दर समाधान तो स्वय साधना पथ पर चलने वाले साधक के पास ही हो सकता है।

चारित्राचार में पाच समिति एव तीन गुप्ति की आराधना आती है। किसी जीव की हिंसा न हो, इसके लिए आठ वर्ष की उम्र से ही रात्रि भोजन का त्याग किया। भगवन्त के अन्त समय तक चारित्र में दृढता बनी रही। उत्तराध्ययन सूत्र के २४ वें अध्ययन में उल्लेख है - 'तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे' अर्थात् गमन क्रिया में तन्मय होकर एव उसी को सम्मुख रखकर उपयोग पूर्वक चले। बातचीत न करे। उसी में उपयोग रहे। चलते समय साधक चार हाथ आगे की भूमि देखता हुआ चलता है। आचार्य भगवन्त का जीवन ईर्या समिति के सम्यक् पालन पर सदैव खरा

उतरा। भाषा समिति का पालन करते हुए एक-एक शब्द तोलकर बोलते थे। निष्प्रयोजन बोलना, अनावश्यक बोलना आपके स्वभाव मे था ही नही। भगवन्त एषणा समिति के निर्दोष पालन का भी पूरा ध्यान रखते थे। दवा भी कभी दोष वाली आ जाए तो प्रायश्चित्त देकर उसका शुद्धीकरण करवाते थे। अन्तिम समय में गुरुदेव ने आलोचना - प्रतिक्रमण का कितना सुन्दर रूप रखा, आपने निमाज मे देखा है, सुना है।

पानी मे रोटी चूरकर खाने का जिन्हे अभ्यास हो , उनके लिए माण्डले के दोष की सम्भावना ही कहाँ? स्वाद क्या होता है, इसे भगवन्त शायद जानते ही नही थे। या यू कहे आत्मरस मे निमग्न साधक को बाह्य रस आ ही नही सकता। वस्त्र-पात्र लेते-रखते समय आप पूरी यतना रखते थे। आज साधक भूल जाते हैं कि शरीर भी एक उपकरण है। वे दीवार का सहारा लेते हैं, परन्तु भगवन्त ने कभी टेका नही लिया। रात में विश्राम के पूर्व शरीर को पूजकर सोते।

बूदी में सन्तो द्वारा आग्रह किया जा रहा था, किन्तु भगवन्त की इतनी सजगता कि देखो, डॉक्टर कच्चे पानी से हाथ न धो ले। जयपुर से निवाई के मार्ग मे कौथून ग्राम मे रात भर पानी टपक रहा था। उस छोटे से स्थान से सामने कमरे मे जा सकते थे, पर भगवन्त का चिन्तन कि पानी की बूद मेरे जीव के समान है। ऐसा साधक कभी भी शरीर की सुविधा को प्रधानता नही दे सकता। हरिप्रसादजी एव रामदयाल जी वहा मौजूद थे। ७८ साल की उम्र में सारी रात बैठे निकाल दी गई, यह है चौथी समिति।

जीव अजीव की ओर देखता है तो पाप होता है , आस्रव होता है, बध होता है। जीव मुक्ति की ओर देखता है तब सवर होता है, निर्जरा होती है और मुक्ति की ओर चरण बढ़ते है। जिनका लक्ष्य आत्मा की शुद्ध दशा प्राप्त करना है वे साधक शरीर को क्लेश पहुँचाते हुए भी ग्लानि का अनुभव नही करते।

पाचवी समिति है परिष्ठापना। तीन किलोमीटर जाना है, सुबह-शाम जाना है, पर जाना है तो जाना ही है। क्यो, तो जीव-जन्तु रहित भूमि पर शरीर से निकलने वाले पदार्थ को परठना है । इससे आपने प्रेरणा ली कि शरीर को मल बर्दास्त नही तो आत्मा को कैसे मलिन होने दे।

सघनायक को अनुशासन के लिए कठोर भी बनना पड़ता है, पर उनके भीतर हित की भावना रहती है। वह शिष्य को डाटेगा तो भी हित की भावना से, यही मनोगुप्ति है। मन को ऐसा साधने पर देवता वन्दन करे, इसमे कोई आश्चर्य नही है। भगवन्त की साधना के कई-कई पहलू है। वे काया को सकुचित करके बैठ जाते। जिस करवट सो गये, करवट बदलते ही उठ जाते। यह सब चारित्र की निर्मल आराधना से होता है। निमाज मे सथारे के समय कोई प्रेरणा नही, किन्तु जैनेतर लोगो मे अहिंसा की भावना प्रस्फुटित होना और जीवहिंसा का त्याग करना, आपके चारित्राचार का ही तो प्रभाव था। आपने निसग रहकर श्रमणसघ को गुरुकुल बनाया। मोक्ष-मार्ग मे चलकर जो समीप आया उसे शरण दी। अनासक्त रहकर आचरण मे तत्परता रखी।

जोधपुर मे खरतरगच्छ के सन्त श्री मणिप्रभसागर जी कहने लगे – "हम विद्वत्ता के लिए नही , सरलता के लिए इनके पास आते है।" पाच समिति-तीन गुप्ति का निर्मल पालन करने वाला बारहवें गुणस्थान तक पहुँच सकता है और आचरण के अभाव मे पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का ज्ञान होने पर भी गुणस्थान मिथ्यात्व ही रह जाता है।

हमारा हर चरण मुक्ति की ओर बढ़े। भगवन्त ने अन्त समय तक हमसे कहा - "मर्यादा का पालन करना, आचार्य श्री रतनचन्द्र जी महाराज के इक्कीस बोल की मर्यादा सुरक्षित रखना और मैं खाली हाथ न चला जाऊँ इसका ध्यान रखना।" भगवन्त को सथारे रूपी कलश की अत्यन्त उत्कण्ठा थी। अग्लान भाव से सघ की सेवा करने वाला आचार्य जघन्य इसी भव मे, मध्यम दूसरे भव में और उत्कृष्ट तीन भव मे निश्चित मोक्ष में जाता है।

भगवन्त प्रेरणा करते कभी थकते नही थे। वे सारणा-वारणा-धारणा करते हमें जागरूक रहने की शिक्षा देते। आचार्य दीप समान होते हैं 'दीवसमा आयरिया', जो स्वय के जीवन को प्रकाशित करते हुए दूसरो के जीवन को प्रकाशित करते हैं। भगवन्त के जीवन से आज भी प्रेरणा मिलती है। प्रेरणा जिस किसी नाम से मिले वह चाहे सुदर्शन हो, कामदेव हो, अरणक या कुण्डकोलिक हो प्रेरणा आचार से मिलती है। भगवन्त बोलते या नही, उनका आचार बोलता था। आचार स्वय प्रेरणा करता है। सथारे को छोड़कर तेले से बडी तपस्या नही की, लेकिन उणोदरी, रस-परित्याग आदि तप करते रहे। उस महापुरुष ने चालीस वर्षों तक दोपहर की भिक्षा ग्रहण नही की। तली हुई चीजे, खटाई, आचार पातरे मे देखना पसन्द नही । कहा है – जिते रसे, जित सर्वम् – जिसने स्वाद को जीत लिया उसने सब कुछ जीत लिया।

स्वाद पर नियन्त्रण है तो चारो इन्द्रियाँ काबू मे रहेगी। आचार्य भगवन्त ने स्वाद पर विजय मिलायी। उनका सधा हुआ जीवन था। वे घटों एक आसन से बैठ सकते थे। उनका स्वय का जीवन निर्दोष था, दूसरो को विनय-वैयावृत्य और सेवा के सस्कार देकर आप आगे बढ़ाते।

सघ के प्रति समर्पण और स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार के प्रति निरन्तर प्रयास आज भी हमे प्रेरणा देते हैं। वीरपुत्र घेवरचन्दजी महाराज कहते—हस्ती गुरु की क्या पहिचान-सामायिक स्वाध्याय महान्। स्वाध्याय के प्रति भगवन्त की भावना देखिए, अन्त समय तक भगवन्त निरतर स्वाध्याय का पान करते रहे।

आपकी ध्यानसाधना उत्कृष्ट थी। मेड़ता मे एकान्त मे ध्यान करने पधारे एव कह गए कि इधर कोई नही आवे। एक भाई बिना जानकारी के कारण सयोग से उधर चला गया। उसने देखा कि भगवन्त एक पैर पर खड़े ध्यान कर रहे थे।

गुरुदेव ने जानकी नगर, इन्दौर मे मुझे ध्यान सिखाना प्रारम्भ किया। कन्हैयालाल जी लोढा सिखा रहे थे। गुरुदेव पाट पर विराजे हुये थे । भगवन्त उनकी ध्यान पद्धति को जानने के लिए पाटे से उतर कर नीचे विराज गये। कैसी महानता ! कैसी सरलता !

सरलता साधुता की कसौटी है - से जहावि अणगारे उज्जुकडे, नियागपडिवन्न, अमाय कुव्वमाणे । साधक मे तीन विशेष बाते चाहिए— सरलता, लक्ष्योन्मुखता और पूर्ण पुरुषार्थ। वहा बेईमानी नही, लुकाव छिपाव नही। साधक सरल है, लक्ष्य के प्रति सदैव सजग है और माया नहीं है तो वह सच्चा वीर्याचार का पालक है। अपने वीर्य को छुपाना माया है। पुरुषार्थ का गोपन करना भी माया है। ज्योतिष शास्त्रानुसार तीसरा घर पुरुषार्थ का बताया जाता है। भगवन्त की कुण्डली देखकर कहा जा सकता है कि उनका तीसरा घर बलिष्ठ था। उस महापुरुष ने बचपन से पुरुषार्थ किया और अन्त समय तक पुरुषार्थ छोड़ा नही। सघ-सेवा मे कितना पुरुषार्थ किया। लम्बे विहार का पुरुषार्थ और फिर ध्यान, मौन और स्वाध्याय में पुरुषार्थ।

भगवन्त ने बचपन से वृद्धावस्था तक कैसा वीर्य फोड़ा। उन्होने किसी रूप मे वीर्य को नही छुपाया। सुन्दर पदार्थ सुन्दर नजर आयेगा। मिश्री को कही से चखो, मिठास देगी। लड्डू का कही से कोर खाए वह मीठा ही होगा। मति की स्मृति नही की जाती और मरण का स्मरण नही किया जाता। भगवन्त ने पचाचार का सम्यक् पालन करके हमको आचार का पाठ पढ़ाया। उनका जीवन हमें युगों युगों तक प्रेरणा देगा। गुणवर्णन व गुणदर्शन के लिये हमारी तैयारी होगी तभी हम उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण कर सकेगे। (१३ मई २००३ के प्रवचन से सकलित)

■

आइच्चेसु अहियं पयासयरा

• शासनप्रभाविका श्री मैना सुन्दरीजी म सा

जे सउ चन्द उगावहि, सूरज चढहि हजार।
एव चानण हो दिया, गुरु बिन घोर अन्धार।

आचार्य सघ का प्रहरी होता है। सघन अधकार को जैसे सूर्य की चमचमाती रश्मियाँ नष्ट कर देती हैं वैसे ही श्रुत, शील और बुद्धि सम्पन्न आचार्य चतुर्विध सघ के अज्ञान अधकार को नष्ट कर देते है।

आचार्य गुणो के पुज होते है। आचार्य श्री हस्ती का जीवन सूर्य की तरह तेजस्वी, चन्द्र की तरह सौम्य और सिह की भाति निर्भीक था।

आचार्य श्री के जीवन के क्षण -क्षण मे और मन के अणु-अणु मे मधुरता थी।

आचार्य श्री सस्कृति के सच्चे सरक्षक, जन-जन के पथ-प्रदर्शक और आलोक स्तम्भ थे।

आचार्य धर्म-सघ का पिता होता है। वे तीर्थंकर तो नही , पर तीर्थंकर के समान होते है। तीर्थंकर के अभाव मे चतुर्विध सघ का सचालन व सवर्धन करते हैं। भूले-भटके राहियो को सही दिशा का सूचन करते है।

आचार्य श्री दीपक की तरह होते है। कहा है-"दीवसमा आयरिया।" वे स्वय जलकर दूसरे दीपको को भी जलाते है। आचार्य आचारनिष्ठ महापुरुष होते है। पचाचार की सुदृढ़ नीव पर ही उनके जीवन-महल का निर्माण होता है। आचार्य श्री हस्ती ऐसे ही महापुरुष थे।

समुद्र के जलकणो की तथा हिमालय के परमाणु की तो गणना करना फिर भी सहज व सरल है, किन्तु आचार्यों के गुणो की गणना करना असभव-सा प्रतीत होता है। आचार्य श्री कुशल चिकित्सक थे। वे भव-व्याधियो से ग्रस्त व त्रस्त मानव-समाज को सम्यक्त्व रूपी औषधि देकर भवरोग से मुक्त करते थे।

आचार्य श्री 'सागरवर गभीरा' थे, 'चन्देसु निम्मलयरा' थे, 'आइच्चेसु अहिय पयासयरा' थे।

आचार्य श्री हस्ती चतुर्विध सघ की मुकुटमणि थे। जिनशासन की दिव्य दिनमणि थे और रत्नवश की पवित्र चिन्तामणि थे। आचार्य हस्ती व्यक्ति नही, सस्था नही, आचार्य नही, किन्तु युगपुरुष थे। उन्होने युग की विषम परिस्थितियो को देखा, समझा और पाटा।

आचार्य श्री की वाणी मे ओज, हृदय मे पवित्रता और साधना मे उत्कर्ष था। आपका बाह्य व्यक्तित्व जितना नयनाभिराम था, उससे भी कई गुणा अधिक उनका अन्त जीवन मनोभिराम था। लघु काया एव मझला कद, दीप्तिमान निर्मल श्यामवर्ण, प्रशस्त भाल, उन्नत शीर्ष, नुकीली ऊँची नाक, प्रेम पीयूष बरसाते उनके दिव्य नेत्र देखते ही दर्शकों को मत्र मुग्ध बनाते थे।

आप स्वय बहुत विशिष्ट दर्जे के साहित्यकार थे और अपने शिष्य-शिष्याओ में भी यही गुण देखना चाहते थे।

होगी कोई ४०-४५ वर्ष पुरानी बात। गुरु भगवत ने मुझे पूछा "महासती मैना जी, दिन को आप जो पढ़ती हैं,

क्या रात्रि को सोते समय उसका स्मरण आपको होता है।" मैंने कहा- "हाँ भगवन् ! मुझे दिन की पठित बाते रात को बहुत याद आती हैं।"

गुरुदेव ने फरमाया - "उसे सुबह उठते ही, नित्यकर्म से निवृत्त होकर लिख लिया करना।" मेरी गुरुणी जी श्री मदन कवर जी म.सा. ने भी मुझे पूरा सहयोग दिया और मैंने गुरु आज्ञा का अक्षरश पालन किया।

सर्दियों के दिनो मे बिछौने के लिए लाई हुयी कतरन मे से कागज की लीरियाँ निकाल-निकाल कर मैंने लिखना प्रारम्भ किया।

आज मैं जो कुछ हूँ, चतुर्विध सघ के समक्ष हूँ। यह सब मेरी नही, उस घड़ने वाले महापुरुष की अनूठी कृपा-दृष्टि का फल है, जो आप देख रहे है।

आपने तो बचपन की घड़ियों मे ही दृढ सकल्प कर लिया था कि मुझे तो कर्म-बधनो से मुक्त होना है। साथ ही जो प्राणी गलत रूढ़ियो मे बधे हुए हैं, उनको भी व्यसन-फैशन के बन्धनो से मुक्त कराना है।

बधन - मुक्ति के लिए उन्होने शास्त्रों का स्वय गहन अध्ययन किया और जो शास्त्र पढ़ने से भयभीत थे और पढ़ने से कतराते थे, जिनकी ऐसी धारणाएँ बन चुकी थी कि - 'पढ़े सूत्र तो मेरे पुत्र' ऐसे लोगो को भयमुक्त कर सैकड़ों की सख्या मे स्वाध्यायी बनाये।

वे स्वाध्यायी दूर-दूर देश और विदेशो में जाकर पर्युषण मे जिन-धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे है।

आज के इस भौतिक युग मे जहाँ चारो तरफ हिंसा, व्यसन एव स्वार्थ-वृत्ति का जहा देखो दौर चल रहा है, वहाँ आचार्य भगवन्त ने सत्य, अहिंसा, शाकाहार, व्यसन-मुक्ति और प्रामाणिकता का उपदेश देकर आदर्श समाज की स्थापना करने का प्रयत्न किया। कल तक जिन्हे देख-देख कर आप-हम खुशी से झूम उठते थे, वे सघ के छत्रपति, जैन-जगत के प्रखर सूर्य रूपा-केवल के अनुपम लाल और मा भारती के बाल, आज हमारे बीच मे भौतिक पिंड से विद्यमान नही हैं, किन्तु उनके उपदेशो की सर्चलाइट आज भी हमे प्रकाशित कर रही है। कवि के शब्दो मे -

धन्य जीवन है तुम्हारा दीप बनकर तम जले हो।
विश्व का तम तोम हरने, ज्यो शमा का तन दले हो।
अम्बर का सितारा कहूँ, या धरती का रत्न प्यारा कहूँ।
त्याग का नजारा कहूँ या डूबता का सहारा कहूँ।
धीर वीर निर्भीक सत्य के, अनुपम अटल विहारा।
तुम मर कर भी अमर हो गए, जय हो हस्ती तुम्हारी।"

वे मानव मात्र के मसीहा, दया के देवता, भारतीय सस्कृति के देदीप्यमान रत्न, सन्तरूपी मणिमाला की दिव्यमणि, साधु समाज की ढाल, बात के धनी, सच्चे योगी और शासन सूर्य थे।

युगपुरुष के रूप मे आचार्य श्री हस्ती का जीवन सदैव स्मरणीय रहेगा। वे मेरे जीवन के निर्माता, आगम के ज्ञाता, जन - जन के त्राता थे। उनको -

"श्रद्धा पीड़ा भरे नयन, मन करते हैं, अन्तिम नमन।"

अन्त मे-"मात कहूँ कि तात कहूँ, सखा कहूँ जिनराज, जे कहूँ ते, ओछ्यो बध्यो, मैं मान्यो गुरुराज।"

■

असीम उपकारक आचार्य श्री

• प श्री जीवनमुनिजी म सा

भौतिक शरीर से भले ही वे नही रहे, पर उनकी अनुपम श्रुत व चारित्र रूपी यश ध्वजा आज भी लहरा रही है। वे दिन, वह समय, वे पल जो उनकी पावन सन्निधि मे बीते थे, अकस्मात् तरोताजा हो उठे। मेरे जीवन के दृढाधार रूप मे वे मेरे समक्ष उपस्थित हुए थे। वीतराग का पावन पथ उन्होने ही तो मुझे प्रदान किया था। जिन-शासन के वीर सैनिक रूप मे उन्होने ही तो मुझे सन्निधि दी थी। वह दिन आज मेरे हृदय मे कमनीयता से सजोया हुआ है, जब पूज्य प्रवर ने अपने शिष्यत्व रूप मे मुझे स्वीकार करके खुशियो की बहार बरसायी थी मुझ पर। अहो ! कितनी दिव्यता थी, उनके मुखमण्डल पर। मैं तो प्रथम सदर्शन और समिलन मे ही उनके यशस्वी मुक्तिपथ पर गतिमान चरणो मे सर्वतोभावेन समर्पित हो गया था। क्या नही मिला उनसे, सब कुछ पाया। प्यार, दुलार, ममत्व, अपनापन सब ही तो दिया और सबसे महत्त्वपूर्ण जो उन्होने दिया, वह था—जीवन का कल्याण और आनदकारी मुक्ति का पथ। श्रुत और चारित्र की अनमोल निधि उन्होने अति प्रेमलता से, भाव-विभोर होकर दी और मैंने ली। कैसे भूल सकता हूँ उनका वह दिव्यदान। वह तो मेरे जीवन मे, हृदय मे प्राणो मे आज भी झकृत हो रहा है।

पूज्यप्रवर का ज्ञानकोष आगम-ग्रन्थो के सम्पादन, जैन-धर्म का मौलिक इतिहास, प्रवचन-साहित्य आदि-आदि साहित्यिक गुलदस्तो से सजा हुआ है , जो उनकी गहन, गम्भीर दार्शनिकता, सूक्ष्म दृष्टिकोणता और तत्त्वज्ञान की गहरी पकड़ को प्रकाशित करता है। ज्ञान का फल लघुता एव विनय बताया गया है। पूज्यप्रवर आचार्य पद की गरिमा-महिमा और महत्ता से सयुक्त होकर भी विनय की साकार प्रतिमूर्ति थे।

"आचार्य प्रवर सघ नायक होकर भी
विनय, विनम्रता की दिव्य मूर्ति थे।
ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय तप-सयम की एक भव्य विभूति थे।
बीसवी सदी के इस युग पुरुष की महिमा अपरम्पार है।
गुरु गुरुपद धारी होकर भी,
सचमुच लघुता की प्रतिमूर्ति थे।।"

पूज्य प्रवर एक परम्परा विशेष से आबद्ध होकर भी निराबद्ध थे। जहा-जहा भी, जिन-जिन क्षेत्रो मे पूज्य श्री का परिभ्रमण हुआ वहा-वहा उन्होने विषमता की , राग-द्वेष की जलती आग को बुझाने का प्रयास किया और समता के अपनत्व के सुनहरे सुरभित फूल ही बिछाये। इसके साथ ही अपने समस्त उपासकों को भी समताभाव का अमृत पिलाया। सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा के पीछे उनका यही आत्मीय भाव रहा था कि जिनशासन के उपासक वर्ग मे समताभाव का सचार होना चाहिये। इसी शुभत्वभावेन पूज्य प्रवर श्री ने सामायिक-स्वाध्याय का प्रचार गाव-गाव और घर-घर किया।

कितनी गहन और महान् थी—उनकी साधना। हो भी क्यों नही ? जीवन के शैशव से ही वे जिन शासन के उपासक हो गये थे। बीस वर्ष की अत्यल्प, लघु उम्र मे वे जिन-शासन के नायकत्व के उच्च धवल शिखर पर आरूढ़ हो गये थे। कितने ही अनुभवो से गुजर कर उनके दिव्य यशस्वी जीवन का निर्माण हुआ था। यौवन की

चचल अल्हड़ देहरी पर खड़े होकर भी वे प्रौढ़त्व की गम्भीरता से संयुक्त हो गये थे। वहा तो अथाह, अतल, असीम सागर-सी गहनता, गम्भीरता, विशालता ही थी। ऐसे दिव्य व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी को 'गुरु' रूप में पाकर मुझे क्यो न गर्व होगा। यह तो भाग्य की, कर्मों की विचित्रता ही रही कि मुझे उनका पूर्ण सान्निध्य नही मिल पाया। फिर भी पूज्य प्रवर श्री के अनन्य उपकारों को मैं भूल नही पाया हूँ, न ही भुला सकता हूँ।

जिन शासन के महान् ज्योतिर्धर आचार्यों की जगमगाती दिव्य परम्परा में पूज्य प्रवर आचार्य श्री का जीवन और कृतित्व अपना एक सुयोग्य स्थान स्थापित किये हुए है और युग-युगो तक रहेगा भी।

पूज्य प्रवर आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. न केवल नाम से 'हस्ती' थे, अपितु कृतित्व में भी 'हस्ती' थे। यदि यूँ कहूँ तो भी कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि 'हत्थीसु एरावणमाहु' अर्थात् वे ऐरावत हस्ती के समान अतिशय पुण्यशाली महान् पुण्य प्रभावक थे। जैसे—हस्तियो मे ऐरावत हस्ती सर्वश्रेष्ठ और महान् माना जाता है, वैसे ही जिनशासन की गौरवमयी परम्परा मे पूज्य श्री भी श्रेष्ठता के धारक माने जाते है।

■

असीम श्रद्धा के केन्द्र मेरे गुरु भगवन्त

* श्री मोफतराज पी मुणोत

मेरी असीम श्रद्धा के केन्द्र पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा का जब भी स्मरण करता हूँ, मन प्रमोद एव उत्साह से भर जाता है। पूज्य गुरुदेव के रोम-रोम मे सन्तपना था। उन्होंने उच्च से उच्चकोटि के सन्त का जीवन जीया। वे अप्रमत्तता, निर्लिप्तता और असाम्प्रदायिकता की प्रतिमूर्ति थे। गुरुदेव के जीवन मे कथनी एव करनी मे मैंने एक प्रतिशत भी अन्तर नही पाया। वे ज्ञान एव क्रिया के बेजोड़ सगम थे। उनकी साधना का मेरी दृष्टि मे कोई सानी नही।

मेरे पिता श्री पुखराजजी मुणोत गुरुदेव के पक्के श्रावक थे । मैं भी बचपन में गुरुदेव के दर्शन करने जाया करता था, किन्तु अधिक निकटता सन् १९८२ के जलगाँव चातुर्मास से आयी। मै गुरुदेव के ज्यो ज्यो निकट आया, त्यो त्यो श्रद्धा की अगाधता बढ़ती ही गयी। वे सद्गुणो के पुज थे। मुझे लगा, मै अपने जीवन को गुरुदेव के सम्पर्क से उन्नत बना सकता हूँ। मै याद करता हूँ, तो अपने जीवन मे सकारात्मक परिवर्तन का अनुभव कर हर्षित होता हूँ।

सन् १९८६ ई के पीपाड़ चातुर्मास मे मुझे गुरुदेव के सान्निध्य मे रहने का अवसर अधिक मिला। चातुर्मास मे मेरी धर्मपत्नी शरद चन्द्रिका ने अठाई तप किया। मै इस खुशी मे भोज का आयोजन करना चाहता था। भगवन्त को इस बात का पता लगा तो फरमाया - "आप लोगो ने शादी-ब्याह महगे कर दिए, जीवन-मरण महगा कर दिया, तपस्या को तो महँगा मत करो।" गुरुदेव के सकेत को मैं समझ गया और अठाई तप के उपलक्ष्य मे भोज का विचार छोड़ दिया। उन्होने इस उपलक्ष्य मे मुझे कुछ त्याग करने की बात कही। मैंने सिगरेट छोड़ दी। उसके बाद सिगरेट पीने की कभी इच्छा ही नही हुई।

पाली मे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के अध्यक्षीय दायित्व की चर्चा चली। तत्कालीन सघाध्यक्ष डॉ सम्पतसिंहजी भाण्डावत, सघ-सरक्षक श्री नथमलजी हीरावत, सघ-कार्याध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना आदि सुश्रावको ने मुझसे दायित्व स्वीकार करने को कहा। मैंने उनसे कहा मुझे यह प्रपच लगता है। मै बम्बई मे रहता हूँ और सघ का कार्य-क्षेत्र राजस्थान मे अधिक है। मैंने अपनी स्थिति सघ-सदस्यो के समक्ष स्पष्ट करते हुये कहा कि मै न तो नियमित सामायिक ही करता हूँ और न मुझे धार्मिक-क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी है। बम्बई जाकर तो मै दुनिया भूल जाता हूँ। अत मेरी बजाय सघ की रीति-नीति जानने - समझने वाले व्यक्ति का चयन करना चाहिए। सघ के सुज्ञ श्रावको को मेरे उत्तर से सन्तोष हुआ या नही, वे मुझे आचार्य भगवन्त के पास ले गये। वहाँ भी चर्चा चल निकली। श्रावको की विचार - चर्चा को सुनकर गुरुदेव ने मात्र इतना ही फरमाया -"सघ-सेवा भी कर्म-निर्जरा का बड़ा साधन है" अल्पभाषी गुरुदेव की बात मेरी समझ मे तब नही आयी, किन्तु अब मुझे इस वचन पर पूरा विश्वास है। निःस्वार्थ सघ-सेवा अपने आत्म-विकास मे निश्चित ही सहायक है। सघ के अध्यक्ष पद पर रहते हुए मेरे जीवन मे कई परिवर्तन हुए। किसी भी कारण से सघ का पद लज्जित न हो, इसलिए चलने, बैठने, बात करने या अन्य प्रवृत्तियो मे परिवर्तन का अनुभव हुआ। क्रोध और अहकार के भावो पर भी नियन्त्रण हुआ। मुझे यह ध्यान रहने लगा कि कोई कार्य ऐसा नही करना, जिससे सघ की गरिमा कम हो। सघ के अधिकारी के रूप

में कोई भी बात कहने से पूर्व सोचना पड़ता है । इस प्रकार मेरे जीवन में पूर्वापेक्षया काफी सुधार हुआ। मैं युवक सघ के सदस्यों को कहूँ कि आप प्रामाणिक बनो, तो पहले मैं अपने में प्रामाणिकता ढूढने लगा। इस तरह सहजरूप से परिवर्तन होने लगा।

सघ का दायित्व जब सम्हाला, तब गुरुदेव ने तीन श्लोक कहे थे, जो मुझे आज भी याद हैं-

पापान् निवारयति योजयते हिताय,
गुह्य निगूहति गणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गत च न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिद प्रवदन्ति तज्ज्ञा ॥

सस्कृत श्लोक का हार्द मेरी समझ के बाहर था, अत मैंने निवेदन किया - "भगवन् ! इसका क्या अर्थ है ?" आचार्य भगवन्त ने फरमाया - "तत्त्व के ज्ञाता पुरुषों ने सन्मित्र के लक्षण कहे हैं कि सन्मित्र अपने मित्र को पाप कार्यों से हटाता है और हित कार्यों मे लगाता है। रहस्य की बातो को छुपाकर रखता है तथा उसके गुणों को उजागर करता है विपत्ति आने पर साथ नही छोड़ता, अपितु सहयोग करता है।" गुरुदेव ने फरमाया - "तुम सघ के मित्र हो, मित्र बने रहना।" गुरुदेव ने आगे फरमाया -

गच्छत स्खलन क्वापि भवत्येव प्रमादत ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जना ॥

चलते हुए कही पर भी असावधानी या प्रमाद के कारण स्खलना होती ही है । दुर्जन उसे देखकर हँसते हैं तथा सज्जन सहारा देते हैं, उठाते हैं।

तीसरा पद्य था —

धन दे तन को राखिए, तन दे राखिए लाज।
धन दे तन दे लाज दे, एक धर्म रे काज ॥

गुरुदेव के वे वचन मुझे आज भी आनन्दानुभूति कराते है। सघ-हितैषी सघ के मित्र ही होते हैं। यदि आपसी मनमुटाव के कारण सघ को नुकसान होता है तो यह सघ-हितैषिता नही है।

मैं पहले थोड़ा थोड़ा आचार्य रजनीश के सम्पर्क मे भी था, किन्तु गुरुदेव के सम्पर्क मे आने के पश्चात् अन्यत्र कही जाने की इच्छा ही नही हुई। आचार्य भगवन्त की दृष्टि स्पष्ट थी। एक बार आचार्य रजनीश के लेख को लेकर विचार चल रहा था, तब गुरुदेव ने फरमाया - "जिसकी कथनी करनी मे फर्क हो, उसका प्रचार-प्रसार उचित नही।" एक बार मैंने गुरुदेव से पूछा - "तपश्चर्या करने वाले क्या काया को कष्ट नही देते ?" गुरुदेव ने फरमाया - "तपस्या मे कर्म-निर्जरा का लक्ष्य होता है, इसलिये तप करने वाला कष्ट का नही, आनन्द का अनुभव करता है। तप का आराधक तो यही अनुभव करता है कि मैं यह शरीर नही, वरन् इसमें स्थित आत्मा हूँ, यह मानव देह मोक्ष पाने का साधन है, तपाग्नि से पूर्व सचित कर्मों को जलाकर मैं अपना शुद्ध बुद्ध स्वरूप प्रगट कर सकूँ। इसी भावना से तप करने वाला साधक कभी कष्टानुभव नही करता।"

तप के उद्देश्य विषयक गुरुदेव के इस समाधान से मुझे भी तप के प्रति प्रतीति व तपाराधन की इच्छा हुई और भगवन्त की कृपा से मुझे प्रयोगात्मक रूप में यह आनन्द प्राप्त करने का अवसर भी मिला।

गुरुदेव विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। विषम परिस्थितियों मे भी निर्णय लेने की गुरुदेव में अद्भुत क्षमता थी। शीतलमुनि जी के प्रकरण में उनका निर्णय सघ-अनुशासन एव निश्छल साधना-जीवन का पक्षधर था।

शीतलमुनिजी के बूँदी चातुर्मास के समय गुरुदेव की आज्ञा का उल्लघन करने पर गुरुदेव ने फरमाया - "मुनिजी को मैंने मौन रहने की आज्ञा प्रदान की। मुनिजी को मेरी आज्ञा पालने मे कष्ट हो रहा है, इसमें मुझे हिंसा का आभास होता है। अब मैं उनको आज्ञा नही दूगा।" यह गुरुदेव की साधना-निष्ठ जीवन शैली का परिचायक था।

सम्प्रदाय के सबध में एक बार विचार प्रकट करते हुए गुरुदेव ने फरमाया - "सम्प्रदाय एक पारिवारिक व्यवस्था है। अपने परिवार की उन्नति व प्रगति करना अपना फर्ज होता है। पर अपनी उन्नति किसी की अवनति पर नहीं होनी चाहिये । इसी प्रकार अपनी प्रशसा किसी की निन्दा पर एव अपना सुख किसी के दु ख पर आश्रित नही होना चाहिए।" कितने उच्च विचार थे उस महापुरुष के। गुरुदेव के मन मे किसी भी सम्प्रदाय के प्रति विद्वेष एव विरोध नही था, अपितु गुणि-सन्तों को देखकर उनके चेहरे पर सदैव प्रमोद भाव की मुस्कान झलकती थी।

गुरुदेव सकेत की भाषा में बात कहते थे। धीरे-धीरे उनके सकेतों को समझने लगा। उनके द्वारा कहे गये कथन का रहस्य समझ में आने पर मुझे प्रसन्नता का अनुभव होता था।

सथारा ग्रहण करने के पूर्व निमाज मे पूज्य गुरुदेव ने जो भोलावण दी, वह मुझे प्रतिपल स्मरण रहती है। उन्होंने फरमाया था - "मैंने तो इस सघ का सचालन मात्र मामूली सकेतों से बगैर कोई टटा लगाये कर लिया। मेरे श्रावक भी इतने श्रद्धालु थे कि मुझे कभी कहने का अवसर नही दिया। आगे भी श्रावक अपना धर्म खुद निभायेगे और सन्तो को श्रावको के कामो मे नही डालेगे तो ही सघ की गरिमा कायम रहेगी। " उनकी यह भोलावण मेरे जीवन का अग बन गई, उनका यह उपदेश मेरे लिये बहुत बड़ा मन्त्र बन गया।

गुरुदेव के सथारे का दृश्य अद्‌भुत था। उनकी योजनाबद्ध साधना अनूठी थी। सथारा देखकर मुझे लगा कि मृत्यु का वरण कितनी सुन्दरता से किया जा सकता है। आचार्य भगवन्त का सथारा मृत्यु पर विजय का सफल प्रयोग था। मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ जो गुरुदेव का आशीर्वाद पा सका। मैं उस महापुरुष का जब भी स्मरण करता हूँ तो मुझे अलौकिक शान्ति एव आनन्द का अनुभव होता है। ऐसे श्रद्धास्पद गुरुवर्य को कोटिश वन्दन-नमन।

मार्च, १९९८

• मुणोतविला, वेस्ट कम्पाउण्ड लेन,
६३-के भूलाभाई देसाई रोड, मुम्बई ४०००२६

कृपालु करुणानिधान आचार्यश्री

• श्री रतनलाल बाफना

भगवान महावीर के शासन की विशुद्ध स्थानकवासी परम्परा में गौरवशाली रत्नवश का अभूतपूर्व योगदान रहा है । इस परम्परा के ज्ञान-क्रियानिष्ठ आचार्यों ने अपनी उत्कृष्ट सयम-साधना के बल पर जन-जन के हृदय-पटल पर गहरी छाप अकित की है। रत्नवश के सप्तम पट्टधर सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक युगपुरुष आचार्य श्री हस्ती का नाम तो बीसवी शताब्दी के इतिहास में अमर बन गया। ७१ वर्षों के दीर्घ सयमी-जीवन मे उन्होंने गाव-गाव, घर-घर और व्यक्ति-व्यक्ति को धर्म से जोड़ने का महान् कार्य किया। उनका ज्ञान बहुत गहरा था, चारित्र निर्मल था, दया और करुणा तो उनके रोम-रोम से टपकती थी। ब्रह्मचर्य का तेज उनके मुख-मण्डल पर चमकता था। जो भी उनके श्री चरणो मे आता, शान्ति, आनन्द और प्रसन्नता से भर जाता था। मेरा अहोभाग्य रहा कि मैंने ऐसे परिवार मे जन्म पाया जहा पीढियो से रत्नवश का सम्बन्ध रहा। आचार्य भगवन्त की तो मुझ पर बाल्यकाल से ही असीम कृपादृष्टि रही। । आज मैं जो कुछ भी सघ-सेवा, समाज-सेवा और मानव-सेवा के कार्य कर पा रहा हूँ वह उस महापुरुष की ही प्रेरणा और आशीर्वाद का प्रतिफल है। आचार्य भगवन्त के जीवन को मुझे बहुत नजदीक से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनका जीवन गुणो का सागर था।

'समय गोयम मा पमायए' भगवान महावीर के इस आदेश को आचार्य भगवन्त ने जीवन मे इस तरह पाला कि आप एक-एक क्षण का सदुपयोग करते थे। समय की क्या कीमत होती है, उन्होंने अच्छी तरह से जाना था। '**तवेसु वा उत्तम बंभचेर**' नववाड सहित अखड रूप से ब्रह्मचर्य का पालन कर वे असीम आत्म-शक्ति के धारक बन गये थे। ब्रह्मचर्य और साधना की ताकत का मूर्त रूप उनमें देखा गया।

एक सप्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी पूरा जैन समाज उन्हे आदर-सम्मान की नज़र से देखता था। उनमें साप्रदायिकता की बू बिल्कुल नही थी। उनके मुखारविंद से निकला हर शब्द मत्र और हर कार्य चमत्कार था। असभव से असभव कार्य सहज मे सभव हो जाते थे। वे मौन-साधना के प्रबल पक्षधर थे। उन्हे मौन-साधना के द्वारा वचन-सिद्धि प्राप्त थी । सीमित समय मे हित, मित, प्रिय भाषा उनकी खास विशेषता थी।

आचार्य श्री ने अपने जीवन मे दो कार्य किये—स्वकल्याण एव परकल्याण । नवनीत के समान कोमल हृदय वाले आचार्यप्रवर साधना मे व्रज के समान कठोर थे। आपने सुदीर्घ सत-जीवन मे कभी भी किसी प्रकार की मर्यादा भग नही होने दी। आप भगवान महावीर के वफादार एव युगमनीषी सत थे। वे अपने जीवन के कुशल शिल्पकार थे। पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन को सार्थक करने की ऐसी सुन्दर योजना बनायी जिसे बिरले महापुरुष ही पूर्ण कर पाते होगे। सघ-उत्कर्ष, साहित्य-सर्जन, वीतराग के प्रति वफादारी, पर-दुख कातरता, अध्यात्म मे निष्ठा आदि हर क्षेत्र मे आप अद्वितीय साधक थे। सामायिक-स्वाध्याय का अभियान उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है। मन की बात जानने की उनमे अद्भुत शक्ति थी। आचार्यदेव तप, जप एव सयम-साधना के शिखर पुरुष थे। लघुता में प्रभुता छिपी थी। उन्हे नाम की भूख बिल्कुल न थी। पूर्वाचार्यों व परपरा के प्रति निष्ठावान थे। खुद कष्ट झेलकर पर-सकटमोचक थे।

गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा थी। युवावय में उत्तराध्ययन सूत्र के अनुवाद आदि के लेखन का सौभाग्य

प्राप्त हुआ। उन करुणानिधान की अब स्मृतियाँ ही शेष हैं। सन् १९७९ के जलगाँव चातुर्मास में, उसके पूर्व एव पश्चात् आपकी सन्निधि में रहकर जो आनन्द मिला वह आज भी मन को प्रमुदित करता है। गुरुदेव ने मुझे परिग्रह-मर्यादा, सयम, तप एव त्याग के लिये प्रेरित किया। आयम्बिल, उपवास, पहरसी आदि तप की प्रेरणा गुरुदेव से ही मिली। उन्हीं के सदुपदेशो से मैं मासाहारियो को शाकाहारी बनाने के लिये प्रवृत्त हुआ। अहिंसा से जुड़े इस अभियान मे मुझे बहुत आनन्द मिला। कई मासाहारी होटल शाकाहारी होटलों मे बदल गये। कोसाणा चातुर्मास मे आपसे प्रतिमास प्रतिपूर्ण पौषध का नियम ग्रहण किया, जो उन्ही के कृपाप्रसाद से आज भी चल रहा है। स्वाध्याय एव सामायिक आपके जीवन के मिशन थे। मुझे भी करुणानिधान ने इन प्रवृत्तियो से जोड़कर मेरा जीवन बदला।

मैं तो उन्हे इस युग का भग्रवान समझता हूँ -

मैंने अपनी इन आँखों मे सच ऐसे इंसान को देखा है।
जिसके बारे मे सब कहते है, धरती पर भगवान को देखा है।

कृपानिधान पूज्य गुरुदेव के रोम-रोम से करुणा की वर्षा होती थी। शब्द-शब्द मे जीवदया के भाव प्रतिध्वनित होते थे, जीवन के एक-एक क्षण का उन्होने महत्त्व समझा। प्राणिमात्र के कल्याण के लिए चिन्तनशील आत्मसाधक एव अध्यात्मयोगी ने मुझे अन्तिम सन्देश दिया - "सघ - सेवा, स्वाध्याय-साधना मे कही कसर न पड़े, इसका खयाल रखना।" उनका यह सदेश आज भी मेरे हृदय मे टकसाल मे ढले सिक्के की तरह उट्टकित है।

तत्कालीन सघाध्यक्ष श्री मोफतराजजी मुणोत के बाद सघाध्यक्ष किसे बनाया जाय ? सघ मे यह बड़ा विकट प्रश्न था। सरक्षक-मण्डल के सभी सदस्यो की भावना थी कि इस कार्यभार को मैं सम्भाल लूँ। मेरी मन स्थिति इसके लिये बिल्कुल तैयार नही थी। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म सा का चातुर्मास पीपाड़ सिटी मे था। सघ की मीटिंग मे बहुत प्रयास करने पर भी सफलता नही मिली। जयपुर से सघ के आधार स्तम्भ सुश्रावक श्री नथमलजी सा हीरावत को बुलाया गया। उन्होने भी खूब समझाया, परन्तु मैं किसी भी परिस्थिति मे यह पद लेने को तैयार नही था। जलगाव मे मेरे परिवारजनो से भी स्वीकृति ले ली गई, फिर भी मेरी मानसिकता नही बनी। प्रात काल जब हम वापस रवाना होने के लिये आचार्य श्री के दर्शनार्थ उपस्थित हुए तो अचानक मुझे गुरुदेव के अन्तिम सन्देश का स्मरण हो आया कि सघ-सेवा का खयाल रखना। मेरे मन ने मोड़ लिया और सोचा कि मुझे गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त है, फिर मै क्यो घबरा रहा हूँ। मैने तत्काल सघ सरक्षकगण का आग्रह स्वीकार कर लिया। मोफतराजजी ने वही मुझे बाहो मे भरकर उठा लिया। पूरे सघ मे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। मै इसमे अपनी योग्यता को नही, पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एव कृपाप्रसाद को ही कारण समझता हूँ कि मुझे सघ-सेवक बनने का अवसर मिला।

ऐसे महिमामडित अध्यात्मयोगी इतिहास पुरुष के जितने गुणानुवाद किये जाये कम हैं। वह महान् आत्मा जहाँ भी हो, मुझे सत्कार्यों की ओर प्रेरित करती रहे, यही विनम्र भावना है।

इस युग का सौभाग्य रहा जो इस युग मे गुरुवर जन्मे।
अपना यह सौभाग्य रहा, गुरुवर के युग मे हम जनमे॥
कल युग मे भी यह सत युग गुरुवर के नाम से जाना जायेगा।
कभी महावीर की श्रेणी मे गुरुवर का नाम भी आयेगा॥

—नयनतारा, सुभाष चौक, जलगाँव

■

प्रेम एवं करुणा के सागर : गुरु महाराज

• श्री नथमल हीरावत

गुरु महाराज आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के रोम-रोम मे से प्रेम एव करुणा की अजस्र धारा बहती थी। उनके पास जो कोई भी जाता, वह उनकी प्रेम एव करुणा की धारा से प्रक्षालित एव प्रभावित हो ही जाता था। आवश्यक नही था कि वे बातचीत करें ही, फिर भी घण्टों उनके पास बैठने का मन करता था। उन लोगों के प्रति भी उनकी प्रेम भावना उतनी ही थी जिनसे वे कम बोलते थे।

मै भी उन हजारो व्यक्तियो मे से एक हूँ, जिन पर गुरुदेव का उपकार रहा। उन्होंने मुझे सही दिशा की ओर मुख करके खड़ा कर दिया, यह मेरा अहोभाग्य है । उन्होंने ही मुझे स्वाध्याय से जोड़ा। गुरु महाराज के सम्पर्क में मैं जीवन के प्रारम्भ से ही आ गया था। सवत् २०११ मे जब २४-२५ साल का था, तब और अधिक जुड़ाव हो गया, जो निरन्तर बढ़ता रहा। गुरुदेव का इतना प्रेम रहा, जिसे शब्दो मे प्रकट नही किया जा सकता। शब्दो में प्रकट करना उसे सीमित बनाता है। मैं ही नही हर एक व्यक्ति यही कहेगा कि उनकी बहुत कृपा थी। जो कामना-पूर्ति की दृष्टि से गुरुदेव के पास पहुचते थे, उनके मूल्याकन में कृपादृष्टि कम-अधिक हो सकती है, अन्यथा आत्मिक-उन्नयन की दृष्टि से उनका उपदेश सबके लिए महत्वपूर्ण होता था। गुरुदेव के मौन होती, कोई बात नही करते तब भी उनके सान्निध्य मे बैठकर आनन्द का अनुभव होता।

गुरु महाराज बहुत ही सरलहृदय थे। कभी कोई बात होती तो वे फरमाते - "नत्थू (नथमल) मुझसे कोई क्यों झूठ बोलेगा?" अत्यन्त सरलता थी। गुरु महाराज का अपने विरोधियो के प्रति भी करुणा भाव था । उनके मन में कभी अन्यथा भाव नही आता था। गुरुदेव ने मुझे आत्मीयता दी एव सघ-सेवा से जोड़ा।

गुरुमहाराज का स्वाध्याय पर बड़ा बल था। उन्होने स्वय कितने ही व्यक्तियो को थोकड़े सिखाए, सद् ग्रन्थों का स्वाध्याय करना सिखाया। सन्तो का सग तो समय-समय पर ही सम्भव होता है, किन्तु सद्ग्रन्थ का साथ कभी भी हो सकता है। गुरुदेव ज्ञान एव आचार को विशेष महत्त्व देते थे। आचरण सुधारने के लिए उनकी प्रेरणा अद्भुत होती थी। गुरु महाराज के योगदान को तीन स्तरो पर समझा जा सकता है—१ निज की साधना के रूप मे । २ जैन धर्मावलम्बियों के प्रति योगदान के रूप मे। ३ प्राणिमात्र के कल्याण के रूप मे। सगठन की प्रेरणा के पीछे गुरुदेव का दृष्टिकोण था कि सब एक दूसरे की प्रेरणा से अपने जीवन को आगे बढ़ाएँ।

गुरुमहाराज के दर्शन ही मगल थे, उनके जीवन की तो क्या बात कहें । वे किसी से राग-द्वेष बढ़ाना नही चाहते थे। किसी के द्वारा आक्षेप लगाये जाने पर भी उनके मन मे कभी द्वेष का भाव नही आया। गुणिजनों को देखकर एव उनके गुणों के सम्बन्ध मे सुनकर गुरु महाराज प्रमुदित होते थे।

आपमे अपने-पराये का भेदभाव नहीं था। सबको समान रूप से प्रेरणा करते थे। अपने भी यदि गलत कार्य करते तो वे विरोध करने या कहने में हिचकिचाते नही थे तथा किसी भी सम्प्रदाय का साधु यदि आचारनिष्ठ एव गुण - सम्पन्न होता तो वे उसकी प्रशसा किए बिना नहीं रहते। उनका हृदय उदार था। गुरु महाराज गुणनिधान थे। उनके गुणों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

वे आध्यात्मिक सन्त थे। यौवन काल में 'मेरे अन्तर भया प्रकाश', 'मै हूँ उस नगरी का भूप' आदि आध्यात्मिक पदो की रचना उनकी आध्यात्मिक उन्नयन की अन्त रुचि को प्रकट करती है। गुरुदेव समाज एव व्यक्तियों को प्रेरणा देने के साथ आत्म-साधना के प्रति भी सदैव जागरूक रहे। उनसे सबको सहज प्रेरणा मिलती थी। गुरुदेव के प्रवचन भी बहुत प्रभावी एव प्रेरणाप्रद होते थे। गुरुदेव के प्रति श्रद्धा से लोगों का आत्मबल बढ़ा एव जीवन मे आगे बढने को उद्यत हुए । गुरुदेव का स्मरण मेरे जीवन मे नवीन - स्फुरणा एव प्रेरणा प्रदान करता है।

२०७०, हीरावत भवन, बारह गणगौर का रास्ता, जयपुर

■

कृपालु आत्मार्थी गुरुदेव

• श्री इन्दरचन्द हीरावत

परम श्रद्धेय आचार्य गुरुदेव अनन्त कृपालु थे। उनकी मेरे पर बहुत कृपा थी। उनके सान्निध्य मे बैठकर मैं अपने को धन्य मानता था। वे मेरे जीवन के निर्माता रहे। मैं क्या कहूँ, गुरुदेव के बारे मे, उनकी जब भी याद आती है, तो आँखो मे प्रमोद के आँसू छलक आते है।

एक बार मेरा मन हुआ कि दूसरे लोग अठाई और मासखमण तक तप कर लेते है और मै तो एक उपवास मे ही ढीला हो जाता हूँ। मैंने गुरुदेव से भी यह बात कही। उन्होने कहा, 'तेरा मन है क्या अठाई करने का?' मैंने कहा, 'हाँ, गुरुदेव' गुरुदेव ने कहा कि तुम उपासरे में रहकर ही उपवास करो। मैंने गुरुदेव से उपवास व्रत लिया और वहाँ ही पौषध करके रात्रि विश्राम किया। पाँच उपवास होने तक तो मुझे पता ही नही चला कि मैंने उपवास किया है, सहज मे ही अठाई तप भी हो गया।

गुरुदेव ने सचमुच मे मेरे जीवन का निर्माण किया। मेरे मे कई गलत शौक थे। वे सब गुरुदेव की सगति, समझाइश और उनके प्रति निष्ठा से छूटते चले गए। मैंने उनसे कई तरह के नियम लिए। आज भी मै उनका पूरी दृढता से पालन करता हूँ, उसमे कभी ढिलाई नही आने दी। यही मेरे जीवन निर्माण का सम्बल बना। सामायिक रोजाना करता हूँ। सामायिक और स्वाध्याय का गुरुदेव ने ऐसा शखनाद किया है कि पहले जहाँ व्याख्यान के समय रुपये मे चार आना लोग सामायिक में बैठते थे वहाँ अब बारह आना लोग सामायिक मे बैठने लगे हैं।

मैंने बचपन से ही उन्हे देखा। दीक्षा के बाद वे अपना अधिकतर समय पढ़ाई मे ही लगाते थे। इधर-उधर ध्यान नही देते थे। इससे उनकी योग्यता बढ़ती चली गई।

मैंने गुरुदेव मे यह भी विशेषता देखी कि यदि किसी ने अन्य गुरु से आम्नाय ले रखी है तो वे उसे गुरु आम्नाय नही दिलाते थे। कोई उनसे गुरु आम्नाय दिलाने की बात कहता तो भी वे स्वय उसे ना कर देते थे। उनका कहना था कि धर्म के मार्ग पर चलने के लिए किसी एक को गुरु मानना पर्याप्त है। मैंने बहुत साधुओ को देखा, किन्तु गुरुदेव मे यह अनोखी विशेषता देखी।

मुझे दस बारह वर्षों तक जयपुर समाज का अध्यक्ष रहने का सौभाग्य मिला। किन्तु मैंने ऐसे आचार्य नही देखे जो स्वभाव से सरल और पक्के आत्मार्थी हो। गुरुदेव मे मैंने यह पाया कि वे स्वभाव से सरल और इतने ऊँचे आत्मार्थी थे कि उसका अन्दाजा लगाना हमारे जैसो के लिए मुश्किल है। आचार्यश्री के बारे मे लोग ऐसा मानते थे कि रात्रि मे दो बजे से चार बजे के बीच कई बार चमका सा दिखाई देता था। हम पौषध करते थे, तब हमने भी वह चमका देखा। आचार्यश्री मे दिव्यशक्ति थी।

एक बार मैं दर्शन करने गया तब गुरुदेव प्रतिदिन की भाति ध्यान में विराजमान थे। मै सतो के दर्शन कर आचार्य गुरुदेव के समीप जाकर बैठ गया। ध्यान खुलने के पश्चात् उन्होंने सहज भाव से मुझे परिग्रह की मर्यादा करा दी। मै उस समय कलकत्ता मे काम करता था। मैंने परिग्रह की मर्यादा की, जो शीघ्र ही पूरी हो गई। मर्यादा

के अलावा जो भी पैसा आता उसे मैं ज्ञानखाते या दानखाते मे डाल देता था। वह क्रम आज भी चलता है। बचे हुए पैसे का उपयोग मैंने मानवता और समाज की सेवा में करना श्रेयस्कर समझा। रत्न स्वाध्याय भवन, कुशल भूधर ट्रस्ट आदि का निर्माण इसलिए आसानी से हो सका। जो भी उनके सम्पर्क मे आता वह उनका ही होकर रह जाता, कोई उनको भूलता नही था, न जाने क्या जादू था उनमे। बच्चों से उनको बहुत प्रेम था। बच्चे भी उनसे प्रभावित रहते थे।

गुरुदेव जलगाँव से दूसरा चातुर्मास पूर्ण करके इन्दौर की ओर आ रहे थे, तब मै विहार मे साथ रहा। विहार में बड़ा आनन्द रहा। उस समय एक बार आचार्यश्री की माला खो गई। वे खोजने भी गए, परन्तु मिली नही। मेरे पास माला थी। मैंने कहा, 'गुरुदेव, यह माला ले लीजिए।' उन्होने पूछा, 'यह कितने रुपये की है?' मैंने सही-सही मूल्य बताते हुए कहा, 'अन्नदाता, केवल तीन सौ रुपये की है।' गुरुदेव ने फरमाया, 'इतनी महगी माला सतो को शोभा नही देती।' उन्होने वह माला नही ली।

आचार्यश्री देवता पुरुष थे। जलगाँव से इन्दौर होते हुए राजस्थान की ओर पधारे। मैं उनको तीनों समय वन्दना करता था। मैं सोता हूँ या जागता हूँ तब उन्हे आज भी वन्दना करता हूँ। मैंने साप को बचाने की घटना भी देखी है। कुछ लोग लाठी से साँप को मार रहे थे। गुरुदेव बोले, 'क्यो मारते हो? इसे छोड़ दो।' वे लोग बोले, 'बचाना ही है तो ले जाओ इसे अपनी झोली मे।' गुरुदेव उस सर्प को झोली मे लेकर चल दिए। लगभग दो किलोमीटर आगे ले जाकर उसे छोड़ दिया। वे करुणाशील भी थे और निडर भी।

गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर मैंने बहुत कुछ पाया। मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने गुरुदेव का कहा हुआ टाला नही। यही बात मेरे जीवन-निर्माण मे काम आई। अब तो गुरुदेव की यादे ही शेष रह गई हैं।

(उल्लेखनीय है कि सघ-सरक्षक सुश्रावक श्री इन्दरचन्द जी सा.हीरावत से मार्च ९८ मे मुम्बई में उनके घर पर जो बातचीत हुई थी, उसी के अश यहाँ प्रकाशित किए गए हैं। इसके पश्चात् सन् १९९९ में श्रीमान् हीरावत सा.का देहावसान हो गया। हीरावत सा एक उदारमना समाजसेवी श्रावकरत्न थे। गुरुदेव के अनन्य भक्त हीरावत सा.की भी अब स्मृतियाँ शेष रह गई है।—सम्पादक)

—१३०१, पंचरत्ना बिल्डिंग, आपेरा हाउस, मुम्बई ४००००४

■

श्रद्धा के कल्पवृक्ष थे आचार्य श्री

• न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब करीब चार दशक पहले घोड़ों के चौक, जोधपुर के स्थानक मे विराज रहे थे। उस समय मुझे आदेश दिया कि तुमको पच्चीस बोल कठस्थ कर सुनाना है। 'पच्चीस बोल का थोकड़ा' पुस्तक से मैं हर रोज एक-दो बोल याद कर सुनाने लगा तथा प्रश्नो का उत्तर भी देना शुरू हुआ। यह क्रम चलता रहा। आचार्य श्री का आदेश था, पालन करना ही था। पच्चीस बोल कठस्थ किये। अब तो उनमें से थोड़े ही याद हैं। ऐसा याद पड़ता है कि आचार्य श्री ने उस समय जीव के दो भेद बताए—ससारी और सिद्ध। मुझे यह समझाया कि जो कर्म सहित हैं, वे ससारी जीव हैं और ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म रहित है, वे सिद्ध जीव हैं। पाप के अठारह भेद तो मुझे शीघ्र ही याद हो गये। सक्षेप मे बताया कि जो प्राणी को मैला करे, उसे पाप कहते हैं। आश्रव, सवर, निर्जरा के भेद उदाहरणों द्वारा विस्तृत रूप से समझाए। श्रावक के बारह व्रतों को अगीकार कर मर्यादा मे चलने का आदेश दिया।

बहुत वर्षों पहले जोधपुर शहर में स्थित आहोर की हवेली में आचार्य श्री अपनी सत-मडली के साथ विराज रहे थे। उस समय आचार्य श्री गहन अध्ययन मे लगे हुए थे। मैं विद्यार्थी था। प्रात प्रवचन सुनने जाता था। व्याख्यान मधुर शैली मे होता था। शास्त्रो का प्रवचन होता था। मेरे मन मे कई शकाएँ जाग्रत हुईं। प्रश्न पूछना चाहता था, प्रश्नो का समाधान चाहता था। लेकिन फिर सकोचवश सोचता कि मेरे प्रश्नो से कही गुरुदेव नाराज तो नही हो जायेगे। साहस कर मैंने पूछा कि आप केवल महामत्र नवकार की आराधना का ही उपदेश क्यो देते हैं, अन्य मत्र-तत्र का उपदेश नही देते। आचार्य श्री ने फरमाया कि परमेष्ठी भगवन्तो का अधिष्ठान नवकार महामत्र है। इसमें अरिहन्त के गुण, सिद्ध के गुण, आचार्य के गुण व साधु के गुणों का कथन है। योग्यता के कारण व्यक्ति का महत्त्व है। अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, ये पाचो गुणपुञ्ज हैं। जिस व्यक्ति मे इनके गुण दिखाई दें, उसकी शरण में जाने से मुक्ति प्राप्त होती है। आचार्य श्री ने फरमाया कि देव, गुरु और धर्म के प्रति प्रकृष्ट निष्ठा प्रकट करने हेतु नवकार महामत्र में विश्वास किया जाता है। आचार्य श्री के दर्शन हेतु जो भी आता था उसको महामत्र नवकार का प्रतिदिन अधिक से अधिक जाप करने का फरमाते और महामत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते।

चमत्कारी मगलपाठ का उल्लेख करना चन्द पक्तियों मे सम्भव नही है। ऐसे कई प्रसग हैं कि आचार्य श्री के मगल पाठ से मेरा हित हुआ, चिन्ताए दूर हुईं और मानसिक शान्ति मिली।

. आचार्य श्री के सान्निध्य के प्रत्येक क्षण मेरी स्मृति में सजीव हैं। आचार्य श्री की सरलता, गुणग्राही दृष्टि, व्यापक चिन्तन एव गहन अध्ययन की अनूठी छाप आपके दर्शन तथा सम्पर्क से सहज ही मेरे पर पड़ी। मेरे अज्ञानान्धकार को दूर कर आप श्री ने ज्ञान का प्रकाश दिया।

मेरे स्वय के जीवन की कई घटनाए हैं, जिनका विस्तृत उल्लेख करना सभव नही है। प्रसग तो कई ऐसे हैं कि आप श्री की आज्ञा व आदेशों की पालना से मेरा हित हुआ। मैं अपनी स्मृतियों के पिछले पृष्ठ खोल कर पढ़ने का प्रयास करता हूँ तो श्रद्धा का सागर उमड़ता है। मेरे जीवन की कुछ घटनाए जो आचार्य श्री ने भविष्य द्रष्टा होने से सकेत की उनका विवरण दे रहा हूँ।

भविष्य द्रष्टा—करीब ३४ वर्ष पहले जब आचार्य श्री घोडों के चौक में विराज रहे थे, मैं बाहर भ्रमण हेतु जाने का कार्यक्रम बना कर धर्मपत्नी के साथ दर्शन करने व मागलिक श्रवण करने पहुँचा। आचार्य श्री के मुख से सहज ही निकला-अभी संत यहा विराज रहे हैं, सघ का कार्य एव धार्मिक अध्ययन करो। मै असमजस में पड़ गया। यात्रा का कार्यक्रम पूरा बन चुका था। पुन निवेदन करने पर आचार्य श्री ने सघ-सेवा और धार्मिक अध्ययन करने की बात दोहराई। मैने जोधपुर से बाहर जाना स्थगित कर दिया। घटनाक्रम इस प्रकार घटित हुआ कि मेरा द्वितीय पुत्र पढ़ाई में बहुत होशियार था। परीक्षा में ऊँचा स्थान प्राप्त करने वाला था, किन्तु वह इस बार प्रेक्टिकल के कारण असफल रहा। यह सूचना दूसरे दिन परीक्षा फल आने पर ज्ञात हुई। वह निराश हो गया, मानसिक सतुलन भी बिगड़ने लगा। ऐसे मे मेरे अलावा उसको सान्त्वना देने व धैर्य बधाने वाला परिवार का दूसरा कोई सदस्य नही था। उस समय अनर्थ होने की सभावना बन गई थी। आचार्य श्री की आज्ञा का पालन कर जोधपुर के बाहर जाने की यात्रा स्थगित करना उचित रहा। मुझे लगा, परिवार पर आसन्न सकट टल गया। वे दिव्य ज्ञानी थे और भावी के द्रष्टा थे।

श्रद्धा के कल्पवृक्ष —करीब २४ वर्ष पूर्व आचार्य श्री सतो के साथ पावटा मे मेरे बगले में विराज रहे थे। मेरी व मेरी धर्मपत्नी की आचार्य श्री के प्रति पूर्ण निष्ठा थी, फिर भी मेरी धर्मपत्नी मगलवार को हनुमानजी का एव शुक्रवार को सतोषी माता का एकाशन करती थी। एक दिन रामदेव जी का और पूर्णिमा को सत्यनारायण जी का व्रत करती थी। हम दोनो आचार्य श्री के दर्शन हेतु ऊपर के कमरे में गये। मेरे मुँह से निकल गया 'सद्धा परम दुल्लहा।' आचार्य श्री ने पूछा, क्या बात है? तो मैंने आचार्य श्री को अपनी धर्मपत्नी का अन्य देवी-देवताओ में विश्वास होने की बात कही। आचार्य श्री ने फरमाया— "बाई तुम्हारे किस बात की कमी है? सब आनन्द है। दुनियाभर के असख्य देवी देवता ही नही, वरन् देवेन्द्र भी जिनके चरणों में झुक कर अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं, उनके भक्त होकर भी सासारिक देवी देवताओ की उपासना करने का क्या लक्ष्य ? एकाशन ही करना है तो जैनो का एकाशना करो। जिससे कर्म निर्जरा होने से सहज ही आनन्द और समाधान मिलेगा।" उसके पश्चात् मेरी धर्मपत्नी ने मगलवार, शुक्रवार आदि के एकाशन बन्द कर दिये। कुछ ही समय पश्चात् हमारी चिन्ता अनुकूल समाधान भी पा गई।

वचन सिद्धि–राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से मैं सेवानिवृत्त होने के पश्चात् अपनी धर्मपत्नी के साथ आचार्य श्री के दर्शन हेतु अजमेर गया। मैं विक्रम सवत् व मारवाड़ सम्वत् भिन्न भिन्न होने से ६२ की बजाय ६१ वर्ष की उम्र मे सेवानिवृत्त हो गया था। आचार्य श्री को मैंने सेवानिवृत्त हो जाने का निवेदन किया। आचार्य श्री ने फरमाया—"अभी सेवानिवृत्त होने का समय नही आया है।" मै तो सेवानिवृत्त हो चुका था, पर क्या कहता। किन्तु गुरुदेव के वचनो मे सिद्धि थी। सेवानिवृत्तिके बाद मुझे एक बड़े विवाद को निपटाने के लिये पच नियुक्त किया गया। आर्थिक दृष्टि से यह कार्य उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से भी अच्छा था। इसके पश्चात् मैंने राष्ट्रीय कानून के तहत गठित सलाहकार मण्डल के सदस्य का कार्य सात वर्ष तक किया। सन् १९८८ में पाँच साल के लिये मुझे अध्यक्ष, राज्य आयोग उपभोक्ता सरक्षण राजस्थान नियुक्त किया गया। आचार्य श्री की वचनसिद्धि प्रत्यक्ष हुई और वाणी सत्य प्रतीत हुई।

• निर्भय एव प्रभावी साधक

सूर्यनगरी जोधपुर शहर की पुरानी आबादी में सवाईसिंह जी की पोल (सिंहपोल) पोकरण के पूर्व जागीरदार श्री सवाईसिंह जी की थी, जिसको विक्रम सवत् १९७२ दिनाक १७१०१९१५ को पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा., पूज्य

श्री ज्ञानचन्दजी म.सा. एव पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. के श्रावकों ने धर्माराधन हेतु खरीदा था। यहाँ पर श्रावकों के द्वारा सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, दयावत आदि दैनिक धार्मिक कार्यक्रम शान्ति पूर्वक होते थे। समय-समय पर सत-मुनिवरों के चातुर्मास भी यहाँ पर बराबर होते रहे, क्योंकि धर्म-आराधना हेतु यह उचित व सुखदायक भवन था। मरुधर श्रावक-मण्डल एव उक्त तीनो सम्प्रदायों के श्रावकों मे कुछ मुद्दो को लेकर उक्त सिंहपोल के बारे में विवाद उत्पन्न हो गया। न्यायालय तक विवाद पहुँच गया। अन्तत कुछ धर्मप्रेमी बन्धुओ ने दोनो पक्षों के बीच समझौता कराने हेतु ओसवाल समाज के दो प्रतिष्ठित एव निष्पक्ष सदस्य श्री मगरूप चन्द सा भण्डारी व श्री दानचन्द सा भण्डारी जो स्थानकवासी समाज के नही थे, नियुक्त किये गए। दोनो पचो ने सबधित पक्षो को सुनकर व पत्रावली आदि का अवलोकन कर इस भवन को पूज्य श्री श्रीलालजी म.सा , पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी म सा एव पूज्य श्री रत्न चन्द्र जी म सा के श्रावको (अनुयायियों) की सम्पत्ति होने का पच निर्णय दिया और इस सबध मे घोषणा भी की।

सन् १९४० के पच फैसले के पश्चात् भवन का ताला न्यायालय के आदेश से खोल दिया गया। तत्पश्चात् यह भवन धार्मिक कार्यों हेतु उपयोग मे आना प्रारभ हुआ।

पूज्य आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म सा ने सवत् २००२ मे मूलसिंह जी के नोहरे, मोतीचौक जोधपुर मे चातुर्मास किया। श्रावक-श्राविकाओ की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए प्रवचन आप आहोर की हवेली में फरमाते थे। कुछ श्रावकगण सिंहपोल में भी धर्माराधन करते थे। चातुर्मास के दौरान श्रावको के निवेदन पर पूज्य आचार्यप्रवर ने पर्युषण के प्रथम दिन अपने वरिष्ठ सन्त श्री लक्ष्मीचन्दजी म सा एव श्री माणकमुनिजी म.सा को सिंहपोल मे धर्माराधन कराने हेतु भेजा। कुछ महानुभाव पच फैसले से असतुष्ट थे, अत वे पहले से ही नाराज थे। उक्त दोनो सन्तो के वहा पधारने से उनका विरोध उग्र हो गया। ऐसा याद पड़ता है कि सायकाल प्रतिक्रमण के समय सिंहपोल के बाहर चन्द महानुभावों ने एकत्रित होकर व्यवधान पैदा करना शुरु किया और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। विरोध प्रदर्शन करने के अनुचित तरीके भी अपनाये। उसी समय पूज्य आचार्यप्रवर के पास उन्होने तार भी भिजवाये, जिसमे सन्तो को सिंहपोल से वापस बुलाने का आग्रह था। दोनों सन्त पर्युषण की समाप्ति पर वापस पूज्य आचार्यप्रवर के पास चले आए।

चातुर्मास-समाप्ति के पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर विहार कर सिंहपोल पधारे। असतुष्ट महानुभाव अपने रवैये पर डटे रहे और प्रतिदिन प्रात काल प्रवचन के समय सिंहपोल के बाहर शिष्टाचार का उल्लघन कर अशोभनीय नारे लगाते रहे और हो हल्ला करते रहे, जिसके फलस्वरूप प्रवचन सुनने मे बाधा उत्पन्न हुई। पूज्य आचार्यप्रवर समभाव में दृढ प्रतिज्ञ थे। 'ओम शान्ति ओम शान्ति' की प्रार्थना बोलना आपको प्रिय था। ऐसा कई दिनो तक चलता रहा। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने श्रावको को भी समता व शाति रखने के निर्देश दिये। सम्प्रदाय के प्रति निष्ठावान रत्नवश के सुश्रावको ने पूज्य आचार्यप्रवर के आदेश व निर्देशों की पालना कर उस समय पूर्णशाति रखी।

स्थडिल व अन्य कार्यों हेतु पूज्य आचार्यप्रवर एव सन्तों को कठिनाई का सामना करना पड़ता था। सिंहपोल के प्रवास के समय कई महानुभावों ने विरोध प्रकट करने व बदनाम करने के लिये कई गलत, झूठी व मनगढत अफवाहें भी फैलाई, किन्तु पूज्य आचार्यप्रवर गगाजल के समान पवित्र, परोपकारी , सयम के आदर्श प्रतीक, आत्म विश्वासी, भविष्य द्रष्टा, एकान्त व शान्तिप्रिय परमयोगी महान् सन्त थे। वे इन अफवाहों से कब घबराने वाले थे। उनके आध्यात्मिक तेज, त्याग, एकता और समतामय ज्ञान-ध्यान में कोई किसी भी प्रकार की क्षति नही पहुँचा

सकता था।

पूज्य आचार्यप्रवर ने कुछ समय पश्चात् सिंहपोल से विहार किया और सिरे बाजार होते हुए मुथा जी के मदिर पधारे। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब पूज्य आचार्यप्रवर अपनी सन्त-मण्डली सहित लखारों के बास की ओर मुड़ने लगे। (क्योंकि नागौरी गेट जाने का यह सीधा रास्ता है।) उस समय श्रद्धालु सुश्रावकों ने पूज्य आचार्यप्रवर से निवेदन किया कि आप कपड़ा बाजार, कटला बाजार से होते हुए पधारें। श्रद्धालु सुश्रावको को उत्पात की आशका थी। पूज्य आचार्यप्रवर ने श्रावकों की विनति को ध्यान में रखकर कपड़ा बाजार होते हुए प्रस्थान किया। उस समय हमने देखा कि कतिपय प्रमुख विरोधी श्रावक बाजार में दुकानों पर बैठे हुए थे, परन्तु उन्होने विहार मे कोई अशोभनीय प्रदर्शन नही किया। भला कर भी कौन सकता था? पूज्य आचार्यप्रवर समता-साधना के धनी धीर, गभीर और महान् सत थे।

आचार्यप्रवर की यह मान्यता थी कि उचित रीति से शासन करने वाले को बहुत सुनना और कम बोलना चाहिए। ऐसा करने में शास्ता को सफलताश्री स्वय वरण करती है। आचार्य श्री सम्प्रदाय के सकुचित दायरे मे विश्वास नही करते थे। जब कभी स्थानकवासी सम्प्रदायो मे श्रमण समाचारी के सबध मे समस्याएँ उत्पन्न हुईं अथवा अलग धारणाएँ बनी, उस समय उनको सुलझाया और समता का प्रयास किया तथा आपसी प्रेम को बनाए रखने का सदेश दिया।

धार्मिक क्षेत्र मे नारी समाज को जागरूक किया। श्राविका समाज मे ज्ञानपूर्वक क्रिया की आवश्यकता पर बल दिया। रूढ़िवाद एव जड़तामयी भावनाओ मे ज्ञान ही परिवर्तन करने मे समर्थ है, ऐसा सदुपदेश दिया। गुरुदेव ने श्रावको के पारस्परिक विवाद को कम किया तथा उन्हे उस मार्ग पर चलने का सदेश दिया जिससे समाज का उत्थान और सगठन मजबूत बने। आचार्य श्री के चिन्तन मे विशालता या उदारता को स्थान था, सकीर्णता को नही।

मैंने अनन्त आस्था के केन्द्र आचार्य श्री के सबध मे थोड़ा लिखने का प्रयास किया है। आचार्य श्री के गुण अनन्त थे और मैं उन गुणो का वर्णन करने मे असमर्थ हूँ। आचार्य श्री सयम प्रदाता, प्रेरणा के पावन स्रोत, विवेक के शाश्वत सरोवर, साधना पथ के अमर साधक, ध्यान-मौन साधना के प्रबल पक्षधर, साम्प्रदायिक सौहार्द व समता के विश्वासी, श्रमण सस्कृति के महान् सन्त, विनय और विवेक के शाश्वत सरोवर, सरलता की साकारमूर्ति और जीवन पथ-प्रदर्शक युग पुरुष थे।

२६ जून १९९८

पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय एवं
पूर्व अध्यक्ष राज्य आयोग, उपभोक्ता संरक्षण, राजस्थान
चन्दन, पावटा बी-२ रोड, जोधपुर (राज.)

■

चुम्बकीय शक्ति के धनी : पूज्य गुरुदेव

• डॉ सम्पतसिंह भाण्डावत

पूज्य गुरुदेव की मुझ पर व मेरे परिवार पर असीम कृपा थी। आज जो कुछ भी धार्मिक प्रवृत्तियाँ एव विचार मेरे व मेरे परिवार वालो मे है, यह सब उनकी महती कृपा का फल है।

पूज्य गुरुदेव आध्यात्मिक गुरु थे। गुरु शब्द के अर्थ की गरिमा कितनी है, मै नही जानता, किन्तु जैन परम्परा के अनुसार गुरु का गौरव अतुलनीय है। यदि गुरु प्राप्त ही न हो तो व्यक्ति का जन्म सच्चे अर्थों मे व्यर्थ है।

स हि विद्यान न जनयति तदस्य श्रेष्ठ जन्म।
मातापितरौ तु शरीरमेव जनयत ॥

माता-पिता शरीर को अवश्य जन्म देते है, किन्तु वास्तविक जन्म गुरु से होता है, जिसे शास्त्रकारो ने श्रेष्ठ जन्म कहा है।

सच्चे मायने मे पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा मेरे सद्गुरु थे। उन्होने मेरे जीवन को इस तरह से ढाला कि मेरे पास शब्द नही है कि मै उनका गुणगान कर सकूँ, किन्तु मेरे मन मे ऐसी कुछ बाते है जिनका मैं अवश्य उल्लेख करना चाहता हूँ।

पूज्य गुरुदेव जब सवाईमाधोपुर विराज रहे थे, तब आगामी चातुर्मास रेनबो हाउस, जोधपुर मे करने हेतु निवेदन किया। गुरुदेव मुस्कुराये और कहने लगे कि "अरे भोलिया ! थारो बगलो तो किराये दियो हुओ है।" जब मैने गुरुदेव से अनुरोध किया कि आपकी कृपा हो जाय तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप चातुर्मास रेनबो हाउस मे करेगे।

उसी वक्त मै जोधपुर आया तो पता चला कि जो खनिज विभाग वाले किरायेदार थे, वे हफ्ता भर मे खाली कर देगे। मै दौड़ा-दौड़ा पूज्य गुरुदेव की सेवा मे पहुँचा और अर्ज किया कि गुरुदेव बगला खाली हो गया है। आपको वहाँ चातुर्मास करना होगा , गुरुदेव की मौन स्वीकृति हो गई और सन् १९८४ का चातुर्मास रेनबो हाउस मे हुआ। इस चातुर्मास से मेरे परिवार को एव मुझे धर्मक्रिया मे सक्रिय रूप से जुड़ने का अनोखा लाभ मिला। कोर्ट से लगभग पूरे चार माह अवकाश लेकर आपके सान्निध्य का लाभ लेते हुए जो आनन्द मिला उसे शब्दो मे प्रस्तुत नही कर सकता। मैंने उस समय आपको निकट से देखा। आपके असाम्प्रदायिकता , गुणियो के प्रति प्रमोदभाव, साधना के प्रति सजगता, अल्पभाषिता, अप्रमत्तता आदि अनेक गुणो ने मुझे आकर्षित किया।

पूज्य गुरुदेव अनुशासनप्रिय थे। आप समय का पूरा अर्थात् एक-एक मिनट का सदुपयोग करते थे।

अ भा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के १५ वर्षों तक कार्याध्यक्ष एव अध्यक्ष पद का दायित्व वहन करते हुए मैंने देखा कि आप कितने निस्पृह, विवेकशील एव साधना के सजग प्रहरी हैं। आपने सयम की निर्मल पालना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। आप भक्तों के पीछे नही थे, भक्त आपके लिए लालायित रहे।

पूज्य गुरुदेव मे चुम्बकीय शक्ति थी। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आता वह उनकी ओर खिंचा चला आता था तथा अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता था। मानो वह साक्षात् भगवान के सामने बैठा है और वे साक्षात् भगवान ही थे।

उनका व्यक्तित्व इतना महान् था कि बड़े-बड़े सेठ-साहूकार बड़े-बड़े अधिकारी जो भी आपके सम्पर्क में आते अपनी सब बात भूल कर उनके चरणों मे श्रद्धा से झुक जाते । मुझे याद है सन् १९८४ मे मोहनसिंह जी मेहता, जो राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति थे, आपके दर्शनार्थ आये। उन्होंने वर्तमान शिक्षा-प्रणाली एव गुरु-शिष्य परम्परा के सम्बन्ध में सार्थक चर्चा करते हुए आनन्द का अनुभव किया। केन्द्रीय राज्यमन्त्री रामनिवासजी मिर्धा भी आपके सान्निध्य मे बैठकर उपकृत हुए।

गुरुदेव विद्या, विनय एव विवेक के धनी थे। उन्होने अपने जीवन-काल मे कभी भी किसी को ऐसे शब्द नही कहे जो उनकी आत्मा को चुभने वाले हो। बड़े सरल थे।

आप प्रचार मे नही आचार मे विश्वास रखते थे। आप जोधपुर के कोठारी भवन विराज रहे थे। बाहरी भूमिका से लौटते समय आपका आचार्य श्री तुलसीजी से मधुर मिलन हुआ। मैं उस समय गुरुदेव के साथ ही था। प्रसगवश गुरुदेव ने जो फरमाया - उसका भाव था - आचार ही प्रचार का सबसे बड़ा माध्यम है।

मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ कि मैंने ऐसे चलते-फिरते भगवान के दर्शन किये, उनके बहुत निकट रहा। उनसे बहुत कुछ सीखा और आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्ही की कृपा से हूँ।

–रेनबो हाउस, मण्डोर रोड, जोधपुर

■

उनके साधनामय जीवन ने प्रभावित किया

• प्रो चाँदमल कर्णावट,

पूज्य आचार्यश्री हस्ती उच्च कोटि के साधक थे। उनके अप्रमत्त साधनामय जीवन से कौन आकृष्ट नही होता। वे प्राय अहर्निश ध्यान-मौन, जप-तप, स्वाध्याय आदि की साधना मे लीन रहते। जब भी उनके दर्शन करते तो उन्हे किसी न किसी साधना में लीन पाते। उनके लिए यह कथन अक्षरश चरितार्थ होता था-

खण निकमो रहणो नही, करणो आतम काम।
भणणो, गुणणो, सीखणो, रमणो ज्ञान आराम॥

आचार्यप्रवर कभी मौन तो कभी ध्यान मे लीन होते, तो कभी जप, तो कभी स्वाध्याय, मनन, चिन्तन और लेखन मे। लेखन और स्वाध्याय मे भी इतनी लीनता होती थी कि जैसे वे उन्ही मे खो गए हो।

साधना में उनकी अप्रमत्तता, नियमितता एव दृढ़ता अनुकरणीय होती थी। अप्रमत्तता को निरलसता के सामान्य अर्थ में लेने पर उनकी साधना तत्परतापूर्ण थी। चाहे विचरण-विहार हो, आहार-निहार या प्रवचन हो, हर प्रवृत्ति का एक निश्चित समय होता, और वह उसी समय पर सम्पन्न हो जाती थी। अहिसादि पच महाव्रतों में, समिति-गुप्ति की परिपालना मे उनकी दृढ़ता, निरतिचार पालन की सजगता किस दर्शनार्थी को प्रभावित नही कर पाती! उस महान साधक की साधना को देखकर हृदय हिलोरे लेने लगता और साधना के पथ पर दृढ़ता, सजगता और अप्रमत्तता की प्रबल प्रेरणाओ से भर जाता। मद्य, विषय, निद्रा, कषाय और विकथा के पाँचो प्रमादो से वे दूर दृष्टिगत होते थे। विषय और कषाय के बाधक तत्त्वो को जैसे उन्होने जीत रखा था। क्रोध-मान उनसे कोसो दूर थे। माया को उनके सरल कोमल हृदय मे कहाँ स्थान मिलता? निर्लोभता, निस्पृहता के वे एक आदर्श थे। प्रवचन-सभाओ मे उनके गुणगान करने वालो को पूरा बोलने से पूर्व ही बैठ जाना पड़ता। सघ व श्रावको द्वारा अनेक सस्थाओ की स्थापना हुई, परन्तु कही भी उन्होने अपना नाम जोड़ने ही नही दिया। निद्रा के लिए सुना गया कि वे साध्वाचार के अनुसार एक प्रहर भी नही सोते थे। जब भी सत उठते तो उन्हे बैठे हुए ही पाते। ध्यान-जप, मौन मे लीन। विकथा कभी किसी तरह की, उनके मुँह से सुनी ही नही गई। राजकथा, देशकथा भी आध्यात्मिक, धार्मिक प्रसग से ही, वह भी यदा-कदा।

पिछले एक दो वर्षों मे अस्वस्थता के कारण उनकी लेखनी बन्द हुई तो जप ने उसका स्थान ले लिया था। प्राय अहर्निश ही उनका जाप चलता ही रहता। जप के कारण उनकी अनामिका मुड़ी हालत मे ही रह गई थी।

वास्तविकता यह है कि उनका सम्पूर्ण सयमी जीवन साधना की ही अथक कहानी था। उसमे उनकी लीनता, एकाग्रता, तादात्म्य आदि प्रत्येक दर्शनार्थी को अत्यत आकृष्ट करते थे। उनकी यह साधना एक, दो, पाच, दस वर्ष पर्यंत नही, अपितु उनकी पूर्ण सयम-पर्याय मे चलती रही। ११ वर्ष की बालवय से ६०-६५ वर्ष की अवस्था तक लेखक को उनकी यह साधना ही आकृष्ट करती रही।

उनके मुखमण्डल पर सदा सर्वदा प्रसन्नता की लहर दौड़ती रहती थी। उनकी यह प्रसन्नता मूक प्रेरणा दे जाती थी कि समता का साधक कैसा होना चाहिए। कैसी भी प्रतिकूल परिस्थितिया हो, उन्हे कभी गमगीन नही पाया गया। भले ही कोई उनका उपदेश नही सुन पाया हो, उनसे चर्चा का किसी को अवसर सुलभ नही हुआ हो,

परन्तु उनकी साधना को देखकर ही दर्शक सब कुछ पा लेता था।

लेखक को भी उनके अप्रमत्त साधनामय जीवन का खूब सान्निध्य मिला। उनकी साधना की पूजनीय एव अनुकरणीय छवि ही हृदय मे अकित हुई, जो अमिट है। आचार्य देव की साधना को प्रत्यक्ष देखकर, उनके पावन प्रवचन सुनकर ही मैं हरबार उनकी ओर अधिकाधिक आकृष्ट होता गया। उनकी साधनामय जीवन की गहरी छाप ही मेरे जीवन को यत्किंचित् धार्मिक आध्यात्मिक बनाने की बुनियाद रही। सच कहा जाय तो-

इस गाथा मे, इस कथा में न कुछ मेरा है न तेरा है,
उस विभूति के गुणगान का बहाना मात्र है-यह सब कुछ।

• दृष्टिकोण मे बदलाव

पूज्य आचार्य श्री हस्ती धार्मिक-आध्यात्मिक जगत् की एक महान् विभूति थे। वे एक महानतम साधक थे और थे साधना के उत्कृष्ट आदर्श। उनका सम्पूर्ण जीवन साधना की समुज्ज्वल स्वर्णिम रश्मियो से जगमगाता था। साधना के अप्रतिम प्रभाव से प्रभावित जैन समाज ही नही, सम्पूर्ण जन-समुदाय उनके चरणो मे श्रद्धा से नतमस्तक था। उस अप्रमत्त साधक का सान्निध्य पाकर व्यक्ति के विचार और व्यवहार मे परिवर्तन आना कोई आश्चर्यजनक नही, आश्चर्यजनक तो इस महान् आत्मा के सान्निध्य मे रहकर भी परिवर्तन नही आने मे होता।

यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे उस .प'पूत दिव्य आचार्य का सान्निध्य पॉच दशाब्दियो से अधिक काल तक प्राप्त हुआ। बालपन से प्रौढ़ावस्था पर्यन्त मिले इस सान्निध्य का प्रभाव अत्यत ही अमूल्य और अमिट रहा। उस महापुरुष की कृपा से ससार के कार्य करते हुए भी मेरे मन मे पापभीरुता बनी हुई है। पापमय कार्यो से विलग रहने का भरसक प्रयास और अन्तर्मुखीवृत्ति उस पावन सान्निध्य की अविस्मरणीय निधि है। उस आधार पर यह धारणा बनी है कि वृत्तियाँ ठीक रहे तो प्रवृत्तिया निश्चित रूप से ठीक होगी ही।

भोपालगढ़ (जोधपुर, राजस्थान) की सत-चरणो से पावन बनी भूमि मे जैनरत्न विद्यालय के छात्रावास मे रहते हुए सन्त-सती वर्ग एव पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य का अनेक बार स्वर्णिम अवसर मिला। आचार्यप्रवर के दर्शन, वदन, प्रवचन, धर्मचर्चा, सामायिक, स्वाध्याय, पौषध आदि मे पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य ने मुझ मे एक सम्यक् दृष्टि जगा दी। फलस्वरूप जीवनयात्रा मे अग्रसर होते हुए आध्यात्मिक, धार्मिक रुचि बढ़ती गई, दृढ़ होती गई। बचपन मे अकुरित अध्यात्म-बीज पल्लवित होते गये। आजीविका उपार्जन के साथ जीवन में धार्मिकता एव आध्यात्मिकता का सर्वोपरि स्थान रहता था। ज्ञान-क्रिया के प्रति रुझान रहता था।

उस महनीय व्यक्तित्व का ही अमिट प्रभाव मेरे जीवन पर अकित है। उस महान् सयम- श्रेष्ठ सतरत्न की छाप मेरे मानस मे बसी हुई है। आज भी मै और मेरा परिवार शुद्धाचारी एव क्रियावान सन्त-सती वर्ग की बिना किसी सम्प्रदाय का विचार किए सेवा करते है। शुद्धाचार को बल देते हुए असाम्प्रदायिकता की भावना मेरे विचार में जैन एकता की एक सबल कड़ी बन सकती है। यह तो दृष्टिकोण के बदलाव की बात हुई। जब दृष्टि बदली तो सृष्टि बदली, इस कहावत के अनुसार मेरी दिनचर्या मे भी पर्याप्त बदलाव आया।

आचार्य प्रवर का सान्निध्य बचपन से प्रौढावस्था तक मिलता ही रहा। उनके त्यागमय एवं तपपूत जीवन से एव उनके वैराग्यपूरित प्रवचनों से प्रेरित होकर जहा तक स्मरण है, विद्यार्थी काल से ही अध्ययन के साथ धर्म-साधना मे तप-त्याग (छोटे-छोटे) की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो गई। ज्यो-ज्यो उम्र बढ़ती गई दिनचर्या में धर्म-साधना को अधिक-अधिक समय मिलता गया। सासारिक जिम्मेदारियो को सभालते हुए भी सवर-निर्जरा में, आध्यात्मिक

धार्मिक-कार्यों में समय लगाना अच्छा लगता था। स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण, मौन, ध्यान, एकाशन, आयम्बिल, सवर, दया, समाज-सेवा मे अधिक से अधिक समय लगाता रहा। यही मुझे अभीष्ट था। क्रमश सासारिक कार्यों मे दिनचर्या का समय कम होता गया और आध्यात्मिक धार्मिक प्रवृत्तियो मे अधिक। सेवानिवृत्ति के बाद तो आजीविकोपार्जन के कार्य से प्राय पूर्ण निवृत्ति लेने के बाद अब अधिकाश समय आत्म-साधना मे ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना मे ही लग रहा है। यह सब उस महान आचार्य देव की कृपा का ही सुफल है।

• स्वाध्यायी को महत्त्व

मरुधरा का एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है पाली। आचार्य श्री यहाँ विराज रहे थे। मै भी एक स्वाध्यायी शिविर के प्रसग मे वहाँ उपस्थित था।

प्रातःकालीन प्रवचन आरम्भ हुआ ही था। मै सामायिक व्रत ग्रहण कर आगे की पक्तियों मे बैठा था। अनिमेष दृष्टि से आचार्यप्रवर के दर्शन करता हुआ उनकी प्रवचनधारा का पान कर रहा था। आचार्यप्रवर का उद्बोधन-प्रवचन सुनकर गद्‌गद् हो रहा था।

इसी बीच आचार्यप्रवर के महान् भक्त एक श्रेष्ठी श्रावक का आगमन हुआ। वे अन्य लोगो, मुझे और अन्य स्वाध्यायियो को पीछे छोड़कर आगे आ रहे थे। आचार्यप्रवर को यह उचित नही लगा। अन्य स्वाध्यायियो और मेरी तरफ सकेत करते हुए उन्होने कहा—"अब इन लोगो को आगे आने दो।" इस सकेत मे आचार्यप्रवर की स्वाध्याय प्रवृत्ति और स्वाध्यायी वर्ग को समाज मे अग्र स्थान देने की भावना निहित थी। वे स्वस्थ, सदाचारी एव विवेकवान समाज के निर्माण मे स्वाध्यायी वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर बल देना चाहते थे। आचार्यप्रवर का मनोभाव और आशय समझ कर वे श्रीमन्त सज्जन मुड़ गए और पीछे जाकर उन्होने अपना स्थान ग्रहण किया।

• असाम्प्रदायिकता

एक समुदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी पूज्यवर आचार्यश्री हस्ती के सुदीर्घ सान्निध्य से असाम्प्रदायिकता के दृष्टिकोण का विकास हुआ। यह एक विस्मयकारक तथ्य हो सकता है, परन्तु है यह बिल्कुल सत्य। इस महान् आचार्य के प्रति सम्पूर्ण जैन समाज की श्रद्धा का एक बड़ा कारण उनका असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण था।

मेरे बाल्यकाल से ६०-६५ वर्ष तक की आयु तक मुझे खूब याद है कि आचार्य श्री ने अपने जीवनकाल मे कभी ऐसी बात नही की जिससे सम्प्रदायवाद को हवा मिले। उनके मुँह से कभी किसी की निन्दा विकथा नही सुनी गयी। उनके उपदेशो मे शुद्ध वैराग्य एव सैद्धान्तिक विवेचन भरा रहता था। ११ वर्ष की उम्र से ही छात्रावास मे रहते हुये आचार्य श्री के दर्शन, प्रवचन एव प्रतिक्रमण मे हमे सम्मिलित होने का सुअवसर मिलता था। सायकालीन प्रतिक्रमण (देवसिय प्रतिक्रमण) के पश्चात् हमे आचार्य श्री की सेवा मे बैठाया जाता। वहाँ प्रश्नोत्तर, धर्म-चर्चा होती। कभी सम्प्रदायवाद का जिक्र नही आया। प्रश्नोत्तर एव धर्म-चर्चा के माध्यम से पर्याप्त ज्ञान वृद्धि हुई, जो मेरी स्थायी निधि बनी हुई है।

जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ के प्रधानाध्यापक का पदभार, जिनवाणी पत्रिका का ६ वर्ष तक सम्पादन, स्वाध्यायी कार्यक्रमों मे भाग, साधना-विभाग का सचालन जैसे कुछ विशेष दायित्व मुझे सौपें गये थे। इन्हे सभालते हुये आचार्य श्री से अनेक बार सम्पर्क हुआ, चर्चा भी हुई। परन्तु आचार्यप्रवर के मुख से कभी साम्प्रदायिकता की

बात नही सुनी, न उन्होंनें सम्प्रदाय के विषय में ऐसा कुछ कहा, जिसे साम्प्रदायिकता समझा जाय। इतना ही नहीं उनकी ओर से अन्य आचार्यों, सतो से लाभ लेने की प्रेरणा ही मिली।

एक बार पाली नगर में विराजे थे आचार्य श्री। अपने छोटे पुत्र को गुरु आम्नाय के लिये हमने निवेदन किया। एक बार, दो बार, परन्तु आचार्यप्रवर ने मेरे छोटे लड़के को गुरु-आम्नाय की स्वीकृति प्रदान नही की। कितनी विराट्ता एवं उदारता थी उनकी दृष्टि मे ।

• निस्पृह साधक

पूज्यवर इतने बड़े सघ के आचार्य होते हुए भी मूल रूप से निष्काम एव निस्पृह साधक थे। उनके जीवन के एक नही कई प्रसग इस तथ्य को उजागर करते है। ऐसा ही एक प्रसग है आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व का। पूज्य आचार्यप्रवर अपने सत समुदाय के साथ मारवाड़ के प्रसिद्ध शहर नागौर मे विराजमान थे। आचार्य प्रवर के सान्निध्य मे प्रात प्रार्थना से लेकर प्रतिक्रमण तक सभी कार्यक्रम नियमित और विधिवत् चलते थे।

आचार्यप्रवर जहाँ भी विराजते, दर्शनार्थियो की भीड़ लगी रहती थी। जगल मे भी मगल हो जाता। मै भी पूज्य आचार्य श्री के दर्शन एव प्रवचन श्रवण की अभिलाषा से नागौर पहुँचा। वहाँ विराजित आचार्य देव एव सन्तगण के दर्शन कर मेरा मन मुदित हो गया। प्रातकालीन प्रार्थना मे सम्मिलित हुआ। सामूहिक प्रार्थना मे वीतराग परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा एव विनय अर्पित कर धन्य हुआ। प्रार्थना-समाप्ति के अन्त मे धर्मस्थान जय - जयकार से गूज उठा। परन्तु यह क्या? जय-जयकार के प्रकरण को लेकर वहाँ उपस्थित श्रावक वर्ग मे विवाद छिड़ गया। वातावरण मे गर्मी आ गई।

विवादपूर्ण 'जय-प्रकरण' की खबर आचार्य श्री के कानो तक भी पहुँची। जानते है उन्होने श्रावक वर्ग के इस विवाद पर क्या निर्णय लिया? उन्होने फरमाया, 'सबकी जय बोली जाए, पर आप लोग मेरी जय मत बोलिए।' वस्तुत उन्हे समाज मे शाति और सौहार्द प्रिय था। वे कभी अशाति का वातावरण नही देख सकते थे। उन्होने श्रावक वर्ग मे शाति और सद्भाव स्थापित न होने तक प्रवचन बन्द रखने की भी घोषणा कर दी। तदनन्तर सामाजिक स्थिति पूर्ववत् बनी। सघ मे पुन शाति व सामजस्य स्थापित हुआ।

३५, अहिंसापुरी, उदयपुर



कृपासिन्धु गुरुदेव : मम कोटि प्रणाम

• श्री ज्ञानेन्द्र बाफना

मै अपने आपको अत्यन्त सौभाग्यशाली समझता हूँ कि इस जन्म मे पूज्यपाद आचार्य हस्ती जैसे महा मानव से सस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। बचपन से ही उनके श्री चरणो मे बैठने का, किशोर वय में ही उनके कृपा-प्रसाद से सघ से जुड़ने का व अध्ययन काल मे ही सघ का कार्यकर्ता बनने का सौभाग्य मिला। उन कृपा-सिन्धु की स्नेहिल ऑखों से बरसते अमिय सान्निध्य से सुलभ अनिर्वचनीय आनन्द, हृदय के कोने-कोने मे बसी मगल-कामना का कृपा प्रसाद सदा-सदा मिला, पर उनके पदार्पण के बाद ही अनुभव कर पाया कि उन चरणों मे बैठना कितना सुखद था।

आज जब उन महामनीषी के चरणारविन्दो मे बिताये क्षणो का , उन अकारण करुणाकर की कृपा-दृष्टि का स्मरण करता हूँ तो अनुभव होता है कि उन महापुरुष ने इस नादान, अबोध, अपात्र बालक पर भी जो अमिय वर्षा की, मै उसके योग्य तो न था। उन कुशल कलाकार के स्नेहसिक्त हाथो का आशीर्वाद पाकर भी उनकी अपेक्षा के अनुरूप अपने जीवन को न ढाल पाया, उन महामानव की विराट्ता का बोध न पा सका, यह मेरी अपनी कमजोरी ही तो है। काश बाल्यकाल मे ही मै अपने आपको सर्वतोभावेन जीवन पर्यन्त के लिये उनके चरणो मे समर्पित कर देता,तो प्रतिपल उनका सान्निध्य पाकर अपने आपको साधना मार्ग मे आगे बढ़ा कर जीवन-लक्ष्य को सिद्ध कर पाता। बचपन से ही जब-जब पूज्य गुरुवर्य के भोपालगढ़ (मेरी जन्म-भूमि) पधारने का प्रसग होता, मैं भी अपने पिताश्री के साथ सामने जाता, जब आपका विहार होता, अगले गाव तक विहार सेवा का लाभ भी लेता। तब से उन पूज्यपाद के सान्निध्य मे जो-जो क्षण बीते, वे जीवन की अनमोल थाती हैं।

(१) सन् १९६८ मे मैंने हायर सैकेण्डरी परीक्षा मध्यप्रदेश बोर्ड से दी थी, भ्रान्तिवश मुझे सूचना प्राप्त हुई कि मै अनुत्तीर्ण हूँ। हृदय को आघात लगा, सहज उदासी छा गई। जहाँ तक स्मरण मे है, भगत की कोठी रेलवे स्टेशन के क्वार्टर्स मे आप विराज रहे थे। मै दर्शनार्थ पहुँचा। पूज्यपाद ने सहज पूछा - “फूल कुम्हलाया क्यो है ?” मैंने निवेदन किया—“भगवन् ! फूल कुम्लाया ही नही है, मुरझाने वाला है।” तत्काल आपने आश्वस्त करते हुए फरमाया - “घबराना नही, रात्रि के बाद दिन, यह प्रकृति का अटल नियम है।” कहना न होगा - तीन दिन बाद ही मुझे डाक द्वारा मेरी मार्क-शीट प्राप्त हुई, सभी विषयों में मेरे विशेष योग्यता के अक थे।

(२) जोधपुर चातुर्मास मे एकदा आपने मुझे प्रेरणा देते हुए फरमाया कि ईसाई मिशनरी मे जिस सेवा-भावना से यीशू की सेवा में समर्पित होकर जीवनदानी कार्यकर्ता बनते हैं, उसी भावना से तुम ब्रह्मचर्य धारण कर शासन हितार्थ समर्पित हो जाओ, तो मुझे विश्वास है कि बस्तीमल (मेरे पिताश्री) कभी मना नही करेगा। मैंने प्रत्युत्तर मे समाज की विषम स्थिति व कार्यकर्ताओ के मान-सम्मान की स्थिति अर्ज की, तो भगवन्त ने दूसरे दिन प्रवचन ही इस विषय पर देते हुए फरमाया कि मेरे भक्त ऐसा कहते हैं। आपने समाज को कार्यकर्ताओं के मान-सम्मान के बारे मे जागृत करते हुए जीवनदानी समर्पित कार्यकर्ताओ को प्रेरित करने की प्रेरणा की।

(३) बचपन से ही हमने देखा कि गुरुदेव न तो कभी खाली विराजते न ही अपना समय पर-चर्चा मे लगाते। यही नही सासारिक विषयो बाबत भी कभी नही पूछते। वे तो सदा आगन्तुक भक्तों को ज्ञानार्जन हेतु ही प्रेरित

करते। बाल भक्त सस्कारवान बन कर ज्ञानाभ्यासी बने, इस हेतु आप बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते। मुझे भी उनके कृपा प्रसाद से चरणो मे बैठने व ज्ञानाभ्यास करने का अवसर प्राप्त हुआ। सवत् २०२१ के भोपालगढ वर्षावास में एक दिन गुरुदेव ने हम बालकों (मुझे, भाई प्रसन्न चन्दजी, श्री नेमीचन्दजी कर्णावट व भाई श्री जम्बू कुमार) को प्रेरित करते हुए एक दिन में आचार्य अमितगति कृत "सत्त्वेषु मैत्री..."प्रभृति ग्यारह श्लोक कठस्थ करने का लक्ष्य प्रदान किया। गुरुकृपा से हम चारो ने ही उसी दिन मे ग्यारह श्लोक कठस्थ कर लिये। यह थी गुरुदेव की ज्ञानदान की उत्कट भावना। इसी चातुर्मास मे पूज्यवर्य ने महती कृपा कर हमे स्वय कर्मप्रकृति का थोकड़ा व महावीराष्टक सिखाया।

जोधपुर चातुर्मास मे कोठारी भवन मे आपने अपनी कृपा का प्रसाद प्रदान करते हुये मुझे एव भाई प्रसन्नचन्दजी को तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन कराया। कॉलेज मे पढ़ते हुए हमारे मित्रगण ने गजेन्द्र स्वाध्याय मित्र मडल का गठन किया एव हम १५ मित्र प्रति रविवार मुथाजी का मदिर, नागौरी गेट, जोधपुर मे सामूहिक सामायिक करते हुए सामायिक के पाठ, अर्थ व भावार्थ का स्वाध्याय करते। श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म सा उस समय ससारावस्था मे थे व हमारे मित्र-मण्डल मे सम्मिलित थे। वहाँ हुई चर्चा के आधार पर जब मैने सामायिक सूत्र पर एक पुस्तक लिखी तो कृपानिधान ने उसका पूर्ण अवलोकन कर इस बालभक्त को प्रोत्साहित किया।

(४) सन् १९७० मे आपका चातुर्मास मेड़ता सिटी मे था। मैं बी काम (अन्तिम वर्ष) का छात्र था। आपके दर्शनार्थ मेड़ता गया। रात्रि में श्री चरणों मे बैठा था, आगे समर्पित कर्मठ समाजसेवी सुश्रावक श्री जवरीमल जी ओस्तवाल प्रभृति मेड़ता के कार्यकर्ता बैठे थे। आपकी दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती बाबत चर्चा चलने पर आपने फरमाया--"आप हमे सत समझते है, तो त्याग प्रत्याख्यान व्रत की भेट दे, यही सयम व सयमियो का सच्चा सम्मान है। अन्यथा सतो के साधक जीवन के प्रसगो मे मान-सम्मान, अभिनन्दन जैसे कार्यक्रमो को हम कतई उचित नही समझते है व ऐसे किसी आयोजन के प्रसग पर उपस्थित रहने की हमारी कतई भावना नही है।" गुरुदेव के श्रीमुख से ही सुना एक श्लोक याद आ रहा है -

"ध्यान धूप मन पुष्प पचेन्द्रिय हुताशन।
क्षमा जाप सतोष पूजा पूजो देव निरजन॥"

जवरीमल सा. बोल पड़े--"बापजी आडी-टेढी बाता क्यू करो, मना करनी हो, तो स्पष्ट मना कर देवो।" उन्होने अन्य सतो के जीवन-प्रसगो के आयोजन का हवाला भी दिया।

अकस्मात् मेरे मुख से निकल पड़ा -" आप ऐसा कैसे कहते है, महापुरुष के मुख से जो बात निकली है, वह तो होगी ही। देखना यह है कि यह श्रेय किसे मिलता है?" अपनी बात का प्रतीकार देख कर उन्होने पीछे मुड़कर देखा कि यहाँ मेरी बात काटने वाला कौन है ? पूज्य देव ने फरमाया - "यह जोगीदास जी का पोता है। "

कहना न होगा आपकी भावना के अनुरूप साधना कार्यक्रम हाथ मे लिया गया व आपके साधनातिशय, पुण्य प्रताप व उत्साही कार्यकर्तागण श्री रामसिह जी हूडा हीरादेसर, श्री मदनराज सिंघवी, जोधपुर, श्री सपतराज सा बाफना व श्री पारसमल सा बाफना भोपालगढ़ आदि के उत्साहपूर्ण योगदान व भक्त समुदाय द्वारा अपने महनीय गुरुवर्य की भक्ति मे व्रत भेट करने की प्रबल भावना से लक्ष्य से कई गुना व्रत-प्रत्याख्यान हुए। मैं इस आयोजन में समारोह समिति के महामत्री के नाते यत्किंचित् सघ-सेवा कर पाया, यह सब उन्ही महामनीषी की कृपा का ही तो प्रसाद है।

(५) सन् १९७१ मे बी काम. उत्तीर्ण करने के बाद मैं भगवन्त के दर्शन करने जयपुर पहुँचा। मैं सी ए करने हेतु बम्बई जाने की सोच रहा था । आपने फरमाया कि जोधपुर रहने मे सी ए भी हो जायेगी व सघ-सेवा भी हो जायेगी। इस एक वाक्य से ही मुझे आपका आशीर्वाद भी मिल गया था व मेरे जीवन का कार्यक्षेत्र व लक्ष्य भी निर्धारित हो गया, साथ ही सघ-सेवा का सुअवसर भी प्राप्त हो गया। बहुत कम पढ़ाई करते हुये भी मैं प्रथम प्रयास में ही सी ए बना, यह आपके कृपा-आशीर्वाद का ही तो परिणाम था।

(६) सगठन व जैन एकता के बारे मे गुरुदेव अक्सर दो उदाहरण फरमाते - "देश में वायु-सेना, थल-सेना और जल-सेना अलग-अलग हैं, पर सब का एक ही लक्ष्य है। राष्ट्र की सुरक्षा व कभी भी देश खतरे में हो तो सब सेनाएँ एक होकर सुरक्षा के उपाय करेगी। ऐसे ही विभिन्न सम्प्रदायो की अलग-अलग व्यवस्था होकर भी सब का एक ही लक्ष्य जिन-शासन की रक्षा हो तथा जब भी जैनत्व का सवाल हो तो सभी सम्प्रदाय जिन-शासन के झडे तले एक होकर एक ही लक्ष्य से कार्य करे।"

नारगी ऊपर से एक प्रतीत होती है, पर छिलका हटते ही अलग-अलग फाके बिखर जाती है। तरबूज पर ऊपर से धारिया नजर आती है, पर छिलके के भीतर तरबूज एक है। जैन एकता नारगी की तरह न होकर, तरबूज की तरह हो। तरबूज की भाति ऊपरी व्यवस्थाऐं भिन्न-भिन्न भले हो, पर अन्तहृर्दय से सबका एक ही लक्ष्य जिन-शासन की उन्नति व सुरक्षा हो।

(७) परम पूज्य गुरुवर्य का विहार सोजत की ओर होने की चर्चा थी, मैं पूज्यपाद के चरणों मे बैठा था। सहज ही मैंने बालचेष्टा भरा प्रश्न कर लिया—"भगवन्! सोजत मे तो अपने घर नही हैं । तत्काल उन महापुरुष का उत्तर था -

"जब तक मेरे ज्ञान, दर्शन, चारित्र निर्मल हैं तब तक सभी क्षेत्र, सभी घर हमारे अपने ही हैं और जिस दिन इस चदरिया मे कोई भी दाग लग गया, तो तुम भी मेरे नही रहोगे।"

ज्ञान, दर्शन, चारित्र की निर्मलता के प्रति कितनी सजगता, सयम-बल पर कैसा विश्वास व अतर्हदय मे कैसी साम्प्रदायिक निरपेक्षता। आज भी उन महापुरुष के चरणो मे बिताये गये क्षण हृदय को श्रद्धा, भक्ति व उदारता से सराबोर कर देते हैं।

(८) मै सघ - महामत्री का दायित्व निर्वहन कर रहा था। तब पूज्यपाद के नाम के पहले १००८ लगाया जाय या १०८, बड़ी ऊहापोह चल रही थी। भक्तगण अपने परम आस्था केन्द्र, अनुपम योगी, युग निर्माता गुरुवर्य के नाम के आगे १००८ से कम लगाने को कतई सहमत नही थे। भक्तो की ऊहापोह व प्रबल आग्रह को मैंने चरण सरोजो में निवेदन किया।

भगवन्त का फरमाना था— "हमारे बचपन मे सतो के नाम के आगे ६ लगाया जाता था।" मैं कुछ समझ न पाया। कुछ पूछूँ, उसके पूर्व ही भगवन्त ने पूछा 'समझे ?' 'नही भगवन्।' भगवन्त का समाधान था - "६ का मतलब होता है षट्काय प्रतिपाल। सयम ग्रहण के साथ ही षट्काय के जीवो के रक्षक होने से सतो के साथ यह विशेषण जुड़ जाता है। क्या तुम इससे भी बड़ा कोई पद सतों को दे सकते हो?"

नतमस्तक था मेरा सिर, श्रद्धा से उत्फुल्ल था मेरा हृदय, कैसी निरभिमानता! अतुल ज्ञान सम्पदा के धनी, निरतिचार सयम के पालक, जिन प्रवचन के प्रति प्रगाढ आस्था के धनी उन महापुरुष को मानो अभिमान, प्रशसा की चाह, उपाधि आकर्षण आदि छू ही न पाये हों । जिन्हें नाम व प्रशसा की चाह नहीं होती है, वे ही पच परमेष्ठी

भगवत सदा सदा के लिये वदनीय, अभिवदनीय व प्रतिपल स्मरणीय बन जाते हैं।

(९) जयपुर में अक्षय तृतीया का प्रसग था, मैं भी दर्शनार्थ गया हुआ था। कुछ दिन पूर्व ही पूज्य श्रमण श्रेष्ठ प. रत्न श्री समर्थमलजी म सा एव उनके प्रमुख शिष्य श्री प्रकाश मुनि जी म सा (सम्प्रति श्रुतधर) भोपालगढ़ पधारे थे। मेरी जन्म भूमि थी, मैं भी कुछ दिन वहाँ रुका व उनकी सेवा का अवसर प्राप्त किया। सायकाल कुछ प्रश्नचर्चा मे भी भाग लेता।

जयपुर मे पूज्यपाद ने श्रमण-श्रेष्ठ की सेवा का लाभ लेने के बारे मे पृच्छा की तो हमारे मुँह से सहज ही निकला कि प रत्न श्री प्रकाश मुनि जी जिज्ञासुओ के प्रश्नो का समाधान करते समय पूज्य श्रमण श्रेष्ठ के प्रति श्रद्धा, विनय व समर्पण युक्त समाधान देते हैं। इस प्रशसात्मक बात को सुनकर मानो 'गुणिषु प्रमोद' की उक्ति चरितार्थ हो उठी, पूज्यपाद का मुख कमल खिल गया और बिना एक क्षण का समय लिये उनके मुख से उद्गार व्यक्त हुए– "ऐसे सन्तो से ही जिन शासन की शोभा है।"

गुणिजनो के प्रति प्रमोदभाव गुरुदेव की प्रमुखतम विशेषता थी–अहह महता नि सीमानश्चरि विभूतय । महान् पुरुषो के चरित्र की सीमा नही । जहा एक ओर पर प्रशसा सुन लोग चुप्पी साध लेते हैं अथवा विचलित हो जाते हैं, वहा गुरुदेव की दृष्टि गुणो पर रहती थी आप सद्गुणो की स्वय प्रशसा करते थे, प्रमोद व्यक्त करते थे एव अनुसरण की प्रेरणा करते थे।

उसी समय मैंने भी चरणो मे पृच्छा की कि इस वर्ष जोधपुर मे श्रद्धेय मरुधर केसरी जी म सा का चातुर्मास हो रहा है, चातुर्मास में आने जाने मे हमारी क्या सोच होनी चाहिये ? तपाक से पूज्य गुरुदेव ने फरमाया - यह तो आपको स्वय अपने विवेक से सोचना है, इसमे हमसे पूछने का प्रश्न ही कहाँ ?

अपने भक्त जनो पर कैसा अनूठा विश्वास कि उन्हे कभी भी साम्प्रदायिक अधता की जन्म घूटी नही पिलाई। उन्हे हमेशा स्वनिर्णय के लिये विवेक दृष्टि प्रदान की।

(१०) सन् १९९० में पूज्यपाद जोधपुर के विभिन्न उपनगरो को पावन करते हुये पावटा भाडावत सा के बगले मे बिराज रहे थे । एक दिन अपराह्न मे मैं भी अपनी धर्म-पत्नी के साथ दर्शनार्थ पहुँचा । हम दोनो ने एक साथ वदन किया। शादी के पश्चात् भावी मे गुरुधारणा करने के बाद क्वचित् यह प्रथम अवसर था जब मैंने सपत्नीक वदन किया। (सकोचवश हम दोनो ने कभी एक साथ खडे होकर वदन नही किया।) हमारे खड़े होते ही कृपानाथ मेरी धर्मपत्नी को सबोधित करते हुए बोले "आप शादी करके भावी आये थे, तब मैने एक बात कही थी, आज एक बात और कह रहा हूँ....।" मै विस्मय विमुग्ध देखता रह गया। १७-१८ वर्ष पूर्व की घटना का कैसा अद्भुत स्मरण व उन महामना को छोटे से छोटे भक्त का भी कितना खयाल। हृदय सहज श्रद्धा से अभिभूत था तो मस्तक झुका हुआ।

(११) इसी क्रम मे पतितपावन शास्त्रीनगर पधारे। ए सेक्टर स्थित स्थानक मे विराजित थे। सत प्रवचन फरमा रहे थे, मैं भी प्रवचन मे बैठा था। मैंने शास्त्रीनगर मे मकान ले रखा था, मकान मे रहवास प्रारभ नही किया था। अकस्मात् भगवन्त ने स्मरण किया व श्रद्धेय गौतममुनिजी से पूछा - "ज्ञानेन्द्र आया है?" उन्होने मुझे सकेत किया। मैं सेवा मे पहुँचा। पूछा - "अपना मकान यहाँ से कितनी दूर है?" मैंने कहा - "भगवन् लगभग पौन किलोमीटर।" "मुझे कुछ न कहकर गौतम मुनि सा को फरमाया - "सतो से कहो अपना कल का कार्यक्रम वहाँ।" दूसरे दिन महाभाग विहार कर पधारे। घर मे प्रवेश द्वार मे पॉव रखते ही मुझे फरमाया - "नियम । ऐसा न हो कि लोग कहे

ज्ञानेन्द्र गुरु महाराज के निकट है, सो रियायत।" मैंने निवेदन किया - "भगवन् आप जो भी आदेश देंगे, वही स्वीकार्य।" रात्रि मे भी श्री चरणों मे सोया था। न जाने कैसे स्वत मेरे मन मे सकल्प उदित हुआ कि कल गुरुदेव से सकल्प लेना है कि भगवन् इस घर मे रिश्वत का कोई हिस्सा भी न आवे। प्रात आपने प्रस्थान पूर्व मुझे सपत्नीक अपनी इच्छानुसार नियम दिलाया। इसके पश्चात् मैंने सकल्प अर्ज किया। गुरुदेव को अतीव प्रसन्नता हुई, आपने कृपा बरसाते हुए तीन बार फरमाया - "आपने बहुत अच्छा किया, बहुत अच्छा किया, बहुत अच्छा किया। इससे आपकी शोहरत खूब फैलेगी।" कहना न होगा उसके बाद समस्याओ का कभी नही सोचा, उस ढग से समाधान हुआ। सुदामा की भाति कब-कैसे समाधान हुआ, वे ही जाने।

(१२) कृपा-सिन्धु पाली वर्षावास के बाद निमाज पधारने की भावना से सोजत पधारे। होली चातुर्मास वही था । सघ कार्यकर्ताओ की बैठक थी, मैं भी वहाँ गया। रात्रि मे नव मनोनीत सघाध्यक्ष श्री मोफतराज सा मुणोत के निर्देशानुसार मैं जोधपुर जाने हेतु मागलिक लेने पहुचा। आप पोढे हुए थे। श्रद्धेय श्री हीरामुनि जी (वर्तमान आचार्य प्रवर), मै, श्री जगदीशमलजी कुम्भट व श्री नौरतन जी मेहता आपके श्री चरणो मे बैठ गये। थोड़ी देर बाद आपके जागने पर हमने मागलिक माँगी। सहसा गुरुदेव के मुख से निकला– "रुको तो मेरे हृदय की बात कहूँ ।" पर न जाने मेरी बुद्धि ने क्यो जवाब दे दिया व मैंने आग्रहवश कहा कि भगवन्। सघ के काम से जा रहा हूँ, शीघ्र ही नौरतनजी व मै दर्शनार्थ सेवा मे आयेगे, मागलिक श्रवण कर जोधपुर आने का कार्यक्रम बना लिया। न जाने करुणानिधान क्या फरमाते,यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। मेरे जीवन की भयकरतम भूलो मे से यह एक है । जब आम्रमजरिया पक जाती हैं, तो कौए के गले मे रोग हो जाता है, मै भी इसी माफिक उस स्वर्णिम अमिय वर्षा से वचित रहा।

(१३) सन् १९९० मे ही घोड़ो के चौक प्रवास के एक दिन अपराह्न आपने फरमाया (उस समय श्री नवरतनमल सा डोसी, श्री लखपत चन्द सा भडारी व श्री गोपाल सा अब्बाणी साथ मे थे।) "युवक सघ मेरी इच्छा है, मेरी महत्त्वाकाक्षा है।" फिर फरमाया - "तुम चारो मे जितनी पारिवारिक घनिष्ठता बढ़ेगी, उतनी ही अधिक सघ-सेवा कर सकोगे।"

युवक कैसे सगठित होकर सस्कारवान बने व सघ की सेवा करे, इस ओर उस समय आपका चिन्तन सतत चलता रहता। मेरी ओर से प्रयासो मे वेग न आते देख एक बार उपालभ भी मिला - वह गति नही आई (वह गति से पूज्यपाद का आशय साधना-समारोह की स्मृति दिलाने का था) । फिर सिंहपोल मे श्रद्धेय गौतममुनिजी म सा की उपस्थिति मे फरमाया– "मै तुम्हे युवक सघ का फौज बख्शी मानता हूँ।" फिर फरमाया- "समझे ?" मैंने कहा - "नही भगवन्।" तब फरमाया- "बादशाह के समय के खींवसी भडारी फौजबख्शी थे व उसका मतलब होता है कमान्डर इन चीफ"। इस तरह भाति-भाति युवक सघ के सगठन हेतु मुझे प्रेरित किया। युवक सघ जो स्वरूप ले पाया व उसकी नीव मे हम चारो बन्धु जो भी अर्घ्य दे पाये, वह सब उन्ही कृपा-सिन्धु का ही प्रताप था, हम तो मात्र निमित्त थे, वे हमे श्रेय देना चाहते थे, जो मिल गया।

(१४) पूज्यपाद के सथारे के पश्चात् जोधपुर मे श्रद्धाजलि सभा का आयोजन था , घोड़ो के चौक सामायिक स्वाध्याय भवन मे जैन समाज की सभी परम्पराओ के श्रावक-श्राविकागण उपस्थित थे। विभिन्न वक्ताओ ने अपने सस्मरण प्रस्तुत करते हुए उन महापुरुष के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित किये। समूचे जैन समाज मे अपनी अलग पहचान रखने वाले त्यागमूर्ति विद्वान् साधक सुश्रावक श्री जौहरी मल जी पारख (सीए) रावटी वालो ने श्रद्धा सुमन

समर्पित करते हुए जो विचार अभिव्यक्त किये वे शब्द आज भी मेरे स्मृति-पटल पर अंकित है-

"मेरे पिताजी सिधारे, माँ भी गई, पर मुझे लग रहा है कि म्हारा मायत (माता-पिता) आज ही मर्या। मैं जन्मजात मन्दिर मार्गी हूँ, मैं कई परम्परा रा महापुरुषो रा दर्शन कर्या। साधु मे तीन विशेषता हुवै - ज्ञान, क्रिया व पुण्यवानी। कोई में ज्ञान उच्च कोटि रौ, क्रिया कोनी, कोई क्रिया रा धणी तो ज्ञान री गहराई कोनी, कदाचित् दोनु बाता हुवै तो पुण्यवानी कोनी, पर गुरु महाराज मे मै तीनू ही बाता ज्ञान, क्रिया अर पुण्यवानी रो समन्वय देखियो।"

इतर परम्परा के अग्रगण्य सुज्ञ श्रावको की भी आपके प्रति कैसी आस्था! आपके व्यक्तित्व-कृतित्व से कितने प्रभावित! वस्तुत पूज्यपाद मात्र रत्नवश परम्परा के ही आचार्य नही, वरन् इस युग मे जिन शासन के युग प्रधान आचार्य थे, जिनके साधना सम्पूरित जीवन, निर्मल आचार व ज्ञान गरिमा से समूचा जैन समाज तो प्रभावित था ही, जैनेतर धार्मिक जन भी कम प्रभावित नही थे।

-सी-५५ शास्त्रीनगर जोधपुर

■

निरतिचार साध्वाचार के सजग प्रहरी

• श्री प्रसन्न चन्द बाफना

मुझे मेरे बाल्यकाल की ४० वर्ष पूर्व की घटनाओ का सहज स्मरण हो आता है। भोपालगढ़ मे हम छोटे-छोटे बालकों का समूह लम्बी दूरी तक गुरुदेव के पधारने की खुशी मे छलागे लगाता हुआ सामने जाता था। सारे गाव में एक उत्सव-सा माहौल होता था , जो देखते ही बनता था। छोटे-छोटे बालको से गुरुदेव का विशेष लगाव था। गुरुदेव का विश्वास था कि इन बालको को अभी से धर्म से जोड़ा गया, तो कुछ कर-गुजर सकते हैं। अपना जीवन तो बनायेगे ही साथ ही सघ व समाज की सेवा के सस्कार का भी इनमें बीजारोपण हो सकेगा। मेरा भी सौभाग्य रहा कि १२-१३ वर्ष की उम्र से ही गुरुदेव का स्नेह प्राप्त कर यत्किंचित् सस्कार प्राप्त कर सका ।

पाली के अन्तिम चातुर्मास में भादवा सुद का प्रसग है। हमारे दादीसा का दो दिन पहले सथारा सहित स्वर्गगमन हो चुका था। इधर मेरे भतीजे नरेन्द्र के अठाई की तपस्या थी। उसकी गुरुदर्शन की भावना से हम पाली गये। दर्शन-वन्दन के पश्चात् मैंने गुरुदेव के समक्ष दादीसा के सथारा सहित स्वर्ग गमन के समाचार अर्ज किये। गुरुदेव ने तत्काल प्रतिप्रश्न करते हुए पूछा - "सथारा किसने कराया ? श्रद्धान किया अथवा नही ?" गुरुदेव यद्यपि उस दिन अस्वस्थ थे, फिर भी उनका चिंतन द्रव्य-क्रिया पर नही, भाव-क्रिया पर था। स्पष्ट भासित होता है कि वे औपचारिकताओ मे नही, आचरण मे विश्वास करते थे।

गुरुदेव पचमी (जगल) से लौटने पर पैर के अधोभाग पर अत्यल्प प्रासुकजल की बूद-बूद डालकर उसका प्रक्षालन करते थे। एक बार मैंने गुरुचरणो मे निवेदन किया - अन्नदाता ! लोग इस सबध मे प्रतिक्रिया व्यक्त करते है ?" गुरुदेव ने फरमाया - "वे ठीक कहते हैं। किन्तु बाल्यकाल से ही जब मै पढ़ने बैठता था तब से मेरी आदत-सी बन गयी है। मैंने अनुभव किया कि गुरुदेव सत्य के प्रति कितने सहज है। उनके रोम-रोम मे सत्य का कितना आग्रह है।

इसी प्रसग के सबध मे एक बार मैंने गुरुचरणो में निवेदन किया "अन्नदाता, आपके पैर-प्रक्षालन के पश्चात् तुच्छ जलराशि जो फर्श पर होती है उसको लेने के लिये लोग तरसते है। उससे उनको साता पहुचती है, ऐसा उनका प्रबल विश्वास है। आप विसर्जित जलराशि को छितरा देते हैं तथा लेने वाले को मना करते हैं, इसका क्या हेतु है ?" गुरुदेव ने प्रत्युत्तर में फरमाया, "यह तो अन्ध-विश्वास है। साता उपजने में इस जल का कोई कारण नही है। साता-असाता व्यक्ति को अपने कर्मों से मिलती है।" चमत्कारों के पीछे भागने वालों के लिये यह सदेश बोध देने के लिये पर्याप्त है। गुरुदेव के गुण उनके चिन्तन के पर्याय थे। वे चमत्कार पर नही, सिद्धान्तो के प्रति दृढ़ आस्थावान थे।

१९८४ के जोधपुर (रेनबो हाउस) चातुर्मास के पश्चात् सरदारपुरा मे विराजने के स्थान को लेकर श्रावक ऊहापोह मे चल रहे थे। दूर से/बात कहते हम श्रावकों की बात का गुरुदेव को अन्दाज लगते ही उन्होने फरमाया - "हमे रोकने वाला है कौन ? और रोकने वाले से हम रुकने वाले नही हैं।" इस वाक्य मे एक ओर गुरुदेव का दृढ़ चारित्र-बल एव आत्म-विश्वास झलक रहा था और दूसरी तरफ यह समूचे समाज पर अधिकार (सब अपने हैं) की पुष्टि कर रहा था।

सन् १९७१ की बात है। गुरुदेव महामंदिर रेलवे-स्टेशन के सामने पचमी के लिये पधार रहे थे। मैने अगुली से इशारा करते हुए बताया कि वो अपनी फैक्ट्री (दाल मिल) है। गुरुदेव ने सहज भाव से पूछा-"घर की है क्या?" उसके बाद बस दाता को देते नही देखा, झोली भरी अवश्य देखी।

सन् १९८५ के भोपालगढ़ चातुर्मास मे एक दिन सायकाल कुछ श्रावको मे बकराशाला (धर्मपुरा) एव गोशाला के चन्दे को लेकर गहमा-गहमी हो रही थी। मै गुरुदेव के पास बैठा था। गुरुदेव ने पूछा - "क्या बात है, लोग इतने जोर-जोर से क्यो बोल रहे हैं ?" मैंने गुरुदेव के समक्ष वस्तुस्थिति अर्ज की, तो गुरुदेव तपाक से बोले- गोशाला और बकराशाला क्या ? बात तो दोनों ही जीव दया की है न ? क्या कल कोई कुत्ता बीमार पड़ जाये, तो कुत्ताशाला और गधे के लिए गधाशाला अलग बनाओगे ?" मै गुरुदेव के वचन सुनकर अवाक् रह गया। मैं आज तक निरन्तर सोचता हूँ कि गुरुदेव के हृदय मे प्राणिमात्र के प्रति कितनी अनुकपा, कितनी करुणा भरी हुई थी?

सन् १९८४ के जोधपुर चातुर्मास मे सावत्सरिक क्षमापना हेतु तेरापथ सघ के तत्कालीन युवाचार्य महाप्रज्ञजी रेनबो हाउस पधारे और बातचीत के क्रम मे आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव से कहा कि हम छद्मस्थ अवश्य है किन्तु हमारी अवस्था छद्म नहीं है।" गुरुदेव ने तत्काल प्रत्युत्तर मे फरमाया - "आप अपनी कह सकते है, मेरी नही।" मैं मन ही मन सोचता रहा कि गुरुदेव प्रशस्तियो से प्रसन्न नही होने वाले विरल महामानव है।

मेरे अग्रज श्री मूलचदजी सा बाफना एव भाभीजी सुशीला देवी के सजोड़े मासखमण के पारणे के सबध मे निवेदन करते-करते हमारे आसू छलक आये। गुरुदेव अपनी प्रतिकूलता के सबध मे स्नेहपूर्वक हमे समझा रहे थे पर आसू छलकते ही बातचीत के क्रम को बद कर फरमाया - "मोह के चक्कर मुझे पसद नही है । मैं उस माता का पुत्र हूँ जिस माता ने दीक्षा लेने के बाद कभी मुझसे पाच मिनट बात तक नही की।" अभी तो अवसर नहीं है। कालान्तर मे गुरुदेव सरदारपुरा, नेहरू पार्क पधारे। शाम के समय पचमी से वापस आते समय रास्ते मे मुझसे पूछा - "घर किधर है।" मैंने निवेदन किया - "अन्नदाता, अभी तो भाई साहब घर पर नही होगे।" गुरुदेव ने तुरत फरमाया - "भाईसाहब से क्या काम है ? घर फरसाना हो तो अभी मै चलने को तैयार हूँ, और पधारे। मुझे जब-जब भी यह प्रसग याद आता है वो गुरुदेव के अनेक गुणो का सहज ही स्मरण हो आता है। गुरुदेव कितने निस्पृह थे।

बनाड़ मे एक जैन श्रावक के घर फरसने हेतु जाने पर आचार्य श्री द्वारा सतो से केवल ठडी रोटी और दही लाने को कहते मैंने सुना था। गुरुदेव को शका हो गई थी कि श्रावकजी ने आज संतों के निमित्त से ही चौका किया है। किन्तु श्रावकजी की बात सुनकर उनकी प्रबल भावना को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त बात कही। गुरुदेव के चातुर्य के ऐसे अनेक उदाहरण है, जो निर्दोष सयम-पालन को प्रतिबिम्बित करते है।

मैंने सी ए करना छोड़, व्यापार करने का मानस बना लिया। परिवार वालो की इच्छा पढ़ाने की थी। आखिर निश्चय हुआ कि गुरुदेव की सेवा मे आगोलाई चलेगे और गुरुदेव जैसा सकेत करेगे वैसे करना होगा। हम रागी वे विरागी, किन्तु हृदय मे विश्वास जो ठहरा। गुरुदेव के समक्ष पिताजी ने सब बात निवेदन की। पर गुरुदेव से मेरे मनोभाव कहा छिपे थे, उन्होने मुझसे कोई सफाई नही मागी। गुरुदेव मनोभावो के कितने कुशल ज्ञाता थे।

सन् १९८४ मे चातुर्मास के पश्चात् आचार्यदेव स्वास्थ्य-सबधी कारणो से सरदारपुरा कोठारी-भवन मे विराजमान थे। वैद्य सपतराजजी मेहता का उपचार चालू था। मेरे भी श्वास मे बाधा का उपचार वैद्य सपतराजजी का ही चल रहा था। वैद्यराजजी से ही मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी और आचार्यश्री की दवाई की पुडिया समान ही हैं।

मैंने गुरुदेव से निवेदन किया अन्नदाता, कुछ पुडिया मेरी में से भी लिरावे। बार बार निवेदन करने पर एक दिन प्रमोद मुनि सा ने ५-६ पुडिया ली। कालान्तर मे स्वास्थ्य लाभ के पश्चात् आचार्यश्री विहार कर रहे थे और दवाई की कुछ पुडियाँ बच गई थी। मैंने निवेदन किया-अन्नदाता, यह दवाई की पुड़िया मुझे दे दिरावे। आचार्य देव ने सतो से कहा कि इन पुडियो को वैद्य सपतराजजी को लौटा कर आवे। मुझे नही दी। यह थी उन महापुरुष की सजगता, अप्रमत्तता व निस्पृहता।

एक - एक प्रसग अनेक तरह की प्रेरणाऐं प्रदान करने वाला है, तो दूसरी ओर विशुद्ध सयम और साधु समाचारी के प्रति निष्ठा को प्रकट करता है। इसमे कैसे भी भक्त के साथ कोई रियायत नही।

पुरुषार्थ के धनी महापुरुष पूज्य गुरुदेव ने जब हम किशोर अवस्था मे थे, तो अपने अग चिह्नो से बताया कि यह चिह्न पहले यहाँ था और अब यहाँ आ गया। गुरुदेव फरमाते - "तकदीर (भाग्य) नही तजबीज (पुरुषार्थ) होनी चाहिये।" छोटी-छोटी वार्ता मे गुरुदेव जीवन मे सफलता के रहस्य समझा देते थे।

सन् १९९१ मे गुरुदेव ने महावीर भवन सरदारपुरा मे विराजते समय प्रसगवश फरमाया कि मैंने जीवन मे कभी ढबका नही खाया। अर्थात् चारित्र पालन मे कभी कोताही नही बरती। दृढ़ता एव निष्ठा पूर्वक आचार धर्म का पालन किया।

सिहपोल मे विराजते प्रसगवश एक दिन साधुओं के मर्यादा विपरीत आचरण के सबध मे घटना के विवरण के साथ फरमाया कि कोई जैन साधु भी भला ऐसा कर सकता है , इसकी मै कल्पना भी नही कर सकता। उत्कट सयम पालक गुरुदेव की प्रत्येक साधक के लिये यही भावना रहती कि वह मर्यादा मे स्थिर रहे। छल छद्म की तो कल्पना उनके जेहन मे ही न आ पाती।

वयसपन्न लोगो के संयम-धारण के विरोधी-स्वरो के प्रत्युत्तर मे गुरुदेव फरमाते कि क्या बूढ़े लोगो को आत्मा के कल्याण का अधिकार नही है? यह थी "आत्मवत्सर्वभूतेषु" व 'सर्वे भवन्तु सुखिन' की भावना।

सन् १९८४ मे जोधपुर के रेनबो हाउस मे पर्युषण के पश्चात् गुरुदेव का स्वास्थ्य काफी कमजोर हो गया था। एक दिन दीर्घशका निवारण के पश्चात् गिर गये। गुरुदेव को सत ऊचाकर लाये और रेनबो हाऊस के चौक में पट्टे पर सुलाया। सब चिन्तित थे, पर गुरुदेव कुछ ही समय मे कुछ स्वस्थता अनुभव करते हुए पाट पर विराज गये और माला फेरने लगे। डाक्टर और सभी उपस्थितजन आश्चर्य चकित थे। डाक्टरो की पूर्ण विश्राम की सलाह थी। पर गुरुदेव भक्तो का मन बोझिल न हो, इस दृष्टि से उनसे ओझल नही रहना चाहते थे और न अपनी साधना मे कमी आने देना चाहते थे। हमेशा फरमाते—मै अस्वस्थ कहाँ हूँ और फरमाते— 'स्वस्मिन् स्थित स्वस्थ ।'

—१, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज)

■

प्रज्ञापुरुष को प्रणाम

• डॉ नरेन्द्र भानावत

आचार्य श्री हस्ती एक व्यक्ति नही, एक सस्था नही, वरन सम्पूर्ण युग थे। आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता जो मुझे देखने को मिली, वह थी उनकी गहरी सूक्ष्म दृष्टि, व्यक्ति की पात्रता की पकड़ और उसकी योग्यता व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करने की प्रदत्त प्रेरणा। जो भी उनके सपर्क मे आता, वह ऐसा अनुभव करता कि जैसे आचार्य श्री उसके अपने हैं, उसकी क्षमता को पहचानते है। वे धर्म को किसी पर लादते नही थे, व्यक्ति की पात्रता के अनुसार उसे ऐसी प्रेरणा देते कि वह धर्म को जीवन मे उतारने के लिए तत्पर हो जाता, उस पथ पर चल पड़ता । यही कारण है कि अनपढ़ से लेकर बड़े-बड़े विद्वान्-पण्डित, सामान्य जन से लेकर बड़े-बड़े श्रीमन्त उनके भक्त थे। उनकी प्रवचन-सभा मे सभी जाति और वर्ण के लोग आते थे । वे सबको समान स्नेह और आशीर्वाद देते थे । आचार्य श्री के प्रेरणादायी प्रभावक व्यक्तित्व का ही परिणाम है कि धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सेवा-क्षेत्रो मे विभिन्न स्तरो के सैकड़ो कार्यकर्ता और समाजसेवी लगे हुए हैं। प्राचीन साहित्य के सरक्षण और सग्रह की प्रेरणा पाकर स्व. श्री सोहनमलजी कोठारी इस कार्य में जुट गये थे। वे अपनी धुन के पक्के थे। कई लोगो को उन्होने विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार से जोड़ा । मुझे भी आचार्य श्री की प्रेरणा और श्री कोठारीजी के आग्रह से ज्ञान-भण्डार में सगृहीत हस्तलिखित ग्रथो के सूचीकरण के कार्य से जुड़ने का अवसर मिला। हस्तलिखित ग्रथ-सग्रह के साथ-साथ भडार मे विभिन्न धर्मों के मूल ग्रथ भी सकलित किये गये और इसे शोध प्रतिष्ठान के रूप मे विकसित करने का प्रयत्न रहा।

भारतीय साहित्य के प्रणयन, सरक्षण एव सवर्द्धन मे जैन साहित्यकारो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्ययुगीन जनपदीय भाषाओ के विविध रूपो और काव्य-शैलियो की सुरक्षा मे जैन साहित्यकारो की उल्लेखनीय सेवाएँ रही है। भारतीय जन-जीवन के सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक एव नैतिक इतिहास-लेखन मे जैन स्रोत बड़े महत्त्वपूर्ण, विश्वस्त और प्रामाणिक है। जैन साहित्य विशेषकर स्थानकवासी परम्परा से सम्बधित जैन सामग्री जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे, उपाश्रयो, स्थानको और निजी आलमारियो मे बन्द पड़ी थी । उसकी प्राय उपेक्षा थी। आचार्य श्री की भारतीय साहित्य और सस्कृति को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन यह थी कि उन्होने इधर-उधर बिखरे पड़े हस्तलिखित ग्रथो, कलात्मक चित्रो/नक्शो को ज्ञान भण्डारो मे सगृहीत करने की प्रेरणा दी और उनके अध्ययन और अनुसधान के लिए अनुकूल वातावरण बनाया। जयपुर आने के बाद मै आचार्य श्री की प्रेरणा से ही सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल और 'जिनवाणी' के सम्पादन जैसी प्रवृत्तियो से जुड़ा।

आचार्य श्री परम्परा का निर्वाह करते हुए भी आधुनिक भाव-बोध से सम्पृक्त थे । वे समाज की नब्ज को पहचानने मे दक्ष थे। उन्होने देखा कि धर्म को लोग रूढ़ि रूप मे पालते अवश्य हैं, पर इससे उनका जीवन बदलता नही। सच्चा धर्म तो वह है जो तुरन्त अपना असर दिखाये। उनका चिन्तन था कि ज्ञानरहित क्रिया भार है और क्रिया रहित ज्ञान शुष्क है। ज्ञान और क्रिया के सतुलित समन्वय से ही मुक्ति का पथ प्रशस्त होता है और राष्ट्र का प्रगति-रथ आगे बढ़ता है। उसी से मानव जीवन सार्थक बनता है। अत उन्होने सामायिक के साथ स्वाध्याय को जोड़ा और स्वाध्याय के साथ सामायिक को । धर्माराधना के इन दोनों अगो को नई शक्ति दी, नई रोशनी दी, नई

दृष्टि दी आचार्य श्री ने । सभी वर्ग के लोग इस दिशा में यथाशक्ति खिंचते चले आये और देखते-देखते देश के विभिन्न प्रान्तों में स्वाध्याय का शखनाद गूज उठा। स्वाध्याय केवल मस्तिष्क का व्यायाम बनकर न रहे, उसमें साधना का रस छलके, हृदय का मिठास घुले, वह वाचना, पृच्छना और परिवर्तना तक ही सीमित न रहे। अनुप्रेक्षा और धर्म कथा के तत्त्व स्वाध्याय के साथ जुड़ें, इसी विचार ने साधना सघ को मूर्त रूप दिया । स्वाध्याय साधना का अग बनकर ही जीवन को रूपान्तरित कर सकता है, भीतरी परतों को भिगो सकता है। आचार्य श्री वस्तु को खण्ड-खण्ड देखकर भी जीवन की अखण्डता और सम्पूर्णता के पक्षधर थे। उनका विचार था कि जैन समाज सब प्रकार से सम्पन्न होकर भी अपना ओज और पुरुषार्थ प्रकट नही कर पा रहा है। समाज के श्रीमन्त, अपनी धन-सम्पदा मे मस्त है तो समाज के विद्वान् अपने ज्ञान-लोक मे एकाकी मग्न हैं। कार्यकर्ताओ की जैसी प्रतिष्ठा होनी चाहिए, वह नही है और अधिकारियो का अपना अलग अहम् है। यदि समाज के ये चारो अग मिल जाएँ तो आदर्श समाज का निर्माण सहज-सुलभ हो सकता है। इसी विचार के परिणामस्वरूप अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् अस्तित्व मे आई।

आचार्य श्री के सन् १९७८ के इन्दौर चातुर्मास मे वहाँ के प्रमुख समाजसेवी श्री फकीरचन्दजी मेहता ने जैन समाज के प्रमुख विद्वानो का एक सम्मेलन इन्दौर मे आयोजित करने की बात मुझे लिखी । मैं इन्दौर गया। आचार्य श्री से विचार-विमर्श हुआ और इस योजना को मूर्त्तरूप मिला । विभिन्न क्षेत्रो के लगभग १०० विद्वान इससे जुड़े और फिर तो आचार्य श्री के प्रत्येक चातुर्मास मे विद्वत् सगोष्ठी का आयोजन होता रहा । विद्वत् परिषद् को सपुष्ट करने के लिए श्रीमन्तो, सामाजिक कार्यकर्ताओ और प्रशासनिक अधिकारियो को भी इससे जोड़ा गया । आचार्य श्री का विद्वत् परिषद् को सदैव आशीर्वाद मिला। राजस्थान के अतिरिक्त देश के सुदूर क्षेत्रो मद्रास, रायचूर, जलगाव आदि मे इसकी गोष्ठिया हुई। अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी आचार्य श्री सगोष्ठियों के अवसर पर विद्वानो को सम्यक् मार्गदर्शन देते। आचार्य श्री का बल बराबर इस बात पर रहता कि विद्वान् अपने को किताबो तक सीमित न रखे, वे धर्म-क्रिया मे भी अपना ओज दिखाये। वे कहा करते थे—'यस्तु क्रियावान् पुरुष स विद्वान्' अर्थात् जो क्रियावान् है, वही पुरुष विद्वान् है। आचार्य श्री की प्रेरणा रहती कि यदि एक विद्वान् सही अर्थ मे धर्माराधना के साथ जुड़ जाता है तो वह अनेक भाई-बहिनो के लिए प्रेरणा स्तम्भ बन जाता है। आचार्य श्री के इस उद्बोधन से प्रभावित-प्रेरित होकर विद्वत् परिषद् के कई विद्वानो ने धर्म साधना-सम्बन्धी दैनन्दिन नियम, व्रतादि ग्रहण किये।

आचार्य श्री धर्म को आत्म-कल्याण का साधन मानने के साथ-साथ उसे लोक-शक्ति के जागरण का बहुत बड़ा माध्यम मानते थे। इसीलिए उन्होने नारी शक्ति को सगठित होने की प्रेरणा दी। श्री महावीर जैन श्राविका सघ इसी प्रेरणा का प्रतिफल है। आचार्य श्री ने अपनी जन्मकालीन परिस्थितियो मे नारी को कुरीतियो के बधन मे जकड़े हुए देखा था। उन कुरीतियों से नारी-शक्ति मुक्त हो, और वह अपना सर्वांगीण आध्यात्मिक विकास करे, इसके लिए वे सदैव प्रेरणा देते थे। कहना न होगा कि उनकी प्रेरणा के फलस्वरूप ही सैकड़ो-हजारो बहिनो का जीवन बदला है। वे स्वाश्रयी और स्वावलम्बी बनी हैं।

युवकों को भी आचार्य श्री सगठित होने की सदा प्रेरणा देते थे। जोश के साथ वे होश को न भूले, अपनी शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगायें, मादक पदार्थों के सेवन व अन्य व्यसनो से वे दूर रहें, जीवन मे सादगी और खान-पान मे सात्त्विकता बरतें । इस दिशा में आचार्य श्री युवकों को बराबर सावचेत करते थे। आज 'अ.भा जैन

रत्न युवक संघ के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में अनेक युवा समाज-सेवा में प्रवृत्त हैं।

आचार्य श्री ने अपने जन्म-काल मे जो महामारी और दुर्भिक्ष देखा, उससे उनका दिल पसीज उठा और संयम पथ पर बढ़ने के बाद वे हमेशा रोग-मुक्ति के लिए उपदेश देते थे। वे अत्यन्त दयालु और करुणाशील थे। ज्ञान का फल प्रेम और वात्सल्य मानते थे। वे कहा करते थे यदि ज्ञानी किसी के आँसू न पोंछ सके तो उसके ज्ञान की क्या सार्थकता ? आचार्य श्री की इस वाणी ने विभिन्न क्षेत्रों में जीवदया, वात्सल्य फण्ड, बन्धु कल्याण कोष आदि के माध्यम से जनहितकारी प्रवृत्तियो को सक्रियता प्रदान की।

आचार्य श्री पारम्परिक रूप से एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी विचारों में उदार और व्यवहार में सहिष्णु थे। यही कारण है कि अलग अलग परम्पराओं के लोग आचार्य श्री की प्रेरणा से विभिन्न कार्यों से जुड़े रहते। सभी धर्मों के प्रति उनके मन में आदर का भाव था। 'जिनवाणी' का सम्पादन करते समय मुझे आचार्य श्री की उदार दृष्टि, तटस्थ चिन्तन और विशाल हृदयता का कई बार अहसास हुआ। 'जिनवाणी' के तप, श्रावक धर्म, जैन सस्कृति, साधना, कर्म-सिद्धान्त और अपरिग्रह जैसे विशेषाको में देश-विदेश के विभिन्न धर्मों की सबद्ध अवधारणाओं और मान्यताओं को स्थान देने मे उनकी स्वीकृति और प्रेरणा थी। वे कहा करते थे —"तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञान पकता है और चिन्तन में निखार आता है।" उनकी व्यापक दृष्टि, धार्मिक सहिष्णुता और उदार मनोवृत्ति के फलस्वरूप ही 'जिनवाणी' के 'कर्म सिद्धान्त' विशेषाक मे पूरा एक खण्ड "कर्म सिद्धान्त और सामाजिक चिन्तन" विषय पर जा सका, जबकि कतिपय लोगो ने इस पर आपत्ति भी की थी। आचार्य श्री स्मित मुस्कान के साथ सहज भाव से यही फरमाते कि "भानावत ने तो विषय से सम्बन्धित विभिन्न दृष्टियों को विशेषाक के रूप में एक स्थान पर पाठको को परोस दिया है। अब वे अपने अपने ढग से इसका रसास्वादन करे और अपनी-अपनी टिप्पणियाँ दें ताकि वैचारिक मन्थन हो सके और चिंतन की परम्परा आगे बढ़ सके।"

आचार्य श्री वस्तुत इतिहास-मनीषी और आगम-पुरुष थे। उनकी शोध दृष्टि बड़ी पैनी और प्रखर थी। नित्य नवीन ज्ञान-विज्ञान को जानने और समझने की उनकी जिज्ञासा बराबर बनी रहती थी। मैं उनसे चर्चा मे प्राय कहा करता था कि "आचार्य प्रवर ! भारतीय विश्वविद्यालयों में आज प्राच्य विद्याएँ उपेक्षित हैं, जबकि विदेशी विद्वान् इस ओर आकृष्ट हो रहे हैं।" आचार्य श्री इस पर कभी-कभी टिप्पणी करते कि ज्ञान के क्षेत्र में भी व्यावसायिकता आ गई है और पल्लवग्राही पाडित्य बाजी मार रहा है।

आचार्य श्री का यह दृढ़ अभिमत था कि किसी भी परम्परा को मूल रूप मे समझे बिना उसको नकारना हितकर नही है। इसीलिए वे सस्कृत, प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन पर विशेष बल देते थे, क्योंकि इन भाषाओ के अध्ययन के बिना भारतीय सस्कृति के मूल स्वरूप को समझा ही नही जा सकता और न मौलिक चिन्तन का द्वार खुल पाता है। प्राचीनता और नवीनता के स्वस्थ समन्वय के पक्षधर थे। आचार्य श्री शिक्षा के क्षेत्र में भी इस समन्वय को चरितार्थ करना चाहते थे। इसी भावना से जयपुर मे 'जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान' की स्थापना हुई, ताकि ऐसे ठोस विद्वान् तैयार किये जा सके, जो प्राच्य विद्याओ के प्रकाण्ड पण्डित होकर भी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और शोध-प्रक्रिया मे निष्णात हों।

आचार्य श्री की मुझ पर एव मेरे परिवार पर अहैतुकी कृपा थी। साहित्य और सस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर मेरी आचार्य श्री से समय-समय पर बातचीत हुआ करती थी। मैंने उन्हें कभी किसी बात के प्रति आग्रही नहीं पाया। सदैव सहज-सरल, प्रज्ञाशील और सर्वग्राही दृष्टि सम्पन्न पाया। उनका इतिहास-बोध विभिन्न सदर्भों से जुड़ा

हुआ था। भारतीय इतिहास-लेखन में जैन स्रोत उपेक्षित न रहे, इसके लिए वे प्रेरणा देते थे । उन्ही के सान्निध्य में सन् १९६५ के बालोतरा चातुर्मास में जैन धर्म के इतिहास लेखन की योजना बनी। उस समय जैन आगमज्ञ विद्वान् प. दलसुख भाई मालवणिया विशेष रूप से बालोतरा पधारे थे। मैं भी उस अवसर पर उपस्थित था। जैन इतिहास लेखन की सामान्य रूपरेखा भी बनी और यह आवश्यक माना गया कि राजस्थान और गुजरात के ज्ञान-भण्डारों का सर्वेक्षण किया जाए और दक्षिण भारत की भाषाओं मे जो जैन सामग्री विद्यमान है, उसका आकलन किया जाए । इतिहास की शोध सामग्री के आकलन की दृष्टि को प्रधान रखकर ही सम्भवत आचार्य श्री ने बालोतरा के बाद अहमदाबाद चातुर्मास किया और सामग्री सकलित करने की प्रेरणा दी । इतिहास के द्वितीय और तृतीय भाग के लिए आचार्य श्री ने कर्नाटक और तमिलनाडु की यात्राएँ की और कई नये तथ्य उद्घाटित किये । स्थानकवासी परम्परा के इतिहास-लेखन की आधारभूत सामग्री 'पट्टावली प्रबन्ध सग्रह' के रूप मे सकलित की । इसका दूसरा भाग भी आचार्य श्री के निर्देशन मे तैयार किया गया, जिसके प्रकाशन की प्रतीक्षा है।

आचार्य श्री सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओ के अधिकृत विद्वान् थे। उन्होने 'दशवैकालिक', 'उत्तराध्ययन सूत्र', 'नन्दी सूत्र', 'अन्तगडदशाग', 'प्रश्न व्याकरण' आदि शास्त्रों की सटिप्पण व्याख्याएँ प्रस्तुत की । आत्म जागृति मूलक कई पद लिखे, जो अत्यन्त प्रेरणादायी और जीवनस्पर्शी हैं। भगवान् महावीर से चली आ रही जैन शासन परम्परा को 'जैन आचार्य चरितावली' के रूप मे पद्यबद्ध किया। आचार्य श्री का प्रवचन साहित्य हिन्दी के धार्मिक, दार्शनिक साहित्य की अमूल्य धरोहर है । ये प्रवचन सामान्य विचार नही हैं। इनमे तपोनिष्ठ साधक की अनुभूतियाँ और उच्च कोटि के आध्यात्मिक सन्त की आचरणशीलता अभिव्यजित हुई है। प्राकृत, सस्कृत के प्रकाण्ड पडित होते हुए भी आचार्य श्री के प्रवचन कभी भी उनके पाण्डित्य से बोझिल नहीं हुए। उनमें उनकी सयम-साधना का माधुर्य और ज्ञान महोदधि के गाभीर्य का अद्भुत सगम होता। छोटे-छोटे वाक्यो मे लोक और शास्त्र के अनुभव को वे इस प्रकार बाँटते थे कि श्रोता का हृदय-पात्र बोधामृत से लबालब भर जाता। उनकी प्रवचन-प्रभा से हजारो भक्तजनों का अज्ञानाधकार मिटा है, निराश मन में आशा का संचार हुआ है, थकान मुस्कान मे बदली है और आग में अनुराग का नन्दन वन महक उठा है।

मेरा किसी न किसी रूप मे आचार्य श्री से लगभग ४० वर्षो का सम्पर्क-सम्बन्ध रहा। आचार्य श्री के प्रेरक व्यक्तित्व और मगल आशीर्वाद ने मेरे जीवन-निर्माण में और उसे आध्यात्मिक स्फुरण देने में आधारभूत कार्य किया है। उनके सत्सग का ही प्रभाव है कि मेरे लेखन और चिन्तन की दिशा बदली। यदि आचार्य श्री का सान्निध्य न मिलता तो मैं दिशाहीन भटकता रहता। जीवन-समुद्र की ऊपरी सतह पर ही लक्ष्यहीन लहरों की भाति उठता-गिरता और सासारिक प्रपचों के किनारो से टकराता रहता, झाग बटोरता रहता। आचार्य श्री ने ही मुझे जीवन-समुद्र की गहराई का, उसकी मर्यादा और प्रशान्तता का बोध कराया। मुझे ही क्या मेरे जैसे सैकड़ो-हजारो लोगों को जीवन का रहस्य बताया, सम्यक् जीवन जीने की कला सिखाई। आज समाज में ज्ञान के प्रति जो निष्ठा दिखाई देती है, उसके मूल में आचार्य श्री का जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व समाहित है।

एम.ए.करने के बाद मेरी सर्वप्रथम नियुक्ति गवर्नमेन्ट कॉलेज, बून्दी में हिन्दी प्राध्यापक के पद पर हुई। मैं वहाँ १३ जुलाई, १९६२ तक रहा। सभवत १९६०-६१ की बात होगी। आचार्य श्री अपने शिष्यों के साथ पदविहार करते हुए कोटा से बून्दी पधारे। जब मुझे ज्ञात हुआ तो मैं उनके दर्शनार्थ सेवा में पहुँचा। आचार्य श्री मुझे वहाँ देखकर बड़े प्रमुदित हुए और कहा— "तुम्हें अपनी रुचि के अनुसार कार्य-क्षेत्र मिल गया है। लेखन सतत जारी रखो,

जैन शास्त्रों का अध्ययन भी करो। और सहज भाव से यह भी कहा—"यदि तुम्हारी नियुक्ति जयपुर हो जाए तो समाज को ज्यादा लाभ हो सकता है।" मैंने कहा—ऐसा सभव नहीं लगता। कुछ दिन रहकर आचार्य श्री वहाँ से विहार कर गये । इधर मेरा पी-एच.डी का कार्य भी पूरा हो गया और सयोग से राज्य सरकार के निर्णयानुसार राजस्थान विश्वविद्यालय को नया रूप दिया जाना तय हुआ। विभिन्न कॉलेजो से विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों से राजस्थान विश्वविद्यालय में आने के लिए विकल्प (Option) मागे गये। मेरा अध्यापन अनुभव यद्यपि कम था, पर तत्कालीन प्रिंसिपल श्री एम एल. गर्ग सा. के यह कहने पर कि तुम्हारा एकेडेमिक कैरियर बहुत अच्छा है, अत तुम विकल्प दे दो और दैवयोग से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के लिए शैक्षिणक योग्यता के आधार पर बिना साक्षात्कार ही मेरा चयन हो गया और मैं १४ जुलाई, १९६२ को जयपुर आ गया । आज सोचता हूँ तो लगता है कि आचार्य श्री कितने भविष्यद्रष्टा थे, वचनसिद्ध थे। मुझे स्वप्न मे भी कल्पना नही थी कि मैं इतने सहज रूप से जयपुर आ जाऊँगा।

आचार्य श्री के १९९० के पाली चातुर्मास मे 'युवापीढ़ी और अहिंसा' विषयक सगोष्ठी जैन विद्वत् परिषद् के तत्वावधान में आयोजित की गई थी। आचार्य श्री ने विद्वानो को विशेष सदेश देते हुए कहा कि वे अपने ज्ञान को शस्त्र के साथ नही, शास्त्र के साथ जोड़ें, अपनी विद्वत्ता को कषाय-वृद्धि मे नही, जीवन-शुद्धि मे लगायें और ध्यान रखे कि सयम के बिना अहिंसा लगड़ी है।

पाली चातुर्मास के बाद आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल नही रहा और पाली मे कुछ समय उन्हे रुकना पड़ा। २६ दिसम्बर को मैंने पाली मे आचार्य श्री के दर्शन किये तब लगभग डेढ़-दो घण्टे तक साहित्य और साधना विषयक विभिन्न बिन्दुओ पर बातचीत हुई। आचार्य श्री ने मुझे सचेत किया कि तुम भारत मे बहुत घूम चुके, अब ज्यादा भागदौड़ न करो, स्थिर जमकर काम करो, ध्यान पद्धति को निश्चित रूप दो, प्राकृत-सस्कृत भाषा एव साहित्य की जो अनमोल विरासत है, उसे सभालो और नई पीढ़ी को इस ओर प्रेरित करो, आकर्षित करो।

इसी प्रसग मे उन्होने 'जिनवाणी' के प्रति प्रमोदभाव व्यक्त किया और सकेत दिया कि 'स्वाध्याय-शिक्षा' प्राकृत भाषा की मुखपत्रिका बने। प्राकृत-लेखन की ओर आज विद्वानो की रुचि नही है। इस पत्रिका के माध्यम से प्राकृत सस्कृत लेखन को बल मिले तो श्रेयस्कर होगा। विदेशो मे श्रमण सस्कृति के शुद्ध स्वरूप को प्रस्तुत करने के लिए स्वाध्यायियो को विशेष रूप से तैयार करने की बात भी उन्होने कही। यह भी सकेत दिया कि विदेशो मे विभिन्न क्षेत्रो मे हमारे समाज के लोग अच्छी स्थिति मे है। यदि उनको सगठित कर कोई योजना बनाई जावे तो वहाँ श्रमण सस्कृति के प्रचार-प्रसार का अच्छा वातावरण बन सकता है। आर्थिक दृष्टि से तो वे लोग आशा से अधिक सम्पन्न हो गये है, पर धार्मिक और सास्कृतिक दृष्टि से विपन्न न रहे, इस ओर ध्यान देना विद्वत् परिषद् का कर्तव्य है। काश । आचार्य श्री के इन विचारो को मूर्त्त रूप देने के लिए समाज कुछ कर सके।

आचार्य श्री जब निमाज पधारे, मैं सपत्नीक महावीर जयन्ती पर उनके दर्शनार्थ पहुँचा । तब आचार्य श्री मौन मे थे। पर हमे लगभग पौन घण्टे तक आचार्य श्री के सान्निध्य मे बैठने का, अपनी बात कहने का, मौन सकेतो द्वारा आचार्य श्री से उनका समाधान पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री गौतम मुनिजी ने इस वार्तालाप मे हमे विशेष सहयोग दिया। जब हम चलने लगे, तब आचार्य श्री ने पाट से खड़े होकर मौन मागलिक प्रदान की। यह एक प्रकार से आचार्य श्री से हमारी अन्तिम भेटवार्ता थी।

उसके बाद १४ अप्रैल को हम दर्शनार्थ पहुँचे, तब आचार्य श्री ने सथारा ग्रहण कर लिया था। दर्शनार्थियों

की अपार भीड़ कतारबद्ध खड़ी थी अपने आराध्य के श्रीचरणों में। पर आचार्य श्री आत्मस्थ थे, जप-साधना में लीन थे। उन्हें न किसी के प्रति राग था, न द्वेष। शरीर का ममत्व वे छोड़ चुके थे। एक-एक कर दर्शनार्थी पक्तिबद्ध उनके निकट आते, नतमस्तक हो वन्दन करते और मौन आशीर्वाद ले अपने को धन्य समझते। निमाज तीर्थधाम बन गया। धर्मनिष्ठ श्रद्धानिष्ठ उदारहृदय भण्डारी परिवार एव सकल निमाज जैन श्रीसघ ने अपने आराध्य गुरुदेव की भक्ति मे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, आगन्तुक दर्शनार्थियों के आतिथ्य-सत्कार में पलक-पावड़े बिछा दिये। निमाज का यह अचल अपने लोकरग मे अन्तर्राष्ट्रीय हो उठा। देश-विदेश से भावुक भक्त बड़ी सख्या मे खिंचे चले आये। २१ अप्रैल, रविवार को इस युग का दिव्य दिवाकर समाधिपूर्वक परमात्म-ज्योति मे समा गया।

पार्थिव रूप मे आचार्य श्री अब हमारे बीच नही हैं। पर उनका सदेश कण-कण मे व्याप्त है। वे प्रेरणा बनकर युगयुगों तक हमे अनुप्राणित करते रहेगे, स्फुरणा बनकर हमे जगाते रहेगे, हम पर उनके अनन्त उपकार है, हम उनसे उऋण नही हो सकते। वे ऐसे महासागर थे, जिसे कोई तैराक पार नही कर सकता, वे ऐसे असीम आकाश थे, जिसे कोई पक्षी लाघ नही सकता। किसमे ताकत है जो उनके गुणों की थाह ले सके? उन प्रज्ञापुरुष को कोटि-कोटि प्रणाम। (जिनवाणी के श्रद्धाजलि अक से साभार)

■

उच्चकोटि के संयमनिष्ठ निर्भीक योगी

• श्री टीकमचन्द हीरावत

मेरी समझ में नही आता कि उस उच्चकोटि के महान् अध्यात्मयोगी के जीवन को किस छोर से देखूँ। मिश्री जिस प्रकार चहुँ ओर से मधुर होती है उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव का जीवन सम्पूर्ण रूप से करुणा, प्रमोद, आत्मीयता आदि दिव्य गुणों से परिपूर्ण था।

हमारा परिवार गुरुचरणों में सुदीर्घ काल से श्रद्धानत है। मुझे स्मरण है कि पिताजी एव परिवार के अन्य सदस्य सन्त-समागम में सदैव तत्पर रहते थे। आचार्य श्री की प्रेरणा से पितृवर नियमित रूप से सामायिक करते थे।

मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे अपने जीवन मे कुछ काल आचार्यप्रवर की सेवा में रहने का अवसर मिला। आज भी वह दिन मेरे स्मृति-पटल पर अंकित है, जब मैं अमेरिका से इन्दौर आचार्य भगवन्त के दर्शनों हेतु उपस्थित हुआ। रात्रि के ९ बजे का समय था। पूर्णिमा के ध्यान के अनन्तर जब आपने चक्षु उन्मीलन किया, मैं आपके सान्निध्य मे वन्दन कर बैठ गया। आपने पूछा - "कहाँ से आ रहे हो ?" मैंने कहा - "भगवन् ! अमेरिका से आ रहा हूँ।" गुरुदेव ने फरमाया - "क्या तुम बताओगे कि तुम्हारे पास औरगजेब, अकबर या अन्य राजा-महाराजाओं से अधिक पैसा हो जाएगा? यदि हो भी गया तो क्या फर्क पड़ेगा? क्या उनको आज कोई पूछने वाला है ? तुम सोचो, तुम्हारी क्या स्थिति होगी?" आपके शब्दो में न जाने क्या आकर्षण था, मैं तमाम व्यापार का कार्य बन्द कर भारत आ गया। गुरुदेव ने मुझे आध्यात्मिक-विकास, जीवन-निर्माण व त्याग की महती प्रेरणा दी, पर यह मेरी कमजोरी रही कि जीवन का जैसा विकास करना चाहिये था, वैसा नही कर सका।

दक्षिण-प्रवास में ही एक बार एक छोटे-से गाँव में विचरण करते हुए आपने जर्जर वस्त्रों मे लिपटी वृद्धा को देखा, तो द्रवित हो उठे। आगे चलकर मुझसे बोले - "उस वृद्धा को देखो।" आचार्यप्रवर के इस वाक्य मे करुणा बरस रही थी। मितभाषी आचार्यप्रवर का इतना कहना ही मेरे लिए मार्गदर्शक बन गया।

विहारोपरान्त आप एक ग्राम के विद्यालय भवन मे विराज रहे थे । यह सम्भावना जानकर कि आप दिनभर विराजेगे मैंने दयाव्रत के प्रत्याख्यान ले लिये। किन्तु निर्मोही साधको का कब विहार हो जाये, यह वे ही जानते हैं। आचार्य श्री ने अपराह्न ४ बजे वहाँ से विहार कर दिया। स्वाभाविक था मैं भी दयाव्रत मे होने से उनके साथ नंगे पाव चला। ग्रीष्मातप के कारण धरती आग उगल रही थी। आदत नही होने से मेरे पैरो में मोटे मोटे छाले हो गए। गन्तव्य पर पहुँचने के पश्चात् गुरुदेव मुझसे छालो के बारे मे दयार्द्र हो पूछने लगे तो आपकी करुणा को देखकर मुझे ऐसा लगा, कि मैं साक्षात् भगवान के सामने खड़ा हूँ।

एक बार किन्ही श्रमणों ने आचार्य भगवन्त के प्रति अपनी गलतफहमी या अन्य कारण से कटु शब्दों का प्रयोग कर दिया। श्रावक वर्ग का नाराज होना स्वाभाविक था। किन्तु आपने श्रावको से फरमाया कि आप लोग उनके पास जाकर मधुरता से उनकी नाराजगी दूर करो। ऐसा ही हुआ। भाई सा नथमल जी हीरावत आदि कतिपय श्रावकों ने जाकर सन्तों को निवेदन किया तो उन्हे अपने किए पर पश्चाताप हुआ। इससे परस्पर की कटुता का वातावरण एव गलतफहमी दोनो दूर हो गए।

पूज्यप्रवर के जीवन के अनेक संस्मरण याद आते हैं, किन्तु अन्तिम बात यही है कि वे साधना के प्रति सदैव जागरूक रहे। पात्र की क्षमता देखकर ही आप उसे नियम, प्रत्याख्यान दिला कर आगे बढ़ाते थे। आप आत्म-रमणता के साथ प्राणिहित के लिए भी तत्पर रहे।

आचारनिष्ठ होने के साथ आप उदार प्रवृत्ति मे आस्था रखते थे। आप प्रचार को नही, आचार को महत्त्व देते थे। स्वाध्याय का मुझे शौक था। मैं कभी जैनेतर आध्यात्मिक साहित्य भी पढ़ता तो वे यही देखते कि इस स्वाध्याय से जीवन में विकास हो रहा है। आप उदार, निर्भीक एव उच्च कोटि के साधक थे। आप शरीर से नही हैं, किन्तु आपकी वाणी समाज मे विधान के रूप मे सदैव आदर पाती रहेगी।

१३ए पेराडाइज अपार्टमेण्ट, ४४ नेपीयनसी रोड, मुम्बई

■

अद्भुत योगी और महामनस्वी

• श्री विमलचन्द डागा

(१) पुराने समय यातायात के साधन बहुत सीमित थे। जयपुर क्षेत्र पधारने हेतु संतो को बड़ा परीषह सहन करना पड़ता था। पुराने श्रावक कहते थे कि सतो को दूदू से तेला पचक्ख कर आना पड़ता था। आचार्य प्रवर पधारते तो जयपुर के प्रमुख श्रावक भाकरोटा (जयपुर से १३ किमी) तक अमूमन विहार सेवा किया करते थे। आचार्य भगवन्त के भाकरोटा पधारने पर एक बार गुलाब चन्द जी डागा की दादी, श्री सरदारमलजी डागा की मा एव श्री घेवरचन्दजी डागा की पत्नी, आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ भाकरोटा गईं। श्री घेवरचन्द जी डागा की पत्नी मीठा मा सा के नाम से प्रसिद्ध थी , शरीर से बहुत स्थूल थी, पावो मे हाथो मे जगह-जगह गाठे थी, चलना फिरना बहुत मुश्किल से हो पाता था। श्रद्धा के वशीभूत दर्शन करने वे भी भाकरोटा गई। सहज ही आचार्य श्री ने पूछा - मीठा मा सा धर्म करणी कैसी चल रही है ? तो मीठा मा सा बोले–" बाबजी ! शरीर साथ नही देता। जगह - जगह हाथ पाँव मे गाँठे हो रही हैं, चला नही जाता।" तो आचार्य भगवन्त ने फरमाया –"इन गाठो को भाकरोटा के टीलों मे ही क्यो नही छोड़ जाते हो ?" (उस समय भाकरोटा मे मिट्टी के टीले ही टीले थे)

श्रद्धाशील मीठा मासा जिनको घेवरानी जी भी कहते थे, तत्काल ही बोले –"बाबजी, आपने कहा और मैंने ये गाठे टीले मे ही छोड़ दी।"

देखते-देखते ही मीठा मा सा पूर्ण स्वस्थ हो गईं एव वर्षो धर्म-साधना मे अनुरक्त रही।

यह थी भगवन्त की वाणी की महत्ता एव पुरानी श्राविका की श्रद्धा का रूप।

यह प्रसग मैंने अपने भुआसा (श्रीमती जतन कवर जी धारीवाल) से सुना, जो वर्तमान मे ९० वर्ष की अवस्था मे है।

(२) इचरज कवर जी लुणावत की १६५ दिवस की तपस्या के समय आचार्य श्री का जयपुर पधारना हुआ। उस तप-समारोह मे केन्द्रीय मत्री श्री जगजीवन राम जी भी उपस्थित थे।

आचार्य भगवन्त ने अपने प्रवचन मे फरमाया कि आज शासक वर्ग को गाधी के सिद्धान्तो पर चलकर देश का वातावरण शुद्ध बनाना चाहिये। अभी आप लोग गाधी की कमाई खा रहे हो।

इस पर श्री जगजीवनरामजी नाराज होकर अपने वक्तव्य मे बोले कि आप लोग भी महावीर की कमाई खाते हो। उन्होने अच्छे शब्दो का प्रयोग नही किया तो हजारो की सख्या मे उपस्थित जनसमूह मे रोष व्याप्त हो गया। भीड़ श्री जगजीवनराम जी का कुछ भी कर सकती थी। ऐसी अवस्था को देखकर तथा ध्यान का समय भी नजदीक आया जानकर आचार्य श्री माहौल न बिगड़े, इसलिए तुरन्त वहा से पधार गये।

हम सभी युवाओ के मन मे बडी अशान्ति थी। रात को दर्शन करने भगवन्त के चरणो मे पहुचे। उनसे निवेदन किया कि भगवन् ! आपके बारे मे बहुत सुना कि देवता आपकी सेवा करते है। आपके पास अनेक लब्धियाँ हैं, आज आपने महादेव की भाति तीसरा नेत्र खोल क्यो नही दिया ?

करुणा सिंधु , क्षमासागर भगवन्त बोले- "भोलिया ! बैठे बैठे ही क्यो पचेन्द्रिय जीव की हत्या का पाप मोल

ले लिया ? मेरे लिये करना तो दूर की बात है, पर अगर यह विचार मात्र भी आ जाता तो जीवन भर की साधना ही निष्फल हो जाती।"

ऐसे थे वे समताधारी सजग साधनापुरुष आचार्य भगवन्त ।

(३) आचार्य श्री ने श्रमण सघ छोड़ने की जयपुर में घोषणा की। उस समय जैसे ही व्याख्यान समाप्त हुआ, जयपुर के एक वरिष्ठ श्रावक आदरणीय श्री स्वरूप चन्द जी चोरड़िया आचार्य श्री से बोले कि आपके श्रावकों का ऐसा कौन सा सगठन है जिसके बलबूते पर श्रमण सघ छोड़ दिया ? आचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज के साथ तो श्रावक श्राविकाओ का बहुत बड़ा समूह है।

तो आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मैंने श्रावको के पीछे सयम नही लिया। पेड़ के नीचे रहकर भी चौमासा पूरा कर सकता हूँ।

ऐसे थे दृढसयमी आचार्यप्रवर जो कि वीतराग वाणी का पूर्णत पालन करने हेतु पेड़ के नीचे भी चौमासा पूर्ण करने का साहस रखते थे।

(४) श्री निरजन लाल जी आचार्य राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष थे। यशवन्तसिंह जी नाहर भीलवाड़ा से तत्कालीन विधायक एव प्रसिद्ध अधिवक्ता थे। नाहर साहब उन्हें प्रेरणा देते चलने की, तो कहते-हाँ चलूँगा कई प्रश्न भी हैं, उनके समाधान प्राप्त करने है। एक दिन प्रवचन के समय पधारे। आचार्य श्री का व्याख्यान किसी अन्य प्रसग पर चल रहा था, श्रोताओ ने देखा कि एकाएक आचार्य श्री ने विषय ही पलट दिया। व्याख्यान समाप्त होने पर निरजन नाथ जी आचार्य श्री के चरण पकड़ कर बोले कि आपको यह कैसे ज्ञात हो गया कि मेरे मन मे क्या प्रश्न हैं। मेरे द्वारा किसी को न बताने पर भी आपको मेरे मन के प्रश्नों का कैसे ज्ञान हो गया ? आचार्य श्री कुछ भी नहीं बोले। एक तरफ गम्भीर साधक आचार्यप्रवर थे, तो दूसरी ओर अभिभूत दर्शनार्थी । (यह बात गुमानमलजी सा चोरड़िया ने आचार्य श्री की जन्म-जयन्ती पर फरमाई थी।)

(५) बूदी निवासी श्री सुजान मलजी भड़कत्या आचार्य श्री के परम भक्तो मे रहे। उनके सुपुत्र पन्नालाल जी साहब की भी भक्ति रही। किन्तु सतों का विचरण उस क्षेत्र मे न होने से परिवार का रुख मदिर की तरफ हो गया। उनके पुत्र श्री मोतीलालजी सा जयपुर तपागच्छ सप्रदाय के मत्री-पद का निर्वहन जिम्मेदारी पूर्वक कर रहे हैं। उनसे निकट का सम्बन्ध रहा है। एक दिन आचार्य श्री का प्रसग चला तो बोले—उस महापुरुष की बात छोड़ दो, कही पर भी जाता तो आचार्यश्री के दर्शन अवश्य करता था। अजमेर गया हुआ था। रात्रि अधिक हो गई, दर्शन की भावना से आचार्य श्री के चरणो मे पहुँचा व पाटे के पास बैठ गया। पूर्ण अन्धकार था। आचार्य श्री ध्यानस्थ थे। एकाएक ऐसा जबरदस्त प्रकाश हुआ, ऐसा प्रकाश, जिसकी मै जीवन मे कल्पना भी नही कर सकता। ऐसे प्रकाश मे जैसे ही आचार्य श्री की नज़र मेरी ओर गई तो मैं तो गद्‌गद् हो गया।

(६) आचार्यप्रवर आगरा पधारे। उपाध्याय कवि श्री अमरमुनिजी म.सा. व आचार्य प्रवर का मधुर मिलन हुआ। शब्दो से भावभीना स्वागत वहाँ के मेयर व सघ के लोगों ने किया तो मेयर कल्याणमल जी अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान से क्रिया के शूरवीर आये हैं एव ज्ञान की गगा (कवि जी) यहा पर है तो ज्ञान व क्रिया का अद्‌भुत जोड़ है।

दूसरे दिन व्याख्यान प्रारम्भ हुआ। पहले कविश्री अमरमुनि जी म.सा. ने प्रवचन फरमाया। फिर आचार्यप्रवर ने आगमवाणी का आधार लेते जो प्रवचन फरमाया उससे प्रभावित होकर मेयर अग्रवाल साहब ने कहा —"कल मैंने

बहुत बड़ी भूल की थी। एक को ज्ञान की गंगा एवं दूसरे को क्रिया की गंगा कहा था, परन्तु गजकेसरी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. तो ज्ञान और क्रिया दोनों के संगम हैं।"

मेरे परदादा सा. श्री कन्हैयालालजी डागा आचार्य प्रवर श्री शोभाचन्द जी म.सा. के दर्शनार्थ जोधपुर पधारे तो सहज प्रश्न किया – "पूज्य सा. आपके पीछे परम्परा के बारे में सोचा ?" पास मे बाल मुनि हस्तीमलजी महाराज विराज रहे थे। उनकी ओर संकेत करते हुए फरमाया –"इनके बारे मे तुम क्या सोचते हो? विनम्रतापूर्वक परदादा सा श्री कन्हैयालालजी बोले –"जब आपने सोच लिया, विचार कर लिया, तो हमारे सोचने की तो बात ही क्या ?"

१३७०, ताराचन्द नायब का रास्ता
जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

■

उच्च कोटि के सिद्ध पुरुष

• श्री गुमानमल चोरड़िया

परम पूज्य, चारित्र-चूड़ामणि, इतिहास मार्तण्ड सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अप्रमत्त योगीराज, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, जिन नहीं पर जिन सरीखे, आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा. लघुवय में ही प्रव्रजित हो गये थे। आपमें विचक्षणता एव होनहारिता सहज ही परिलक्षित होती थी, अत २० वर्ष की अवस्था में ही आपको आचार्य पद से सुशोभित किया गया। ६१ वर्ष तक आप आचार्य पद पर विराजे। इतने लम्बे समय तक आचार्य पद से अलकृत होने वाले आप ही एक आचार्य थे।

वृहद् अजमेर साधु सम्मेलन में आप श्री का एव ज्योतिर्धर क्रान्तिकारी आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. का भी विशेष सम्पर्क रहा। आचार्य श्री ने आपकी प्रतिभा को परखा। सम्मेलन के ३ वर्ष पश्चात् आप दोनों आचार्य जेठाना विराज रहे थे, तब आचार्य श्री जवाहर गुजरात के लिए विहार कर रहे थे । आचार्य श्री जवाहर ने विहार करते वक्त फरमाया कि आप मुझे मागलिक सुनाइये। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. हतप्रभ हो गये और कहा कि आप इतने बड़े आचार्य, मैं आपको क्या मांगलिक श्रवण कराऊँ? पर 'आचार्य को आचार्य मागलिक नही सुनावेगा तो कौन सुनायेगा?' आचार्य श्री जवाहर के स्नेह एव स्नेहपूर्ण व्यवहार के आगे आपको मागलिक श्रवण करवानी पड़ी।

आचार्य श्री मे एक विशेष गुण अप्रमत्तता का था। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक आप एक क्षण भी प्रमाद नहीं करते थे। आप दैनन्दिनी चर्या के अलावा अपने लेखन के कार्य में या अध्ययन के कार्य मे हमेशा व्यस्त रहते थे। कोई भी श्रावक-श्राविका दर्शन करने आते थे तब आप उनसे उनकी साधना के विषय मे जानकारी कर, कुछ अधिक प्रेरणा दे कर वापिस अपने लेखन या स्वाध्याय के कार्य मे व्यस्त हो जाते थे। व्यर्थ की सासारिक बातों का आपके सयमी-जीवन में कतई स्थान नहीं था।

जैन आगमों के आप श्री प्रकाण्ड पडित थे, गहन स्वाध्याय व चिन्तन आपके जीवन का मूल लक्ष्य रहा। आपके मन में एक भावना थी कि सन्त-सन्तियों को अध्ययन कराने के लिए योग्य विद्वानो की बहुत अल्पता है, अत एक सस्था ऐसी होनी चाहिये कि जहाँ छात्र अपने व्यावहारिक शिक्षण को प्राप्त करते रहने के साथ-साथ धार्मिक विषयों में भी पारगत हो सकें, अत आपकी प्रेरणा से प्रेरित होकर एक सिद्धान्त शाला की स्थापना हुई एव योग्य समर्पित गृहपति श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा की सेवाओं से प्राकृत एव सस्कृत में अच्छे विद्वान् तैयार हो रहे हैं।

आप यह महसूस करते थे कि सन्त-सतियों की सख्या सीमित है, सब जगह चातुर्मास हो नही सकते, अत कम से कम पर्युषण पर्वाधिराज में कुछ स्वाध्यायी बन्धु, जिन क्षेत्रों में चातुर्मास सन्त-सतियो के नही हों, वहाँ जाकर श्रावक-श्राविकाओं में ज्ञानाराधना, धर्माराधना करवाने में सहयोगी बनें। उस समय केवल स्वामी श्री पन्नालालजी म.सा. की प्रेरणा से विजयनगर में स्वाध्यायी बन्धुओं की एक सस्था थी जो देश में सब जगह स्वाध्यायियों को भेजने में सक्षम नहीं थी, अत आपकी प्रेरणा से 'सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल' के अन्तर्गत 'स्वाध्याय संघ' की स्थापना की गई। इसके माध्यम से योग्य शिक्षण के लिए समय-समय पर जगह-जगह शिविर आयोजित होते रहते हैं। आपने स्वय ने स्वाध्यायी बनने के लिये युवकों को प्रेरित किया, फलस्वरूप अच्छी सख्या में अच्छे स्तर के स्वाध्यायी सर्वत्र

सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

आप हमेशा मुमुक्षु जीवो को सामायिक और स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा दिया करते थे। तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, राजस्थान जो-जो क्षेत्र आपकी चरण-रज से उपकृत हुए, वहाँ सर्वत्र आपकी सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा से काफी भव्य जीव लाभान्वित हुये हैं। आपने अपने जीवन का काफी समय मौन-साधना मे व्यतीत किया है। पूर्व मे सोमवार को, बाद में गुरुवार को व्याख्यान के अलावा मौन एव प्रतिमास कृष्णा पक्ष की दशमी को पूर्ण मौन एव एकाशन की साधना करते थे।

सन् १९५२ मे सादड़ी-सम्मेलन मे जब श्रमण सघ का निर्माण हुआ और इसे सजोया गया तो इसमे आपका पूर्णतया मार्ग-दर्शन एव सहयोग था। उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा. ने जब श्रमण सघ से पृथक् होने की घोषणा की तब आप उपाचार्य श्री को श्रमण सघ मे उपाचार्य पद पर रहने के लिये विशेष आग्रह करने उदयपुर पधारे थे। उपाचार्य श्री ने आपकी बातो को विशेष महत्त्व देते हुये भी असमर्थता प्रकट की एव आप से कहा कि "श्री हस्तीमलजी म सा ! आपने मेरा साथ नही दिया, पर एक दिन आपको भी श्रमण सघ से पृथक् होना पड़ेगा, आप इसमे रह नही सकेंगे।" महापुरुषो के मुख से उच्चरित स्वर कभी मिथ्या नही हो सकते, एतद्स्वरूप कालान्तर मे आप श्री ने भी जयपुर के उपनगर आदर्शनगर मे पृथक्त्व की घोषणा की।

आप श्री का एव आचार्य श्री नानालालजी म सा का भोपालगढ़ मे मैत्री-सम्बन्ध स्थापित हुआ, उस प्रसग से वार्ता हेतु जब आपकी सेवा मे श्रावक उपस्थित हुये तब आपने एक ही जिज्ञासा प्रकट की कि भाई ! आचार्य श्री अन्त करण से चाहते है या नही ? जब आचार्य श्री नानालालजी म सा से पुछाकर आप से पुन निवेदन किया कि आचार्य श्री की अन्तरमन की भावना है, तब आप प्रमुदित हुए एव आगे का सभावित कार्यक्रम निश्चित होता गया तथा अत्यन्त प्रेम के वातावरण मे मैत्री-सबध स्थापित हुआ जो आज भी यथावत् है।

आप श्री, जब भी कोई श्रावक-श्राविका सेवा मे उपस्थित होते तो उन्हे प्रेरणा देने के अलावा अन्य साधको के लिये भी साधना के विषय मे जानकारी कर प्रेरित करने के लिये फरमाया करते थे। मुमुक्षु जीवो के लिए सहज रूप मे आपके मुखारविन्द से जो शब्द उच्चरित हो जाते, वे हमेशा सत्य साबित हुए है।

आप उच्च कोटि के सिद्ध पुरुष एव एक महान् सन्त थे। आगत व्यक्ति क्या जिज्ञासा लेकर आया है, आपको सहज ही भासित हो जाता था। आप शेषकाल मे लाल भवन मे विराज रहे थे। प्रतिदिन प्रवचन की पीयूषधारा प्रवाहित होती थी। विधान सभा के तत्कालीन स्पीकर श्री निरजननाथजी आचार्य पधारे एव व्याख्यान सुना, प्रभावित हुये, पुन दूसरे दिन प्रवचन-सभा मे पधारे। आचार्य जी अपने मन मे जो जिज्ञासाएँ लेकर पधारे थे, उन सबका ~~आपने प्रवचन~~ मे समाधान कर दिया। प्रवचन के पश्चात् आचार्यजी ने ~~आचार्यश्री से अर्ज किया—जो-~~जो जिज्ञासाएँ मेरे मन मे थी, उन सबका बिना पूछे ही आपने समाधान कर दिया। निरजननाथजी आचार्य श्री से अति प्रभावित हुए। जीवनकाल मे आप श्री ने यद्यपि कोई लम्बी तपस्या नही की, पर जीवन के सध्याकाल मे तेले की तपस्या कर, पारणे मे सथारा ग्रहण कर, १० दिन तिविहारी सथारा कर अतिम समय सवा चार घण्टे का पूर्ण चौविहारी सथारा कर, एक कीर्तिमान स्थापित किया।

–पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ,
चोरड़िया भवन, सोथली वालों का रास्ता, जयपुर

■

गुरु-समागम से जीवन में परिवर्तन

• श्री ताराचन्द सिंघवी

मेरा जन्म हैदराबाद में हुआ। बचपन वहाँ ही बीता। आज भी मेरे बड़े भाई साहब श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ हैदराबाद के अध्यक्ष हैं। लगभग १५ वर्ष की अवस्था में पाली आया। वैसे मूलत हमारा परिवार पाली का ही था। धर्म पर मेरी आस्था बचपन से थी, परन्तु मुझे यह ज्ञात नही था कि मेरे गुरु कौन हैं। संयोग से बाबाजी सुजानमल जी म.सा.का पाली पधारना हुआ। मैं पाली मे अपनी बहिन के पास रहता था। उन्होने मुझे बताया कि तेरे गुरुदेव आए हैं। बाबाजी म.सा की वाणी का प्रभाव मेरे पर इस कदर पड़ा कि मैंने उनसे पूछा - "गुरुदेव ! आचार्य श्री के दर्शन कब होगे ? आप ही मुझे गुरु आम्नाय करा दे।" बाबाजी म.सा. ने गुरु आम्नाय करवायी और कहा कि तुम्हारे देव 'अरिहत ' गुरु 'निर्ग्रन्थ' और धर्म 'दयामय' है। आज से तेरे धर्म गुरु रत्नवश के शासन प्रभावक आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. हैं। तब से मेरे मन में उनके दर्शन की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हो गयी। सयोग से कुछ समय व्यतीत होने पर श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा का चातुर्मास पाली मे हुआ। उनके दर्शन कर मैं आनन्दित हो गया । मेरे मन मे ऐसे भाव जगे कि मै गुरुदेव के दर्शन करता ही रहूँ। मैंने चातुर्मास मे सेवा भी खूब की। किन्तु मै थोड़ा उग्र स्वभावी था। आचार्य भगवन्त के तेज का मुझ पर प्रभाव पड़ा। चातुर्मास मे सात दिनों तक शान्ति जाप चला, तब रात्रि मे जाप को सुचारु रूप से चलाने की जिम्मेदारी मुझ पर थी। उन दिनो लगभग रात भर जगना पड़ता था। उस समय मैंने देखा कि पूज्य गुरुदेव एक नीद ही लेते हैं, जब जाग जाते, तब ही ध्यान मे एक आसन से बैठकर चार-पाच घटो तक ध्यान मग्न रहते हैं। मैंने सोचा इस युवावस्था मे भी गुरुदेव को नीद नही आती क्या ? मेरी जिज्ञासा बढ़ी, कई बार दयाव्रत का आराधन करते समय रात्रि मे मैं स्थानक मे सोया, तब मैंने फिर देखा कि गुरुदेव एक नीद से जब भी जगते तो ध्यान मे आरूढ हो जाते। ऐसा सत मैंने कभी देखा नही, जिसमे तनिक भी आलस्य नही , इधर-उधर की पचायती नही और दिनभर लेखन कार्य करता रहे। मैं सोचता, क्या गुरुदेव को थकावट नही आती है ?

जैसे-जैसे गुरुदेव के सम्बन्ध में मेरी जानकारी बढ़ती रही वैसे-वैसे मेरी धर्म-श्रद्धा सबल होती गई। गुरुदेव के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ता गया। प्रतिवर्ष दर्शन करने जाता तो गुरुदेव पूछते, धर्मध्यान चल रहा है ? आगे क्या बढ़ाना है ? कहते - "लाला धर्म क्षेत्र मे आगे बढ़ो। " मेरे भाग्य मे धर्म-ध्यान तो विशेष नही बढ़ पाया, परन्तु गुरुदेव और धर्म पर श्रद्धा बढ़ती रही । समाज सेवा मे मैंने अवश्य अधिक भाग लिया जो निरन्तर चलता रहा। सामाजिक क्षेत्र मे मेरे जीवन मे अनेक बार उतार-चढ़ाव आए, परन्तु मैंने पीछे हटने का कभी भी नही सोचा। गुरुदेव के आशीर्वाद से मैं समाज-सेवा और सघ-सेवा मे निरन्तर लगा रहा। मेरे कई साथी, युवक और बच्चे मुझे 'गुरुजी ' के नाम से सबोधित करने लगे।

एक बार गुरुभगवन्त ने भी कहा - 'गुरुजी' मारे सू थारे चेला घणा है' मैंने कहा - "भगवन्, जब मैं ही आपका चेला हूँ तो मेरे चेले किसके चेले हैं, आपके ही तो हैं। "

आचार्य भगवन्त के मद्रास चातुर्मास में हम दोनों दर्शन हेतु गए। गुरुदेव ने पूछा - "क्या नियम लेने आए हो ?" मैंने कहा—"भगवन् हम शीलव्रत अंगीकार करना चाहते हैं।" गुरुदेव ने पूछा - "पकावट है ?" मैंने कहा -

'हां भगवन्।' उस समय मेरी उम्र लगभग ४५ वर्ष की थी।

कुछ वर्षों पश्चात् गुरुदेव दक्षिण से जलगाव, इन्दौर होकर जयपुर की ओर बढ़े। तब मैंने सोचा कि भगवन्त का चातुर्मास पाली करवाना है। लगातार हमारी पाली की विनति चलती रही, परन्तु गुरुदेव ने मौन के अलावा किसी प्रकार का आश्वासन नही दिया। विनति का हमारा क्रम बराबर चलता रहा। कोसाणा के चातुर्मास के पश्चात् मेरी प्रबल भावना हुई कि अगला चातुर्मास पाली में येनकेन प्रकारेण करवाना है। आचार्य श्री के पीपाड़ पधारने पर कभी हमारा सघ, कभी युवक सघ, बालिका सघ, बालक सघ और कभी श्राविका सघ थोड़े-थोड़े अन्तराल से पीपाड़ जाते रहे। वहाँ पर सम्पन्न होली चातुर्मास पर हमें केवल इतनी ही सफलता मिली कि हमें क्षेत्र खाली नही रहने का आश्वासन मिल गया। पीपाड़ से विहार हुआ। मैं प्रतिदिन विहार मे जाता और निवेदन करता 'भगवन् आप क्षेत्र पर कृपा रखे।' (बोल बोल म्हारा प्यारा गुरुवर, काई थाणी मरजी रे, म्हा सू मुण्डे बोल)।

गुरुदेव महामन्दिर पधारे। हमे सकेत मिला कि गुरुदेव नव वर्ष की वेला मे चैत्र शुक्ला एकम को चातुर्मास खोल सकते हैं। पाली सघ के प्रतिनिधि महामदिर गये। वहाँ पर दोपहर को गुरुदेव ने हमारी विनति स्वीकार करते हुए कहा कि यदि चल सकने की स्थिति रही तो पाली मे चातुर्मास हो सकेगा। आचार्य भगवन्त की चलने जैसी स्थिति थी ही नही। लगभग ८०-८५ दिन आप जोधपुर शहर एव उसके उपनगरो में धर्म प्रभावना करते रहे।

यहाँ पर विहार १-२ किमी ही हो पाता था। गुरुदेव को कमजोरी भी महसूस होती थी। सभी यह सोचने लग गए कि अब चातुर्मास जोधपुर मे ही होना है। मेरे साथी भी इस विचार से सहमत होने लगे थे। परन्तु मैंने हर बार यही कहा कि आचार्य भगवन्त ने जिस दृढ़ता के साथ चातुर्मास खोला है, उसके अनुसार अगला चातुर्मास पाली मे ही होगा।

यहाँ एक चमत्कार घटित हुआ। आचार्य भगवन्त का प्रथम विहार जोधपुर की मधुवन कालोनी से कुड़ी गाँव की ओर हुआ। विहार के समय पाली और जोधपुर के अनेक श्रावक उपस्थित थे। जोधपुर निवासी कहने लगे कि आज इतना लम्बा विहार कर कुड़ी पधारना सभव नही है। गुरुदेव रास्ते में विश्राम कर पधारेंगे। मैंने कहा - "आज आप आचार्य भगवन्त का चमत्कार और पाली की पुण्यशालिता का अहसास करेगे।" जय - जयकारो की आवाज गूज उठी। विहार कर आचार्यप्रवर कुड़ी पधार गए। किसी प्रकार की थकावट नही लग रही थी। उनके चेहरे की तेजस्विता से ऐसा आभास हो रहा था जैसे आचार्य भगवन्त स्वस्थ हो गए हैं। दूसरे दिन का विहार मोगड़ा की तरफ होना था। पाली सघ और जोधपुर सघ साथ मे था। गर्मी का मौसम था और विहार लम्बा था। परन्तु प्रात काल आकाश मे मेघ प्रकट हुए, रिमझिम वर्षा हुई और मौसम सुहावना हो गया। आचार्य श्री ने विहार करते समय फरमाया कि आज तो कश्मीर जैसा मौसम है। इस तरह गावो मे विचरण करते हुए आचार्य श्री रोहट पधारे, जहा धर्मध्यान का अनुपम ठाट लगा। वहाँ से विहार करते हुए दो जगह रात्रि विश्राम कर आचार्य श्री केरला स्टेशन पधारे। प्रमुख सत श्री हीरामुनि जी (वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.) ने फरमाया, "सिंघवी साहब, आज क्या लक्ष्य है? पाली की गुमटी तो बहुत दूर है। इतना विहार सम्भव नही लगता।" मैंने कहा, "भगवन्! रास्ते में खारड़ो की ढाणी आती है, सड़क से एक किलोमीटर अन्दर चलना होगा। वहाँ पर स्कूल है। ठहरने मे परेशानी नही आयेगी।" किन्तु जब आचार्य भगवन्त खारड़ो की ढाणी की ओर मुड़ने वाले रास्ते के निकट पहुचे तो उनसे निवेदन किया गया, "भगवन्! इधर पधारे। पाली की गुमटी तो बहुत दूर है" तो गुरुदेव ने कहा, "सीधे ही चलते हैं" और गुरुदेव बिना किसी अड़चन के पाली की गुमटी पधार गये। पाली सघ के हर्ष का पारावार नही रहा। गुरुदेव अपार

जन-समूह के साथ शिष्य मण्डली सहित चातुर्मास हेतु सुराना भवन पधारे। दूसरे दिन पाली में पर्याप्त वर्षा हुई। सन् १९९० का पाली का यह ऐतिहासिक चातुर्मास स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाये तो भी कम है। भले ही सम्प्रदाय के घरों की सख्या कम थी, परन्तु उत्साह देखते ही बनता था। दक्षिण भारत से लौटने के पश्चात् यह पहला अवसर था कि आचार्य भगवन्त प्रतिदिन सुराना भवन के बाहर स्थित प्रवचन हाल मे पधारते थे। कभी स्वय प्रवचन फरमाते और कभी सतियों को प्रवचन देने का कहते। किन्तु प्रतिदिन आधा-पौन घण्टे अवश्य विराजते।

वकील हुक्मीचन्द जी आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ पधारे। वे जब मगलपाठ लेने के लिये गए तो आचार्य भगवन्त ने कहा कि अभी अवसर नही है, मैं भी वही पर था। मुझ से कहा - "लाला ! ध्यान रखना, यह स्थान साताकारी है, बिना आरम्भ - समारम्भ का है।" सुराणा मार्केट में स्थित यह भवन आज सामायिक स्वाध्याय सदन के रूप मे धर्माराधना का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है।

मेरे जीवन की क्या-क्या बातें लिखूँ, मैं उग्र स्वभावी था। फिल्म देखने की भी मेरी आदत थी, मैं कोई फिल्म देखे बिना नहीं रहता था। इस प्रकार मुझ मे कई अवगुण थे, किन्तु आचार्य भगवन्त के प्रति मैं पूर्णत समर्पित था। सवत् २०४७ मे सोचा कि भगवन्त का चातुर्मास आ रहा है, यह पिक्चर देखने का कार्यक्रम कैसे पूर्ण होगा, क्यो न इसे पहले ही छोड़ दिया जाये। उस समय मैं जर्दे का पान भी खाता था। मैंने सोचा चातुर्मास मे तो इसे छोड़ना ही पड़ेगा। अत पहले ही क्यो न छोड़ दिया जाए। किन्तु आचार्य भगवन्त के प्रति श्रद्धा का यह प्रभाव रहा कि विगत ९ वर्षों मे मैंने शायद ही एक या दो फिल्म देखी होगी, पान भी सम्भवतया पाच-सात बार खाने का प्रसङ्ग बना होगा। इस प्रकार मेरी कई बुरी आदते छूट गई।

आज मुझे किसी प्रकार का शौक नही रहा, न गोठ-घूघरी, न सिनेमा और न टीवी का। ९ वर्षों में एक ही लगन मे लगा हुआ हूँ। आत्म सुधार और सघ-सेवा ही मेरा लक्ष्य बन गया है। आचार्य भगवन्त फरमाया करते थे - 'घर सुधरा सब सुधरा'। इसी बात को पकड़कर मैंने समाज-सेवा और सघ-सेवा का बीड़ा उठाया है, जो निरन्तर सफलता की ओर बढ़ रहा है।

पाली चातुर्मास के पूर्व आचार्य भगवन्त ने मुझसे कहा - "चातुर्मास कराने का मानस तूने पक्का बना लिया है, किन्तु छुट्टी कितनी ली ?" मैंने कहा - "भगवन् फिलहाल १ वर्ष।" मैंने परिवार से १ वर्ष के लिये स्वीकृति ले भी ली। आचार्य भगवन्त के पावन चरणो में सेवा का प्रसङ्ग बना रहा, यह मेरा सौभाग्य था। पाली का यह चातुर्मास होने के पूर्व पाली के कई श्रावक मेरी मजाक उड़ाते कि केवल २०-२५ घर है, इतना बड़ा प्रवचन हॉल बनाया, उसमें किसे बिठायेंगे, मासखमण आदि तपस्या करने वाले भी रत्नवश में नही हैं, खर्चे की पानड़ी करने में भी पसीना आयेगा। परन्तु सब कुछ सहज ही हो गया। पाण्डाल चारों माह भरा रहा। पर्युषण मे लोग खड़े रहे। मासखमण आदि तपस्याओं की झड़ी लगी। पानड़ी मे उम्मीद से अधिक राशि एकत्रित हुई। इस चातुर्मास में श्री लाभचन्द्र जी ने ४० x ६० के १८ प्लाट देने की भावना व्यक्त करते हुये कहा, इन पर बाउण्डरी खिंचाओं तो सघ को दे दूँ। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि आप आज दो तो कल बाउण्डरी खिंचादू। यह कार्य सम्पन्न भी हुआ और आज उस स्थान पर श्री जैन रत्न छात्रावास बनकर तैयार हो गया। इसमें अब छात्र भी रह रहे हैं।

आचार्य भगवन्त का जब भी स्मरण करता हूँ, मन प्रमुदित हो उठता है, जीवन में आत्म-विश्वास का अनुभव होता है तथा सघ-सेवा में सतत लगे रहने की अन्तःप्रेरणा मिलती है।

-७, गाँधी कटला, पाली मारवाड़ (राज.)

आराध्यदेव की स्मृति आज भी मेरे हृदय पटल पर अंकित है

• श्री गणेशमल भण्डारी

अदभुत योगी, असीम आत्म-शक्ति के धारी, हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन एव परिग्रह के त्याग की कसौटी पर खरे उतरने वाले, ज्ञान के साथ शुद्ध क्रिया-पालन करने वाले मेरे आराध्य देव, आचार्य भगवन्त जिनके नाम का श्रवण सम्भवत मॉं के गर्भ से करके आया था, के सबसे पहले दर्शन कहाँ किये, यह मुझे ध्यान मे नही आता, पर मेड़ता का चातुर्मास एव सादड़ी सम्मेलन का चित्र मेरी स्मृति में है।

मैं अपने पिताश्री के साथ मेड़ता चातुर्मास मे गया था। बचपन मे मैं अपने फूफाजी (भूरोसा) की दुकान से बिना पूछे जेब मे खाने की कुछ गोलियाँ ले आया। सायंकाल प्रतिक्रमण के समय गोलियाँ पाजामे से गिर गई। मेरे पिताश्री ने एक चाँटा मारा। प्रतिक्रमण के बाद आचार्य भगवन्त ने मेरे पिताश्री को उपालम्भ दिया—"जीवन बनाने की कला सिखाओ।" दूसरी रात पिताश्री स्थानक मे ही सोए हुए थे। अचानक रात मे आचार्य भगवन्त के कमरे में प्रकाश हुआ। सफेद कपड़े मे एक बूढ़े व्यक्ति को देखकर सब घबरा गए , आचार्य भगवन्त की एक आवाज सुनते ही निश्चिन्त हो गए। पिताश्री आराध्य देव की साधना के अनेक प्रसग व चमत्कार सुनाया करते थे। आचार्यश्री की सम्मेलन में बड़ी धाक थी, वे जितने दयालु व कृपालु थे, उतने ही व्रत-नियम मे चट्टान की तरह अडिग थे। आपने सिद्धान्तो का सौदा समन्वय के लिए कभी नही किया। आपका प्रभाव अनूठा था। निमाज मे देवराजजी खीवसरा भूत-प्रेत की बाधा से ग्रस्त थे। आपकी मागलिक से बाधा दूर हो गई, जीवन के अन्तिम समय तक बाधा नही आई।

मेरे जीवन पर गुरुदेव का बड़ा उपकार रहा। मैं १९७१ मे जयपुर के लाल हाथी वालो के मकान से चरणों मे समर्पित हो गया, भक्ति की ओर बढ़ता रहा, चरणो मे समर्पित होता रहा। मेरी अनन्त प्रबल पुण्यवानी के कारण आचार्य भगवन्त का दक्षिण मे पधारना हुआ, मुझे चरणो मे लुटने का अवसर मिलने पर भी, जितना लुटना था, नही लुट पाया। सोलापुर में आचार्य भगवन्त विराज रहे थे, वहाँ मैंने स्थानक में प्रेतबाधा से युक्त एक मुस्लिम भाई को देखा। वह ऊपर की मजिल तक पहुँच गया। आचार्य भगवन्त की सेवा मे श्री नथमलजी हीरावत एव श्री श्रीचन्दजी गोलेछा ज्ञान-चर्चा कर रहे थे। मुस्लिम भाई को वज्रासन मे विराजे आचार्यश्री ने जैसे ही निहारा, वह शान्त हो गया। अपने कर्मो को दोष देते हुए उसमे से भूत-प्रेत की बाधा निकल गई।

विहार मे लम्बे समय तक चरणों मे साथ रहने से अनेक सस्मरण याद आते हैं। बागलकोट के पूर्व सुराणाजी के बगले पर पूज्यश्री कृष्णा दशमी को मौन साधना मे विराज रहे थे। प्रतिक्रमण के बाद ध्यान-साधना हेतु एक वृक्ष के नीचे विराजे। हम भी खिड़की से बार-बार देखने की कोशिश कर रहे थे, रात्रि के करीब १ बजे का समय होगा, आचार्य भगवन्त एक पाँव पर खड़े थे एव प्रकाशमय शरीर था, यह मैंने आँखों से देखा।

रास्ते के विहार मे कोर्ती गाँव के पास एक पटेल का बैल आचार्य भगवन्त की कृपा-दृष्टि का पात्र बना, वह बैल नहीं, एक श्वेत अश्व जैसा लग रहा था, आचार्य भगवन्त ने उसकी ओर कृपा भरी दृष्टि से देखा। उसने पूर्व

पुण्यवानी से बैल के भव में आचार्य भगवन्त जैसे महापुरुष के दर्शन किए।

दक्षिण पधारने पर इस भक्त की भक्ति पर भी थोड़ा सा विश्वास हुआ। संकेत के रूप में फरमाया - "तू माटी का गणेश नही, गजानन्द है, सघ को तेरी जरूरत पड़ेगी, ध्यान रख लाला।"

पिताश्री के देहान्त के समय निमाज में ससार का काम निपटाकर पूरे परिवार एव गाँव के सदस्यों के साथ कोसाणा चातुर्मास में गुरुदेव के दर्शन करने हेतु गया। गुरुदेव बड़ी कृपा कर व्याख्यान मे पधारे तथा हमे पिताश्री सुगनमल जी के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उसी समय हमने चातुर्मास की विनति की। आचार्यदेव के पीपाड़ पहुँचने पर सघ-हित को सोचकर चातुर्मास हेतु पाली को स्वीकृति प्रदान की गई। मध्याह्न के समय मै आराध्यदेव के चरणो में रो पड़ा। प रत्न श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा पास ही विराजमान थे। बोले-"भक्त ने कुछ फरमावो जल जलो वै रयो है" आचार्य भगवन्त ने फरमाया-"पाली के बाद पहले निमाज का ध्यान रखूँगा, तू मारे सुगन जी रे जगह है मने ध्यान राखणो है।"

सयोग से पाली से विहार निमाज की ओर हुआ। मैं बगड़ी ग्राम मे गुरुदेव के चरणो मे उपस्थित हुआ। दिनाक १०३१९९१ को आचार्य भगवन्त ने निमाज में प्रवेश किया। चौके की व्यवस्था मेरे जिम्मे होने से मै मात्र दर्शन ही कर पाता, अधिक समय नही निकाल पाता था। महावीर जयन्ती के पहले दोपहर मे दर्शन करने लगा तब आराध्य देव ने रुककर कहा-"लाला दूर दूर क्यो रहता है, तेरी भक्ति में फरक है? हम तो यह देहलीला यही छोड़ने वाले हैं।"

सथारा के पच्चक्खाण के साथ मुझे लगा अब महापुरुष नही रहेगे। अन्तिम श्वासोच्छ्वास के समय बाहर ही खड़ा देखता रह गया। तेरह दिन के सथारे के साथ आचार्य भगवन्त अपने लक्ष्य की ओर महाप्रयाण कर गए, पर आराध्य देव मेरे हृदय पटल पर आज भी विराजमान हैं।

१३, छठा क्रास, त्रिवेणी रोड,
यशवन्तपुर, बैंगलोर, ५६००२२

■

महिमाशाली गुरु महाराज

• श्री भवरलाल बाफना

आजकल चमत्कारो को एनलार्ज (बढा-चढ़ाकर) करके श्रद्धा बटोरी जाती है, जो क्षणिक व अस्थायी होती है। गुरु महाराज के चमत्कारों को, जिनका मैं प्रत्यक्ष साक्षी हूँ, लिखकर मैं न तो श्रद्धा बटोरना चाहता हूँ, न ऐसी प्रेरणा ही देना चाहता हूँ। उनका स्वय का अप्रमादी दैनन्दिन जीवन व शरीर का अणु-अणु एव रोम-रोम श्रद्धा वाला था। मुझे इदौर व भोपालगढ के दो चातुर्मासो मे पाच-पाच मास तक निकट सान्निध्य एव सम्पर्क मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस अवधि में मैंने स्वय कई अद्भुत व अविस्मरणीय प्रसग देखे, पर मैं उनका वर्णन नही करके उस महामानव की कुछ अद्भुत विशेषताएँ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

उनकी गुणगाथा कहाँ से शुरू करूँ और कहा उसका अत करूँ (अत तो है ही नहीं) समझ नही पाता। फिर भी जैसे-जैसे स्मृति मे आ रहा है, लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ।

इदौर चातुर्मास के स्वीकृत होने से शुरू करूँगा। सन् १९७७ मे पालासणी मे गुरु महाराज ने फरमाया था कि अगला चातुर्मास मारवाड़ मे नही करने का ध्यान है। मेरे दादाजी उस समय आगरा विराजते थे। उनको जब यह बात ज्ञात हुई तो उनका फोन आगरा से मेरे पास इदौर आया कि भवरलाल! अगर तेरी दृढ़ श्रद्धा हो और आत्म-विश्वास हो तो चातुर्मास का लाभ तुझे मिल सकता है। इदौर चातुर्मास कराना सहज नही था जिसका मुख्य कारण लाउडस्पीकर व भोजन का टिकट मुख्य अड़चने थी। गुरुदेव के भक्त बादलचदजी मेहता एव मेरे सहयोगी बस्तीमलजी चोरड़िया से बातचीत की। हम तीनो उस समय के इदौर सघ के अध्यक्ष श्री सुगनमलजी सा भडारी व मानद् मत्री श्री फकीरचदजी मेहता से चातुर्मास की चर्चा के लिये गये। मै आभारी हूँ उन दोनो का कि इन्दौर मे लाउडस्पीकर एव भोजन टिकट की उलझन के बावजूद हमारी भावना समझकर बैठक बुलाने की व्यवस्था की। बैठक मे काफी विरोध था, परन्तु एक तो भडारी सा का व्यक्तित्व और गुरु महाराज के दर्शन व प्रवचन-श्रवण-लालसा ने उनको सोचने पर मजबूर कर दिया और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके एक विनति पत्र लिखा गया। उसमे गुरु महाराज की समाचारी के अनुसार ही चातुर्मास की विनति की गयी। सघ अध्यक्ष, मत्री महोदय व अन्य लोगो के हस्ताक्षरों सहित यह विनति पत्र लिखा गया।

गुरु महाराज उस समय मेड़तासिटी विराज रहे थे। हम लोग फकीरचद जी मेहता व सागरमल जी बेताला को लेकर विनति के लिये मेड़तासिटी गये। वदन करके बैठे और चातुर्मास की बात चलाई। इतने मे श्री हीरामुनजी (वर्तमान आचार्य श्री) ने फरमाया कि विनति तो लेकर आये हैं, पर हमारी समाचारी के विषय मे तैयार है या नही। हमने तुरन्त विनति पत्र जिसमे सघ अध्यक्ष व मत्री के हस्ताक्षर थे, सेवा मे प्रस्तुत किया। फकीरचदजी से काफी विचारविमर्श के बाद गुरु महाराज ने ध्यान मे रखने का आश्वासन सा दिया।

इससे मुझे सतुष्टि नही थी, इसलिए मैं बारबार विनति के लिये गया। गुरु महाराज ने मेरी कितनी कड़ी परीक्षा ली, यह लिखने का विषय नही है। अन्त मे एक दिन मै और गुरु महाराज अकेले बैठे थे तो मैंने अश्रुपूरित हृदय से विनति की कि दादा लोगो को भोपालगढ व आगरा मे चातुर्मास के व दीक्षा के लाभ दिये तो क्या पोता बिना लाभ के रहेगा। करुणा के सागर ऐसा तो आप कर नही सकते। अब निर्णय आपके हाथ मे है।

इसके पहले मैं यह बता देना चाहता हूँ कि कुछ सालों से मेरे विचार नास्तिकता की तरफ झुक गये थे और साहित्य भी मैं उसी तरह का पढ़ता था। पर गुरु महाराज के प्रति असीम आकर्षण के वश साल मे एक बार दर्शन करने जरूर जाता था। वदन करने के बाद तुरन्त मागलिक फरमा देते थे, क्योंकि वे जानते थे कि यह खाली दर्शन करने ही आता है। न माला फेरने, न सामायिक या स्वाध्याय के लिए और न ही कोई व्रत लेने के लिये मेरे से कहा। वे तो अन्तर्ज्ञाता थे कि यह अभी इस तरह की मानसिक स्थिति में नही है।

युद्धकाल मे बालोतरा चातुर्मास था। हीरा मुनि सा. नीचे विराज रहे थे, गुरु महाराज के दर्शन करके ऊपर से नीचे आया तो उन्होंने मुझे बुलाया और उलाहना देने लगे कि जोगीदासजी का पोता होकर माला भी नही फेरते हो। चूकि मेरी उस समय नास्तिक विचार-धारा थी। मैं माला फेरने व व्रत के विरोध मे बहस करने लगा। बहस जोर की होने से ऊपर गुरुदेव ने सुन लिया। नीचे झाँककर हीरा मुनिजी से फरमाया कि इसे जाने दो, रोको मत, समय पर मैं ही उसे समझाऊँगा। कितना धैर्य, अपने आप पर कितना विश्वास? आज भी मुझे ताज्जुब होता है कि मै उनसे दूर था, पर वे मुझे अपने कितना निकट समझते थे। सच ही कहा है शिष्य गुरु को नही ढूँढता, गुरु शिष्य को ढूँढ लेता है। व्यक्ति को पहचानने की उनमे कितनी बड़ी सामर्थ्य थी। मेरे जैसे हजारो व्यक्तियों को उन्होने पहिचाना, ढूँढा, और धर्म की तरफ मोड़ा।

काफी भागदौड़ और निरन्तर विनति से द्रवित होकर उन्होने मुझ पर करुणा की वर्षा की। आगार सहित इन्दौर चातुर्मास की स्वीकृति फरमाई। उज्जैन वालो की भी उस समय जोरदार विनति थी।

नागदा जो इदौर से ७० किलोमीटर करीब है, वहाँ से एक रास्ता उज्जैन भी जाता है, मै, मेरी पत्नी और बस्तीमलजी नागदा गये। वदन करने के पश्चात् यकायक गुरु महाराज ने फरमाया कि भवरलाल। अब मेरा कर्जा उतार दे। मैं भी असमजस मे पड़ गया कि कौन से कर्ज की बात हो रही है। गुरु का कर्जा तो कभी उतरता नही। मैं उस समय इदौर चातुर्मास की खुशी मे था। आगार मे उज्जैन भी खुला था, इसलिए और भी शका थी। मैंने भी उस समय फिर से वदना करके हाथ जोड़कर कहा कि कर्जा ब्याज समेत ले लीजिये। गुरु महाराज ने फरमाया कि ब्याजसमेत की बात कर रहा है तो पति-पत्नी दोनो नित्य एक सामायिक करने का व्रत ले लो। कितने लम्बे समय तक धैर्य, अपने आसामी पर कितना विश्वास- आम पक गया है, उसे तोड़ लेने की कितनी अपार शक्ति। हम दोनो ने तुरन्त हाथ जोड़कर व्रत ले लिया। जो आज भी बदस्तूर जारी है। तीन चार बार पर्युषण-सेवा मे उनकी आज्ञा से बाहर भी गया हूँ। उनका फरमाना था कि तुम्हारे सरीखे स्वाध्यायी बनकर बाहर जाकर सेवा दें तो दूसरों पर भी असर पड़ता है।

इदौर चातुर्मास की उपलब्धियाँ गिनाना सहज नही है। उस समय तक इदौर जैसे बड़े शहर मे कुछ ही लोगो को प्रतिक्रमण आता था। निरन्तर प्रेरणा से वहाँ कई लोगो ने प्रतिक्रमण सीखा। स्वाध्याय सघ की स्थापना हुई। कई स्वाध्यायी बाहर क्षेत्रों में जाकर सेवा देने लगे। वह क्रम आज भी जारी है। इसमें अशोक मण्डलिक व विमल तातेड़ ने सक्रिय सहयोग किया।

समाज मे विद्वानों की कमी गुरु महाराज को निरन्तर खटकती रहती थी। आज भी स्थिति कुछ ठीक नही है। एक प्रयास के रूप में उस समय इदौर में पहली विद्वत् परिषद आयोजित की गयी और बहुत से विद्वानों का सम्मेलन हुआ जो आज भी कम ज्यादा रूप से चालू है। विद्वानों को आदर सत्कार देने एवं आर्थिक रूप से उनको समृद्ध बनाने में आज भी हमारा समाज उदासीन है। गुरु महाराज की अगर सचमुच में हमें बात माननी है तो समाज को

इस काम मे तन-मन-धन से आगे आना चाहिये।

पर्युषण में उपस्थिति ज्यादा होगी, इसलिये गुरु महाराज को लाउडस्पीकर का उपयोग करना चाहिए, ऐसी सुगबुगाहट इंदौर में होने लगी। वे अपनी समाचारी के पक्के थे, इसलिए लाउडस्पीकर पर बोलने का तो सवाल ही नही उठता। एक दिन पर्युषण के पूर्व महावीर भवन राजवाडा से गुरु महाराज दो सतों के साथ जानकी नगर पधारे। मैं उस समय महावीर भवन में था ।

शहरवालो को आशका हुई कि हमारे लाउडस्पीकर की सुगबुगाहट से आचार्य श्री कही जानकीनगर तो न विराज जाये। जानकी नगर की उस समय स्थिति ऐसी थी कि सतो को ठहराने या सामायिक करने का कोई स्थान नही था। टीन के शेड में भयकर गर्मी मे उस दिन वहाँ विराजे। शहर के भी बहुत से लोग आ गये थे। आज तो जानकी नगर मे जैन भवन है, बड़ा जैन स्थानक है। आज इदौर मे जानकी नगर पोश कालोनी मानी जाती है और शहर वाले उस कालोनी को मिनी मारवाड़ के नाम से कहते हैं।

मेरे छोटे भाई अनूपकुमार की पत्नी ने उस चातुर्मास में मासखमण की तपश्चर्या की। प्रत्याख्यान के दिन महावीर भवन में सचित्त नारियल सबको प्रभावना मे बाटे। गुरु महाराज को तत्काल मालूम हो गया। मेरे को बुलाया और फरमाया कि तुमसे मुझे यह उम्मीद नही थी कि तुम ही मेरे नियमो को भग करोगे। मेरी, पूरे परिवार की व पारणा करने वाली की हार्दिक इच्छा थी कि पारणा के दिन गुरु महाराज घर पधारे व आहार-पानी का लाभ दिरावें। मिश्री से कोमल हृदय वाले , किन्तु नियम, समाचारी के कठोर रक्षक मेरे घर नही पधारे, क्योकि सचित्त नारियल बाट कर उनको ठेस पहुचाई थी। उसी दिन हस्तीमलजी झेलावत की पत्नी के पारणा था, वहाँ पधार गये। नियम के लिए नजदीक दूर का उनके लिए कोई महत्त्व नही था।

छह माह तक कोई साधक, साधु, श्रावक झूठ न बोले और सम्यक् आचरण करे तो वचनसिद्धि हो जाती है, ऐसा एक दिन गुरु महाराज ने फरमाया । उनके खुद तो झूठ बोलने का सवाल ही नही था। उनकी वचनसिद्धि के कई उदाहरण मेरे पास है, पर मैं उनका वर्णन करके चमत्कारो की शृखला नही बनाना चाहता।

इन्दौर में एक दिन गुरु महाराज मेरे मकान पधारे। पूछा, सारा घर तो मेरी देखने की इच्छा कतई नही है- पर तेरे इतने बड़े मकान मे सामायिक-स्वाध्याय का कमरा कहाँ है- यह बता । मैं सकते मे आ गया। मकान तो हम बड़े से बड़ा बना लेते है, पर सामायिक-स्वाध्याय के लिए छोटी सी जगह भी नही रखते। हमारा धर्म के प्रति कैसा अनुराग है। उस प्रेरणा से मै सामायिक-स्वाध्याय के लिये नियत जगह रखता हूँ और किताबे तो सैकडो की तादाद मे रखता हूँ।

बहुत समय पहले की बात है - बाबाजी सुजानमल जी म.सा. गुरु महाराज के साथ भोपालगढ मे विराज रहे थे। मेरी उम्र उस समय करीब दस वर्ष की थी। रोज बाबाजी से मागलिक सुनने एक दफे जाता था। दो दिन गया नही । तीसरे दिन गया तो बाबाजी म.सा. ने फरमाया कि दो दिन क्यो नही आया? इसलिए आज मागलिक नही सुनाऊँगा। मैं बिना मागलिक सुने ही जाने लगा। उस समय इतनी बुद्धि तो थी नही, गुरु महाराज ने देख लिया, मुझे रोका और बाबाजी म.सा. से निवेदन किया कि अगर आप मागलिक नही फरमायेंगे तो यह आना ही बद कर देगा। और मुझे तो अपरोक्ष रूप से फरमा ही दिया कि आना बद मत कर देना।

इन्दौर से विहार करके जलगाव की तरफ पधार रहे थे। शाम को बडवाह रुकना था। बडवाह ३ किलोमीटर रह गया था। सूर्यास्त होने मे थोड़ी ही देर थी। पास मे गेस्ट हाउस था। मैंने गेस्ट हाउस के चौकीदार से बात करके

ठहरने की स्वीकृति ले ली। गुरु महाराज से गेस्ट हाउस में पधारने की विनति की। गुरु महाराज ने फरमाया - मैं गलत परम्परा नही डालूँगा, न सुविधा भोगी बनूँगा।

थोडी ही दूर पर एक विशाल बड़ का पेड़ था और चबूतरा सा बना हुआ था। गुरु महाराज व सब सतों ने वही आसन बिछाया, प्रतिक्रमण किया, ज्ञान साधना की और रात्रि में वहीं विश्राम किया। समाचारी और नियमों के अटूट होने से घने जगल मे पेड़ के नीचे बिना हिचक और डर के विश्राम करने को रुक गये। मैंने ऐसा अनूठा उदाहरण पहली बार ही देखा।

विहार के समय गुरु महाराज के पाव में छाले पड़ जाते थे। कभी-कभी पैरो मे कपड़ा बाधकर विहार करते थे। खिलाड़ी खेलते समय घुटनों पर सलेटी रग का मोटे कपड़े का पेड़ लगाते हैं। सुगनचदजी बोकडिया व बादलचदजी घुटने दुखने से वैसा पेड लगाते थे। मैंने गुरु महाराज से अर्ज की कि ये पेड आप पैरों में लगा लीजिये ताकि छाले मे दर्द नही होगा और विहार आसानी से होगा। गुरु महाराज ने फरमाया कि अगर मैं जरा भी समाचारी में ढीला पड़ गया और ये पेड लगाने लगा तो भविष्य मे सत-सती पेड तो एक तरफ मोम, प्लास्टिक और न जाने क्या क्या उपयोग करने लगेगे, इसलिए मैं सघहित मे छालों की परवाह नही करता। कितनी दूरदृष्टि !

एक रात भोपालगढ मे ब्रह्मचर्य के विषय की चर्चा चल रही थी। गुरु महाराज ने फरमाया कि ६० वर्ष की उम्र होने पर जाट माली भी घर के बाहर सोते हैं, या अलग अकेले सोते है। जैनो को कम से कम एक शिक्षा तो उनसे अवश्य लेनी चाहिये कि ६० की उम्र के बाद चौथे व्रत का नियम ले ले। जाट, माली, विश्नोई अक्सर गुरु महाराज के पास आते रहते थे। उनकी बात का भी गुरु महाराज कितना खयाल रखते थे।

जलगाव मे नवजीवन मगल कार्यालय, जहाँ चातुर्मास मे गुरु महाराज विराजते थे, मेरा मकान चार किलोमीटर दूर पडता है। श्री गौतम मुनिजी जो दो साल पूर्व ही दीक्षित हुए थे, एक दिन गोचरी हेतु घर पधारे। मैंने कुछ कपड़े खद्दर के बहरा दिये। गौतम मुनिजी ने इन्कार कर दिया। मेरे जोर देने पर कि अगर गुरु महाराज मना करे तो वापिस कर दीजियेगा। स्थानक मे गौतम मुनिजी से गुरु महाराज ने पृच्छा की कि ये खद्दर के कपडे कहा से लाए? उन्होने मेरा नाम बताया। गुरु महाराज ने फरमाया कि भवरलाल तो खद्दर पहनता नही , खरीद कर लाया होगा। मैंने भी तत्काल उसके बाद से खद्दर के कपड़े ही पहनने का व्रत लिया और प्रायश्चित्त भी। मैं प्रिय श्रावक, पर बिना लिहाज और बगैर लाग लपेट लिहाज के खरी खरी बात कही। गुरु का उपालम्भ देना एक तरह से बैल की लगाम खीचना ही है ताकि शिष्य दुबारा भूल न करें व नियमानुसार चले।

मेरे पिताजी की कन्या पाठशाला सचालन मे विशेष अभिरुचि थी। मैंने व मेरे भाइयो ने उनकी स्मृति मे कन्या पाठशाला बनाकर समाज के अन्तर्गत सचालित करने की भावना से स्थानक के पास ही जहाँ बच्चिया आराम से आ जा सके, जमीन क्रय कर पाठशाला भवन बनाया, पर एक साल तक समाज की ओर से सचालन करने की तत्परता न दिखने पर मन ही मन, इसे सरकार को सुपुर्द करने का मानस बनाया। मन मे यही विचार लिए सवाई माधोपुर में विहार मे शामिल होने गया। वदन करके बैठा तो फरमाया कि समाज हमेशा बडा होता है। क्या श्रद्धा में फर्क आ गया है जो समाज के निमित्त बनी चीज सरकार को देने का खयाल आया है? मैं तो हक्का बक्का रह गया कि मेरे अतरग विचार उनको कैसे मालूम पड़ गये, जबकि मैंने हमेशा साथ रहने वाले रिखबराजजी बाफणा को भी नही कहा था। थोडी देर मै एकदम गुमशुम हो गया। आज गुरु कृपा से भोपालगढ का समाज पाठशाला को सुचारु रूप से चला रहा है। सरकारी मान्यता भी मिल गयी है। अभी करीब २०० बालिकाएँ विद्याध्ययन कर रही

है।

गुरु महाराज नित्यकर्म के लिए बाहर पधारते थे तो पीछे मैं अपने आपको उनकी नित्यलिखित डायरी पढ़ने से रोक नही पाता था। एक दिन अचानक ही गुरु महाराज तुरन्त पधार गये, मेरे हाथ मे डायरी थी और मैं पढ़ रहा था सो उन्होंने देख लिया। फरमाया - चोरी करनी कब से सीख ली ? मैने कहा - मैं तो खाली डायरी पढ़ रहा था, उसमे से कुछ पन्ने वगैरह तो नही निकाले फिर चोरी कैसे हुई ? फरमाया – बिना इजाजत के किसी की डायरी, लिफाफा, पत्र, कार्ड पढ़ना चोरी है। इसमे तीसरे व्रत का दोष लगता है, यह हमेशा ध्यान मे रखना। मै तो डर रहा था कि आज गुरु महाराज कितने नाराज होगे , एक तरह से काप ही रहा था। चोरी करने वाले के पाव कच्चे। पर उन्होने इतने धीरज से समझाया कि आज मैं कभी ऐसी चेष्टा भी नही करता। यहाँ तक कि किसी की किताब पड़ी हो तो उसे पूछकर लेता हूँ।

–जे जे एग्रो इण्डस्ट्रीज, एम आई डी सी
जलगाव (महा)

■

श्रद्धा क्यों न हो उन पर

• श्री पारसमल चोरडिया

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी मसा से मैं अत्यन्त प्रभावित हूँ। अनेक सस्मरण आज भी याद है। कुछ सस्मरण मैंने अपने पूज्य पिता श्री लखमीचन्दजी चोरडिया एव बुजुर्ग श्रावक श्री हरकचदजी मूथा से सुने हैं तथा कुछ का मैंने स्वय अनुभव किया है। विक्रम सवत् २००० में पूज्य आचार्य भगवन्त का उज्जैन चातुर्मास कई कारणो से स्मरणीय रहा–

(१) इस चातुर्मास मे मूर्तिपूजक सन्त श्री धर्मसागरजी महाराज का भी चातुर्मास था। एक दिन जब आचार्यश्री जगल से लौट रहे थे तब आपसे धर्मसागरजी महाराज का साक्षात्कार हो गया। उन्होंने आचार्यश्री को सम्बोधित कर कहा कि यह अच्छा अवसर मिल गया है जब मन्दिर और मूर्ति के विषय मे थोड़ी चर्चा कर लें ।

आचार्यश्री ने कहा - मुनिजी चर्चाएँ तो आपके और हमारे पूर्वजो ने बीसियो बार की हैं, किन्तु उनका कोई निर्णायक नतीजा आज तक नही निकला। इसके उपरान्त भी यदि आप चाहे तो आपके सघ की ओर से इस प्रकार की माग प्रस्तुत होने पर समुद्यत हो सकूँगा। आप कदाचित् मेरी बात से सहमत भी हो जाये तो जरूरी नही कि आपका सघ भी हमसे सहमत हो।

आचार्य श्री ने स्थानक में आकर समाज के सम्मुख धर्मसागरजी महाराज की बात रखी। इससे मूर्तिपूजक समाज और स्थानकवासी समाज दोनों में हलचल मच गई। मूर्तिपूजक समाज ने पारस्परिक विचारविमर्श के पश्चात् कहलवाया कि हमारे यहाँ दोनो समाजो मे पारस्परिक सौमनस्य और प्रेम का वातावरण है । हम चर्चा कुछ नही करना चाहते। परिणामत विवाद का जो बुदबुदा उठा था वह उसी क्षण शान्त हो गया।

(२) स्थानकवासी धर्म को मानने वाले परिवार अनेक जातियो मे थे और आज भी है। उस वक्त मोड़ जाति के श्रावक श्राविका भी स्थानकवासी धर्म का आचरण करते थे। उनके साथ बैठकर भोजन करने की परम्परा नहीं थी, कारण कि उनको हल्की जाति का मानते थे। जब यह बात पूज्य आचार्य भगवन्त को ज्ञात हुई, तब उन्होने स्थानकवासी श्रावक सघ के प्रमुख व्यक्तियों से कहा कि आपके मोड़ जाति के भाई हैं और आपके साथ-साथ धर्म आराधना करते है। स्वधर्मी बन्धुओ के साथ भेदभाव उचित नही। इस पर स्थानीय प्रमुख श्रावको ने सवत्सरी के उपवास के पारणे सामूहिक करने का निर्णय लिया और सामूहिक पारणे एक ही स्थान पर हुए। मोड़ जाति के सभी श्रावक भी सम्मिलित हुए। प्रेम का वह दृश्य अद्भुत था।

(३) सवत् २००० में ही पर्युषण महापर्व पर स्थानीय स्थानक छोटा पड़ने के कारण प्रवचनो की व्यवस्था बच्छराज भण्डारी की धर्मशाला मे की गयी थी। उस वर्ष पर्युषण पर्व के दिनो वर्षा खूब होती थी। पर जिस समय पूज्य आचार्य भगवन्त एव सन्तमण्डल को प्रवचन के लिये धर्मशाला में जाना होता तब वर्षा बन्द हो जाती। वहा पर पहुचने के पश्चात् फिर वर्षा प्रारम्भ हो जाती तथा प्रवचन पूर्ण होने के पश्चात् वर्षा बन्द हो जाती और पूज्य आचार्य भगवन्त एवं सन्त-मण्डल स्थानक में आसानी से आ जाते। एक भी दिन पूज्य आचार्य भगवन्त एव स्थानीय सघ को प्रवचन में जाने आने की अन्तराय नहीं लगी। यह एक ऐसा चमत्कार था कि हर व्यक्ति पूज्य आचार्य भगवन्त के गुण- गान करता थकता नहीं था। प्रकृति भी पूज्य आचार्य भगवन्त पर मेहरबान थी।

अब कतिपय वे संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनका मुझे स्वय अनुभव हुआ –

(१) पूज्य आचार्य श्री का सैलाना चातुर्मास हुआ। उस समय पूज्य पिता श्रीलखमी चन्द जी कमर की हड्डी क्रेक हो जाने के कारण पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ सैलाना जाने मे असमर्थ थे। उन्होने मिठाई एव अन्य १-२ वस्तुओं का त्याग कर दिया था कि जब तक पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शन नही कर लूँ तब तक इनका सेवन नही करुगा। यह बात पूज्य आचार्य भगवन्त को सैलाना में मालूम हुई तब चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् यद्यपि पूज्य आचार्य भगवन्त को सैलाना से वापस राजस्थान की ओर जाना आवश्यक था, किन्तु करुणा के सागर पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य पिता श्री की भक्ति के कारण उज्जैन पधारे। पूज्य पिता श्री ने उनके दर्शन कर अपने को धन्य माना।

(२) यद्यपि मेरा पूरा परिवार धार्मिक था और है , किन्तु मैं उस समय धर्म के रास्ते पर बिल्कुल नहीं था। और तो ठीक है, किन्तु २-४ माह मे भी नवकार मत्र का स्मरण नही करता था। इतनी मेरी दयनीय स्थिति थी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी बहुत ही दयनीय थी। पूज्य आचार्य भगवन्त उज्जैन पधारे, हमारा घर रत्नवश का भक्त होने के कारण मैं पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनो का एव प्रवचन आदि का लाभ लेने के लिये जाने लगा।

१२ दिन पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन्त स्थानक से विहार कर फ्रीगज पधारे। मैं भी दोपहर मे पूज्य आचार्य भगवन्त के साथ साथ फ्रीगज गया। वहाँ पर मुझसे आचार्य भगवन्त ने पूछा कि धार्मिक कार्यक्रम क्या करते हो ? उस दिन प्रथम बार पूज्य आचार्य भगवन्त से बात करने का स्वर्णिम अवसर मिला। उसके पूर्व पूज्य आचार्य भगवन्त से बात करने के विचार ही मेरे मन मे नही आये।

मैंने उत्तर दिया कोई भी धार्मिक कार्यक्रम नही करता हूँ। इस पर उन्होने मुझे प्रेरणा दी कि आपको नवकार मन्त्र की एक माला नियमित गिनना है और मैंने सहर्ष नवकार मन्त्र की माला नियमित गिनने का सकल्प पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से लिया। तबसे मैंने जीवन मे प्रथम बार नवकार मन्त्र की माला गिनना प्रारम्भ किया, जिससे आत्मा मे अद्‌भुत शान्ति एव सुख की लहर प्राप्त हुई ।

उसके पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन्त के अहमदाबाद चातुर्मास मे मै दर्शनो के लिये गया। वहॉ पर फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि धार्मिक क्रिया करते हो ? तब मैंने निवेदन किया कि पूज्य गुरुदेव आपकी प्रेरणा के अनुसार नवकार मत्र की माला गिन रहा हूँ। तब उन्होने कहा अरे भोलिया, अभी तक तूने सामायिक शुरू नही की। आज ज्ञान पचमी का दिन है और आज से आपको नित्य सामायिक करना है। मैने निवेदन किया कि सामायिक के कोई भी उपकरण मेरे पास नही हैं। अत कैसे प्रारम्भ करूँ।

उपस्थित श्रावक द्वारा सामायिक के उपकरण की व्यवस्था करने पर मुझे सामायिक का नियम करवाया और नित्य सामायिक करने की प्रेरणा देते हुये पच्चक्खाण करवाये। तबसे आत्मा मे शान्ति एव सुख की वृद्धि के साथ आर्थिक स्थिति भी उत्तरोत्तर सुधरती गई। यह तो प्रथम उपकार मेरे जैसे पापी के ऊपर पूज्य आचार्य भगवन्त का हुआ।

घर मे पूरा वातावरण धार्मिक होता चला गया और पूज्य आचार्य भगवन्त एव सन्त-सती मण्डल पर दृढ श्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती गई।

(३) इन्दौर चातुर्मास के १०-१२ वर्ष पूर्व मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला बाई चोरड़िया ने रात्रि ४-५ बजे स्वप्न देखा कि पूज्य आचार्य भगवन्त एव सन्त घर पर पधारे और हमने पूज्य आचार्य भगवन्त को पातरे मे चावल बहराये और आचार्य भगवन्त मुस्कराते हुए चावल लेकर वापस पधार गये। धर्मपत्नी ने प्रात. मुझे स्वप्न का वृत्तान्त सुनाया,

अपार प्रसन्नता हो रही थी। तभी मेरे मन में विचार आया कि जब तक पूज्य आचार्य भगवन्त के चरण अपने घर पर नहीं पड़ते, तब तक जीवन पर्यन्त चावल का त्याग कर दिया जाय। धर्मपत्नी सहर्ष सहमत हो गई और हम दोनो ने चावल का उपयोग करना बन्द कर दिया। इन्दौर चातुर्मास के पश्चात् आचार्य श्री के उज्जैन पधारने पर हमारा स्वप्न साकार हुआ।

(४) पूज्य आचार्य भगवन्त का विहार भीलवाड़ा से मालवा की तरफ प्रारम्भ हुआ। चित्तौड़गढ, नीमच होते हुये मन्दसौर पधारे। मन्दसौर मे श्री महावीर प्रसाद जी की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई और पू. गुरुदेव ने उनका नाम नन्दीषेण मुनि रखा। वहाँ से विहार कर जावरा होते हुये रतलाम पधारे। रतलाम मे सम्प्रदायवाद अधिक है, किन्तु पूज्य आचार्य भगवन्त के प्रवचनों में तीनो सम्प्रदायो के श्रावक-श्राविका हजारो की सख्या मे उपस्थित हुए, ऐसा दृश्य तीनो सम्प्रदायो के श्रावको की उपस्थिति का न पूर्व मे कभी देखा और न उसके पश्चात् आज तक देखने को मिला।

(५) पूज्य आचार्य भगवन्त इन्दौर जानकी नगर स्थित जैन भवन मे विराजमान थे। उन दिनो मैने स्वप्न देखा कि पूज्य आचार्य भगवन्त विराजमान हैं। मैंने पूज्य आचार्य भगवन्त से निवेदन किया कि बड़े भाई सा श्री बाबूलाल जी चौरड़िया को चौथे व्रत के आजीवन त्याग करा दीजिये। इस पर पूज्य आचार्य भगवन्त ने कहा कि चौथे एव पॉचवे व्रत के त्याग करा दो। उस वक्त बडे भाई सा की तबीयत खराब चल रही थी। अशक्तता ज्यादा थी। प्रात काल मैंने बड़े भाई साहब से कहा कि पूज्य आचार्य भगवन्त ने आपको चौथे व पाँचवे व्रत के त्याग कराये हैं, ऐसा मैंने स्वप्न देखा है। अत आपका मन हो तो त्याग कर दीजिये।

इस पर बडे भाई सा ने स्वीकृति दे दी, मैं तुरन्त उज्जैन विराजित तपस्वी लालचन्दजी म श्री कान मुनिजी मसा एव श्री गुलाब मुनि जी म.सा के पास गया और कहा कि भाई सा को चौथे व पॉचवे व्रत के त्याग करना है अत आप घर पर पधारे और उन्हे त्याग करा देवे। श्री गुलाब मुनिजी मसा घर पधारे और स्वप्न अनुसार उन्हे चौथे एव पाचवे व्रत के पच्चखाण कराये।

दोपहर मे मैं पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनो के लिये इन्दौर गया और निवेदन किया कि भगवन्त आपने जो मुझे निर्देश दिया उसका मैंने पालन कर दिया है। पूज्य आचार्य भगवन्त एक मिनिट सोचने लगे फिर कहा कि कैसा निर्देश ? मैंने कहा कि आपने मुझे स्वप्न मे बडे भाई सा को चौथे एव पॉचवे व्रत के पच्चक्खाण कराने के लिये कहा था। भाई सा की तबीयत खराब होने के कारण इन्दौर नही ला सकते थे। अत श्री गुलाब मुनि जी मसा. से उन्हे पच्चक्खाण करवा दिये हैं।

उस समय श्री कन्हैयालालजी लोढा (जयपुर) वहाँ पर सामायिक मे बैठे थे। पूज्य आचार्य भगवन्त ने उनको सबोधन करते हुये कहा कि "सुनो श्रावक जी! थाने रूबरू केवा तो भी थे कहणो नी मानो ? इनके स्वप्न मे भी कह देवा तो ये केणो कर लेवे।"

—श्री पारस भय्या,

पुराना कैलाश टाकीज के सामने, उज्जैन (म प्र) ४५६००६

■

नामैव ते वसतु शं हृदयेऽस्मदीये

• प्रो कल्याण मल लोढा

कुछ मनीषी ऐसे विराट् मेधा, प्रज्ञा व दिव्य व्यक्तित्व की तेजस्विता से पूर्ण होते हैं, जिन्हे शब्दों मे रूपायित करना असंभव है, वे शब्दातीत होते हैं- अथाह सागर की भाति जिसकी गहराई को नही मापा जा सकता। पूज्य हस्तीमलजी महाराज साहब ऐसे ही प्रज्ञावान, दिव्य व अलौकिक सद्गुरु थे। जब कभी उन पर सोचता हूँ, जब कभी जीवन के किसी एकाकी क्षण में भावनाए अतीत मे लौटती हैं, तब मन, प्राण और तन भाव-विभोर होकर उन्हे अपनी अशेष श्रद्धा और प्रणति देते है। अग्रेजी के महान् आलोचक मेथ्यू आर्ननाल्ड की एक कविता सहज स्मृति मे आती है—

प्रश्नो मे सब बंध मुक्त तो केवल तुम हो।
हम प्रश्नो पर प्रश्न करे तुम मौन विहँसते।
पर ज्ञान मे तुम उस गिरि सम सहज उभरते
जिसका गौरव गान सुना नक्षत्रो को।
अपने अडिग पदो की गुरुता मे लहरो को
करते हो तुम विवश, श्रेष्ठतम स्वर्ग बनाते
किन्तु भटकती मानवता का धीर बंधाते
समतल पर ला भाव-भूमि की सीमाओ को (**अनुवादक–भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज'**)

वे यही हैं - दर्शन, ज्ञान और चारित्र की उच्चतम पावनता के सर्वोच्च शिखर पर देदीप्यमान है- जिनके लिये भगवान् महावीर की यह गाथा ही सटीक ठहरती है—

सर्वारिए परायिणइ अर्वारिए पराइज्जइ।

जो वीर्यवान है, जिसमे अशेष उत्साह है - साहस, ओज, पराक्रम और पुरुषार्थ का अक्षय स्रोत है - जिसके अन्त.करण मे शिव-सकल्प सदैव विद्यमान रहते हैं, वही ससार के दुष्कर पथ को पार कर विश्व मे आलोक स्तम्भ बन जाता है। आचार्य हस्ती ऐसे ही आलोक स्तभ थे। दर्शन, ज्ञान और चारित्र की सर्वोत्कृष्टता के श्रमण। 'षट्त्रिंशद्गुणसम्पन्न परमो गुरु।' सम्भवत द्वादशानुप्रेक्षा (कुन्दकुन्द) मे धर्म के दस लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं-

उत्तम खम - मद्दवज्जव - सच्च-सउच्च सजम चेव।
तवचागमकिंचण्हं बम्ह इदि दसविह होदि॥

उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम सयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य - ये ही धर्म के दस लक्षण है। आचार्यप्रवर इन सभी उत्तम लक्षणो के मूर्त रूप थे।

गुरु व आचार्य की दृष्टि ही शिष्य के सारे सशयो विकल्पो का और सदेहो का निवारण करती है। भारतीय सस्कृति मे इसी से गुरु और गोविन्द की तुलना मे गुरु को ही श्रेष्ठ गिना है, क्योकि गुरु ही आत्म-सधान का मार्ग प्रशस्त करता है - वही ज्ञानाजन शलाका से अज्ञान की तमिस्रा दूर कर ज्योति विकीर्ण करता है। आद्य शकराचार्य ने 'विवेक चूडामणि' में गुरु की महत्ता प्रतिपादित करते हुये कहा है कि गुरु का व्यक्तित्व सुप्त चेतना को ऊर्ध्वमुखी

कर परा विद्या की प्राप्ति कराता है। मुझे श्री गुरु गीता का यह श्लोक अत्यन्त प्रिय है—

ज्ञानस्वरूप निजभावयुक्तमानन्दमानन्दकर प्रसन्नम्।
योगीन्द्रमीड्य भवरोगवैद्य श्रीमद्गुरु नित्यमह नमामि ॥११४॥

पूज्य आचार्य ऐसे ही ज्ञान स्वरूप, निज आत्म-बोध से सपन्न, आनन्द की पीयूष धारा मे अवगाहन करने वाले योगीन्द्र - पूजनीय और भव रोग की सजीवनी देने वाले वैद्य थे। गुरु शब्द का व्युत्पत्तिपरक तत्त्वार्थ समझाते हुए प. केशव देव शर्मा ने लिखा है कि 'ग' शब्दे क्र्यादि और 'गृ' निगरणे तुदादि गण की धातु को 'कुम्रारुच्च' इस उणादि सूत्र से कु प्रत्यय और उकारान्तादेश होने पर 'उरण् रपर' सूत्र से वह रपरक हुआ। फिर प्रातिपदिक सज्ञा के अनन्तर 'सु' विभक्ति से 'गुरु' बनता है। गुरु मे गकार सिद्धिदाता, रेफ पापनाशक और उ कार का अर्थ शम्भु है। (कल्याण योगाक) । ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति को गुरु कहा गया है। एक अन्य मत के अनुसार 'गु' अधकार का द्योतक है और 'रु' प्रकाश का। गुरु अधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है - 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। 'गिरत्यज्ञानमिति गुरु'। 'यद्वा गीयते स्तूयते देवगन्धर्वादिभिरिति गुरु' एव 'गृणाति उपदिशति धर्ममिति गुरु।' तात्पर्य यह है कि गुरु धर्म के उपदेश से अज्ञानान्धकार को नष्ट कर ज्ञान की ज्योति प्रदान करता है। गुरु ही देव गन्धर्व आदि से वन्द्य होता है। आद्य शकराचार्य के अनुसार जिसने अविद्या रूपी ग्रथि का छेदन कर दिया है, वही गुरु है। जैन ग्रथो मे गुरु के लिये धर्माचार्य आदि शब्दो का प्रयोग किया गया है। भगवती आराधना मे दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य इन पाँच आचारों का जो स्वय निरतिचार पालन करता है - तथा दूसरो को प्रवृत्त करता है वही गुरु है - आचार्य है। भगवती सूत्र में सद्गुरु के लक्षणो का विवेचन मिलता है। गुरु वही है जो सूत्र और अर्थ दोनो का परम ज्ञान रखता हो, सघ के लिए रीढ़ के सदृश हो और धर्म सघ को सतापो से मुक्त करने की क्षमता रखता हो एव आगमो के गूढ़ार्थ बताता हो - वही आचार्य है - गुरु है। गुरु अतरग व बहिरग परिग्रह से रहित होता है। आचार्य भद्रबाहु ने सघ के आचार्य को 'सीयघरो आयरियो' की सज्ञा दी है अर्थात् आचार्य शीत गृह के समान होता है - शान्त और शीतल, समस्त कषायो से मुक्त। आज तो विज्ञान के अनुसधान ने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि आतरिक व बाह्य शीतलता (सौम्य और सरलता) ऊष्मा से अधिक मनुष्य को अधिक शक्ति सम्पन्न बनाती है। इस वैज्ञानिक मान्यता को 'क्रियोजेनिक्स साइन्स' कहा गया है। इस आतरिक व बाह्य शीतलता का ही सदेश आचार्यप्रवर स्वाध्याय व सामायिक, चिन्तन व ध्यान से दिया करते थे। स्वाध्याय एव सामायिक के पश्चात् वे चिन्तन व ध्यान की ओर अभिप्रेरित करते थे ।

सिंह के समान निर्भय हो, आकाश की भाति निर्लेप और सघ के अनुग्रह मे कुशल हो, सूत्रार्थ मे विशारद और सर्वत्र कीर्ति सम्पन्न हो वही आचार्य श्रेष्ठ है। (भगवती सूत्र, अभयदेव वृत्ति) आदिपुराण मे भी गुरु के लक्षण बताए हैं। 'गुरु-तत्त्व-विनिश्चय' मे गुरु की अनेक विशेषताओ व गुणो का निरूपण किया गया है। गुरु मनुष्य को अन्तर्मुखी बनाकर आत्मानुसधान की ओर अग्रसर व प्रेरित करता है। आचार्यप्रवर का यही सदेश था कि मनुष्य को कर्म बध व कर्म विपाक से मुक्त होने के लिए षडावश्यक हैं। पातजल योग सूत्र (२-४) मे कहा गया है 'स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोग । अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता (आत्मा) का बोध होकर साधक को अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है। अभीष्ट की सिद्धि से तात्पर्य है कि अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और चारित्र की सिद्धि। इसे ही योग-साधना में भिन्न प्रकार से "तस्य सप्तधा प्रान्तभूमि. प्रज्ञा" कहा गया है। यह निर्विवाद है कि शीतलता अथवा शान्ति बाहर से नही आती। उसका मूल स्रोत भीतर आत्मा के निकट है - मन जितना आत्मा से दूर होगा - उतना ही कर्मजन्य क्लेश और अशान्ति होगी। आचार्य प्रवर की यही शिक्षा थी कि तुम्हारा ज्ञान आनन्त्य तक और

सर्वभूतों के प्रति प्रेम, दया व सौहार्द भी उसी प्रकार आनन्त्य तक प्रसारित हो - यही दर्शन है - यही चारित्र्य है - यही अहिंसा है । यही "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" है। परस्पर एक दूसरे के लिए निमित्त बनना ही जीव का उपकार है। जीव का आत्मभूत लक्षण 'उपयोग' है। 'जीवो उवओगलक्खणो' यह लक्षण त्रिकाल मे बाधित नही होता है और पूर्ण निर्दोष है।

आचार्यप्रवर ने पच महाव्रतों को स्वीकार कर कठोर मुनि-जीवन की साधना की। आत्म-सयम, अप्रमाद, अकषाय और समत्व की साधना ही उनकी जीवन प्रविधि थी। इस साधना पथ मे आने वाले सारे उपसर्गों और परिग्रहों को समभाव से स्वीकार कर वे सदैव अडिग,अचल और अकपित भाव से उच्चतर चेतना की प्रज्ञा भूमि पर विचरण करते रहे। वे वीतरागी थे। आतरिक शुद्धि के यही मूल तत्त्व है - केवल बाह्य शुद्धि से ही यह नही होता। पुन प्रभु महावीर का कथन याद आता है "ज मग्गहा बाहिरिय विसोहिं न त सुदिट्ठ कुसला वयंति। मनुष्य का अन्तर्मन जितना विराट् होगा - उतना ही वह क्रियावादी व आत्मवादी बन सकेगा । धर्म यदि धारण करने योग्य, आचरण करने योग्य, विवेकपूर्ण बनकर कर्तव्यनिष्ठ बनाता है और मानवीय जीवन को सचराचर जगत के साथ समभाव की ओर अभिप्रेरित करता है - तो वही मानुष धर्म है, जिसके लिए महर्षि व्यास ने कहा था "गुह्य ब्रह्म तदिद ब्रवीमि न हि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किंचित्" - मनुष्य ही इस गुह्य तत्त्व की उपलब्धि का सर्वोत्तम साधन है। जैन धर्म की यही वास्तविकता भी है। लौकिक मार्ग यही अलौकिक बनकर ऋजु पथ का सधान करता है - जहाँ विधेय है - समापत्ति है और है सत्य की साधना पद्धति। भारतीय मनीषियो ने इसी से विचार-आचार-सस्कार व्यवहार और सचार (दार्शनिक अर्थ में) की व्याख्या की है।

जीवन मे अनेक प्रसग हैं, जब मैं आचार्य श्री की शीतल छाह मे बैठकर अयस्कान्त मणि की भाति आकृष्ट होता था। ऐसे अनेक सस्मरण है, जहाँ उनकी कृपा दृष्टि मानसिक स्वास्थ्य का सवर्धन कर कुछ होने का कुछ बनने का, कुछ पाने का उपक्रम बनती थी। उनका जोधपुर मे चातुर्मास था - मै भी वहा अपने अनुज के यहाँ ठहरा था। मन आया कि आचार्य श्री आएँ और भिक्षा ग्रहण करे तो कैसा सुयोग और सौभाग्य मिलेगा । परिजनो ने हताश कर दिया कि आचार्य श्री अब नही जाते हैं - पर दृढ़ भावना से जब मैंने निवेदन किया तो उनकी सहमति पाकर कृतकृत्य हो गया। लिये केवल लौंग, पर वह परम सौभाग्य का क्षण बन गया। इसी प्रकार दो और प्रसग भी पूर्व काल मे हुए थे - जब गुरुदेव दो बार चातुर्मास मे इसी प्रकार आकर भाव विभोर कर गए। वे मेरे जयपुर गृह मे कृपा पूर्वक दो बार ठहरे थे - सारा वातावरण जैसे शाति और साधना का, स्वाध्याय और सामायिक से परिपूर्ण हो गया - आचार्य श्री तलकक्ष मे मेरा ग्रथागार देखने पधारे- उनकी दृष्टि धर्म, दर्शन अध्यात्म के ग्रथो पर और विशेषत जैन धर्म से सबधित ग्रथो पर पड़ी। उनका प्रमोद भाव स्पष्ट था। आचार्य श्री का जयपुर मे अतिम विहार मेरे आवास पर ही हुआ। वर्षों के अनन्तर आज भी वह स्मृति जीवन की अक्षय धरोहर है। जीवन मे अनेक साधु-सतों के, धर्मगुरुओ और महात्माओ के, आचार्यो एव मुनियो के दर्शन किए हैं। विभिन्न धार्मिक आयोजनो, सगोष्ठियो और धर्म सभाओ मे भाग लिया है - पर जैसा प्रतिबोध और जागरूकता आचार्य श्री से मिलती थी वह विरल थी। "जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ" गहरे पानी में पैठना तो दुष्कर था - पर किनारे बैठकर भी बहुत कुछ प्राप्त होता रहा। मेरी पारिवारिक परम्परा सघ के प्रति समर्पित थी , पूज्य पिता श्री व पूज्य मातृ श्री आचार्य श्री के परम भक्त व अनुयायी थे। शैशव में जब मुझे गुरु मत्र मिला तो इतना ज्ञान नही था कि गुरु मत्र की महिमा समझ सकूँ। जीवन की विकास यात्रा मे यह बोध हुआ कि मत्र केवल शब्द ही नही होते - मन्यते विचार्यते आत्मादेशो येन स मन्त्र., अर्थात् जिसके द्वारा आत्मदेश पर विचार किया जाए, वही मन्त्र है। अथवा 'मन्यन्ते सत्क्रियन्ते परमपदे

स्थिता - आत्मान वा यक्षादिशासनदेवता अनेन इति मन्त्र' जिसके द्वारा परम पद में स्थित उच्च आत्माओं का अथवा यक्षादि शासन देवों का सत्कार किया जाय - वही मत्र है। दिव्य ज्योतिर्मय आत्म तत्त्व का मन्त्र है और वह मनसात्मक 'मन्' एव पालनात्मक 'त्र' के सयोग से घटित होता है - इसी से 'मननात् त्रायते इति मन्त्र' कहा गया है। यही मनन, चिन्तन व ध्यान के शक्ति-स्रोत को प्रवाहित कर आत्म - चैतन्य की ओर ले जाता है। गुरु के श्रीमुख से प्राप्त मत्र की बीज शक्ति शनै शनै वृक्ष मे पुष्पित, पल्लवित व पूर्ण होती है। मेरी दृढ़ धारणा है कि गुरु अपने मंत्र से शिष्य के जीवन को उसके अन्तर्बाह्य को सर्वथा, सर्वदा और सर्वभावेम प्रभावित कर जीवन पथ का सधाब करते हैं। मैं आज उस गुह्य रहस्य को समझ पाया हूँ - यही समझ पाया हूँ कि ऐसा मत्र ही शक्तिसपन्न होकर स्व-पथ-सुपथ पर ले जाता है और मत्र-चैतन्य आत्म-चैतन्य का मार्ग प्रशस्त करता है। जानता हूँ अपनी लघुता व सीमा और अकिंचनता, मैं वह चैतन्य नही पा सका - न अपना मार्ग ही प्रशस्त कर सका- पर कभी कभी ज्योति दर्शन करने की साध अवश्य घनीभूत हो जाती है - "माणुसत्त सुई सद्धा सजमम्मि य वीरिय" मनुष्यत्व, धर्म-श्रवण, धर्म-श्रद्धा और सयम - ये चार तत्त्व प्राप्त नही होते, जब तक सम्यक् श्रुत श्रवण का सुअवसर उपलब्ध नही होता। गुरु से उपलब्ध मत्र ही इस उपलब्धि का श्रेयस् है। मैं अपनी लघुता मे उनकी महानता नही रख पाया और यही पराभूत स्थिति है। एक घटना याद आ गयी। महात्मा गाँधी को सियारामशरण गुप्त अपनी कविता सुना रहे थे - "तेरे तीर्थ सलिल से प्रभु यह मेरी गगरी भरी-भरी"। पार्श्व मे बैठे महादेव भाई हँसे। पूछने पर उन्होंने कहा कि तीर्थ सलिल से गगरी भरी तो सही, पर वह सलिल कही गगरी के ज्ञात-अज्ञात छिद्र से निरन्तर बाहर तो नही जा रहा। आचार्य श्री के तीर्थ सलिल से मेरी —बहुतो की गगरी भरी गयी, पर हम उस पवित्र सलिल को जीवन मे कितना रख पाये ? कही जीवन गगरी के छिद्रो से वह पुन बाहर निकलता रहा और हम वैसे ही जड़वत् ही रहे ? मै तो अपनी जड़ता से अनभिज्ञ नही हूँ - औरों की नही जानता।

आज मानवीय सस्कृति - ससृति का ह्रास हो रहा है - भौतिकवादी भोगवादी प्रवृत्तियो ने चारो ओर मूल्यहीनता, अनैतिकता को निरस्त कर विचित्र विसगति - व्याघात उपस्थित कर दिया है। समाजशास्त्रियों ने उद्भ्रान्त व्यक्ति को A lonely crowd with completely enstranged की सज्ञा दी है। स्पर्धा है सत्ता, सम्पत्ति और स्वार्थ की। युधिष्ठिर ने कहा था -

यत्राधर्मो धर्मरूपाणि बिभ्रद् कृत्स्नो धर्मो दृश्यतेऽधर्मरूप ।
तथा धर्मो धारयत्यधर्मरूप विद्वासंस्त सम्पश्यन्ति ॥

आज यही स्थिति है - धर्म अधर्म के रूप मे और अधर्म धर्म के रूप मे दिखाई पड़ रहा है। इस अपसस्कृति से मुक्ति पाने का एक ही उपाय है - अपनी महान् परपरा और सस्कृति के आदर्शो का अनुसरण करना। राग, द्वेष, काम, क्रोध मनुष्य का नाश करते हैं- उसका ज्ञान अपहृत होता है और चारित्र भ्रष्ट एव तत्त्वो में रुचि का अभाव दृग्गोचर होता है। "तच्चरुई सम्मत्त, तच्चग्गहण च हवइ सण्णाण, चारित्तपरिहारो पयपिय जिणवरिंदहि"- और यह तत्त्वबोध और कर्म बध करने वाली क्रियाओं का परित्याग, ज्ञानी, विद्वान् व चारित्र्य के तपपूत आदर्श के शासन में रहने से ही सभव है । जो उनके उपदेश पर नही चलता, वह अपना ही शत्रु होता है। आचार्य श्री कहा करते थे कि मनुष्य की जिजीविषा बहुत बडी है - पर वह विजिगीषा मे न बदल जाये - यही आवश्यक है। उसका उपयोग होना चाहिए। आज भी सभी चिन्तक यही स्वीकार करते है कि मानवीय प्रकृति का उदारीकरण अनिवार्य है। आज मनुष्य की विच्छत्ति, विच्युति और उसका अजनबी पन (आउट साइडेडनेस) प्रेम के अभाव के कारण हैं - उसकी मानसिक रुग्णता और हताशा भविष्य की आस्था और उज्ज्वलता के प्रति निराशा का परिणाम और अनास्था

समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तियो के भोगपरायण होने का फल है। इसी से आज पुन संस्कृति के महान मूल्यों की अवधारणाओं में ही मगल अभीष्ट है। इसके लिये पुन आचार्य श्री के अनुसार स्थिरता, दृढ़ता, निरन्तरता और सात्त्विक बुद्धि-प्रज्ञा आवश्यक है। आचार्यप्रवर "पुमान् पुमास परिपातु विश्वत" के उद्घोषक थे। हमारी चेतना का उत्कृष्ट रूपान्तरण आतरिक क्रियाशीलता की स्थिति से ही सभव है। मुझे अब भी स्मरण है, जब उन्होंने दशवैकालिक सूत्र में चार आवेगों की प्रतिपक्ष भावनाओ का निदर्शन किया था - क्रोध का उपशम से, मान का मृदुता से, माया का ऋजुता से और लोभ का सतोष से प्रतिपक्ष पुष्ट करने का उपदेश दिया था। मैं उनका यह सूत्र कभी नहीं भूल सकता "नैक सुप्तेषु जागृयात्" सुषुप्त व्यक्ति को जगाने के लिये स्वय का जाग्रत रहना आवश्यक है।

समय अपनी चाल चल रहा है। वर्तमान का हर क्षण अतीत मे लुप्त होता है और भविष्य का सतत प्रवाह हर क्षण वर्तमान में रूपायित । काल की इस अखडता मे प्रत्येक क्षण का उपयोग हमे शिव सकल्प से युक्त होकर जीवन का कल्मष नष्ट करने मे करना है। इसका सर्वार्थ साधन सतो की शीतल छाया है। आचार्य श्री इसी शीतल छाया के वट वृक्ष थे, जिसका विस्तार और जिसकी व्याप्ति चतुर्दिक् में विद्यमान थी। यही कारण है कि जैन और जैनेतर समाज उनके सान्निध्य में सत्त्वस्थ होकर नीति का श्रेय प्राप्त करते थे। उनकी मरण-समाधि पर सहस्र श्रद्धालुओं ने, श्रावकों ने अश्रुपूरित नेत्रो से उन्हे देवलोक की पावन यात्रा के लिये विदा दी। जन समुदाय की अगणित सख्या इसका परिणाम व प्रमाण थी कि उनकी मगल वाणी और सदुपदेश ने न जाने कितने विपथगामी व्यक्तियो को सद्वृत्त की ओर प्रेरित किया। ऐसे महान प्रतापी गुरु को मैं श्री गजसिंहजी राठौड के 'गुरु-गजेन्द्र-गणिगुणाष्टकम्' की इस वदना से ही अपनी अशेष प्रणति देता हूँ।

स्वाध्याय-मय सह धर्मि-समाज-सेवा
सिद्धान्त शिक्षणविधौ विविधोपदेश ।
अध्यात्मबोध परास्तव शखनादा
गुञ्जन्ति देव ! निखिल महीमण्डलेऽस्मिन् ।
प्रातर्जपामि मनसा तव नाम मन्त्र
मध्येऽह्नि ते स्मरणमस्तु सदा गजेन्द्र !
साय च ते स्मरणमस्तु शिवाय नित्य
नामैव ते वसतु श हृदयेऽस्मदीये ॥

-२ ए, देशप्रिय पार्क (ईस्ट), कोलकाता ७०००२९

■

फक्कड़ सन्त : महक अनन्त

• श्री देवेन्द्रराज मेहता

परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की मेरे एव मेरे परिवार पर असीम कृपा थी। मेरे बचपन से लेकर उनके समाधिमरण तक यह कृपा बनी रही जो मेरा परम सौभाग्य था। जब मुझे दिल्ली मे यह सूचना मिली कि आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है तो मैं २३ मार्च १९९१ को उनके दर्शनार्थ निमाज पहुँचा। मुझे वहाँ यह बताया गया कि ४ दिन से आचार्य श्री मौनरत हैं अत उनके दर्शन तो हो सकते हैं, पर चर्चा-वार्ता नही। पर जब मैं उनके सान्निध्य मे पहुँचा तो उन्होने स्वत ही मुझे एव मेरे परिवार को आशीर्वाद दिया। रत्नवशीय साधु-परिवार एव मेरे स्वय के परिवार के सात से अधिक पीढ़ियो के सबधो का प्रमोद भाव से उल्लेख किया और काफी अस्वस्थ होने के उपरान्त लगभग ३० मिनिट तक बातचीत की, व अन्त मे सदा की भाति नैतिक एव प्रामाणिक जीवन जीने के बिन्दु पर बल दिया। अहिंसा एव सेवा के क्षेत्र मे और अधिक रुचि लेने तथा कार्य बढ़ाने की विशेष प्रेरणा दी। आचार्य श्री के इस आशीर्वाद और आत्मीयतापूर्ण अतिम निर्देश को पाकर मैं आत्म-विभोर व भाव-विह्वल हो उठा। मुझे बाद मे बताया गया कि इसके बाद आचार्य श्री समाधिमरण तक पूर्ण मौन मे रहे और अन्य किसी से वार्ता नही की, यह उनकी अन्तिम वार्त्ता थी।

मेरे एव मेरे परिवार का यह सौभाग्य है कि रत्नवशीय चतुर्विध सघ-परम्परा के साथ पीढ़ियो से हमारा श्रद्धा, भक्ति एव प्रेमपूर्ण सबध रहा है जिसका उल्लेख आचार्य श्री स्वय यदा-कदा करते रहते थे। मुझे वह प्रसग स्मरण हो आया जब आचार्य श्री आलनपुर सवाईमाधोपुर चातुर्मास मे विराज रहे थे। मै जयपुर से रात्रि के समय वहाँ आचार्य श्री के दर्शनार्थ पहुँचा- अन्धेरा था। अत वहाँ उपस्थित श्रावकों ने पूछा - आप कौन हैं? कहाँ से आये हैं? मैने अपना नाम आदि बताया। आचार्य श्री ने इस पर सहज भाव से कहा- सरकार मे ये क्या कार्य करते हैं, यह तो मुझे पता नही, पर कम से कम सात पीढ़ियो से - हमारे साधु सघ व इनके परिवार से सम्बन्ध रहे है। इस सम्बन्ध मे आचार्य श्री ने एक घटना सुनाई जो उनके स्वय के जीवन एव वश-परम्परा मे व्याप्त फक्कड़पन तथा अनासक्त भाव को उजागर करती है।

आचार्य श्री ने कहा कि महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म (जिनके नाम पर रत्नवश परम्परा चल रही है) जब कभी जोधपुर पधारते तो श्री जसरूपजी सा मेहता (मेरे पूर्वज) उन्हे अपने घर लाडनू की हवेली मे अवश्य आते-जाते ठहराते थे। श्री जसरूपजी सा. अपने समय के प्रमुख श्रावक थे और जोधपुर राजघराने मे उनका अत्यधिक प्रभाव था। उनके प्रभाव का एक दृष्टान्त यह है कि उन्होंने अपने कामदार श्री कालूराम पचोली को राज्य का दीवान बना दिया। उस समय जोधपुर के नरेश महाराजा मानसिंह थे जिनका व्यक्तित्व विचित्र और विरोधाभासी था। एक ओर वे गहन आध्यात्मिक एव ज्ञानी थे तो दूसरी ओर प्रशासन में कूटनीतिज्ञ तथा कठोर थे।

जसरूपजी सा ने जोधपुर नरेश से निवेदन किया कि रत्नचन्दजी म.सा. उनकी हवेली में ठहरे हुए हैं। उनके दर्शन करने वे पधारें। उनसे यह सुनकर कि रत्नचन्दजी म.सा. एक पहुँचे हुए सन्त हैं तो नरेश ने दूसरे दिन उनकी हवेली पर आने की स्वीकृति दे दी। यह घटना प्रधान चर्चा का विषय हो गयी, क्योंकि उन दिनों में नरेश का किसी

के घर आना भगवान का घर आना माना जाता था। किले से जब रात को जसरूपजी सा वापस आये तो सर्वप्रथम रत्नचन्दजी म.सा. को जोधपुर नरेश की स्वीकृति की सूचना यह समझ कर दी कि इससे म. सा. अत्यधिक प्रसन्न होंगे। उनकी मनोभावना शायद यह भी रही हो कि महाराज सा समझेंगे कि उनका श्रावक कितना बड़ा व्यक्ति हो गया है कि जो नरेश को भी अपने घर ला सकता है। पर आचार्य रत्नचन्दजी म सा ने इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही कि और अन्धेरा होने के कारण उनके भाव भी चेहरे से नही पढ़े जा सके।

दूसरे दिन सवेरा होते ही महाराज सा ने विहार कर दिया। नौकर ऊपर भागा और जसरूपजी सा. को इसकी सूचना दी। जसरूपजी सा. सकते में आ गये और घोड़े पर बैठकर महाराज सा. के पीछे पहुँचे। उन्होंने आचार्य श्री रत्नचन्दजी म.सा. से पुन अपनी हवेली पर आने का निवेदन किया तथा यह भी बताया कि जोधपुर नरेश जिन्होंने उनके (आचार्य श्री के) प्रति श्रद्धा व्यक्त की थी, वे इसे अपनी घोर अवमानना समझेंगे।

इस पर आचार्य श्री रत्नचन्दजी म.सा ने निसग और निर्भीक होकर कहा - हमने तो ससार छोड़ दिया। कौन राजा? किसका राजा ? सासारिक प्रपचो में हमे मत फसाओ। हमारे पास तो ये काष्ठ पात्र हैं और राजा के पास छत्र है। पात्र-पति व छत्र-पति का क्या सग?

आचार्य श्री का यह उत्तर सुनकर श्री जसरूपजी महाराज मानसिंहजी के पास गये और आचार्य श्री व अपने बीच हुआ पूरा वार्तालाप उन्हे सुनाकर क्षमायाचना की। महाराज मानसिंह बहुत प्रभावित हुए और यह कहा कि तुम्हारे गुरु तो पक्के फक्कड़ है।

आचार्य श्री रतनचन्दजी म.सा का यह फक्कड़पन, अनासक्त भाव और निसगपना मैंने आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा के जीवन मे भी सदैव देखा। राजनीतिज्ञो, श्रीमन्तो और सत्ताधारियो से वे कभी प्रभावित नही हुए। मान-सम्मान की उन्हे कभी परवाह नही रही। उनकी दृष्टि मे राजा-प्रजा, अमीर-गरीब, वर्ण-जाति का कोई भेदभाव नही था। जयपुर मे महान् तपस्विनी श्रीमती इचरजदेवी लूणावत की १६५ दिन की सुदीर्घ तपस्या के महोत्सव पर भारत सरकार के खाद्य मत्री श्री जगजीवनराम आये थे। आचार्य श्री को जब इस बात का पता चला तो उन्होने इसके लिये कोई प्रमोद व्यक्त नही किया और अपने प्रवचन मे एक निर्भीक, तेजस्वी, फक्कड़ सन्त की तरह देश की परिस्थिति पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होने कहा कि राजनीतिज्ञ सिर्फ गाधी की कमाई ही नही खावे, बल्कि देश मे बढ़ते भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण किया जाये। यह अलग बात है कि अनेक लोगो को उनकी यह बात रास न आई हो।

पीपाड़ चातुर्मास मे राजस्थान के राज्यपाल बसन्त दादा पाटिल के आने पर भी आचार्य श्री अपने धर्माराधन मे ही लगे रहे और जब महामहिम राज्यपाल स्वय ने उनके दर्शन कर आशीर्वाद मागा तो केवल शराब बन्दी की बात कही। आचार्य श्री के सान्निध्य मे सबके लिये समान अवसर और समदर्शिता का भाव था। मैंने कई बार देखा है कि सघ के वरिष्ठ पदाधिकारी भी धर्मसभा मे जैसे आते हैं, वैसे बैठते जाते है। उनके लिए कोई स्थान निश्चित नही रहता।

आचार्य श्री धर्म को जन्म से नही, सद्कर्म से जोड़ते थे। जो सत्कर्म करता है, जो सद्गुणी है, वही उनकी दृष्टि मे ऊँचा माना जाता था, फिर चाहे वह किसी जाति व वर्ण का क्यों न हो। मेरे एक सहयोगी मित्र ने जो प्रशासन में हैं और जन्म से मीणा जाति के हैं, एक बार कहा - कि आपके धर्म गुरु आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. इस युग के महान् आध्यात्मिक सन्त हैं। वे समता की प्रतिमूर्ति है। हमारी जाति के एक युवक को उन्होंने जैन दीक्षा प्रदान की

है और उन्हे अपने संघ में , आचार-व्यवहार में बराबर का दर्जा दिया है। बड़े बड़े विद्वान् और श्रीमन्त उस युवक मुनि के चरण-स्पर्श करते हैं। जातिवाद के विरुद्ध महावीर ने जो परम्परा कायम की, उसी के अनुरूप यह कार्य हुआ।

आचार्य श्री नैतिक व प्रामाणिक जीवन जीने पर विशेष बल देते थे। उनकी बराबर यह प्रेरणा रहती थी कि धर्म जीवन में उतरे, व्यवहार मे प्रगट हो। धर्म दस्तूर रूप में न होकर आचरण रूप मे हो। आचार्य श्री क्रियाकाण्ड मे धर्म नही मानते थे। ईमानदारी, सादगी और नैतिकता के रूप मे धर्म प्रतिफलित हो, ऐसी उनकी प्रेरणा रहती थी। यदि ये गुण किसी व्यक्ति में हैं, उनकी दृष्टि मे वह व्यक्ति धार्मिक और नैतिक था। मेरे चाचा श्री जसवन्तराजजी मेहता ऐसे ही व्यक्ति थे। आचार्य श्री उन्हे इसी भाव से देखते थे। वे जीवन पर्यन्त ईमानदार, नैतिक, प्रामाणिक और सादगी प्रिय रहे।

आचार्य श्री पात्र की योग्यता और सामर्थ्य देखकर धर्माराधन के क्षेत्र मे उनके अनुरूप बढ़ने की प्रेरणा देते थे। यही कारण है कि उनके सपर्क मे आने वाले व्यक्तियो मे जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग है। क्या धनी, क्या उद्योगपति, क्या वकील, क्या न्यायाधीश, क्या डाक्टर, क्या इजीनियर , क्या अध्यापक, क्या अधिकारी।

आचार्य श्री अत्यन्त करुणाशील और दयालु थे। अहिंसा और प्रेम उनके रग-रग में व्याप्त था। प्राणी मात्र के प्रति उनके मन मे दया का भाव था। उनके मुख-मण्डल पर सदैव प्रसन्नता का भाव, करुणा का भाव, सौम्य भाव व्याप्त रहता था। जो भी उनके सम्पर्क मे आता, सान्निध्य पाता, भीतर से भीग उठता, सहृदय बन जाता। उसकी पराकाष्ठा समाधिमरण के समय पहुँची। उनके विशिष्ट त्याग व करुणाभाव से वातावरण ऐसा विशुद्ध हुआ कि ईद की नमाज पढकर सैकड़ो मुसलमान आचार्य श्री के दर्शन को आये तथा यह प्रण लिया कि आचार्य श्री के समाधिमरण तक किसी पशु का वध नही होगा। इस प्रण को उन्होने पूर्ण रूप से निभाया। एक तरफ आज साम्प्रदायिकता की बात होती है, दूसरी तरफ इतर सम्प्रदाय के लोग भी प्रभावित होते हैं। यहाँ यह भी कहना प्रासगिक होगा कि आचार्य श्री की अन्तिम यात्रा मे श्मशान तक पहुचाने मे हजारो मुसलमान थे। इस यात्रा मे करीब एक लाख लोग शामिल थे जिसमे आधे से अधिक जैनेतर थे। इसी करुणा की बात को आगे बढ़ाते हुए निमाज की ही सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख आवश्यक है।

जब कसाइयों के प्रण की बात मैंने सुनी तो दूसरे दिन निमाज पहुँचने पर मै सात कसाइयो के घर गया। उनसे काफी चर्चा हुई। वे स्वय यह मानते हैं कि उनका काम अच्छा नही है, पर पेट भरने व परम्परा के कारण ऐसा करते है। एक ने यह कहा कि उसने हजारो जानवर कटवा दिए, पर उसके घर पर कोई बरकत नही हुई, वे वही के वही है। एक-दूसरे व्यक्ति ने बताया कि २१ अप्रेल को ३२५ बकरे गाँवो से निमाज मे एकत्र किये जायेगे और उन्हे कटने के लिये बम्बई भेजा जायेगा। सघ के कई लोगों के मन मे विचार आया कि ऐसे महान् मृत्युजयी सत के आसपास का कोई प्राणी कैसे वधित हो सकता है? अत तत्काल निर्णय हुआ कि सारे बकरे सघ द्वारा खरीद लिये जाये। इसके लिये कुछ व्यक्ति सारी राशि देने को तैयार थे। दूसरे दिन व्याख्यान मे जब इसकी चर्चा हुई तो सैकड़ो व्यक्तियों ने सारी राशि दे दी। ऐसा लगा मानो एक घटे तक रुपये - पैसो की वर्षा होती रही। शाम साढ़े छह बचे तक सारे बकरे सघ द्वारा मुक्त करा दिये गये। आचार्य श्री के महाप्रयाण के दो घटे पूर्व सभी प्राणियो को अभयदान दे दिया गया था।

आचार्य श्री का बराबर इस बात पर बल रहा कि समाज में हिंसा का व्यावसायीकरण न हो, बढ़ती हुई हिंसा

को रोकने के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाया जाये। कई बार ऐसा लगता है कि हमने अहिंसा के निषेधात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया है और उसका सकारात्मक पक्ष उपेक्षित रहा है । मेरे मन में इस सम्बन्ध मे प्राय शका उठा करती थी। एक दिन जोधपुर में मैं दर्शन करने गया तब आचार्य श्री एक माली परिवार में ठहरे हुए थे। वहाँ कोई संवाददाता आचार्य श्री से बातचीत कर रहा था। बातचीत के बाद जब मैं आचार्य श्री के पास गया तो आचार्य श्री ने मुझसे कहा कि आज तो एक अखबार वाले ने मुझे निरुतर कर दिया। मैंने पूछा - कैसे ? आचार्य श्री ने कहा कि अखबार वाला पूछ रहा था कि आपकी अहिंसा कहां तक जाती है। मैंने कहा - प्राणी मात्र तक। इस पर वह बोला - यदि किसी माँ द्वारा त्याज्य शिशु सड़क पर मिल जाये तो आप क्या करेगे?

तब मैंने आचार्य श्री से निवेदन किया कि हम श्रावको का तो कर्तव्य बनता है न ? क्यो न ऐसे बच्चो के रक्षण, लालन-पालन और जीवन-निर्वाह के लिये अनाथालय बनाये जाएँ।

आचार्य श्री ने केवल इतना कहा - सोचो । और तब मुझे लगा कि मेरी शका का समाधान हो गया। अहिंसा का सकारात्मक पक्ष सेवा, दया और करुणा मे है और इस क्षेत्र मे समाज को आगे बढ़ना चाहिए। आचार्य श्री की प्रेरणा से ही 'बाल शोभा' नाम से एक अनाथालय बन गया, जहाँ वर्तमान मे करीब ३२ बच्चे रह रहे हैं और ७० तक बच्चे रखने की अब योजना है। समाज की ओर से ऐसे १० अनाथालय खोलने की योजना भी है।

विकलागो का जीवन भी स्वावलम्बी और सुखी बने, इस दिशा मे भी आचार्य श्री की प्रेरणा बनी रही। आचार्य श्री के जलगाँव चातुर्मास मे विकलागो का एक शिविर आयोजित किया गया। आचार्य श्री जगल जाकर आ रहे थे। मैंने आचार्य श्री से शिविर स्थल की ओर पधारने का निवेदन किया। आचार्य श्री पधारे और अपनी मागलिक दी। आचार्य श्री की मागलिक सुनकर कार्य शुरू कर दिया गया। आज महावीर विकलाग सहायता समिति का कार्य देश विदेश मे तेजी से बढ़ता जा रहा है। आचार्य श्री का इस कार्य मे हमेशा आशीर्वाद रहा।

विधवाओं, परित्यक्ताओ, प्रताड़ित - पीड़ित महिलाओ की सहायता के लिये भी एक व्यापक योजना जोधपुर में क्रियान्वित की गई है। अन्य स्थानो पर भी यह योजना चालू हो, इसके लिए प्रयत्न अपेक्षित है।

पीपाड़ चातुर्मास मे आचार्य श्री का सकेत था कि स्वाध्यायियो से सेवा के बारे मे बात की जाये। स्वाध्यायियो की बड़ी शक्ति हमारे पास है। सन्त-सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो मे पर्युषण के दिनो मे जाकर वे धर्माराधना मे महत्त्वपूर्ण सहयोग और प्रेरणा देते हैं।उनका उपयोग सेवा के कार्य मे हो, यह आचार्य श्री की भावना थी। सेवा निष्काम भाव से हो, इसके लिये सगठन और सम्पत्ति मुख्य नही है। मुख्य है सेवा की भावना और सहृदयता। पीपाड़ मे एक स्वाध्यायी अध्यापक मुझे ऐसे मिले, जो अपने नेत्रहीन चपरासी को, जो प्रति दिन ३० मील दूर अपने कार्य पर जाता था, उसे बस स्टैण्ड से स्कूल और स्कूल से बस स्टेण्ड तक छोड़ा करते थे। जब ऐसी करुणा की भावना का हृदय मे उद्रेक होता है, तब कही सेवा कार्य हो पाता है। आचार्य श्री ने साधु-मर्यादा मे रहते हुए इन सब कार्यों के लिए प्रेरणा दी, जिसके फलस्वरूप समाज मे सेवा कार्यों से जुड़ने वाले भाई-बहिनो की सख्या बहुत अधिक है। कुछ उल्लेखनीय नाम हैं-श्रीमती इचरजदेवी लूणावत, श्रीमती इन्दरबाई सा, सज्जनबाई सा, सुशीला बोहरा, श्री एव श्रीमती एम. सी भण्डारी, दलीचन्दजी जैन, रतनलालजी बाफना, पूनमचन्दजी हरिश्चन्दजी बडेर, इन्दरचन्दजी हीरावत, उम्मेदमल जी जैन, सी एल ललवाणी, सुमतिचन्द जी कोठारी, पारसमलजी कुचेरिया आदि।

आचार्य श्री के सयमी जीवन और साधनानिष्ठ व्यक्तित्व का ही यह प्रभाव था कि शिक्षा, चिकित्सा,

विद्यालय, छात्रालय, पुस्तकालय , ज्ञान भण्डार आदि विविध जनहितकारी प्रवृत्तियाँ सक्रिय बनी और प्रत्येक क्षेत्र मे बड़ी सख्या मे भाई बहिन इनसे जुड़े। अ.भा. जैन विद्वत् परिषद् के रूप में विद्वानो का एक सगठन भी आचार्य श्री की प्रेरणा से बना, जिसके साथ श्रीमन्त और सामाजिक कार्यकर्ता भी जुड़े, ताकि समाज की ज्वलन्त समस्याओ पर सभी दृष्टियों से विचार हो सके और उनके समाधान का रास्ता खोजा जा सके। पीपाड़ मे आयोजित विद्वत् सगोष्ठी के अवसर पर यह विचार-चर्चा चली कि धर्म जीवन में कैसे उतरे ? अहिंसा के विधायक पक्ष पर बल दिया गया। उस समय राजस्थान मे विशेषकर मारवाड़ मे भयकर अकाल था। मूक प्राणियो की रक्षा के लिए मारवाड़ अकाल सहायता कोष की स्थापना हुई जिसके माध्यम से पाच लाख पशुओं को बचाया गया।

आज आचार्य श्री पार्थिव रूप से हमारे बीच नही हैं, पर समाज मे अहिंसा, सेवा, ज्ञान और क्रिया की जो ज्योति उन्होने प्रज्वलित की, उसमे उनकी प्रेरणा, उनका प्रकाश और आशीर्वाद अक्षुण्ण बना रहेगा। मुझे उन्होने जो अन्तिम निर्देश दिया, वही मेरे जीवन की सबसे बड़ी निधि है। मुझे उस ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहे, यही अभ्यर्थना है। उस फक्कड़ सन्त, जिसकी महक अनन्त, के चरणो मे कोटिश वन्दन।

(जिनवाणी के श्रद्धाञ्जलि विशेषाङ्क से साभार)

—सेवानिवृत्त अध्यक्ष, सेबी, बी-५, महावीर उद्यान पथ,
बजाज नगर, जयपुर ३०२०१५

■

संस्मरणों का वातायन

• न्यायाधिपति श्री जसराज चोपड़ा

बचपन में पूज्यपाद आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म सा के दर्शन सर्वप्रथम कहाँ किये, याद नही। पचपदरा और बालोतरा में ही सभवत प्रथम दर्शन हुए। हम पाँच भाई हैं। अत जब-जब भी हम दर्शन करने जाते तो आचार्य श्री कहते 'आओ पच भैया'। जोधपुर के सिहपोल मे श्रमण सघ के मन्त्रिमण्डल एव प्रमुख सतो का चातुर्मास था, तब मैंने जो दर्शन किए उसकी स्मृति आज भी तरोताजा है। इस चातुर्मास मे आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज साहब प्रज्ञाचक्षु होने से नही पधार पाये थे। उपाचार्य पूज्य गणेशीलाल जी म सा के नेतृत्व मे यह चातुर्मास सम्पन्न हुआ।सारा साधु मन्त्रिमडल जब पाट पर विराजता था तब दृश्य देखने लायक होता था। सिहपोल के मैदान के बीच लम्बे पाट लगते थे जिन पर सभी सत मुनिवर विराजते थे। पूज्य गणेशीलाल जी म सा. के अतिरिक्त पूज्य मदनलाल जी म सा, पूज्य हस्तीमल जी म सा, पूज्य कवि अमर मुनि जी म सा, पूज्य समर्थमल जी म.सा, पूरण बाबाजी, कड़क मिश्री मल जी महाराज, मधुकर मिश्रीमल जी म सा. आदि बड़े-बड़े सत इस चातुर्मास में सम्मिलित थे। श्रमण सघ की एक सवत्सरी एव कतिपय विवादास्पद विषयो पर विचार-विमर्श करके सर्वानुमति पर पहुँचना था। पूज्य समर्थमल जी म सा एव पूरण बाबाजी श्रमण सघ मे सम्मिलित नही हुए थे, परन्तु व्याख्यान मे साथ बैठते थे। वार्तालाप इस बाबत भी चालू था। व्याख्यान आदि मे सिंहपोल ठसाठस भरा रहता था। एक साथ इतने प्रमुख सतो का एक स्थान पर चातुर्मासिक ठहराव उसके पश्चात् देखने को नही मिला।

पूज्य गुरुदेव के चमकते नेत्र, शात गम्भीर मुद्रा और समस्याओ का आगमसम्मत समाधान आकर्षक होता था। वे तब भी सभी सतो के द्वारा पूरी तरह आदरास्पद और क्रिया की वारणा-सारणा मे निष्णात सत माने जाते थे। यह सन् १९५३ की बात है। उसके पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म सा के दर्शन एक दो बार जोधपुर में ही हो पाए। फिर मैं १९५६ मे राजकीय सेवा मे सलग्न होने के कारण जोधपुर से बाहर रहा।

सन् १९६९-७० मे अजमेर मे पूज्य गुरुदेव का पदार्पण हुआ, तब मै वहा सीनियर सिविल व सहायक सेशन जज था। लाखनकोटडी दर्शन व व्याख्यान हेतु जाता था। पूज्य गुरुदेव का विहार किशनगढ की तरफ होना था, मैं तब सी-४ मीरशाह अली कॉलोनी मे रहता था। विहार के समय मैंने निवेदन किया कि मेरा निवास स्थल रास्ते मे ही है, आप वहाँ विराजकर मुझे कृतार्थ करे। गुरुदेव ने स्मितवदन होकर कहा - "क्या भेट चढाओगे?" मेरे मुख से निकला "जो आप आदेश दे।" गुरुदेव परम कृपा कर बगले पधारे। मै तब केवल माला फेरता था, कभी कभी सामायिक कर लेता था। आचार्य श्री ने मेरी धार्मिक क्रिया का लेखा-जोखा लिया। दूसरे दिन वहाँ से प्रस्थान करने के पूर्व गुरुदेव ने पृच्छा की, हमारी भेट का क्या हुआ? मै हाथ जोड़कर खड़ा हो गया - अन्नदाता! जो आपका आदेश। पूज्य गुरुदेव ने फरमाया हम जो कहेगे वह मान लोगे? मैंने कहा - अन्नदाता का हुक्म सिर आँखो पर होगा। गुरुदेव ने फरमाया— ब्रह्मचर्य की मर्यादा और प्रतिदिन एक सामायिक कर सकोगे? आप नियम दिला दे एव निभाने योग्य चरित्र बने ऐसा आशीर्वाद दे। हम दोनो पति-पत्नी ने नियम अगीकार कर लिया। उन्ही के द्वारा प्रदत्त नियम का प्रताप है कि मैं इतना स्वाध्याय कर पाया। गुरुदेव ने फरमाया था कि सामायिक में आधा घण्टा स्वाध्याय अवश्य करना। अत सामायिक ४८ मिनिट की न होकर १ घटे की हो जाती थी। किन्तु इस नियम के

कारण सारे आगमो के अध्ययन का अवसर मिल गया। मुझे जो भी प्राप्त हुआ इसी सामायिक के नियम से प्राप्त हुआ। कभी कोई कष्ट आया तो सामायिक से प्राप्त ज्ञान उसे समभाव से सहने मे इतना सहायक हुआ कि उसका बयान शब्दों में नही किया जा सकता। जो सुख-दुख प्राप्त हैं मेरे अपने कर्मों का फल है। दूसरा कोई इसके लिए जिम्मेदार नही है, अत किसी के प्रति द्वेष का भाव, उपालम्भ का भाव कभी आता ही नही। मन इतना शात-प्रशात रहता है कि क्या बताएँ। यह सब उस महापुरुष की देन है जिसने समभाव की साधना को जीवन में अवतीर्ण किया व उसकी साधना हेतु प्रेरित किया।

अजमेर के बाद लम्बे समय तक गुरुदेव के दर्शन नही कर पाया। जब आचार्य श्री का रायचूर चातुर्मास था, तब पुन दर्शन किए। तीन दिन सेवा का यह लाभ हुआ कि मैं पूज्य गुरुदेव से पूरी तरह जुड़ गया।

१९७४ का चातुर्मास गुरुदेव का सवाईमाधोपुर हुआ। मैं तब भरतपुर सेशन जज था। सवाई माधोपुर तब भरतपुर जजशिप का भाग था। तब वहाँ मात्र दो मुसिफ थे। सी जे एम कोर्ट व बाद में एडीआई. केम्प कोर्ट मे हर १५ दिन व तीन हफ्ते में एक बार सवाई माधोपुर जाकर पूज्य गुरुदेव के सपत्नीक दर्शन करता, प्रवचन का लाभ लेता व कोई मौका होता तो स्वय भी व्याख्यान मे भाषण दे देता। खूब लाभ मिला वहाँ सेवा करने का। पोरवाल क्षेत्र का भाग्योदय था। खूब धर्मध्यान हुआ। खूब नये लोग रत्नवश से जुड़े । बड़ा सरल सादा क्षेत्र है। भौतिक समृद्धि इतनी नही थी , पर आध्यात्मिकता व सादगी की भावना से ओत-प्रोत क्षेत्र था। गुरुदेव ने इस क्षेत्र का पूरे तनमन से पोषण किया व आज भी क्षेत्र उनका उपकृत है। वहाँ गुरुदेव ने ऐसा अलख जगाया कि अनेको स्वाध्यायी निर्मित कर दिए, जो आज भी भारत के कोने-कोने मे अपनी स्वाध्याय सेवाएँ प्रदान कर विभिन्न क्षेत्रो मे धर्म-जागृति लाकर समाज-सेवा का लाभ उठा रहे है।

सवाईमाधोपुर के बाद जयपुर, अजमेर, किशनगढ, जोधपुर आदि मे सेवा का लाभ मिलता रहा। सन् १९८२ मे गुरुदेव दक्षिण से पधार रहे थे। होली चातुर्मास 'आवर' मे था। एक छोटा सा गाँव जहाँ नहाना व निपटना सब नदी पर ही होता था, बहुत शुद्ध सात्त्विक वातावरण था। तीन दिन आवर मे सेवा की। उसके बाद करीब-करीब प्रतिदिन रास्ते की सेवा का लाभ लिया। गुरुदेव कोटा पधारे। कोटा मे गुरुदेव को मेरे बगले पर विराजने के भाव थे। कोटा मे आई एस कावडिया कमिश्नर थे, तब उन्होने फरमाया कि मेरी इच्छा है कि गुरुदेव मुझे ठहरने का लाभ दे। आप मेरी सिफारिश करे। मै क्या कहता एक बड़ा अफसर नया जुड़ रहा था। गुरुदेव के करीब आना चाहता था। उत्साह भी था तो मैंने सब कुछ सोचकर गुरुदेव से अर्ज किया - गुरुदेव कमिश्नर साहब की बड़ी उत्कट इच्छा है कि आप उनके यहाँ ठहरे। मै तो लाभ से वचित रहूँगा , परन्तु उचित रहेगा कि उनकी भावनाएँ आहत न हों। हम तो आपके हैं ही, वे भी जुड़े तो कितना अच्छा हो। गुरुदेव मुस्कराए, फिर बोले - जैसी तेरी इच्छा। मैंने फिर कावड़िया साहब से कहा– "आप पधारकर रास्ते मे ठहरने हेतु विधिवत् निवेदन करें।" वे मेरे साथ चले व स्वीकृति प्राप्त की। दो या तीन दिन गुरुदेव का विराजना हुआ। बड़े अच्छे कार्यक्रम हुए। सभी अफसर धर्म सभाओं मे शरीक हुए। कइयों ने नियम लिये। जयपुर वाले श्रावको ने तब सेवा का बड़ा लाभ लिया। महावीर जयन्ती का कार्यक्रम कोटा मे ही हुआ।

मुझे जैसा याद पड़ता है सुशीला कवर जी मसा आदि सतियाँ तब बून्दी विराज रही थी। गुरुदेव ने उन्हें दर्शन के लिए फरमाया। मुझसे कहा - सतियो को ठहराने का लाभ तुझे मिल जायेगा। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रतन चौपड़ा तब जोधपुर थी। वह कतिपय घरेलू कारणों से कोटा नही आ पा रही थी। मैं अकेला था। जयपुर के प्रसिद्ध

श्रावक श्रीचन्द जी गोलेच्छा मेरे यहाँ सपरिवार अपने दामाद नवलखा जी के साथ ठहरे हुये थे। महासतिया जी ३३ कि. मी. विहार कर कोटा पधारी। गुरुदेव के दर्शन किए। मेरे निवेदन पर बगले में रहने की स्वीकृति मिली। महासती जी लम्बा विहार कर पधारी थी। पैर में फफोले हो गए थे, घर पर पानी लेने के लिए पधारी तब रसोई मे थोड़ा अंधेरा था। अज्ञानवश मेरे पहाड़ी रसोईदार ने बिजली जला दी, सतिया जी ने तुरन्त कहा - चौपड़ा साहब घर असूझता हो गया। मेरे बार-बार निवेदन करने पर भी और ऊपर की मजिल मे ठहरने का निवेदन करने पर भी महासती जी तो शहर की ओर विहार कर गयी। मेरे अन्तराय कर्म का बन्धन अधिक होने से कोई लाभ न ले सका। महासती जी को शारीरिक कष्ट होते हुए भी शहर की ओर पधारना पड़ा। कितना कठिन है जैन साधुचर्या का पालन एव उसकी पालना में सत-सतियों की चारित्रिक दृढता। उसका प्रत्यक्ष अनुभव उसी दिन हुआ।

जयपुर चातुर्मास मे भी सेवा का लाभ मिला । तब मै विधि सचिव था। प्रमोद मुनि जी की दीक्षा जयपुर मे हुई। मैं उनके अभिनन्दन समारोह का मुख्य अतिथि था, मेरा नाम तब उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति हेतु राजस्थान से दिल्ली जा चुका था। गुरुदेव को पता नही स्वत आभास हुआ, मुझसे पूछा—क्या साधना करते हो? मैं जो करता था वह मैंने निवेदन किया। गुरुदेव ने फरमाया—"धर्म बहुत बड़ा सम्बल है।" आचार्य श्री जैसे महापुरुष बिना किसी सूचना के भक्त की कठिनाई को भापकर उसका उपचार करने मे सक्षम आध्यात्मिक वैद्य थे। यह उन्ही के पुण्य प्रताप और कृपा का प्रसाद है कि समस्त बाधाओ को पार कर मैं जज बना।

निमाज की अतिम भोलावण मे सघ-सेवा के अतिरिक्त गुरुदेव ने यह भी फरमाया था कि जैन एकता समय की महती आवश्यकता है। यह तुम्हारा प्रिय विषय भी है एव तुम आधिकारिक रूप से इस पर बोल भी सकते हो। तुम्हारा कोई बुरा नही मानेगा, अत जहाँ भी जाओ इसके बारे मे अवश्य ही बात कहना। इससे यह ज्ञात होता है कि वे महापुरुष श्रावको मे सामञ्जस्य एव जैन एकता के प्रबल पक्षधर थे।

उनका जीवन करुणा व प्रेम से ओतप्रोत था। बोलते कम थे, पर श्रद्धालु को देखते ही उसकी स्थिति को भापने की विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। श्रावक को समाधि व शाति प्राप्त हो इस ओर भी पूरी तरह सजग रहते थे। 'शाति पमाडे तेने सत कहिए, व तेना दासानुदास थई ने रहिए।" इस उक्ति को चरितार्थ करते थे। वे ऐसे सत थे जिनका सान्निध्य भी शाति प्रदान करता था।

अजमेर, जोधपुर व पाली आदि क्षेत्रो मे मुझे पूज्य श्री की सेवा का खूब लाभ मिला। पूज्य गुरुदेव ने पाली व निमाज मे फरमाया था कि अब धर्म व शासन प्रभावना की तरफ ध्यान दो। पाली चातुर्मास के दौरान गुरुदेव का स्वास्थ्य बहुत ज्यादा ठीक नही था, पर ऐसा भी नही था कि हम उनके पावन सान्निध्य से वचित हो जायेंगे।

पूज्य गुरुदेव के संथारा पच्चक्खे लेने के बाद करीब-करीब प्रतिदिन निमाज जाता था। कई लोग भीतर बैठे रहते थे, उनका सान्निध्य हासिल करने को लालायित थे। मैंने कभी अपने आपको आयोजको पर थोपा नही। पक्ति में खड़े होकर अपनी बारी आने पर दर्शन किए तथा पास के कमरे और मैदान में सामायिक लेकर बैठ जाता था। सथारे के समय श्री मिट्ठालाल जी मेहता मुख्य सचिव राजस्थान सरकार, श्री इन्द्रसिंह जी कावडिया, आई. ए. एस. श्री ज्ञानचन्दजी सिंघवी महानिदेशक पुलिस (सपरिवार) दर्शन करने पधारे। सथारे के दौरान लाखों लोगो ने पूज्य गुरुदेव के दर्शन किए। पूज्य जयमल जी महाराज के पश्चात् सजगतापूर्वक सथारा कराने की माग कर किसी आचार्य का यह इतना लम्बा सथारा सदियों पश्चात् हुआ। तेले की तपस्या सहित १३ दिनो तक यह सथारा चला। जैन व जैनेतर सभी सम्प्रदाय के लोगों ने ही नही मुसलमान भाइयों ने भी इस फक्कड़ फकीर के दर्शन किए और उन्होंने

यह प्रतिज्ञा ली कि ऐसे विलक्षण सत का सथारा जब तक न सीझे वे पशुवध और मास-भक्षण नही करेगे। ऐसा समभाव का प्रभावशाली संथारा मैंने अपनी उम्र मे नही देखा। आचार्य श्री के चेहरे पर अतिम समय तक वही चिरस्थायी शाति व समभाव कायम रहा।

दाह सस्कार के पश्चात् शाम को निमाज उद्यान मे श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गयी। समाज ने मुझे यह सौभाग्य दिया कि पूज्य गुरुदेव का अतिम लिखित पत्र मैं सभा मे पढ़कर सुनाऊँ। जिसमे परमपूज्य हीराचन्द जी म.सा. को आचार्य और परम पूज्य मानमुनिजी महाराज को उपाध्याय घोषित करने के निर्देश थे।

हमे इस बात की गौरवानुभूति है कि दोनो महापुरुषो के नेतृत्व एव सरक्षण मे हमारा सघ गतिमान एव वर्धमान है। यह सघ सदा जयवन्त रहे व हम सब भी अपने कर्तव्य का पालन करे तो स्वत सघ उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होगा, यह मुझे पूरा विश्वास है।

२२ जनवरी, १९९८

-पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान
उच्च न्यायालय एव
अध्यक्ष, उपभोक्ता सरक्षण आयोग राजस्थान
-महावीरनगर, रेजीडेंसी रोड, जोधपुर

■

पंचाचार में अप्रमत्त एवं शास्त्रार्थ में बेजोड़

• श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

आचार्य की विशेषता होती है कि वह स्वय तो पचाचार का उत्कृष्ट, शुद्ध एव निरतिचार पालन करता ही है, साथ ही जिस गच्छ, सप्रदाय, सघ का वह आचार्य है उसके साधकों को समुचित आचार पालन कराना भी उसका दायित्व होता है । पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब ने इस दायित्व का निवर्हन पूर्ण निष्ठा के साथ किया। साथ ही पंचाचार को समृद्ध व दृढ बनाने मे महत्त्वपूर्ण एव उल्लेखनीय योगदान भी किया। इस दृष्टि से आप सामान्य आचार्य से बढ़कर महान् आचार्य थे। पचाचार है - (१) ज्ञानाचार (२) दर्शनाचार (३) चारित्राचार (४) तपाचार और (५) वीर्याचार।

• ज्ञानाचार के आराधक

आचार्य श्री ज्ञानाचार के उत्कृष्ट आराधक थे। आपका आगमज्ञान अगाध था। आप प्रतिदिन नियमित रूप से आगम का स्वाध्याय करते थे। आपने अनेक आगमो का अनुवाद व टीकाए की। ज्ञानाचार के सजग प्रहरी होने क साथ आपमें सत्यान्वेषण की भी प्रवृत्ति थी। एक बार आपने तात्त्विक चर्चा के दौरान मुझसे कहा - "तत्त्वार्थसूत्र मे सम्यक्त्व मोहनीय, हास्य, रति एव पुरुषवेद को पुण्य प्रकृति कहा गया है। किन्तु मोहनीय कर्म की प्रकृति तो पुण्य होती नही । ये चारो तो मोहकर्म से सम्बद्ध हैं। दिगम्बर तत्त्वार्थ सूत्र में इन चारो का उल्लेख नही है। अत यह शोध की जानी चाहिए कि श्वेताम्बर मत द्वारा मान्य तत्त्वार्थसूत्र में इन चारो प्रकृतियो का समावेश पुण्य प्रकृति के रूप में कैसे हो गया?" यह थी आपकी तत्त्वज्ञान के प्रति सत्यान्वेषण की प्रवृत्ति।

आचार्य श्री कुशल प्रवचनकार एव श्रेष्ठ लेखक थे। आपने प्रारम्भिक वर्षों मे धर्म, आगम, दर्शन, नीति, कर्म सिद्धान्त, तत्त्व ज्ञान आदि सभी विषयो पर लेखनी चलाई। आपके लेख हृदयस्पर्शी, मार्मिक तथा प्रेरणाप्रद है। मुझे लेख लिखने की प्रेरणा आपसे ही प्राप्त हुई । वस्तुत मुझे लिखना सिखाया।

अल्पवय मे ही आपकी विद्वत्ता का प्रभाव देश के दूरस्थ भागो मे फैलने लगा था। आपकी सूझबूझ एव शास्त्रज्ञान की कीर्ति का एक उदाहरण केकड़ी का शास्त्रार्थ है । इस शास्त्रार्थ की घटना यहाँ दी जा रही है।

• केकडी मे शास्त्रार्थ का परचम

अजमेर सम्मेलन के पूर्व सवत् १९९० में आचार्य श्री शाहपुरा के सब सेशन जज श्री सरदारमलजी छाजेड़ के निवेदन पर बनेड़ा से विहार कर शाहपुरा पधारे। वहाँ से अन्य क्षेत्रो को फरसते हुए केकड़ी पधारे। उन दिनो केकड़ी व इसके चारो ओर के क्षेत्र मे बड़ा विषाक्त साम्प्रदायिक वातावरण था। उस समय उस क्षेत्र में जो स्थानकवासी सन्त-सती आते उन्हें दिगम्बर एव मूर्ति पूजक समाज की ओर से ठहराने, आहार-पानी देने का निषेध कर रखा था। उनके साथ अभद्र व्यवहार किया जाता तथा अपमानित व परेशान किया जाता था। दिगम्बर समाज की ओर से श्वेताम्बर समाज के आगमो पर यह आरोप लगाया गया एव प्रसारित किया गया कि इनमे भगवान महावीर ने मास खाया, ऐसा लिखा है, अत ये आगम अमान्य है। इस आरोप का केकड़ी के स्थानकवासी समाज ने 'रेवतीदान

समालोचना' पुस्तक प्रकाशित कर समुचित खण्डन किया।

उन दिनों केकड़ी भारतवर्ष में शास्त्रार्थ का प्रमुख स्थान था। यहाँ आर्य समाज, दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्ति पूजक एव स्थानकवासी समाज में परस्पर अखिल भारतीय स्तर पर विधिवत् शास्त्रार्थ होते रहते थे। केकड़ी उस समय वस्तुत: दिगम्बर पडितो व शास्त्रियों का गढ था। पडित श्री मूलचन्दजी श्री श्रीमाल प्रमुख विद्वान थे। इनकी शास्त्रार्थ में विशेष रुचि थी। वे दिगम्बर एव श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज को स्थानकवासी समाज के साधुओ से शास्त्रार्थ करने के लिय प्रोत्साहित करते रहते थे। उस समय जो भी स्थानकवासी साधु- साध्वी केकड़ी आते, उन्हें शास्त्रार्थ करने के लिये ललकारा जाता था। अत स्थानकवासी साधु केकड़ी में आते हिचकिचाते थे।

सयोग से जब आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का केकड़ी पधारना हुआ तो केकड़ी के स्थानकवासी समाज की ओर से श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज को आचार्य श्री से अपने प्रश्नों का समाधान करने के लिये लिखा गया। इस पर मूर्त्तिपूजक समाज ने अपने प्रश्न शास्त्रार्थ के रूप मे भेजे। दिनाक १६ फरवरी सन् १९३३ से एक सप्ताह तक शास्त्रार्थ चला। पडित श्री मूलचन्द जी शास्त्री को दोनों पक्षों की ओर से निर्णायक चुना गया। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने श्वेताम्बर समाज की ओर से पूछे गए गूढ से गूढ प्रश्नों के उत्तर प्राजल सस्कृत भाषा में दिए। आचार्य श्री के प्रकाण्ड पाण्डित्य पूर्ण समुचित समाधानों से निर्णायक पडित जी सहमत ही नही, अत्यन्त प्रभावित भी हुए। उन्होने निर्णय दिया कि आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के उत्तर जैनधर्म की दृष्टि से बहुत सटीक एव समुचित है। शास्त्रार्थ के पश्चात् केकड़ी के दिगम्बर एव मूर्तिपूजक सम्प्रदाय का जोश ठडा पड़ गया और स्थानकवासी सन्त-सतियो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारना बद हो गया। इस शास्त्रार्थ मे केकड़ी स्थानकवासी समाज के मन्त्री सुश्रावक श्री धनराजजी नाहटा ने प्रमुख भूमिका निभायी।

आचार्य श्री की उम्र उस समय बाईस-तेईस वर्ष की ही थी। इतनी छोटी वय में दिग्गज पण्डितो से शास्त्रार्थ करना और विजय प्राप्त करना आचार्यप्रवर के विशिष्ट ज्ञान का सूचक रहा।

• दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एव वीर्याचार के उत्कृष्ट आराधक

आचार्य श्री सम्यग्दर्शन और सवेदनशीलता रूप दर्शन इन दोनो ही दर्शनो के उच्च स्तरीय आराधक थे। आपके हृदय मे दया, करुणा, अनुकपा उमड़ती थी, जो सर्व हितकारी भाव के रूप मे प्रकट होती थी। जो भी आपके सम्पर्क में व दर्शनार्थ आता, उसके दु:ख से द्रवित हो उसे दोषों के त्यागने का कोई न कोई नियम दिलाने का आपको ध्यान रहता था। आप दया के सागर एव करुणा के भण्डार थे।

समस्त दु:खों की जड़ है — राग, द्वेष, मोह, विषय, कषाय आदि दोष। आचार्य श्री इन दोषो से बचने के लिये स्वय तो सतत जागरूक रहते ही थे, साथ ही अन्य व्यक्ति भी इन दोषो व समस्त दुखों से मुक्ति पायें, इसके लिये सदा प्रेरणा देते रहते थे।

चारित्राचार के आप उत्कृष्ट आराधक थे। आप इन्द्रियजयी एव कषाय-विजयी थे। प्रतिकूल प्रसग आने पर भी आप क्रुद्ध नही होते थे, क्षमा के सागर थे। यदि कोई दोषी व्यक्ति अपने दोष को आप से निवेदन करता तो आप उसे बिना बुरा भला कहे अत्यन्त करुणा व प्रेम से उसके दोष-निवारण का मार्ग बतलाते थे। अनेक अपराधी मनोवृत्ति के व्यक्तियो ने आपकी शरण में आकर जीवन को अपराध मुक्त व उन्नत बनाया। आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि प्राय कोई भी व्यक्ति आपके समक्ष अभद्र, अशिष्ट व्यवहार तथा अनादर करने का साहस

नही कर पाता था।

आचार्य श्री बड़े सरलहृदय थे और दूसरो को भी वे वैसा ही सरल समझते थे। कोई मायाचार या कपट कर सकता है, झूठ बोल सकता है, उन्हें प्राय ऐसा नही लगता था। आचार्य श्री निर्लोभता की प्रतिमूर्ति थे । अनेक बहुमूल्य चित्र व अमूल्य हस्तलिखित ग्रथ जिनका आप चाहते तो सग्रह कर सकते थे, परन्तु आपने उन्हे शास्त्र भण्डारो को सम्भलाने की प्रेरणा प्रदान कर उन्हे समाजोपयोगी बनाया। आप क्रोध, मान, माया और लोभ इन चारों ही कषायो से अपने को बचाने में सदैव सजग रहते थे। कषाय-विजय के लिए सतत पराक्रम करते रहते थे।

आचार्यप्रवर तीन गुप्तियो के पालन मे सदैव जागरूक रहे। आप काया का गोपन कर व्यर्थ की प्रवृत्तियों से बचते थे। वचनगुप्ति के प्रति भी पूर्ण सावधान थे। विकथाओ से तो सदा बचते ही थे, आगन्तुक दर्शनार्थी को भी सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान के नियम दिलाकर अपने कार्य मे लग जाते थे। व्यर्थ की बात बिल्कुल नही करते थे।

आप स्वय उत्कृष्ट चारित्र का पालन करते थे, साथ ही सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियो को भी किसी न किसी प्रकार की साधना की प्रेरणा देते रहते थे। आपके अपने शासन काल मे इकतीस सन्तो एव चौवन सतियो की दीक्षा हुई। आपकी प्रेरणा से सामायिक-सघ व साधना-सघ की स्थापना हुई। आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली होने पर भी आप मान से कोसो दूर रहते थे। सथारे के कुछ दिन पहले आपकी रुग्णावस्था मे साधना विषयक चर्चा में आपने फरमाया कि सागर में एक बुदबुदा रहे तो क्या और न रहे तो क्या, अर्थात् सागर में बुदबुदे का कोई महत्त्व या मूल्य नही है उसी प्रकार इस ससार मे हमारे रहने न रहने का, जीने मरने का कोई महत्त्व नही है । आचार्य श्री के इस कथन से ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आप कितने निरभिमानी थे। आपकी प्रेरणा से सैकड़ों साधकों ने अपने जीवन को उन्नत बनाया।

आप तपाचार के भी उत्कृष्ट आराधक थे। आचार्यप्रवर के पाचो इन्द्रियो के आहार (के भोग) का त्याग रूप अनशन तप तो सदैव चलता ही रहता था, साथ ही शरीर और इन्द्रियो की क्रिया के लिये जो आहार लेना पड़ता था वह भी कम से कम लेते थे अर्थात् उणोदरी तप बराबर चलता था। जो आहार लेते थे उसमें निजी सकल्प नही होता था, अपने शिष्यो की प्रसन्नता के लिए एव सयम-साधना के लिए लेते थे । इस प्रकार वृत्तिप्रत्याख्यान या भिक्षाचर्या तप के भी सच्चे आराधक था। आहार में रस का भोग न करने से आप रस-परित्यागी थे। दिन भर बैठे-बैठे कार्य करने पर तथा चलने से थकान होने पर भी आप दिन मे लेटते नही थे। रोग आने पर समता से सहन करते थे। इस प्रकार आपका काय-क्लेश तप चलता रहता था। आप इन्द्रियो के साथ मन को भी बहिर्मुखी वृत्ति से हटाकर अपने को ज्ञानोपयोग में सलीन करने मे तत्पर रहते थे। अर्थात् प्रतिसलीनता तप भी आपका उत्कृष्ट श्रेणी का था। सयम की उत्कृष्ट पालना के लिए प्रायश्चित का आप सदा ध्यान रखते थे। आप अहभाव से परे थे इसलिए विनय'तप सहज क्रियान्वित हो जाता था। । आपका सबके प्रति विनम्रता का व्यवहार था। वैय्यावृत्य या सेवाभाव तो आपका सहज गुण था। आपकी विद्वत्ता, योग्यता, सामर्थ्य आदि सभी ससार की सेवा मे अर्पित थे। आप करुणार्द्र हो सभी को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने रूप सेवा मे तत्पर रहते थे।

स्वाध्याय तप के तो आप मूर्तिमान रूप थे। प्रातःकाल से रात्रि तक स्वाध्याय में रत रहते थे। अधेरा हटते ही लिखने पढ़ने का कार्य चालू कर देते थे। अपना समय व्यर्थ न जावे, इसके प्रति पूर्ण सावधान रहते थे। आपके सम्पर्क मे जो भी पढा लिखा व्यक्ति आता , आप उसे नियमित स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते एव नियम दिलाते

थे। आपकी प्रेरणा से ही स्वाध्याय सघ की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य गाव-गाव में, प्रत्येक व्यक्ति में स्वाध्याय का प्रचार प्रसार करना है। पोरवाल - पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में स्वाध्याय से ही जागृति आई है । इन क्षेत्रों मे पहले जहाँ दो चार भी वक्ता नही थे, वहाँ आज शताधिक वक्ता तैयार हो गये है।

ध्यान तप तो आपके जीवन का अग ही था। प्रातकाल सूर्योदय के समय, मध्याह्न मे १२ से १ बजे तक तथा रात्रि में शयन के समय आपकी ध्यान-साधना नियमित चलती थी। चतुर्विध सघ मे स्वाध्याय व सामायिक की तरह ही ध्यान साधना चालू हो, इसके लिये मुझे आपसे बराबर प्रेरणा मिलती रही। आप फरमाते - "स्वय भी ध्यान-साधना करो तथा दूसरो को भी ध्यान-सिखाओ।" अत आपके सान्निध्य में अनेक ध्यान शिविर लगाये गये।

व्युत्सर्ग तप ध्यान-साधना का अगला चरण व आभ्यतर तप का अतिम चरण है। ध्यान-साधना कर्त्ता-भोक्ता भाव से छूटने व ज्ञाता द्रष्टा बनने की साधना है। व्युत्सर्ग तप देहातीत-लोकातीत होने की साधना है। इस साधना मे साधक इन्द्रिय एव लोक के प्रभाव से मुक्त हो, असग हो, इनसे परे हो जाता है। फिर बुद्धि सम हो अपने में ही लीन हो जाती है तथा चिंतन-मनन सकल्प-विकल्प की आवश्यकता नही रहती। व्युत्सर्ग-साधना का उत्कृष्ट रूप है सलेखना सथारा। आचार्यप्रवर ने जबसे सथारा लिया तबसे पूर्ण होश मे होते हुए भी आप तन-मन-वचन से निश्चेष्ट रहे। अपनी ओर से करवट भी न ली, न किसी से बात की और न कोई सकेत ही किया। बाह्यतप से आभ्यतर तप अधिक महत्त्वशाली है और आभ्यतर तप मे व्युत्सर्ग तप सर्वोत्कृष्ट तप है। यह मुक्ति मे साक्षात् कारण है। आचार्य श्री ने बाह्य-आभ्यन्तर सभी तपो का अनुपालन किया। आप महान् तपस्वी थे।

वीर्याचार अथवा पुरुषार्थ-पराक्रम के आप धनी थे। 'समय गोयम! मा पमायए' यह सूत्र आपके जीवन में चरितार्थ था। आचार्य श्री का प्रात से सायकाल तक सारा क्रिया-कलाप मुक्ति की प्राप्ति हो, इसी के लिए होता थी।

• महत्त्व गुण पूजा का है, व्यक्ति पूजा का नही

सवाईमाधोपुर मे आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज साहब की जयन्ती मनाई गयी थी। प्रातकाल की धार्मिक सभा मे वक्ता आचार्य श्री के गुणो से प्रेरणा लेने पर जोर देते रहे। सायकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् आचार्यप्रवर से मैंने निवेदन किया कि मेरे दादा श्री भूरालालजी लोढा कहा करते थे कि जीवित (छद्मस्थ) व्यक्ति की प्रशसा नही करनी चाहिए। क्या उनका यह फरमाना उचित है?

आचार्य श्री ने फरमाया कि पहले सब सत भी यह ही कहते थे और यह उचित ही है। मुझे आचार्य श्री के मुख से यह बात सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, कारण कि मुझे डर था कि कही आचार्य श्री इस कथन का यह अर्थ नही ले लेवे कि आज जो मेरे गुणगान किए गए, वे इसे पसद नही हैं। आचार्य श्री के उक्त कथन को सुनकर मुझे लगा कि आचार्य श्री प्रशसा के भूखे नही हैं, प्रत्युत प्रशसा सुनना पसद भी नही करते। प्रात काल की धार्मिक-सभा मे भी आपकी प्रशसा करने वाले वक्ताओ को आप बार-बार टोक रहे थे। मुझे लगा कि मेरे मन का डर एक भ्रम था जो आचार्य श्री के उक्त कथन को सुनकर दूर हो गया।

पचाचार के उत्कृष्ट आराधक होने के साथ आप चतुर्विध सघ के हित के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आचार्य श्री के गुणों की थाह नही। महान् आचारवान् आचार्यप्रवर को शतश सहस्रश नमन।

-अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान
साधना भवन, बजाज नगर, जयपुर

अप्रमत्त साधक की दिनचर्या

• डॉ धर्मचन्द जैन

'समय गोयम ! मा पमायए', एव 'काले काल समायरे' आगम-वाक्यों के आराधक आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ऐसे अध्यात्मयोगी एव युगमनीषी साधक सन्त थे जो निन्दा-विकथा एव सासारिक प्रपचों से मनसा, वचसा एव कर्मणा दूर रहकर समय के एक-एक पल का सदुपयोग करते थे। रात्रि में आप नियत समय पर पोढ़ते , किन्तु जब भी नीद से जाग जाते, तो रात के दो बजे हों या तीन, आप उठकर जप, माला, ध्यान या चिन्तन में लीन हो जाते। रात्रि के अन्धकार मे भी कभी-कभी चित्त में उपजे विचारो या काव्य-पक्तियो को लिपिबद्ध कर लेते। आप खाली कागज एव पेंसिल साथ मे रखकर पोढ़ते। रात्रिक प्रतिक्रमण का समय होने पर प्रतिक्रमण करते, सन्तों को प्रत्याख्यान कराते एव सूर्योदय के पश्चात् प्रतिलेखन करके स्थण्डिल के लिए पधार जाते। वापस आकर अल्पाहार-मुख्यत पेय ग्रहण करते और स्वाध्याय तथा लेखन में सलग्न हो जाते।

प्रात काल प्रवचन एव अपराह्न में शास्त्र वाचन का क्रम नियमित चलता। जब कभी प्रवचन मे नही पधारते तो स्वाध्याय एव लेखन का कार्य जारी रखते। मध्याह्न मे १२ बजे ध्यान के लिए विराजते। ध्यान का ऐसा क्रम था कि कभी विहारकाल मे विलम्ब हो जाता तो पेड़ के नीचे या जो भी उचित स्थान मिलता, वहाँ ही एक बजे तक ध्यानस्थ हो जाते। मौन का समय २ बजे तक रहता था। फिर शास्त्र-वाचन करते , सन्त-सतियो की जिज्ञासाओ का समाधान करते, उनके शास्त्रज्ञान को पाठ देकर या प्रेरणा कर आगे बढ़ाते। समय मिलते ही वज्रासन, पद्मासन आदि आसनों से विराजकर लेखन मे जुट जाते। आवश्यक होने पर सायकाल ४ बजे बाद सामयिक विषयो पर चर्चा करते। सायकाल स्थण्डिल भूमि से लौटकर दैनन्दिनी लिखते एव थोड़ा सा आहार लेते। मध्याह्न मे प्राय आहार ग्रहण नही करते थे। कभी करते तो हल्का सा लेते। मिर्च-मसाले युक्त एव गरिष्ठ आहार का वर्जन ही रखते। । आहार का सेवन सयम-जीवन के लिए था, स्वादपूर्ति एव शरीर-पोषण के लिए नही।

सायकाल का प्रतिक्रमण भी समय पर करते। प्रतिक्रमण के पश्चात् सन्तो तथा आगन्तुक श्रावको से ज्ञान-चर्चा करते। श्रावको को भी जिज्ञासा-समाधान का यह समय उपयुक्त लगता, क्योकि रात्रि मे पूज्यप्रवर लेखन आदि कार्यों में व्यापृत नही मिलते थे। यह समय आचार्यदेव प्राय जिज्ञासु श्रावको के लिए नियत रखते थे, किन्तु दिन मे भी ध्यान, मौन, प्रवचन, शास्त्रवाचन आदि के अतिरिक्त जब भी योग बनता आप आगन्तुको को सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा एव व्रत-प्रत्याख्यान कराने हेतु सजग रहते थे। स्मरणशक्ति इतनी तीव्र कि अन्धेरे मे भी आवाज मात्र से श्रावकों को पहचान लेते थे। आगन्तुको से आप आर्थिक एव पारिवारिक विषय पर कभी भी बातचीत नही करते थे। आसन इस प्रकार लगाते कि श्रावको को चरण स्पर्श का प्राय अवसर नही मिलता था। ज्ञानचर्चा के अनन्तर नियमित रूप से कल्याणमन्दिर स्तोत्र एव नन्दीसूत्र का स्वाध्याय करके आप काष्ठपट्ट पर या नीचे ही शरीर एव मस्तिष्क के विश्रामार्थ पोढ़ जाते थे। दिन में कभी पोढ़ने या लेटने का काम नही। मनोबल इतना दृढ कि ज्वरग्रस्त होने पर भी बैठे रहकर ही स्वाध्याय-लेखन मे प्रवृत्त रहते। आपकी दिनचर्या को जिसने अपने नयनों से देखा है, वह आसानी से समझा सकता है वे महापुरुष कितने अप्रमत्त थे। (उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. से बातचीत के आधार पर)

-3K २४-२५ कुड़ी भगतासनी, जोधपुर

मेरे जीवन-निर्माता

डॉ. मंजुला बम्ब

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. परिस्थितियो को पहचानने में पारगत थे। अतल तल मे पहुचने की शक्ति आप मे विद्यमान थी। व्यक्ति का चेहरा देखकर उसके मनोगत भावो को जानने में निपुण थे । गुरुदेव देख लेते थे कि इस व्यक्ति के जीवन को सुदृढ बनाने के लिए किस प्रकार के उपचार की आवश्यकता है। मेरे जीवन का निर्माण करने मे उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सन् १९७५ मे मेरे जीवन मे यकायक परिवर्तन आया। अचानक मेरे पति श्री हेमचन्द जी बम्ब १४ अगस्त १९७५ की रात्रि ११.३० बजे इस ससार से मुझको तीन बच्चो के साथ छोड़कर चले गए। इस वीरान जिन्दगी के बारे मे हमेशा सोचती रहती थी। अनेक प्रश्न उठते रहते थे। मै १७ सितम्बर सन् १९७५ को पूज्य गुरुदेव के दर्शनो के लिए परिवारजनों के साथ ब्यावर गयी। तब गुरुदेव ने मुझको रोते हुए देखकर समझाते हुए कहा था "यदि व्यक्ति अपने गुणों का विकास करेगा तो उसकी जीवन- यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होगी। गुणो की वृद्धि का कही अहंभाव जाग्रत नही हो जावे, इसके लिए व्यक्ति को महापुरुषो के चरणों मे स्वय को अर्पित करना चाहिए।"

यही वाक्य हमेशा मेरे कानो मे गूजते रहते थे। उस समय स्वाध्याय की प्रवृत्ति मुझमे नही होने से मैं धार्मिक अनुष्ठानो से बिल्कुल अनभिज्ञ थी। अज्ञानता के कारण कई प्रश्न मेरे मन मे कौतूहल उत्पन्न करते थे और मैं हमेशा उन प्रश्नो को लिखकर रख लेती थी। मैं जब भी गुरुदेव के दर्शनो के लिए जाती, वे प्रश्न अपने साथ लेकर जाती कि अनुकूल अवसर मिलने पर गुरुदेव से पूछूँगी। मगर मेरे सभी प्रश्नो का समाधान व्याख्यान में ही हो जाता था। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहता था कि हर समय ही मेरे प्रश्नों का समाधान मेरे बिना पूछे कैसे हो जाता है।

दोपहर की मौन-साधना के बाद जब मैं आचार्यप्रवर की सेवा में बैठती तब मुझसे गुरुदेव पूछते कि 'मन मे जो कोई प्रश्न है वह पूछ। मै चुप रहती, फिर "पूछ बाई पूछ। मजू पूछ।' मै शर्म से और डर से बोलती ही नही थी। मैं सहमी-सहमी सी कह देती, नही बाबजी नही, कोई प्रश्न नही है। ऐसा मेरे जीवन मे करीब आठ-दस बार हुआ। इसी तरह मेरे मन मे शकाएँ उठती रहती और पूज्य भगवन्त के दर्शनार्थ जाती तभी प्रवचन मे ही सभी शकाओ का समाधान मिल जाता। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहता कि गुरुदेव को मेरे मन की बाते एक्सरे मशीन की भाति कैसे पता चलती है?

वाणी मे ओज, प्रवचन मे प्रखरता, उत्कृष्ट सयम-साधना के साथ सरलता आदि अनेक गुण आप मे थे, जो चुम्बकीय शक्ति का कार्य करते थे। जो भी एक बार गुरुदेव के समीप बैठ जाता उसकी वहाँ से जाने की इच्छा नही होती थी। ऐसा लगता था कि आपका सौम्य चेहरा अपलक निहारते रहे। इससे नयन तो पवित्र होते ही थे, मन भी पुलकित रहता था। गुरुदेव से आत्मिक-शक्ति मिलती थी। दर्शन करके वापिस जयपुर लौटती तो बहुत ही रोना आता था। आप श्री के वात्सल्य और चुम्बकीय-शक्ति से मै बहुत प्रभावित हुई। मेरे नीरस, वीरान जीवन में उन्होंने मुझे कभी भी व्रत-नियम के लिए नही कहा। मुझे हमेशा जीवन-लक्ष्य की प्रेरणा प्रदान करते।

आपश्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्व-पर कल्याण में ही समर्पित किया। इसी कारण आपश्री के सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति खाली नही लौटता था। सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, मौन, नैतिक उत्थान, कुव्यसन-त्याग

इत्यादि जीवन जीने की कला आप से प्राप्त होती थी। गुरुदेव, परोपकारी सन्त थे। हमेशा दूसरों के हित में सोचा करते थे। ममतामयी जन्मदात्री रूपा की गोद को छोड़कर आप अष्ट प्रवचन माता की गोद में बैठकर सघ को, समाज को ही नहीं, अपितु पूरे विश्व को वात्सल्य रूपी अमृत पिलाकर इस पचम काल के महान् सन्त बने।

आचार्यप्रवर करुणा के सागर थे। उन्होने मुझे रोगी की सेवा करने की प्रेरणा की। तब से मानव कुष्ठ आश्रम की समुचित व्यवस्था मैंने देखना शुरु किया था। नेत्रहीन बालको के आश्रम मे सप्ताह मे एक बार उनको स्नान कराने का कार्य भी किया। सवाई मानसिंह अस्पताल के नेत्ररोगियों का एक वार्ड मैंने गोद लिया। उसमें जाने पर उनकी बेबसी पर अपार दुख होता था। किसी के पास दवा लाकर देने वाला नही होता था तो किसी के पास दूध लाकर देने वाला नही होता था, तो किसी के पास दूध गर्म करने वाला नही था। यह सभी कार्य मैं स्वय ही करके आती थी और मुझे बहुत अच्छा लगता था। आप कहा करते थे कि अपने जैसा ही दूसरो को समझो। यदि आपको किसी को प्रेरणा देनी है तो स्वय वैसा ही आचरण करो। आचरण को देखकर दूसरे स्वय शिक्षा लेगे।

जिस प्रकार शरीर पुष्टि के लिए व्यायाम और भोजन आवश्यक है उसी प्रकार मस्तिष्क के विकास के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। गुरुदेव की इस प्रेरणा से मैं नित्य स्वाध्याय व थोकड़े आदि सीखने लगी।

आपकी प्रेरणाओ ने ही मेरे एकाकी, बेबस, खोखले, पराश्रित सुप्त जीवन को जगाया। श्रेष्ठ मूल्यो का नवनीत प्रदान किया। भौतिकता के जाल मे फसी हुई मुझे आध्यात्मिकता का अमृत पिलाया। अतीत को भूलकर वर्तमान मे जीने की कला बताई। आज मैं जो भी हूँ जैसी भी हूँ आपकी दीर्घ दृष्टि से हूँ। आपने मुझे आनेवाली आपदाओं से सचेत कर उन आपत्तियो के प्रतिकार या प्रतिरोध का समय-समय पर उपाय भी बताया। साथ ही विकास के दीर्घ परिणामी सूत्र भी दिये।

मुझे अक्सर कई बहिने पूछती हैं कि आप दिन भर क्या करती होगी? कैसे समय व्यतीत करती होगी? बड़े सहानुभूतिपूर्ण शब्दो मे पूछती हैं। मैं उनसे कहती हूँ मेरे आराध्यदेव मेरे गुरुदेव ने मुझे प्रात काल से रात्रि सोने तक की दिनचर्या मे जीवन जीने की ऐसी कला सिखाई है कि एक पूरा दिन भी छोटा पड़ जाता है। मेरे पास एकाकीपन को पास फटकने की गुजाइश नही है। यह उत्तर सुनकर बहिनें आश्चर्य चकित हो जाती हैं। मेरे जीवन के खिवैया, जीवन सवारने वाले वाणी के जादूगर को श्रद्धा सुमन देते हुए—

'धरती कागज करू, लेखन करू वनराय।
सात समुद्र की मसि करू, गुरु गुण लिखा नही जाये।'

स्वय को सुनने वाले, स्वय को देखने वाले, स्वय को जानने वाले अन्तर्मुखी जड़ और चैतन्य के विज्ञाता, मेरे जीवन के निर्माता, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, रत्नवश के शिरोमणि आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, युग-द्रष्टा, इतिहास मार्तण्ड, सामायिक-स्वाध्याय के प्रणेता ऐसे अद्भुत एव विरल योगी के चरणो मे मेरा कोटिश वन्दन, अभिनदन।

• श्रद्धा का कल्पवृक्ष

यह घटना सन् १९६९ की है। आचार्यप्रवर का विक्रम सम्वत्२०२६ का चातुर्मास नागौर मे था। यह घटना बम्ब परिवार की है। श्री अनूपचदजी साहब बम्ब के छोटे भाई श्री सिरहमल जी साहब बम्ब आचार्य प्रवर के अनन्य भक्त थे। उसी समय महासती जी श्री सायरकवरजी म.सा. एव महासतीश्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा का वि सवत् २०२६का चातुर्मास भोपालगढ (बड़लू) में था। बम्ब साहब अपनी बहिन तपस्विनी श्रीमती लाड़देवी बोथरा, धर्मपत्नी श्रीमती सम्पत देवी बम्ब, पुत्र श्री पदम बाबू और श्री कमल बाबू को साथ लेकर कार से मारवाड़ की ओर

भोपालगढ महासती जी के दर्शनार्थ गये। वहाँ दिनभर सेवा करने के बाद रात को आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ रवाना हो रहे थे, तभी महासतियाँ जी ने मना किया कि रात को यही पर आराम करो और सुबह नागौर दया पाल लेना। मगर दर्शनों की उत्कठा ने रात को ही रवाना कर दिया। सभी लोग रात को ही कार द्वारा भोपालगढ़ से नागौर के लिये रवाना हुए। अचानक ध्यान आया कि रास्ता भटक गए हैं और कार बजाय सड़क के चलने के घास और मिट्टी पर चल रही है। चारो ओर देखने पर कही पर भी सड़क दिखाई नही दे रही थी। उस भयानक काली रात मे जगल में औरतों व बच्चो के साथ बम्ब साहब को भी चिन्ता होना स्वाभाविक था। उन्होंने गुरु हस्ती का चिन्तन किया। कार के चलते हुये सामने आगे साइकिल पर लाल साफा बाधे एक व्यक्ति दिखाई दिया। साइकिल सवार के पास गाडी धीरे कर बम्ब साहब ने रास्ता पूछा। साइकिल रोक कर उसने कहा कि भाई ! आप गलत चल रहे है। रास्ता भटक गए हैं। यह रास्ता इधर नही है। हाथ से इशारा करते हुये उसने कहा कि रास्ता उधर है और वह व्यक्ति वहाँ से रवाना हो गया। गाड़ी तेज कर उस व्यक्ति को इधर-उधर देखा। पर वह व्यक्ति दिखाई नही दिया। फिर कार को वापस घुमाया कि सड़क दिखाई दी। सबके आश्चर्य का ठिकाना नही रहा और सबके मुख पर एक अजीब खुशी छा गयी। उस कहने वाले व्यक्ति को ढूढते रह गए, मगर वह कही पर भी दिखाई नही दिया। रात को नागौर पहुँच गये।

-३, मेरु पैलेस होटल के पास,
सवाई रामसिंह रोड, जयपुर (राज)

■

नमन

• डॉ लक्ष्मीमल्ल सिघवी

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज साहब को मैंने अपने बचपन से देखा , जाना और उनके आशीर्वचन की मगलमय शीतल छाया में शैशव, कैशौर्य, यौवन और प्रौढ़ावस्था के हर चरण में उनसे मुझे उद्बोधन मिला, प्रेरणा मिली। मेरे पूज्य दादाजी के समय से मैंने उनके पास जाना शुरु किया। नवकार मन्त्र का प्रतिदिन अपने नित्य नैमित्तिक कार्यक्रम मे नियमित रूप से जप करने का व्रत उन्होने ही मुझे दिया। मैंने सस्कृत का अध्ययन बचपन में ही शुरु किया था। वे मुझसे सुभाषित सुनते और प्रोत्साहन देते। परिवार के सब सदस्यों को धर्म ध्यान फरमाते। सस्कृत के साथ प्राकृत का अभ्यास करने का सुझाव देते। मैंने एक बार कहा कि मुझे वैष्णव परम्परा मे भी गहरी रुचि है, तो उन्होने अनेकान्त के सदर्भ मे एक परिमार्जित दृष्टि दी।

उन्होने मुझे बताया कि श्रमण-परम्परा आर्य सस्कृति की दो शाखाओ मे से एक है और वैदिक सस्कृति के समानान्तर अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। वे ज्ञान के ज्योतिपुज थे, साधना और तपस्या के कीर्तिमान थे, प्रेरणा के स्रोत थे। वे एक शिक्षक, गुरु और मार्गदर्शक थे, अहिंसापरक एव अनेकान्तवादी क्षमाशील श्रमण-परम्परा के प्रामाणिक एव मानक युगपुरुष थे। उनकी पुण्य-स्मृति को, उनके कृतित्व को, उनके जीवन-दृष्टान्त को मेरा शत-शत नमन।

१६ मार्च, १९९८

४-एफ, व्हाइट हाउस, १०-भगवानदास रोड, नई दिल्ली ११०००१

■

आलोक पुंज गुरुदेव

• श्री आसूलाल सचेती

गुरुदेव परम पूजनीय श्री गजेन्द्राचार्य एक आलोक पुज के समान थे। ऐसा आलोक पुज जो बाह्य आलोक के साथ-साथ आभ्यंतर आलोक भी प्रसारित करता है। इसीलिए वे अनुपम थे, अप्रतिम थे। गुरुदेव की उपस्थिति के फलस्वरूप जहाँ वातावरण मे करुणा, शान्ति, अहिंसा व मैत्री का प्रकाश प्रसारित होता, वहाँ आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति की भी प्रगति होती थी। इस प्रकार अनेकानेक प्राणियो या व्यक्तियों को आत्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने का सहारा या सम्बल मिलता था। जो मैंने स्वय देखा और अनुभव किया उस पर आधारित कुछ सस्मरण यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूँगा। विज्ञ पाठक विस्तारभय के कारण सक्षिप्त विवरण को ही यथेष्ट समझे।

• सामिष भोजन नही बना

गुरुदेव का सन् १९५८ मे दिल्ली में चातुर्मास था और मेरा भी उत्तर रेलवे के मकान मे निवास था। गुरुदेव का कृपा कर वहाँ पधारना हुआ। कुछ सतो की चिकित्सा के लिये मैंने उस गृह मे विराजने का निवेदन किया। वहाँ पर एक प्रतिकूलता थी। आस पास के बगलो मे जैनेतर सामिषभोजी परिवार रहते थे, इसके चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर थे। सत्य भी था कि वे ऐसे सामिष भोजी थे कि निरामिष व्यक्ति कल्पना भी नही कर सकता। वर्णन तो दूर, किन्तु जब उन सामिष बन्धुओ को ज्ञात हुआ कि गुरुदेव व जैन सत ऐसे स्थान पर निवास की विचारणा भी नही कर सकते तो उन्होने स्वय आश्वासन दिया कि जब तक सत मुनिमण्डल वहाँ विराजेगा, वहाँ सामिष भोजन नही बनेगा और यही हुआ। वहाँ निरामिष आहार ही बना और जब तक सन्त वहाँ विराजे, उन जैनेतर लोगो ने भी सन्त-सेवा का लाभ लिया। इस प्रकार वहाँ कुछ दिन ही सही, महती जीव हिंसा रुकी और शान्ति व करुणा का सचरण हुआ।

• भक्त कृपालु

सन् १९६८-१९७१ तक मेरी नियुक्ति पश्चिम रेलवे क्षेत्र मे अजमेर मे थी, क्योकि रेलवे का मकान शहर के बाहर मुख्य मार्ग के समीप था, गुरुदेव ने उसको एक से अधिक बार विराज कर पवित्र किया। इसमे प्रकटत कारण मेरी दिवगत धर्मपत्नी पर गुरुदेव की कृपा दृष्टि और उसका भी विशेष आग्रह था, किन्तु मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि गुरुदेव मुझे आध्यात्मिक मार्ग पर लाना चाहते थे, अग्रसर कर रहे थे। न जाने गुरुदेव ने कैसे मुझे अपनी कृपा दृष्टि के लिए चुना था (यह अनुभव मेरे अनेक मित्रो को हुआ, जिनका जीवन-निर्माण गुरुदेव द्वारा हुआ)

"आंख तादर की नशेमन पर रही परवाज मे"

जिस प्रकार पक्षी दूर गगन मे ऊँचे उड़ते हुए भी अपने नीड़ पर एव शिशुओ पर दृष्टि रखता है, गुरुदेव भी अपने भक्तो का सतत ध्यान रखते थे, उनका मार्गदर्शन करते रहते थे। अस्तु अजमेर प्रवास के कुछ बिन्दु सामाजिक एव व्यक्तिगत दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहे।

• जीवन निर्माता

एक दिन गुरुदेव ने मुझे प्रश्नवाचक मुद्रा मे पूछा - 'आसूलाल ! उत्कोच ? प्रथमत मैं समझ नही सका, किन्तु बाद में समझने पर मैने नकारात्मक उत्तर दिया, तो गुरुदेव ने कहा त्याग करो, जीवन पर्यंत किसी प्रकार की रिश्वत नहीं लेना। बस यही व्रत सेवाकाल में मेरा सम्बल बना और मैं मानो काजल की कोठरी से साफ निष्कलक निकल गया। यद्यपि कई प्रकार के प्रलोभनो , धमकियों, उपालम्भों से दो चार करता रहा - साथ ही ज्यों-ज्यों मेरे इस व्रत के बारे में जानकारी फैली तो मेरी और मेरी लेखनी की विश्वसनीयता भी बढ़ी सो अलग—

/मै मैकदे की राह से होकर गुजर गया।
वरना सफर हयात का कितना तवील था।/

साथ - साथ ही गुरुदेव अपने गुरुमत्र का जादू मुझ पर भी डालते रहे और सामायिक स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहे। पहले पाँच सामायिक मासिक से प्रारम्भ कर के धीरे धीरे नौकरी मे तरक्की के साथ इस तरफ भी तरक्की करने का उद्बोधन दिया। फिर जैन आगम के स्वाध्याय का प्रोत्साहन दिया। क्योकि रेलवे मे अग्रेजी भाषा का प्रचलन था। आगमो के अग्रेजी अनुवादो के अध्ययन का मार्गदर्शन दिया और मैंने सर्वप्रथम हरमैन जैकोबी द्वारा अनूदित आचाराग, सूत्रकृताग, उत्तराध्ययन आदि का परिचय प्राप्त किया। साथ ही मेरे पुत्रो को भी इस अध्ययन में आकर्षण एव आनन्द का अनुभव हुआ। इस अनन्त उपकार से मुझे आगे जाकर जो उपलब्धियाँ हुई उनका जिक्र इस लेख के अत मे द्रष्टव्य है।

अजमेर में रेलवे के दफ्तरों मे करीब १००० व्यक्ति कार्यरत थे। अधिकाश अजैन थे जो जैन मुनियो के क्रियाकलाप से अपरिचित थे , किन्तु गुरुदेव के सामीप्य से वे कर्मचारी जैन मार्ग से परिचित ही नही लाभान्वित भी हुए। क्योकि गुरुदेव ने अपनी धीर गभीर प्रसन्न शैली मे उनका इस प्रकार का शका-समाधान किया कि उनके हृदय में श्रद्धा का बीजारोपण हो गया। फलस्वरूप रेलवे के कैंटीन हाल मे गुरुदेव के प्रवचन का आयोजन हुआ। दिन मे ३ बजे ग्रीष्म ऋतु अपने उत्कर्ष पर और हाल ठसाठस भरा हुआ था। पखो के नीचे तो लोग गर्मी से त्रस्त थे। फिर गुरुदेव के पदार्पण के साथ पखे बद और कुछ क्षणो की खलबली, किन्तु ज्यो ही गुरुदेव ने अमृत वाणी की वर्षा की तो एकदम अपार शाति। सक्षेप मे वह प्रवचन सभा चिरस्मरणीय बन गई और आचार्यप्रवर पूज्य हीराचद जी महाराज साहब जो वहाँ उपस्थित थे, अभी तक उसका स्मरण करते है।

• सबको जाना है

इस प्रकार की अनेक छोटी-छोटी घटनाएँ हैं, किन्तु नाविक के तीर की भाति प्रभावपूर्ण है। १९८१ मे मेरी माताश्री के देहान्त ने मेरे पिताश्री को अत्यत विचलित-विक्षिप्त सा कर दिया। ऐसे मे गुरुदेव के दर्शन और उनकी शरण मे जाना ही उचित प्रतीत हुआ। पिता श्री का मानसिक सन्तुलन बिगड़ सा गया था। उन्हे बार-बार मेरी माता की याद सताती थी। वे गुरुदेव के पास गए। दु.ख का कारण गुरुदेव को पता था। गुरुदेव ने पिताश्री को ऐसा मन्त्र दिया, जिसे प्राप्त कर पिता श्री का जीवन बदल गया। जब मेरे पिता श्री दर्शन कर लौटे तो वे एक भिन्न व्यक्ति थे। न वे दु खी थे न चिन्तित। सर्वथा सामान्य। कारण उन्ही के शब्दो मे गुरुदेव के श्री मुख से उच्चरित मत्र-"सबको जाना है बालको को, युवाओ को, सबको एक दिन जाना है। यह कोई अनहोनी नही न चिन्ता की बात।" उनके जीवन का एक सूत्र बन गया। फिर तो जब भी उनको चिन्ता सताती तो उनकी जबान पर यही मत्र

होता - "सबको जाना है , सबको जाना है।" ऐसा लगता मानो यह सत्य उनके हृदयपटल पर अकित हो गया हो। यह भी लिख दू कि ऐसी ही परिस्थिति मे यही मत्र मेरा भी सहारा बना। विज्ञजन यह कहे कि इसमे नवीनता क्या है, यह तो चिरतन सत्य है, किन्तु ये ही चिरतन सत्य जब महापुरुषो के मुखारविंद से प्रकट होते हैं तो वे प्रभावी बन जाते हैं, असर करते हैं। क्योंकि उनके पीछे त्याग, तप और साधना होती है-

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है,
पर न सही ताकते परवाज़ मगर रखती है॥

• स्वाध्याय की प्रेरणा

एक बार गुरुदेव के सामने मेरे मित्रो ने ही मेरे खिलाफ शिकायत कर दी - "आसूलाल सामाजिक कार्यों में भाग नही लेता, सदा पीछे रहता है।" आरोप सत्य भी था। मै सामाजिक कार्यो मे अधिक दिलचस्पी न लेकर एकात मे पुस्तको मे अधिक समय लगाता रहा हूँ। मित्रबन्धु मुझे सामाजिक कार्यों से जोड़ने के असफल प्रयास भी करते रहते थे और उनका अन्तिम प्रयास था गुरुदेव के समक्ष मेरे प्रति शिकायत । किन्तु गुरुदेव ने समाधान कर दिया–"यह तो स्वाध्याय करता है, इसे स्वाध्याय मे लगे रहने दो ।" इस प्रकार मेरे लिए लक्ष्य निश्चित हो गया–स्वाध्याय और मार्ग भी प्रशस्त हो गया। इस प्रकार गुरुदेव अपने भक्तो की पात्रता को जानते थे, पहचानते थे और यथायोग्य मार्ग निर्धारित करते थे-

किसी की बेकितज्जली हम पर न नूर पर।
देते है वदा जर्फे कदाख्वार देखकर॥

और फिर गुरुदेव यद्यपि दूरस्थ प्रदेशो मे विराजते-जैसे दक्षिण भारत मे, फिर भी उनके सदेश प्रेरणा प्रसाद के रूप मे प्राप्त होते रहते और मेरी स्वाध्याय के क्षेत्र मे प्रगति के बारे मे प्रश्न मिलते रहते।

जो दूर है उनको उपहार देना याद करना बड़ी बात है।
वरना प्रत्येक वृक्ष अपने पैरो पर तो फलो को खुद गिराता ही है।

इसी सदर्भ मे जोधपुर चातुर्मास मे गुरुदेव ने सूत्रकृताग का अग्रेजी अनुवाद करने की प्रेरणा दी। आदेश था श्रावकवर पारख जौहरी मल जी साहब हिन्दी मे अन्वय-अनुवाद करे और मै अग्रेजी में। कार्य दुस्तर था, क्योंकि मैं सस्कृत-प्राकृत से एकदम अनभिज्ञ और आगम की भाषा उसमे सूत्रकृताग की - बुज्झिज्ज तिउट्टेजा बधण परिजाणिया - २५०० वर्ष पूर्व की अत्यन्त प्राचीन, सारगर्भित एव दुरूह। किन्तु गुरुदेव ने एक-एक गाथा का शाब्दिक अर्थ ही नही बताया, बल्कि उसका भाव व तात्पर्य भी और जिस प्रकार कोई बालक को अगुलि पकड़कर चला देता है, वैसे ही कई गाथाओ का अग्रेजी अनुवाद हुआ जो कुछ समय पूर्व जिनवाणी मे सम्पादक डॉ धर्मचन्द जी के विवेचन के साथ क्रमबद्ध प्रकाशित हुआ हैं।

इसी शृखला मे गुरुकृपा से मैं सरल अग्रेजी मे जैनधर्म का परिचय देने वाली दो पुस्तके लिख सका। फर्स्ट स्टेप्स ऑफ जैनिज्म के प्रथम भाग मे जैनधर्म के तात्त्विक सूत्र का परिचय देने का प्रयास है। इसके अन्तर्गत छ द्रव्य, सात या नौ तत्त्व, तीन रत्न, तीन लक्षण और पच परमेष्ठी का सक्षिप्त विवरण है। गुरुदेव ने जोधपुर आते हुए बनाड मे इसका विवरण भी सुना और मुझे धन्य किया कई अग्रेजी जानने वाले श्रावकों को पुस्तक अपने कर कमलो से देकर। यह गुरुकृपा का ही फल है कि पुस्तक देश-विदेश मे स्वीकार हुई है। बाद में पुस्तक का द्वितीय भाग प्रकाशित हुआ जिसमे कर्मवाद, अनेकातवाद, गुणस्थान, समवाय आदि का प्रथम परिचय है। पाँच समवाय के बारे में विशेष निवेदन है कि इस विषयातर्गत काल, स्वभाव, नियति, पुराकृत कर्म और पुरुषार्थ पर गुरुदेव ने स्वय

विस्तार से प्रकाश डाला।

कहाँ तक लिखें, गुरुदेव की अनुकंपा का वर्णन शब्दो मे नही हो सकता। आज भी उसी आलोक पुज के प्रकाश में जीवन का शेष भाग स्वाध्याय के सहारे सुख-दुख-समभाव मे व्यतीत हो, ऐसी प्रार्थना के साथ विरमता हूँ।

उजाले अपनी यादो के हमारे साथ रहने दो।
न जाने जिन्दगी की किस, गली मे शाम हो जाए॥

मार्च, १९९८

• डी-१२१, शास्त्रीनगर, जोधपुर

■

सच्चे निस्पृही एवं उदारहृदय आचार्य श्री

• श्री सम्पत राज डोसी

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा की आत्मीयता एव कृपा से मै आज भी अभिभूत हूँ। आपकी प्रेरणा से सन् १९७० मे स्वाध्याय सघ से जुड़ा। इस कार्य मे मुझे स्वाध्यायियो से सम्पर्क का अवसर मिला तथा अनेक नये अनुभव हुए। स्वाध्याय-सघ के सयोजक के रूप मे कार्य करते हुए आचार्यप्रवर के निकट सान्निध्य से मैने यह अनुभव किया कि स्वाध्याय आचार्यप्रवर की प्रेरणा का मुख्य विषय होने पर भी उन्होंने स्वाध्याय-सघ की गतिविधियो के सचालन मे कभी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही किया। चाहे क्षेत्रों की मागो का विषय हो, चाहे स्वाध्यायियों से सम्पर्क करना हो, स्वाध्यायियो के लिए आवश्यक साहित्य का प्रकाशन कराना हो अथवा स्वाध्यायी-शिविरो का आयोजन करना हो, आचार्यप्रवर ने कभी किसी प्रकार की प्रेरणा नही की। आचार्य प्रवर की इस प्रपचविहीनता के कारण स्वाध्याय-सघ का कार्य साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर सचालित हो सका। स्वाध्याय सघ की प्रवृत्ति की आवश्यकता और उपयोगिता का अनुभव करते हुए सारे जैन समाज ने इस प्रवृत्ति को अपनाया और एक - एक करके अनेक स्वाध्याय-सघ खुलते गए तथा स्वाध्याय-सघो की गूज सारे भारत मे फैल गई। नये स्वाध्याय-सघो मे स्वाध्याय-सघ गुलाबपुरा और स्वाध्याय सघ जोधपुर के अनुभवी स्वाध्यायियो को अपनी ओर खीचने की प्रवृत्ति बढ़ी। स्वाध्याय-सघ जोधपुर के अनेक अनुभवी स्वाध्यायी नये - नये स्वाध्याय-सघो मे जाने लगे, परन्तु आचार्यप्रवर ने कभी मुझसे यह नही कहा कि डोसी यह क्या हो रहा है? इसके विपरीत पीपाड़ के चातुर्मास मे एक बार स्वाध्यायी शिविर मे आचार्य श्री ने मुझे तथा सभी स्वाध्यायियो को यह नियम दिलाया कि किसी भी अन्य स्वाध्याय-सघ के स्वाध्यायी को इधर खीचने का प्रयास नही करे। हो सके उतनी पूर्ति नये स्वाध्यायी बनाकर ही करे। यह उस महापुरुष की निस्पृहता और उदारता का एक आदर्श क्रियात्मक रूप था।

श्रावण अथवा भाद्रपद माह दो होने पर कई क्षेत्रो मे द्वितीय श्रावण तथा कई क्षेत्रो मे भाद्रपद मे पर्युषण मनाने का प्रसग आया। तब स्वाध्याय-सघ द्वारा दोनो पर्युषणो मे स्वाध्यायी भेजे गए। इसी प्रकार कभी सवत्सरी को चतुर्थी अथवा पचमी का भेद हो जाता तो बिना किसी आग्रह के क्षेत्र विशेष के श्रावक सघ की भावना के अनुरूप चतुर्थी या पचमी को स्वाध्यायियो द्वारा सवत्सरी मनायी गयी। इस प्रकार के विवादास्पद विषयो मे नीति-निर्देश हम उसी महापुरुष की उदारता से लेने मे समर्थ हुए। स्वाध्यायियो के प्रति आचार्यप्रवर का सहज स्नेह था। वे उन्हे स्वाध्याय की प्रवृत्ति को अपनाने के साथ जीवन मे साधना को भी स्थान देने की प्रेरणा करते थे। स्वाध्याय की प्रवृति को असाम्प्रदायिक रीति से प्रमुखता देने के कारण आचार्य श्री स्वाध्याय के पर्यायवाची समझे जाने लगे। जब भी स्वाध्याय शब्द का उच्चारण सुना जाता, आचार्य श्री की छवि मस्तिष्क पर अकित हो जाती। सच्ची निस्पृहता एव उदारता के धनी उन आचार्यप्रवर को मेरा शत शत वन्दन।

—सगीता साड़ीज, डागा बाजार, जोधपुर

■

आश्चर्यों का आश्चर्य

• श्री कस्तूरचद सी बाफणा

जन्म से लेकर स्वर्गवास तक आचार्य हस्ती के जीवन पर दृष्टिपात करे तो लगता है आचार्यश्री का जीवन आश्चर्यों का आश्चर्य है। उनके मुखारविन्द से निकला हर शब्द, मत्र व उनके द्वारा किया गया हर काम चमत्कार है। दस साल की लघु वय मे पच महाव्रत धारण करना कम आश्चर्य की बात नही। सयम लेते ही शास्त्रीय ज्ञान हृदयगम कर तदनुसार अपने जीवन को ढालना 'समय गोयम मा पमायए' 'तवेसु वा उत्तम बभचेर' ये पक्तिया न केवल पढ़ी, सोची, समझी, बल्कि आजीवन इनका निरतिचार रूप से पालन किया। किसी भी अवस्था, यहा तक कि बीमारी अवस्था मे भी प्रमाद को पास मे नही आने दिया। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक बहुत ही व्यस्त व नियमित कार्यक्रम रहता था। कोई कितना ही बड़ा आदमी आता, तो भी अपने कार्यक्रम मे हेरफेर या ढिलाई कभी नही की। शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर उन्होने डिग्रियाँ नही ली, पर डिग्रियाँ प्राप्त करने के इच्छुक इनके पास आते थे ज्ञान-प्राप्ति के लिए। एक बार शेखेकाल भोपालगढ मे विराजते हुए व्याख्यान का विषय 'विनय' लिया, जिसका विवेचन निरतर पन्द्रह दिनो तक ऐसा किया कि विद्यालय के शिक्षक आश्चर्यचकित हो गए।

हिन्दी, सस्कृत व प्राकृत भाषा के प्रकाड विद्वान थे गुरुवर। पन्द्रह वर्ष की लघु अवस्था में गुरु द्वारा आचार्य मनोनीत होना व बीस वर्ष की अल्पायु मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होना विश्व कीर्तिमान था। इकसठ साल तक जिस कुशलता से सघ का सचालन किया अपने आप मे एक रेकार्ड है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियो मे सयम की मस्ती को बरकरार रखा। अपनी सयम साधना की तेजस्विता दिन-प्रतिदिन बढ़ाई। अनेको के जीवन को बनाकर उन्हे रज से रजत, ककर से शकर व पतित से पावन बनाया। कइयो के जीवन को बचाया।

वे परम्परा के प्रति बहुत निष्ठावान थे। पूर्वाचार्यो के प्रति अगाध श्रद्धा थी। मौन-साधना के प्रबल पक्षधर थे। फलस्वरूप उन्हे वचनसिद्धि प्राप्त थी। जीवन भर अल्पभोजी व अल्पभाषी रहे। कद छोटा, पर पद मोटा था। लघुता मे प्रभुता छिपी थी। अपने नाम का प्रदर्शन कभी नही किया उन्होने। हर भक्त गुणगान करता, पर अभिमान छू तक नही पाया। नर रत्नो के पारखी थे। किसमे कितनी व क्या योग्यता है, समझने मे देर नही लगती थी उन्हे।

उपकारी गुरुदेव – सन् १९८३-८४ की बात अकस्मात् मेरे पूरे परिवार पर भारी देवी प्रकोप । कपड़े फटना, दागीने व रुपये गायब हो जाना, भाइयो मे अनबन, घर मे पूरी अशाति का वातावरण। पुत्रवधू जो भी साड़ी पहनती, पहनते ही फट जाती। परिवार मे शाति व चैन का नाम नही। पागल सा हो गया था मै। शरीर मे जान होते हुए भी बेजान। सोचने समझने की शक्ति नही रही। मेरा पोता नया बच्चा, पहले दिन घर आते ही उसके गले मे से सोने की चैन गायब। उसके शरीर को काटा जा रहा है, बच्चा बे हिसाब रो रहा है। ऐसी स्थिति मे मुझ पर क्या बीती, मैं ही जानता हूँ।

सन् १९८५ का भोपालगढ़ मे चातुर्मास । घर मे चल रही अशाति से मैं व्यथित था। एक दिन मुनि श्री हीराचन्द्रजी 'वर्तमान आचार्य श्री' को अपनी कथा सुनायी। उन्होने कहा सकट मोचक के रहते क्यों भुगत रहे हो, आचार्य श्री से बात कर लो। दूसरे दिन सुबह आचार्य श्री एक कमरे मे स्वाध्याय कर रहे थे। हिम्मत नही हो रही थी उनके पास जाने की। कैसे जाऊँ ? क्या कहूँ? परोक्ष शक्ति आगे बढ़ने नही दे रही थी मुझे। बहुत साहस

जुटाकर कमरे का दरवाजा खोला। आचार्यश्री स्वाध्याय मे मगन थे। वदना अर्ज कर अत्यन्त दर्द के साथ बोला - गुरुदेव ! मैं बहुत कष्ट में हूँ आप मेरा कष्ट निवारण करें। कुछ नहीं बोलते हुए सिर्फ मेरे सामने देखा। मैं कमरे से बाहर निकल आया। मेरी अतरग व्यथा व कष्ट को जान गए थे। उसी दिन मेरे कष्ट निवारण की बात मन में ठानी। उन्होने क्या किया, मुझे कुछ नही मालूम, पर कष्ट निवारण कर दिया। वह देवी प्रकोप जिससे मैं दो साल से ज्यादा समय तक पीड़ित रहा, नानाविध उपायो से भी कुछ नही हो सका। ऐसा भयकर देवी प्रकोप साधनाशील व्यक्तित्व के प्रताप से ही शात हो सकता है। उन्होंने मुझे और मेरे परिवार को जीवनदान दिया। सचमुच इस जग का गरल पीने वाले महादेव थे वे। जन्म-जन्मो तक मै उनके उपकार के प्रति ऋणी रहूँगा।

अन्तर्मन के ज्ञाता – अतर्मन के भावों को जानने की अद्‌भुत क्षमता थी उनमे। आचार्यश्री भोपालगढ पधारे। करीब सप्ताह भर ठहरने के बाद एक दिन मुझे कहा कि कोसाना वालो को सदेश दे देना। मैंने सोचा कि कोसाना वालो को सदेश दे दिया तो वे लोग विनति कर आचार्यश्री को कोसाना जरूर लेकर जायेगे। अत सदेश न दूँगा तो वे लोग विनति हेतु नही आयेगे और आचार्यश्री भोपालगढ़ ज्यादा रुक सकेगे। यह बात मैंने किसी को नही बतलायी। दूसरे दिन सुबह दर्शन हेतु गया तो जाते ही आचार्यश्री ने कहा—भावनावश कोसानावालो को सन्देश नही दिया। घर का अफसर होता है तो ऊपर की फाइल नीचे और नीचे की फाइल ऊपर कर देता है। मुझे आश्चर्य लगा कि मेरे मन की भावना उन्होने कैसे जानी ?

कृपादृष्टि – विद्यालय के पदाधिकारियो के चुनाव की मीटिंग मे मुझे कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। मैंने सोचा, मुझे बिल्कुल अनुभव नही है। मैं यह काम कैसे सभाल पाऊगा ? जिम्मेदारी मिलने पर विपरीत परिस्थितियों मे भी कोषाध्यक्ष व मत्री के रूप मे पन्द्रह साल तक जो कार्य सेवा मुझसे हुई , मै आचार्यश्री की कृपा ही मानता हूँ। विद्यालय पर गुरुदेव की परम कृपा थी। आचार्यश्री फरमाते थे कि विद्यालय आदमी बनाने की मशीन है, उन्ही की कृपा के कारण अनेक उतार चढ़ाव आने के बावजूद यह विद्यालय सुदीर्घकाल से गतिमान है। गुरुदेव के जहाँ भी चरण पड़ जाते, वह स्थान धन्य हो जाता। जगल मे भी मगल हो जाता। टूटे दिल जुड़ जाते।

छोटी सी लेखनी की क्या ताकत कि असीम आत्मशक्ति के धारी गुरुदेव के गुणो को लेखनी बद्ध कर सके, जितना लिखा जाय थोड़ा है। क्योकि उनका हर शब्द मत्र व हर कार्य चमत्कार था।

—नयन तारा, सुभाष चौक, जलगाँव

■

तत्त्वज्ञाता महान् योगी : आचार्य श्री

• श्री ऋषभराज बाफणा

मनुष्याणा, सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धाना कश्चिन्मा वेत्ति तत्त्वत

हजारो मनुष्यो मे कोई ही मनुष्य प्रभु-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है । उन हजार-हजारो यत्न करने वाले योगियो मे से कोई ही तत्त्व प्राप्त करने मे सफल होता है।

इस श्लोक को पढ़कर मुझे एकदम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त की याद आ गई। वे लाखो मे अपनी तरह के एक ही महापुरुष थे, जिन्होने अपने मूल लक्ष्य को कभी भी विस्मृत नही किया।

मेरे पूज्य पिताजी श्री जालमचदजी सा को आचार्य भगवन्त के सान्निध्य के कई अवसर मिले। वे जैन रत्न विद्यालय के करीब २५ साल तक मत्री रहे। गाव के प्रतिकूल वातावरण के सबध मे कभी आचार्य भगवन्त की सेवा मे अर्ज करते तो फरमाते कि अपनी सेवा नि स्वार्थ होनी चाहिए, फिर कोई अगर गाली भी निकाले, हमे सहजता से सहेज लेना चाहिये। तभी हमे उस कार्य मे सफलता मिलती है।

पडितजी श्री दु खमोचन जी झा चातुर्मास के दौरान भोपालगढ़ विराजते। वे आचार्य श्री को पढ़ाया करते। शाम को प्राय बड़े पिताजी सा श्री जोगीदासजी, पिताजी सा श्री जालमचदजी पडितजी के पास अक्सर जाया करते। उस समय पडितजी सा फरमाते कि आचार्य श्री उनका (पडितजी का) आदरभाव रखते है तथा साथ मे यह भी कहते कि आचार्य श्री बहुत ही विलक्षण प्रतिभावान है।

अध्ययन मे आचार्य भगवन्त की अनन्य रुचि थी। सोते समय अगल-बगल मे छोटे-छोटे ककर रख कर सोते, करवट बदलते ही ककरो की चुभन से नीद खुल जाती और उठकर बैठ जाते व दिनभर मे जो पढ़ा उसको पुन-पुन याद करते। ऐसा पिताजी सा ने मुझे बताया।

भोपालगढ़ रत्नवश का एकछत्र क्षेत्र रहा है। उस समय भोपालगढ़ मे अन्यान्य सम्प्रदायो के मुनिराजो के चातुर्मास होते रहते। आचार्य भगवन्त ने कभी-भी सम्प्रदायवाद का पोषण नही किया। सम्प्रदाय को वे आत्मोत्थान का एक साधन मानते। स्वय हमेशा गुणीजनो का आदर करते तथा हमे भी यही करने के लिये प्रोत्साहित करते। हमेशा यही फरमाते कि गुण के ग्राहक बनो, त्यागियो का हमेशा हृदय से आदर करो।

अखण्ड बाल-ब्रह्मचारी आत्म-साधना के धनी, उस नगरी के भूप जहाँ छाया-धूप नही होती, जिसने भेद विज्ञान से भवभव के बन्धन काट दिये, उस सत्पुरुष के लिये किसी के मन की बात जान लेना, किसी विशेष घटना की पूर्व सूचना मिल जाना, किसी के सकट का पूर्वाभास हो जाना मामूली बात थी।

पाली से विहार करके गुरुदेव थोड़े समय के लिये सोजत मे विराजे। एक रात फरमाया—"किसी ने कहा है कि समुद्र मे एक बूँद रहे तो क्या, नही रहे तो क्या । दूसरे दिन फिर फरमाया कि ऐसा रामकृष्ण परमहस ने कहा था। मेरे मन मे उस समय यही विचार कौंधा कि आचार्य भगवन्त 'मै' को 'है' मे विलीन करने का निश्चय कर रहे हैं। आगे जाकर यही विचार सथारे के रूप मे सार्थक हुआ।

सथारे के समय करीब एक महीना निमाज मे गुरुदेव के सान्निध्य मे बीता। सथारे के समय उनकी समाधि के बारे मे आचार्य देवनन्दी (छठी शताब्दी) द्वारा रचित श्लोक लिखता हुआ उस महान् आत्मा को आत्मभाव के शत-शत प्रणाम करता हुआ विराम लेता हूँ।

किमिद कीदृश कस्य कस्मात्क्वेत्यविशेषयन्
स्वदेहमपि नावैति योगी योगपगयण ॥

ध्यान मे लगा हुआ योगी यह क्या है ? कैसा है ? किसका है ? क्यो हैं ? कहाँ है ? इत्यादि विकल्पो को न करते हुए अपने शरीर को भी नही जानता।

क्या कैसा किसका, किसमे, कहा, यह आतम गम ।
तज विकल्प निज देह न जाने, योगी निज विश्राम ॥

–c/o सुदर्शन पल्सेज
H2MTDC, जलगांव

कैसे भूलूँ ?

• श्री जतनराज मेहता

युग मनीषी, तप पूत, अप्रमत्त, योगविभूति आप्तपुरुष, सघनायक, कुशल सचालक पूज्य गुरुदेव १००८ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा एक युग पुरुष थे। आपश्री के प्रथम दर्शन से ही मेरा मन आपके प्रति समर्पित हो गया। अन्तर का तार एकाकार हो गया, झकृत हो गया। आपके आप्त वचनो से मेरी सूक्ष्म शक्तियाँ जागृत हो उठी।

विस २००८ से २०४८ तक मैं गुरुदेव की सेवा मे आता-जाता रहा । इस चालीस वर्ष की लम्बी जीवन-यात्रा मे आचार्य श्री के सान्निध्य मे बहुत सी विशेष घटनाएँ घटी। उनमे से कुछ घटनाओ को सस्मरण के झरोखे से लिखने का प्रयास किया है।

आचार्य श्री के जीवन का प्रत्येक क्षण ही सस्मरण था, फिर भी सिन्धु को बिन्दु मे दर्शाने का प्रयत्न किया गया है। कही कुछ गलती हो तो सुज्ञ पाठक क्षमा करे।

• प्रभु-भक्ति मे तल्लीनता

प्रभु को प्राप्त करने की पगडडी जो गुरुदेव के पास थी, वैसी शक्ति विरल विभूतियो के पास होती है। आपका ब्रह्मवाद अद्‌भुत था। प्रभु के प्रति उन्मनी शक्ति आपकी प्रमुख विशेषता थी। पूज्य गुरुदेव के रोम-रोम मे ब्रह्म का भाव छाया रहता था। अत मन्द स्वर स्वरलहरी लेकर निकलता था। आप एक अद्‌भुत योगी थे। अनेक बार पूज्य गुरुदेव को (प्रभुभक्ति के) भावावेग का ज्वर चढ़ जाता। वह समय पूज्य गुरुदेव के प्रभु के सामीप्य का होता, और ऐसा आप श्री के जीवन मे अनेक बार हुआ। उस समय वे तन्द्रावत् हो जाते और किसी तरह का भान नही रहता। प्रभु मे खोए-खोए से पूज्य गुरुदेव मन ही मन हृदय मे प्रभु का अमृतपान करते रहते और यह स्थिति उनकी सहज ही हो जाती। नन्दी सूत्र गुणते-गुणते पूज्य गुरुदेव की स्थिति योगमय हो जाती और उस समय पूज्य गुरुदेव प्रभु के साथ एकमेक हो जाते।

प्रभु के साथ आत्मा की ऊर्जस्विता और अन्तश्चेतना के स्वरो के साथ तदाकार हो जाना, पूज्य गुरुदेव के दैनिक जीवन मे प्राय होता रहता था। जब कभी एकान्त मे प्रभु का ध्यान करते तब उनकी स्थिति और भी अधिक चिन्मय हो उठती। पूज्य गुरुदेव को एकान्त बहुत प्रिय था। अत पूज्य गुरुदेव कृष्णा १० का मौन अखण्ड करते एव नगर के बाहर किसी एकान्त स्थान मे पधार जाते। मेड़ता मे अनेक बार पूज्य गुरुदेव एकान्त स्थल मे पधारे।

प्राय सुबह साढे आठ बजे तक मौन सदैव रहता। सुबह साढ़े चार बजे उठकर साढ़े आठ बजे तक पूज्य गुरुदेव की अन्त.प्रभु-भक्ति चलती और उनकी वाणी व्याख्यान मे गहन गूढ और अध्यात्ममयी हो उठती। वाणी का प्रत्येक शब्द रस से सराबोर होता और श्रोता के अन्तर्हृदय मे चोट करता।

उनके विराट् वैभव, उनके अन्तर्हृदय की प्रभु-भक्ति के सौन्दर्य को देखकर एक मुस्लिम मेड़ता मे प्रभु-भक्ति से ओतप्रोत वाणी को सुनकर भाव विभोर हो उठा और निज का भान ही भूल बैठा। प्रभु के प्रति पूज्य गुरुदेव की भक्ति इतनी गहरी थी कि वे निर्गुणमार्गी होते हुए भी कभी-कभी भावविह्वल होकर सगुण भक्त की तरह परिलक्षित होते।

चमत्कार तो आपके जीवन का नगण्य रूप था। यह तो साधक के जीवन मे स्वत घटित होता है। आपके अन्तर्हृदय मे प्रभु-भक्ति के तेज का एक ऐसा अद्भुत परिमण्डल बन चुका था, जिससे प्रत्येक व्यक्ति पूज्य गुरुदेव से, उनके मुखमण्डल से, उनकी वाणी से प्रभावित हो उठता था।

ब्यावर मे एक बार पूज्य गुरुदेव जब शकरलालजी मुणोत की बगीची मे विराज रहे थे तब आप श्री के भीतर प्रभु-भक्ति का ऐसा भावावेग उमड़ा कि वह शरीर की समस्त रोमराजि से फूट-फूट कर निकलना चाह रहा था। साधक की जब ऐसी स्थिति होती है तब वह साधक के शरीर की सीमाओ को लाघ जाती है। क्वचित् कदाचित् जिसकी प्रतिक्रिया मे शरीर का भी तापमान बढ़ जाता है और ऐसा ही वहाँ हुआ।

पूज्य गुरुदेव को मैने बाल्यकाल से देखा तब से ही साधना की उत्कृष्ट स्थिति मे पाया। प्रथम बार जब गुरुदेव के दर्शन हुए तब गुरुदेव योग का आसन लगाये हुये प्रभु में तल्लीन थे। मेरे भावुक मन पर प्रथम दृष्ट्या जो प्रभाव पड़ा वह आज भी चिर स्थायी है। फिर तो मजीठ के रग की तरह पूज्य गुरुदेव का स्नेह, प्रेम, वात्सल्य इतनी प्रचुर मात्रा मे मिला कि मेरा जीवन धन्य हो उठा। पूज्य गुरुदेव की प्रभु-भक्ति का वर्णन नही किया जा सकता। मेरे पास भाव है, पर भाषा नही।

पूज्य गुरुदेव अतुलित शक्ति के भण्डार थे। अनन्त वैभव के प्रतीक थे। वे आखिरी अवस्था मे अनन्त के साथ लौ लगाकर अन्तर्ध्यान हो गये।

पूज्य गुरुदेव की अनन्त शक्ति युक्त आत्मा को मेरे अनन्त वन्दन।

• भय भजनहारी गुरुवर

मेड़ता शहर मे श्रीमालो के मौहल्ले मे एक प्राचीन उपाश्रय है। इस उपाश्रय की अनोखी विशेषता यह है कि यहाँ पर अधिष्ठायक देव मणिभद्रजी की चमत्कारिक प्रतिमा विराजमान है। वि स २००८ मे पूज्यप्रवर हस्तीमल जी म सा का चातुर्मास इसी उपाश्रय मे हुआ। इस चातुर्मास से मेड़ता के समग्र जैन समाज मे एक नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ।

इस चातुर्मास की एक घटना मेरे ही नही अपितु मेड़ता के सभी वरिष्ठ श्रावको के मस्तिष्क पटल पर आज तक जीवत है। सवत्सरी का दिन था, गुरुदेव की मगलमयी प्रेरणा से लगभग ३०० श्रावको ने पौषध व्रत किये। रात्रि मे जब सारे श्रावक सो चुके थे, तब मै और श्रीउदयराज सा सुराणा ज्ञानचर्चारत थे। रात्रि के ठीक बारह बजे मणिभद्र जी का उपद्रव हुआ। अचानक उपासरे की जमीन हिलने लगी। एक साथ सभी लोगो के मुख से चीत्कार निकली, हड़कम्प मच गया, लोग इधर-उधर भागने लगे। कुछ लोग नीचे चौक मे एकत्रित हो गये। इस समय आचार्यप्रवर ध्यान-मग्न थे। हो हल्ला सुनकर गुरुदेव नीचे पधारे और भयभीत लोगो को शान्त किया। मागलिक श्रवण करते ही शान्ति हो गई। श्रावको की भय-बाधा दूर हो गई सभी को लगा कि विघ्न टल गया है।

• वचनसिद्धि

महापुरुषो के मुख से सहजता मे उच्चरित बाते भी भविष्य मे अक्षरश सत्य होती है। महापुरुषों के इस गुण को वचनसिद्धि कहते हैं। ऐसे कई प्रसगो का दर्शन लाभ मुझे मिला जो गुरुदेव की वचनसिद्धता के पुष्ट प्रमाण है। एक प्रसग का उल्लेख कर रहा हूँ।

श्री उम्मेदनाथ जी भडारी, मेड़ता नगरपालिका के चुनाव मे विजयी हुए और अध्यक्ष पद के लिए प्रयास करने लगे। उस समय दो महिला प्रत्याशियो का मनोनयन सरकार की ओर से होता था, अत श्री भडारी जी अपने पक्ष की दो महिला प्रत्याशियों के नाम लाने के लिए मेड़ता से जयपुर रवाना हुए। बस मे उनकी मुलाकात जोधपुर के एक सज्जन से हुई जो किशनगढ़ गुरुदेव के दर्शनार्थ जा रहे थे। उन्होने श्री भडारी जी से आग्रह किया कि आप भी गुरुदेव के दर्शन करके जयपुर निकल जाना, श्री भडारी जी ने उनका आग्रह स्वीकार किया और किशनगढ़ उतर गये।

गुरुदेव को वदना करने के पश्चात् उक्त सज्जन ने भडारी जी का परिचय करवाकर उनके जयपुर जाने का प्रयोजन भी बतलाया। तब गुरुदेव के श्री मुख से सहज मे उच्चरित हुआ—"तेरा काम तो हो गया।"

श्री भडारी जी को जयपुर पहुचने पर बहुत ही आश्चर्य हुआ, क्योकि जिन दो महिलाओ के नाम वे पार्षद के लिये लाने जा रहे थे उनका मनोनयन तो श्री भडारीजी के पक्ष मे पहले से ही हो चुका था।

श्री भडारी जी हमेशा के लिये गुरुदेव के भक्त बन गये।

- नवो जुनो मत करीजै

श्री पारसमल जी सा सुराणा नागौर वाले गुरुदेव के दर्शनार्थ जोधपुर पधारे हुए थे। अचानक घर से तार आया कि माँ बीमार है, जल्दी आओ। तार पढ़कर सुराणा सा बैचेन हो गये व आचार्य श्री की सेवा मे मागलिक लेने उपस्थित हुए और सारा वृत्तात गुरुदेव को बताया। गुरुदेव श्री ने सारी बात सुनकर मुस्कराते हुए मागलिक फरमा दी और जाते जाते कहा कि कोई नवो जुनो मत करीजै।

रास्ते भर पारसमल जी इसी उधेड़बुन मे लगे रहे कि "कोई नवो जुनो मत करीजै" का क्या तात्पर्य हो सकता है? कुछ समझ मे नही आया। घर आकर देखा तो माँ तो स्वस्थ, किन्तु पत्नी अस्वस्थ थी। स्मरण रहे कि पुराने समय मे पत्नी के बीमार होने पर बेटे को बुलाना होता तो पत्नी की बीमारी नही लिखकर मा की बीमारी लिखी जाती थी।

श्री पारसमलजी ने पत्नी की सार सभाल की और दो चार दिन बाद ही पत्नी का देहात हो गया। शोक बैठक का आयोजन किया गया। आठवे नवे दिन ही बीकानेर से कोई सज्जन अपनी लड़की का रिश्ता लेकर आया तब उन्हें आचार्यश्री द्वारा कही बात का गूढार्थ समझ में आया।

उन्होने मन ही मन आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का निर्णय ले लिया।

- रूहानी बोल

जाति ना पूछिये संत की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान॥

किसी कवि का यह दोहा एकदम सत्य है। विसवत् २०२७ के मेड़ता चातुर्मास मे प्रतिदिन गुरुदेव के श्रीमुख से प्रवचनो की अमृत वृष्टि हो रही थी। श्रोताओ से सभागार खचाखच भर जाता था। मुस्लिम बधु नसीर भाई और कारी साहब प्रवचन मे आने से एक दिन भी नही चूकते।

एक दिन कारी साहब गुरुदेव की अलौकिक वाणी से इतने भाव विभोर हो गये कि गश खाकर (बेहोश

होकर) गिर पड़े। फिर तुरत ही सभले और आचार्य श्री के चरणों में मस्तक झुकाकर बोले, "ऐसी अद्भुत वाणी, ये रूहानी बोल तो मैंने जीवन मे कभी नही सुने।"

सच ही तो है महापुरुष किसी एक सम्प्रदाय एवं धर्म से प्रतिबधित नही होते हैं। सम्पूर्ण विश्व के प्राणी ही नही, अपितु प्रकृति भी उनकी पुजारी होती है। आप्त पुरुषों की वाणी विश्व के प्राणिमात्र के उत्थान के लिए होती है।

• मीणा लोगो की भक्ति

सवाईमाधोपुर क्षेत्र मे विचरण करते हुए आचार्यप्रवर अलीनगर नामक गाव में पहुचे, जहा २५ घर मीणा जाति के थे और वे सभी जैन धर्मावलम्बी थे। दोपहर मे रग बिरगे परिधानों मे गाव की महिलाए हाथो मे रेत की घडियाँ लेकर सामायिक करने आयी। आचार्य श्री ने उन्हे पानी कैसे छानना चाहिये, परिवार मे कैसे रहना चाहिये आदि बाते बतायी व धारणा के लिये पच्चक्खाण करवाये। गुरुदेव के सदुपदेशो से मीणा जाति के लोगो मे इतना परिवर्तन आ चुका था कि हमे लगा कि ये लोग सचमुच जैन ही है।

यहा से विहार कर दूसरे दिन आचार्य श्री उखलाना पहुचे। उखलाना ब्रजमोहन का गाव था, अत ब्रजमोहन ने आचार्य श्री के साथ चलने वाले सघ की बहुत ही आवभगत की। लगभग २००-३०० आदमियो का भोजन सत्कार किया। मीणा जाति का गुरुदेव के प्रति आदर-सत्कार देखते ही बनता था।

• जिनवाणी बन्द नही हुई

जिनवाणी मासिक पत्रिका की वार्षिक बैठक जयपुर मे हुई। जिनवाणी मे इस समय कोई फण्ड नही था व खर्च बहुत ही ज्यादा था। खर्चे की पूर्ति की व्यवस्था जब मीटिंग मे नही हो सकी तो पत्रिका को बन्द करने का प्रस्ताव रखा गया।

हम आचार्य श्री की सेवा में पहुचे और सारी बातें उनके समक्ष रखी। गुरुदेव ने मुझे नथमल जी हीरावत से मिलने का सकेत किया।

मैं हीरावत सा के पास गया तो उन्होने जिनवाणी का कार्य सम्हालना स्वीकार किया।

उस दिन से आदरणीय श्री हीरावत जी हमेशा के लिये जिनवाणी एव सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल आदि सस्थाओ से जुड़ गये। यह था गुरुदेव का अलौकिक प्रभाव।

• वह अविस्मरणीय रात्रि

महाराष्ट्र मे विचरण करते समय विहार मे गुरुदेव के साथ था। एक गाव मे जहा एक भी जैन घर नही था, गुरुदेव एक माहेश्वरी सज्जन के घर मे विराजे । वहा काफी दर्शनार्थी आये, उनकी भोजन-व्यवस्था भी उन्ही सज्जन ने बड़ी ही आत्मीयता के साथ की। शाम को गुरुदेव ने उस गाव से विहार कर दिया। पाच सात किलोमीटर चलने पर जब दिन थोडा ही रह गया था तब गुरुदेव सभी सतो के साथ एक वट वृक्ष के नीचे विराज गये। सभीं सतों ने अपनी अपनी शय्याए बिछाली।

मैंने भी अपना बिस्तर लगा लिया। प्रतिक्रमण के बाद का समय ज्ञान-चर्चा मे गुजरा। यह मेरा पहला अवसर था जब सन्तो को मैंने वट वृक्ष के नीचे रात्रि शयन करते देखा और स्वय ने भी रात्रि शयन वट वृक्ष के नीचे

किया।

आज भी जब स्मृतियों के धवल पृष्ठो को पलटता हूँ तो असीम आनद की अनुभूति होती है।

• मुनि श्री कातिसागर जी से साक्षात्कार

अहमदाबाद चातुर्मास मे जैन धर्म के मौलिक इतिहास के लेखन का कार्य गुरुदेव कर रहे थे। उन्ही दिनो इतिहास से सबंधित सामग्री लाने हेतु प शशिकात जी झा के साथ मै मुनि श्री कान्तिसागर जी के पास उदयपुर गया। मुनि श्री कान्तिसागर जी का गौरवर्ण, भव्य ललाट, धवल केश राशि, विशाल वक्ष-स्थल, देदीप्यमान व्यक्तित्व, किसी भी व्यक्ति को एकाएक आकर्षित कर लेता था, मुनि श्री की धाराप्रवाह सस्कृत एव उनके पाण्डित्य से ऐसा लगता था, मानो उनकी जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती विराजमान हो।

गुरुदेव का सदेश सुनकर मुनि श्री कातिसागर जी भाव विभोर हो गये । सम्प्रदायवाद से परे हटकर गुरुदेव के ज्ञान और क्रिया के प्रति अपने उच्चतम भाव प्रकट किये।

यह तीन दिनों का प्रवास बहुत ही सार्थक रहा। हमारे लौटने के कुछ दिनो बाद मुनि श्री ने लगभग १००० पृष्ठो की सामग्री आचार्य श्री की सेवा मे भेजी।

आचार्य श्री ने सारी सामग्री के अवलोकन के पश्चात् मै पुन मुनि श्री की सेवा मे गया। उस समय मुनि श्री उदयपुर महाराणा के निवेदन पर एकलिंगजी मे विराज रहे थे। एकलिंगजी मे उनके साथ मे तीन दिनो तक रहा। इन तीन दिनो मे मुनि श्री ने मुझ पर असीम स्नेह उडेला । आचार्य श्री के ज्ञान एव क्रिया पक्ष की बार बार प्रशसा करते थे। ये तीन दिन मेरे जीवन के स्वर्णिम दिनो मे थे।

• भक्त का समर्पण

पुरातत्त्व की वस्तुओ का व्यापार करने वाला एक सज्जन गुरुदेव की सेवा मे बोरिया भरकर प्राचीन ग्रथ लाया और गुरुदेव से निवेदन किया कि जो ग्रन्थ आपको पसद हो रख लिरावे।

गुरुदेव ने ढेर सारे ग्रथो मे से उपयोगी ग्रथ छॉटने का कार्य मुझे सौपा। गुरुदेव के सकेत के अनुसार मैने बहुत से उपयोगी ग्रथ अलग निकाले। उस व्यक्ति ने सारे ग्रथ बिना मूल्य लिये भेट करने की इच्छा प्रकट की। इन ग्रथो को जोधपुर के सिंहपोल मे स्थित श्री जैनरत्न पुस्तकालय मे भिजवा दिया गया।

उस अजैन व्यक्ति की गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति देखकर मै आश्चर्य चकित रह गया।

• दाढी वाला बाबा

२०२७ के मेड़ता चातुर्मास मे गुरुदेव के साथ तीन वैरागी बालक थे। उनमे अशोक नाम का वैरागी बालक बहुत ही मेधावी था। अशोक के माता-पिता झगड़े की नीयत से मेड़ता आये हुये थे। श्रावक वर्ग को इस बात की भनक लगी तो सतर्क हो गए।

श्री चम्पालाल जी कोठारी ने गुरुदेव से निवेदन किया कि मै आपके कमरे के बाहर सोना चाहता हूँ। गुरुदेव ने सहज स्वीकृति दे दी । रात को दो बजे के आसपास गुरुदेव के कमरे में तेज प्रकाश हुआ जिसे देखकर चम्पालालजी घबरा गए और उत्सुकता वश कमरे के अन्दर झॉका तो पाया कि एक दाढ़ी वाला बाबा गुरुदेव के

चरण दबा रहा था और फिर वह बाबा यकायक अदृश्य भी हो गया । कोठारी जी बुरी तरह भयभीत हो गए। उन्होंने हड़बड़ाते हुए गुरुदेव से पूछा , यह सब क्या था ? गुरुदेव ने प्रतिप्रश्न करते हुए पूछा, 'तू डरा तो नही ?'

चम्पालाल जी आज भी उस घटना को याद करते हैं तो समझ नही पाते है कि वह सब क्या था।

महापुरुषो की अलौकिकता की थाह कोई नहीं ले सकता है।

• प्रेरणा का कमाल

मै गुरुदेव के दर्शनार्थ मेड़ता से अहमदाबाद जा रहा था । जोधपुर रेलवे स्टेशन पर एक सज्जन ब्रिटिश कोट व साफा पहने हुए दिखे। यही सज्जन पुन मारवाड़ जक्शन मे भी दिखाई दिये।

जब मैं अहमदाबाद पहुचा तो मेरे से पहले ही वे सज्जन गुरुदेव के समक्ष करबद्ध खड़े दिखाई दिये। बाद में मालूम हुआ कि ये सज्जन जोधपुर रियासत की प्रसिद्ध हस्ती श्री भोपालचद सा लोढ़ा है।

गुरुदेव ने आपको वृद्धावस्था मे भी सामायिक सीखने की प्रेरणा दी। आपने गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए चार दिन अहमदाबाद मे ही रुककर सामायिक कंठस्थ की। इतनी वृद्धावस्था मे भी आपके सामायिक सीख लेने पर मुझे आश्चर्य हुआ।

वास्तव में यह प्रेरणा का कमाल था।

• दाराशिकोह का फरमान

आचार्य श्री मेड़ता विराज रहे थे। एक दिन कोई सज्जन शाहजादा दाराशिकोह का हस्ताक्षरित फरमान लेकर आया, जिसमे लोकागच्छ के साधुओ की सुरक्षा एव उन्हे किसी प्रकार की तकलीफ न दिये जाने का आदेश था। यह प्राचीन फरमान इतिहास की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण था ही , धर्म-सहिष्णुता का भी परिचायक था।

पीपाड़ से पधारे कोठारी परिवार ने उस व्यक्ति से मुँह मागी कीमत देकर यह फरमान खरीद लिया। यह फरमान आज भी विनयचद जैन ज्ञान भडार मे सुरक्षित है जिसकी फोटोप्रति मेरे पास विद्यमान है।

• श्रुतिलेखन

आचार्यप्रवर मेड़ता विराज रहे थे। रात्रि मे लगभग १० बजे सभी श्रावको के चले जाने के बाद आचार्य प्रवर ने फरमाया "स्फुरणा आ रही है तू अधेरे मे लिख सकेगा क्या ? मै तुरत हामी भरते हुए कागज कलम लेकर लिखने बैठ गया।

उस निविड़ अधकार मे लिखने से कोई अक्षर ऊपर जाता तो कोई नीचे, पक्तिया टेढ़ी मेढ़ी हो जाती। इसी तरह लगभग कई पृष्ठ गुरुदेव ने लिखवाए। यह क्रम ४-५ दिन चलता रहा। रात्रि मे पृष्ठ लिखना, सुबह तैयार करके गुरुदेव के चरणो मे प्रस्तुत करना होता था।

यह गुरुदेव की ही कृपा दृष्टि थी, जिससे मेरे अन्तर्मन मे एक दिव्य चेतना का प्रस्फुटन हुआ और यह कार्य सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आज भी वे पृष्ठ मेरे पास सुरक्षित हैं। जब कभी उन्हें देखता हूँ तो आनद की अनुभूति होती है।

• नही तो लोढ़ा जी विदेश चले जाते

आचार्यप्रवर श्रेष्ठ विद्वानो पण्डितो को समाज से जोड़ने मे उत्सुक रहते थे। श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा एक ऐसे ही विद्वान है जिन्होंने जैन सिद्धान्त शाला जयपुर को सचालित कर जैन समाज को डॉ धर्मचन्द जैन जैसे कई रत्न प्रदान किये।

मैं श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा से मिलने केकड़ी गया। जब मैंने गुरुदेव की भावना से उनको अवगत कराया तो वे तुरत ही अपनी सेवाएँ देने के लिए तैयार हो गए।

उल्लेखनीय है कि लोढ़ा जी को इस समय यदि नही बुलाया जाता तो वे सुशील मुनि जी के साथ विदेश चले गए होते । आचार्य भगवत की सूझबूझ थी कि उन्होने ऐसे तत्त्वचिंतक विद्वान् को सघ से जोड़ा। यह तो एक उदाहरण हैं। उन्होने इस तरह अनेक योग्य लोगो को जोड़ा।

• सत-सेवा का परिणाम

स्व श्री पारसमल जी कोठारी २००८ के मेड़ता चातुर्मास मे सघ-मत्री थे। एक दिन दोपहर मे कोठारी सा भोजनादि कार्यों से निवृत्त होकर आचार्य श्री की सेवा मे उपस्थित हुए। गुरुदेव ने आपको फरमाया कि भाई पारसमल पत्र लिखने है। यद्यपि कोठारी सा को दुकान जाना था, फिर भी आप गुरुदेव का आदेश सुनकर पत्र लिखने बैठ गये। पत्र लिखते-लिखते शाम के चार बज गये। पत्र डाक मे डालकर जब वे बाजार मे पहुचे तो बाजार मे लगभग सन्नाटा छा चुका था । ग्राहको की कोई चहल पहल नही थी। सकल्प विकल्प करते हुए कोठारी सा दुकान पर पहुचे ही थे कि कुछ ही देर मे एक ग्राहक आया और लगभग १५००-२००० रुपयो का सामान खरीद कर ले गया। उस समय यह राशि बहुत बड़ी हुआ करती थी। उस दिन से पारसमल जी की यह धारणा बन गई कि भाग्य मे लिखा हुआ कही जाता नही, फिर क्यो सन्त-सेवा से वचित रहा जाय। कोठारी सा ने अपना जीवन सघ और समाज के लिये अर्पित कर दिया।

• सरकारी पत्र नही आएगा

एक बार कोर्ट कचहरी और सरकारी पत्रो के चक्कर मे दीर्घावधि तक गुरुदेव के दर्शन नही किये।

समय मिलने पर गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुचा तो गुरुदेव ने सहजता से पूछा "जतनजी क्या बात है, इस बार तो बहुत दिनों बाद दया पाली।" मैंने अपनी व्यस्तता का कारण पूज्य गुरुदेव के समक्ष जाहिर किया। गुरुदेव के श्रीमुख से प्रस्फुटित हुआ "अब कोई सरकारी पत्र नही आएगा"

गुरुदेव का वचन सिद्ध हुआ और इसके बाद मुझे कोई सरकारी पत्र प्राप्त नही हुआ। मेरे कोर्ट कचहरी के चक्कर भी बद हो गए।

• आगे लारे ई जावाला

मेरे पिताजी श्री प्रेमराज जी मेहता की आचार्य श्री के प्रति अगाध श्रद्धा और अटूट भक्ति थी। एक बार पिताजी अत्यधिक अस्वस्थ हो गए तब गुरुदेव मेड़ता ही विराजमान थे। मैंने गुरुदेव को घर पधारकर मागलिक श्रवण करवाने का निवेदन किया तो गुरुदेव ने मेरी भावभीनी विनती को स्वीकार किया और घर पधारे।

करुणा के सागर, भक्तो के भगवान को अपने समक्ष समुपस्थित पाकर पिताजी ने लेटे हुए ही गुरुदेव को वदना की और अश्रु भरी आँखो से निहारते हुए निवेदन किया "गुरुदेव ! अब अत समय निकट जान पड़ता है, आप मुझे सथारा करवा दीजिये।"

यह सुनकर गुरुदेव के मुखाग्र से जो शब्द प्रस्फुटित हुए वे हम सबके लिए आनदकारी और आश्चर्यजनक थे।

गुरुदेव ने फरमाया "भोलिया जीव तू क्यु परवाह करे, आपा तो आगे लारे ई जावाला"। इन शब्दो ने दिव्य औषधि का कार्य किया। पिताजी शनै शनै स्वस्थ हो गए। यह बात पिताजी के स्वर्गवास के लगभग १५ वर्ष पूर्व की थी।

काल-चक्र चलता रहा, आखिर २१ अप्रेल १९९१ को परमपूज्य गुरुदेव देवलोक पधारे, दूसरे ही दिन पिताजी ने अपनी क्षीण देह त्याग दी।

विधि की विचित्रता देखिए कि दोनो की अतिम यात्रा एक ही दिन निकली।

• गुरुदेव का अतिशय

आचार्य श्री एक बार मेड़ता विराज रहे थे। तत्कालीन उप जिलाधीश श्री महावीर प्रसादजी शर्मा मेरे मित्र थे। मैने उन्हे निवेदन किया कि आचार्य श्री भारत की एक विभूति हैं व मेडता पधारे हुए है, आप उनके दर्शन करें। उन्होने तुरत स्वीकृति दी और कहा–"कब चलना है ?" मैंने उन्हे ४ बजे का समय दिया।

ठीक समय पर हम आचार्य श्री की सेवा मे पहुचे। मैंने उप जिलाधीश महोदय का परिचय कराया। आचार्य श्री ने उन्हे उपदेश दिया –"अधिकार पाया है तो सबकी भलाई करो, परोपकार करो, घट मे दया रखो हिंसा का परित्याग करो। " यह उपदेश देते हुए आचार्य श्री ने फरमाया-"यही बात मैंने दामोदर को कही है"- (स्मरणीय है उस समय आचार्य दामोदरजी हमारे नागौर जिले के विधायक थे।) यह सब बात हो ही रही थी कि इतने मे विधायक दामोदर जी की कार स्थानक के सामने रुकी और दामोदरजी को आते देख कर उप जिलाधीश महोदय अवाक् रह गये। उपस्थित सभी लोग यह देखकर आश्चर्य चकित रह गये । यह था गुरुदेव का अतिशय ।

–मेड़ता सिटी, राजस्थान

■

आध्यात्मिक चुम्बकीय शक्ति के स्रोत

• श्री भवरलाल बोथरा

आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के दर्शनो का प्रथम सौभाग्य मुझे तब मिला जब आचार्य श्री सवत् २००१ के चातुर्मासार्थ जयपुर आ रहे थे। मैं उस समय अजमेर रोड़ पर भाकरोटा (जयपुर से १२ किमी) तक सामने गया था। उस दिन गुरुदेव आचार्य श्री की चरणरज अपने शीष क्या चढ़ाई, मानो जादू सा हो गया। चौबीसो घण्टे गुरुदेव के सान्निध्य में रहने का मन करने लगा। आचार्य श्री की मेरे पर बहुत कृपा थी। जयपुर के इस चातुर्मास मे मैं प्राय स्थानक मे ही रहता था। मात्र दोनों समय भोजन के लिए घर जाता था। प्रात एव सायकाल गुरुदेव के साथ ही जगल (फतहटीबा) जाता था। दोपहर मे गुरुदेव के द्वारा बताया गया लेखन कार्य करता था। ५६ वर्ष बीत जाने के बाद भी वह चातुर्मास मेरी आँखों के सामने चित्रित हो जाता है।

इसके पश्चात् मैं जहाँ कही भी गुरुदेव के दर्शनो हेतु गया, प्राय उनकी सेवा मे ही अधिकाश समय व्यतीत करता था। गुरुदेव के प्रति जो श्रद्धाभाव पैदा हुआ वह एकदम सहज था। इसमे पूर्व सस्कार कारण थे, या यह कोई जादू था, अथवा उनमे कोई अदृश्य शक्ति थी जो अपनी ओर खीचती थी।

आचार्य भगवन्त का विक्रम सवत् २०३० का वर्षावास जयपुर मे था। श्री खरतर गच्छ के सत श्री अस्थिर मुनि जी म.सा. का चातुर्मास भी जयपुर मे ही था। उनके श्रावको ने ३०० सामूहिक तेले का तप किया। तेले की तपस्या के दिन प्रत्याख्यान करने हेतु सभी भाई-बहन श्री अस्थिर मुनि जी म सा की अगुवाई मे आचार्य श्री के पास लालभवन मे आए। सभी तपस्वी श्रावक-श्राविकाओ को आचार्य श्री ने तेले की तपस्या का प्रत्याख्यान कराया। उस समय श्री अस्थिर मुनि जी आचार्य श्री के पाट के नीचे चरणो मे बिराजे। श्रावको ने पाट पर बैठने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा—"मेरी तो जगह यहाँ ही है।" दो सम्प्रदायो का पारस्परिक सौहार्द एव मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के द्वारा आचार्यश्री के प्रति आदरभावना का दृश्य देखने योग्य था। उस वर्षावास मे मासखमण व अठाई आदि तपस्याएँ बड़ी मात्रा मे हुई।

विक्रम सवत् २०३८ मे जयपुर नगर मे श्री प्रेममुनि जी म सा (आचार्य श्री नानालाल जी म.सा की परम्परा के सत) ठाणा ३ का चातुर्मास था। उन्होने व्याख्यान मे एक दिन फरमाया —"मैंने आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा के जब दर्शन किए तो उन्होंने मुझे देखकर कहा था तुम जल्दी ही श्रमण दीक्षा लोगे और मुझे आश्चर्य है कि मेरी दीक्षा जल्दी ही हो गई।"

जयपुर से कुछ लोग टोंक जिला के मालपुरा स्थित दादाबाड़ी मे दादागुरु के दर्शनार्थ गए हुए थे। वहा पर विराजित सतो ने आगन्तुको से पूछा कि आप लोग कहाँ से आए है? जवाब दिया-जयपुर से। जयपुर का नाम लेते ही वे सत कहने लगे 'चिंतामणि रत्न हाथ मे होते हुए भी इधर-उधर भटक रहे हो।' सतो का सकेत आचार्य श्री की ओर था। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म सा का वर्षावास उस समय जयपुर मे ही था। आचार्य श्री के चरणो मे पद्म का चिह्न अकित था। इसकी उन सतो को जानकारी थी। उन्होने कहा-जाकर आचार्य श्री के पैर में शीश झुकाओ और अपने भाग्य को सराहो।

अजमेर के अतिम वर्षावास के पश्चात् गुरुदेव जब जयपुर पधारे तब मोतीडूगरी रोड पर ललवानी जी के

बगले पर विराज रहे थे। उस समय मेरी दोहित्री बहुत बीमार थी। ३-४ दिन बच्चो के अस्पताल मे रहने के बाद भी स्वस्थ नही हो पाई तो हम घर ले आए। श्री दिग्विजय जी कोठारी ने कहा कि 'आप इसे गुरुदेव की मागलिक क्यो नही सुनवा देते।' दूसरे दिन प्रात काल गुरुदेव की सेवा मे ले गये। गुरुदेव ने ज्योही मागलिक सुनाई वैसे ही उसकी तबीयत ठीक होती चली गई। मागलिक मे जैसे कोई प्राणदायी शक्ति हो। डाक्टर की दवाओ ने जो काम नही किया वह मात्र एक मागलिक से हो गया।

इसी प्रकार की एक घटना और है। आचार्य श्री जयपुर मे ही श्री हीराचन्द जी हीरावत के आवास-स्थल पर विराज रहे थे। मेरे पौत्र पारसमल (सौरभ) की तबीयत अचानक खराब हो गई। गुरुदेव की सेवा मे पारसमल को लेकर आए। गुरुदेव ने मागलिक फरमाई। तुरन्त ही आराम हो गया। उसके बाद आज दिन तक उसकी तबीयत खराब नही हुई।

प्राचीन पत्रो का सूचीकरण करने के अलावा मेरे पास एक और कार्य रहा करता था। गुरुदेव के सान्निध्य में जहा कही भी दीक्षा का प्रसग होता वहाँ पर ओघा एव पूजनी बाधने का काम मेरे जिम्मे होता था। गुरुदेव ने मुझे जो भी कार्य सौंपा उसे सम्पन्न करने मे मुझे बहुत आनन्द आता था। गुरुदेव की कृपा से जिनवाणी पत्रिका के सचालन का कार्य भी सभाला था। मेरे प्रति गुरुदेव का विश्वास देखकर मुझमे आत्मबल का सचार होता था। गुरुदेव का स्मरण ही अब मेरा मार्गदर्शक है। उनका स्मरण कर प्रमोद का अनुभव होता है। (उल्लेखनीय ही परम भक्त श्रावक श्री बोथरा सा अब हमारे बीच नही रहे, उनकी भावनाएँ ही हमारी मार्गदर्शक है। —सम्पादक)

२४ जनवरी, १९९८

गली पुरन्दर जी, रामलालजी का रास्ता,
जयपुर (राज.)

■

आचार्य श्री व नारी जागरण

• श्रीमती सुशीला बोहरा

इस युग के महान् मनीषी, भक्तों के भगवान, ज्ञान के आराधक, क्षमा के धारक, शुद्ध चारित्र धर्म के अनन्य पुजारी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, शुद्ध सात्त्विक विचारो के धनी, सरल हृदय आचार्यप्रवर आज हमारे बीच नही हैं, लेकिन जो भी उनके सम्पर्क मे आया वह भूल नही पाया। वे शिशु के समान निष्कपट, निश्छल एव सरल थे, लेकिन दृढता हिमालय की तरह थी। एक बार जो निर्णय ले लेते उस पर अडिग रहते थे, उसके निर्वहन हेतु उन्हे कई कठिन परीषहों का सामना भी करना पड़ा, लेकिन चट्टान की तरह अकम्प एव अडोल रहे। यह व्यवहार उनके जीवन की अमूल्य निधि एव धर्म की अक्षुण्ण थाती बन गया।

महिलाओं के उत्थान हेतु वे विशेष जागृत थे। वे कहा करते थे कि महिला माँ बनकर बच्चो का पालन पोषण करती है और गुरु बनकर उनका मार्गदर्शन भी कर सकती है। गाधीजी ने भी कहा था कि माँ की गोद मे ५ वर्ष की आयु में बालक जो कुछ सीख लेता है उसे १०० अध्यापक मिलकर जिन्दगी भर नही सिखा सकते।

आचार्यप्रवर बहिनो को रूढ़ियों से ऊपर उठकर शुद्ध सात्त्विक जीवन-निर्माण की प्रेरणा देते थे। तपस्या मे उनके द्वारा किये जाने वाले आडम्बरो एव दिखावे का हमेशा विरोध करते थे। वे कहा करते थे कि तपश्चर्या करने वाली बहिनो को शास्त्र-श्रवण, स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि के द्वारा तप को सजाना चाहिये न कि पीहर के गहनों-कपड़ों की इच्छा या कामना से। इससे तपश्चर्या की शक्ति क्षीण होती है। महिमा, पूजा, सत्कार, कीर्ति, नामवरी अथवा प्रशसा पाने के लिये तपने वाला जीव अज्ञानी है। उन्ही के शब्दो मे -

ढोल ढमाके क्या रंग लायेगे,
तप के रंग के सामने॥

तप के साथ भजन-कीर्तन, प्रभुस्मरण, स्वाध्याय आदि तो सबसे ऊँचा किरमिची रग है। ऐसा तप ही आत्मसमाधि का कारण, मानसिक शाति एव कल्याण का हेतुभूत होता है।

आप जहा परम्परावादी महान् सतो की शृखला मे शीर्षस्थ थे, वही उच्चकोटि के विचारक भी रहे। आपने सदियों से जीवन निर्माण क्षेत्र मे पिछडी हुई मातृशक्ति को कार्य क्षेत्र मे उतरने का आह्वान किया।

सेवा एव धार्मिक कार्यों मे आगे आने की प्रेरणा मुझे भी गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी मसा से मिली। ३५ वर्ष पूर्व एम. ए पास बहिने बहुत कम थी। जब मैंने एम. ए किया तो उनका यही आशीर्वाद रहा कि तुम पढ़ी लिखी हो, तुम्हे आगे आकर अन्य बहिनो के लिये मार्ग प्रशस्त करना है। मुझ जैसी सकोची लड़की के लिये यह बात अनहोनी थी, लेकिन गुरुदेव की कृपा से सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र मे जो भी कार्य प्रारम्भ किया वह स्वत ही उत्तरोत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर होता गया। अन्तिम समय मे निमाज मे भी उनका यही आशीर्वाद रहा। गुरुदेव जब अस्वस्थ चल रहे थे तब मैं शारीरिक कारणो से दो माह गुरुदेव की सेवा मे नही जा सकी। मेरे पास समाचार आये कि गुरुदेव ने आपके बारे मे पृच्छा की है। मेरे धन्य भाग थे, मैं शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति मे भी एक दिन पहुँच गई। आचार्य श्री की बैठने की स्थिति नही थी अतएव लेटे हुए थे। जब मैं पहुँची तो वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज सा एव शुभ मुनिजी पास में विराज रहे थे। मुझे देखकर उन्होंने गुरुदेव से कहा आप सुशीला

जी के बारे में पृच्छा कर रहे थे, वे आई हैं। दो तीन सतों का सहारा लेकर वे उठे आशीर्वाद के लिये उनके हाथ ऊपर उठे और तीन दिन से मौन गुरुवर की वाणी मुखरित हुई। अच्छा तुम आ गई। उन्होंने मेरे निमाज पहुचने पर फरमाया - तुम जो सेवा का कार्य कर रही हो, उसे निरन्तर करते रहना, लेकिन सघ-सेवा भी बराबर करती रहना। मुझे आशीर्वाद स्वरूप मंगल पाठ प्रदान किया। मैं भाव विभोर हो गयी। मेरी आखों में आसू छलकने लगे। मैंने सोचा, ज्ञान की यह ज्योति अनन्त में विलीन होते समय भी अन्तिम हितोपदेश से हमारा मार्ग दर्शन कर रही है। कितना अपनापन उनकी वाणी और व्यवहार मे था। मुझ जैसे अकिंचन पर भी उनकी महती कृपा थी।

वे नारी स्वतत्रता के पक्षधर थे, स्वच्छन्दता के नही। नारी स्वतत्रता की ओट मे फैशनपरस्ती की दौड़ को नकारते हुए उन्होने कहा —

बहुत समय तक देह सजाया, घर-धंधा मे समय बिताया,
निन्दा विकथा छोड़ करो, सत्कर्म को जी।
धारो धारो री सौभागिन शील की चून्दड़ी जी॥

वे यदा-कदा फरमाया करते थे कि साधना के मार्ग मे स्त्री-पुरुष मे कोई भेद नही है। स्त्रियो की सख्या धर्म क्षेत्र मे सदैव पुरुषो से अधिक रही है। सभी कालों मे साधुओ की अपेक्षा साध्वियों की एव श्रावको की अपेक्षा श्राविकाओ की सख्या अधिक रही है। मोक्ष का द्वार खोलने वाली माता मरुदेवी भी स्त्री ही थी। इन्ही माताओं की गोद मे महान् पुरुषो का लालन-पालन होता है। लेकिन माता को पूज्या बनने हेतु विवेक का दीपक, ज्ञान का तेल, श्रद्धा की बाती और स्वाध्याय के घर्षण को उद्दीप्त करना होगा। इसलिये उन्होने सामायिक के साथ स्वाध्याय को महत्त्व दिया। उनका कहना था -

स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है, सद्ज्ञान बिना।
घर-घर गुरुवाणी गान करो स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो॥

अत एव आचार्य भगवन्त ने ज्ञान-पथ की पथिक, दर्शन की धारक, सामायिक की साधक, तप की आराधक शील की चून्दडी ओढ़ने वाली, संयममयी एव दया व दान की जड़त वाली जिस श्राविका रत्न की कल्पना की है वह युग-युगो तक हम बहनों के जीवन का आदर्श बनकर हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

जी-२१, शास्त्रीनगर, जोधपुर

■

सामायिक के महान् प्रेरक-आचार्यश्री

• श्री चुन्नीलाल ललवाणी

सवत् २०१६ मे आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी म सा का जब शिष्य मण्डली के साथ जयपुर मे प्रवेश हुआ तो आचार्य श्री ने सामायिक सदेश के रूप मे एक भजन दिया, जो सारे देश मे गूज उठा है, जिसमे जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा मिलती है—

जीवन उन्नत करना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो।
आकुलता मे बचना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो॥

मुझे यह भजन बहुत ही पसद आया। जहाँ भी मै जाता, इस भजन को हर जगह गाता रहता, बड़ा ही आनन्द आता। पहले 'ॐ शान्ति प्रभु जय शान्ति प्रभु' प्रार्थना बोलता, उसके बाद इस भजन को गाता। इसी मे मै भाव विभोर हो जाता।

कार्तिक शुक्ला पचमी (ज्ञान पचमी) को मैने आचार्य श्री से मागलिक मागी तो आचार्यश्री ने फरमाया कि क्या मागलिक कोई ऐसे ही मिलती है? नथमल जी हीरावत को नियम लेते देखकर मैंने आचार्य श्री से निवेदन किया कि मुझे भी ज्ञान पचमी का उपवास करा दीजिए। उस दिन गुरुदेव ने उपवास के साथ नियमित सामायिक करने तथा दयाव्रत का भी नियम करा दिया। ज्ञानपचमी का उपवास करते हुए लम्बा समय बीत गया है, इससे मुझे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सब प्रकार की शान्ति प्राप्त हुई है।

कार्तिक शुक्ला पचमी से पूनम तक सवत् २०१६ के जयपुर चातुर्मास मे ५००० सामायिक का लक्ष्य रखा गया, जो सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ। इससे मेरे मन मे सामायिक-सघ की स्थापना करने की भावना उत्पन्न हुई। चातुर्मास पूर्ण होने पर विहार के समय ११ व्यक्तियो ने ५ वर्ष तक स्थानक मे नियमित सामायिक करने का नियम लिया। इस तरह सामायिक सघ का प्रारम्भ हुआ। सामायिक सघ के सदस्यो के लिए कुछ नियम बनाए गये - सप्त-कुव्यसनो से दूर रहे, कूड़ा तौल माप न करे, वस्तु मे मिलावट न करे, स्थानक मे नियमित सामायिक करे, उसमे कम से कम २० मिनिट स्वाध्याय करे, हिसा-झूठ-चोरी आदि से दूर रहे। सैलाना चातुर्मास मे आचार्य श्री ने अखिल भारतीय जैन सामायिक सघ की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा वही पर प्रथम सामायिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसके पश्चात् जहाँ भी आचार्य श्री पधारे बालोतरा, बाड़मेर, भोपालगढ़, पीपाड़ आदि सर्वत्र सामायिक सघ का गठन हुआ। आचार्यप्रवर की कृपा से मै स्वाध्याय सघ से भी जुड़ा तथा पर्युषण मे जैतारण, बेतुल, मद्रास, सवाईमाधोपुर आदि स्थानो पर धर्माराधन हेतु गया। वहाँ दिनभर सामायिक साधना करने मे तथा सैकड़ो श्रावक-श्राविकाओ को सामायिक कराने मे मुझे आत्मानन्द का अनुभव हुआ। सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणा करते हुए गुरुदेव ने मुझसे कहा - "तू भारतीय बीमा निगम का दलाल है, इसलिए तू धर्म की दलाली भी अच्छी तरह से कर सकता है।" इससे मुझे सामायिक सघो की स्थापना करने की धुन लग गयी। मैंने लघु सर्वतोभद्र तप का आराधन भी किया।

यह तपस्या मैंने १ वर्ष आयम्बिल से तथा ६ वर्ष एकाशन तप से की और यह प्रतिज्ञा की कि जब तक १०० सामायिक सघ नहीं बनेगे तब तक मैं यह व्रत करता रहूँगा। मेरी भावना के अनुसार भीलवाड़ा, जैतारण, डबोक,

सैलाना, बेतुल, मद्रास, अहमदनगर, पाथर्डी, लातूर, लासल-गाँव, चालीस-गाँव, धूलिया, कोपर गाँव, औरगाबाद, शाजापुर, भोपाल, नागपुर, नागौर, लुधियाना, कुचेरा, गोगेलाव, किशनगढ़, मदनगज, अजमेर, कपासन, गगापुर, चित्तौड़, भादसोड़ा, नाथद्वारा, मालपुरा, केकड़ी, गुलाबपुरा, हुरड़ा, विजयनगर, मेड़तासिटी, उज्जैन, थादला, दुर्ग, भिलाई, जबलपुर, सोलापुर, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, श्यामपुरा, गगापुर, हिण्डौन, अलवर आदि अनेक स्थानो पर सामायिक सघ स्थापित हुए।

गाँव-गाँव में सामायिक सघ की स्थापना आचार्य श्री की भावना थी। मेरे विचार में यह तब ही सभव है जब प्रचारको का एक दल साहित्य तथा सामायिक के उपकरण साथ लेकर गाँव-गाँव मे जाये तथा सामायिक-साधना करके सामायिक-सघो को स्थिर करने की प्रेरणा करे।

भवानी सिंह मार्ग, क्रय-विक्रय सघ के सामने, जयपुर

कार्तिक सुदी पचमी, संवत् २०४०

■

भविष्यद्रष्टा व वचन-सिद्धि के योगी

• श्री पी एम चोरड़िया

आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा अल्पभाषी थे। वे गूढ़ से गूढ़ विषय का सार कुछ ही नपे तुले शब्दो मे प्रकट कर देते थे। भाषा समिति एव वाणी विवेक के प्रति विशेष जागरूक सत थे। उनकी वाणी ब्रह्मवाक्य हुआ करती थी। अपने विशिष्ट ज्ञान एव साधना के बल से उन्हे भविष्य की घटनाओ का ज्ञान हो जाता था। भविष्य के घटना-चित्र का उल्लेख वे अपनी प्रेरणाओं और उपदेश से भक्तो के समक्ष इस प्रकार करते, जिसका उन्हे अहसास भी नही होता था। मेरे जीवन मे भी ऐसे कई प्रसग आए, जब उन्होने प्रेरणा एव सम्यक् मार्गदर्शन देकर मुझे जागरूक बनाया। आपका आशीर्वाद पाकर मै धन्य हो गया । आज भी जब उन सबका चिन्तन करता हूँ, तो उस ज्योतिपुरुष एव अध्यात्मयोगी के प्रति श्रद्धा से सिर झुक जाता है। यहाँ पर कुछ सस्मरण प्रस्तुत है—

(१) सन् १९७९ मे आचार्य श्री का अजमेर मे चातुर्मास था। आप लाखन कोटड़ी स्थानक मे विराज रहे थे। इसी चातुर्मास मे मद्रास मे स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार हेतु एक स्वाध्याय समिति के गठन की चर्चा चली। उसके विधान का प्रारूप भी तैयार किया गया। कुछ समय पश्चात् मुझे आचार्यप्रवर के दर्शन करने हेतु अजमेर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन्त के समक्ष चर्चा करने पर उनके मुख से अनायास निकल पड़ा - वर्ष भर मे यह कार्य हो जायेगा। मैने कहा , गुरुदेव । इसे एक महीने मे ही पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। मद्रास आकर पूरा प्रयास किया, लेकिन कोई न कोई बाधा या अड़चन उपस्थित हो जाती। साल भर पूरा होने पर ही समिति का पजीकरण सम्भव हो सका।

(२) आचार्य श्री के मद्रास चातुर्मास का प्रसग था। मेरी धर्मपत्नी की तपस्या चल रही थी। प्रतिदिन आचार्य भगवन्त के मुखारविंद से ही पच्चक्खान लिये जाते थे। जिस दिन २० की तपस्या थी, उस दिन हमेशा की भाति सायकाल मैं आचार्य श्री की सेवा मे उपस्थित हुआ। मुझे देखकर आचार्य श्री ने सहज ही पूछा - "बहन की तपस्या कैसी चल रही है?" उस दिन पित्त एव उल्टी की शिकायत ज्यादा थी, अत मैने स्थिति बताई तथा अर्ज किया कि २१ उपवास कर पारणा के भाव है। आचार्य श्री कुछ समय तो मौन रहे, फिर बोले - "धैर्य रखो। गर्म पानी के उपयोग से पित्त की प्रकृति शात हो सकती है।" आचार्य श्री की कुछ समय की चुप्पी तथा प्रेरणापूर्वक सन्देश से मुझे ऐसा अहसास हुआ कि आचार्य श्री का हमारे चोरड़िया परिवार को आशीर्वाद प्राप्त है। जब मैंने श्रीमती जी को यह वार्तालाप सुनाया, तो उनका मनोबल जाग उठा और मासखमण की तपस्या करने का सकल्प कर लिया। वास्तव मे यह ३० दिन की तपस्या सुखसाता पूर्वक सम्पन्न हुई। यह सब आचार्य देव की कृपा का ही फल था।

—89, Audiappa Naicken Street,
Ist Floor CHENNAI - 600 079

■

दूरदर्शी थे आचार्य भगवन्त

• श्री अनराज बोथरा

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी मसा मे अनेक गुण थे। उनकी दूरदर्शिता के तीन सस्मरण स्मृति-पटल पर आ रहे हैं।

(१) आचार्यप्रवर पूज्य श्री नानालाल जी मसा ने अपने आज्ञानुवर्ती श्री प्रेम मुनि जी, श्री जितेश मुनि जी महाराज का वर्ष १९९० का चातुर्मास कोठारी भवन, सरदारपुरा, जोधपुर के लिए स्वीकृत किया था। आज्ञानुसार मुनिद्वय चातुर्मासार्थ सरदारपुरा पधारे। सरदारपुरा मे उन्हे आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी मसा. के न्यू पावर हाऊस के आसपास विराजने की जानकारी मिली तो मुनिद्वय दर्शन-वन्दन की भावना से न्यू पावर हाऊस रोड स्थित सुश्रावक श्री सम्पतराज जी बाफना की दाल मिल पधारे। विद्वद्वर्य श्री प्रेममुनि जी मसा ने दर्शन-वन्दन कर कहा कि गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी मसा ने हमारा चातुर्मास कोठारी भवन, सरदारपुरा फरमाया है। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने मुनि श्री की बात सुनकर सहज कहा - "ठीक है, आप पावटा क्षेत्र खुला रखना।" मुनिद्वय कुछ समय सेवा का लाभ प्राप्त कर मागलिक सुनकर विहार कर पुन कोठारी भवन लौटना चाह रहे थे, तब पुन आचार्य भगवन्त ने प्रेममुनि जी से कहा—"पावटा क्षेत्र का ध्यान रखना।"

मुनिद्वय मागलिक लेकर अपने स्थान लौट आए। जोधपुर उनके लिए नया क्षेत्र था। उन्होंने पावटा किधर है, श्रावको से पूछा और मन ही मन चिन्तन करने लगे कि आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने पावटा क्षेत्र खुला रखने की बात क्यो फरमाई है?

रात मे एकाएक तेज वर्षा से कोठारी भवन के प्राय सभी कमरो मे पानी भर गया। सवेरा हुआ। देखा हर कमरे मे पानी है। इस स्थान पर रहकर चातुर्मास सम्भव नही लगा। अभी चातुर्मासिक पक्खी मे समय है, विचार कर मुनिद्वय श्री उगमराज जी मेहता के साथ पावटा क्षेत्र देखने आये। पावटा मे धर्मनारायण जी के हत्थे मे वर्द्धमान भवन खाली है, श्रावको के आग्रह पर मुनिद्वय ने स्थान की उपयोगिता समझकर कोठारी भवन, सरदारपुरा के बजाय वर्द्धमान भवन, पावटा मे चातुर्मास किया।

श्रद्धेय श्री प्रेममुनि जी मसा ने पावटा मे प्रवचन सभा मे आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज की दूरदर्शिता बताते हुए कहा कि उस दिव्य-दिवाकर ने हमे समय पूर्व सावधान कर सयम-साधना के निर्वहन मे सम्बल दिया है, वह सदा स्मृति-पटल पर रहेगा।

(२) श्रद्धेय श्री प्रेममुनि जी मसा ने दीक्षा पूर्व के प्रसग को लेकर फरमाया कि आचार्य भगवन्त भोपाल पधारे तब पाच छ भक्त उनके विहार मे जा रहे थे, मै भी उन लोगो के साथ हो गया। सभी श्रावको ने आचार्य भगवन्त को वन्दन-नमन किया, मुझे देखकर आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से सहसा निकला कि तू यदि दीक्षा ले तो जिनशासन की अच्छी प्रभावना होगी। उस समय मैंने दीक्षा का कभी सोचा भी न था, परन्तु उसके कुछ वर्षों बाद मेरी भावना बनी और मैं आचार्य श्री नानेश के चरणों मे दीक्षित हुआ। आचार्य भगवन्त कितने दूरदर्शी साधक थे, जिन्होंने न तो मेरी कुण्डली देखी, न हाथ; लेकिन अपनी अनुभूति से जो फरमाया, आज वह सार्थक लग रहा है।

(३) सेठ मोतीलाल जी लोढ़ा मालेगाव (महाराष्ट्र) से जोधपुर आए हुए थे। आचार्य भगवन्त उस समय अजमेर विराजमान थे। दर्शन-वन्दन एव मागलिक-श्रवण की भावना से वे जोधपुर से नई कार लेकर अजमेर पहुँचे। उनका विचार अजमेर से कार द्वारा महाराष्ट्र जाने का था, अत अपने कार्यों से निवृत्त हो वे मागलिक श्रवण करने पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा मे उपस्थित हुए। वन्दन-नमन एव सुख-शाति पृच्छा कर लोढ़ा जी ने गुरुदेव से मागलिक देने का निवेदन किया।

आचार्य भगवन्त ने पूछा- "अभी कौनसी गाड़ी है?" श्री मोतीलाल जी लोढ़ा ने कहा-"बाबजी! हम कार से जा रहे हैं।" "इतनी दूर और कार से?"

ज्ञानी गुरु के मनोभाव भक्त जल्दी समझता है। मन ही मन सोचा, यह ठीक नही है, इसलिये आचार्य भगवन्त के मुंह से निकला 'इतनी दूर और कार से'। लोढ़ा जी ने अपना और अपने परिवार के सदस्यो का कार से जाना स्थगित कर ड्राइवर से कहा- "तुम कार लेकर जाओ, हम रेल से पहुच रहे हैं।"

मालिक की आज्ञानुसार ड्राइवर अजमेर से रवाना हुआ। कोई पन्द्रह किलोमीटर गाड़ी चली होगी कि अकस्मात् कार के इजन मे आग लग गई। नई गाड़ी का इजन जल-बल गया। कुछ समय बाद सेठजी को सूचना मिली कि कार मे अकस्मात् आग लग जाने से कार को नुकसान हुआ है और कार आगे बढ़ने की स्थिति मे नही हैं। एक क्षण मे उन्हे गुरुदेव के वे वचन ध्यान मे आए 'इतनी दूर और कार से'।

पूज्य आचार्य भगवन्त कितने दूरदर्शी थे, जिन्होने सकेत मात्र से सावधान भी कर दिया और कहने मे कही दोष भी नही लगाया। धन्य है पूज्य गुरुदेव की दूरदर्शिता को।

—दीवानो की हवेली, घासमण्डी, जोधपुर।

■

जिनके पावन दर्शन से पापों के पर्वत हिलते थे

• श्री ब्रजमोहन जैन (मीणा)

महान् श्रुतधर आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने गुर्जर नरेश कुमारपाल को शासन में जोड़ कर जिनधर्म का उद्योत किया। महान् तपस्वी श्री हीर विजय सूरि ने भारत सम्राट् अकबर का हृदय परिवर्तन कर उन्हें अहिंसक बनाया। महान् आचार्य शिव मुनि विष्णु कुमार आदि तप पूत तपस्वियों ने दुष्ट राजाओ की यातनाओ से सघ को मुक्त कराया, जिसका इतिहास साक्षी है। स्वर्णभूमि के महान् प्रभावक आचार्य कालक ने महाराज गर्दभिल्ल द्वारा अचानक किए अनाचार का विरोध कर गर्दभिल्ल को युद्ध मे परास्त कर साध्वी सरस्वती को उनसे मुक्त कराया एव जैन शासन की यशोगाथाएँ दिग् दिगन्त मे फैलाई।

उसी श्रुत परम्परा के तपपूत हमारे आराध्य आचार्य देव ने शासनसेवा मे जो किया, उसके आद्योपान्त वर्णन मे बुद्धि की अल्पता ही बाधक है। जिन शासन के प्रबल हितैषी ज्योतिर्धर आचार्यश्री की गुण गाथा को एक कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

धन्य जीवन है तुम्हारा दीप बनकर तुम जले हो।
विश्व का तम तोम हरने, ज्यो शमा की तुम ढले हो॥
अम्बर का सितारा कहूँ या धरती का रतन प्यारा कहूँ।
त्याग का नजारा कहूँ या डूबतो का सहारा कहूँ॥

गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. श्रेष्ठ श्रमण थे और उभय लोक हितकारी श्रमण -जीवन के साथ उत्कृष्ट तप एव ध्यान योग के उपासक, साधक एव मौनाभ्यासी थे।

आपने आचार्य -काल मे जैन सघ की उन्नति का शखनाद किया। सर्वप्रथम आपने धर्मप्रिय श्रावको मे ज्ञान का अभाव देखा और उपाय सोचा । फलस्वरूप स्वामीजी श्री पन्नालालजी म.सा के सहयोग से स्वाध्याय सघ की स्थापना की नीव रखी गई। फिर पर्वाधिराज पर्युषण मे धर्माराधना से वे क्षेत्र भी लाभान्वित होने लगे जहाँ सत-सती नही पहुँच पाते हैं। समाज मे ज्ञान का सम्बल मिलता रहे, एतदर्थ चिन्तन दिया। इस प्रकार 'जिनवाणी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

विद्वानो को एक मच पर लाने के लिये विद्वत् परिषद् की स्थापना एव नये विद्वान तैयार करने के लिये जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान का शुभारभ भी आपके सच्चिन्तन के फल रहे है।

आपको जैन इतिहास की कमी सदैव खटकती थी। अनेक ज्ञान भडारो का अवलोकन कर विपुल ऐतिहासिक साहित्य सामग्री का सर्जन किया एव जैन धर्म का मौलिक इतिहास जो चार भागो मे विभक्त है, की रचना की। इतिहास के ये भाग समाज की अमूल्य निधि है।

सरस्वती पुत्र, क्रियोद्धार परम्परा के रत्न, ज्ञान शिखर, धीर वीर गभीर, परोपकारी सन्त, साधना के सुमेरु, कठोर साधना योगी, जैन जगत के देदीप्यमान नक्षत्र, तात्त्विक व सात्त्विक , निर्भीक और निस्पृही, पर-दुःख मे नवनीत सी कोमलता, परन्तु व्रत-पालन में चट्टान सम कठोरता, सौम्य और गभीर श्रमण सस्कृति के गौरव, परम शान्त आत्मा, दूरदर्शी , भक्त वत्सल, स्वप्न द्रष्टा आचार्य श्री की यशोगाथाओं को शब्दो मे नही बाधा जा सकता। आप को

उपमित करने के लिये शब्दों की कमी है। आप अध्यात्म सूर्य थे। आप हर हालत मे प्रसन्नचित्त रहते थे।

आप अपनी साधु-मर्यादाओ के प्रति सदैव सचेत थे। मर्यादा का उल्लघन आपको पसन्द नहीं था।

मुझे सन् १९६९ के अन्त मे आपकी सेवा में पहुँचने का सौभाग्य श्री जतनराज जी सा मेहता, मेड़ता सिटी वालों के माध्यम से प्राप्त हुआ। जब मैं आपकी सेवा मे पहुँचा तो वहाँ उपस्थित श्रावको ने मेरी कृषि वेश भूषा देखकर व्यग किया। यह किसान लड़का क्या गुरुदेव की सेवा करेगा। पर भाई मेहता सा का निश्चय ही कहिए कि मैंने गुरुदेव की सेवा मे लगभग २० वर्ष के लम्बे काल का लाभ उठा पाया।

आचार्यश्री समाज को निर्व्यसनी एव प्रामाणिक देखना चाहते थे। पूज्य श्री शोभा चद जी म.सा. शताब्दी साधना समारोह अजमेर एव भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी समारोह जोधपुर मे लक्ष्य से अधिक व्रत-प्रत्याख्यान करवा कर आपने जैन सघ को समुज्ज्वल बनाया। आप प्रबल पुरुषार्थी थे। प्रात से साय तक आपकी लेखनी सदैव चला करती थी। प्रमाद को आप अपने पास आने का अवकाश ही नही देते थे। मुझे एक कवि के वाक्य स्मरण आ रहे है—

जिसने पहचानी न कोई, कद्र अपने वक्त की।
कामयाबी उसको हासिल हो सकती नही कभी॥

आपने समय के मूल्य को पहचान लिया था और हर क्षेत्र मे कामयाबी हासिल की थी।

नारी उत्थान मे आपका विशेष योगदान रहा। अपने सघ मे महिलाओ के बराबर की भागीदारी प्रदान की और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका सघ का श्री गणेश हुआ। इससे नारी जाति के लिये धर्म क्षेत्र मे आगे बढने का नया आयाम खुला। नवयुवको एव बालको को भी आपने प्रेरित किया।

आप दीन-दुखी मानव को दुखी हालत मे देखकर द्रवित हो जाया करते थे। आपकी इस दीनोद्धार भावना के अनुरूप श्री भूधर कुशल साधर्मी कल्याण कोष की स्थापना हुई, जहाँ से प्रतिमाह सैंकडो असहाय भाई-बहिनो को सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

आपका ज्ञान-बल बड़ा विशिष्ट था इस सन्दर्भ मे मुझे एक घटना याद आ रही है। पूज्य श्री ने पश्चिमी राजस्थान के आगोलाई से ढाढणिया ग्राम की ओर विहार किया। ३ जनवरी १९६२ माघ कृष्णा ३ स २०२८ सोमवार को लगभग ५ बजे सायकाल आगोलाई के श्रावक श्री चदनमल जी गोगड का पॉच वर्षीय बालक अचानक घर से गुम हो गया। समूचे आगोलाई ग्राम व्यक्तियो ने रात्रि मे हाथो मे लालटेने लेकर आस-पास का सारा जगल ढूढ लिया, पर इस अबोध शिशु का कही पता नही लगा। पूरा गाव उदासीन हो गया। क्योकि गोगड परिवार गॉव वालो की हमदर्दी मे सदैव अग्रणी रहता आया था। जब बच्चे का कही पता नही लगा तो कतिपय ग्रामीण ४ जनवरी को प्रात ९ बजे के लगभग आचार्य श्री की सेवा मे पहुचे और रात से प्रात तक की सारी घटना सम्मुख निवेदन की। प्रत्युत्तर मे आचार्य श्री ने फरमाया - "चिन्ता करने जैसी कोई बात नही है, पुण्य व धर्म के प्रताप से बच्चा सकुशल मिल जायेगा।"

स्थानीय स्कूल के प्रधानाध्यापकजी एव बच्चो का समूह सहकारी फार्म के आगे जगल मे निकल गया। वहाँ देखते हैं कि एक चट्टान पर बच्चा सो रहा है। उसे देखा तो वे पुलकित हो उठे एव गाँव मे ले आए। पूरे गाव मे हर्ष की लहर दौड़ गई। गुरुदेव की वाणी सत्य सिद्ध हुई।

आप से देवता भी डरते थे। जिसमें निम्न गुण होते हैं, उनसे देवता भी भय खाते हैं।

उद्यम साहस धैर्यं, बल बुद्धि पराक्रम ।
षडेते यत्र विद्यन्ते, तस्माद् देवोऽपि शङ्कते ॥

उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम ये ६ गुण जिनके पास होते है, उनसे देवता भी डरते हैं। गुरुदेव में ये सभी गुण थे।

सिंवांची पट्टी का ऐतिहासिक झगड़ा आपके साहस एव बुद्धि की सूझ से ही निपट पाया था।

आपने अनेक स्थानों पर पशुबलि का निषेध करवाया। राजस्थान मे मूण्डिया एव मध्य प्रदेश के अनेक स्थानो पर अभी भी आपके पराक्रम की यशोगाथाएँ सुनने को मिलती है।

आप आयुर्वेद पर विशेष विश्वास रखते थे । मत्र, तत्र, यत्र, काल-ज्ञान, स्वर विज्ञान, शकुन-शास्त्र, स्वप्न शास्त्र सामुद्रिक शास्त्र एव हस्तरेखा विज्ञान के साथ ज्योतिष एव खगोल के भी वेत्ता थे। साथ ही फक्कड सन्त थे। जैन आगमों के गहन अन्वेषक एव जैनेतर साहित्य के पारगामी विद्वान् थे।

जयपुर के महाराजा श्री मानसिंह जी ने जैन सन्तों के सम्बन्ध मे कहा है—

काहू की न आस राखे, काहू से न दीन भाखे।
करत प्रणाम जाको राजा राणा जेवड़ा ॥
सीधी सी आरोगे रोटी, बैठा बात करे मोटी।
ओढन को देखा जाके, धाळा सा पछेवड़ा ॥
खमा खमा करे लोग, कदीयन राखे शोक।
बाजे न मृदग चग, जग माहि जेवड़ा ॥
कहे राजा 'मानसिंह' दिल मे विचार देखो।
दु खी तो सकल जन, सुखी जेन सेवड़ा ॥

उक्त कथन आपके जीवन मे अक्षरश चरितार्थ होता था।

आपकी सेवा मे राष्ट्र नायक, उच्च राज्याधिकारी, श्रीमत, विद्वान्, न्यायाधिपति, उद्योगपति, व्यापारी, राज कर्मचारी, कृषक, व्यवसायी, साधर्मी एव अन्य धर्मी गरीब-अमीर याचक-भाजक सभी समानरूपेण पहुँचते थे। अनेको की आकाक्षाओ की पूर्ति भी सहज रूप से होती थी।

पूर्वी राजस्थान के सवाईमाधोपुर एव भरतपुर जिलों मे बसने वाले पोरवाल व पल्लीवाल जैनो मे अविद्या एव आर्थिक विपन्नता की स्थिति से आपका हृदय द्रवित हो गया। आपने इस क्षेत्र में शिक्षा का सूत्रपात कर नया दिशाबोध दिया। फलस्वरूप क्षेत्र में धार्मिक चेतना का सचार हुआ। सम्पन्नता के साथ शिक्षा के क्षेत्र मे भी प्रगति हुई है।

आचार्य श्री के जीवन में अतिशय था। आचार्य श्री की सेवा मे चौथ का बरवाड़ा से श्रावक गोविन्द राम जी जैन अलीगढ-रामपुरा पधारे और कहा, 'अन्नदाता। बीनणी की आँखो की ज्योति अचानक चली गई।' गुरुदेव ने अलीगढ-रामपुरा स्थानक से मागलिक प्रदान किया और दूरस्थ बीनणी की आँखो मे नव ज्योति का सचार हुआ।

एक बार मैं गुरुदेव के साथ बर - मारवाड़ के स्थानक में गुरु सेवा मे रत था। सायकाल एक बडे से बिच्छु ने मेरे पाँव में डंक मार दिया। मेरे पैर में वेदना शुरु हुई। गुरु महाराज प्रतिक्रमण में थे। मैंने कहा गुरुदेव बिच्छु ने डक मार दिया, पाँव फट रहा है। उन्होंने मांगलिक सुनाया। थोड़ी देर में पैरों में झनझनाहट सी हुई और नींद आ

गई। वेदना समाप्त हो गई।

तपपूत आचार्य श्री उत्कट साहसी एव अदम्य उत्साह के धनी थे। अलवर एव सतारा के क्षेत्रो मे गाँव वालो द्वारा सता जा रहे काले सापो को उनसे छुड़ाकर अपनी झोली में डालकर दूर जगल मे जाकर छोडा उन्हे अभय प्रदान किया।

आपकी ध्यान के प्रति विशेष लगन थी । जब कभी भी ध्यान के विषय को लेकर चर्चा चलती तो आप विशेष आह्लादित नजर आते थे। ध्यान शिविर लगा कर ध्यान साधको की आपने अच्छी टीम तैयार की।

आप समूचे देश तथा विदेश मे रहे भक्तो द्वारा सदैव पूजे जाते रहे।

नमस्कार मन्त्र के तीन पदो पर आप अधिष्ठित रहे। आचार्य, उपाध्याय एव साधु के परमेष्ठि पदो की अपने शोभा बढ़ायी । परमेष्ठि के १०८ गुणो मे से ८८ गुण आपमे एक साथ मिला करते थे। आपको की गई वदना पूरे गुरु पद की वदना होती थी, फिर भला भक्तो के दुख दूर क्यो न होगे। पच परमेष्टी मे से आप तीन पदो के धारक थे। जैन जगत के समूचे इतिहास का अवलोकन करने पर भी शायद ही कोई ऐसा आचार्य दृष्टि गोचर होगा, जिसमे एक साथ आचार्य, उपाध्याय एव साधु पद विद्यमान रहा हो, अत आप जैन इतिहास के निराले ही श्रुतधर थे। आप ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे।

आपके सान्निध्य मे अनेक भव्यात्माओ ने ससार की नश्वरता का बोध पाकर प्रवज्या ग्रहण की और आत्मोद्धार किया। कई आत्मार्थी सन्त महासतियो ने अपना भव-सुधार किया। आपकी सगति से अनेक ससारी प्राणी पारस के स्पर्श से सोना बनने की भाँति दुर्जन से सज्जन और कुव्यसनी से सुव्यसनी बने। अनेक ने आत्म-विकार नष्ट किये। इतने बडे महान् गुरु का सान्निध्य मिलने के बाद भी कतिपय आत्माओ ने लिया हुआ सयम भी छोड़ दिया। उस पर मुझे एक कवि की पक्तियाँ प्रस्तुत करने का अवसर मिल रहा है-

परसी पारस भेटया, मिटग्या लोह विकार।
तीन बात ना ना मिटी, वाक धार अरू भार॥

आप जैसे पारस के स्पर्श के पश्चात् भी वे अपनी वाक, धार और भार के कारण ससाराभिमुख हुए। यह उनके कर्मो की ही विडम्बना है।

लेना सजम सहज है, पालन अति दुश्वार।
खुले पाँव मे जोर दे, चलना असि के धार॥

आप अपने उद्बोधनो मे अनीति का खुलकर विरोध करते थे। अनीति आपको अप्रिय थी।

आपके पावन चरणों से क्षेत्र-स्पर्शन की भावना निर्धन-अमीर सभी किया करते थे। कहा भी है कि शीलवान को सभी चाहते है-

शीलवत निर्मल दशा, पा परिहे चहु खूट।
कहे कबीर ता दास को, आस करे बेकुन्ठ॥

काल ज्ञान के अधिकारी पूज्य श्री को अपनी आयुष्य की समापित का आभास हो आया था। उन्होंने अपना अतिम समय नजदीक जानकर मारणान्तिक तपाराधन के लिये उपयुक्त स्थान निमाज को चुना जिसके बारे मे सन् १९८४ के वर्षावास मे रेनबो हाउस जोधपुर मे अस्वस्थता की स्थिति मे श्री हीरा मुनि जी म.सा द्वारा पूछे गये प्रश्नो के उत्तर मे आपने फरमाया था कि मुख्य राज मार्ग पर बसी नगरी हो, देवालय हो, हरा भरा वन हो, पास मे ज्ञान शाला हो एव जलस्रोत (कुँआ) हो ये पाँच बाते जहाँ मिलती होगी वहाँ जानना कि मेरा सथारा - समाधि मरण तप

होगा। इन पाच बोलों का योग निमाज मे मिला।

आपकी यादे - स्मृतियाँ ज्यो की त्यो हैं, पर गुरुदेव अब देह से हमारे बीच नही है।

अध्यात्म-लोक की इस दिव्य विभूति की सदियों तक सुगन्ध व्याप्त रहेगी-

तू नही तेरी उल्फत हर किसी के दिल मे है।
शमा तो बुझ चुकी रोशनी महफिल में है॥

उखलाना, पो. अलीगढ, जिला टोक (राज)

■

अगणित वन्दन सद् गुरुराज को

• श्री नेमीचन्द जैन

• संयम धर्म पर अनूठी दृढ़ता

श्रमण सूर्य पूज्य प्रवर्तक मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म सा का सवत् २०४० का अतिम चातुर्मास मेड़ता सिटी मे था। एक रात हम श्री मरुधर केसरी जी म सा की सेवा मे बैठे थे। धर्म के प्रति दृढ़ता का विषय चला। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा के जीवन का एक प्रसग भी आ गया। महाराज श्री ने बड़े ही भाव भरे शब्दों मे फरमाया कि जब सतारा (पूना) के पास कुछ नासमझ लोग एक भयकर विषधर नाग को बड़े बेरहमी से मार रहे थे, उस समय आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा उन लोगो के बीच पहुच गये। प्रेम से समझाते हुए पूर्ण निर्भयता के साथ कपड़ा डालकर क्षुब्ध नाग को हाथ मे ले लिया। बिना किसी सकोच के बाहर जगल मे जाकर छोड़ आये।

श्री मरुधर केसरी जी म सा ने फरमाया कि ऐसी होनी चाहिए सयमधर्म के प्रति दृढ़ आस्था।

जब मरूधर केसरी जी म सा जैसे महापुरुष ने भी इस प्रसग का उल्लेख किया तब इस घटना की महत्ता व विश्वसनीयता स्वत सिद्ध हो जाती है।

आचार्यप्रवर जीवो पर करुणा के क्षेत्र मे फूल से भी कोमल तथा छह काय के जीवो की रक्षा के क्षेत्र मे वज्र से भी कठोर थे।

उपर्युक्त घटना क्रोध के ऊपर क्षमा की तथा विष के ऊपर अमृत की विजय थी।

• हृदय मे बसा सथारा

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म सा का सथारा निमाज मे चल रहा था। तप सथारे का तेरहवा दिन। मेरे रिश्तेदार गोटण निवासी श्री जोगीलाल जी काकरिया आचार्य श्री के दर्शनार्थ निमाज आये और सहज भाव से मुझे सुझाव दिया—"आप पूज्य श्री को १०८ बार वदन करने का महान् लाभ प्राप्त कर ले। क्योकि यह धर्म सूर्य शीघ्र ही अस्त होने वाला है।" उनका कथन मेरे लिए सकल्प मे बदल गया।

उसी रात को सतो की अनुमति लेकर आचार्य श्री के सान्निध्य (सन्निकट) मे पहुच गया।

वदन करना प्रारम्भ किया। १०८ बार वदन करने का सकल्प साकार हुआ। मन मे अत्यन्त प्रसन्नता, प्रमोद तथा उत्साह था। किन्तु मैं स्तब्ध भी रह गया यह जानकर कि आचार्य श्री पूर्ण जागृत अवस्था मे है। शारीरिक वेदना भी असाधारण है। ग्रीष्म ऋतु की भीषण तपन है। प्राणी आकुल व्याकुल हो रहे हैं। ऐसी स्थिति मे भी यह प्रतीत नही हो रहा था कि आचार्य श्री इस कक्ष मे लेटे हुए हैं। उनके अगो के हलन-चलन की भनक तक नही।

शारीरिक वेदना का लेश मात्र भी इजहार नही। आत्म-चिन्तन मे लीन। मन, वचन व काया का उत्कृष्ट गोपन। समत्व भावो मे अद्भुत रमण। पूर्णतया मौनस्थ। मृत्यु का भय नही, जीने की आकाक्षा नही।

ऐसे उत्कृष्ट योगी को अगणित वदन करता हुआ मै सथारे (सलेखणा) के कक्ष से बाहर आया, लेकिन पूज्य गुरुदेव का सथारा हृदय मे सदा सदा के लिए बस गया।

• कौन था वह ?

निमाज में आचार्य श्री का सथारा चल रहा था। मन मे एक उत्सुकता थी कि आचार्य श्री के सथारे को नजदीक से देखा जाए। सथारे का शारीरिक अगो तथा मन के भावो पर कैसा तथा किस रूप मे प्रभाव पड़ता है , यह जिज्ञासा बलवती हुई। अत बोर्ड की परीक्षा मे प्रतिनियुक्त होते हुए भी एक-दो दिन छोड़कर दूसरे, तीसरे दिन निमाज पहुचता था।

एक रात बिलाड़ा बस स्टेण्ड पर बस की इतजार मे ९०० बज गये। आखिर एक ट्रक मे बैठा। ट्रक ड्राइवर ने निमाज राजमार्ग पर एक किलोमीटर पहले उतरने की मुझे सलाह दी। मैं उतर गया। पास की गली से प्रस्थान किया। एक कि.मी चला। उजाड़ जगल। भूत की तरह झाड़ खड़े थे। आगे रास्ता नही। विचार हुआ, गलत रास्ता पकड़ लिया है। चढती रात है। यहा से लौटना चाहिये। आचार्य श्री के नाम का स्मरण करता हुआ वापस रवाना हुआ और राजमार्ग पर आ गया। वहा से प्रस्थान किया ही था कि एक साइकिल सवार आ पहुचा। मैने उससे निमाज के अन्दर जाने का रास्ता पूछा तो उसने सहज भाव से मुझे कहा-"आप मेरी साइकिल पर बैठिये। आप जहा चाहते है वहा आपको छोड़ दूँगा।" मैने स्पष्ट मना कर दिया। लेकिन वह माना नही। उसके और मेरे बीच खीचताण हो गई। आखिर उसने मुझे साइकिल पर बैठने के लिए राजी कर लिया। मुझे साइकिल पर बिठाकर आचार्य श्री के सथारा स्थल पर लाकर छोड़ दिया। साइकिल से उतरने के पश्चात् वापस देखा तो वहाँ न साइकिल थी और न ही साइकिल सवार।

वह साइकिल सवार कौन व्यक्ति था ? वह किसलिये वहा आया ? ये प्रश्न अभी भी अनुत्तरित ही है।

-प्रधानाचार्य , राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
अरटिया कला (जोधपुर)

■

विशिष्ट ध्यान-साधक आचार्य हस्ती

• श्री प्रकाश चन्द जैन

जिनके जीवन मे ज्ञान की अतुल गहराई थी, चारित्र की अद्वितीय ऊँचाई थी, सयम का अनूठा तेज था, ब्रह्मचर्य का देदीप्यमान ओज था, दया-करुणा तथा ममता का स्रोत था, उन आचार्य श्री हस्ती का जीवन जन-जन के आकर्षण का केन्द्र था। चन्द्रमा के समान सौम्य एव सूर्य के समान तेजस्वी, गुलाब के समान मुस्कराते हुए उनके चेहरे को देखकर भक्त हृदय आनन्द के सागर मे डूब जाता था। उन्होने अपने ७१ वर्ष के साधना-काल मे सामायिक-स्वाध्याय व ध्यान-साधना पर विशेष बल दिया। प्रतिदिन दोपहर १२ से १ का समय ध्यान के लिए नियत था।

ध्यान से चित्त की शुद्धता बढ़ती जाती है और परिणामस्वरूप अनेक अज्ञात बाते ज्ञात हो जाती है। आचार्य श्री के ध्यान सम्बन्धी दो सस्मरण स्मृति-पटल पर अकित है, वे इस प्रकार है–

(१) वर्धमान नगर, नागपुर के जैन स्थानक मे सुश्रावक श्रीप्रेमजी भाई नागसी आदि बन्धु सेवा मे उपस्थित होकर ध्यान सबधी चर्चा करने लगे। चक्रो की अनुभूति की बात चली। उस समय आचार्य श्री ने यह भाव फरमाये - "मै करीब ४० वर्षो से निरन्तर नियमित समय पर ध्यान करता हूँ, मुझे तो अभी तक चक्रो की अनुभूति नही हुई है। लेकिन ध्यान-साधना से चित्त की शुद्धता इतनी बढ़ जाती है कि अनेक बाते ध्यान के समय प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती है। अजमेर सम्मेलन के समय आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म सा का एक शिष्य कही चला गया था। आचार्य श्री को बहुत चिन्ता हुई मुझे भी वह समाचार ज्ञात हुये। १२ बजे के समय जब मै ध्यान मे बैठा तो वह साधु मुझे एक मकान के कमरे के कोने मे बैठा हुआ दिखाई दिया। मैने एक भक्त श्रावक को ध्यान समाप्ति पर बुलाकर उस स्थान पर जाने का सकेत किया। उन्होने वहाँ जाकर देखा तो वह साधु उस स्थान पर बैठा हुआ था। आचार्य श्री आत्माराम जी म सा को समाचार देकर उस साधु को वापस लाया गया । यह कोई चमत्कार नही था। चित्त की शुद्धि से यह सम्भव हो जाता है।"

(२) बोरवड़ (महाराष्ट्र) के जैन स्थानक मे आचार्य श्री अपनी शिष्यमण्डली सहित विराजमान थे। मै सामायिक करके तिलक विद्यापीठ पूना की सस्कृत-परीक्षा के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रहा था। आचार्य श्री ने मुझसे कहा - "भाई ! इस पुस्तक के कुछ श्लोक कठस्थ करलो।" मैने कहा - "गुरुदेव । परीक्षा मे श्लोक नही पूछे जाते, केवल अर्थ व प्रश्नोत्तर ही पूछते है। गुरुदेव मुस्कराते हुये बोले - "भैय्या ! याद करने मे क्या नुकसान है। अभी ५ श्लोक याद कर मुझे सुनाना। मैने आचार्य श्री के आदेश को शिरोधार्य करके ८-१० श्लोक कठस्थ कर लिये। परीक्षा के प्रश्नपत्र मे एक प्रश्न आया, कोई भी २ श्लोक लिखिए। मैने तत्काल गुरुकृपा से याद किये गये श्लोको मे से २ श्लोक शीघ्र लिख दिये। आचार्य श्री की उस बात को याद कर मै मन ही मन उन्हे वन्दना कर रहा था। ऐसे महान् आत्मसाधक, ध्यान योगी, जिनशासन के महान् नक्षत्र आचार्य देव के चरणो मे शत शत वन्दना।

प्राचार्य, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव

■

साधना के धनी

• श्री प्रेमचन्द कोठारी

भारत भूमि पर अनेक सन्त-महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपनी साधना एव आत्म-कल्याण के साथ - साथ विश्व को भी मार्गदर्शन दिया है। उन महापुरुषो मे श्रद्धेय आचार्य श्री हस्ती का भी अपना विशिष्ट स्थान रहा है। आचार्य श्री का समग्र जीवन अनेक प्रेरक प्रसगो से भरा हुआ था। यो लिख दिया जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी कि वह महापुरुष प्रेरणा का चलता-फिरता बोलता कोष था। साधक को साधना मे लगाने की उनमे आकर्षक शैली थी।

एक बार मैंने आचार्य श्री के दर्शन किये। अक्सर जब भी कोई उनके निकट आता तो उनका लक्ष्य उसको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर करने का रहता था। मैं उस समय नित्य सिर्फ एक सामायिक करता था। आचार्य श्री ने पूछा, 'सामायिक करते हो?' निवेदन किया, 'करता हूँ।' फिर पूछा, 'कितनी करते हो?' निवेदन किया, 'एक करता हूँ।' शिक्षा दी, 'भाई आगे बढ़ो।' उत्तर था,'अवकाश की कमी है।' आचार्य श्री ने फरमाया, "भाई दो सामायिक नही कर सकते हो तो भी सामायिक का काल बढ़ा कर सवा सामायिक कर लो अर्थात् जीवन का एक घटा सवर-सामायिक मे लगाओ व उस बढ़ाये हुए समय मे नियमित व व्यवस्थित स्वाध्याय करो।" बात सरलता से गले उतर गई, व जीवन मे स्थान दे दिया। बाद मे जब भी दर्शन का प्रसग आता, पूछते रहते, 'साधना चल रही है और आगे बढ़ो, आज क्या नियम लोगे?' इस तरह के व्यवहार से प्रत्येक निकट आने वाले व्यक्ति को ऐसा लगता था "गुरुदेव की मेरे ऊपर असीम कृपा है, मेरी गतिविधि का ध्यान रखते है", जबकि सभी के साथ उनका ऐसा ही आकर्षक कुशल व्यवहार रहता था। इसी प्रकार निकट आने वाले की पात्रता देखकर उसे वे किसी न किसी सवर-क्रिया से जोड़ने मे कुशल थे।

स्वय की साधना के साथ-साथ सघ-सेवा का भी पूरा लक्ष्य था। आचार्य श्री अन्तिम बार जब बून्दी पधारे थे, उस समय मैंने व्यापार से निवृत्ति ले थी, मेरी भावना थी कि मैं सदा के लिए मौन रख कर एक तरफ बैठ कर मात्र धर्मध्यान मे ही जीवन बिताऊ। मैंने सोचा कि आचार्य श्री की सघ सेवा की तीव्र पैनी अनुभवी दृष्टि है, अत इस विषय मे आपसे मार्ग-दर्शन या प्रेरणा प्राप्त करू। आचार्य श्री ने पहले तो फरमाया कि मेरा निर्णय उचित है, लेकिन बाद मे फरमाया-"भाई मै तो अभी ८० वर्ष की अवस्था मे भी गाँव-गाँव विहार कर जिनशासन की प्रभावना की भावना रखता हूँ और तुम एक तरफ बैठना चाहते हो। अपनी साधना भी करो व सघ-सेवा भी। जिस सघ की छत्र छाया के कारण तुम्हे परम्परागत सस्कार मिले हैं, तुम्हारा विकास हुआ है उस सघ को तुम्हारी योग्यता, शक्ति एव समय का लाभ मिलना चाहिए। जिनशासन की प्रभावना के लिए भी पुरुषार्थ करना चाहिए।" उसी प्रेरणा के कारण आज मै सघ-सेवा से जुड़ा हुआ हूँ, सघ-सेवा मे रुचि बनी हुई है।

मुझे ऐसी जानकारी मिली थी कि आप अन्तिम समय जब निमाज विराज रहे थे, उस समय अन्य सम्प्रदाय से निकले दो सन्त आपके दर्शन करने व साता पूछने पधारे। सन्तो ने आपसे शिक्षा फरमाने हेतु निवेदन किया। आचार्य श्री ने फरमाया "मेरा तो यही कहना है कि आप जहाँ से आये हो, वही वापस जावे, अपने ठिकाने पर ही अपनी प्रतिष्ठा व शोभा है।" कितना निष्पक्ष एव उचित मार्गदर्शन था। अन्य सम्प्रदाय के होने पर भी उस सम्प्रदाय के प्रति उनके मन मे हीन भाव पैदा होने वाली बात नही कही।

एक बार आचार्यश्री के सुशिष्य आत्मलक्ष्यी तत्त्वचिन्तक पूज्य श्री प्रमोदमुनिजी म सा के पास आचार्य श्री की हस्तलिखित दैनन्दिनी देखने का प्रसग आया। आपकी दैनन्दिनी मे गुणग्राहकता व गुणानुवाद की विशेषता को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। उस डायरी मे झालावाड (राज) जिले के रायपुर निवासी श्री पूनमचन्दजी घूपिया एव मन्दसौर जिले के रामपुरा निवासी आगमज्ञ श्रावक श्री केसरीमल जी की विशेषताओ का वर्णन अकित था।

सन्त का जीवन सूपड़े (छाजले) की तरह होता है। जैसे सूपडा अनाज मे से ककर-कचरा आदि विजातीय द्रव्य निकालकर अनाज को छाँटकर रख लेता है, उसी प्रकार सन्त अनुकूल, प्रतिकूल प्रसग, व्यवहार, वचन आदि में अपने हित की बात ध्यान मे ले लेते हैं शेष को माध्यस्थ भावना रखते हुए छोड देते हैं, पकड़ नही करते हैं ऐसा मैंने उनके जीवन मे अनेक बार देखा। वास्तव मे उस महापुरुष को जिसने भी निकट से देखा, वह अनुभव करता है कि उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति मे मौन, ध्यान, विचक्षणता, सजगता आदि गुण झलकते थे। साथ मे सीख भी मिलती थी। वास्तव मे महापुरुषो की जिह्वा नही, जीवन शैली बोलती है। वह सबके लिए हितकर होती है।

–पूर्व महामंत्री , अ भा. श्री सुधर्म जैन श्रावक सघ,
चौगान गेट, बूँदी

■

मेरे प्रेरणा स्त्रोत आचार्य श्री

• श्री रणजीतसिंह कूमट

बाल्यकाल और विद्यार्थी जीवन मे हमारी मूरत को कई लोग घड़ते है और जगह-जगह पर छैनी हथौड़े से एक शक्ल सूरत प्रदान करते है। बहुत छोटी अवस्था मे माता-पिता यह कार्य करते हैं। जब बड़े होते है तो स्कूल मे अध्यापक और धर्माचार्य हमारे जीवन की मूरत को घड़ते हैं। ऐसे ही थे आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज जिनकी प्रेरणा से मेरी मूरत घड़ी गई।

आचार्यप्रवर के कई प्रेरणाप्रद प्रसग हैं और उन सबको लिपिबद्ध करना एक लेख मे सम्भव नही, लेकिन कुछ बाते ऐसी रही जिन्होंने मुझ में लेखन शैली का एवं लिखने की प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव किया। जब मै दिल्ली मे अध्ययन कर रहा था उस वक्त आचार्य श्री का चातुर्मास दिल्ली में हुआ और सप्ताह में एक या दो बार जाने का प्रसग बन जाता था। जब भी मै जाता आचार्य श्री पूछते, 'कुछ पढ़ता है, कुछ लिखता है' मै कहता, 'पढ़ता तो हूँ, लेकिन लिखना नही आता।' मृदु रूप से हँसते और कहते, 'प्रयास करो। स्वाध्याय धर्म का मूल अग है और स्वाध्याय मे पढ़ने के साथ लिखना भी आवश्यक है।' दो-तीन बार पूछने पर भी कुछ नही लिख पाया और असमर्थता जाहिर की तो उन्होने कहा कि तुम अग्रेजी मे कोई अच्छा लेख पढ़ते हो तो उसका ही हिन्दी रूपान्तर कर दो। 'धर्मयुग' या अन्य अखबार मे लेख लिखे जाते हैं उनको भी सक्षेप कर लेख लिख सकते हो। बार-बार उनकी प्रेरणा और पृच्छना से प्रेरित हो पहला लेख 'जिनवाणी' मे छपने भेज दिया। लेख छप गया। आनन्द विभोर हुआ और लिखने की प्रेरणा बनती रही और कुछ न कुछ लिखता रहा। जब भी आचार्य श्री मिलते, यही पूछते—क्या लिखा? क्या पढ़ा? एक बार मैंने कहा कि समय नही मिलता, तो कहा कि सामायिक मे भी यह कार्य कर सकते हो और रविवार को एक अतिरिक्त सामायिक कर पढ़ने और लिखने का कार्य कर सकते हो। लिखते-लिखते ३०/४० लेख एकत्रित हो गये तो उन्हे पुस्तक के रूप मे प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था 'मुझे मोक्ष नही चाहिए।' यह शीर्षक बड़ा अजीब लगा, लेकिन पढ़ने वालो ने मेरे इस मत से सहमति व्यक्त की कि जीवन वर्तमान के लिए है न कि भविष्य के लिए। यदि वर्तमान ही नही सुधरा तो भविष्य कैसे सुधरेगा।

१९७८ मे विपश्यना ध्यान मे बैठा। उसके बारे में आचार्यश्री ने बहुत बाते पूछी। उनको नई नही लगी, क्योकि लगता था कि वे स्वय इसको प्राप्त कर चुके थे। आचाराग सूत्र की कुछ गाथाओ के बारे में मुझे कुछ शंका हुई और पूछने गया तो उन्होंने निःसकोच कहा, 'जो कुछ विपश्यना में सीखा-पढ़ा है वही उन गाथाओ का अर्थ है।'

स्वाध्याय, ध्यान और लेखन पर हमेशा उन्होंने जोर दिया। जब भी मै दर्शनार्थ गया तो स्वय भी किसी पुस्तक को लिखने मे लगे रहते थे। जैन धर्म के इतिहास के चार बड़े ग्रन्थ उनके स्वय के शोध के आधार पर लिखे गये हैं। अपने लिखने और चिन्तन के कार्य मे वे इतने तन्मय रहते थे कि दर्शनार्थी बार-बार मागलिक सुनाने के लिए कहते तो उन्हे एकाग्रता मे व्यवधान महसूस होता था। आचार्यश्री के गुणगान के लिए सभी शब्द कम पड़ जाते हैं। उन्होने मेरे जीवन पर जो उपकार किया है उससे मै कभी उऋण नही हो सकता। जीवन मे सामायिक, समता, स्वाध्याय आदि के गुण उन्ही की प्रेरणा के सुफल है और उन्ही से जीवन मे शान्ति अनुभव होती है।

२९ अप्रेल, १९९८

A-201, दशरथ मार्ग, हनुमान नगर, जयपुर

अध्यात्म-योगी तपोमूर्ति

• श्री जवाहरलाल बाघमार

जैन जगत नित कर रहा, अविरल जिन पर नाज।
त्याग तपस्या के धनी, श्री हस्तीमलजी महाराज॥
चर्चा जिनकी देश मे, गाव गली घर आज।
जन-जन के अन्तर बसे, श्री हस्तीमलजी महाराज॥
सवक बन करके रहे, माने सकल समाज।
है ! धन्य धन्य तप मूर्ति, श्री हस्तीमलजी महाराज॥
जग को नित ऐसे लगे, तारण तिरण जहाज।
सबक मन को भा गये, श्री हस्तीमलजी महाराज॥
अल्प आयु मे आपने, सुन मन की आवाज।
महावीर पथ पर चले, श्री हस्तीमलजी महाराज॥
मोहित सबको कर गये, जीवन के अन्दाज।
स्मृति जिनकी शेष, एसे हस्तीमलजी महाराज॥

श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन रत्नवश के सप्तम पट्टधर, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, अखण्ड बाल-ब्रह्मचारी , चारित्र चूड़ामणि , अध्यात्म योगी, परम पूज्य आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म सा के चरण कमलो मे रहने का असीम सौभाग्य मुझे लघु वय से ही प्राप्त हुआ। वैसे, मै उनकी जन्मस्थली पीपाड़ के पास कोसाना (राजस्थान) का निवासी हूँ। जीवन के लिये, आत्म-अभ्युदय के लिये, ज्ञानार्जन के लिये स्वाध्याय परम आवश्यक है - इस सत्य को मैंने उन्ही के सान्निध्य मे रहकर समझा। उनकी दूरदर्शिता और वाणी की सत्यता के प्रति वैसे तो हजारो लाखो व्यक्ति नतमस्तक है, मैंने स्वय भी अपने जीवन मे उनकी वाणी की सत्यता और भविष्य द्रष्टा होने की विशेषता के अनेक बार प्रत्यक्ष दर्शन किये है।

सवत् २०४६ मे हमारे ग्राम कोसाना मे ही आचार्य प्रवर का चातुर्मास था। हमेशा की तरह सपरिवार मैं भी वही था। नित्य-नियम के अनुसार प्रात प्रार्थना में सम्मिलित होता, फिर दर्शन-प्रवचन का लाभ लेता। एक दिन प्रात आचार्यप्रवर ने मुझे अपने पास बुलाकर पूछा –"तुम्हारे मन की क्या अभिलाषा है ?" मैं कुछ असमजस मे पड़ गया, यकायक कुछ प्रत्युत्तर नही दे सका। यह बात मैंने मेरे ससुर महोदय श्रीमान् अमरचन्द जी सा छाजेड़, राजस्थान मे मेवड़ा (जि अजमेर) निवासी को जो उन दिनों कोसाना आये हुये थे, बतायी। उन्होने कहा, आचार्य प्रवर ने कुछ विशेष प्रयोजन से ही आपसे यह प्रश्न किया होगा। मैने इस बात पर गौर किया और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे मुझे तपश्चर्या के मार्ग पर बढ़ने के लिये प्रेरित कर रहे हो। अतएव दूसरे दिन प्रार्थना के बाद मैंने उपवास के पच्चक्खाण ले लिये। बड़ी शान्ति से वह दिन बीता। दूसरे दिन मैंने बेला पच्चक्ख लिया। फिर तीसरे दिन मैंने बड़े उत्साह से तेला भी पच्चक्ख लिया। उस वक्त आचार्य प्रवर ने मुझे गौर से देखा और मद मद मुस्कुराते हुये पूछा - "आगे भी भाव हैं क्या ?" मेरे मुँह से अनायास ही निकला - "गुरुदेव आपका आशीर्वाद होगा तो अठाई भी पूरी कर लूँगा।" हालाकि उन दिनो तक मैंने उपवास या बेले से आगे की तपस्या कभी की ही नही थी।

यह समाचार जब मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिकवर तक पहुँचे कि मै अठाई करने की ठान चुका हूँ तो वे भी आचार्य श्री के दर्शनार्थ पहुँची और बड़ी अनुनय विनति के साथ पाँच उपवास पच्चक्खाने की प्रार्थना करने लगी,

पर गुरुदेव ने यह फरमाया कि यह तुम्हारे बस की बात नही है। परन्तु मेरी श्रीमती अडिग रही और बडी निश्चिन्तता से पाँच उपवास पच्चक्खाने की विनती करती रही। उनकी जिद और हार्दिक इच्छा देखकर पच्चक्खाण करवा दिये गये। इस जिद का नतीजा भी शीघ्र ही सामने आ गया। पाँच की यह तपस्या पूर्ण करने में उन्हे कितने कष्ट और शारीरिक वेदनाओ से जूझना पड़ा, यह मैं, मेरी श्रीमतीजी और मेरा परिवार ही जानता है। आचार्य भगवन्त तो सर्वदर्शी थे, पहले ही जानते थे कि यह तपस्या उनके बस की बात नही है, साथ ही गुरुदेव की सत्प्रेरणा के फलस्वरूप मेरी अठाई की तपस्या बड़ी शान्तिपूर्वक और निर्विघ्न सम्पन्न हुई। उस दिन से हमने यह समझा कि महापुरुषो के एक-एक शब्द मे कितना यथार्थ, कितना पूर्वाभास छिपा रहता है। आचार्यप्रवर की दूरदर्शिता, भविष्य-दृष्टि और सत्य-वाणी के प्रति हम श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते है।

आचार की दृढता और विचार की उदारता आपके व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ थी। आप प्राय कहा करते थे कि आचार मे मेरु पर्वत की तरह अडोल बने रहो और विचार मे गगा की पवित्रता लिये बहते चलो। आप सम्प्रदाय को एक परिवार मानते थे और कहा करते थे कि अपने परिवार के विकास के लिये सतत क्रियाशील रहो, पर किसी के लिये बाधक न बनो। दूसरे को गिराकर उठने का प्रयत्न न करो, सबको साथ लेकर चलो। इसी भावभूमि पर अन्य सम्प्रदायो के प्रति आपका सदा सहिष्णुता का भाव रहा। यही कारण है कि सभी सम्प्रदायो के लोगो की आप मे पूर्ण आस्था एव अगाध श्रद्धा-भक्ति रही।

समाज को धार्मिक, शैक्षिक व अन्य सर्वजन हितकारी प्रवृत्तियो की सतत प्रेरणा देते हुए भी आप सदैव आत्म-चिन्तन और धर्म-ध्यान मे लीन रहते थे। एक क्षण भी आप प्रमाद मे नही बिताते थे। चिन्तन मनन, जप-तप, स्वाध्याय मे लीन रहते हुए भी आप सम्पर्क मे आने वाले प्रत्येक भाई-बहिन, बाल, युवा, वृद्ध को उसकी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक प्रवृत्ति बनाने की प्रेरणा और नियम सिखाते थे। पात्र मे रही हुई योग्यता देखकर, उसे उसी ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते, जिससे आपके सम्पर्क मे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपके दर्शन कर आतरिक प्रसन्नता और विशिष्ट शाति का अनुभव करता था। आपकी दी हुई प्रेरणा और कहे हुए वचन हृदय की गहराई तक स्पर्श करते थे और आपकी कोई भी बात भारभूत नही लगती थी। यही कारण है कि आपके सम्पर्क मे आने वाले भाई-बहिनो के जीवन मे रूपान्तरण आया है और वे सच्चे मानव और आदर्श नागरिक बनने की ओर अग्रसर हुए है।

आप जैसे ज्योतिर्धर आचार्य का मार्ग-दर्शन पाकर हमारा सघ ही नही, पूरा समाज, राष्ट्र और विश्व कृतकृत्य हो उठा। आज पार्थिव रूप से आप हमारे बीच नही है, पर स्वाध्याय के रूप मे दिया गया आपका सन्देश हमे सदा प्रेरणा देता रहेगा।

४ अक्टूबर १९९९

–6 Chandrappa Mudali Street Sowcar pet, Chennai

■

स्वाध्याय - सेवा के प्रेरणास्त्रोत

• श्री फूलचन्द मेहता

आचार्य श्री के पावन सान्निध्य एव प्रेरणा से मेरे जीवन मे परिवर्तन आया। मेरी दैनिक चर्या व दृष्टिकोण मे बदलाव आया। उसका विवरण -

मेरी माता एव बहन सन् १९४७ मे दीक्षित हुए। मेरे पिता शास्त्रो के ज्ञाता थे। वे प्रतिदिन स्वाध्याय करते थे तथा जब सत-सतियो का वल्लभ नगर मे पधारना नही होता तो वे ही समय-समय पर व्याख्यान करते थे।

ससारी जीवन मे नौकरी करते हुए अधिकतर न्यायनीतिमय जीवन जीते हुए सत-समागम मे सामायिक, दया, आयबिल , उपवास, एकाशन कभी-कभी किया करता था। हमने उस समय डूगला मे जैन विद्यालय सचालन समिति स्थापित की। मेवाड़ क्षेत्र मे उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा तथा कुछ मध्यप्रदेश क्षेत्रो मे इसके अन्तर्गत जैन पाठशालाए खोली। इनके निरीक्षण एव शिविरो का आयोजन और उनमे पढ़ाने- लिखाने का जिम्मा मेरा था। प्रत्येक राजकीय छुट्टी इन्ही पाठशालाओ के निरीक्षण मे बीतती थी।

शिविरो मे अध्यापन एव सचालन मै ही किया करता । फिर मालूम हुआ तो सन् १९७० मे जोधपुर स्वाध्याय सघ से अध्यापन हेतु शिक्षक बुलाये गए, जिसमे श्रीमान् सम्पतराज सा डोसी एव श्रीमती सुशीला जी बोहरा पधारे। उनसे सम्पर्क हुआ। उन्हे हमारा कार्यक्रम अच्छा लगा। उन्होने मुझे सलाह दी एव प्रेरणा की कि इन पाठशालाओ के अध्यापक एव अध्यापिकाओ को स्वाध्याय सघ के सदस्य बनाये। मैने प्रेरणा देकर कई सदस्य बनाए। जोधपुर स्वाध्याय सघ के शिविरो मे मुझे बुलाया गया।

स्वाध्याय सघ के शिविरो के माध्यम से ही मै आचार्यप्रवर के सम्पर्क मे आया। वैसे मै पूर्व मे भी दर्शन कर चुका था, किन्तु स्वाध्याय सघ से जुड़ने के बाद उनके जीवन को विवेकपूर्वक देखा तो वे शान्त, सौम्य एव अन्दर बाहर समान दिखे। माला मे, ध्यान-चिन्तन मे, मौन-साधना मे रहते तथा किसी से बात करने मे एकमात्र व्रत-नियम, सामायिक-स्वाध्याय के लिए ही प्रेरणा करते थे। अन्य कोई आडम्बर, क्रिया-काण्ड, प्रदर्शन नही देखकर मै अत्यधिक प्रभावित हुआ। जब-जब भी मै जाता तो एक मात्र मुझे स्वाध्याय की प्रवृत्ति, स्वाध्यायियो की गति - प्रगति, उनके जीवन मे त्याग-वैराग्य, स्वाध्यायमय जीवन मे निखार एव अधिक से अधिक स्वाध्यायी बने, उनका जीवन उन्नत बने वे पर्युषण मे सेवाएँ दे, शिविरो मे भाग ले इस प्रकार की ही प्रेरणा करते थे। यह कभी नही कहा कि इन स्वाध्यायियो को अपना भक्त बनाये। उनकी उदारता, विचक्षणता, निष्पक्ष दृष्टिकोण, असाम्प्रदायिकता की छाप मुझ पर पड़ी।

इसी कारण मै अपना अन्तर निरीक्षण करता एव अपने को मैने असाम्प्रदायिक बनाये रखा। गुणदृष्टि, परमार्थ दृष्टि, निष्पक्ष दृष्टि के कारण सूत्रो का, ग्रन्थो का और धार्मिक साहित्य का अधिकाधिक स्वाध्याय करने पर मजबूर हुआ। शिविरो मे जाने से पहले मै खूब अध्ययन कर नोट्स बनाता। जो विषय मुझे दिये जाते और नही भी दिये जाते तो भी सभी का स्वाध्याय कर पठन-मनन कर नोट्स लिखता और शिविरो मे पढ़ाता।

मुझे आचार्य श्री के आशीर्वाद की, कृपा की बहुत अपेक्षा थी। आचार्य श्री के जीवन में ज्ञान व क्रिया का

सामजस्य था। उस पर मैं बहुत अंशों में अपनी शक्ति एव योग्यता के अनुसार सोचता और पालन करता। मुझे भी जिनवाणी पर दृढ श्रद्धा उन्ही के प्रताप से हुई। जितनी बार जाता, आचार्य श्री मेरी गतिविधि की पूरी जानकारी लेते। मेरी गलतियो पर भी मुझे आगाह करते। मेरे व स्वाध्याय सघ के हित के लिये ही वे फरमाते। मै सकल्प किया करता था कि जो काम हाथ मे लिया अथवा जो काम करना है उसमे श्री जिनाज्ञा मुख्य हो, स्वपर कल्याण मुख्य हो। अच्छे से अच्छे स्वाध्यायी बने, उनकी प्रगति हो। वे प्रामाणिक जीवन जीते हुये स्वाध्याय-ध्यान मे आगे बढ़े। मेवाड़ क्षेत्र में स्वाध्यायियो के जीवन से आचार्य श्री अधिक प्रभावित थे। उनका ज्ञान - वैराग्य एव लगन देखकर मुझ पर भी आचार्य श्री की महान् कृपा थी। मेरे पर उनका वरद हस्त था।

पाली चातुर्मास के बाद बाहर कॉलोनी में मैं दर्शन करने गया। मेरे सिर पर दोनो हाथ रखे। मुझे बहुत भोलावण दी— स्वाध्याय-सघ-शिविरों के लिए एवं स्वाध्यायियों की प्रगति के लिये। इसे मैं नहीं भूल सकता। इच्छा शक्ति, दृढ सकल्प शक्ति, काम करने की लगन उनकी प्रेरणा से मुझमे बलवती बनती गयी। इसका स्रोत वे ही महान् विभूति थे।

उसके बाद मै दर्शन करने गया निमाज मे। उनकी मूकदृष्टि, निस्पृहता, समभाव की साधना, मोहरहितता देखकर मुझे लगा कि अब कौन मुझे प्रेरणा एव सुझाव देगा।

मैंने मौन ही मौन रूप से सकल्प किया कि आचार्य श्री की उस महती प्रेरणा से निरतर इसी स्वाध्याय - प्रवृत्ति मे लगा रहूँ। अन्य झझटो से प्रपचो से बचता रहूँ। अपने जीवन को अधिकाधिक त्याग-वैराग्ययुक्त स्वाध्याय-ध्यान मे लगाता रहूँ, प्रमाद से बचता रहूँ और अधिक सेवा स्वाध्याय की करता रहूँ। मुझमे सदा सद्बुद्धि, सद् विचार, सत्पुरुषार्थ बढ़े, यही ज्ञानीजनो से प्रार्थना है।

२५ फरवरी, १९९८

-३८२, अशोक नगर, उदयपुर (राज)

■

विश्व के देदीप्यमान सूर्य : गुरु हस्ती

• श्री चचलमल चोरड़िया

• बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी, मेरे जीवन को सस्कारित बनाने वाले युग द्रष्टा, युग निर्माता, युग पुरुष, ज्ञानी, ध्यानी, मौनी, साहसी, धीर, वीर, गभीर, वचन सिद्ध, विरल विचक्षण, सामायिक स्वाध्याय के प्रेरक, परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के जीवन की इतनी विशेषताए थी कि किन-किन का स्मरण करूँ।

आचार्य श्री का जीवन आत्म-कल्याण के साथ-साथ प्राणिमात्र के कल्याण हेतु समर्पित था। आचार में दृढ़ता, विचारो मे उदारता, ज्ञान एव क्रिया का बेजोड़ समन्वय, गुणियो के प्रति प्रमोद भाव तथा कथनी करनी मे एकरूपता थी। नियमित मौन साधना, स्वाध्याय, ध्यान, अप्रमत्त जीवन के आप प्रतीक थे। कब, क्या, कितना और कैसे बोलना इस कला मे वे बहुत निपुण थे। निन्दा विकथा से वे सदैव दूर रहते थे। उनका मानना था कि जीवन निंदा से नही निर्माण से निखरता है। जहा आपका हृदय नवनीत सा कोमल था, वही सयम-पथ पर आप चट्टान की भाति अडोल थे। सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी असाम्प्रदायिक मनोवृत्तियुक्त एव व्यवहारकुशल थे ।

सभी वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म एव जाति के लोग बिना भेदभाव आपके मार्ग-दर्शन एव प्रेरणा से अपने जीवन का विकास करते थे। आपने कभी भी अन्य सम्प्रदायो के भक्तो को तोड़कर अपने श्रद्धालुओ की सख्या बढ़ाने का प्रयास नही किया। वे धर्म को कभी किसी पर नही थोपते, परन्तु सरल ढग से धर्म के स्वरूप को प्रतिपादित करते। वे नियमबद्ध जीवन के बड़े हामी थे। अत जो भी उनके सम्पर्क मे आता, उसे नि सकोच सेवा, सामायिक, स्वाध्याय, व्यसन-मुक्ति आदि के साथ व्यक्ति की योग्यता, सामर्थ्य के अनुसार धार्मिक , सामाजिक, आध्यात्मिक क्षेत्र मे नैतिकता को बढ़ावा देने की प्रेरणा देते और जनसाधारण के जीवन-निर्माण हेतु आप सतत प्रयत्नशील रहते और नियम दिलाते । पात्र मे रही योग्यता को पहचानने मे आप बड़े सिद्धहस्त थे। जैसी पात्रता देखते उस व्यक्ति को उसी क्षेत्र मे अध्यात्म के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते, जिससे सम्पर्क मे आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु अत्यधिक प्रसन्नता और शाति का अनुभव करता। आपकी प्रेरणा इतनी हृदयस्पर्शी होती, जिससे आपके द्वारा कराया गया व्रत, नियम व्यक्ति को भारभूत नही लगता। कब, क्या, क्यो, कितना और कैसे बोलना, इस कला मे वे बहुत निपुण थे। छोटी छोटी बातो मे जीवन की समस्याओ का समाधान कर देते थे।

• निर्भयता की मूर्ति

अज्ञान ही सभी दुखो का मूल कारण है एव जितना-जितना साधक सम्यग्ज्ञान के समीप पहुँचता है उसे भेद-विज्ञान होने लगता है। वह निर्भय बन जाता है एव प्राणो का मोह छूट जाता है। आचार्य श्री के जीवन-काल मे सर्प का जीवन बचाने के दो प्रसग आये। सर्प को तो सभी अहिंसक विचारधारा वाले बचाना चाहते हैं, परन्तु जब तक स्वय के प्राणो का मोह नही छूटता, सर्प को गले नही लगाया जा सकता। आचार्य ने सर्प को अपनी झोली मे डाल लिया। इतने निर्भय थे हमारे श्रद्धास्पद आचार्य श्री।

• गुणग्राहकता के पुजारी

आचार्य श्री बड़े गुणग्राही थे। जब कोई विद्वान् , विशेषज्ञ, साधक, तपस्वी अथवा सेवाभावी उनके सम्पर्क मे आते तो बड़ी एकाग्रता से उनके अनुभवो को सुनते तथा उनकी योग्यता का लाभ जन-जन तक पहुचे इस हेतु बड़े प्रमोदभाव से आप प्रेरणा देते।

आचार्य श्री का ध्यान प्रत्येक व्यक्ति के सद्गुणो की तरफ ही जाता था। पदाधिकारियो एव कार्यकर्ताओ की कमजोरियो को उन्होने कभी महत्त्व नही दिया। प्रत्येक प्रभावशाली व्यक्ति को सघ एव शासन-सेवा मे जोड़ने हेतु आप सदैव प्रयत्नशील रहते थे।

सन् १९८९ की महावीर जयन्ती को जैन जगत के प्रख्यात चिन्तक, विद्वान, अहिसा प्रेमी, शाकाहार क्रान्ति एव तीर्थंकर के सम्पादक स्वर्गीय डॉ नेमीचद जैन (इदौर वाले) आचार्य श्री के दर्शनार्थ मेरे साथ जोधपुर मे पावटा स्थित स्थानक में पधारे। आपसी चर्चा के बाद आचार्य श्री ने डॉ जैन को कहा—"आप विद्वान हैं। जैन धर्म की नीव आप जैसे विद्वानों के हाथ मे है।" इतने बड़े आचार्य का विद्वानो के प्रति ऐसा आदरभाव सुन मै गद्गद् हो गया।

ब्युटी विदाउट क्रूयल्टी (बिना क्रूरता सौन्दर्यता) पूना की अध्यक्षा श्रीमती डायना रत्ना के जोधपुर प्रवास के समय, मै उनको आचार्यश्री के दर्शन कराने पीपाड़सिटी ले गया। सौन्दर्य प्रसाधन के नाम से होने वाली हिसा की विस्तृत जानकारी दी एव बतलाया कि अज्ञानवश किस प्रकार हिसा और क्रूरता का प्रत्यक्ष-परोक्ष मे अपने आपको अहिंसक मानने वाले भी अनुमोदन कर रहे है । दैनिक जीवन मे जनसाधारण द्वारा उपयोग मे लिये जाने वाले ऐसे चद हिंसक पदार्थो की सूची बतलाई एव उनके विकल्पो की भी चर्चा की। उन्होंने चादी के वरक एव अन्य हिंसक पदार्थो के निर्माण मे होने वाली प्रत्यक्ष-परोक्ष हिंसा का आचार्य श्री के समक्ष चित्रण किया। उन्होने बताया कि वे स्वय तो ऐसे पदार्थों का उपयोग नही करती और जन साधारण मे सजगता पैदा करने हेतु प्रयत्नशील है। एक अजैन महिला की अहिंसा के प्रति ऐसी निष्ठा देख आचार्य श्री को अत्यधिक प्रमोद हुआ एव डायना रत्ना को अधिक उत्साह और निष्ठा से कार्य करने हेतु प्रेरणा मिली।

• अहिसात्मक - चिकित्सा पद्धति के प्रति आकर्षण

मेरा अहिसक चिकित्साओ के प्रति विशेष आकर्षण था। १९८६ के बाद जोधपुर मे ऐसी चिकित्साओ के प्रशिक्षण हेतु देश के विख्यात प्रशिक्षको को महावीर इण्टरनेशनल सस्था द्वारा नियमित रूप से आमत्रित किया जाता था। जब मै आचार्य श्री को उन चिकित्साओ की विशेषताओ की जानकारी देता तो वे मेरी बात को बहुत ही ध्यान से सुनते। उनका अहिंसक चिकित्साओ मे पूर्ण विश्वास था।

आचार्य श्री जब कोसाणा का चातुर्मास समाप्त कर पीपाड़ से विहार कर जोधपुर पधारे तब उनका स्वास्थ्य अनुकूल नही था। तब रक्षा प्रयोगशाला के निदेशक डॉ रामगोपालजी, सुश्री आशाजी बिड़ला, श्री रगरूपमलजी डागा एव मैंने एक्यूप्रेशर चिकित्सा-पद्धति द्वारा उपचार कराने का अनुरोध किया तो आपने सहज ही स्वीकृति दे दी। आप विकटतम परिस्थितियो मे भी ऐसी दवाइयां लेना पसन्द नही करते थे, जिनमें प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा होती हो। आपकी प्रबल भावना थी कि साधु एव साध्वी समुदाय आवश्यकता पड़ने पर एक्यूप्रेशर जैसी, सहज, सरल, अहिंसात्मक, निरवद्य पद्धति से अपना उपचार करें। इसी कारण जब बड़ोदा से एक्यूप्रेशर एव चुम्बकीय चिकित्सा के विशेषज्ञ डॉ जितेनजी भट्ट पधारे तब उन्होंने अपनी शिष्य मण्डली को इस पद्धति की जानकारी प्राप्त

करने हेतु प्रेरित किया। जून १९९० मे आचार्य श्री महावीर भवन सरदारपुरा, जोधपुर मे विराज रहे थे, तब एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर हेतु बम्बई से जय भगवान एक्यूप्रेशर अन्तर्राष्ट्रीय के प्रमुख आचार्य श्री विपिन भाई शाह भी जोधपुर पधारे हुये थे। मै श्री शाह को एक्यूप्रेशर के सम्बन्ध मे विशेष जानकारी सन्तों को देने के लिये ले गया, तब आचार्य श्री स्वय इस पद्धति को समझने हेतु पास मे विराज गये। इतने सरल एव सहज व जिज्ञासु थे पूज्य गुरुदेव।

आचार्य श्री के सान्निध्य में सोजत सिटी मे फरवरी १९९१ के अतिम सप्ताह मे जाना हुआ। उस समय मैंने आचार्य श्री को जोधपुर मे डॉ देवेन्द्र वोरा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर मे कैसर जैसे असाध्य रोगों के निदान और उपचार के बारे मे एक्यूप्रेशर जैसी अहिंसक पद्धति के सम्बन्ध मे विस्तृत चर्चा की। आचार्य श्री ने अपनी सारी शिष्य-मडली के समक्ष सारी बात सुनी एव मुझे सत-सतियो को इस विधि से परिचित करा उनके साधनामय जीवन मे सहयोग देने की प्रेरणा दी। उन्ही के आशीर्वाद से आज स्वावलबी अहिसात्मक चिकित्सा के क्षेत्र मे मै कुछ कार्य कर पा रहा हूँ।

वास्तव मे आचार्य श्री का जीवन अपने आपमे विराट् था। जिस उत्साह एव सजगता से साधना के पथ पर आप आगे बढ़े, उसी उत्साह से जीवन के अन्तिम समय में मृत्यु को महोत्सव मे बदल दिया। सथारे की अवस्था में अत्यधिक शारीरिक दुर्बलता के बावजूद तनिक भी प्रतिक्रिया नही कर समाज तथा शिष्य समुदाय से पूर्णरूपेण निस्पृही बन गये, जैसे किसी से कोई सम्बन्ध अथवा परिचय था ही नही।

आप अन्तिम समय देह मे रहते हुये देहातीत हो गये। आचार्य श्री के सम्पूर्ण जीवन मे शुभ भावनाओ के निम्नाङ्कित शब्द गुजित होते थे—

मत्त्वेषु मैत्री गणिषु प्रमाद, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभाव विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव॥

ऐसे परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा को शत शत वन्दन।

—चोरडिया भवन, गोल बिल्डिंग रोड, जोधपुर (राज)

■

मेरे परम आराध्य

• श्री अमरचद कासवा

आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा. का स्मरण आते ही मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठता है और हो भी क्यो नही, उन्होने मेरे जैसे पामर प्राणी को सन्मार्ग पर लगाया। ज्ञानीजन फरमाते हैं कि उपदेश के बजाय आचरण का प्रभाव अन्य व्यक्ति पर स्थायी व जीवन मे परिवर्तन लाने वाला होता है। ऐसा ही प्रभाव आचार्यप्रवर का मेरे जीवन पर पड़ा।

बात सवत् २०१७ के अजमेर चातुर्मास की है। पिताजी श्री मोतीलालजी कॉसवा के स्वर्गवास के पश्चात् इसी चातुर्मास मे स्वतत्र रूप से प्रथम परिचय हुआ। पूछा 'काई नाम है'? मैंने अर्ज किया 'अमरचद कासवा'। 'किणरो लड़को है ?' उत्तर दिया मोतीलालजी कासवा को । पुन पूछा 'धर्म ध्यान काई होवे ?' मैंने अर्ज किया 'एकाध माला बगैरह हो जावे।' 'आश्चर्य मिश्रित भाषा मे 'कठे मोतीलालजी, कठे तू उणारो पाट लियो है। ' मैंने अर्ज किया गुरुदेव फरमावो, कोई आज्ञा ? प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय होना चाहिये।

आज करीब ३७ वर्ष हो गये, अजमेर मे रहते हुए कभी स्वाध्याय सामायिक से वचित नही हूँ। आश्चर्य होता है उस महान् योगी के वचनो पर कि कितना ओज वाणी मे, शायद मैंने सोचा भी नही होगा कि मेरे जीवन मे सामायिक-स्वाध्याय की ज्योति प्रज्वलित होगी।

संवत् २०४२ माह सुदी २ , १० फरवरी १९८६ को आचार्य प्रवर का दीक्षा दिवस अजमेर मे मनाने का निश्चय हुआ। समय पर लाखन कोटड़ी पडाल पधारना हुआ। माह सुदी १ को रात को मैंने वही सवर किया। प्रात ३ बजे निद्रा त्यागी। विचार हुआ कि गुरुदेव जिनका मेरे ऊपर इतना उपकार है क्या श्रद्धा सुमन चढाऊँ? त्यागी जीवन से त्याग की ही प्रेरणा मिलती है। चिंतन चला कि सब आनन्द है, क्यो न शील व्रत ग्रहण किया जाय। प्रात सवर पालकर घर पहुँचा। धर्मपत्नी से सलाह की। सहज स्वीकृति मिली। व्याख्यान मे दोनो खड़े हो गये। हमारे साथ श्री मोतीलालजी कटारिया व श्री चादमलजी गोखरु भी थे। गुरुदेव ने तीनो को नियम करवाया। त्यागी महान आत्मा के श्रीमुख से दिलाये गये नियम का सहजता से पालन हो रहा है।

सवत् २०४३ के पीपाड़ शहर के चातुर्मास मे आयोजित शिविर मे आचार्य प्रवर ने फ़रमाया अमरचद अब आगे काई ?" मैंने अर्ज किया गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य। अत फरमाया 'जमीकद का कतई त्याग।' तबसे बराबर नियम का पालन सहजता से हो रहा है।

यों कह दूँ कि वे मेरे जीवन निर्माता थे, तो अतिशयोक्ति नही होगी। ऐसे महान् उपकारी गुरुदेव के चरणो मे भाव श्रद्धा युक्त शत-शत वन्दन।

बात सवत् २०३४ की है। अजमेर में चातुर्मास था आचार्यप्रवर का। भोजन-व्यवस्था का सयोजक मै था। इस वर्ष सवत्सरी २ मनाई गई।

मैं सन् १९६३ से स्वाध्यायी के नाते पर्युषण में सेवा देने जाता था, लेकिन भोजन-व्यवस्था की जिम्मेदारी के कारण जाना नहीं हुआ।

इसी वर्ष मेरे चौथे पुत्र चि विमल ने बीकाम (ऑनर्स) पास किया था। वह सी ए करना चाहता था। लेकिन अजमेर मे श्री राधेश्यामजी डाणी के आर्टिकल की जगह खाली नही थी। उसने एस के बिगावत के जाना प्रारम्भ किया, लेकिन सन्तुष्ट नही था। मै भी चिंतित था कि वह पढ़ना चाहता है और मै व्यवस्था नही कर पा रहा हूँ।

एक दिन रात्रि को आचार्यप्रवर के पास बैठा था। सहज बात चली, मैंने अपनी बात अर्ज कर दी। लेकिन कोई प्रत्युत्तर नही। देखिये , श्रद्धा आचार्यप्रवर के प्रति कैसे न हो। कुछ दिन ही पश्चात् श्रीमान् सपतराजसा डोसी सयोजक स्वाध्याय सघ अजमेर दर्शनार्थ पधारे। आचार्यप्रवर की सेवा मे खड़े थे। मै भी अचानक पहुच गया। सयोजक महोदय मुझे देखकर बोले - अमरचद सा इस बार आप पर्युषण मे सेवा देने नही पधारे। '

मैंने निवेदन किया कि भोजन-व्यवस्था की जिम्मेदारी के कारण नही जा सका। सयोजक महोदय ने फरमाया कि इस वर्ष त्रिचनापल्ली मे वर्षों से अदालती कार्यवाही मे स्थानक का कब्जा प्राप्त हुआ है। अत वहाँ दोनो सवत्सरी मनाने का निर्णय हुआ है।" इस बार पीपाड़ निवासी श्री जबरचदजी कोठारी को भेजा। अब आपको जाना है। मैंने अर्ज किया मुझे पहले भी इनकारी नही थी, अब भी नही, लेकिन भोजन-व्यवस्था की जिम्मेदारी के कारण असमर्थ हूँ।

यह वार्ता आचार्यप्रवर के समक्ष चल रही थी। बीच मे हस्तक्षेप करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया "ऐ तो काम होता रहसी।" फौरन मैंने मेरे साथी श्री सरदारमलजी बोहरा को बुलाया और १५ दिन के लिये भोजन-व्यवस्था सम्हला दी। कार्यक्रमानुसार त्रिचनापल्ली गया। बहुत आनन्द रहा। कन्या कुमारी तक यात्रा की । वापस लौटते समय इन्दौर ठहरा।

श्री छीतरमलजी कोठारी अजमेर वाले उस समय इन्दौर रहते थे। चर्चा वार्ता मे विमल के सीए की बात चली। कोठारी जी ने कहा कि एम एम मेहता एण्ड कम्पनी से बात करो। मेहता जी की बात सफल रही। योग अपने आप बन गया। अजमेर आया। विमल से बात हुई। शीघ्र ही रवाना होकर इन्दौर गया एव सी ए किया।

सोचता हूँ कि न तो आचार्य श्री त्रिचनापल्ली जाने के लिये सकेत करते, न जाता, न ही विमल सी ए करता।

बात सवत् २०४४ के चातुर्मास की है। मेड़तासिटी मे चातुर्मास की विनति हेतु अजमेर सघ पहुचा। मत्री श्री जीतमलजी ने विनति सेवा मे अर्ज की। आचार्यप्रवर ने फरमाया-" मै लाखन कोटड़ी से बधा हुआ नही हूँ।" बाहर आकर मैंने जीतमलजी से चर्चा की एव बताया कि अन्य सतो की तरह आप इनके विचारो मे परिवर्तन नही करा सकोगे। लाखन कोटडी नही विराजे तो फिर क्या फायदा? जीतमलजी ने कहा तुम देखे जाओ मै लाखन कोटड़ी ले आऊगा। चातुर्मास स्वीकृत हुआ। आचार्यप्रवर महावीर कॉलोनी पुष्कर रोड़ ही विराजे।

ऐसे महान् योगी को शत-शत वन्दन।

-३१०/४, महावीर भवन के पास, लाखन कोटड़ी
अजमेर (राज) ३०५००१

■

रत्न-चतुष्टय से सुशोभित युगप्रधान आचार्य

• श्री जशकरण डागा

रत्न चतुष्टय से जो मण्डित, जिनशासन उजियारे थे।
गगा यमुना जैसा सगम, ज्ञान क्रिया को धारे थे॥
दृढ आचारी पचाचारी, अप्रमत्त रहते क्षण-क्षण।
धन्य-धन्य हो दिव्य तपस्वी, स्वीकारो श्रद्धा के सुमन॥

जन-जन के श्रद्धा-केन्द्र युगपुरुष आचार्य श्री हस्ती का जीवन रत्नचतुष्टय—सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप का अपूर्व सगम था। यही कारण था कि जो भी उनके सम्पर्क मे एक बार भी आया, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नही रहा। उस महायोगी का ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप कैसा था ? इसी का कुछ उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

(१) ज्ञानज्योतिर्धर आगमवेत्ता - आचार्य श्री आगमो के गहन ज्ञाता, मर्मज्ञ तथा निर्मल ज्ञान व उत्तम मेधा के धारक थे। गहन तात्त्विक प्रश्नो का समाधान भी आप सटीक सदर्भ सहित कर, प्रश्नकर्ता को सतुष्ट करने मे पूर्ण समर्थ थे। उदाहरणार्थ एक घटना उल्लिखित्त की जाती है। एक बार आचार्य श्री टोक से विहार कर जयपुर पधार रहे थे। मार्ग मे लेखक ने निवाई पहुच कर स्वाध्यायी होने के नाते कुछ तात्त्विक प्रश्न सेवा मे रखे। आचार्य श्री अस्वस्थ थे। अत उन्होने कुछ प्रश्नो का समाधान दे शेष के लिये उनकी सेवा मे रह रहे आगमज्ञ प रत्न श्री हीराचन्द जी मसा. (वर्तमान आचार्य श्री) को सकेत कर दिया। वे प्रश्नो का समाधान देने लगे, किन्तु एक प्रश्न का और स्पष्ट समाधान देना आवश्यक लगा तो आप अस्वस्थ दशा मे विश्राम करते हुये भी उठ बैठे। आपने मेरे प्रश्न को ध्यान से सुना। मेरा प्रश्न था कि 'जिनमे मात्र सज्वलन की कषाय रह गयी है, छ काया के रक्षक है, दया और करुणा के अनन्य स्रोत है, ऐसे अणगार भगवतो मे भी, कृष्ण लेश्या होना आगम में बताया है, सो कैसे ?' आचार्य श्री ने इसका जो समाधान दिया उसका भाव इस प्रकार था - 'देव-गुरु-धर्म पर विशेष सकट या उपसर्ग आदि आने की दशा मे , प्रमत्तता के चलते मुनियो मे भी अशुभ योग आ जाते हैं तब सक्लिष्ट परिणामोदय से मुनि भी कुछ समय के लिए अशुभ लेश्याओ मे आ जाते है। फिर कृष्ण लेश्या के भी भाव अपेक्षा से अनेक प्रकार के होते हैं। जिनमे कृष्ण लेश्या के जघन्य प्रकार को मुनि स्पर्श कर सकते है। उदाहरण के लिए भगवती सूत्र शतक १५ मे, गोशालक का जीव तीसरे भव मे, विमल वाहन राजा बनकर श्रमणो को सताता था। उसने आतापना लेते, सुमगला अणगार को तीन बार रथ की टक्कर मार, नीचे गिरा दिया। इस पर सुमगला अणगार ने तेजो लेश्या से उसे भस्म कर दिया था, जो सातवी नरक मे जाकर पैदा हुआ था। इस प्रकार सज्वलन कषाय व प्रमत्तता भी कभी-कभी कृष्ण लेश्या को स्पर्श करने हेतु मुनि के लिये कारण बन जाते हैं। आचार्य देव के श्री मुख से ऐसा सटीक उत्तर श्रवण कर, सभी उपस्थितजन प्रमुदित हो उठे थे।

(२) निर्मल दर्शन-साधना के सुमेरु— आपकी दर्शनविशुद्धि की एक विशेषता थी कि सदैव आप ध्यान रखते कि किसी भी धर्म व उनके अनुयायियो के प्रति किसी प्रकार का गलत या उनको अखरने वाला व्यवहार न हो। इसका एक उदाहरण है। आचार्यप्रवर एक बार दूणी से टोक पधार रहे थे। मार्ग मे छाण ग्राम मे विश्राम करना था। विहार मे साथ होने से, मैंने छाण ग्राम मे आकर, साताकारी एक वैष्णव मन्दिर के तिबारे मे ठहराने का निश्चय किया। आचार्यप्रवर वहाँ पधारे और देवालय परिसर का अवलोकन कर, मुझे बुला उपालम्भ दिया। कहा— 'आप

एक वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं, यह स्थान कैसे चयन किया? मेरी स्थिति पुनः पुनः सीढियाँ चढ़ने उतरने की नही है, जब कि लघुनीत आदि देवालय की मर्यादानुसार यहाँ के परिसर मे भी नही किया जा सकता।' तदनन्तर आचार्यप्रवर ने उस साताकारी स्थान पर न ठहर कर एक सामान्य बाड़े में जो बस्ती से भी दूर था, जाकर रात्रि विश्राम किया।

(३) चारित्र-साधना के चूडामणि - आप अहर्निश, अप्रमत्त भाव से, सदा ज्ञान-ध्यान, जप-तप, मौन-लेखन आदि मे ही साधना रत रहते थे। जो भी आपके सम्पर्क मे एक बार भी आता, आपके तेजस्वी व्यक्तित्व एव चारित्र से प्रभावित हुए बिना नही रहता था। आचार्यप्रवर का अधिकाश रात्रि काल भी, ज्ञानध्यान, सूत्र-स्वाध्याय, माला, जप आदि मे ही व्यतीत होता था और बहुत अल्प समय आड़ा आसन करते थे। आपकी इस अप्रमत्त साधक -चर्या से प्रभावित हो, अन्य सम्प्रदायो के व अजैन गण भी आपके श्रद्धानिष्ठ भक्त हो गये थे। उदाहरण के लिए टोक के ही मन्दिरमार्गी समाज के एक प्रमुख श्रावक श्री बहादुर मलजी दासोत (जो जयपुर रहने लगे थे), आपके ज्ञान, ध्यान व चारित्र की प्रशसा सुन, लाल भवन , जयपुर में दर्शनार्थ आने लगे थे। वे कार्य व्यस्तता से कभी रात्रि के ग्यारह बजे, तो कभी प्रात चार बजे भी (जब समय मिल जाता) दर्शनार्थ लाल भवन पहुँचते तो सदा आचार्य श्री को पाट पर विराजे, साधनरत पाते थे। इससे वे बड़े प्रभावित हुए और आपके निष्ठावान भक्त बन गए थे।

(४) दिव्य तपोमूर्ति - आपकी तप साधना अपने आपमे बेजोड़ थी। यद्यपि आप बाह्य तप उपवास आदि विशेष नही करते थे, तथापि आपका समग्र जीवन प्रतिसलीनता व आभ्यन्तर तप स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग, जप व मौन साधना आदि से परिपूर्ण एक आदर्श तपोमूर्ति रूप था। परिणामत आपके जीवन मे अनेक लब्धियॉ अप्रगट रूप से विकसित हो गयी थी। जहॉ, जब जिस पर भी आपकी तनिक महर नजर होती, तो उसकी मनोकामना स्वत ही शीघ्र पूर्ण हो जाती थी। आप पर यह उक्ति सर्वथा घटित होती थी - "फकीरो की निगाहो मे, अजब तासीर होती है। निगाहे महर कर देखे, तो खाक अक्सीर होती है।"

आपकी तप-साधना की विशेष लब्धियों की अनेक घटनाएँ जग जाहिर हैं। जैसे आप सुदूर विराजित होते हुए भी निश्चित समय पर, आपका मागलिक सैंकड़ो किलोमीटर दूर रहते भी श्रद्धापूर्वक मनोभाव से परोक्ष श्रवण करने पर भक्तों के विविध दुःख व असाधारण रोग भी चिकित्सा कराए बिना दूर हो जाते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। यहॉ लब्धि विशेष की प्रतीक कुछ घटनाएँ प्रस्तुत है-

(क) टोंक मे पशु बलि को रुकवाना - एक बार आप टोक से निवाई होते, जयपुर पधार रहे थे। निवाई के निकट, आपने मूँडिया ग्राम मे विश्राम किया। वहाँ के निवासियो से आपको मालूम हुआ कि वहाँ पर प्रतिवर्ष रामनवमी को बणजारी देवी के मदिर मे पाडे की बलि चढाई जाती है। आपका नवनीत सम सत हृदय, यह कब बरदाश्त कर सकता था। आपने तत्काल सभी ग्राम वासियो को एकत्रित कर, उक्त पशु बलि न करने का एक तेजस्वी उद्बोधन दिया। आचार्यप्रवर के तपो तेजोमयी उद्बोधन से प्रभावित हो, वहाँ आए अधिकाश ग्रामीणो ने बलि न करने का सकल्प ले लिया। किन्तु कुछ असामाजिक तत्त्व, इसके लिये सहमत नही हुए। तब आचार्य देव ने मुझे (जो विहार मे साथ था) सकेत दिया। मै, टोक आकर जिला कलेक्टर व अन्य प्रशासनिक अधिकारियो से मिला। जीव दया ट्रस्ट की तरफ से उन्हे ग्राम मूडिया मे नियम विरुद्ध होने वाली पशु बलि को रोकने का ज्ञापन दिया। आचार्य देव के आशीर्वाद से तत्काल इस बलि को रुकवाने के आदेश जारी कराने मे सफलता मिल गयी। पिछले लगभग १२-१३ वर्षो से यह पशु बलि प्रतिवर्ष राज्यादेश जारी कराकर रोकी जा रही है।

(ख) हृदय रोग से मुक्ति- लगभग तीस वर्ष पूर्व की घटना है। मेरी धर्म सहायिका श्रीमती सुशीला देवी

डागा के अधिक अस्वस्थ हो जाने पर जयपुर ले जाकर सतोक बा दुर्लभजी अस्पताल मे डा. अशोक जैन (हृदय रोग विशेषज्ञ) को दिखाया। उन्होंने यात्रिक मशीनों से हृदय का निरीक्षण परीक्षण कर हृदय के दो वाल्व अवरुद्ध होना बताया, जिसकी पुष्टि मेरे भतीजे डा चन्द्रशेखर डागा ने भी, यात्रिक मशीनो से देख कर की। उपचार हेतु आपरेशन की सलाह दी गयी। उस समय जयपुर मे, त्रिमूर्ति चौराहे पर पूज्य आचार्यप्रवर बिराज रहे थे। हम दोनों प्रथम उन्ही के दर्शन करने गये। मेरा चेहरा देख आचार्य देव बोले- "आप सुस्त क्यो हो ? क्या बात है ?" मैंने धर्म सहायिका के हृदय के ऑपरेशन होने की बात कही। उन्होंने सारी बात ध्यान से सुनी और वे कुछ समय के लिये ध्यानस्थ हो गये। तदनन्तर बोले, चिन्ता की कोई बात नही है। मेरी धर्म सहायिका को कहा "फिक्र नही करना। सब ठीक होसी।" हम दोनो को निकट बुला, मगल पाठ सुनाया और पुन कहा चिंता नही करना सब ठीक होगा। हम आपरेशन की तैयारी करते हुए टोक लौट आये। टोक आकर मुख्य चिकित्साधिकारी टोंक के परामर्श से एक सामान्य गोली (एलट्रोक्सिन) भी देना प्रारम्भ किया। पन्द्रह दिन मे स्वास्थ्य काफी ठीक हो गया, ऑपरेशन का विचार स्थगित कर दिया। कुछ ही दिनो में हृदय रोग जाता रहा। आज करीब तीस वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी पूर्ण स्वस्थ है, और घर के सारे कार्य सानन्द करती है। जीवन में एक चमत्कार हो गया। यह सब हम पूज्य गुरुदेव की महती कृपा का फल ही समझते हैं।

मेरी तुच्छ बुद्धि, गुणो के सागर, इस युग की महान् हस्ती, आचार्य हस्ती के गुणों को व्यक्त करने मे एक अणु जितनी भी सक्षम प्रतीत नही होती है। फिर भी उस महापुरुष के महा उपकारो से उपकृत होने से इस अकिंचन की लेखनी, उनके गुण स्मरण हेतु प्रवृत्त हुई है।

डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज)

■

आत्म-बल का चमत्कार

२४ फरवरी १९५८ मिति फाल्गुन शुक्ला ६ स २०१४ को प रत्न उपाध्याय पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा अपने शिष्यो सहित अलवर से विहार कर ७ मील दूर स्थित बहाला ग्राम पधारे हुए थे। वहा पर दोपहर बाद करीब डेढ़ बजे की घटना है, जब कि महाराज श्री कोठरी के बाहर चबूतरे पर ध्यान को विराजे थे। ध्यान समाप्त होते ही महाराज सा की दृष्टि सामने गई और देखा कि मकान के बाहर २-३ आदमी लाठियाँ लेकर खड़े हैं और भीतर से घबराई हुई सी आवाज आ रही है। बाहर खड़े आदमी छप्पर की ओर देख रहे थे और भीतर से कोई छप्पर का घास हटा रहा था। कुछ अनुमान कर महाराज श्री उठे, साथ ही वैरागी राजेन्द्र आगे घर की ओर बढ़ कर बोले कि मारो मत । इतने मे दीवाल पर सर्प दिखाई पड़ा जो भीतर से लाठी द्वारा बाहर फेका जा रहा था। महाराज ने ओघा झोपड़ी के नीचे किया और एक गज भर लबा सर्प उस पर लिपट गया। महाराज श्री ग्राम के बाहर छोड़ने को ले चले। साथ मे अलवर के और भी २-३ भाई (जो कि दर्शनार्थ आए थे) ग्राम के ५-१० लोग जो वहा खड़े थे ,चल पड़े। रास्ते में म सा ने उसको हाथ से सहलाया। थोड़े आगे जाने पर वह उतरने लगा। म सा ने पीठ दबाये थोड़ी दूर सभाला और ग्राम के बाहर जाकर भूमि पर टिकाया तो मुह फाड कर वह कुछ उगलने लगा और देखते ही देखते एक बड़ा (करीब ९-१० इच लबा) चूहा उगल दिया। देखने वालो को बडा ताज्जुब हुआ। शायद सर्प को भी सतो के हाथ लगने पर हिंसा से घृणा हो गई हो। अस्तु । सर्प फिर ग्राम की ओर बढने लगा। महाराज ने २-३ बार रजोहरण से उसका मुह दूसरी तरफ किया, किन्तु उसकी इच्छा तो ग्राम की ओर ही जान को थी, अत महाराज ने उसे फिर ओघे पर उठाया और आगे छोड़ने को चले। रास्ते मे एक बार वह नीचे गिर पड़ा और पास ही घास मे छिप गया। रास्ते के पास होने से लोग भी निर्भय नही थे, उन्हे खतरा था, अत उसे हाथ से उठाकर ओघे की डडी पर रखा और आगे ले चले। आस पास मे कोई बिल न होने से महाराज उसे दूर ले गये ओर छोड़ दिया। वह वापिस ग्राम की ओर आने लगा तब ग्राम वालो ने भय वश दूर छोड़ने को कहा। म सा ने जब मना किया तो उसने २-३ बार फुफकार भी मारी और उछला कूदा। अत मे उसकी इच्छानुसार जाने को छोडकर म श्री देखते खड़े रहे और कहते रहे कि इधर नही उधर जाओ। वह भी समझ गया और कुछ दूर जाने पर एक खेत की तरफ चला गया। सुरक्षित स्थान मे चले जाने पर म सा भी पधार गये। इस घटना से ग्राम वाले भाइयो की पूज्य प्रवर, जैन धर्म एव अहिंसा पर बड़ी श्रद्धा हुई और वे पूज्य श्री के आत्मबल एव आत्म विश्वास की बड़ी सराहना करने लगे। यह है प्राणिमात्र पर समभाव एव आत्म बल की एक आँखो देखी घटना । (जिनवाणी अप्रेल १९५८ से साभार)

चार्टर्ड एकाउन्टेट , अलवर

उच्च साधक एवं दयालु सन्त

● श्री बस्तीमल चोरड़िया

(१) ज्ञान-दर्शन रूप स्वाध्याय और चारित्र रूप सामायिक-साधना के प्रबल प्रेरक आगम ज्ञाता इतिहास मार्तण्ड ध्यानयोगी परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज सा कृष्ण पक्ष की हर दशमी को अखंड मौनव्रत की साधना करते थे। इसी प्रसग मे मुझे सवत् २०२१ आसोज कृष्णा दशमी की भोपालगढ़ चातुर्मास की एक अविस्मरणीय घटना याद आ रही है।

आचार्य श्री स्थानीय तालाब पर स्थित दादाबाड़ी मे रात्रिवास व ध्यान-साधना के लिए पधारे। आचार्य श्री जब ध्यानरत थे, तब रात्रि के लगभग ८ बजे एक भक्त वहा पर आया। उसके हाथ मे टार्च भी थी। वह उच्च स्वर मे बोलते हुए आचार्यश्री जहा ध्यानरत थे, वहा पहुँचा और कर्कश स्वर मे अनर्गल प्रलाप करने लगा। जाते-जाते यह चेतावनी भी दे गया कि कल से मुझे यहा नही मिलने चाहिए। आचार्यश्री अपने ध्यान मे इतने तल्लीन थे कि उन पर इस कटु वातावरण का कोई असर नही हुआ, निर्विघ्न रूप से रात्रि-ध्यान करते रहे।

आचार्य श्री के इस धैर्य व सागर के समान गभीरता से वह कटु वातावरण भी मधुरिम ही रहा। गाव वालों को दूसरे दिन जब इस घटना का पता चला तो आचार्यश्री से इस बारे मे जानना चाहा, पर आचार्यश्री के चेहरे पर कोई विपरीत भाव नजर नही आया। इस अविनीत भक्त के परिवार वालो ने आचार्यश्री से इस दुर्व्यवहार के लिए क्षमा भी मागी पर आचार्यश्री तो सागरवर गभीरा थे।

(२) आचार्य भगवन्त बीजापुर से विहार कर बागलकोट पधार रहे थे। कोरनी ग्राम मे नदी के बाहर सहज बनी एक साल मे विराजमान थे। वहाँ देखा कि गाव मे रूढ़िवादी लोगो की मान्यता थी कि नदी पर बकरे की बलि से गाव मे शान्ति रहती है। इस मनगढन्त मान्यता के कारण गाव की शान्ति के लिए बकरा उस दिन बलि चढ़ाया जाना था, जोरो से तैयारिया चल रही थी। आचार्य भगवन्त ने जब एक भक्त से सुना तो सहज भाव से उस भक्त द्वारा गाव वालो को बुलवाया व अहिसा का उपदेश दिया। लोगो को धर्म का मर्म समझाया। लोगो ने अहिंसा मे धर्म के मर्म को समझा व उस दिन होने वाली बकरे की बलि हमेशा के लिए रुक गई।

(३) परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का भीलवाड़ा मे इन्दौर चातुर्मास खुलने के बाद आचार्यश्री का विहार इन्दौर की तरफ होने लगा। आचार्यश्री के दर्शनार्थ व विहार मे साथ रहने के कारण इन्दौर से मन्दसौर होकर कई बार आने-जाने का क्रम रहा। आचार्य श्री मन्दसौर करीब सुबह दस बजे पधारे। उस दिन एक श्रावक के परिवार का एक नन्हा बालक दूसरी मजिल से करीब ८ बजे गिर पड़ा। बेहोशी की हालत मे था तथा वहा के डाक्टरो ने इलाज के लिए मना कर दिया। बाहर बड़े हॉस्पिटल मे भर्ती कराना पड़ेगा, इसी तरह का विचार चल रहा था, तब एक अन्य श्रद्धालु भक्त ने कहा—"मौनी, ध्यानी, सयम-साधना के पथिक आचार्य भगवन्त से मागलिक तो सुनवा दो, जिनकी मागलिक सम्मेलन मे सभी बड़े सतो व आचार्यों ने अपनी अपनी दिशा मे विहार करने के पहले सुनी थी।"

उस भक्त ने नन्हें बालक को आचार्य भगवन्त से मागलिक सुनवाया। कुछ ही क्षणो में बालक ने आखे खोली व होश मे आने लगा, धीरे-धीरे यथावत् होने लगा। आचार्य भगवन्त १५ दिन विराजे। नदीषेणजी म.सा की दीक्षा का प्रसग भी यहीं बना। उसी भक्त ने सारा सचालन किया।

–१८३, मसूरिया, सेक्शन, ७ पत्रकार कॉलोनी, जोधपुर

व्यक्ति में छुपी प्रतिभा के ज्ञायक और उन्नायक

• श्री नौरतन मेहता

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा अप्रमत्त तप पूत साधक महापुरुष थे। उस दिव्य-दिवाकर में समाज हित -चिन्तन की शुभभावना थी। उनके सान्निध्य मे आने वाला व्यक्ति गुरुकृपा से कैसे निहाल होता, इसका उसे पता तक नही चलता और वह अपनी प्रतिभा को सहज विकसित करता जाता।

वि स २०२० मे आचार्य भगवन्त का पीपाड़ सिटी चातुर्मास था। मैं उस समय राजकीय सेवा मे शिक्षक पद पर रहकर कार्य करता था। मेरी माता श्री नित्य-प्रति प्रवचन श्रवण करने एव सत्सग सेवा मे जाया करती थी। करीब आठ नौ दिन तक मुझे गुरु चरण-सेवा मे न जाते देख मातृ हृदय से निकला—"इत्ता मोटा महाराज अठे बिराज रहिया है, तू चल मेरे साथ।"

माँ की ममतामयी बात टालने की मेरी भावना नही थी, अत मैं मध्याह्न मे उनके साथ गुरु चरण-सेवा मे पहुँचा। वन्दन-नमन कर पूज्य गुरुदेव के समीप बैठते ही , करुणाकर ने एक बार माताश्री की ओर देखा, फिर मेरी ओर देखकर पूछा - "तू क्या करता है ?"

मेरा उत्तर था - "बाबजी ! मैं पड़ौस के गाव मे मास्टर हूँ।"

"अच्छा , तो तुम शिक्षक हो ?"

पूज्य गुरुदेव का दूसरा प्रश्न था - "तुम्हारे अक्षर कैसे है ?"

मैंने उत्तर मे कहा - "जैसे दूसरो के अक्षर हैं वैसे मेरे। "

पूज्य गुरुदेव ने आत्मीय भाव से फरमाया - "जरा लिखकर बताओ तो !" मैंने वही से कागज-पेन लेकर कुछ पक्तियाँ लिखी और गुरुदेव के सम्मुख कागज रख दिया।

पूज्य गुरुदेव को शायद मेरे अक्षर ठीक लगे, अत बड़े प्रेम से कहा - "नौरतन ! तुम दिन मे एक-डेढ़ बजे तक स्कूल से आ जाते हो, फिर थोड़ा समय निकालो तो तुम्हारा कुछ उपयोग हो सके।"

पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणो मे बात का वह मेरा प्रथम अवसर था। मै आचार्य भगवन्त की आत्मीयता से इतना आकर्षित हुआ कि स्कूल से लौटने के बाद भोजन करके सीधा राता उपाश्रय पहुँचता। वन्दन-नमन करने के साथ पूज्य गुरुवर्य लेखन का कोई काम सौंपते और मैं वही बैठकर उसे करता रहता।

मैं उस समय सकेत लिपि के मात्र अक्षर जानता था। रविवार को पूज्य गुरुदेव का प्रवचन सुना और मैंने श्रीचरणो मे अपनी बात रखते निवेदन किया - "भगवन् ! मेरी यदि स्पीड होती तो मैं आपका प्रवचन लिखता। "

मेरी रुचि व भावना को बढ़ावा मिले इस विचार से गुरुवर्य ने फरमाया - "तू मेहनत करे तो लिख सकता है।" पूज्यश्री के वचनो मे न जाने क्या जादू था कि मैं दूसरे दिन शार्टहैण्ड की कॉपी - पेंसिल लेकर प्रवचन सभा मे बैठ गया। कुछ लिखने मे आया, कुछ छूट गया। सकेतों को हिन्दी रूपान्तर करने बैठा तो कर नही सका।

दूसरे दिन अपनी कमजोरी बताते मैंने आचार्य भगवन्त के चरणों में निवेदन किया - "गुरुदेव ! सकेत लिपि

मे लिखना मेरे लिए सभव नही है।" पूज्य गुरुदेव ने फरमाया - "मेहनत से क्या नही होता ? तू हिम्मत मत हार।"

पूज्य गुरुदेव के वचनो से मेरा साहस बना और मैं पुन लिखने लगा। चार दिन के बाद मेरे लेखन मे कुछ सुधार आया।

चार - पाच दिन बाद मेरी गति बढ़ी, आत्मविश्वास जगा और गुरु कृपा से हाथ मे शक्ति का सचार हुआ, जिससे मै प्रवचन को नोट कर सका। पीपाड़ चातुर्मास के करीब सौ प्रवचन मैंने लिखे। पीपाड़ के पश्चात् भोपालगढ़, बालोतरा और अहमदाबाद चातुर्मास में मैंने प्रवचन-लेखन के साथ पत्राचार का काम किया।

आचार्य भगवन्त के कृपा प्रसाद से मुझमे आत्म-विश्वास जगा और मै प्रवचन आलेखन-सम्पादन के साथ पत्राचार मे यत् किंचित् सफलता अर्जित कर सका, उसमें पूज्य गुरुदेव का उपकार जीवन पर्यन्त भूल नही सकूँगा। आचार्य भगवन्त व्यक्ति-व्यक्ति मे छुपी प्रतिभा विकसित करने वाले युगपुरुष रहे, जिन्हे आने वाली पीढ़ी श्रद्धा से स्मरण करेगी।

–अ भा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ कार्यालय,
घोड़ों का चौक, जोधपुर

■

सवाईमाधोपुर क्षेत्र में कायाकल्प

• श्री चादमल बोथरा

विक्रम सवत् २०३१ का प्रसग है। परम पूज्य आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी महाराज साहब चातुर्मास काल के प्रारभ होने से पूर्व अपने विद्वान मुनि-मण्डल के साथ कोटा विराज रहे थे। धर्म-ध्यान,तपस्या आदि के ठाठ लग रहे थे। बाहर से अनेक श्रावक-सघ चातुर्मास की विनति हेतु पधार रहे थे। कोटा श्री सघ ने भी उस वर्ष का चातुर्मास कोटा को प्रदान करने की अत्यन्त आग्रहपूर्ण विनति की थी। प्रतिदिन व्याख्यान समाप्ति पर यह क्रम चलता था। किन्तु हम कोटा के श्रावकगण अपनी विनति भी प्रतिदिन दोहराते रहते थे और हमे पूर्ण आशा भी स्वीकृति की। तभी सवाईमाधोपुर श्री सघ भी चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ और आचार्यप्रवर की सेवा मे अत्यन्त भावपूर्ण विनति की। तब तक वहा स्थानक आदि की भी पर्याप्त सुविधा नही थी। उस समय तक प्रमुख जैन सतो का विहार भी उधर कम ही हुआ था, परन्तु सवाईमाधोपुर श्री सघ के पधारने के पश्चात् आचार्य श्री के मुखारविन्द से इस वर्ष का चातुर्मास सवाईमाधोपुर को प्रदान करने की स्वीकृति सुनकर कोटा श्री सघ स्तब्ध रह गया। किन्तु यह भी एक सिद्ध तथ्य है कि आचार्यप्रवर का स २०३१ का यह चातुर्मास इस सपूर्ण क्षेत्र के लिए वरदान सदृश सफल रहा। इस चातुर्मास ने इस पूरे क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया। इस चातुर्मास मे जहाँ शहर के बस स्टेण्ड पर स्थित बसल भवन मे सन्त-मण्डल ठहरा था तथा भवन के बाहर पाटो पर त्रिपाल के नीचे व्याख्यान की व्यवस्था थी। आज वही क्षेत्र भारत भर के अग्रणी धार्मिक क्षेत्रो मे अपना स्थान बना चुका है। वहाँ के अनेक स्वनाम धन्य स्वाध्यायी बन्धु प्रतिवर्ष दूरस्थ क्षेत्रो मे पधार कर धर्मोद्योत कर रहे है। वहा एक सर्व सुविधापूर्ण सुन्दर स्थानक भवन का निर्माण हो चुका है और वहाँ के श्रावकगण अपने क्रिया कलापो द्वारा हम सबके आदरणीय बन चुके हैं।

यह घटना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हमारे आचार्यप्रवर एक भविष्य द्रष्टा थे और उन्ही के पावन सान्निध्य का यह प्रतिफल है कि सवाईमाधोपुर के सम्पूर्ण क्षेत्र मे एक सफल धार्मिक क्रान्ति का प्रकाश फैल गया है।

ऐसे भविष्य-द्रष्टा को शत शत नमन।

–कोटा साडी केन्द्र, कटला मार्केट, जयपुर

• श्री रामदयाल जैन सराफ

आचार्य भगवत पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का पोरवाल क्षेत्र पर असीम उपकार है। आचार्य भगवत का पदार्पण दो बार इन क्षेत्रों में हुआ। इस क्षेत्र की [illegible] स्थिति थी। आहार की अनुकूलता नही थी, प्रतिक्रमण के जानकार बहुत ही कम थे। अध्यापको की सख्या अधिक थी। दीर्घद्रष्टा आचार्यप्रवर ने अध्यापकों का उपयोग स्वाध्याय क्षेत्र मे हो, ऐसा चिंतन कर सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की। अनेक स्वाध्यायी तैयार हुए। पौष शुक्ला १४ सन् १९६८ को श्यामपुरा (धर्मपुरी) में आचार्य भगवन्त के सान्निध्य मे श्री श्वे स्था जैन स्वाध्याय सघ जोधपुर की शाखा सवाईमाधोपुर का शुभारभ श्री चौथमलजी जैन (अध्यापक) के सयोजकत्व मे हुआ। तब से अनेक स्वाध्यायी पर्युषण सेवा मे जाने लगे। आचार्य भगवन्त ने अनेक परीषहो को सहन करते हुए सामायिक-स्वाध्याय का शखनाद गुजाया।

आचार्य भगवन्त के चरण कमल पल्लीवाल क्षेत्र को पावन कर रहे थे, उस समय गगापुर सिटी में होली चातुर्मासिक पर्व पर श्री सघ, सवाई माधोपुर ने १९७४ के वर्षावास की भावभीनी विनति प्रस्तुत की। आचार्य भगवत ने दूरदर्शिता से विचार कर १०१ स्वाध्यायी तैयार करने की शर्त के साथ चातुर्मास की स्वीकृति के भाव फरमाये। सघ ने आचार्य भगवन्त की प्रेरणाओ को सहर्ष स्वीकार किया, अन्तत चातुर्मास का सुयोग सवाईमाधोपुर को मिल गया। वह चातुर्मास अभूतपूर्व था जिसमे १०१ से भी अधिक प्रतिक्रमण वाले तैयार हुए एव अनेक स्वाध्यायी पर्युषण मे सेवा देने गए। इस चातुर्मास से सवाईमाधोपुर पोरवाल क्षेत्र की ख्याति बढ़ी। स्थान-स्थान पर सामायिक, स्वाध्याय होने लगे। खुशहाली भी बढ़ने लगी। वर्षीतप के अधिकतम पारणे सवाईमाधोपुर क्षेत्र मे हुए।

आचार्य भगवन्त की इस क्षेत्र पर महती कृपा रही। सन् १९८८ मे चातुर्मास के लिए राजधानी जयपुर के महावीर नगर के लिए पुरजोर विनती थी, क्योकि भगवन्त का स्वास्थ्य निर्बल था, विहार करने मे बड़ी कठिनाई थी। स्थिरवास के लिए भी सघ ने निवेदन किया। किन्तु आचार्य भगवन्त ने इस क्षेत्र पर महान् कृपा कर सवाई माधोपुर शहर की विनति को सम्मान देकर १९८८ का चातुर्मास स्वीकार किया। चिकित्सको ने विहार के लिये पूरी तरह से मना कर दिया था, किन्तु आचार्य भगवन्त की कृपा इस क्षेत्र पर पूरी-पूरी थी। दो सतो के हाथ के सहारे भगवन्त ने जयपुर से सवाईमाधोपुर की ओर भीषण गर्मी मे विहार किया। वह दृश्य देखने का सौभाग्य मुझे भी मिला। अनेकानेक परीषहो को सहन करते हुए आचार्य भगवन्त का सवाईमाधोपुर का १९८८ का द्वितीय चातुर्मास धर्मध्यान एव अनेकानेक उपलब्धियो के साथ सम्पन्न हुआ।

यह हमारा तथा हमारे क्षेत्र का परम सौभाग्य रहा जो हमे ऐसे महान् परोपकारी दीर्घद्रष्टा आचार्य भगवन्त का गुरु रूप मे सान्निध्य प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन्त जिनका मेरे जीवन पर अनत-अनत उपकार है, पुन गुण स्मरण करता हूँ।

–सर्राफा बाजार, सवाई माधोपुर

■

स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा

● श्रीमती मोहनी देवी जैन

आचार्यप्रवर का सवाई माधोपुर के महावीर भवन मे चातुर्मास चल रहा था। तप-त्याग मे सभी भाई-बहिन उत्साह पूर्वक भाग ले रहे थे। मेरा भी तपस्या करने का मन हुआ। उन दिनो पर्युषण प्रारम्भ होने वाले थे। मैं बेले का प्रत्याख्यान करने के लिये आचार्य श्री की सेवा मे पहुँची। तो गुरुदेव ने फरमाया -"बाई, पर्युषण पर्व मे धर्माराधन कराने के लिये खिजूरी ग्राम मे आवश्यकता है।" मैं गुरुदेव की भावना को समझ गयी। मैं इससे पूर्व कभी किसी अन्य क्षेत्र मे पर्युषण पर्व पर सेवा देने हेतु नही गई थी, अत. मै घबरा सी गई। मै जैसे ही मना करने की हिम्मत जुटा रही थी कि आचार्यप्रवर ने प्रेरणा दी कि बहिन हिम्मत से जिन शासन की सेवा का कार्य करो। उन्होने अपने दोनो हाथों के सकेत से जो हिम्मत बँधाई, उसके कारण मैं साहस करके एक अन्य बहन रेखा जैन (अब रक्षिता श्री जी म सा) के साथ खिजूरी ग्राम में पहुची। वहाँ पर जो स्वाध्यायी पहले नियुक्त थे, वे किसी कारण से नही पहुच सके थे। हमने वहाँ प्रार्थना, सूत्र-वाचन, प्रतिक्रमण आदि के अलावा लीलावती चरित्र एव अन्य पुस्तको का वाचन-विवेचन किया। जिससे सभी श्रावक-श्राविकाए बहुत प्रसन्न हुए। हमे भी आत्म-विश्वास का अनुभव हुआ और पर्युषण पर्व मे हुए धर्म आराधन को देखकर आनन्द का अनुभव हुआ। मैंने यह समझ लिया कि मेरे उस बेले के तप की अपेक्षा धर्म-आराधन का यह कार्य उत्कृष्ट है। सवाई माधोपुर लौटकर मैंने आचार्य भगवन्त की सेवा मे पर्वाराधन का सारा विवरण प्रस्तुत किया। गुरुदेव प्रसन्न हुए और मुझे प्रतिवर्ष पर्युषण मे सेवा देने के लिये प्रेरित किया। गुरुदेव की इस प्रेरणा के फलस्वरूप मुझमे आत्म विश्वास सुदृढ हुआ। अत मैं तब से प्रतिवर्ष पोरवाल क्षेत्र और महाराष्ट्र क्षेत्र मे बिना हिचकिचाहट के पर्वाराधन हेतु स्वाध्यायी के रूप मे सेवा दे रही हूँ।

-रघुनाथजी के मन्दिर के पास,
आलनपुर, सवाई माधोपुर (राज)

■

गुरुवर की महती अनुकम्पा

• श्री पारसचन्द जैन

परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा की हमारे पोरवाल क्षेत्र पर विशेष अनुकम्पा रही है।

भगवन्त प्रथम बार १९६८ मे शेषकाल में यहाँ पधारे थे। इसी वर्ष यहाँ श्रमण सघ के आचार्य राष्ट्र सत श्री आनन्द ऋषि जी म.सा तथा समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा का शुभागमन भी हुआ। मैं उस समय बहुत छोटा था, पर मुझे अभी भी स्मरण आता है कि आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा ने प्रवचन सभा मे एक प्रश्न किया था- सज्ञा कितने प्रकार की होती है ? मैंने उत्तर देने के लिये हाथ खड़ा किया, तो मुझसे जवाब के लिये कहा गया, मैंने तीन प्रकार की (स्कूली ज्ञान वाली) संज्ञा बता दी, हालाकि गुरुदेव (आहार सज्ञा, भय सज्ञा आदि चार सज्ञाओं) के बारे मे पूछ रहे थे। उस प्रवचन सभा में यहाँ के जैन समाज के श्रावको की धार्मिक भावना देखकर ही गुरुदेव ने सभवत इस क्षेत्र मे चातुर्मास करने का मानस बना लिया जिसकी परिणति १९७४ में हो पायी।

गुरुदेव के प्रथम चातुर्मास के पूर्व हमारे पोरवाल समाज के बधु अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रो मे रहते थे, वही परचून, कपड़े आदि की दुकान तथा खेती के सहारे अपनी जीविका चलाते थे। धार्मिक सस्कार तो क्षेत्र मे पहले से ही थे, परन्तु साधु-साध्वियो के दर्शनार्थ जाने का बहुत कम प्रचलन था, क्योकि इस तरह की प्रभावना भी कम होती थी तथा आय के साधन भी सीमित थे, परन्तु १९७४ के चातुर्मास के बाद आचार्य भगवन्त की ऐसी कृपा बनी कि छोटे से छोटा तथा बड़े से बड़ा श्रद्धालु खर्च की परवाह नही करता हुआ सन्त-सतियो के दर्शनार्थ जाने लगा, आचार्य भगवन्त का चातुर्मास चाहे बालोतरा हुआ हो, जलगाव हुआ हो या मद्रास, जहाँ-जहाँ भी भगवन्त पधारे, हमारे इस क्षेत्र के श्रद्धालु भी गुरुदेव के दर्शनार्थ जाते रहे।

मेरा तो ऐसा मानना है कि गुरुदेव के यहाँ चरण पड़ने के बाद मानो हमारे पोरवाल बधुओं ने चहुँमुखी उन्नति की है।

• भगवान से साक्षात्कार

सन् १९८८ के आचार्य भगवन्त के सवाईमाधोपुर चातुर्मास मे प्रख्यात चिन्तक डॉ महेश चन्द्र शर्मा (राज्य सभा सदस्य तथा सचिव दीनदयाल शोध सस्थान, नई दिल्ली) दर्शनार्थ महावीर भवन में पधारे थे। पूर्व परिचय था, इसलिये मै भी उनके साथ ही था। मैंने गुरुदेव को उनका परिचय कराया तथा यह भी बताया कि आप कॉलेज की नौकरी छोड़कर राष्ट्र सेवार्थ निकले है। पूज्य प्रमोद मुनि जी म.सा का भी विद्यार्थी जीवन मे उनसे घनिष्ठ सम्पर्क था।

आचार्य भगवन्त डा. महेशजी को प्रेरणा दे रहे थे। मैं दूर खड़ा था, परन्तु मुझे भी गुरुदेव के श्रीमुख से यह सुनाई दिया कि समाज के उपेक्षित लोगो की सेवा भी करते हो या नही, मैंने बीच मे यह कहने का प्रयास किया कि बाबजी यह तो जीवनदानी व्यक्ति हैं जिनका लक्ष्य ही उपेक्षितों की रक्षा करना है, परन्तु मुझे डा महेशजी भाई सा. ने रोक दिया और चुप रहने का इशारा किया। खैर आचार्य भगवन्त से आशीर्वचन लेने के पश्चात् रास्ते में मैंने डा.

[illegible] से पूछा, आपने मुझे पूरी बात स्पष्ट क्यों नही करने दी। इस पर वे बोले, पारस, तुझे पता नहीं है, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं भगवान् से साक्षात्कार कर रहा हूँ, धन्य है ऐसे महापुरुष !

–पार्षद नगर पालिका, बे. एम. बी, सवाई माधोपुर(राज.)

निस्पृह एव निर्भय योगी

• श्री ज्ञान मुनि

• गुरु आम्नाय के प्रति निस्पृह

स्थानकवासी समाज मे गुरुधारणा (गुरु आम्नाय) की परम्परा रही है। इन वर्षो मे यह परम्परा भी कभी-कभी विवाद एव विद्वेष का कारण बन रही है। एक परम्परा के श्रावक को दूसरी परम्परा के सत जब गुरु धारणा करवाते है तो विद्वेष, विवाद एव क्षोभ का वातावरण बनता देखा जाता है। आचार्य भगवन्त इस विषय मे बहुत सतर्कता एव निस्पृहता रखते थे। गुरु धारणा करवाने से मेरे भक्त बढ़ जायेगे, प्राय धारणा है, पर वे अपने भक्तो को बढ़ाने की इस परम्परा से परे ही रहते थे। दो प्रसग मुझे ध्यान मे है-

(i) अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री बस्तीमलजी मेहता अपनी बहिन (स्व भोपालचन्द जी सा लोढ़ा के पुत्र स्व डा लक्ष्मी चन्द जी सा की धर्मपत्नी) के कारण प्राय जोधपुर आते रहते थे तथा बाद मे सवत् २०२३ मे आचार्य श्री के अहमदाबाद चातुर्मास मे आचार्य श्री के अत्यन्त निकट सम्पर्क मे आये। आचार्य भगवन्त के महान जीवन से प्रभावित होकर वे पुन पुन गुरु धारणा करवाने की विनति करने लगे। किन्तु उनकी पूर्व परम्परा से आचार्य श्री परिचित थे, अत वे उनकी विनति को टालते रहे। गुरु धारणा नही करवाई। २०३४ में श्री बस्तीमल जी मेहता जोधपुर आये। पुन गुरुधारणा के लिये हठाग्रह करने लगे, पर आचार्य श्री ने हसते हुए कहा कि यह तो हठीला भक्त है। श्री बस्तीमल जी ने मुझे वार्तालाप मे कहा —"दूसरे सत होते तो कब की गुरुधारणा करवा देते। कोई-कोई तो हाथ धोकर के गुरुधारणा के लिये पीछे ही पड़ जाते है, पर गुरुदेव है कि बार-बार कहते हुए भी हमारी सुनवाई नही करते, पर गुरुधारणा गुरुदेव भले न भी करावे, मेरी आस्था पहले से अधिक दृढ़ ही हुई है।"

(ii) डेह निवासी श्रीपालचन्द जी बेताला भी आचार्य भगवन्त के २०२६ के नागौर वर्षावास मे सम्पर्क मे आये तब से ही वे गुरुधारणा देने के लिये पुन पुन प्रार्थना करते रहे। वे कहते रहे, गुरुदेव टालते रहे। सवत् २०४० मे आचार्य श्री का वर्षावास जयपुर मे था। तब तक श्रीपालचन्द जी भी सपरिवार जयपुर मे बस गये थे। श्री सिरेहमल जी नवलखा के बगले पर (जहाँ आचार्य भगवन्त विराज रहे थे) एक दिन श्रीपाल चन्द जी अड़ गये। मुझे गुरुधारणा करवायेगे तभी यहाँ से जाऊँगा नही तो बैठा रहूँगा। मैं उनकी बात सुन रहा था। मैने सहज भावुकतावश आचार्य भगवन्त से अर्ज की—"भगवन् उन्हे गुरु धारणा करवा दे।" आचार्य श्री ने स्मित हास्य बिखेरते हुए फरमाया—"आप इनके बगैर मुआवजे के वकील बने है।" पर इतना कहकर फिर टाल गये। हठीला भक्त भी मानने वाला नही था। आखिर आचार्य श्री ने बेताला जी को फरमाया कि आपके पिताजी श्री मानमल जी बेताला स्वीकृति देगे तब गुरुधारणा दी जा सकती है। आखिर डेह से श्री मानमल जी बेताला के आने पर, उनके अर्ज करने पर भक्त का मन भगवन्त को रखना पड़ा। आज की परिस्थिति मे ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते है।

(iii) आचार्य भगवन्त का २००२ मे मेड़तासिटी मे चातुर्मास था। चातुर्मासोपरान्त आचार्य श्री विचरण करते हुए बड़ी रीया पधारे। बड़ी रीया आचार्य श्री सायकाल अचानक पधारे तथा सर्दी के दिन थे, सूर्य अस्त होने में थोड़ा ही समय था। उस समय बड़ी रीया में स्थानक नही था। अत मकान की गवेषणा कर ही रहे थे, तब एक

अनजान भाई ने एक सूना मकान बताया। वह मकान वर्षों से बद रहता था । कोई भी गृहस्थ उसमें प्रवेश करते भी डरता था। रात्रि में तथा कभी-कभी दिन में भी उस मकान से डरावनी आवाजे आती रहती थी। लाल हवेली के नाम से प्रसिद्ध भूतहा हवेली अन्दर से डरावनी ही थी। पर आचार्य श्री तो आज्ञा लेकर उसमे ठहर गये। थोड़ी ही देर मे जब श्रावको को ज्ञात हुआ तो वे दौड़े दौड़े आये तथा वहाँ ठहरने के लिये मना करने लगे। पर आचार्य श्री ने कहा कि आप कोई मत घबराओ। मेरा तथा किसी का कुछ भी अनिष्ट नही होगा। दूसरे दिन प्रात भक्तो ने आचार्य श्री के तथा सब सतों के सकुशलता मे दर्शन किये तथा रात्रि में क्या हुआ, पूछने लगे। आचार्य श्री ने मद-मद मुस्कान बिखेरते हुए फरमाया कि सब आनन्द है तथा यहाँ रहने वाले को घबराने की जरूरत नही है। तब से लेकर आज तक भी उस हवेली मे रहने वाले निर्भय रहते हैं, किसी प्रकार का कोई विक्षेप अब वहाँ सदा के लिये मिट गया है। यह बात बड़ी रीया के जैन ही नही अनेक पुराने इतर समाज के लोग भी कहते है।

(iv) सिद्ध योगी –आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि में सवत् २०४० में जयपुर वर्षावास के बाद किशनगढ़ की ओर विहार हुआ। मै वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म सा. के साथ था। जयपुर से चलकर बीच मे दूदू से १२ किमी दूर पालुखुर्द पहुचे तो रात्रि मे मुझे अचानक पेट में तीव्र दर्द हुआ। दर्द बढ़ता ही जा रहा था किसी तरह से दूदू पहुचे। वहाँ सामान्य उपचार किया, किन्तु लाभ नही हुआ। इलाज चलता रहा। करीब सप्ताह भर बाद सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ डा एस आर मेहता आये तथा फौरन उन्होंने निदान किया कि एपेडिक्स का आपरेशन करवाना पड़ेगा, अत या तो जयपुर लौटे अथवा अजमेर मे आपरेशन सभव होगा। आपरेशन के नाम से ही मुझे घबराहट हुई। २-४ दिनो मे ही आचार्य भगवन्त भी दूदू पधार गये। मैंने अर्ज की –“भगवन्त आप ही मेरा उपचार करावे। दर्द की स्थिति मे मैं कब तो अजमेर पहुचूँगा या कब जयपुर लौटूँगा।” ऐसी स्थिति मे एक दिन मै गुरुदेव के समक्ष रो पड़ा। भगवन्त ने प्यार से मुझे पास सुलाया (दिन मे प्रात ९ बजे) तथा मन ही मन कुछ स्तवन जैसा गुनगुनाते हुए मेरे दर्द वाले स्थान पर धीरे-धीरे सहलाते रहे। करीब आधा घटा बाद ही मैंने अनुभव किया कि दर्द काफूर हो चुका है तथा मैं अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगा। उसके बाद न आपरेशन हुआ न ही उस प्रकार की पीड़ा ही हुई। ऐसा था भगवन्त का करुणापूर्ण हृदय तथा ऐसी थी उनकी प्रकृष्ट साधना।

(v) उदारता - श्रमण सघ से पृथक् होने के बाद आचार्य भगवन्त का २०२८ मे पहली बार जोधपुर मे वर्षावास हो रहा था। उस वक्त कुछ लोगो ने जोधपुर मे ही सिंहपोल स्थानक मे अन्य सतो का वर्षावास करवाया। हालाकि बाद मे वे भी श्रमणसघ मे नही रह पाये। वातावरण कुछ कुछ तनाव एव असमजस जैसा था। निश्चित समय पर आचार्य श्री जोधपुर पधार गये। दूसरे सत भी वर्षावास हेतु पधार गये। आचार्य भगवन्त ने जोधपुर मे प्रवेश के पहले ही प्रवचन मे फरमाया कि जिस-जिस भाई के जो स्थान समीप हो, वह वही जाकर धर्म ध्यान, सामायिक एव व्याख्यान श्रवण कर लाभ लेवे। आचार्यश्री के वर्षावास स्थल घोड़ो के चौक से नवचौकिया, पचेटिया, गूदी का मौहल्ला पर्याप्त दूर था तथा सिंहपोल से ये स्थान अपेक्षाकृत समीप थे। आचार्य श्री का आशय था कि लबी दूरी से यहाँ आकर एक सामायिक कर पाओ तथा आधा अधूरा व्याख्यान सुन पाओ इसकी अपेक्षा समीप के स्थान पर अधिक सामायिक एव व्याख्यान का पूरा लाभ लेवे। दरअसल मे आचार्य भगवन्त अत्यन्त उदार एव सुलझे दृष्टिकोण के धनी थे। वे चाहते तो अपने भक्तो को एक इशारे मे ही दूसरे स्थान की वर्जना कर देते, पर महापुरुषो के विराट् मन की बात ही निराली होती है।

(vi) कलह निवारण - आचार्य भगवन्त का सवत् २०२३ मे अहमदाबाद मे वर्षावास था। वहाँ से चातुर्मास के पश्चात् २०२४ मे जयपुर मे वर्षावास था। इस बीच विहारक्रम मे आचार्य भगवन्त फतेहगढ़ पधारे।

फतेहगढ़ स्थानकवासी जैन सघ में २०-२५ वर्षों से मनमुटाव चल रहा था तथा समाज व्यवस्था दो भागो में विभक्त थी। इस कारण कई तरह से विद्वेष-विवाद एव तनाव की स्थिति रहती थी। आचार्य भगवन्त ने वहाँ के माहौल को देखकर पारस्परिक प्रेम-सवर्धन की प्रबल प्रेरणा दी। आचार्य भगवन्त की वाणी के प्रभाव से सघ का वर्षों पुराना विवाद शान्त हो गया तथा समाज मे प्रेम की सरिता फिर बहने लगी। वह प्रेम की सरिता आज तक अबाध रूप से बह रही है।

सरवाड़, २१ फरवरी १९९८

प्रेषक – नारायणसिंह लोढ़ा,
वर्द्धमान वस्त्र भण्डार, सरवाड़ (राज.)

■

प्रभावक योगी

• श्री एस एम जैन

प्रेरणा का फल– (i) सन् १९६२ की बात है जब जोधपुर मे आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज का चातुर्मास चल रहा था। मै जोधपुर मे आफीसर्स ट्रेनिंग स्कूल मे राजस्थान लेखा सेवा की ट्रेनिंग ले रहा था। उस समय सप्ताह मे एक दो बार आचार्य श्री के दर्शन करने हेतु सिंहपोल स्थानक पर जाया करता था। एक बार मेरे साथ मेरे एक साथी श्री बी पी मामगेन भी साथ हो लिये।

आचार्य श्री ने श्री मामगेन से जिज्ञासा की कि आपके जीवन मे किसी प्रकार का व्यसन तो नही है। श्री मामगेन ने बताया कि वे सिर्फ सिगरेट पीने के आदी हैं और दिन मे लगभग एक पैकेट सिगरेट पी लेते हैं। आचार्य श्री ने सिगरेट के दुर्गुणो के बारे मे अवगत कराया। श्री मामगेन ने आश्वासन दिया कि वे प्रात एव साय खाना खाने के पश्चात् एक-एक सिगरेट लिया करेगे एव शनै शनै कम करने का प्रयास करेगे। आचार्य की प्रेरणा का फल था कि श्री मामगेन ने २-३ माह मे बिल्कुल सिगरेट पीना बन्द कर दिया। आचार्य श्री की प्रेरणा शैली एवं साधक व्यक्तित्व ही ऐसा था कि उनकी प्रेरणा किसी को भी भारस्वरूप नही लगती व व्यक्ति व्यसनमुक्त हो अपना जीवन-निर्माण कर लेता।

(ii) इसी प्रकार १९८४ मे जब मै राजस्थान कोपरेटिव डेयरी फेडरेशन में था, तब आचार्य श्री शेषकाल में जयपुर से विहार करके किशनगढ की तरफ पधार रहे थे। मार्ग मे जयपुर से लगभग २५ किमी दूरी पर श्री तालेडा जी की फैक्ट्री पर बिराज रहे थे। मैं वहाँ दर्शन करने गया था। मेरे साथ एक ड्राइवर श्री कानसिंह भी साथ गया था। जब मैं आचार्य श्री के दर्शन करके वापिस रवाना होने वाला था तब श्री कानसिह ने भी आचार्य श्री के दर्शन करने के बारे मे जिज्ञासा की कि क्या मै भी आचार्य श्री के दर्शन कर सकता हूँ? मै उसे सहर्ष आचार्य श्री के पास ले गया। शाम का समय था। आचार्य श्री ने उससे भी किसी व्यसन के बारे मे जानकारी की। चूकि वह राजपूत परिवार से था, अत मासाहार भी करता था एव बीड़ी सिगरेट भी पिया करता था। आचार्य श्री ने उसे समझाया एवं श्री कानसिंह ने उसी समय मासाहार एव बीड़ी सिगरेट का त्याग कर दिया।

सिद्ध योगी—वर्ष १९८०-८१ की बात है कि जयपुर से सघ ट्रेन द्वारा आचार्य श्री के दर्शन करने रायचूर गया था। उसमे मेरे पिताश्री, माताश्री एव छोटा पुत्र श्री चितरजन भी भीलवाडा से सघ के साथ गये थे। उस वक्त मेरे पिताश्री श्री मनोहरसिंह जी चौधरी गोलेछा ग्रुप मे उदयपुर मिनरल सिडिकेट प्राइवेट लि मे प्रशासक थे एव भीलवाडा मे पदस्थापित थे। मुझे ऐसी जानकारी मिली कि मेरे पिताश्री को अचानक बड़ी जबरदस्त उल्टी हुई और उल्टी मे खून भी निकला, जो लगभग दो बाल्टी था। आचार्य श्री को जब ऐसी सूचना मिली तो वे जहाँ सघ ठहरा हुआ था, पधारे और मेरे पिताश्री को मागलिक प्रदान किया। उसी मागलिक की देन थी कि मेरे पिताश्री इतनी जबरदस्त उल्टी होने के पश्चात् भी ठीक होकर सघ के साथ ही सहर्ष जयपुर लौटे एव आज भी सकुशल हैं।

९ फरवरी, १९९८

–सी ५५, प्रियदर्शी मार्ग, तिलकनगर, जयपुर

संयम-साधना का सुमेरु

• श्री मिट्ठा लाल मुरड़िया, 'साहित्यरत्न'

सन्ध्या का समय था, सूर्य अस्ताचल की ओर भाग रहा था, गगन स्वच्छ था, तारो की चमक के साथ निशानाथ शीतलता विकीर्ण करने वाले थे, सतरगी इन्द्र धनुष तना था, रिमझिम-रिमझिम मोती के कण धरा पर बिखर रहे थे। चम्पा, चमेली और गुलाब खिलखिला रहे थे, उनकी सौरभ से सारा वायुमण्डल महक रहा था, देव दुन्दुभियाँ बज रही थी, सितार के तार झन झना रहे थे, वीणा गूंज रही थी, देव मन्दिरो में आरती के साथ पूजा सम्पन्न हो रही थी । उस समय आकाश से एक ध्वनि गूज उठी - 'सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे' यह ध्वनि महाप्रतापी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के अन्तरतम मे समा गयी। दया-करुणा-सेवा और समता से भरा हुआ यह आचार्य सयम-साधना के शिखर पर पहुँच गया था। भीमकाय पाषाण-खण्ड पर बैठकर यह संत सत्-चित्-आनन्द लुटा रहा था।

सादड़ी साधु-सम्मेलन के प्रथम दर्शन से ही मै उनके महान् व्यक्तित्व से आकर्षित होकर नत मस्तक हो गया था। जिनवाणी मे प्रकाशित - 'मैं भी काला हूँ'- निबन्ध पर मेरा नाम भी जिनवाणी के सम्पादक-मण्डल मे जुड़ गया। व्यक्ति को पहचानने की उनमे अद्भुत शक्ति थी। उनके व्यक्तित्व मे एक चमक और अनूठापन था। उनकी आकृति पर एक आभा व्याप्त थी। जैसा सुना था, इस सत को वैसा ही पाया। मेरे मानस मे उनके प्रति असीम श्रद्धा उमड़ पड़ी। उनके प्रभाव से मेरा जीवन बदल गया।

ज्ञान-दर्शन और चारित्र से यह आचार्य जगमगा रहा था। सत्य-शिव-सुन्दरम् की मरकत मणियो से यह आलोकित हो रहा था। यह मनमौजी स्वभाव का जागरूक धर्म-प्रहरी था, यह सोते हुए भी जागृत था। इस आचार्य का न किसी से लेना था न किसी का देना था, न किसी की निन्दा के चक्कर मे पड़ा, न किसी की प्रशसा मे बहा, न कोई प्रपच, न कोई छल-छद्म, न कोई समस्या, न कोई आडम्बर।

यह आचार्य स्वच्छ, निर्मल और मगलमय था। यह आचार्य धर्म मे डूबा हुआ और प्रेम में पगा था। एकता इसका सम्बल था। सामायिक - स्वाध्याय इसका नारा था। इस आचार्य मे एक तेज था। यह जो कहता था, वही हो जाता था। यह चमत्कारी पुरुष था। जो एक बार इससे दृष्टि मिला लेता, वह निहाल हो जाता था। सन्त समुदाय पर इसका जबरदस्त प्रभाव था। यह साधना का सरताज था, स्वाध्याय का बादशाह था, धर्म के अनन्त उपादानो से यह तृप्त था, सयम - साधना की अपनी साहसिक विचार सरणियो से यह गौरवान्वित हुआ था।

इसके सम्मुख कितने आये और कितने गये, कितने उठे और कितने गिरे। कितने बने और कितने बिगड़े। कितने शिखर पर पहुँचे और कितने भू-लुण्ठित हुए। मगर यह व्यक्तित्व अपनी आन-बान और श्रमणत्व की शान के साथ उसी विचार-पद्धति पर अडिग रहा, दृढ़ता इसका साथ देती गई।

लोक जीवन को जगाया--इस दूरदर्शी सत को समाज का भविष्य दीख रहा था। इसका मानना था कि अभी वाली पीढ़ी पर सामायिक और स्वाध्याय करने के संस्कार नहीं पड़े तो भावी पीढ़ी की क्या दशा होगी ? वह दिशाहीन होकर भटकती रहेगी। इसीलिए इस संत ने लोक-जीवन को जगाया और उसमें धर्मनिष्ठा पैदा की। यह सत विलक्षण प्रतिभा का धनी था। इसका व्यक्तित्व वीरवाणी से अलकृत था। जो व्यक्ति एक बार इसके सम्पर्क

मे आ जाता तो वह आचार्य श्री का हो जाता था। इस व्यक्तित्व के प्रभाव ने मेरा जीवन झकझोर दिया था। मैं इसके नाम स्मरण से हर सकट से बचता रहा। यह सन्त जीवनादर्शो और जीवन जीने की कला मे बड़ा निपुण था।

यह धर्म की भावभूमि पर साधना का शखनाद करता रहा। इस आचार्य के व्यक्तित्व का निर्माण तीर्थंकरों, गणधरों और आचार्यों की धर्मनिष्ठा और अनेकान्त के परमाणुओ से हुआ था। सचमुच यह कर्मयोगी पुरुष था। इस कर्मयोग में इसका आचार्यत्व झाकता था, वीरवाणी का यह मगल कलश था। उत्तराध्ययन, गीता, रामायण और बाइबल का यह नवनीत था। इसने विकारो की सभी गाठे तोड़ दी थी। यह सन्त चाहता था कि समाज का बच्चा-बच्चा स्वाध्यायी और समतावान बने, न्याय-नीति पर चले, धैर्य और विवेक से काम ले, हर सदस्य के साथ सौजन्य बढ़ावे। प्रार्थना के साथ सामायिक करे। अगर बच्चो मे जैनत्व उतरा और सम्यक्त्व जमा तो आगे की पीढ़ी की चिन्ता कम होगी। इस आचार्य के अन्तर मे कितना दर्द था यह इनके भावो से जाना जा सकता है।

यह सन्त ज्ञानी और समता-शक्ति सम्पन्न था, इतिहासज्ञ था, विद्वान्, समालोचक, कवि, कथाकार, साहित्यकार और चतुर चितेरा था। सैकड़ों मील की पैदल यात्रा मे यह सत कभी नही घबराया , भयावनी और दुर्गम घाटियो के दुरूह पथ को पार करते हुए कभी हतोत्साहित नही हुआ। इस सन्त की कीर्ति कथा और गौरव गाथा दिग्-दिगन्त में गूज रही है। इसकी कीर्ति पताका फहराने को इसका साहित्य ही पर्याप्त है।

यह आचार्य था । इसके आचार्यत्व मे श्रमणत्व चमकता था। सयम-साधना इस सत की बेजोड़ थी, बुराइयो को दूर करने के लिये यह सत जीवनभर शेर की तरह गरजता रहा, पाखण्ड पर इसकी बगावत थी, अध- श्रद्धा पर इसका प्रहार था, आडम्बरो के खिलाफ यह सदा ललकारता रहा।

–श्री हू.मु जैन छात्रावास
न 20 प्रीमरोज रोड, बैंगलोर, 25

■

मेरे जीवन के कलाकार

• श्री रामदयाल जैन

दरअसल आचार्य श्री के बारे मे लिखने मे मैं समर्थ नही। न मेरे मे बुद्धि ही है। आचार्य श्री की बहुत बड़ी देन है। यदि उन्हे मेरे जीवन के कलाकार भी कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

आचार्य श्री का जो उपकार है, उसे शब्दो मे अकित नही किया जा सकता। वह मात्र अनुभव का विषय है। जिस प्रकार गूगा गुड़ के स्वाद का अनुभव ही कर सकता है, कहने मे समर्थ नही होता, वही स्थिति मेरी भी है।

सन् १९७३ की बात है कि आचार्य श्री गगापुर सिटी की नसिया कालोनी में पधारे। मैंने आचार्य श्री के प्रथम दर्शन यहाँ ही किये। आचार्य श्री ने सेठ ऋद्धिचन्द जी व उनके सुपुत्र गुलाबचन्द जी को बारह व्रत अगीकार करने की प्रेरणा की। दोनो पिता व पुत्र ने मेरी तरफ सकेत करते हुये कहा कि ये बारह व्रत मास्टर साहब को दिला दे। मैंने पूज्य श्री से निवेदन किया कि मैं धर्म के विषय मे जानता तो कुछ नही हूँ, फिर भी यदि ये लेना नही चाहते है और मेरी ओर सकेत करते हैं और आप उचित समझते हैं तो ये बारह व्रत मुझे अवश्य देवे । मैंने आचार्य श्री के सामने झोली कर दी। पूज्य श्री ने मुझे बारह व्रत के विवरण का पन्ना देते हुए पूर्णरूपेण समझा कर प्रत्याख्यान कराये।

उस समय न तो मै सामायिक ही जानता था, न धर्म के सम्बन्ध मे और कुछ ही जानता था। हाँ, दिगम्बर सम्प्रदाय का आलोचना पाठ व मेरी भावना का पाठ नित्य प्रति किया करता था।

आचार्य श्री की प्रेरणा से मैं सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि सीख गया। पर्युषण पर्व मे बाहर सेवा देने भी जाने लगा। जब जब आचार्य श्री के दर्शनार्थ उनकी सेवा मे पहुचता, कुछ न कुछ नया प्रसाद मिल ही जाता था। एक सामायिक से पाँच सामायिक तथा अन्य जो भी नियम दिलाये, सबका नियमित रूप से पालन हो रहा है।

पूज्य श्री की कृपा से मैंने बहुत कुछ पाया। आचार्य श्री ने सामायिक व स्वाध्याय का ऐसा बिगुल बजाया कि मै ही नही जो भी उनके सान्निध्य मे आये उनके जीवन में अवश्य ही परिवर्तन हुआ होगा।

(१) मेरा जीवन सरकारी नौकरी मे लगभग चालीस वर्ष का निकला। मेरी आदत थी कि जो कामचोर अथवा रिश्वत खोर होते चाहे वे अधिकारी हो या अधीनस्थ, मुझे उनसे चिढ़ होती थी, किन्तु आचार्य श्री की प्रेरणा से स्वाध्याय के माध्यम से मैंने समझा कि ऐसे व्यक्तियो के प्रति माध्यस्थ भाव अपनाना ही उपयोगी है-

सत्त्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवे कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव॥

मैंने माध्यस्थ भाव को अपनाया और जाना कि जो भी गलत काम करते हैं, वह उनकी अज्ञानता है। उनके प्रति आवेश या क्रोध करना उचित नही है।

(२) कभी किसी के द्वारा आलोचना या निन्दा सुनकर पहले बहुत रोष आता था, किन्तु आचार्य श्री की देन है कि-

करड़ी, चुभती बात सुन नी आवे जद रोष।
तो जानो वी मनख मे, मनख पणारो बोध ।।

(३) आचार्य श्री की देन से मैंने यतना को समझा, जैसा कि भगवान महावीर स्वामी ने गौतम गणधर के पूछने पर कहा -

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जय सए।
जयं भुजंतो, भासतो, पावकम्म न बधई ।।

अर्थात् यतनापूर्वक चले, यतनापूर्वक खड़ा रहे यतनापूर्वक बैठे तथा यतनापूर्वक ही सोए। यतना पूर्वक खाता हुआ और बोलता हुआ व्यक्ति पाप कर्म का बध नही करता है।

(४) आचार्य श्री की देन से मैंने निम्नक्ति सूत्र समझा -

ज इच्छसि अप्पणत्तो, जं च ण इच्छसि अप्पणत्तो।
त इच्छ परस्स वि, एतिअ जिणसासण ।।

अर्थात जो अपने लिए चाहते हो, वह दूसरो के लिए भी चाहना चाहिए और जो अपने लिए नही चाहते हो वह दूसरो के लिए भी नही चाहना चाहिए। बस इतना मात्र जिनशासन है।

(५) अपने पराये को जाना, जैसा कि कहा भी है -

जा तन म नित जिय बसे, सा न अपना होय।
तो प्रत्यक्ष पर द्रव्य, कैसे अपना होय ।।

और भी कहा है :-

जो जावे वह मेरा नही , जो नही जाये वह मेरा है।

आत्मा के अतिरिक्त सब जाने वाले हैं इसलिए आत्मा ही मेरा है।

उपर्युक्त निवेदन करने का मेरा तात्पर्य यह है कि मुझसे गलतियाँ तो होती रहती हैं, परन्तु या तो मैं उसी वक्त सभल जाता हूँ और कभी उस वक्त नही सभल पाता तो स्वाध्याय एक ऐसा माध्यम है कि जब स्वाध्याय करने बैठता हूँ तब गलती का अहसास होता है और अपने प्रति ग्लानि होती है। गलतियो का चिन्तन चलते-फिरते उठते-बैठते भी हो जाया करता है।

-सेवा निवृत्त तहसीलदार, गगापुर सिटी (राज)

■

आचार्य श्री : एक मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शक

• श्री लक्ष्मीचन्द जैन

समय-समय पर ससार में ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिया है, जिनकी आध्यात्मिक ऊँचाई मानवता की सामान्य सतह से बहुत ऊची रही है। आचार्यप्रवर के जीवनदर्शन को समझना हर किसी के लिए सभव नही है। उन्होंने इस समूचे विश्व के समक्ष आधुनिक युग मे इतना महान् जीवन जीकर दिखा दिया कि उसका विश्लेषण करना मनीषियो के लिए भी एक अबूझ पहेली के समान है।

उनके सम्पर्क में जैन-अजैन सभी प्रकार के व्यक्ति आते थे। वे अपनी दिव्य मेधा से प्रत्येक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को पढ़ लेते थे। उसकी कमियो को तुरन्त जानकर उन्हे दूर करने के प्रयास मे लग जाते थे। वे जानते थे कि कोई भी व्यक्ति एकदम अध्यात्म की ओर आकर्षित नही होता, व्यक्ति को धीरे-धीरे अध्यात्म के आनन्द का अनुभव आता है, इसके लिये स्वाध्याय ही ज्ञानार्जन का एक ऐसा माध्यम है जिसे अपनाकर व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक ऊँचाइयो को अर्जित कर सकता है।

वे स्वाध्याय के अन्तर्गत धर्मग्रन्थो को पढने के लिये प्रेरित करते थे। उनका इस सबध मे गहन अनुभव था कि यदि व्यक्ति मे प्रतिदिन कुछ अध्ययन करने की आदत विकसित हो गई तो शनै शनै वह सन्मार्ग की ओर आकृष्ट हो जायेगा और उसकी अधिकतर विपदाएँ स्वत ही समाप्त हो जायेगी।

जब व्यक्ति १०-१५ मिनट के लिये भी पढ़ने बैठता है तो घटा आधा घटा बीत जाना मामूली बात है। स्वाध्याय का चस्का जब व्यक्ति को लग जाता है तथा उसी बीच यदि सौभाग्य से गुरुदेव के दर्शन का और लाभ प्राप्त हो जाता है तो वे सबसे पहले यही पूछते कि भाई आपका स्वाध्याय कैसा चल रहा है? जब साधक बताता कि भगवन् आपने तो मुझे १०-१५ मिनट स्वाध्याय का कहा था, परन्तु मैं पढ़ने बैठता हूँ तो एक घटा कब बीत जाता है, पता ही नही लगता।

तब आचार्य प्रवर फरमाते थे कि भाई जब तुम एक घटे तक पढते रहते हो तो एक घटे से भी कम समय ४८ मिनट मे एक सामायिक हो जाती है, फिर सामायिक पूर्वक स्वाध्याय क्यो नही करते?

उनकी यह बात श्रावक या श्राविका के गले उतर जाती थी। इस प्रकार वे अपने भक्तो को सामायिक के मार्ग की ओर आकर्षित कर लेते थे।

अब चारित्र चूडामणि सतप्रवर को अपने भक्त के लिये कुछ करना शेष नही रहता था। वह अपने आप आचार्य श्री की ओर खिंचा हुआ चला आता था।

गुरु कुम्हार शिष्य कुभ है, गढी गढी काढत खाट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट॥

वे पच महाव्रतधारी थे। अनुयायी को अणुव्रत के पालन हेतु तैयार करने मे वे दक्ष थे। श्रावक को अध्यात्म के पथ पर कैसे आगे बढ़ाना, इसमे गुरुदेव सिद्धहस्त थे। आचार्य श्री को उनकी इसी मनोवैज्ञानिक शैली ने विश्व के महान् सत के रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया।

वे पढ़े-लिखे नौकरी पेशा व्यक्तियों की अच्छी पकड़ जानते थे। उनकी इस ज्ञान-शक्ति को वे

समाजोपयोगी बनाने में सदैव प्रयत्नशील रहते थे। वे कहते थे —

हीरा मुख से कब कहे, लाख हमारो मोल।

इस प्रकार के व्यक्तियों से एक ऐसा स्वाध्याय संघ बन गया जिसके माध्यम से दूर-दूर के स्थानो पर भी धर्म आराधना का मार्ग खुल गया। उनकी यह शैली इतनी अधिक कारगर सिद्ध हुई कि वे स्वाध्याय और सामायिक के प्रेरक के नाम से अमर हो गये।

सभी संघों के लिये स्वाध्याय एव सामायिक के लिये वे मार्गदर्शक के रूप में सिद्ध हुए। आज उनके आध्यात्मिक विचार कार्यरूप मे परिणत होते हुए सफल लक्षित होते हैं।

त्रिकालशरण भवभवशरण सद्गुरुशरणम्।

—पूर्व प्रधानाचार्य, छोटी कसरावद
जिला-खरगोन (म प्र) ४५१२२८

■

दो महान् दिव्यात्माओं का अद्भुत मिलन

• श्रीमती रूपकुंवर मेहता

बीसवी सदी में मरुधरा में दो महान् दिव्य विभूतियाँ अवतरित हुईं व उन्होंने चहुँ ओर अपना आलोक फैलाया। उनमे से एक थे जैनाचार्य पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म सा व दूसरी विभूति थी बाळागाव की निराहार योगिनी सती माँ रूप कुँवर जी।

मुझे दोनों संतो के अत्यन्त समीप रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दोनो ही महा मानव थे। दोनों ने ही अपने जीवन काल मे त्याग व तपस्या का अनुपम इतिहास रचा । दोनों ही अहिंसा के विलक्षण पुजारी थे। गुरु हस्ती के आशीर्वाद से ही मैंने २३ वर्षीतप तीन मासखमण सहित सहर्ष पूरे किये और मेरे सब कठिन अभिग्रह भी फलीभूत हुए।

बाळा सती जब गुरु हस्ती के पहली बार दर्शनार्थ आई, दूर से ही दडवत् करती आई । यह दृश्य अद्भुत था। इसके पश्चात् सती माँ कई बार गुरु हस्ती के दर्शन करने उनके चातुर्मास मे गई। कई यात्राओं में मैं भी उनके साथ थी।

एक समय मै गुरु हस्ती के पीपाड़ चातुर्मास मे उनके दर्शनार्थ गई। गुरुवर ने फरमाया कि सती माँ को अपनी मृत्यु का बहुत पहले ही पूर्वाभास हो गया था। सती जी ने मुझे अपनी मृत्यु के पूर्व दर्शन देकर मार्गदर्शन करने को कहा और भावना प्रकट की कि अन्त समय मे मैं वहाँ मौजूद रहूँ। गुरु हस्ती ने फरमाया कि जिस प्रबल भावना से रूपकुवर जी ने उनसे वादा लिया था वह मना नही कर सके।

बाला सती ने कार्तिक शुक्ला १४ सन् १९८६ को यह नश्वर शरीर त्याग दिया। पूनम को उनका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित हुआ। चातुर्मास कल्प के अनुसार जैन श्रमण विहार नही कर सकते, अत आचार्यश्री प्रत्यक्षत बालासतीजी को दर्शन व पाथेय देने हेतु शरीर से नही पधार सके। तथापि बाला सतीजी को शरीर छोड़ने के पूर्व आचार्य श्री ने मागलिक प्रदान किया। सहज श्रद्धाभिभूत रूपकुवरजी ने कर युगल जोड़कर महाप्रयाण के लिये विदा मागी।

'रूप श्री' ४६, अजीत कालोनी, जोधपुर

■

परम कृपालु गुरुदेव

• श्री लालचन्द्र जैन

मेरे पर परम गुरुदेव श्रद्धेय आचार्य श्री की असीम कृपा रही। सन् १९४२ मे अगस्त क्रान्ति के दौरान मैं वैरागी के रूप में कतिपय वर्षो के लिए आचार्य गुरुदेव के सान्निध्य मे रहा।

गुरुदेव का विद्यानुराग इतना प्रबल था कि वे स्वय मुझे प्राकृत का अध्ययन करवाते थे और पडित दु.खमोचन जी झा के पास अन्य सन्तो के साथ मुझे भी सस्कृत के अध्ययन का अवसर मिला था। धार नगरी के कुछ श्रावको की मॉग पर मुझे स्वाध्यायी के रूप मे पर्युषण करवाने धार नगरी भेजा गया। धार का वह पर्युषण बहुत ही सफल रहा और मेरे खयाल से उसी समय से पर्युषण मे स्वाध्यायी भेजने का कार्यक्रम प्रतिवर्ष चलने लगा।

उज्जैन चातुर्मास समाप्त होने पर मै गुरुदेव के साथ-साथ ही पैदल विहार करने लगा। महान् सतो की सगति का प्रभाव उनके आचरण को देख कर पड़ता है। उनके सान्निध्य मे कुछ ऐसे सात्विक परमाणुओ का आदान-प्रदान होता है कि उनके सग रहने वाला व्यक्ति भी बिना कहे ही वैसा बनने लगता है। लोच तो मै नही कर सकता था, पर मैंने दाढ़ी और बाल बनवाने बद कर दिये। पॉव मे जूते पहनने बद कर दिये। मात्र धोती, कुर्ता और २ चद्दर से सर्दी-गर्मी के सब दिन गुरु कृपा से आनद पूर्वक बीत गये। गुरुदेव विहार मे बहुत तेज चलते थे, मै भी उनके साथ-साथ उसी चाल से चलने का प्रयत्न करता था।

उज्जैन से इदौर, रतलाम, मन्दसौर, जावरा आदि अनेक ग्राम नगरो से होते हुए गुरुदेव का विहार उदयपुर की ओर हो रहा था। बीस-बीस मील का उग्र विहार और फिर किसी गॉव मे प्रासुक जल का अभाव तो कही प्रासुक गोचरी का अभाव। कही ठहरने के स्थान का अभाव। कड़कड़ाती सर्दी मे तालाब के किनारे एक कच्चे टूटे-फूटे फर्श वाले तिबारे मे दो चद्दर से रात बिताना । किंतु गुरुदेव का ऐसा प्रभाव कि सब सत आनद पूर्वक सहन कर लेते । किसी को कोई शिकायत नही। मेरा जीवन भी गुरुदेव की सगति से उस समय कितना परिवर्तित हो गया था । कितना सादा और सरल था वह जीवन । मेरा जीवन भी उस समय सत-जीवन जैसा ही हो गया था।

उदयपुर चातुर्मास मे गुरुदेव ने अध्ययन के साथ-साथ मुझे गुजराती पढ़ना भी सिखाया और गुजराती से हिंदी मे अनुवाद करने की प्रेरणा दी। मैंने गुजराती कर्मसिद्धात पुस्तक से कई लेख हिंदी मे अनूदित कर भोपालगढ भेजे जो उस समय की जिनवाणी मे कपूरचद जैन के नाम से प्रकाशित हुए। उदयपुर चातुर्मास के बाद गुरुदेव का विहार मारवाड़ की तरफ होने की सभावना जान कर मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की कि 'मै तो अभी मारवाड़ नही जा सकूँगा, तब मेरा अध्ययन क्या अधूरा ही रह जायेगा?' गुरुदेव ने हँसते हुए कहा कि सब व्यवस्था हो जायेगी।" उदयपुर से चारभुजा तक मैंने गुरुदेव के साथ-साथ विहार किया। उसके बाद मुझे इदौर मे पडित पूर्णचद्रजी दक के पास आगे के अध्ययन के लिये जाने की आज्ञा हुई। मै भारी मन से गुरुदेव का साथ छोड़ कर इदौर के लिये चल पड़ा, किंतु गुरुदेव के सान्निध्य के मेरे वे दो वर्ष अभी भी मुझे रोमाचित कर देते हैं। मेरे जीवन के वे दिन स्वर्णिम दिन थे, जिन्हे स्मरण कर आज वृद्धावस्था मे भी मेरा रोम-रोम गद्गद् हो जाता है।

ऐसे महान विद्यानुरागी थे आचार्य प्रवर ! मुझे ही नही उन्होने अन्य भी कई लोगो को जैन धर्म के अध्ययन

के लिये प्रेरित किया था। इदौर में पडित पूर्णचद्र जी के पास रहकर मैंने कलकत्ता सस्कृत महाविद्यालय की विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की और हितेच्छु श्रावक सघ रतलाम की सिद्धात विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की। यह गुरुदेव की ही कृपा और प्रेरणा का प्रसाद है कि मैं सिद्धर्षिगणि के उपमिति भव प्रपच कथा जैसे महान् ग्रथ का हिंदी मे अनुवाद कर सका और लालभाई दलपत भाई भारतीय सस्कृतिविद्यामन्दिर, अहमदाबाद में रहकर प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो मे लोकाशाह सम्बन्धी उल्लेखो का अन्वेषण आदि कार्य कर सका। उन्ही की कृपा से मै मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय सघ की स्थापना एव श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ जलगाँव के सचालन मे सहयोगी बन सका।

आचार्य श्री हस्ती की दिनचर्या को मैंने निकट से देखा है. प्रातकाल या सध्या के समय उनके समक्ष बैठकर भक्तामर या कल्याणमदिर स्तोत्र की अथवा नन्दीसूत्र की सज्झाय को श्रवण करने मे जो अलौकिक आनद प्राप्त होता था, उसका वर्णन करने की शक्ति लेखनी मे नही है। मैंने कभी उनको एक क्षण के लिये भी खाली बैठे नही देखा। प्रातकाल से सूर्यास्त तक उनका अध्ययन और लेखन कार्य निरतर चलता ही रहता था। ऐसे महान् अध्यवसायी विद्यानुरागी वे स्वय थे और ऐसा ही विद्यानुराग वे उनके सपर्क मे आने वाले व्यक्तियो के मन में भर देते थे। मै तो आज जो कुछ भी हूँ वह गुरुदेव की कृपा का ही प्रसाद है। यदि गुरुदेव ने मुझे शरण न दी होती, तो मेरे भूमिगत जीवन का सदुपयोग कैसे हो पाता और उनकी सहायता के बिना मै जैन दर्शन , प्राकृत, सस्कृत, गुजराती का अध्ययन कैसे कर पाता ? ऐसे महान् गुरुदेव को शत शत प्रणाम।

-१०/५९५ नन्दनवन, जोधपुर

■

सर्प बचाने की आँखों देखी घटना

• भंडारी श्री सरदारचन्द जैन

विक्रम संवत् २०१५ अर्थात् ईस्वी सन् १९५८ का वर्षावास परम पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा., वयोवृद्ध स्वामीजी श्री अमरचदजी म.सा., ज्येष्ठ एव श्रेष्ठ शिष्य सेवाभावी श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म.सा., श्री माणकचदजी म.सा., बाबाजी श्री जयतीलालजी (जालमचदजी) म.सा., नवदीक्षित मुनि श्री सुगनचदजी म.सा. एव श्रमण सघ के सत श्री हगामीलालजी म.सा., श्री रोशनलालजी म.सा., श्री प्रेमचदजी म.सा. आदि ठाणा नौ का भारत की राजधानी महानगरी दिल्ली के सब्जीमडी स्थानक में था। चातुर्मास सुसम्पन्न होने के पश्चात् जब मैंने सुना कि पूज्य गुरुदेव श्री का विहार दिल्ली से राजस्थान की ओर होने वाला है, मै सेवा मे दिल्ली पहुँचा और पूज्य गुरुदेवश्री के दिल्ली से अलवर तक विहार मे, मैं पैदल साथ रहा और जब मेहरोली, गुड़गाव, बादशाहपुर आदि ग्राम-नगरों से विचरण करते हुए आगे बढ़ रहे थे, तब रास्ते मे सुबह के समय एक गाव के लोग इकट्ठे होकर (गाव का नाम स्मरण मे नही रहा), हाथो मे बड़ी बड़ी लाठियाँ लेकर, एक मकान के कच्चे छप्पर से, एक बहुत बड़े कालिन्दर सर्प (नागराज) को गिराकर मारने लगे। उसी समय उस रास्ते से पूज्य गुरुदेव श्री और हम साथ ही आ रहे थे तो एकदम गुरुदेवश्री ने वही रुककर उन लोगो से कहा कि आप साप को मारो नही, तब वे लोग कहने लगे कि मारे नहीं तो क्या करे, यह विषैला साप हमको काट जायेगा-खा जायेगा, हम मर जायेगे।

उसी वक्त गुरुदेवश्री ने फरमाया कि आप सब लोग दूर हो जावे, हम इसको पकड़कर सुरक्षित स्थान मे दूर छोड़ देगे। आप लोग निश्चिन्त हो जावे, घबराये नही, चिन्ता न करे, डरे नही।

उस साप को आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेवश्री ने ओघे पर लेकर, बहुत दूर एकान्त निर्जन स्थान मे ले जाकर सुरक्षित छोड़ दिया। तब गाव के सभी लोग गुरुदेव भगवन्त की इस 'असीम शक्ति' 'आत्मबल' की बहुत बहुत प्रशसा करने लगे।

इसके पूर्व तो कई लोगों से सिर्फ सुनने मे ही आया था कि सातारा नगर महाराष्ट्र प्रात मे भी गुरुदेव भगवत ने एक नागराज को जीवन दान दिया, पर इस गाव मे तो हमने प्रत्यक्ष आँखो से देखा, और हमारा अन्तर-मन गुनगुनाने लगा:—

"फूल तो बहुत होते है, पर गुलाब जैसे नही।
संत तो बहुत होते है, पर 'हस्ती' गुरुदेव जैसे नही ॥"

-त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर-342002

■

आचार्य श्री : जैसा मैंने देखा और पाया

• श्री मोतीलाल सुराना

मैं अपनी जन्मभूमि रामपुरा (जिला मदसौर) हाइस्कूल मे पढ़ता था। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब का वही चातुर्मास था। मेरे पिताजी हेमराज जी से मुझे आचार्य श्री के बारे में ज्यादा बातें मालूम होती थीं, क्योकि एक तो मैं छोटा था, अत आचार्य श्री के पास बार-बार जाने मे शुरू शुरू में झिझक आती थी तथा दूसरा यह भी विचार आता था कि उनके ज्ञानाभ्यास में क्यो व्यवधान पैदा करू, क्योंकि पिताजी ने बतलाया था कि उनका चातुर्मास यहा केवल इसीलिए हुआ है कि यहा शाति है। शहरो जैसी आवागमन की स्थिति न होने से भक्तो की ओर से भी कुछ समय की बचत होगी, तथा शास्त्रीय ज्ञानोपार्जन अधिक हो सकेगा। मुझे यह भी समझाया गया था कि ये सबसे कम उम्र के आचार्य हैं, सतों के समूह पर एक एक आचार्य होता है। सन्तो को चाहे वे उम्र मे (या दीक्षा में) बड़े हो पर सभी बात आचार्य से पूछ कर करनी पड़ती है।

वैसे तो छोटी उम्र की कई बाते मैं भूल गया हूँ, पर रामपुरा का आचार्य श्री का वह चातुर्मास तो मुझे अच्छी तरह याद है। पडित दुखमोचन जी झा से आप ज्ञानाभ्यास सीखते थे। सतारा वाले सेठ साहब भी उस चातुर्मास मे दर्शनार्थ पधारे थे। यह सब मुझे याद है। क्यो याद है, इसका एक ही जवाब है कि उसी समय से आचार्य श्री की गहरी छाप मेरे हृदय पर पड़ी थी। घर मे धार्मिक वातावरण होने से साधु-सतो के पास तो पहले भी जाता था, पर आचार्य श्री की वय, ज्ञानाभ्यास, छोटी उम्र मे इस ससार को असार समझकर छोड़ना, इन सब बातो ने मुझ पर तथा मेरे साथी छात्रो पर बहुत असर किया था।

आचार्य श्री उस समय सस्कृत का अभ्यास करते थे। प दुखमोचन जी झा को उस समय हम जब सस्कृत मे किसी अन्य विद्वान से बात करते सुनते तो हमे आश्चर्य होता था कि क्या सस्कृत में भी बातचीत की जा सकती है। मुझे याद है कि उस समय आचार्य श्री ने कुछ अग्रेजी का अभ्यास भी शुरू किया था, क्योकि जब भी हम दर्शनार्थ जाते हमारे हाथ मे भाषान्तर पाठमाला या ऐसी कोई पुस्तक होती तो वे उसे देखते तथा कभी कभी उसमे से कुछ नोट भी कर लेते थे।

इस चातुर्मास के बाद तो मुझे शाजापुर, सैलाना, भीलवाड़ा तथा अन्य कई स्थानों पर आचार्य श्री के दर्शनो का तथा प्रवचन सुनने का सुअवसर मिला। उन सभी क्षणो को मैंने अपना अहो भाग्य ही माना कि ऐसे ज्ञानवान क्रियावान-आत्मबली सत आज हमारे साधु-समाज मे विद्यमान हैं।

आचार्य श्री जैसी प्रवचन शैली, शास्त्रीय ज्ञान, एक एक शब्द तोलकर बोलने की आदत तथा स्मरण शक्ति बहुत कम सतो मे मिलेगी।

इन सब बातो पर जब मैं विचार करता हूँ तो ऐसा मालूम पड़ता है कि बाल वय मे जो सस्कार भरे जा सकते है, वैसे सुसस्कार शायद बड़ी उम्र वालो में इतनी आसानी से नही भरे जा सकते हैं।

साधु नियमो को बारीकी से पालने की आदत आपकी सम्प्रदाय में भी वर्षों से रही है। जब आप छोटे थे तब मुझे पिताजी ने बतलाया था कि आपके भोजन पर भी ध्यान रखा जाता था। भक्तजन तो श्रद्धावश अच्छा (पौष्टिक)

भोजन बहराने का आग्रह करते थे, पर सतगण ऐसी चीजे लाते थे जो आपके स्वास्थ्य तथा भविष्य के लिए उचित हो। आपके साथी साधुगण भी वैसा ही आहार करते थे। वे भी अन्य पदार्थ का उपयोग नही के बराबर करते थे। ऐसा नही कि वे कुछ और पदार्थ खावें तथा आचार्य श्री को कुछ और देवें। नवबाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालन के लिए जिस वातावरण का ध्यान रखना आवश्यक था, उसकी ओर जागरूक रहकर बालवय में आपका लालन-पालन अन्य सत करते थे।

कभी-कभी दीक्षा सम्बन्धी जो बाते चलती है उसमे बाल-दीक्षा की बात को लेकर लोग अपना अपना अलग मत रखते हैं पर यह बात निर्विवाद है कि यदि योग्य बालक कम उम्र मे भी दीक्षा के लिए आग्रह करे तो पूरी पूरी सावधानी से उसके भावो की जाच करके उसे दीक्षा दी जाय तथा बाद मे ऊपर वाले सत सभी बातो का उसके ज्ञानाभ्यास का खान-पान का, अन्य वातावरण का पूरा पूरा ध्यान रखे तो फिर किसी शक की गुजाइश नही कि वह दीक्षा कैसी होगी। हमारे सामने तो आचार्य श्री के सद्गुणो का तथा बालवय का यह एक पक्का उदाहरण है ही।

आचार्य श्री की विद्वत्ता तथा वक्तृत्व-कला के विषय मे जो भी लिखा जाय वह थोड़ा ही होगा। उनके प्रवचनो मे, उपदेशों मे, साहित्य मे क्या बालक, क्या जवान, क्या वृद्ध सभी को एक सरीखी आध्यात्मिक खुराक मिलती है जिसे ग्रहण करने के पश्चात् छोड़ने को दिल नही करता।

स्वाध्याय-सामायिक जैसे महत्त्व के विषय को आपने जन-जन तक पहुँचाने का जो सफल कार्य किया है वह निश्चित ही अद्वितीय है। इन सब सफलताओ मे एक रहस्य रहा हुआ है, वह है आचार्य श्री का सतत अध्यात्म चिंतन और कथनी-करनी मे अद्भुत साम्य । आचार्य श्री की कायोत्सर्ग (काउस्सग) की स्थिति भी देखने लायक होती है। शरीर का कोई सा भी छोटे से छोटा भाग भी क्या मजाल की हिल जाय।

एक बात और लिखकर लेख समाप्त करता हूँ। पूज्य श्री जवाहर लाल जी म सा के विहार के समय आपके द्वारा मागलिक सुनाने के प्रसग स्वय आपकी बुलन्दी के परिचायक है, जिन शासन के ऐसे प्रभावी आचार्य महाराज की सराहना जितनी की जावे, वह कम है। अपनी पूर्ण श्रद्धा के साथ शत-शत वदना।

(जिनवाणी के 'साधना अक' सन् १९७३ से सकलित)

—इन्दौर (म प्र)

■

संयम और विवेक के आदर्श प्रतीक

• श्री चन्दूलाल केशवलाल मेहता

(१)

बात महाराजा उम्मेदसिंह जी के शासन के समय की है। दिखने मे तो वह साधारण है, पर उसके पीछे एक महान् उद्देश्य जिनाज्ञा के अपवाद रहित वृत्ति-विजय का पालन है। विषय-विकार, कषाय, प्रमाद, प्रलोभन, परीषह, उपसर्ग आदि कर्म रिपु विविध रूप से प्रत्येक के सामने आते ही है। पूज्य श्री एक सफल साधक होने से उन्हे परास्त कर समता, सतोष, धैर्य, अभयता, शान्ति का साम्राज्य विस्तृत कर अन्य को भी आत्मोन्नति के फल प्रदान करते हैं।

जोधपुर नगर से पूज्य गुरुदेव के विहार का प्रसग है। कुछ भावुक श्रावको ने बनाड़ स्टेशन की ओर विहार हो जाने के बाद जोधपुर से बनाड़ के स्टेशन पर फोन द्वारा सूचना कर दी कि अभी आपकी ओर गुरुदेव का विहार हो चुका है। बनाड़ स्टेशन पर मालगाड़ी आने पर उसके इन्जन मे से पानी की प्याऊ वाले ने दो पीपे गरम जल से भर कर अलग रख दिये। पूज्य श्री यथासमय बनाड़ पधारे। जब साथ विहार मे आने वाले भाई, जिसको सभवत इस पानी के प्रबन्ध की जानकारी हो गई होगी, उसने सतों को दूर आये हुए ग्राम मे, पानी के लिये न जाते हुए इधर ही प्रासुक पानी की जोगवाई होने का निवेदन किया। पूज्य श्री स्वय ही जल ग्रहण करने पधारे और पूरी गवेषणा शुरु की। अन्त मे यह पूछा कि इस पीपे मे, यह इन्जन का गरम जल भरा, उसके पूर्व कैसा जल था? पीपा पहले गीला तो नही था? प्याऊ वाले ने जो सही बात थी वह कह दी। अदर के सचित्त पानी से दोष युक्त हुआ गरम जल लेने से पूज्य श्री ने मना कर दिया और साथ के सन्त को गाव मे जाकर पानी लाने की आज्ञा दी। लगभग एक बजने आया होगा जब दो सन्त गाव से जल और आहार लेकर स्टेशन के समीप पधारे।

(२)

मध्य प्रदेश मे सैलाना के चातुर्मास के पश्चात् आपका विहार कोटा की ओर हो रहा था। किन्तु नलखेड़ा गाव पहुचने के बाद, जिस दीक्षा के प्रसग के कारण उधर विहार हो रहा था, वह प्रसग स्थगित होने से, शुजालपुर होते हुए भोपाल पधारने की विनती स्वीकृत हुई। सुरसलार गाव से मकर-सक्रान्ति के दिन मेघाच्छादित नभ के कारण ९ बजे आकोदिया मडी की ओर विहार प्रारम्भ हुआ। साढ़े तीन मील चलने पर आकोदिया के श्रावक शुजालपुर से आये हुए चौधरी जी आदि पाच व्यक्ति के साथ, विहार मे साथ हो गये। बातचीत करते हुए हम पूज्य श्री के पीछे-पीछे चल रहे थे, सात मील का विहार हो चुका था। अब गाव एक ही मील दूर था। अन्य भाई-बहिन भी उस समय सामने से आते दिखाई दे रहे थे, एकाएक वर्षा शुरु हुई और पूज्य गुरुदेव वहा पर नजदीक की श्मशानशाला, जो कि उन्ही दिनों तैयार हुई थी, में पधारे। मध्याह्न का माला जाप का समय हो जाने पर पूज्य श्री ने अपना ध्यान शुरु किया।

इस प्रसग पर उल्लेख कर देना उचित होगा कि अनेक वर्षों से पूज्य श्री के त्रिकाल ध्यान व स्वाध्याय का समय प्राय नियत रहा। छोटे गाव में, विहार में, जोधपुर या जयपुर जैसे विशाल नगरों मे जहाँ ज्ञान-गोष्ठी चल रही हो, पूज्य श्री को स्वय को दिन भर शास्त्रों की प्रतियों का अवगाहन कार्य करना हो, कितने ही दूर-दूर से आये हुए

श्रावक बातचीत करने को उत्सुक हों, या अन्य कोई भी व्यस्त कार्यक्रम हो तो भी प्रात समय का ध्यान दोपहर (मध्याह्न) का घंटे-पौन घंटे का ध्यान और रात्रि शयन काल पूर्व कल्याण मदिर आदि स्तोत्रों व नन्दी सूत्रादि का स्वाध्याय होकर ही रहेगा। एक-एक क्षण का उपयोग और प्रति समय के लिए पूर्व आयोजित निश्चित कार्य अप्रमत्त रूप से होना पूज्य श्री के लिये स्वाभाविक हो गया।

आकोदिया गाव की श्मशान शाला मे बैठकर ध्यान हुआ ही। ध्यान का कार्य पूरा होने पर आगन्तुक श्रावक-श्राविकाओ ने निवेदन किया कि गुरुदेव अब एक भी बज चुका है, आप दूर से पधारे हो, आहार पानी भी ग्रहण नहीं किया है और वर्षा भी रुकी हुई है। कृपया आगे पधारें और हमारा गाँव पावन करें। गुरुदेव ने फरमाया, आपको अपने उत्साह मे कभी-कभी गिरते छींटे न दिखते हों, मुझे तो अपने चश्मों के भीतर से भी वे दिख पड़ते हैं। जब तक वर्षा की एक भी बूद दिखी, तब तक सभी बैठे रहे। पूर्णत छींटे रुकने पर विहार हुआ तब अढाई बज चुके थे। गाव के निकट आने पर पुनः वही वर्षा। रास्ते कीचड़ से भरे पड़े थे। एकाध खाली जगह पर सभी को खड़ा रहना पड़ा। साय साढ़े चार बजे आकोदिया मडी के जैन मदिर मे, जहा कि सतो को विराजना था, वहा प्रवेश हुआ।

सर्दी अधिक थी, सतो के ओढने के सभी वस्त्र गीले थे। सूर्य प्रात काल से दिन भर दिखा ही नही था। उस वायुमडल मे बिना पानी निचोड़े, वैसे ही सुखाए हुए उपकरण व चद्दरादि कब सूखने वाले थे। इस असाधारण हवामान मे किसी भी प्रकार का दोष न लगे, उसकी पूरी सावचेती से सत परिस्थिति का सामना कर रहे थे। इधर सतों के साथ दिन भर रहने पर भी अपने यहा के दानान्तराय के कारण भक्तजन विह्वल बने हुए सतो की ओर टकटकी लगाये हुए थे।

(३)

मारवाड़ में बालोतरा का चातुर्मास पूर्ण कर पूज्य श्री ने भीनमाल, डीसा, पालनपुर के रास्ते से मुख्यतया प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो के निरीक्षणार्थ व स्था परम्परा के आचार्यों के हाथ से लिखी हुई प्रतियाँ यदि उपलब्ध हो तो उनके उचित सग्रह व सरक्षण की व्यवस्था देखने हेतु प्रवेश किया। बहुत परिश्रम से हजारो की सख्या मे सगृहीत व व्यवस्थित ढग से रखी बहुत प्राचीन काल की अनेक प्रतियाँ पूज्य श्री को पालनपुर, पाटण, अहमदाबाद, खभात, छाणी, वडोदरा आदि के ज्ञान भडारों मे अवलोकनार्थ मिली। आगम प्रभावक मुनि श्री पुण्य विजय जी का मतव्य था कि "पाटण के ताड़पत्रीय सग्रह के शानी का कोई भी सग्रह भारत मे या समस्त ससार मे नही है।" उन्हीं के सहयोग व सद्भावना से उपर्युक्त भडारों की अमूल्य निधि का भी निरीक्षण हो सका।

इन प्राचीन दुर्लभ अलभ्य हस्तलिखित प्रतियो की खोज करते हुए पूज्य श्री जब अहमदाबाद पधारे तब उन्होने शास्त्र भडारो के निरीक्षण के पूर्व, सरसपुर अहमदाबाद के एक हिस्से मे विराजमान पूज्य श्री घासीलाल जी म के दर्शन व सेवा का लाभ लेने की प्रबल भावना व्यक्त की। तदनुसार स्था जैन सोसायटी के उपाश्रय से पूज्य श्री अपने सतो के साथ चैत्र शुक्ला ८ सवत् २०२२ को प्रात आठ बजे विहार कर, सरसपुर के निकट पधारे तब तपस्वी श्री मदनलाल जी म. आदि सत और कुछ दूर तक पूज्य श्री घासीलाल जी म श्री स्वय सामने पधारे और सतो का मधुर मिलन हुआ जो कि स्मरणीय बना रहेगा। उपाश्रय मे पधारने पर वदना सुख साता पृच्छादि हुए। मगल मिलन के पश्चात्, जो वहा उपस्थित श्रावकादि थे, उन्हे अन्योन्य प्रेम, अनुराग, श्रद्धा से युक्त वातावरण, में आज भी कान मे गूजते हुए हार्दिक स्नेह की भावना के शब्द सुनने को मिले। दोनो पूज्य वर सामने रखे हुए पाट पर विराजे तब प्रथम

श्री हस्तीमल जी म. श्री को कुछ सुनाने का आदेश श्री घासीलाल जी म श्री की ओर से होने पर उन्होंने कहा—हमें बड़ी प्रसन्नता है कि जिनके दर्शन वर्षों से करने की भावना अतर में थी उनके निकट आज मैं पहुच गया हूँ। उनका महान् कार्य आप सभी के सामने है। बीसेक वर्ष से अधिक समय से जब से पूज्य घासीलाल जी म. श्री सौराष्ट्र में पधारे तब से आज तक आगमो का सस्कृत, हिन्दी, गुजराती और मूल प्राकृत भाषा मे प्रकाशन अ भा. श्वे स्था. जैन शास्त्रोद्धार समिति द्वारा हो रहा है। यह सब प्रताप इन स्थविर, शास्त्रज्ञ, श्रुतप्रेमी मुनिश्री का है। अस्सी वर्ष की आयु में होते हुए भी, जिस उत्साह, उल्लास, लगन, परिश्रम और प्रेम से एक आसन पर विराज कर छः सात घटे बिना विश्राम, लगातार, स्थविर मुनि श्री भावी पीढी की और आज की जनता की हित दृष्टि से शास्त्र उद्धार का कार्य कर रहे हैं, वह एक युवक को भी शर्मिंदा करे, वैसा है। आप सभी इससे अपनी शास्त्र रुचि बढ़ावे और जितना लाभ उठा सके उतना उठावे तब ही आप श्री का किया हुआ पुरुषार्थ सफल होगा। चार भाषाओ मे से किसी एक भाषा का ज्ञाता भी उन आगमो का स्वाध्याय कर सूत्रबोध पा सकता है। आप सभी के पुण्य का उदय है कि ऐसे धर्म के ज्ञाता मुनिवर का यहा इस स्थान पर विराज कर नौ वर्षों से यह टीकादि रचना कार्य हो रहा है, जिससे आपको उनके प्रतिदिन दर्शन व मगलवाणी श्रवण का लाभ हो रहा है।

पूज्य श्री घासीलाल जी म श्री ने अपनी मधुर वाणी मे बोलते हुए, उनसे लघु सत श्री हस्तीमल जी म के कहे हुए शब्दो को आशीर्वाद रूप बतलाया। यह करना उनका गुरुपने का प्रतीक है। महान व्यक्ति ही ऐसे वचन बोल सकते हैं। आगे उन्होने फरमाया कि "समाज में मैंने तीन रत्न पाये श्री आत्माराम जी म., श्री समरथमलजी म., और मेरे पास बैठे हुए हस्तीमल जी म । मारवाड़ की दो हस्तियाँ शास्त्रज्ञ व आचार में समर्थता की रूप हैं। पुरुषो में गन्ध हस्ती ही ग्राह्य है जिनके प्रताप से दूसरे भाग जाते हैं, सामना करने की और खड़े रहने की भी उनकी ताकत नही। इन हस्तीमल जी को मैंने आज ही देखा, पहिले सुना करता था कि मारवाड़ मे ऐसा तेजस्वी साधु है। उन्हे मै, क्या कहूँ जोधपुर का राजा कहूँ या नव कोटि मारवाड़ का सरताज ?" यह कहते हुए उन्होने सस्कृत में रचित अपनी एक प्रशस्ति गाना प्रारम्भ किया। यह अष्टक उन्होने अतिथि मुनि श्री हस्तीमलजी, को बाद में अर्पण भी किया। पुन: उन्होने एक-एक श्लोक लेकर उसका हिन्दी मे भाव बतलाते हुए अन्त मे प्रसन्नता प्रगट की कि ऐसे शात, शास्त्र-मर्यादा मे विचरने वाले उपकारी सत से मेरा मिलना हुआ और इस आनन्द मे मैंने इस प्रशस्ति में उनके गुण गान किये हैं।

पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., स्थविर मुनि श्री घासीलालजी के पास सरसपुर मे चार दिन विराजे। जिस प्रेमयुक्त वातावरण मे एक-एक विषय पर वार्तालाप होता था वह पूरा अल्पमति दर्शक के लिये ग्राह्य न भी हो रहा हो तो भी वह सतो की गोष्ठी की मधुरता का आस्वादन दैवीय प्रतीत हो रहा था। शनिवार के प्रात आठ बजे पूज्य हस्तीमलजी म सा. ने अपने सतो के साथ अति स्नेह पूर्ण भाव के वातावरण मे विहार किया।

■

तथागत आचार्य श्री

• श्री चम्पालाल कर्णावट

उन दिनों की बात है, जब मैं जिनवाणी का सपादक था। बीकानेर राज्य की असेम्बली मे सेठ श्री चम्पालाल जी बाठिया ने बालदीक्षा प्रतिबधक बिल कानून बनाने के लिये रखा। सामयिक पत्र-पत्रिकाओ ने बिल के समर्थन मे बहुत कुछ लिखा। मैंने भी कुछ लिखा। सयोग से छपने के पहले मैंने वह लिखा हुआ सपादकीय पूज्य श्री को उनकी राय लेने के लिये बताया। उन्होने अपनी स्पष्ट राय दी व कई पहलुओ पर प्रकाश डाला, जिससे मेरी राय पूर्णत बदल गई तथा अभी तक मेरी यही मान्यता है कि धार्मिक मामलों मे कानूनन सरकारी हस्तक्षेप उचित नही। चतुर्विध सघ को ही देश काल के अनुसार परिवर्तन सशोधन करना चाहिये।

सेठ श्री चम्पालालजी बाठिया श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ के वार्षिक उत्सव मे अध्यक्ष बनकर पधारे थे। सयोग की बात है कि पूज्य श्री उन दिनो वही विराजते थे। उस दिन व्याख्यान मे स्वावलबन पर बोलते हुए श्री बाठिया जी को सबोधित करते हुए गुरुदेव ने कहा — यही से कुछ मील जाने पर कार की मशीनरी मे कुछ गड़बड़ हो जाय व चलने से रुक जाय तो क्या आप गतव्य स्थान पर पैदल ही पहुँच सकते है ? दैवयोग से जब बाठिया जी भोपालगढ़ से जोधपुर के लिये कार द्वारा रवाना हुये थे तो मार्ग मे कार खराब हो गयी और फिर किसी अन्य साधन से जोधपुर पहुँचना पड़ा।

इस तरह की घटनाओ के बारे मे मैंने एक दिन गुरुदेव से पूछ ही लिया कि क्या इन वारदातो की जानकारी आपको पहले से हो जाती है। गुरुदेव ने सहज स्मित भाव से यही बताया कि वे तो सामान्यत व्यावहारिक नीति के हिसाब से ही ऐसा कह दिया करते हैं। इन घटनाओ को चामत्कारिक रूप नही देना चाहिये।

■

जीवन - निर्माण के कुशल शिल्पी

• श्री अशोक कुमार जैन

पूज्यपाद आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज के दर्शनो हेतु मैं १९८८ के सवाई माधोपुर चातुर्मास मे उपस्थित हुआ, तो पूछा - कहाँ काम करते हो ? मैंने कहा - लेबर इँस्पेक्टर हूँ। फैक्टरी आदि मे मजदूरों से वास्ता रहता है। आचार्य प्रवर ने फरमाया - "वहाँ पर निर्व्यसनता की प्रेरणा किया करो।" मानव जाति के प्रति उनका यह करुणाभाव मुझे छू गया।

आचार्य प्रवर का प्रभाव अद्‌भुत है। मैंने आलनपुर मे एक बैरवा जाति के सज्जन से बात की तो ज्ञात हुआ कि वह प्रतिदिन आचार्य श्री की माला फेरता है। एक बैरवा जाति का भाई कुस्तला के पास चुनाई का काम करता था। मैंने उससे बात की तो वह बोला - अगले जन्म की क्या तैयारी है ? उसके इस प्रकार के सस्कारो के पीछे आचार्य श्री की प्रेरणा रही है। मुझे जानकर आश्चर्य मिश्रित प्रमोद हुआ कि उसकी पुत्री को इच्छाकारेण का पाठ याद है।

मै जब श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, जयपुर मे पढता था, तब सस्थान के सभी छात्र प्रतिवर्ष आपके दर्शनो हेतु जाया करते थे। सन् १९७८ की बात है। निमाज से जैतारण विहार करते समय रुककर आचार्यप्रवर ने सस्थान के छात्रो को दो-तीन श्लोक याद कराये थे, उनमे एक श्लोक था -

समाग्दावानल-दाहनीर, सम्मोहधूलिहरणा समीरम्।
मायाग्मादारणसारसीर, नमामि वार गिरिसारधीरम ॥

मुझे वे क्षण भी याद हैं जब आचार्य श्री को यह ज्ञात हुआ कि पोरवाल समाज मे बच्चो का विवाह कम उम्र मे कर दिया जाता है, तो उन्होने हम सभी छात्रो (डॉ धर्मचन्द, गौतमचन्द, धर्मेन्द्र कुमार आदि) को तीन-चार वर्ष ब्रह्मचर्य पालन करने का नियम कराया था।

-श्रम निरीक्षक
आलनपुर, सवाई माधोपुर (राज.)

■

भक्तों पर प्रभाव : संकलन

मौन से क्रोध पर नियन्त्रण

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. से मेरा प्रत्यक्ष सपर्क जैतारण (राज.) मे १९५३ मे हुआ, जबकि मैं, वहाँ मुसिफ नियुक्त था।

द्वेष, माया, मोह, राग से छुटकारा पाना इतना कठिन नही लगता था, परन्तु क्रोध पर काबू नही हो रहा था। मैंने अपनी समस्या आचार्य श्री के समक्ष रखी, उन्होने इसका निदान मौन बताया। मैं प्रात ९ बजे तक मौन रखने लगा, जो १९६१ तक चला (केवल दुर्घटनावश मुझे १६ माह अस्पताल मे रहना पड़ा तब मौन का नियम नही रह सका।) इस नियम से मैंने बहुत कुछ पाया।

जैतारण मे गुरुदेव के दर्शन मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना रही, जिससे मेरे जीवन मे बहुत परिवर्तन हुआ।

एडवोकेट, १९/४४०
छावनी, सेटेलाइट रोड, अहमदाबाद

धूम्रपान छूटा

• श्री कुन्दन सुराणा,

एक बार पाली से बस द्वारा, ताराचन्दजी सिंघवी के साथ, पीपाड़ के पास रीया (सेठो की) जाने का अवसर मिला। वहाँ सभी के साथ मैंने भी क्रम से आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा के दर्शन किये। मै धूम्रपान करके गया था, आचार्य श्री ने मेरे मुख की दुर्गन्ध से मुझे तुरत धूम्रपान न करने का त्याग करा दिया, मै दग रह गया। पर कारण वश व मन की कमजोरी के कारण मै वह नियम न निभा सका। कुछ माह बाद आचार्य श्री के दर्शन का मौका आने वाला था। मैंने सोचा कि आचार्य श्री मुझे व्रत के बारे मे पूछ न ले या साथी लोग शिकायत न कर दे, मैंने धूम्रपान छोड़ दिया। तब से आज तक मेरा यह व्रत निभता आ रहा है। नियमित स्वाध्याय भी उसी महापुरुष की देन है। ऐसे महान् साधक को पल-पल वन्दन।

सत्यनारायण मार्ग, पाली

मॉस-मदिरा का त्याग

• श्री तनसुखराज जैन

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा का दूसरा जलगाँव-चातुर्मास था, मैं जलगाँव स्थानक के द्वार पर खड़ा था कि एक व्यक्ति गाँधी टोपी पहने रिक्शा मे आया, और मुझसे आचार्य श्री के लिये पूछा। मैंने कहा कि आचार्य श्री बाहर ठेले मातरे (शौच) के लिए पधारे हुए हैं। उसने कहा –'कब आयेगे।' मैने कहा –"आधा घटे से आयेगे।" तब वह व्यक्ति चला गया।

ठीक आधा घटे बाद वह व्यक्ति पुन रिक्शा मे स्थानक आया और मुझे पूछा कि आचार्य श्री कहाँ हैं? मैंने कहा—गोचरी (भोजन) कर रहे हैं। तब मेरे पास बैठ कर सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाने लगा—

"महात्मा जी (आचार्य श्री) सेंधवा (म.प्र.) से विहार कर शिरपुर (महाराष्ट्र) के पास हमारे गाव में पधारे, हमारे मकान के एक कमरे में रात्रि विश्राम किया और सवेरे जाने से पहले मुझे कहा कि मास-मदिरा का सौगध ले लो। तब मैंने कहा कि हम राजपूत समाज के हैं अतएव मास मदिरा का सौगन्ध लेना हमारे लिये सभव नही है। यदि आप में चमत्कार हो तो हमारा मास-मदिरा छुड़वा दो। इस पर आचार्य श्री मौन रहे और मागलिक देकर विहार कर गये। मुझ मे अहकार था, अत उसके बाद मैंने मास मदिरा का सेवन किया। मेरे शरीर पर फोड़ा, फुन्सी हो गये, जिससे मैं इलाज कराकर ठीक हुआ। दूसरी बार मास-मदिरा का सेवन किया तो पुन फोडा, फुन्सी हो गये।

फिर मेरे दिमाग में आया कि शायद मैंने महात्मा जी को चैलेज किया था, उसी का परिणाम है कि शरीर पर फोडा-फुन्सी हो गये। तब मैंने मास-मदिरा का सेवन करना छोड़ दिया।"

कुछ समय पश्चात् कार्यवश उसका जलगाँव आना हुआ। उसने बस स्टेण्ड पर आचार्य श्री के विराजने की सूचना देखी और महात्माजी के दर्शन के लिये वह स्थानक पर चला आया।

जब आचार्य श्री (महात्माजी) गोचरी से निवृत्त हुए, तब उस व्यक्ति ने आचार्य श्री के दर्शन किये और मागलिक लिया। पास मे खड़े श्री चपक मुनि ने भी उस घटना का समर्थन किया। इससे मेरी आस्था को बल मिला।

बोरीदास मेवाड़ा, गुजराती कटला, पाली (राज)

भविष्य द्रष्टा

• श्री दुलीचन्द बोहरा

सन् १९७९ की बात है जब आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी म सा अजमेर मे विराज रहे थे। मैं आचार्य भगवन्त के दर्शन हेतु मद्रास से लाडनूँ होकर अजमेर गया। वहाँ आचार्य भगवन्त के दर्शन किये। मुझे मेड़ता सिटी एक जरूरी काम से जल्दी ही जाना था। मैंने आचार्यप्रवर से मागलिक देने की प्रार्थना की तो आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि अभी और नवकार मत्र की माला फेरो। मैं कुछ भी नही बोला और माला फेरने बैठ गया। करीब १ घटा समय बीतने के बाद आचार्य भगवन्त ने मुझे बुलाया और मागलिक दे दिया। मैं अजमेर बस स्टैण्ड पर गया तो वहा वह बस निकल गयी और उसके बाद मुझे मेड़ता सिटी जाने के लिये २ घटे बाद बस मिली।

मैं मेडता सिटी बस स्टेण्ड से उतर कर सीधा अपने रिश्तेदार के पास गया जहाँ मुझे उनसे काम था। उन्होने बोला कि आप कौनसी बस से आये अजमेर से। मैंने कहा कि पहली बस तो मेरी निकल गयी २ घटे बाद बस मिली, उसी से मैं आ रहा हूँ। मैंने पूछा, क्या बात है? आपने ऐसा कैसे पूछा? तो वे बोले कि आप जिस बस से आये उसके पहले की बस तो गड्ढे मे गिर गयी और २ आदमी की वही मृत्यु हो गयी। मैंने अपने मन मे सोचा कि आचार्यप्रवर कितने दिव्य दृष्टि वाले हैं, सम्भवत इसीलिये मुझको मागलिक समय न देकर माला फेरने को बोला। उस दिन से तो मेरी आचार्यप्रवर के प्रति इतनी आस्था एव श्रद्धा हो गयी कि उसका वर्णन मैं नही कर सकता।

–'Man Mandir No 7, Audippan Street
Purasawakkam, Chennai 600007

देवी बलिदान नही माँगती

• श्री गिरधारीलाल जैन

. परम पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा जब दक्षिण भारत से पुन राजस्थान की भूमि की ओर पधारे तब मुझे भी भगवन्त के साथ विहार का लाभ मिला। एक दिन भगवन्त का रात्रि प्रवास सड़क के एक किनारे छोटे गाँव मे हुआ, जहाँ जैन घर एक भी नही था। सभी बस्ती अजैन घरों की थी। कच्चे मकान थे। एक ही मकान पक्का वहाँ के सरपच का था। जिसके चारो तरफ दीवार का परकोटा बना हुआ था। उसके समीप ही एक हरिजनो की देवी का कच्चा चबूतरा बना हुआ था। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. सरपच के मकान मे ठहरे हुए थे। उसी दिन एक हरिजन परिवार ने देवी के बलि चढाने हेतु बकरा बाध रखा था। जब आचार्य भगवन्त को बकरे की बलि चढ़ाने की बात ज्ञात हुई तो गाँव के सरपच एव मुखिया लोगो को बुलाकर भगवन्त ने कहा कि आप लोग इस हरिजन परिवार को समझा देवे कि जीव को मार कर खाने से कोई फायदा नही है। गाँव वालो ने काफी समझाया, लेकिन हरिजन परिवार नही समझा और कहने लगा कि मेरी देवी रूठ जायेगी। इसने मेरी मनोकामना पूरी की है। लेकिन देवी जिसके शरीर मे आती थी वह पुजारी बाहर गॉव का रहने वाला था। वह रात्रि को ७ बजे आया, लोगो की भीड़ लगी हुई थी। साधु व श्रावक सभी प्रतिक्रमण कर रहे थे। देवी के पुजारी को किसी भी माहौल का पता नही था। वह आते ही चबूतरे पर चढ़ा और देवी आ गई। कहने लगी "अरे दुष्टो! मेरा नाम बदनाम करते हो। जो महापुरुष यहाँ बैठा हुआ है, देवताओ का राजा इन्द्र भी जिसकी वाणी को नही ठुकराता है, उसके सामने तुमने मुझे बदनाम कर दिया है कि देवी बकरे मॉगती है। मैंने कब बकरे मागे है। तुम तुम्हारे खाने वास्ते बकरे मेरे नाम पर बलि करते हो। तुम्हारे कार्य का फल तुम भोगोगे।" इतना कह कर देवी शरीर से निकल गई। जबकि उस पुजारी को यह भी मालूम नही था कि यहा सत विराज रहे है। दूसरे दिन प्रात सभी ग्रामवासी व हरिजन परिवार गुरुदेव के जय जयकार के नारे बोलते हुए एक किलोमीटर तक विहार मे साथ चले। ऐसे थे महा उपकारी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., जिनकी महिमा सुर-नर सब गाते हैं।

प्रचारक, श्री स्था जैन स्वाध्याय सघ
शाखा, बजरिया, सवामाधोपुर

बालक ठीक हुआ

• श्री पारसमल सुरेश कुमार कोठारी

मैं सपरिवार अहमदाबाद मे पूज्य गुरुदेव की सेवा मे पहुँचा । उस समय हमारा करीब दो मास का लड़का भी साथ मे ही था। इस बच्चे का स्वास्थ्य बहुत कमजोर चलता था। जब मै मेरे गाँव रणसीगॉव से रवाना हुआ, उस समय पूरे परिवार ने बोला कि सिर्फ दो मास का छोटा बच्चा है, दूध भी पीता नही। बच्चे का स्वास्थ्य अहमदाबाद पहुँचने जैसा नही है। कही रास्ते मे ही तकलीफ न हो जाय। वाकई मे बच्चे की तबीयत बहुत ही कमजोर चल रही थी।मैं हिम्मत कर सपत्नीक रवाना होकर पूज्य गुरुदेव के चरणों मे अहमदाबाद पहुँचा।

मै और मेरी पत्नी गुरुदेव के श्री चरणो मे वन्दना कर बैठ गये। धीरे-धीरे भीड़ कम देख कर गुरुदेव के श्री चरणो मे कमजोर बच्चे को चरणस्पर्श कराकर सुला दिया।

थोड़ी देर मे गुरुदेव के प्रताप से बच्चे के पेट से लम्बा जानवर (छोटा सर्प जैसा) निकला। जानवर के

निकलते ही बच्चे की आँख खुली और माँ ने उसे दूध पिलाया। बच्चा एकदम स्वस्थ होगया, आज वह युवा है।

२७, चन्द्रप्पन स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई

हकलाहट दूर हुई

• श्री प्रकाश नागोरी

१९८८ में पूज्य आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के कोटा मे दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ आदरणीय श्री फूलचदजी मेहता, उदयपुर ने आचार्य श्री से मेरा परिचय कराते हुये कहा कि मै लगभग दस वर्षों से स्वाध्याय सघ का सदस्य हूँ, सामान्यत जानकारी (तत्त्वो की) अच्छी है, लेकिन पर्युषण मे सेवाए नहीं देता हूँ। तब आचार्य श्री ने मुझे पर्युषण मे सेवाएँ नही देने का कारण पूछा। मैने आचार्य श्री से निवेदन किया कि दुकान पर कार्य करने वाला मैं अकेला हूँ तथा बोलने मे मैं हकलाता हूँ। तब आचार्य श्री ने फरमाया यह बहाना नहीं चलेगा, तुम्हे कम से कम तीन वर्ष लगातार सेवाएँ देनी हैं।

मुझमे आचार्य श्री के आदेश को नकारने का साहस नही हो पाया, मैंने आचार्य श्री के समक्ष तीन वर्षो तक पर्युषण मे सेवाएँ देने का सकल्प व्यक्त किया।

यह चमत्कार ही हुआ कि पर्युषण मे प्रवचन देते समय मेरी हकलाहट समाप्त हो गई।

पो सिंगोली, जिला - मन्दसौर (म प्र)

आराधना का प्रभाव

• श्री भोपालचन्द पगारिया

आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब का वर्षावास इन्दौर था। मेरी तथा मेरे परिवार की तीव्र इच्छा थी कि आचार्य श्री के दर्शन करने है। इन्दौर फोन करने पर ज्ञात हुआ कि इन्दौर के पास जो नदी है उसका पानी करीब ९ फीट ऊचा चल रहा है। जो इन्दौर पहुचना मुश्किल है पर हमारी इच्छा तो दर्शन करने की थी। यह प्रबल विश्वास था कि गुरुदेव की कृपा से यह इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। हम कार द्वारा रवाना हुए, नदी के पास पहुचने पर पानी बराबर हो गया। हम नदी पार कर इन्दौर पहुच गये तथा बाद मे फिर पानी का चढ़ाव शुरू हो गया। ऐसा था आचार्य श्री की आराधना का प्रभाव।

No 51, B VK Iyengar Road Bangalore 560025

व्रत-नियम की प्रेरणा

• श्री किशनलाल कोठारी

हमारे ग्राम जामनेर के धर्मप्रेमी श्रावक श्री फतेहराज जी चोरड़िया के साथ मै भी इन्दौर मे आचार्य श्री के दर्शनार्थ गया। गुरुदेव ने व्रतो का महत्त्व समझाकर १२ व्रतो के नियम कराए। इससे मेरा जीवन सयमी हो गया। मै उन व्रतो का पालन आज भी पूरी तत्परता से कर रहा हूँ। आचार्य श्री के दो चातुर्मास जलगाँव मे हुए। उस समय विहार काल में ९-१० दिन जामनेर मे विराजे। उस समय मैंने प्रतिक्रमण पूरा सीखा, गुरुदेव की प्रेरणा से मै नियमित रूप से दोनों समय प्रतिक्रमण और प्रतिदिन ५ सामायिक करता हूँ। जलगाँव के दूसरे चातुर्मास के समय गुरुदेव ने हमें आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत दिलाया। गुरुदेव की वाणी से मैंने जमीकन्द का सेवन नही करने का नियम

लिया। गुरुदेव की निर्मलता और वाणी का मुझ पर बहुत असर पड़ा।

—संघपति, जामनेर ओसवाल श्री संघ
जामनेर, (महाराष्ट्र)

भविष्य ज्ञाता

• श्री मोतीलाल गांधी, अध्यक्ष

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मा साहब हीराचन्द्रजी महाराज सा. आदि सन्तो के साथ प्रचार करते नागपुर से जलगाँव चातुर्मास हेतु विहार करते हुए वर्धा पधारे। हमारा सघ वर्धा मे विनति करने गया। सघ की आग्रहभरी विनति स्वीकार कर चक्कर पड़ते हुए भी हमारे ग्राम रालेगाव पधारने की कृपा की। ग्राम के नवयुवक दर्शन हेतु स्थानक में आये। मैंने परिचय दिया। मेरे पुत्र मोहन गाधी का भी परिचय दिया। आचार्य श्री ने नजर उठाकर देखते ही यह टिप्पणी की "आपके नयनो की चचलता देखते आप खेतीबाडी में सीमित नही रहोगे।" वकील होने पर भी वकालात करने की भावना नही थी। दूसरा व्यवसाय कहाँ पर कौनसा करना फिकर रहती थी। थोडे दिंनो बाद मे ही सभी सयोग बनकर आये। यवतमाल शहर मे मकान, दुकान तथा व्यवसाय बहुत अच्छे से चलने लगा। हमें बडा आश्चर्य हुआ। जिसको जन्म से देखते आये जान न सके , आचार्य प्रवर ने देखते ही क्षण मात्र मे टिप्पणी की, जो सही निकली। यह प्रत्यक्ष मे मेरी नजरो के सामने घटित घटना है। ऐसे महान् आचार्य को कोटिश वदन।

श्री वर्ध स्थानकवासी जैन श्रावक सघ,
रालेगांव जि यवतमाल (महाराष्ट्र राज्य)

प्रभावी व्यक्तित्व के कतिपय प्रसंग

- अजमेर सम्मेलन के लगभग ३ वर्ष पश्चात् जेठाना ग्राम में आपका पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा के साथ पुन कुछ समय विराजना हुआ। पूज्य जवाहराचार्य आपसे उम्र, दीक्षा, अनुभव आदि सभी दृष्टियो से बहुत वरिष्ठ थे। किन्तु आपकी विद्वता और क्रियापालना से बड़े प्रभावित थे और सदैव आपको मान देते थे। 'जेठाना' गाँव से श्री जवाहराचार्य जी गुजरात की ओर विहार करने का मानस बना चुके थे। जब दोनों आचार्य अलग होने लगे और विहार का समय आया तो पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा से मागलिक सुनाने को कहा। आचार्य श्री हस्ती चौंक गए। इतने बड़े, इतने अनुभवी आचार्य मुझसे मागलिक सुनाने को कह रहे हैं। जब श्री जवाहराचार्य ने उनके सकोच का अनुभव किया तो कहा कि 'यदि आचार्य ही आचार्य को मागलिक नही सुनाएगा तो कौन सुनाएगा?" अत आप तो मुझे मागलिक सुनाए। अन्त मे आपसे मागलिक सुनकर ही उन्होंने विहार किया।
- सवत् २०२३ के चातुर्मास मे आचार्य श्री अहमदाबाद के बुधा भाई आश्रम मे विराजित थे। उसी दौरान एक बार आपका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया। अस्वस्थता के बावजूद आप दिन भर अपनी दिनचर्या मे लगे रहते। चिकित्सको ने आपको पूर्ण विश्राम की अर्थात् दिन भर लेटे रहने की सलाह दी। मगर आपने तो समग्र जीवन मे कभी क्षण भर भी व्यर्थ नही खोया था। विश्राम समय के सदुपयोग का भी उपाय आपने खोज ही निकाला। कहने लगे कि कोई सत मेरे पास बैठ कर शास्त्रो का वाचन करे तो मुझे चिकित्सकों की राय के अनुसार कोई श्रम भी न होगा और साथ ही साथ स्वाध्याय भी होता रहेगा।
- ३० दिसम्बर १९९० को आपकी जन्मजयती का अवसर आया। आप उस समय पाली मे विराजमान थे। इस प्रसग को भक्तो द्वारा दिल्ली मे भी समारोहपूर्वक मनाया गया, जिसमे भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री चन्द्रशेखर, कई केन्द्रीय मत्रियो व अनेक गणमान्य व्यक्तियो की उपस्थिति रही। भावुक भक्तो ने बड़े-बड़े पोस्टर भी छपवाए। जब आचार्य श्री की निगाहों में ये पोस्टर आए तो उन्हे देखकर स्पष्ट शब्दों में तुरन्त अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए बोले, "यह क्या आडम्बर है? इन मेले-ठेले मे मुझे विश्वास नही और इन सब मे सामायिक-स्वाध्याय का उल्लेख तक नहीं, खुशी तो मुझे तब होती जब मेरे नाम के बजाय सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा मे आपका पुरुषार्थ होता।
- अपने समग्र जीवनकाल में आपने एक भी सस्था अपने नाम से नही खुलने दी। आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जैन रत्न विद्यालय, भूधर-कुशल कल्याण कोष, अमर जैन रिलीफ सोसायटी जैसी अनेकानेक सस्थाएँ प्रमाण हैं उनकी निस्पृहता की कि अपने ही जीवन काल मे खुलने वाली ऐसी पचासो सस्थाओ मे से एक का नाम भी उन्होंने खुद के नाम से नही जुड़ने दिया। हालाकि भक्तों ने कई बार ऐसी चेष्टाए की।
- अपने जीवन की समस्त सफलताओं, उपलब्धियों का श्रेय स्वय न लेकर 'गुरुकृपा' को देते रहे। जीवनकाल मे अपना जीवनचरित्र न छपने देने के पीछे भी उनकी यह निष्काम वृत्ति रही। श्रद्धालुओ द्वारा जब आपकी जय जयकार की जाती तब कई बार आप उसे रोककर अन्य महापुरुषों या तीर्थंकरो की जय करने की ही बात करते।
- स्मरण आता है सवत् २०२० का अजमेर मे सम्पन्न अधिकारी मुनि सम्मेलन। श्रमण-वर्ग ने जब प रत्न श्री

• आनन्द ऋषि जी म.सा को श्रमण-सघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया तो युवाचार्य - पद के लिये पूज्यश्री हस्ती का नाम प्रस्तावित किया गया।

• अनेक श्रमण-दिग्गजों ने आपश्री के अगाध आगम-ज्ञान, आपकी दिव्य-भव्य-साधना, आपके जन-कल्याणी स्वभाव की ओर सकेत करते हुए आपको सिद्धान्तप्रिय, अनुशासनप्रिय एव आचारनिष्ठ बताते हुए युवाचार्य पद के लिए प्रस्तावित आपश्री के नाम को समर्थन दिया और आपकी सहमति मागी। चरितनायक ने तब बहुत ही विनीत स्वर मे इसके लिए इन्कार कर दिया। इस पर अनेक अधिकारी सतों ने आपसे आग्रहपूर्वक कहा कि जब आप सर्वथा सक्षम हैं तो इन्कार क्यो ? उन्होने रत्नवशीय वरिष्ठ सत श्री लक्ष्मीचद जी म.सा. को भी कहा कि वे चरितनायक को युवाचार्य पद के लिये तैयार करे। पूज्यवर के प्रमुख भक्त राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री इन्द्रनाथ जी मोदी से भी कहा गया कि वे भी चरितनायक से युवाचार्य पद के लिये निवेदन करे। किन्तु आपने विनम्रता एव दृढतापूर्वक उस गौरवपूर्ण पद को अस्वीकार कर दिया। सम्भवत उन्हें भविष्य दिखाई दे रहा था।

• गेहुआ वर्ण व छोटे कद के बावजूद आचार्यप्रवर के मुख-मण्डल पर उनकी उत्कृष्ट-साधना की ऐसी दिव्य आभा चमकती थी कि दर्शनार्थी भाई - बहनो के नेत्र उन्हे घटो निहारने पर भी अतृप्त से ही रह जाते थे। शान्त सौम्य मुखाकृति पर अपूर्व आनन्द एव सतोष की काति। इच्छा होती थी कि वक्त वही ठहर जाये और आकृति नेत्रों से कभी ओझल न हो।

• कई बार जब आगन्तुको की भीड़ अधिक होने पर उन्हे शीघ्र दर्शन कर आगे बढ़ जाने को कहना पड़ता तो भी गुरु भगवन्त के चेहरे पर चमकते तेज मे वे इस तरह खो जाते कि आदेश को अनसुना करके वही खड़े रहते। एक मात्र यही कामना लिये कि कुछ घड़ी और इस अपूर्व आनन्द की प्राप्ति कर ले। इसी सदर्भ मे गुरुदेव के अनन्य भक्त जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी सुश्रावक श्रीमान् पूनमचद जी बडेर की अभिव्यक्ति साधारण शब्दो मे, किन्तु गहन भावो के कारण हृदय को छू जाती है। स्वय उन्ही के शब्दो मे "आचार्य प्रवर की सौम्य मूर्ति नै तो बार - बार देख ने भी जीव कोनी धापे। अठा तक कि मै तो कई बार सामायिक लेणो भी भूल जाऊँ।"

• गुरुदेव के जीवन मे एक नही, अनेक ऐसे प्रसग दृष्टिगत होते है जब आपने अन्य सतो की रुग्णावस्था या अन्तिम समय मे अपनी सेवा-भावना का उत्कृष्ट व अनुकरणीय परिचय दिया। उनमे से कुछ प्रसगो का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है –

(१) स्वामी श्री भोजराज जी म सा एक उत्तम सेवाभावी एव ख्यातिप्राप्त रत्नवशीय सन्त थे। अपने अतिम समय में उन्होने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म सा को स्वामी श्री अमरचन्द जी म.सा के सम्बन्ध मे भोलावण देते हुए यह वचन लिया कि गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म सा श्री अमरचन्द जी म सा की पूरी तरह सार सभाल करते रहेगे। गुरुदेव तो वचन के पक्के धनी थे। बस आपने स्वामी श्री अमरचन्द जी म सा की सेवा सुश्रूषा का पूरा दायित्व अपने ऊपर ले लिया। अपने अन्तिम दिनो मे दिल्ली प्रवास के दौरान स्वामीजी कैंसर जैसी भयकर व्याधि से ग्रस्त हो गये तो गुरुदेव स्वय उनकी सेवा मे तत्पर हो गये। उन्हे साथ लेकर शनै शनै पुन जयपुर की ओर विहार करने का लक्ष्य बनाया।

ठीक इसी समय श्रमणसघीय तत्कालीन आचार्य श्री आत्माराम जी म सा पजाब के लुधियाना क्षेत्र में विराजित थे। जहाँ आपकी विद्वत्ता व आगमज्ञान से गुरुदेव स्वय प्रभावित थे, वही आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. आपके

व्यक्तित्व एव गुणों से इतने प्रभावित थे कि पत्राचार के दौरान आपको 'पुरिसवरगधहत्थीण' से सम्बोधित करते थे। उन्ही आचार्य श्री ने उस समय गुरुदेव को आत्मीयतावश सहज मिलन एव पजाब क्षेत्र मे धर्मप्रचार की दृष्टि से उधर आने हेतु आग्रह किया। अब इधर तो गुरुदेव पर स्वामी श्री अमरचन्द जी म.सा की सेवा का दायित्व था तो उधर एक ज्ञानी सन्त से मिलन और पजाब का क्षेत्र फरसने का प्रबल आकर्षण। किन्तु गुरुदेव तो थे वचन के धनी, दृढ़ सेवाव्रती। बस, आपने उस अवसर और आकर्षण को गौण कर सेवा को ही प्राथमिकता दी और स्वामी जी को धीरे-धीरे जयपुर तक ले आए। फिर पूरे एक वर्ष तक (उनके देहावसान तक) आपने उनकी पूर्ण सेवा-सुश्रूषा की। इस प्रकार आपने अपने आज्ञानुवर्ती सन्त की सेवा का उत्कृष्ट आदर्श भी प्रस्तुत किया।

(२) पूज्य श्री जयमल जी म.सा. की परम्परा के वयोवृद्ध स्वामी श्री चौथमल जी म.सा सवत् २००९ मे जोधपुर शहर मे विराजित थे। आचार्य श्री भी जोधपुर मे ही थे। आपका चातुर्मास नागौर मे होना तय हुआ था। अत आपने वहाँ पहुँचने हेतु आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष मे जोधपुर से प्रस्थान कर महामन्दिर पधार गये थे। उसी समय श्री चौथमल जी म.सा ने सथारे के प्रत्याख्यान कर लिए और सथारा पूर्ण होने तक चरितनायक पूज्यश्री के सान्निध्य की इच्छा प्रकट की।

चातुर्मास प्रारम्भ का समय नजदीक होने के बावजूद भी पुरातन मधुर सबधो की अक्षुण्णता और मुनि श्री के प्रति सेवाभाव के लक्ष्य से नागौर विहार स्थगित कर, आप पुन जोधपुर शहर मे पधारे। यहाँ आपने वैराग्य एव समभाव को पुष्ट करने वाले स्तोत्र, भजन, पद आदि सुनाकर श्री चौथमलजी म.सा के मनोबल एव आत्मबल को सुदृढ किया। इसी समय चरितनायक ने 'मैं हूँ उस नगरी का भूप' आदि वैराग्यप्रद पदो की रचना की। १३ दिनो में सथारा पूर्ण होने के पश्चात् आपने आषाढ शुक्ला ४ को नागौर की ओर उग्र विहार किया एव आषाढ शुक्ला १३ को भीषण तपती हुई दुपहरी में ३ बजे नागौर मे प्रवेश किया।

(३) रत्नवश के वरिष्ठ एव वयोवृद्ध बाबाजी श्री सुजानमल जी म.सा. एव आचार्य श्री के मध्य मात्र प्रगाढ स्नेह ही नही वरन् विनय की पारस्परिक आदर्श भावना भी थी। दीक्षाकाल एव पद के आधार पर दोनो ही एक दूसरे के प्रति विनयवृत्ति रखते थे। बाबाजी म.सा जब अपने जोधपुर स्थिरवास के समय अत्यन्त अस्वस्थ हो गये तो आपने आचार्य श्री के सामीप्य की आकाक्षा प्रकट की और सेवाव्रती आचार्य देव ने भी उनकी इच्छा को पूर्ण सम्मान देते हुये उनके देवलोक होने तक उनके निकट रहकर उनकी पूर्ण सेवा की।

(४) आचार्यप्रवर चातुर्मासार्थ मेड़ता नगरी मे विराजित थे। उसी दौरान आपको यह समाचार मिले कि कुचेरा में स्वामी जी श्री रावतमल जी म.सा के सत श्री भेरूमल जी म.सा. का देहावसान हो गया। उस समय कुचेरा में दो ही सत थे और उनमे से भी एक के दिवगत हो जाने से वयोवृद्ध स्थविर श्री रावतमलजी म.सा. एकाकी रह गये थे। ऐसे समय मे स्वामी श्री रावतमल जी म.सा की वृद्धावस्था एव एकाकीपन को दृष्टिगत रखते हुए अपने सतो को शीघ्र ही उनकी सेवार्थ विहार करा दिया। (यह बात और है कि बाद मे जब यह समाचार मिले कि जयगच्छीय अन्य सत उनकी सेवार्थ पधार रहे हैं तो फिर अपने सन्तो की वहाँ आवश्यकता न देखते हुये आपने उन्हे पुन अपने पास बुला लिया।) अपने सतो को भेजने का निर्णय निश्चय ही आपकी उत्कृष्ट सेवाभावना, सरलता व स्नेहभाव का अनुकरणीय उदाहरण है।

- पूज्य गुरूदेव की कभी यह अभिलाषा नही रही कि उनके गुणगान में कुछ लिखा जाए। वे तो गुणगान की अपेक्षा व्यक्ति के आध्यात्मिक - उन्नयन को ही महत्त्व देते थे। यह तथ्य श्रद्धेय श्री गौतम मुनिजी म.सा के

अग्राङ्कित सस्मरण से स्पष्ट है—

"गुरुदेव के सौभाग्यशाली सान्निध्य को प्राप्त करते हुए उस दिन मैं उनके पाट के पास नीचे बैठा उनके जीवन अध्याय के प्रमुख प्रेरक प्रसगो व सस्मरणो को विविध पुस्तकों व लेखो मे से चुन कर सगृहीत कर रहा था। मैं अपने कार्य को बड़ी तत्परता से अजाम दे रहा था कि अनायास ही गुरुदेव ने स्नेह सबोधन के साथ सहज प्रश्न किया- 'बच्चू (गौतम), क्या कर रहे हो?' मैंने तुरन्त उत्साह के साथ प्रत्युत्तर दिया, "अन्नदाता! आपके जीवन से सबधित सस्मरणो का सकलन कर रहा हूँ।" मेरा यह वाक्य सुनते ही गुरुदेव ने अत्यन्त आत्मीय भावना से जो प्रेरक वचन कहे उनका प्रभाव आज तक मेरे हृदय-स्थल पर अमिट रूप से अकित है। उन्होने कहा, "अरे भाई! जितना समय तू इसमे लगाता है, इतना ही यदि आगम पाठो व जैन शास्त्रों मे लगायेगा तो अच्छा पडित बन जायेगा।" मैं दग रह गया, मेरे हाथ थम गये। इस युग में ऐसा निर्मोही! इतनी निस्पृहता! न आत्म-महिमा की चाह, न स्वय के प्रति कोई आकाक्षा, अपितु दूसरे के आत्म-उत्थान एव जीवन-निर्माण की इतनी उत्कृष्ट अभिलाषा देखकर ये दो नेत्र धन्य हो गये।"

- इन्दौर के उपनगर जानकी नगर मे पूज्य आचार्यप्रवर अपने कुछ शिष्य सतो के साथ विराज रहे थे। मौसम सबधी बदलाव से आचार्य देव के स्वास्थ्य मे कुछ शिथिलता आ गयी। चिंतित शिष्यगण ने सकेत द्वारा चिकित्सक को बुलवाया। चिकित्सक ने सन्निकट जाकर आचार्यश्री से सामान्य परीक्षण की अनुमति माँगी। आचार्य श्री ठहरे निस्पृही, अपने शरीर के लिये औषधिसेवन व परीक्षणो से यथासभव विरक्त रहने वाले। मगर मुस्कराये और न जाने क्या सोच कर सहज भाव से अपना परीक्षण करवा लिया। किसे क्या पता कि उस मुस्कान के पीछे छुपा रहस्य क्या है? चिकित्सक लौटने को उद्यत हुए कि विनोद मुद्रा मे आसीन आचार्य श्री की ओर से निश्छल मुस्कान के साथ माग आयी 'अरे भाई मेरी फीस तो देते जाओ।'

  नियमों के सर्वथा विपरीत बात। चिकित्सको ने उनका परीक्षण किया और चिकित्सको से ही फीस मागी जा रही थी। यह क्या बात हुई भला? उस महामनीषी का तो सपूर्ण जीवन ही असाधारण था और जानते है उस दिव्य साधक ने वह अलौकिक फीस क्या ली? चिकित्सको से १५ मिनट स्वाध्याय रोज करने के नियम के साथ यह वचन कि भविष्य मे दीन, दुखी, साधनहीन व्यक्ति की चिकित्सा हेतु वे सहज सेवा के भाव से जाने को सदैव तत्पर रहे तथा व्यसन-मुक्त समाज के निर्माण मे सक्रिय सहयोग दे। कितनी अद्भुत शैली थी उस महामानव की धर्म और सेवा की प्रेरणा देने की।

- 'कोसाना' ग्राम मे एक व्यक्ति प्रतिदिन दो तोला अफीम सेवन का आदी हो चुका था। अनेकानेक प्रयत्नो के बावजूद भी वह इस व्यसन से मुक्ति नही पा सका। अन्तत निर्व्यसनता के क्षेत्र मे आपकी उपलब्धियाँ श्रवण कर वह आशा के साथ आचार्य देव के श्री चरणो मे उपस्थित हुआ। आचार्यप्रवर ने मात्र ७ दिन उसे अफीम सेवन न करने को कहा तथा यह भी कहा कि यदि वह ७ दिन नियत्रण कर ले तो जीवन पर्यन्त इस व्यसन से मुक्ति पा सकेगा। आपकी प्रेरणा से उसमे नयी इच्छा शक्ति का सचार हुआ और धर्म का प्रताप देखिये एक भी दिन अफीम के अभाव मे न रह सकने वाले व्यक्ति ने उस दिन के पश्चात् अफीम को पुन छुआ तक नही। आज उसका शात, सुखी, निर्व्यसनी जीवन यकीनन आचार्य भगवन्त की देन है। आचार्य श्री की इस प्रकार की देन एक व्यक्ति, एक परिवार तक सीमित नही रही, वरन् पूरे समाज, पूरे राष्ट्र में आप श्री की प्रेरणा से हजारों लोग व्यसनमुक्त होकर उन्मुक्त स्वस्थ जीवन जी रहे है।

- किसी कार्य को प्रारम्भ करने के पश्चात् उसमें तन्मयतापूर्वक जुट जाना और उस कार्य को पूर्ण करना आपका स्वभाव था। आपने जैन इतिहास लेखन के महत्त्वपूर्ण कार्य को हाथ में लिया, और इस कार्य में जुट गये। कार्य की सम्पन्नता हेतु गुजरात के भडारों के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का अवलोकन आवश्यक था। अत: राजस्थान से लबा विहार कर, मार्ग में अनेक परीषहों को सहन करते हुए आप गुजरात पधारे। वहाँ अहमदाबाद, खंभात, पाटण आदि के भडारों का अवलोकन करते हुए आपका आणद में पदार्पण हुआ। बड़ौदा में यतिजी के भण्डार में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का एक विशाल सग्रह था। उसके अवलोकन हेतु आपने आणद से बड़ौदा की ओर विहार किया। मार्ग रेल की पटरी के सहारे था, रेतीला था। ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी पड़ रही थी। प्रचड धूप की गर्मी से रेत इतनी तप्त हो रही थी कि उसके कुछ कण उछलकर पैरो पर पड़ते थे, वे भी असहनीय लगते थे। पशु-पक्षी भी उस तप्त वातावरण से सतप्त थे। सिर पर धूप और पैरों नीचे धूल का तापमान निरतर बढ़ता जा रहा था। ऐसी स्थिति में आपका नगे पैर चलना वास्तव में कष्टदायक रहा होगा। मार्ग में प्रासुक-जल की उपलब्धि भी दुर्लभ थी। इस प्रकार असह्य ताप व तृषा की वेदना सहन करते आपका अगले नगर में पधारना हुआ। दोपहर का समय हो चुका था। अत: मुनिमडल को इतना प्रासुक जल न मिल सका कि जिससे तृषा शात होती। फिर भी आचार्य श्री व मुनिमडल के चेहरों पर किञ्चित् भी उदासीनता नहीं थी। जल के अभाव मे भी मुखारविंद प्रफुल्लित थे। आचार्य श्री नित्य के समान उस दिन भी इतिहास-लेखन के कार्य में व्यस्त हो गये।

- उन दिनो आचार्यप्रवर शेषकाल मे जयपुर विराज रहे थे। प्रतिदिन आपका बड़ा सुन्दर, प्रभावशाली वाणी मे प्रवचन होता और अनेक धर्मप्रेमी बन्धु प्रवचन-श्रवण का लाभ उठाते। उसी दौरान एक दिन विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री निरजननाथ जी आचार्य भी प्रवचन में आए। प्रवचन श्रवण किया और बड़े प्रभावित होकर लौटे।

अगले दिन जब प्रवचन मे आए, हृदय मे कुछ जिज्ञासाएँ थी। सोचा, प्रवचन के पश्चात् गुरुदेव के समक्ष अपनी शकाएँ रखकर उनके समाधान हेतु उनसे निवेदन करूँगा। यही सोचकर प्रवचन सुनने बैठ गए। मगर जब प्रवचन सुनने लगे, सुनते-सुनते चकित रह गए। सहसा विश्वास नही हुआ अपने कानो पर कि मन मे जो-जो जिज्ञासाएँ लेकर वे आए थे, प्रवचन मे उन्ही सबका समाधान प्राप्त हो रहा था। उन्हें लगा कि आचार्य श्री बिना कहे ही दिल की बात जान गए हैं।

आचार्य निरंजननाथ जी तो अभिभूत हो उठे। जैसे ही प्रवचन समाप्त हुआ, तुरन्त आचार्य श्री के समीप पहुँचे और निवेदन किया, "भगवन् मेरी जो भी शकाएँ थी, आपने मेरे बिना कहे ही उनका स्वतः समाधान कर दिया। मैं तो हैरत मे हूँ, आपकी यह दिव्य दृष्टि देख कर। धन्य धन्य हैं गुरुदेव आप"।

- ज्ञान गच्छाधिपति बहुश्रुत पण्डित श्री समर्थमल जी म.सा. और आचार्य श्री हस्ती के पारस्परिक सम्बन्ध बहुत ही मधुर थे। सवत् २०१० के जोधपुर में ६ महान् सन्तो के सयुक्त चातुर्मास में भी आपका स्नेह दूसरों के लिए आदर्श बन गया था। बाद में भी आपके सम्बन्धों में सदैव मधुरता रही।

बहुश्रुत पण्डित रत्न श्री समर्थमल जी म.सा. अपने बालोतरा प्रवास के दौरान अस्वस्थ हो गए। आचार्यप्रवर ने भी उनकी अस्वस्थता के समाचार सुने। न जाने कैसे आपको ऐसा पूर्वाभास हो गया कि अब बहुश्रुत पण्डित जी म.सा. का अन्तिम समय नजदीक ही है। उन्ही दिनों में एक दिन आप बाला ग्राम से कापरड़ा की ओर विहार कर रहे थे कि चलते-चलते यकायक अपने साथ चल रहे श्रावकों से बोल उठे कि 'जिन शासन रूपी मानसरोवर का हंसा

आज उड़ गया है।' आप विस्मय करेंगे यह जानकर कि कुछ समय पश्चात् जोधपुर से आए श्रावक श्री पारसमलजी रेड ने बताया कि बहुश्रुत पडितरत्न श्री समर्थमल जी म.सा का स्वर्गवास हो गया है।

- आचार्यप्रवर सन् १९७१ का जोधपुर वर्षावास सम्पूर्ण कर आगोलाई, बालेसर आदि गावो मे धर्मगगा बहाते हुए विचरण कर रहे थे। इसी दौरान एक दिन आगोलाई गाँव मे सोनराज नाम का एक छोटा बालक गुम हो गया। जैसा कि स्वाभाविक था, बालक के परिजन व अन्य ग्रामवासी बहुत चिन्तित हो उठे। सभी ने मिलकर आस-पास, सभी सभावित स्थलो पर बहुत खोज की, किन्तु व्यर्थ। अन्तत निराश होकर वे लोग आचार्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुए। सारी घटना की सविस्तार जानकारी दी। आचार्य श्री ने ध्यानपूर्वक ब्यौरा सुना, कुछ क्षण चिन्तन किया जैसे कोई दिव्य स्वप्न देख रहे हो और फिर पूर्ण निश्चिन्तता और आत्मविश्वास के साथ बोले—'चिन्ता मत करो, कल सुबह तक इन्तजार करो....।'

  हालाकि सहसा विश्वास तो नही कर पाए बालक के परिजन, फिर भी 'गुरु तो अन्तर्यामी हैं, इनकी बात कभी व्यर्थ नही जा सकती' सोच कर काफी राहत महसूस की। इसी तरह विचारो में डूबते-उतरते रात बीती। सुबह हुई। एक-एक पल युग की तरह कट रहा था। इसी ऊहापोह मे एक बार पुन खोजने निकले तो देखा बच्चा नजदीक ही एक पहाड़ी पर सोया हुआ था। परिजनो की प्रसन्नता का पारावार न रहा और अन्य ग्रामवासी भी गुरुदेव के कथन की यथार्थता देख चकित रह गए।

  इधर दरअसल हुआ यह कि बच्चा घूमते-घूमते पहाड़ी पर चला आया। चलते-चलते थक तो गया ही था, वही सो गया। ठडी हवा चल रही थी, थकान तो थी ही, बस गहरी निद्रा आ गई और वह अद्‌भुत स्वप्नो मे खो गया और रात भर वही सोता रह गया।

- गुरुदेव के अन्तर्यामी व्यक्तित्व की झलक देता यह अगला प्रसग वर्तमान उपाध्यायप्रवर के दिल्ली चातुर्मास से सम्बद्ध है, जिसका जिक्र कई बार आपके प्रवचनो मे सुनने को मिला है। उनके अपने ही भावो में यह प्रसग—

  "दिल्ली चातुर्मास का प्रसग था। विद्यानुरागी श्री गौतम मुनि जी व तपस्वी श्री प्रकाश मुनि जी मेरे साथ थे। उन्ही दिनो गुरुदेव के समाचार मिले कि "दिल्ली मे श्रावक योग्य और अच्छे हैं किन्तु महानगर होने से क्षेत्र भी बड़ा है। आप सन्त कम हैं। हो सकता है कोई अड़चन भी आए, लेकिन काम रुकने वाला नही है।"

  धीरे-धीरे चातुर्मास काल बीतने लगा। तप, त्याग, सवर, दया, पौषध आदि की धार्मिक लहर वृहद् स्तर पर जन-जन के मन मे, जीवन मे हिलोरे लेने लगी। यह धर्म-जागृति की लहरे पर्युषण-पर्व आते-आते विशाल सागर का रूप धारण कर चुकी थी। अगले दिन से पर्युषण पर्वाधिराज प्रारम्भ होने वाले थे कि यकायक प्रतिक्रमण के पश्चात् श्री गौतममुनिजी की तबीयत बिगड़ गई और इतनी बिगड़ी कि वे घायल कबूतर की तरह तड़फने लगे।

  दूसरी ओर मेरा भी स्वास्थ्य खराब। वमन पर वमन हो रहे और उदरशूल इतना भयानक कि असहनीय सा हो गया। सारे प्रमुख श्रावकगण एकत्र हो गए। सभी चिंतातुर। हम भी विचार मे पड़ गए कि कल से पर्युषण प्रारम्भ होने को है और सभी के हृदय धर्म के प्रति उत्साह उमग से भरे हैं। ऐसे मे पर्वाधिराज की महत्ता और आवश्यकता के अनुरूप प्रवचन, शास्त्रवचन आदि हम किस प्रकार करेगे?

  कोई चारा न देख व समय की जरूरत को देखते हुए श्रावक निवेदन करने लगे कि म.सा.डाक्टर ले आवे क्या?" मगर मैंने कह दिया कि "दवा लेना तो दूर, इस वेला मे डाक्टर को दिखाना भी वर्जित है।" इधर श्री गौतम मुनि जी भी दृढ़ थे। हमारी इस दृढ़ता के समक्ष सभी श्रद्धानत थे, किन्तु मानस में चिन्ता तो बनी हुई थी ही। ऐसे मे

याद आया गुरुदेव का सदेश कि "हो सकता है कोई अड़चन आवे, पर काम रुकने वाला नही है" और उनके वचनों की सार्थकता गजब की रही। अर्द्धरात्रि के पश्चात् धीरे-धीरे स्वास्थ्य में सुधार होने लगा, नीद भी आ गई, और जब सुबह उठे तो पूरी ऊर्जा, पूरे उत्साह के साथ। पर्युषण पर्वाधिराज निर्विघ्न रूप से, अपूर्व धर्म - प्रभावना के साथ सम्पन्न हुए।

इस प्रकार अड़चन आई और काम रोके बिना चली भी गई, किन्तु साथ ही यह झलक भी छोड़ गई कि गुरुदेव को कैसे, कई बार, होनी की घटनाओ का पूर्वाभास सहज में हो जाया करता था।"

- पूज्य आचार्यदेव मे अद्भुत दिव्यदृष्टि थी। उपाध्यायप्रवर प रत्न श्री मानचन्द्रजी म सा. ने प्रवचन में एक प्रसग सुनाते हुए कहा – "किशनगढ़ प्रवास था। आचार्य भगवन्त माला मे मग्न थे। मैं (वर्तमान उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा) और प र श्री लक्ष्मीचद जी म सा. आचार्य श्री के निकट ही बैठे स्वाध्याय मे लीन थे। मोदी घराने का एक व्यक्ति आता है और निवेदन करता है कि महाराज! श्री बादरमल सा मोदी अस्वस्थ है एव गुरुदर्शन के इच्छुक हैं।

मैने सुना। विचार किया, कल ही तो पडित जी म के साथ उनके घर गया था। स्वस्थ थे, प्रसन्न चित्त थे, वन्दना की थी, बहराया भी था। और यह भी कहा था–"काई करूँ महाराज! लारला छोरा-टाबर धरम मे जीव राखेईज कोनी। घणोई केऊ पण ए तो म्हारी बात रो ध्यान ईज नही देवे।" पडित जी म. ने उन्हे धैर्य बधाया था।

आचार्य श्री ने सकेत किया पडित जी म को। पडित जी म सा गए उस व्यक्ति के साथ, मोदी जी के घर। मोदी जी ने खड़े होकर वन्दन किया और कहा मुझे लग रहा है कि समय आ गया है। आप मुझे सथारा करा दो।

लगता नही था कि मृत्यु उनका अभी वरण करने वाली है, पर वे मृत्यु का स्वागत करने को तैयार थे। पडित जी म सा ने जब तक आचार्य श्री पधारे तब तक के लिए उन्हें सागारी सथारा करा दिया। पूज्य गुरुदेव श्री की माला पूर्ण हुई। वे उठे और चल पड़े मोदी जी के घर।

आचार्य श्री के पधारने पर उनके चेहरे से हर्ष के भाव प्रस्फुटित हो उठे। उन्होने आगे आकर वदना की और सथारा दिलाने की प्रार्थना की।

आचार्य श्री ने उनको निहारा, उनके चेहरे पर कुछ देर के लिए आचार्य श्री की दृष्टि जैसे एकदम स्थिर हो गई। तब आप श्री ने श्री बादरमल जी को यावज्जीवन सथारे के प्रत्याख्यान करा दिए।

सायकाल का समय। प्रतिक्रमण हो चुका था। वन्दना हो रही थी कि ध्यान आया मुझे श्री मोदी जी का। क्या हुआ उनके सथारे का? एक भाई से पूछा तो वह बोला-"अरे महाराज, मोदी जी रो सथारो तो तीन घटा बाद ही सीझ गयो। व्हाने गाजा-बाजा सू श्मशान पहुचार पछे मैं लोग परकूणा (प्रतिक्रमण) में आया हाँ।"

मैंने यह सुनकर आश्चर्य किया। मोदी जी के तो अन्तर्मन मे घबराहट या अन्य कारण हुआ होगा, पर आचार्य श्री की अन्तर्दृष्टि कैसी कि जैसे सचमुच जान लिया हो मोदी जी के समय के बारे मे। आज सोचता हूँ कि गुरुदेव अवश्य ही उस दिव्यदृष्टि के धारक थे, जो भविष्य को दर्शा देती है।"

- सन् १९७८। आचार्य भगवन्त का चातुर्मास जलगाँव में था। यदा-कदा बरसात भी होती रहती थी, किन्तु एक बार ऐसा हुआ कि बूदा-बादी ने निरतरता का रूप ले लिया। एक श्रमण के लिए ऐसे मे भिक्षाचरी के लिए बाहर जाना निषिद्ध है और बरसात थी कि बूद-बूद करके बरसती ही जा रही थी तो गोचरी लेने जा पाने का तो कोई

प्रश्न ही नहीं था। सभी संतों ने तपस्या का अवसर जानकर उपवास कर लिया। अगले दिन भी वर्षा की झड़ी जारी थी। गोचरी ला सकने की सम्भावना दिखायी नही देती थी। सभी स्थानीय वरिष्ठ श्रावक अत्यन्त चिंतित हो उठे। वृद्धावस्था मे भी आचार्य श्री के उपवास हो चुका था और आज भी गोचरी ला पाने के आसार प्रतिकूल ही थे। अन्ततः प्रमुख श्रावक रागवश एक उपाय लेकर आचार्य श्री के समीप उपस्थित हुए। उन्होंने निवेदन किया, "भगवन् मंगल कार्यालय में नीचे ही एक तरफ दर्शनार्थियो के लिये चौका चलता है। अतः वहाँ से आहार पानी लेने की कृपा कराएँ और फिर परिस्थितिवश तो यह मर्यादा के प्रतिकूल भी नही है।"

किन्तु उन्होंने स्वीकृति नही दी। मात्र इसलिये कि वे यह जानते थे कि आज उनकी यह परिस्थितिजन्य आवश्यकता भविष्य मे दूसरों के लिए अनुकरण का मार्ग बन सकती है। इससे धार्मिक शिथिलता का जन्म होगा और किंचित् मात्र भी शिथिलता निस्संदेह हानिकारक ही होती है।

- समाचारी में नियम है कि यथासंभव साधु-संत, सतियो से सेवा नही लेते। एक बार आप जोधपुर के किसी उपनगर मे विराजमान थे। अस्वस्थता के कारण किसी औषधि की आवश्यकता हुई। शहर में विराजित आपकी सम्प्रदाय की सतियाँ नित्य प्रति आपके दर्शनार्थ आती थी। आखिर वे भी क्यो अवसर छोड़ती उस दिव्यात्मा की सेवा का। संत औषधि लाते, उससे पूर्व ही सहज उत्सुक भाव से महासतियाँजी ले आये, किन्तु जैसे ही आचार्य श्री को इसकी जानकारी मिली, उन्होने औषधि ग्रहण करने से इंकार कर दिया। मात्र इसीलिये कि कही यह परम्परा न बन जाये।

इसी भांति कोसाना चातुर्मास से संबंधित घटना भी है। वहाँ आप अत्यन्त अस्वस्थ हो गये। कुछ स्वास्थ्य सुधार होने पर चातुर्मास के पश्चात् पीपाड़ की ओर विहार किया। विहार क्रम मे ही पीपाड़ से लगभग ४ कि.मी पूर्व श्री पारसमल जी के फार्म पर आप विराजे। उन्ही दिनो पीपाड़ मे शासन-प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा.विराजित थी। वहाँ से कुछ सतियाँ जब दर्शनार्थ फार्म पर आयी तो आचार्यश्री की अस्वस्थता को लक्ष्यगत रखकर अपने साथ पेय पदार्थ भी लेकर आ गई। किन्तु क्रिया के पक्के पक्षधर उस महामानव ने उसे लेने से भी इंकार कर दिया।

- पूज्य हस्तीमल जी म.सा. एक ऐसी दिव्य-विभूति थे जिन्होने जीवन मे जो सोचा, जिसे अच्छा समझा, उसे अपने जीवन मे उतारा भी। इसलिए वे अपने समग्र जीवन मे प्रमाद से कोसो दूर रहे। घंटो तक एक ही आसन मे बैठे रहते। कभी थक कर विचलित नही होते। दिन मे कभी स्वाध्याय-लेखन इत्यादि करते तो भी कभी शारीरिक आराम की दृष्टि से पैर फैलाकर या दीवार का सहारा लेकर बैठना मानो आपकी जीवन शैली मे ही नही था। लम्बे समय तक निकट सम्पर्क मे रहने वालो ने भी शायद ही उन्हे कभी दिन के समय सोते देखा हो।

उनकी यह विशेषता रुग्णावस्था/वृद्धावस्था मे भी यथाशक्य कायम रही। कई बार शारीरिक अवस्था को देखते हुए सन्तगण निवेदन भी कर देते कि गुरुदेव आप काफी देर से एक आसन मे विराजमान हैं, कृपया थोड़ा सहारा ले लिरावें तो शरीर को भी कुछ आराम मिलेगा। मगर वे अप्रमत्त योगी, शांत सहज रूप मे यही कहते कि "भाई, सच्चा सहारा तो मुझे अपने गुरु का ही है, फिर यह कृत्रिम सहारा किसलिए? मैंने तो अपने गुरु को देखा है, उनकी अप्रमत्तता को जाना है और उनके आदर्श जीवन से यही शिक्षा ली है कि जीवन का पल भर भी प्रमाद में नष्ट न करो। फिर भला उनका शिष्य होकर मैं कैसे उनका उपकार, उनकी शिक्षाएँ विस्मृत करूँ।"

कहने की जरूरत नहीं कि ऐसी सच्ची गुरुनिष्ठा देख कर सहवासी सन्त ही नही वरन् वहाँ उपस्थित सभी दर्शनार्थी

बन्धु गद्गद् हो जाते, नतमस्तक हो जाते।

- पूज्यवर श्री हस्ती गुरुदेव के जीवन के लगभग ७० वर्ष सयमावस्था मे गुजरे। इसी सुदीर्घ अन्तराल में अनेकानेक ऐसे दृष्टान्त भी देखने-सुनने में आए जब उनके दर्शन एव मागलिक प्रभाव से या उनकी किसी बात, किसी घटना में ऐसा कुछ हुआ जिसे आम भाषा में हम चमत्कार का नाम देते हैं। यद्यपि ऐसे चमत्कारो से कई गुना बढ़कर उनका जीवन साधना के, प्रेरणा के छोटे बड़े असख्य प्रसगों से भरा पड़ा है, किन्तु जैसी कि दुनिया की रीति होती है, ऐसी बातों को सब महसूस कर पाए या नही, जान पाए या नही, किन्तु चमत्कार का सा आभास देने वाली हर सूक्ष्म बात भी बेतार के तार की तरह अल्पसमय मे चारों ओर प्रसृत हो जाती है। यही कारण रहा है कि कई बार भक्तगण भावुकता मे उन्हें 'चमत्कारी सन्त' कह उठते। किन्तु हकीकत में उनके व्यक्तित्व का यह परिचय महत्त्वपूर्ण नही। सच तो यह है कि उनके जीवन के, उनकी साधना के उद्देश्य चमत्कार की भावना से बहुत ऊपर उठे हुए थे। उन्होंने चमत्कार को कभी भी साधना का लक्ष्य नही समझा। किन्तु उनके अतिशय व तेज से कई बार सहज मे ऐसा कुछ हो जाता जिसे भक्तगण चमत्कार कह बैठते थे।

  एक बार ऐसे ही किसी श्रद्धालु भक्त ने कहा कि आपकी मागलिक मे वह दिव्य चमत्कार है कि अस्वस्थ भी स्वस्थ बन जाता है, कष्ट और बाधाएँ दूर हो जाती हैं और कठिनाइयाँ सरल बन जाती हैं। गुरुदेव ने शान्त भाव से सुना। सुनकर भी चेहरे पर कोई दर्प, कोई हर्ष नही। प्रत्युत्तर मे उसी सहजता उसी निस्पृहता से कहने लगे "भाई, एक साधक की साधना और दीक्षा का लक्ष्य ये थोथे चमत्कार नही होते। यो कई बार सहज ही ऐसे प्रसग बन जाते हैं। जैसे कि एक किसान बीज तो बोता है, किन्तु चारे भूसे की कामना से वह इतना परिश्रम नही करता। उसका लक्ष्य होता है अनाज के दानों की प्राप्ति। हाँ, उन हजारों दानो के साथ सहज रूप से उसे चारा-भूसा भी मिल जाता है। इसी भाति एक साधक तो सदैव अपनी आत्मा के उत्थान के उद्देश्य से निष्काम भाव से साधना मे लीन रहता है। उसमे कभी कुछ चमत्कारिक प्रभाव नजर आ जाता है तो वह सुनियोजित नही वरन् सहज घटित होता है इसीलिए उसकी साधना की ऊँचाई को चमत्कारो से तोलना कदापि उचित नही।"

  कहने की बात नही उनके ये विचार सरल रूप से हमे यह अहसास करा जाते हैं कि साधना और सयम चमत्कारो से बहुत ऊपर उठे हुए होते हैं।

- साधारण जन से लेकर बड़े-बड़े सम्पन्न व्यक्ति भी गुरुदेव के भक्त थे। कई बार लोग कोई बड़ी धनराशि किसी धार्मिक या परोपकारी कार्य में लगाने की इच्छा से गुरुदेव के पास आ पहुँचते। पूछते, सलाह मागते कि भगवन्! ये रुपये किस कार्य में लगाऊँ। मगर सासारिक कृत्यों और बातों से सर्वथा विरक्त रहने वाले उस महामानव का सभी को यही जवाब होता कि भाई, ऐसे कार्यों में तो आप ससारी लोग ज्यादा चतुर हैं। भला रुपयो के मामले मे हम क्या बोलें? हमे ऐसी बातो से क्या करना?

- समय का सदुपयोग और अप्रमाद! गुरुदेव के जीवन की एक अहम् विशेषता! समय का पल-पल सार्थक हो, ऐसी चेष्टाएँ सदैव उनकी रहती। कई बार रात्रि समय में काव्यमय मानस बन जाता...या फिर कुछ लेखन योग्य अच्छे विचार आने लगते....बस तुरन्त कागज और पैंसिल लेकर अन्धेरे में ही उन्हें अनौपचारिक रूप से नोट कर लेते और अगले दिन उन्हें व्यवस्थित रूप दे देते। समय के सदुपयोग की यह आदत यदि उनमें नही होती, तो शायद उनकी कई सुन्दर कविताओं और भजनों से हम वचित रह जाते।

- यश, ख्याति और प्रतिष्ठा के प्रदर्शन की लालसा से जनसमूह में अधिकाधिक घिरा रहने की होड़ में गुरुदेव

जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह यहाँ भी अपवाद निकले। कहते 'अधिक भीड़भाड़ से साधक की साधना में, एकाग्रता में बाधा पड़ती है।' और इसीलिए एकान्त बड़ा प्रिय था उन्हें। अध्यात्म चर्चा के अतिरिक्त अन्य निरुद्देश्य बातें करने की या भीड़-भाड़ से घिरे रहने की बजाय अधिकतर ध्यान, मौन, जप, साधना आदि मे लीन रहते।

- बड़ा कठिन और दुरूह होता है सयम का मार्ग। पग पग पर कठिनाइयाँ प्रतिकूलताएँ......कब कैसी परिस्थितियों से साक्षात्कार हो जाए कुछ पता नही चलता। मगर एक सच्चा साधक हर हाल मे मस्त, सतुष्ट रहता है। गुरुवर भी ऐसे ही आदर्श के पर्याय थे। कई बार भीषण गर्मी मे भी लम्बा, उग्र विहार करना पड़ता। मार्ग दुरूह, ऊपर से आहारादि की सुलभता भी कम। ऐसे मे कभी-कभी कोई सन्त या कोई भक्त कह बैठते कि भगवन्, आज तो हर दृष्टि से प्रतिकूलता ही प्रतिकूलता रही। मगर गुरुदेव सहमति व्यक्त करने की बजाय कहते 'मन चंगा तो कठौती में गगा'। अरे भाई, यही तो साधक-जीवन है, इसी मे तो फकीरो को आनन्द आता है। यदि सभी कुछ अनुकूल हो जावे तो जीवन ही क्या?' सुनने वाले देखते रह जाते। इतने परीषह सहकर भी ऐसा सतोष! यह था उनका भेद ज्ञान, जहाँ वे शरीर को नही आत्मधर्म को प्रमुखता देते थे।
- कभी-कभी तो आपकी आत्मरमणता देखकर देखने वाले दंग रह जाते। ऐसी ही एक घटना है आप श्री के सवत् २०३१ के सवाईमाधोपुर चातुर्मास की। चातुर्मास के दौरान एक दिन आपको भयकर ज्वर ने ग्रसित कर लिया। ज्वर की तीव्रता इतनी अधिक बढ़ गई कि आप अचेत हो गए। मगर उस अवस्था मे भी हैरत की बात यह कि आपके हाथ की माला निरन्तर, निराबाध रूप से चल रही थी। शारीरिक बल की सुप्तावस्था मे मानो आध्यात्मिक बल के प्रभाव से वे माला के मोती स्वत गति कर रहे थे। आस - पास खड़े सन्तगणो व श्रावकगणों के नेत्र यह देखकर गद्गद् हो उठे। आत्मा की यह कैसी सजगता, कैसी अद्भुत साधना!
- आचार्य श्री ने शिष्य समुदाय सहित जयपुर से अलवर की ओर विहार किया। मार्ग मे शाहपुरा से आगे पधारे और वन मे स्थित एक मकान मे विराजे। मकान छोटा सा व सर्वथा असुरक्षित स्थिति वाला था। सूर्यास्त होने मे कुछ समय शेष था। उसी क्षेत्र मे एक नर भक्षी सिंह रहता था। आचार्य श्री के पधारने के एक दो दिन पूर्व ही वह एक मनुष्य को खा चुका था। अत उस क्षेत्र मे सर्वत्र उसका आतक छाया हुआ था।

यह सर्वविदित है कि शेर के मुँह पर एक बार मनुष्य का खून लग जाने पर उसे मनुष्य-भक्षण का चस्का लग जाता है। फिर वह मानव-तन की ही ताक मे लगा रहता है। अत ऐसे नरभक्षी शेर के भ्रमण का क्षेत्र बड़ा ही जोखिम भरा व खतरनाक होता है। आचार्यप्रवर जहाँ विराज रहे थे, वह स्थान ऐसे ही क्षेत्र मे था। वहाँ उपस्थित सभी श्रावको ने आचार्य श्री से प्रार्थना की कि, 'अभी सूर्यास्त होने मे समय शेष है अत यहाँ से लगभग दो एक मील दूर स्थित ग्राम मे पधार जाने की कृपा करे।' किन्तु आप मे तो अनुपम आध्यात्मिक बल था। आप उपसर्गों-परीषहो से कब डरने वाले थे। आपने निर्भयतापूर्वक फरमाया, "श्रावक जी निश्चित रहिए। मुझे कोई खतरा नही है। यदि है भी तो साधु खतरो से डरा नही करते है, साधु जीवन तो खतरो का घर ही होता है। अत मुझे इस स्थान को छोड़कर अन्य कही नही जाना है, आज की रात यही रहना है। हाँ आप यहाँ से अवश्य चले जाइये। श्रावको मे से कोई भी यहाँ न रहे तथा हमारी सुरक्षा हेतु किसी भी प्रकार की व्यवस्था नही करनी है।"

श्रावकों के आग्रहपूर्वक बहुत निवेदन करने पर भी आचार्य श्री ने वह स्थान नही छोड़ा। श्रावक गण वहाँ से रवाना हो गए। सतगण सहित आचार्य श्री रात्रि को वही विराजे। श्रावक नगर मे तो आ गए, किन्तु हृदय में अनेक

आशकाएँ उथल-पुथल मचा रही थी। श्रावको की वह एक रात्रि एक मास तुल्य निकली। प्रातःकाल हुआ और श्रावक सशकित हृदय लिए दर्शनार्थ गुरुदेव के पास पहुँचे। गुरुदेव को सकुशल देख श्रावकगण पुलकित हो गए और साथ ही साथ गुरुदेव की निर्भयता पर नतमस्तक भी। वहाँ उपस्थित समुदाय में यह चर्चा जोरो पर थी रात भर शेर की दहाड़ सुनाई देती रही, पर गुरुदेव के अतिशय प्रभाव से सभी आशकाएं निर्मूल साबित हुई।

- जीवन की साध्यवेला के ही दिनों मे गुरुदेव कुछ अस्वस्थ थे। एक दिन पाट पर बैठे थे। पहले से ही पाट पर काफी आगे की ओर सरक कर बैठे थे तथा और आगे की ओर सरक रहे थे। 'कही सतुलन बिगड़ जाने से कुछ अनहोनी न हो जाए, इस आशका से, समीपवर्ती, वर्तमान उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा इत्यादि सत गणो ने सहज निवेदन किया 'भगवन्, जरा पीछे सरके'। "भाई, मैं तो आगे बढ़ना ही जानता हूँ " मृदु हास्य के साथ उच्चरित वचन निस्सदेह बेजोड़ थे।

- मद्रास (चेन्नई) में सवत् २०३७ का चातुर्मास चल रहा था। एक दिन नित्य की भाति आप शौचादि से निवृत्त होने हेतु स्थानक से निकले। बरसात के दिन होने की वजह से मार्ग मे जगह-जगह कीचड़ भरा पड़ा था। फलतः आचार्यप्रवर सावधानीपूर्वक कीचड़ से बचकर नीचे देखते हुए चल रहे थे। यकायक आपका सन्तुलन बिगड़ गया और आप फिसल कर मुँह के बल गिर पड़े। गिरने से आपकी दाई आँख के ऊपर गहरी चोट आई और खून बहने लगा। जैसे ही आपकी सेवा मे साथ चल रहे श्री गौतम मुनि जी म सा एव कतिपय अन्य श्रावकों ने यह देखा तो घबरा गए और आपको पुन स्थानक लौट चलने का निवेदन करने लगे ताकि यथाशीघ्र आवश्यक उपचार आदि करवाया जा सके। किन्तु आप ठहरे समता के, सहिष्णुता के विशाल सागर। उनकी बात अनसुनी करके चोटग्रस्त स्थान पर खुद ही कपड़ा दबा कर नित्यकर्म निवृत्ति हेतु आगे बढ़ गए।

इसी बीच घटना की खबर पाकर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म सा (वर्तमानाचार्य) इत्यादि सन्त गण भी आपकी सेवा मे पहुँच गए और स्थण्डिल भूमि से निवृत्त हो आपको स्थानक लेकर आए। श्रावकगण भी शीघ्र ही चिकित्सक को ले आए। उन्होने निरीक्षण करके कहा कि घाव के शीघ्र उपचार के लिए टाके और इजेक्शन लगाना जरूरी है। लेकिन आपने तुरन्त यह कह कर मना कर दिया कि 'गुरुकृपा से मेरे ठीक है, इन सब की कोई आवश्यकता नही, मात्र पट्टी ही काफी है।' अकारण चिकित्सा के ऐसे साधनो का प्रयोग आप नहीं करना चाहते थे और साथ ही अपनी सहनशीलता, अपने आत्मबल पर आपको पूर्ण विश्वास था। जहाँ हम तुच्छ जन छोटी बातों, छोटे-छोटे दर्द के लिए बड़े से बड़ा उपचार लेने से नही झिझकते, बस यही सोचते है कि किसी तरह जल्दी से जल्दी व्याधि से, दर्द से राहत मिले, वही दूसरी ओर आचार्यप्रवर जैसे सहनशीलता के धारक अधिकाधिक साधनो, सुविधाओ का प्रयोग कर शीघ्र स्वस्थ होने की बजाय न्यूनतम, मात्र आवश्यक साधनो का प्रयोग करते हुए, स्वय कष्ट सहने को अधिक उचित मानते है और उसको यथार्थ मे भी स्वीकारते हैं। सचमुच धन्य है। सहिष्णुता की ऐसी प्रतिमूर्ति और धन्य है उनका ऐसा आदर्श।

- एकदा एक भाई आप श्री की सेवा मे आये। किसी प्रसगवश वे किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना आचार्य श्री के समक्ष करने लगे। आचार्य श्री को यह अरुचिकर व अनुचित लगा। उन्होने इस चर्चा को समाप्त करने हेतु बात का रुख मोड़ दिया। उन भाई से सामायिक और स्वाध्याय से सबधित प्रश्न करने शुरू कर दिये।

उनके इस क्रिया-कलाप से आगतुक दर्शनार्थी लज्जित हो गया। प्रत्यक्षतः कुछ न कह कर भी अपने वाक्-चातुर्य व मनोवृत्ति से आचार्य श्री ने यह स्पष्ट सकेतित कर दिया था कि उनकी रुचि निन्दा-विकथा में नहीं है।

- आचार्यदेव जयपुर स्थित लाल-भवन में विराजित थे। गुरुवार का मौन थामौन के साथ अनवरत स्वाध्याय व साधना जारी थी। सयोगवश उसी दिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा.दौलतसिंह जी कोठारी आचार्य श्री के दर्शनार्थ वहाँ आये। जीने मे ही उत्कृष्ट चिन्तक, विचारक व वरिष्ठ श्रावक श्री नथमल सा. हीरावत मिल गये। सूचना दी कि गुरुदेव के आज मौन है क़िन्तु कोठारी सा. ऐसा कहकर कि मात्र दर्शन करने है, वार्तालाप नही, उन्हे भी अपने साथ ऊपर ले गये।

ऊपर आए तो शान्त, मुदित, मनोहारी मुखमुद्रा के दर्शन कर अंग-अग पुलकित हो उठा। दृष्टि निर्निमेष हो गई। आधा घटे पश्चात् नीचे लौटे। हीरावत सा. ने प्रश्न किया, 'आपको कैसा अनुभव हुआ।' डा. कोठारी ने उत्तर दिया, "मैंने आज यह नया अनुभव प्राप्त किया कि मौन मे शब्दो की अपेक्षा अधिक प्रभावी शक्ति होती है। इतना सामीप्य और आनन्द मुझे आज से पहले कभी दर्शन करके महसूस नही हुआ। ऐसा लग रहा था मानो वाणी के बधन तोड़ कर भावनाएँ बात कर रही थी। यह निश्चय ही मेरे लिए एक अभूतपूर्व, अकथनीय अनुभूति है जो सदैव स्मरणीय रहेगी।"

अपूर्व आनन्दमिश्रित सतोष की आशा से उनका चेहरा दमक रहा था और नेत्रों में भी कृतज्ञता का भाव था। डॉ कोठारी की भाति उनके दर्शन-वदन कर और आदर्शमय जीवन को देख कर बिना वार्ता के ही प्रत्येक व्यक्ति परितृप्ति का अनुभव करता था।

- श्रद्धेय श्री माणकमुनि जी म.सा. के सथारे के समय आप श्री अपने सुशिष्यो सहित घोड़ो का चौक, जोधपुर मे विराजित थे। प. रत्न श्री हीराचन्द्र जी म.सा (वर्तमानाचार्य) भी आप के साथ थे। एक दिन की बात। श्री हीराचन्द्रजी म सा प्रात काल शौचादि से निवृत्ति हेतु गोशाला के मैदान पधारे। निवृत्त होने के पश्चात् आप पुन स्थानक लौट रहे थे कि मार्ग मे कालटेक्स पेट्रोल पम्प के पास से गुजरते समय यकायक पीछे से आकर एक स्कूटर सवार आपसे टकरा गया। दुर्घटना मे आप नीचे गिर पड़े तथा बेहोश हो गए।

सयोग ऐसा कि पीछे-पीछे ही स्वय गुरुदेव भी शौचादि के पश्चात् पुन स्थानक की ओर पधार रहे थे। जैसे ही आपने देखा कि श्री हीरा मुनि जी म सा. बेहोशी की अवस्था मे नीचे गिरे हुए हैं, आप समीप आए। अपने हाथो में उन्हे उठाया और हाथ का सहारा देकर स्थानक की ओर ले जाने लगे। अचरज की बात यह कि जो हीरा मुनि जी म.सा. बेहोशी की हालत मे थे, अचेत थे, वे उस हालत मे भी पता नही कैसे आपके हाथ का सम्बल पाकर चलने लगे और सकुशल घोड़ो के चौक तक पहुँच भी गए। स्थानक पहुँच कर वे पुन बेहोश हो गए। थोड़े समय उपरान्त जब उन्हे पुन होश आया तो उन्होने बताया कि उन्हें तो कुछ याद नही कि वे किस तरह स्थानक तक पहुँचे।

- गुरुदेव सवत् २०२० का अपना पीपाड़ चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर यत्र-तत्र विचरण कर रहे थे। इसी क्रम मे वे पहले जोधपुर फिर लूनी, रोहट, पाली, सोजत, चण्डावल, कुशालपुरा आदि गावों से गुजरते हुए निमाज पधारे। उन्ही दिनो निमाज के एक सुश्रावक, गुरुभक्त श्री मिश्रीमल जी खिवसरा के सुपुत्र श्री देवराज जी खिंवसरा किसी दैवीय प्रकोप से ग्रस्त होकर असामान्य व्यवहार करने लग गए थे। यत्र, तत्र मत्र, अनुष्ठान इत्यादि अनेक उपाय किये गये, लेकिन कोई फायदा नही था। ऐसे मे जब आचार्यप्रवर के निमाज पदार्पण की सूचना आपको मिली तो हृदय मे फिर से आशा बधी। उसी आशा के साथ रविवार, दिनाक १४ दिसम्बर १९६३ के दिन आप आचार्यप्रवर की सेवा मे पुत्र सहित उपस्थित हुए और आचार्य भगवन्त के समक्ष सारी स्थिति रख दी। धैर्य पूर्वक

उनकी बात सुनकर भगवन्त ने कुछ क्षण गहन चिन्तन किया और फिर श्री मुख से मागलिक श्रवण कराया।

- आपकी मंगलवाणी में ऐसी आध्यात्मिक शक्ति, ऐसा अलौकिक प्रभाव और परहित की ऐसी प्रबल भावना अवश्य थी कि लड़के की देवी-विपदा तत्काल दूर हो गई और वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। उसके पश्चात् उस पर देवी प्रकोप का कभी प्रभाव नही पड़ा।

- सवत् २००० के आपके चातुर्मास के पूर्व उज्जैन के नजदीक ही खाचरोद में श्री माणक मुनि जी म.सा की दीक्षा सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् आषाढ शुक्ला तीज को वहाँ से उज्जैन की ओर विहार किया। २४ कि.मी का उग्र विहार कर आप उज्जैन नगर के काफी करीब आ पहुँचे। एक तरह से नगर का ही बाहरी क्षेत्र था। वहाँ रात्रि व्यतीत करने की दृष्टि से एक मकान मे रुके। वह मकान सर्पोवाला मकान के नाम से लोगो मे जाना जाता था, क्योकि सभी का यह विश्वास था कि वहाँ सर्पों का निवास है, और इसीलिए रात मे कोई मनुष्य वहाँ नही ठहर सकता। वहाँ सर्पो के उत्पात मे कुछ न कुछ अनिष्ट होना अवश्यम्भावी है, इसी भय से कोई भी उस मकान मे कभी जाने का साहस नही कर पाता था और वह मकान वर्षो से बन्द पड़ा था। किन्तु आचार्य श्री तो निर्भयता और आत्मबल के धनी थे। वे रात भर उसी मकान मे विराजे और शायद उनका आध्यात्मिक अतिशय ही रहा कि पूरी रात मे सर्पो के द्वारा कोई बाधा, कोई कष्ट उपस्थित नही किया गया। पूर्ण शान्ति बनी रही।

- सवाईमाधोपुर मे किसी मुसलमान के पुत्र को एक बार एक सर्प ने काट खाया। वह उसे उपचार हेतु चिकित्सक के पास ले जा रहा था कि मार्ग मे उसे कोई अन्य मुस्लिम बन्धु मिल गया। वह बन्धु प्रतिदिन की भाँति उस दिन भी उसी शहर मे विराजित आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा का व्याख्यान सुनकर आ रहा था और उनसे बहुत प्रभावित भी था। उसने पूछा क्या बात है? कहाँ जा रहे हो? चिन्तित मुसलमान बोला–मेरे पुत्र को विषैले सर्प ने काट लिया है, उसी को उपचार के लिए चिकित्सक के पास ले जा रहा हूँ। इस पर वह भक्त मुसलमान बोला– "अरे भाई, मेरा कहा मानो, अमुक बाबा (आचार्य प्रवर) यहाँ आए हुए है उनके पास ले जाओ। वे बडे सिद्ध पुरुष है जरूर कुछ उपाय करेगे।" ठीक है, यदि तुम्हे विश्वास है तो चलो, कहकर वह अपने पुत्र को लेकर उसके साथ आचार्य श्री के चरणो मे उपस्थित हो गया और उन्हे बताया कि इस बालक को साप ने काट खाया है। आचार्य भगवन्त ने सब सुनकर वही बैठे-बैठे उसे मागलिक सुनाया और हैरत यह कि मात्र मागलिक के प्रभाव से उसका जहर उतर गया। फलत उस दिन से वह मुस्लिम व्यक्ति भी आचार्यप्रवर के चरणो में सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ जीवनभर के लिए समर्पित हो गया।

- समय सन् १९८४। अप्रेल-मई के दिनो मे गर्मी अपने यौवन पर थी। जोधपुर निवासी सुश्रावक हस्तीमल जी बुरड़ मानसिक रूप से अत्यन्त व्यथित थे। गर्मी की लबी दुपहरी की भाँति ही उनकी निराशा भी अतहीन हो गयी थी। कारण था उनकी सुपुत्री कविता का विचित्र मानसिक व्याधि (सभावित किसी भूत प्रेत की बाधा वश) से ग्रस्त हो जाना। वह नाना प्रकार के उपद्रव करती। काले कपड़े पहनती और विचित्र हरकते करती। अग्रेजी का अल्प ज्ञान रखने के बावजूद धारा प्रवाह अग्रेजी बोलती थी। सभी हैरान परेशान थे। उसे काबू में करने के सभी सभव प्रयत्न किये जा चुके थे। मगर चिकित्सक भी व्याधि के मूल तक नही पहुँच सके। चहुँ ओर से निराशा का गहन तिमिर उन्हे घेर चुका था। जिससे पार निकलने की आशा तक धूमिल हो चुकी थी।

मगर तभी ऐसा चमत्कार हुआ कि जिसने एक सनातन कहावत को यथार्थ का ठोस धरातल प्रदान कर दिया कि जब कोई मार्ग शेष नही रह जाता तब धर्म ही आडे आता है। श्री बुरड़ को ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री हस्तीमल

जी म.सा होली चातुर्मास के मागलिक अवसर पर सरदारपुरा स्थित कोठारी भवन मे विराजे हैं। आशा की किरण नेत्रों मे झिलमिलाने लगी। कहते है डूबते को तिनके का सहारा पर्याप्त होता है। मगर यहाँ तो समूचा किनारा उन्हें उदात्त भाव से आमन्त्रित कर रहा था। वे तुरन्त पुत्री सहित आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुचे एव अपनी दु खद स्थिति प्रकट की।

आचार्य श्री तो समाज के उद्धारक एव दुखियो के तारणहार थे। उन्होंने ३ दिन तक उसे निरन्तर मगलपाठ श्रवण कराया। धर्म का प्रताप व आचार्य भगवन्त का अतिशय देखिये, चौथे दिन ही वह पूर्ण शात व स्वस्थ हो गयी। अनहोनी होनी बन गयी और कविता के जीवन मे नये प्रभात का उदय हुआ। कविता अब पूर्ण स्वस्थ शात है एव अपने नवजीवन का सूत्रधार आचार्य श्री को ही मानती है, जिनके लिये उसके व उसके परिजनो के हृदय मे असीम श्रद्धा, आभार व कृतज्ञता है।

- घटना कुछ वर्ष पूर्व की है। आचार्य श्री मध्यप्रदेश मे इन्दौर के समीपस्थ गावों मे विचरण कर रहे थे। उसी समय इन्दौर मे हीरामणि नामक एक लड़की मस्तिष्क ज्वर से ग्रसित हो गयी। व्याधि चरम सीमा तक पहुच चुकी थी। परिजन यथा सभव सभी प्रयत्न करके हार चुके थे। यहाँ तक कि शहर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक श्री नन्दलालजी बोरदिया ने भी लड़की को अस्पताल से छुट्टी देकर उसके जीवन की सभावना से स्पष्ट इकार कर दिया था।
- लड़की की माता आचार्य श्री के प्रति बहुत श्रद्धा रखती थी। आचार्य श्री उस समय इन्दौर से २५ कि मी दूर सावेर गाव मे विराजमान थे। अत अपनी पुत्री को कार मे लेकर सावेर तक आई और स्थानक मे लाकर आचार्य श्री के श्री चरणो मे बैठा दिया। अन्तर्यामी आचार्यप्रवर निश्छल वाणी मे चिरपरिचित शैली मे बोले, भोली, यह क्या कर रही है? अत्यन्त दु ख के साथ माता ने उत्तर दिया— गुरुदेव, सभी चिकित्सक इकार कर चुके है। अब आप इसे मागलिक श्रवण करा दें तो मै इसे शाति से घर ले जा सकूँगी।

आचार्य श्री ने हीरामणि को मागलिक श्रवण करा दिया। श्रद्धा और धर्म का प्रभाव देखिए, वह लड़की उसी क्षण स्वस्थ हो गयी और उठकर खड़ी हो गयी। आज वह खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही है और अपने जीवन को गुरुदेव के आशीर्वाद का परिणाम मानकर उनके प्रति उपकृत है।

- पता नही महापुरुषो के जीवन मे ऐसी क्या अद्‌भुत, अलौकिक विशेषताएँ होती है कि मनुष्य तो मनुष्य, मूक पशु-पक्षी और सबसे बढकर कई बार प्रकृति तक उनके प्रति समर्पित हो जाती है। गुरुदेव के जीवन में ऐसे कई उदाहरण मिलते है जब आश्चर्यजनक ढग से प्रकृति भी उनके प्रति उदार बन जाती थी, समर्पित हो जाती थी। निमाज मे गुरुदेव के सथारा लेने के पश्चात् बिना मौसम बादल बरसा कर वरुणदेव का उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करना इसे सिद्ध करता है। गुरुदेव के जीवन काल मे भी कई मौके ऐसे आए। मसलन गुरुदेव अक्सर गर्मियो मे प्रात काल या सायकाल मे ही विहार करते। दिन मे विहार प्राय सर्दियो मे ही होता किन्तु कभी-कभार जब गर्मी मे भी दिन को विहार करना आवश्यक हो जाता तो अनेको बार साथ चल रहे सन्तगणो व भक्तगणो को यह देखकर आश्चर्य होता कि यकायक मौसम ठडा हो जाता, आकाश मे बादल छा जाते, धूप विलुप्त हो जाती और आपका विहार सरल हो जाता। ऐसा लगता मानो बादल छत्री बनकर आपके विहार मे सहयोग दे रहे हो।
- दक्षिण प्रवास से आचार्य श्री मद्रास चातुर्मास पूर्ण कर राजस्थान की ओर पधार रहे थे। इसी विहार क्रम के दौरान आप के जी एफ के पास बागलकोट पधारे। २० जनवरी १९८१ का वह दिन था। आपने सायकाल

शौच निवृत्ति के पश्चात् खजूर के एक पेड़ के नीचे विराज कर हाथ धोए। हाथ साफ करके जैसे ही आप उठे और कुछ कदम ही आगे बढे होंगे की पीछे यकायक पेड़ की एक भारी भरकम शाखा उसी स्थान पर टूट कर गिर पड़ी जहाँ आप कुछ क्षण पूर्व विराजित थे।

आचार्यप्रवर की सेवा में साथ चल रहे श्री गौतम मुनिजी ने तुरन्त आचार्य भगवन्त के समक्ष आशका प्रकट की कि भगवन्, यदि चद क्षणो पहले यह हादसा हो जाता तो कितना बडा अनिष्ट हो सकता था। इस पर आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से सहसा निकल पड़ा— धर्मो रक्षति रक्षित और चेहरे पर कोई भय, कोई आशका नही। वहाँ तो थी पूर्ण शाति और निश्चिन्तता।

- प्रगति की राह मे सबसे बड़ी बाधक बनती है हमारी रूढ़ परम्पराएँ। एक साधारण मानव मे इतना आत्मबल नही होता कि वह इन्हे बदलने का प्रयास कर पाए। मगर आचार्यप्रवर अपार आत्मबल के धनी थे। इसलिए कई रूढ़ियों को तोड़ पाए। सवाईमाधोपुर का आपका प्रथम चातुर्मास (सन् १९७४) इसी की एक कड़ी था। वहाँ पर पर्युषण के दौरान भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी को रोट पर्व मनाने की प्रथा थी। इस कारण से पर्युषण पर्वाराधन हेतु स्वाध्यायी बाहर दूसरे क्षेत्रो मे जाने से हिचकिचा रहे थे। उन्हे प्रथा के भग होने से अनिष्ट की आशका भी थी। आचार्य श्री ने अपार आत्मबल का परिचय देते हुए अपनी जिम्मेदारी पर उन्हे रोट के दिवस की तिथि बदलकर पर्युषण मे सेवा देने की प्रेरणा की। रोट के दिवस का प्रतिस्थापन दशमी को किया गया और पर्युषण मे वहाँ से स्वाध्यायी जगह जगह पर धर्मध्यान की प्रभावना हेतु गये। किसी का कुछ भी अनिष्ट नही हुआ। निजी आत्मबल के दम पर ऐसे परिवर्तन का खतरा गुरुवर जैसे साहसी और धर्म में सच्ची श्रद्धा रखने वाले ही उठा सकते है।

- एक दिन एक व्यक्ति गुरुदेव श्री के दर्शनार्थ आया। भक्त था, श्रद्धालु था। गुरुदेव को वन्दना की, चरण स्पर्श किए। सुखसाता पृच्छा की। गुरुवर तो थे ही आत्मीयता के अनमोल सागर। व्यक्ति से धर्म-ध्यान आदि का पूछा। वार्ता के मध्य व्यक्ति ने अपना बेग खोला, एक पत्रिका निकाली, गुरुभगवत के सम्मुख रखते हुए बोला- "गुरुदेव! बड़ा अनर्गल प्रलाप किया गया है इसमे। आपके उचित निर्णयों और सत्य विचारो पर दुराग्रह वश बड़ी तीखी कलम चलाई गई है। यह तो बहुत ही शर्मनाक बात है। हम इसका ऐसा प्रत्युत्तर देना चाहते हैं कि..."

- "गुरुदेव ने उस भक्त की बात को यही रोकते हुए बहुत ही शात स्थिर स्वर मे कहा - "भाई! यदि हम अपने आप मे सत्य है, यदि ज्ञान-दर्शन-चारित्र मे हमारी सजगता निरन्तर बनी हुई है तो फिर कोई भी कुछ भी कहे या लिखे, हमें भला क्या चिन्ता। अब यदि आप कुछ लिखते है जवाब मे, तो वे फिर कुछ लिखेगे, आप फिर लिखेगे, इसका तो कोई अन्त नही है। अच्छा तो यही है कि ऐसी पत्र-पत्रिकाओं और उनमे छपे ऐसे तथ्यहीन प्रकरणो को आप महत्त्व ही न दे।" कैसी समता! कैसी शान्ति! कैसा धैर्य! धन्य है श्रमणाचार्य रूप मे भी अरिहन्त सम वीतरागता के उज्ज्वल भावो के धारक पूज्य श्री हस्ती को।

('झलकिया जो इतिहास बन गई' पुस्तक से सकलित)

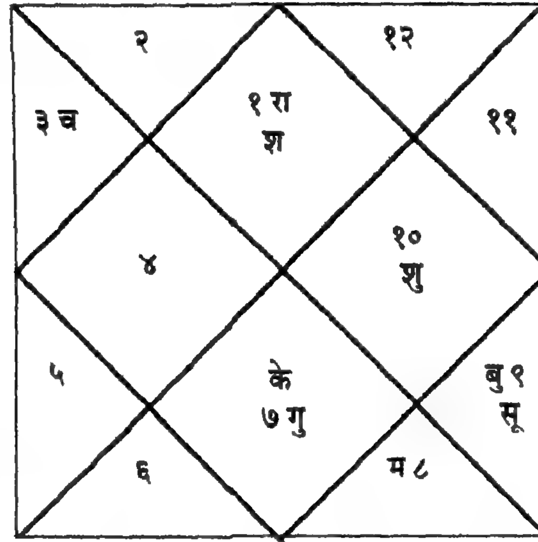
■

ज्योतिर्विद्या की दृष्टि में आचार्यप्रवर

• डॉ भगवतीलाल व्यास

• आचार्य श्री की जन्म-कुण्डली

विक्रम सवत् १९६७ शाके १८३२ रवौ उत्तरायणे हेमन्त ऋतौ पौष मासे शुक्ले पक्षे १३ त्रयोदश्याम् ६/१२ पर १४ तदनुसार दिनाङ्क १३ जनवरी १९११ इष्ट १५/३० सूर्य ८/२९ लग्न ०/२६ आर्द्रा १चरण राशि मिथुन।



महापुरुषो का जन्म विशिष्ट ग्रह नक्षत्रो के योगायोग मे ही सम्पन्न होता है। यह तो निर्विवाद सत्य है कि मानव के समस्त क्रियाकलाप ग्रहो के द्वारा प्रभावित होते है, जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव चराचर जगत पर पड़ता है। कहा भी गया है। "प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र चद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।"

इस प्रकार सूर्य-चद्र तो प्रत्यक्ष है ही, नक्षत्र तथा तिथ्यादि भी प्रत्यक्ष है। विज्ञान द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि इन ग्रह-नक्षत्रो का प्रभाव मानव जीवन पर अवश्य पड़ता है। इसलिए ज्योतिष शास्त्र सूर्य को आत्मा और चद्र को मन मानता है। जीवन के सारे क्रिया-कलाप सूर्य और चद्र द्वारा नियन्त्रित होते है। इन दोनो ग्रहो का सामजस्य ही जीवन को सचालित करके व्यवस्थित करता है। सूर्य आत्मा का कारक है अर्थात् अध्यात्म का अधिष्ठाता है। आध्यात्मिक जीवन मे प्रवृत्ति सूर्य के कारण ही सभव है। जन्मकाल मे सूर्य की स्थिति महत्त्वपूर्ण मानी गई है। यही नही उत्तरायण और दक्षिणायन का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। महापुरुषो का आविर्भाव और महाप्रयाण दोनो उत्तरायण मे ही श्रेष्ठ माने गये है। कहा भी गया– है "सौम्यायने कर्म शुभ विधेयम्"। पूज्य आचार्य श्री का जन्म भी उत्तरायण मे हुआ और उन्होने तपपूत होकर महान् कार्यों से जीवन्मुक्त की अवस्था प्राप्त की। आचार्य श्री के जीवन के समस्त कार्य उत्तरायण सूर्य मे ही सम्पन्न हुए। जैसे उनका जन्म स १९६७ पौष शुक्ला १४, दीक्षा माघ शुक्ला २ स१९७७, आचार्य पद की प्राप्ति अक्षय तृतीया स १९८७ तथा महाप्रयाण भी

वैशाख शुक्ला अष्टमी सवत् २०४८ को हुआ। उपर्युक्त समस्त घटनाएँ उत्तरायण में ही हुईं। साथ ही उपर्युक्त चारो घटनाएँ शुक्ल पक्ष में ही हुईं। शुक्ल पक्ष का ज्योतिष शास्त्र में बहुत महत्त्व है।* इसका कारण स्पष्ट है। क्योंकि इसमे चद्र बली रहता है। बली चद्र का बल ही मानव के मनोबल को बढ़ाता है तथा जीवन का विकास करता है। अत मुहूर्त्त चिंतामणि मे कहा गया है-

नदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथयोऽशुभमध्यशस्ता ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमा' स्यु' सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धा ॥

चलित

२
१२ श
३ चं
१ रा
११
४
१० शु
५
७ गु के
बु ९ सू
६
८ म

नवांश

सू ९ चं
७ बु
१०
८ रा
६
११ मं
५
गु १२
२ के
४
१ शु
३ श

आचार्य श्री की जन्म-कुण्डली मे नवमभाव मे सूर्य बुध के साथ अवस्थित्त है। बुध के साथ होने से बुधादित्य योग है, साथ ही यह गुरु की राशि का है और मित्र राशि का होने से भाग्य स्थान की वृद्धि करता है। चलित मे भी वही स्थिति रही। विशेषता तो यह है कि नवमाश मे भी सूर्य वर्गोत्तमी बन गया और चन्द्र के साथ युति हो गई। अन्य सद्गुणो एव योग्यता के साथ सूर्य के बलवान होने के कारण ही गुरुदेव आचार्य पद पर आसीन हुए और उनका वर्चस्व अहर्निश वृद्धि को प्राप्त होता रहा। इसी कारण ही आध्यात्मिक क्षेत्र में कुशल नेतृत्व किया और साथ ही देदीप्यमान नक्षत्र के समान ज्ञान से ससार को आलोकित करते रहे।

अब चन्द्र की स्थिति का निरूपण किया जाय तो चद्र तृतीय स्थान मे स्थित है। यह स्थान पराक्रम का है। इसका स्वामी बुध है, जो सूर्य के साथ बैठकर इस घर को देख रहा है। सूर्य बुध की दृष्टि तृतीय भाव पराक्रम को मजबूत कर रही है। इस घर की विशेषता है। इस घर पर पाँच-पॉच ग्रहों की दृष्टियॉ हैं। सूर्य व बुध के साथ-साथ शनि और गुरु भी पराक्रम को देखते हैं। गुरु की दृष्टि सकारात्मक मानी गई है और शनि की दृष्टि नकारात्मक मानी गई है। शनि की चन्द्र पर दृष्टि निवृत्तिमार्ग की द्योतक है। वह त्याग, तपस्या और वैराग्य प्रधान बनाती है तो दूसरी

* जैन धर्म मे पुरुषार्थ-पराक्रम की प्रधानता है , जो आचार्यप्रवर में थी ; तथापि पच समवाय मे काल के अन्तर्गत ज्योतिर्विद्या का भी अपना एक पक्ष है जिसकी चर्चा इस लेख मे की गई है।

ओर बृहस्पति की सकारात्मक दृष्टि अलौकिक ज्ञान सम्पन्न, प्रतिभाशाली, तेजस्वी-वर्चस्वी, परोपकारी के साथ-साथ 'सर्वभूतहितेरत' लोक कल्याण करने वाला महापुरुष बनाती है। अब मगल पर दृष्टिपात किया जाय तो मगल लग्नेश होकर अष्टम मे स्वगृही है और वह भी विशेष दृष्टि से तृतीय स्थान पराक्रम को देखता है। चन्द्र पर मगल की दृष्टि अत्यन्त शुभ मानी गई है। यह विपरीत राजयोग की भी मज्ञक है। यह व्यक्ति को कर्मठ, अनुशासन प्रिय, सगठनकर्ता, कुशल नेतृत्व से सम्पन्न राष्ट्रीय सत और कुशल प्रशासक बनाती है। ग्रहों की इतनी सारी दृष्टियाँ आचार्य श्री के व्यक्तित्व को बहुमुखी प्रतिभा से सपन्न बताती है तथा समाज को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाला पथ-प्रदर्शक बताती है ।

वस्तुत चन्द्र की स्थिति केमुद्रम योग वाली है, परन्तु बृहस्पति की दृष्टि ने उसे ज्ञान सपन्न कर दिया। लौकिक रिक्तता को अलौकिक ज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। बृहस्पति के कारण ही जैनागमो के मर्मज्ञ और तत्त्ववेत्ता बने और वाणी ओजस्वी शक्ति से युक्त हो गई। मगल के कारण बीस वर्ष की आयु मे ही आचार्य पद की प्राप्ति हुई और ६१ वर्ष तक कुशल नेतृत्व किया तथा ज्ञान, दर्शन और चारित्र को साकार किया।

केन्द्र में गुरु और शुक्र की स्थिति भी कम महत्त्वपूर्ण नही है। गुरु आत्मोत्थान का परिचायक है तो शुक्र समाजोत्थान के कार्य करवाता है। एक ही ग्रह इनमे से केन्द्र स्थित शुभ माना गया है तो दो-दो ग्रह मिलकर अत्यत प्रभावशाली बनाते है। कहा भी गया है–

शुक्रो यस्य बुधो यस्य, यस्य केन्द्रे बृहस्पति ।
दशमोङ्गारको यस्य स जात कुल दीपक ॥

यहाँ कुल दीपक योग स्थित है। इस कारण ही आचार्य श्री ने अपने कुल का नाम रोशन किया और ससार मे आपका मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा और ख्याति दिग्-दिगत मे सुगन्ध के समान फैल गई। अकेला बृहस्पति ही सिह के समान पराक्रमी बताया गया है। अकेला शेर जिस प्रकार हाथियो के झुण्ड को परास्त कर देता है, ठीक वैसे ही अकेला केन्द्रस्थ गुरु ही पर्याप्त होता है। शास्त्रकारो ने कहा भी है-

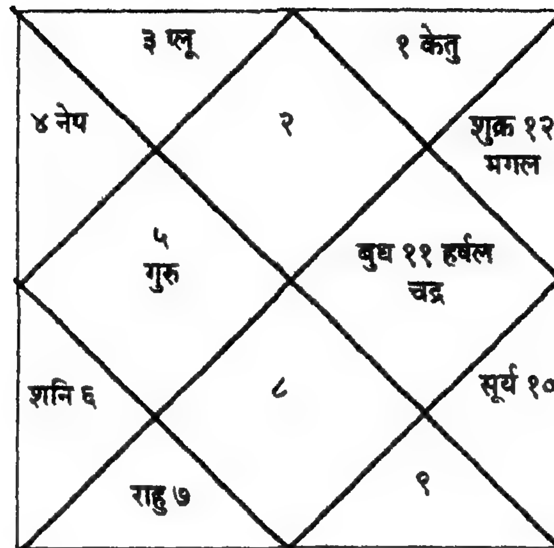
किं कुर्वन्ति ग्रहा सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पति ।

अस्तु। अब शनि की स्थिति पर विचार किया जाय तो शनि नीच राशि का है। शुक्र दशम भाव मे स्थित है और शनि दशम भाव मे स्थित शुक्र को देखता है। यह शनि की अपनी राशि है। चलित मे द्वादश भाव मे शनि प्रव्रज्या योग कारक होता है। यह एक तरफ त्याग-वैराग्य करवाता है तो दूसरी ओर लोक-कल्याण के कार्य कराता है। एक ओर स्वय को त्यागी वैरागी बनाता है तो दूसरी ओर समाज मे धार्मिक कार्यो और आध्यात्मिक चेतना मे प्रवृत्ति करवाता है। यहाँ पर शनि की जो नकारात्मक दृष्टि है वह दशम भाव कर्म के लिए सकारात्मक दृष्टि बन गई है। अन्ततोगत्वा यह निष्कर्ष निकलता है कि इन योगायोगो ने आचार्य श्री को एक महान् राष्ट्रीय सत के रूप मे देदीप्यमान नक्षत्र कर प्रतिष्ठित किया।

• दीक्षा कुण्डली

दीक्षा कुडली का भी अपना अलग महत्त्व होता है जिस प्रकार जन्म कुडली महत्त्वपूर्ण होती है ठीक उसी प्रकार से सत के जीवन को दीक्षा कुडली प्रभावित करती है। सपूर्ण आध्यात्मिक जीवन दीक्षा कुडली से ही सचालित होता है, क्योकि एक सत का जीवन-चक्र तो दीक्षा के बाद ही प्रवर्तित होता है।

सवत् १९७७ शाके १८४२ माघ शुक्ला द्वितीय द्वितीया २१ फरवरी १९२१ गुरुवार मध्याह्न अभिजित मे दीक्षा सपन्न हुई। उस समय की दीक्षा कुडली निम्नलिखित है—



उपर्युक्त दीक्षा कुडली मे वृष लग्न है। वृष लग्न का ज्योतिष मे अधिक महत्त्व है। यह स्थिर लग्न है। स्थिर लग्न मे सपन्न कार्य स्थिर होता है। अत इस लग्न को सिह लग्न की तरह माना गया है।

लग्नेश शुक्र एकादश भाव मे स्थित है। यह ग्रह ग्यारहवे मे शुभ माना गया है। अत दीर्घ जीवन का रहस्य है। लग्नेश शुक्र की मगल के साथ युति भी शुक्र को बल देने वाली है। यह व्यक्तित्व को कठोर तपस्या से युक्त बनाती है। साथ ही शुक्र व मगल पर शनि की दृष्टि त्याग-वैराग्य पूर्ण जीवन को सफल बनाती है।

शनि की स्थिति भी त्रिकोण मे महत्त्वपूर्ण है। यहाँ शनि-बुध की परस्पर स्थिति अत्यत श्रेष्ठ है। पचमेश बुध दशमभाव (कर्म) मे चद्र के साथ स्थित है। साथ ही दशम एव एकादश का स्वामी शनि पचम मे स्थित है। विद्या और कर्म के स्वामियो का परस्पर स्थित होना अर्थात् दोनो का परस्पर परिवर्तन होना अत्यन्त शुभ है। यह शास्त्रज्ञान मे पारगत एव कर्म मे भी दक्ष बनाता है। यहा 'क्रियाशीलो' हि पण्डित वाली उक्ति चरितार्थ हो जाती है।

कुण्डली में गुरु की स्थिति भी केन्द्र मे शुभ है। बुध और गुरु दोनो केन्द्र स्थान मे शुभ फलदायी है। कहा भी गया है - "शुक्रो यस्य, बुधो यस्य, यस्य केन्द्रे बृहस्पति।" गुरु की दृष्टि भी जोरदार है। गुरु अष्टम भाव को देखता है, जो धनुराशि का अधिपति है। यह स्थिति दीर्घ आयुष्य प्रदान करती है। साथ ही द्वादश पर दृष्टि प्रव्रज्या-योग को पुष्ट करती है।

कुण्डली मे सूर्य की स्थिति भी बलवती है। केन्द्र का अधिपति सूर्य नवम भाव त्रिकोण मे स्थित है। यह सूर्य अत्यन्त वर्चस्वी व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

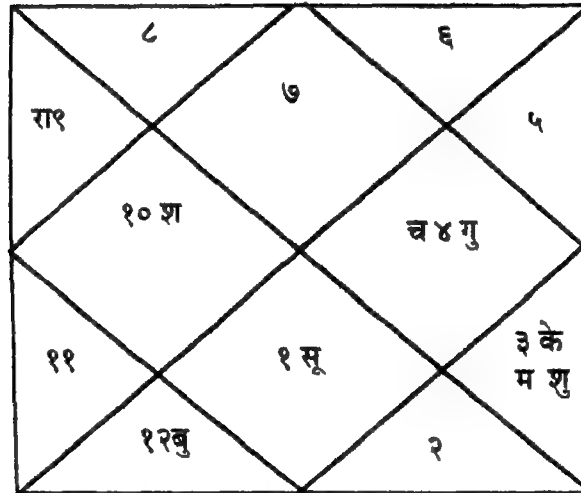
कुण्डली मे राहु और केतु की स्थिति भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। राहु छठे स्थान मे शुभ फलदायी होता है। यह रोगनाशक है, बीमारी को समाप्त करता है। शरीर नीरोग रहता है। कहा भी गया है — 'त्रिषटे एकादशे राहु।'

तीसरे, छठे और ग्यारहवे भाव मे राहु शुभ फलदायी माना गया है। इसी प्रकार से द्वादश मे केतु भी आध्यात्मिक जीवन को पुष्ट करता है।

इस प्रकार उपर्युक्त योगायोगो के द्वारा इस समय मे सम्पन्न दीक्षा के द्वारा उन्हे अल्पायु मे ही आचार्य पद की प्राप्ति हुई और दीर्घकाल तक आचार्य पद पर आसीन रहे, साथ ही राजयोग के ग्रहो के द्वारा लोक कल्याण करते रहे।

- **महाप्रयाण कुण्डली**

महाप्रयाण वि स २०४८ वैशाख शुक्ला ८ दिनाङ्क २१ अप्रेल १९९१ रविवार रात्रि ८ बजकर २१ मिनट।



आचार्य श्री गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस भी अत्यन्त श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण रहा है। जैसा कि पूर्व मे कहा जा चुका है कि गुरुदेव के जन्म, दीक्षा आचार्यपद और महाप्रयाण सभी कार्य उत्तरायण सूर्य मे हुए है। उत्तरायण सूर्य मे देह-त्याग होने से मोक्ष (स्वर्ग) की प्राप्ति होती है, ऐसी शास्त्र मान्यता है। आचार्य श्री के महाप्रयाण के समय उच्च का सूर्य आध्यात्मिक ज्योति को निर्वाणपद देने के लिए तत्पर रहा है।

अब चन्द्र की स्थिति पर विचार किया जाय तो शुक्ल पक्ष है, अत चन्द्रमा पूर्ण बली है। वह अष्टमी का दिन होने से अपनी पूर्ण प्रभा के साथ आलोकित है। साथ ही कर्क राशि पर स्थित है जो स्वगृही है और गुरु के साथ है। जैसा कि दीक्षा मुहूर्त के समय गुरु चद्र की युति हुई थी, वही स्थिति महाप्रयाण (निर्वाण) काल मे हुई है, जो अत्यन्त दुर्लभ स्थिति है। गुरु और चद्र की दृष्टि शनि पर है, जो कल्याण की सूचक है।

नक्षत्र की दृष्टि से देखा जाय तो उस दिन पुष्य नक्षत्र था, जो अपनी चरम सीमा पर था। रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र होना अत्यन्त शुभ माना गया है।

इस नक्षत्रराज की प्रशसा मे कहा गया है -

"सिहो यथा सर्वचतुष्पदाना, तथैव पुष्यो बलवान् उडूनाम्।
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरे वा, सिध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥

अर्थात् जिस प्रकार सारे पशुओं मे सिंह बलवान होता है, ठीक वैसे ही सारे नक्षत्रो मे पुष्य नक्षत्र बलवान होता है। यदि अन्य ग्रह निर्बल हों तो भी पुष्य मे किया गया कार्य फलीभूत होता है। इस दृष्टि से रवि पुष्य के दिन महाप्रयाण होना शुभ्र सकेत का प्रतीक है। इति शम्

ज्योतिषाचार्य,
सेवानिवृत्त वरिष्ठ स प्रोफेसर (हिन्दी विभाग),
६ 'देवीकृपा' रोड़ न ८ शक्तिनगर, जोधपुर (राज) दूरभाष 2544445

■

काव्याञ्जलि में निलीन व्यक्तित्व

(१)

वन्दे गुरु हस्तिनम्

(छन्द - शार्दूल विक्रीडितम्)

हस्तिर्मे (हस्ती मे) भवभीति-भेदन-परो, वन्दे गुरु हस्तिनम्।
(हस्तिर्न सुगुरुर्गजेन्द्रगणिराट्, वन्दे गुरु हस्तिनम्।)
तीर्णं येन च हस्तिना जगदिद, तस्मै नमो हस्तिने॥
दुष्प्राप्य नहि हस्तिन यदि दया, स्याद् हस्तिमल्लस्य वै।
भक्तिर्वर्धतु हस्तिनि दृढतरा, मे हस्तिमल्ल प्रभो॥
(भक्तिर्वर्धतु हस्तिनि दृढतरा, हस्तिन् गुरो पाहि न॥)

मेरे गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल्लजी महाराज भव-भय-भजन मे सदा तत्पर रहते है, मै उन हस्तीमल्लजी महाराज को नमस्कार करता हूँ। जिन गुरुदेव श्री हस्तीमल्लजी महाराज ने इस ससार को पार कर लिया है उन पूज्य श्री हस्तीमल्लजी महाराज को नमस्कार है। यदि पूज्य श्री हस्तीमल्लजी महाराज की मुझ पर दया हो तो उनसे कोई भी वस्तु मेरे लिए अप्राप्य नही है। मेरी श्रद्धा गुरुदेव श्री हस्तीमल्लजी महाराज के प्रति निरन्तर बढ़ती रहे, हे पूज्य प्रभो हस्तिमल्ल जी! आपसे मेरी यही प्रार्थना है।

टिप्पण - उपर्युक्त स्तुति का यह वैशिष्ट्य है कि इसमे 'हस्तिन्' शब्द की सभी विभक्तियो का प्रयोग हुआ है।

(२)

बाल्येऽपि सयमरुचि

(पं मुनि श्री घेवरचन्दजी म)

बाल्येऽपि सयमरुचिं चतुर सुविज्ञम्,
कान्त च सौम्यवदन सदन गुणानाम्।
मौनेन ध्यानसहितेन जपेन युक्तम्,
पूज्य नमामि गुणिन गणिहस्तिमल्लम्॥
[भक्त्या नमामि दमिन गणिहस्तिमल्लम्॥]

(३)

आचार्य श्री हस्तीमल्ल-गुणाष्टकम्

(पूज्य घासीलालजी म सा द्वारा रचित)

असार ससार वदति सकलो बोधयति नो,
बुधे बोद्धा बुद्ध्या सकलजनताबोधनपर· ।
यदीये सद्वाक्ये स्फुरति महिमा कोऽप्यनुपमो,-
गणी हस्तीमल्ल· शमितकलिमल्ल शुभमति· ॥१ ॥

ससार को मिथ्या कहे सब किन्तु समझाते कहाँ,
बुद्ध मध्य बोद्धा बुद्धि से, गणिवर्य समझाते यहाँ ।
जिनके मनोहर वाक्य मे, बहुतेज अनुपम भासते,
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल, गणि को देखि कलिमल भागते ॥१ ॥

इस ससार को सब मनुष्य असार अर्थात् मिथ्या कहते है, किन्तु इसके सच्चे तात्पर्य को नही समझते है। बुद्धिमान् मनुष्यो मे ज्ञानी मनुष्य ही इसके सत्य स्वरूप को समझते हैं, जिनकी मनोहर वाणी मे अनुपम महिमा प्रकट होती है। ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते है अर्थात् दूर हो जाते है। (अथवा आपको देखकर कलियुग के मल्ल शान्त हो जाते है।)

शरच्चन्द्राभास प्रवचनममूल्य वदति य
ददत्तीव्र बोधं सकलमलशोध निजगिरा।
सदा पाप ताप हरति भविना हृत्तलगतम्,
गणी हस्तीमल्ल· शमितकलिमल्ल· शुभमति. ॥१ ॥

उपदेश जिनका शरद् शशि सम अति अमूल्य महान है।
देते सकल कलिमल हरण जो, मोह नाशक ज्ञान है।
जिनके वचन भविजन हृदयगत-पाप ताप निवारते-
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देख कलिमल भागते ॥२ ॥

जिनका उपदेश शरदऋतु के निर्मल चन्द्रमा के समान अमूल्य एव महान् है, जो सब पापो का नाश करने वाला एव मोह को नष्ट करने वाला उपदेश देते है, जिनके वचन भव्य जनो के हृदय मे रहे हुये पाप एव सताप को नष्ट करने वाले है, ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय दूर हो जाते है—

विहार य कुर्वन्नवनितलजन्तूनुपदिशन्-
भृश ताप शाप जिनवचनशक्त्या परिहरन्।
अमन्द सानन्द ध्वजमुपरि जैन परिधुवन्।
गणी हस्तीमल्ल शमितकलिमल्ल शुभमतिः ॥३ ॥

जहँ तहँ विहरते भव्य के उपदेश तै सताप को,
जिन वचन शक्ति विचार से हरते सदा जो पाप को,
जाते जहाँ सर्वत्र ही जैन ध्वजा फहरावते।
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल भागते ॥३॥

आचार्य श्री जहाँ जहाँ विचरते हैं वहाँ भव्य मनुष्यो के पापों का जिनेश्वर प्रतिपादित वाणी के उपदेश से नाश करते है और जहाँ जाते है वहाँ जैन ध्वजा को फहराते हैं। ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते है अर्थात् दूर हो जाते है।

चकोराणा वृन्द सुखमुपनयेद् यद्यपि शशी,
दिवा रात्रौ नैव प्रभुरयमल सर्वसमये।
गुहाध्वान्तं सूर्यो हरति नहि हृद्ध्वान्तमपि यो,
गणी हस्तीमल्ल· शमितकलिमल्ल· शुभमति· ॥४॥

रात मे ही चन्द्र देता, सुख चकोर समूह को-
दिन रात मुनिवरजी हमारे, दे रहे सुख भव्य को।
रवि कन्दरा तम भी नही, गणिवर हृदय तम नाशते-
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल भागते ॥४॥

यद्यपि चन्द्रमा रात्रि मे ही चकोरो के समूह को आनन्द प्रदान करता है, किन्तु मुनिवर (आचार्य श्री) हमे रात्रि-दिन उपदेश रूप उत्तम सुख प्रदान करते है। सूर्य तो गुफाओ मे रहे हुए अधकार को ही नष्ट करता है, किन्तु आचार्य श्री हृदय मे रहे हुये अज्ञानान्धकार को नष्ट करने मे समर्थ हैं, ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य हस्तीमल्ल जी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते हैं।

यथा वै जन्मान्धो विमलनयनं प्राप्य सुनिधिं,
दरिद्रो दैवेनाप्रतिममतिसौख्यं प्रलभते।
तथा भव्या हर्षं दधति किल यद्दर्शनवशाद्-
गणी हस्तीमल्ल· शमितकलिमल्लः शुभमतिः ॥५॥

जन्मान्ध जैसे विमल लोचन प्राप्त कर होता सुखी-
निर्धन सुनिधि पा दैववश जैसे सदा अतिशय सुखी।
मुनिवर्य दर्शन से तुरत भविजन मुदित मय हर्षते-
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल भागते ॥५॥

जैसे जन्मान्ध मनुष्य नेत्र ज्योति प्राप्त कर सुखी होता है और निर्धन मनुष्य भाग्य से अमूल्य निधि को प्राप्त कर सुखी होता है वैसे ही मुनिवर आचार्य श्री के दर्शन से भव्य मनुष्य अत्यन्त हर्षित होते हैं। ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल जी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते हैं अर्थात् दूर हो जाते हैं।

विदग्धो व्याख्याने मधुरतरभाषी मुनिवर·
प्रदीप्तिं कुर्वन् यो जिनवचनमत्यन्तममलम्।
मुदा धर्मारामे चरति सतत शुद्धमनसा,
गणी हस्तीमल्ल. शमितकलिमल्ल शुभमति· ॥६ ॥

वाणी मधुरता युत चतुरता है सरल व्याख्यान मे,
गणिराज जिनवर वचन को दीपित किया निज ज्ञान मे,
आप केवल विमल मन जीवादि तत्त्व विचारते -
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल भागते ॥६ ॥

जिनके व्याख्यान मे वाणी की अतीव मधुरता है और जो अपने निर्मल ज्ञान से जिनेश्वर वचनों को देदीप्यमान करते हैं, शुद्ध मन से और प्रसन्नता से धर्म रूपी बगीचे मे विचरण करते हैं, ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते है अर्थात् दूर हो जाते हैं।

सुगच्छे स्वच्छेऽच्छ. स्फटिकमणिशोभा वितनुते-
प्रशस्तैराचारै. शुभतरविचारैर्गणिवर.।
सदा भव्यै सेव्यो गुणगणगरिष्ठ किल बुधै-
र्गणी हस्तीमल्लः शमितकलिमल्ल. शुभमति· ॥७ ॥

अति स्वच्छ सुन्दर गच्छ मे जो स्फटिक मणि सम भासते।
अतिशय सुदृढ आचार से शुभतर विचार विराजते।
जिनको हमेशा भव्य जन श्रद्धा सहित है सेवते,
शुभबुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल भागते ॥७ ॥

जो अतीव स्वच्छ गच्छ मे स्फटिक मणि के समान स्वच्छ हैं। शुद्ध आचार-पालन मे तथा शुभ विचारो से सदैव सुशोभित रहते हैं। मोक्ष मार्ग चाहने वाले प्राणी श्रद्धा से जिनकी सेवा करते हैं, ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते हैं अर्थात दूर हो जाते है।

न चाऽस्मिन् ससारे जिनवचनतो रम्यमपर-
वचस्तद् वक्ता य प्रथम इह तस्याऽस्य गणिन।
मुनिर्घासीलाल शुभमकृत गणयष्टकमिदं।
गणी हस्तीमल्ल. शमितकलिमल्ल· शुभमति· ॥८ ॥

ससार मे जिन वचन से कुछ अन्य रम्य न दीखता।
इसका प्रवक्ता आज जो उससे भविक जन सीखता।
मुनि घासीलाल प्रणीत हस्तीमल्ल अष्टक शोभते।
शुभ बुद्धि हस्तीमल्ल गणि को देखि कलिमल्ल भागते ॥८ ॥

इस ससार मे जिनवाणी से बढ़कर कोई सुन्दर दृष्टि गोचर नही होता। उस जिनवाणी का उपदेश फरमाने वालों मे आचार्य श्री प्रसिद्ध है। मुनि श्री घासीलाल जी द्वारा रचित यह अष्टक श्री हस्तीमल्लजी म सा के गुण वर्णन स्वरूप रचा गया है। ऐसे शुद्ध बुद्धि के धारक आचार्य श्री हस्तीमल्लजी को देखकर पाप स्वय पलायमान हो जाते हैं अर्थात् दूर हो जाते है।

(४)

गजेन्द्र गुणाष्टकम्

(श्री वल्लभ मुनिजी)

श्रामण्यदीक्षां, जिनधर्मशिक्षाम्,
तत्त्वसमीक्षां, भवतो मुमुक्षाम्।
बाल्यात्प्रभृत्येव तु यः सिषेवे
विद्वद्वरोऽयं जयताद् गजेन्द्रः ॥१॥

लेकर श्रमण योग की दीक्षा, जैन धर्म का शिक्षा सार,
तत्त्व समीक्षा मे पटुता हित, छोड़ दिया जिनने ससार।
बाल्यकाल से किया जिन्होने सेवन व्रत रत बनअनगार
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की हो जगती मे जय जयकार ॥१॥

यस्यास्य चन्द्रोऽमितमोदकर्ता,
अमन्दजाड्यान्धतमिस्रहर्ता।
ज्ञानामृतं भव्यमनःसुभर्ता,
विद्वद्वरोऽयं जयताद् गजेन्द्रः ॥२॥

जिनका शशि मुख जनगण मन को देता है, प्रिय हर्ष अपार,
और दर्शको का करता है जड़ता रूपी तम परिहार।
जो सासारिक जन मानस में भरते निश दिन ज्ञान विचार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की, हो जगती में जय जयकार ॥२॥

जीवानुकम्पाप्लुतचित्तवृत्तिः,
सत्यान्विताऽनिष्ठुरवाक्प्रयोक्ता।
परोपकारी मितपथ्यभोजी,
विद्वद्वरोऽयं जयताद् गजेन्द्रः ॥३॥

जिनके मन मे जीवों के प्रति करुणा का है पारावार,
तथा सत्य युत् नम्र वचन मय, जिनका होता है उद्गार।

पर हित निरत अल्प मात्रा में, जो लेते हैं पथ्याहार।
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की, हो जगती मे जय जयकार ॥३ ॥

ज्ञानानुरक्तो यमिनां वरेण्य.,
भवाब्धिमज्जनताशरण्य· ।
जैनैरुपाध्यायपदेऽभिषिक्त,
विद्वद्वरोऽय जयताद् गजेन्द्र· ॥४ ॥

ज्ञानार्जन मे रत रहते जो, यतियो मे हैं श्रेष्ठ अपार,
भवसागर में डूब रहे जन के हित जो है शरणाधार।
उपाध्याय बन कर मानस मे करते सदा धर्म सचार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की हो जगती मे जय जयकार ॥४ ॥

यस्योपदेशो भविना हिताय,
सदा सदाचारविचारचारु।
सन्मार्गदर्शी सुतरा प्रसिद्ध.,
विद्वद्वरोऽय जयताद् गजेन्द्र ॥५ ॥

जिनका प्रवचन भवप्राणी का करता है बहुविध उपकार,
और सर्वदा जो करते है, सदाचार का शुद्ध विचार।
सहज प्रसिद्ध सुपथ के दर्शक, ज्ञानी जिन पथ के अनगार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की हो जगती मे जय जयकार ॥५ ॥

य सर्वसाधुष्वनुशासनस्य,
वृत्ति तथा सच्चरितस्य वृद्धि।
द्रष्टु सदा कांक्षति मानसेन
विद्वद्वरोऽयं जयताद् गजेन्द्रः ॥६ ॥

बढ़े समस्त श्रमण वर्गो मे, अनुशासन का प्रिय व्यवहार,
जिनका मन है चाह रहा जग, सत् चरित्र का सदा प्रसार।
जो तन मन से रहते निशदिन, परम कारुणिक और उदार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की, हो जगती मे, जय जयकार ॥६ ॥

सद् भारतेऽस्मिन् सुचिर विहृत्य,
य. श्रावकेषु प्रयत. करोति।
स्वाध्यायसामायिकयो प्रचारं,
विद्वद्वरोऽय जयताद गजेन्द्र· ॥७ ॥

दीर्घकाल में भारत भू पर, धर्म हेतु कर रहे विहार।
सामायिक स्वाध्याय धर्म का अनुपल करते भव्य प्रचार।
शुद्ध अहिंसा मय जीवन, जिनके जीवन का मूलाधार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की, हो जगती में जय जयकार ॥७॥

प्राचीनहस्ताङ्कितशास्त्रपत्र-
प्रशस्तिसशोधनदत्तचित्त ।
यश्चेतिहासोल्लिखने सयत्न.
विद्वद्वरोऽय जयताद् गजेन्द्र ॥८॥

हस्त लिखित प्राचीन शास्त्र के, पत्रो को करके सस्कार,
जो निशिवासर करते रहते, है प्रशस्ति का उचित सुधार।
लिखते है इतिहास जैन का, कर प्रयल जो विविध प्रकार,
ऐसे बुधवर मुनि गजेन्द्र की हो जगती मे जय जयकार ॥८॥

श्रीमद् प्राज्ञगुरो शिष्य· विद्यार्थी वल्लभो मुनि ।
लिलेख श्रद्धया शीघ्रमुपाध्यायगुणाष्टकम् ॥

(५)

हा हन्त! हस्तिगणिराज! दिवं प्रयात

(पं रत्न श्री घेवरचन्दजी म 'वीर-पुत्र' द्वारा रचित अष्टक)

पीपाड़ - नाम - नगरे शुभलब्धजन्मा,
पूज्य पिता विमल - 'केवलचन्द्र' नामा।
'रूपा' सती गुणवती जननी सुधन्या,
भक्त्या भजन्तु भविनो !गणि- हस्तिमल्लम् ॥१॥

बाल्येऽपि सयमरुचिं रुचिर सुविज्ञ,
कान्त च सौम्यवदन सदन गुणानाम्।
मौनेन ध्यानसहितेन जपेन युक्त,
भक्त्या भजन्तु भविनो !गणि- हस्तिमल्लम् ॥२॥

औदार्य-धैर्य-सहित सुविचक्षण च,
स्वाध्याय-संघ-रचने प्रथम प्रसिद्धम्।
सामायिके प्रबल- प्रेरकमीशमिद्ध,
पूज्य जपन्तु जपिन गणिहस्तिमल्लम् ॥३॥

दृष्टे सदा स्रवति यस्य सुधासमूहो,
यस्यार्द्र - शुद्धहृदयात् करुणा-प्रपूरः।
यस्यानने वहति सौम्य-सरित्-प्रवाहः,
हा हन्त ! हस्ति गणिराज ! दिव प्रयातः ॥४॥

येनैकदापि तव वाक् श्रवणीकृता वा,
दृष्ट सकृद् तव सुभव्यमुखारविन्दम्।
आजीवनं मनसि भाति छविस्त्वदीया,
हा हन्त ! हस्ति-गणिराज ! दिव प्रयात ॥५॥

लब्धा त्वया धवलकीर्तिरतिविशाला,
प्राप्त यशश्च विमल विशद विशुद्धम्।
कल्पान्तकालमविनाशमखण्डलं च,
हा हन्त ! हस्तिगणिराज ! दिवं प्रयातः ॥६॥

सोढा त्वया समतया परमा हि पीडा,
नोच्चारितं निज-मुखेन कदापि किञ्चित्।
शान्ता सदा स्मितयुक्ता तववक्त्रमुद्रा,
हा हन्त ! हस्ति-गणिराज दिव प्रयात ॥७॥

श्रीमद्वियोग इह साधु-समाजनिष्ठान्,
दु खीकरोति सुतरा सुजनान्सुभक्तान्।
शिष्यास्तथैव सकलान् तव पादलीनान्,
हा हन्त ! हस्ति-गणिराज दिव प्रयात ॥८॥

श्रद्धाजलिं समर्प्येमा, वीरपुत्र समिच्छति।
आत्मा ते परमा शान्ति, शीघ्रं प्राप्नोतु शाश्वतीम् ॥९॥

(आचार्यप्रवर के समाधिमरण के अनन्तर श्रद्धाञ्जलि रूप मे १२ मई १९९१ को जोधपुर मे समर्पित)

(६)

गुरु-गजेन्द्र-गणि-गुणाष्टकम्

श्री गजसिंह राठौड़

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

(१)

हे तात ! हे दयित ! हे भुवनैकबन्धो !
शोभानिधे ! सरल ! हे करुणैकसिन्धो !
त्वामाश्रितो गुरु - गजेन्द्र जगच्छरण्य !
मां तारयाशु भवधेस्तु भवाब्धिपोत !

हे प्राणाधिक वल्लभ तात ! हे त्रिभुवन के एकमात्र बन्धो ! हे शोभा के सागर ! हे नितान्त सरल ! करुणा के अथाह सिन्धु ! ससार के सचराचर प्राणिवर्ग को शरण प्रदान करने वाले गुरुवर गजेन्द्र ! (श्री हस्तिमलजी महाराज साहब) मै आपकी शरण मे आया हूँ। हे भवसागर से पार उतारने वाले महान् जहाज ! मुझे शीघ्र ही ससार-सागर से पार उतारिये।

(२)

स्वाध्यायसंघ - सहधर्मिसमाज - सेवा,
सिद्धान्त - शिक्षणविधौ विविधोपदेश.।
अध्यात्मबोधनपरास्तव शंखनादा·
गुञ्जन्ति देव ! निखिले महीमण्डलेऽस्मिन् ॥

हे गुरुदेव ! स्वाध्याय सघ, सहधर्मि-वात्सल्य, समाज-सेवा एव शास्त्रो के शिक्षण के सम्बन्ध मे आपके विविध विषयो के उपदेश और अध्यात्म-भाव को प्रबुद्ध कर देने वाले आपके शखनाद इस सम्पूर्ण महीमण्डल मे गूज रहे हैं।

(३)

क्षोण्या सदा तिलकभूतमरोर्धरायाम् ,
राठोड़वशक्षितिपै. परिपालितायाम्।
रूपा-सती-तनय ! केवलचन्द्रसूनो !
जन्माभवत् तव कलेः मदभञ्जनाय॥

हे रूपासती के लाल-श्री केवलचन्द्रजी के आत्मज ! आपका जन्म कलिकाल के प्रभाव को निरस्त करने के लिये राठोड़ वश के राजाओ द्वारा सुशासित-सुरक्षित सदा सकल महीमण्डल की तिलक स्वरूपा मरुभूमि में हुआ।

(४)

तिर्यक् - नृ - नारक-निगोद- सुरासुराणा,
संभ्रम्य योनिनिवहेषु चिरौघकालम्।
पूर्वार्जितैः शुभतरैर्गणिवर्यपुण्यैः,
लब्धास्ति ते चरणरेणु - पुनीत- सेवा॥

हे आचार्यप्रवर! मुझे नरक, निगोद, तिर्यञ्च, मानव, देव, असुर आदि चौरासी लाख जीव योनियो मे अनन्त काल तक भटकने के पश्चात् पूर्व जन्मो मे उपार्जित अतीव शुभ पुण्यो के फलस्वरूप आपके चरणारविन्दो की पवित्र रज की सेवा प्राप्त हुई है।

(५)

रत्नत्रय दुरित- दुर्गक्षयैकवज्र,
प्राप्तोऽस्मि पूज्य ! तव भूरिदयाप्रसादात्।
मिथ्यात्व-मोह-ममता-मद - लुम्पका मां,
किं हा तथापि न हि देव ! परित्यजन्ति॥

हे पूज्यवर! आपकी असीम दया के प्रसाद से, मुझे पापो के गढ़ को नष्ट करने मे पूर्णत सक्षम, वज्रतुल्य रत्नत्रय प्राप्त हुआ है। तथापि हे आराध्यदेव ! यह दुख की बात है कि ये मिथ्यात्व, मोह, ममत्व और मद रूपी लुटेरे मेरा पीछा क्यो नही छोड़ रहे हैं?

(६)

लब्धोऽसि हे कुशलवश- धुराधुरीण!
ससार - तारणविधौ पटुकर्णधार।
चित्त कषाय - निखिलार्ति-हरौषध त्वा,
कल्पद्रुमाभमपि प्राप्तसुपीडितोऽस्मि॥

हे कुशल-वश-श्रमण-परम्परा के कुशल धुराग्रणी नायक! भव्यो को ससार- सागर से पार लगाने वाले आप जैसे समर्थ कर्णधार मुझे मिल गये हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि विषय-कषायो तथा सब प्रकार के दुख-द्वन्द्व को नष्ट कर देने मे समर्थ दिव्य औषधि तुल्य एव सभी इच्छाओ को पूर्ण करने वाले कल्पवृक्ष के समान आपको पाकर भी मैं (भव-रोग से) पीड़ित हूँ।

(७)

नाम्नापि ते गुरु गजेन्द्र ! लय व्रजन्ति,
विघ्नोपसर्ग - दुरितौघभव - प्रपञ्चा।
साक्षात् शिवौघ ! तव दर्शन - वन्दनेन,
कर्मारयो यदि लयन्ति किमत्र चित्रम्॥

हे गुरुदेव गजेन्द्राचार्य ! आपका नाम लेते ही सभी प्रकार के विघ्न, उपसर्ग, पापपुज और ससार के प्रपञ्च तिरोहित हो जाते है, तो हे मूर्तिमान् कल्याणकुज! आपके दर्शन और वन्दन से यदि कर्मशत्रु नष्ट होते है, तो इसमे आश्चर्य ही क्या है?

(८)

प्रातर्जपामि मनसा तव नाममन्त्र
मध्येऽह्नि ते स्मरणमस्तु सदा गजेन्द्र।

साय च ते स्मरणमस्तु शिवाय नित्य,
नामैव ते वसतु श हृदयेऽस्मदीये ॥

हे गजेन्द्राचार्य ! मै प्रात काल आपके नाममन्त्र का अन्तर्मन से जप करता हूँ। मध्याह्न मे भी आपके मगलकारी नाममत्र का स्मरण रहे। नित्य ही सायकाल के समय मे भी कल्याण के लिए आपका स्मरण रहे। हे देव ! हमारे हृदय मे केवल आपका कल्याणकारी नाम ही बसा रहे।

(७)

वन्दे सुकीर्तिधवलीकृतभूमिभागम्

(श्री अर्हद्दासमुनि)

चारित्र्यचारुकवचावृत्तदिव्यदेह
विद्वत्सभागतजनार्चितपादपद्मम्।
जैनेतिहासकुलशारदशुभ्रसोम
वन्दे सुकीर्तिधवलीकृतभूमिभागम् ॥१॥

वैदुष्यपुण्यगुणसागरमद्वितीय
कारुण्यसोमरसपूरितहेमपात्रम्।
शुद्ध विशुद्धहृदय सदय सुपूज्य
भक्त्या स्मरामि गणिन हृदयाम्बुजस्थम् ॥२॥

स्नेहोपचारसुधयोपकृतोऽयमद्य
कैस्ते भणामि वचनै करुणा दयालो !
भक्तिप्रभावविवशो यदुदाहरामि
चापल्यमेव तदिदं नितरा गिरां मे ॥३॥

रूपासतीतनुज ! केवलचन्द्रसूनो !
माधुर्ययुक्तवचनामृतपूर्णसिन्धो !
त्वत्सद्गुणौघगणनाकुशल स एव
वर्षाम्बुबिन्दुगणनाकुशलो जनो य ॥४॥

मोहादिकर्मकलुषावृतदेहभाज.
त्वद्दर्शनेन सहसा विमला भवन्ति।
स्पर्शैर्मणेर्भजति चेल्लघुलौहखण्डम्
चामीकरत्वममलं किमु तत्र चित्रम् ॥५॥

तेजोनिधे। विमलपूर्णशशाकमत्या
मिथ्यैव मूर्खमदनस्त्वयि बद्धलक्ष्य ।
दृष्ट्वा प्रचण्डतपसो ज्वलन त्वदीयं
देहप्रदाहभयतो निकषैति नैष ॥६ ॥

हा हन्त हन्त विधिनाऽकरुणेन नून
त्वां सद्गुणौघनिलय विबुध वरेण्यम्।
मूढेन हा ! हतवता सहसा धरिण्य
ओजोबल ननु हत सकल बुधानाम्॥७ ॥

विद्यापते त्वयि गते सुमन· प्रसादे
रिक्त बभूव निखिल खलु जैनविश्वम्।
अस्तगतेऽम्बरमणौ जगत. प्रकाशे
पश्चात्तमोऽस्ति गगने घनमेव शेषम्॥८ ॥

(८)

अतस्त्वा मतनं वन्दे

हन्ति य स्वोपदेशेन, पापानि सकलानि च,
ज्योतिर्विन्द च सन्मूर्ति, हस्तिमल्ल नमाम्यहम्॥१ ॥

स्तिमिते लोचने यस्य, अर्हद्ध्यानसमन्विते,
नित्य शास्त्रप्रवक्त्रे च, हस्तिमल्लाय वै नम ॥२ ॥

मनुवृत्ति सदा शील, नानाविधममान्वितम्
सदा सन्मार्गद्रष्टार, हस्तिमल्ल नतोस्म्यहम्॥३ ॥

लङ्घिता नैव मर्यादा, आपत्कालेपि येन वै,
तस्मात्त शतशो वन्दे, हस्तिमल्ल च सूरिणम्॥४ ॥

यादृशी श्रूयते शोभा, तादृगेव प्रतीयते,
अतस्त्वा सतत वन्दे, हस्तिमल्ल च दैवतम्॥५ ।

(९)

श्री हस्तिमल्ल.सुधी

चातुर्यं चतुराननस्य निभृतं गाम्भीर्यमम्भोनिधे-
रौदार्य्यं विबुधद्रुमस्य मधुरा वाच च वाचस्पते ।

धैर्यं धर्मसुतस्य शर्म सकलं देवाधिपस्याहरत्
धीमान् ख्यातनयः सदा सविनयः श्री हस्तिमल्ल सुधी ।

—प. जगन्नाथ ज्योतिर्विद् - कुंडेरा २५/१/१९६८

श्री हस्तिमल जी महाराज ब्रह्मा के जैसे चातुर्य को धारण करने वाले, समुद्र के समान गम्भीरता वाले, कल्पवृक्ष के समान उदारता वाले, बृहस्पति के समान मधुर वाणी से युक्त, धर्मपुत्र के समान धैर्यवान तथा देवताओ के अधिपति इन्द्र के सम्पूर्ण सुखो का हरण करने वाले, बुद्धिमान, प्रसिद्धि को प्राप्त, सदा विनयशील एव विद्वान् आचार्य है ।

(१०)

खिद्यते मे हृदयम्

व्याप्त सर्वत्र भूमौ शशधरधवलः शम्भुहासापहासी,
कीर्तिस्तोमो यदीयो जनयति परितः क्षीरपाथोधिशङ्काम् ।
यस्मिन् सम्मानकाया अमरपतिगजो दिग्गजाश्चन्द्रतारा,
जाता सर्वाङ्गशुभ्रा मुनिजनमहित सोऽपि यातो दिव हा ॥१ ॥

आसीद् य प्रतिभाप्रभुर्गुणनिधि विश्वम्भराविश्रुतः,
आचार्यो मुनिपुङ्गवोऽमलमना श्री हस्तिमल्लाभिध ।
कालेनापहृतस्तदद्य नितरा शोकाकुला मेदिनी,
साधूनामपि मानस व्यथयति प्रारब्धशोकस्वरै ॥२ ॥

दृष्टो यः प्रथम मया निकटतो नागौरमध्ये ततः,
पाल्यां सूर्यसमप्रभ स मुनिराट् श्री हस्तिमल्लः प्रभु ।
तस्मिन्नस्तमितेऽद्य गाढतिमिरं व्याप्त समन्तात् ततः,
सन्मार्गानवलोकनात् प्रतिपद भ्रश्यन्ति सर्वे जना ॥३ ॥

लोकाभ्यर्चितपादपद्मयुगलानाचार्यवर्यानपि,
हत्वा काल न लज्जसे कथमहो किं वक्ष्यतस्त्वां प्रति ।
त्वं भूया सदय सदेति मनसा वाञ्छत्यसौ केवलम्,
श्रीमत्पुष्करपादपद्मनिलय शिष्यो रमेशो मुनि ॥४ ॥

हस्तिमलोऽमलचेता श्री जिनधर्म प्रसारकाचार्यः
स्वस्थस्मृत्या सुखयतु, पुष्कर - शिष्यं रमेशमुनिम् ॥५ ॥

श्री रमेशमुनि शास्त्री , मदुसिवाना २२/४/९१

(११)
हस्तिमल्ल नमाम्यहं

श्री ल वा माण्डवगणे, जलगाव

अप्रमत्त सदा शान्त कार्ये मग्न दिवानिशम्।
स्वाध्यायस्य प्रवक्तार हस्तिमल्ल नमाम्यहम् ॥१ ॥
दोषान् परित्यज्य गुणान् जिघृक्षु
प्राख्यापयत्स्वस्य जने बुधत्वम्।
रात्रिन्दिव ज्ञानरतो गजेन्द्र ।
शास्त्रेषु सर्वेष्वेव भवत्प्रवीण ॥२ ॥
आचारनिष्ठो गुरुहस्तिमल्ल
सिद्धान्तवित्त्वाद् ऋजुमार्गदृश्वा।
स्वाध्यायमार्गं जनभद्रहेतो
प्राकाशयद्वै शिवतत्त्वप्राप्त्यै ॥३ ॥

(१२)
जयस्नम्य भवेल्लोके

(डॉ धर्मचन्द जैन)

सप्ततिवर्षपर्यन्त धर्मगगा प्रवाहयन्।
दिवङ्गतो मुनिर्हस्ती, सस्तारकसमाधिना ॥१ ॥
शोकमोहौ विनिर्जित्य, समभावमसाधयत्।
जीवनस्यातिमे भागे, मृत्यु वीरतयाऽजयत् ॥२ ॥
प्रसन्नवदना सर्वे जीवास्तद्धितचिन्तका ।
जाता खिन्नमनस्काश्च, भक्ता मोहपरायणा ॥३ ॥
बिभ्यति मादृशो मृत्योस्तादृशस्त जयन्ति च।
सम्यक्तया हि जानन्ति, जातो ध्रुव मरिष्यति ॥४ ॥

अन्तिम-विहार

उपकृत्यातिमे वर्षे, पालीनगरवासिन ।
आचार्यप्रवरश्चक्रे, विहार सोजत प्रति ॥५ ॥
अध्युष्य होलिका यावत्, प्रतस्थे सोजतात् पुन ।
निमाजमुपकर्तुं स, शिष्यान् प्रस्थातुमादिशत् ॥६ ॥
वहन्त शिविका शिष्या गुरुभक्तिमदर्शयन्।

पूरयितुं गुरोरिच्छा, सर्वे निमाजमागता ॥७ ॥

आत्म-साधना समाधिग्रहणञ्च

जायते निर्बल स्वास्थ्य, वृद्धत्वे तु समागते ।
क्षीणा तस्य वपु शक्तिरात्मशक्तिरवर्धत ॥८ ॥
आत्मन्येवात्मना तुष्ट सोऽन्नमौषधमत्यजत् ।
वाचा मौन गृहीत्वा च, कर्ममलशोधयत् ॥९ ॥
मृत्यु सन्निकट ज्ञात्वा, त्यक्त्वाऽऽहार चतुर्विधम् ।
अष्टभक्त तपस्तप्त्वा, शुक्लध्यान समादधात् ॥१० ॥
पारण तपसोऽकृत्वा, त्यक्त्वशिष्यनिवेदनम् ।
शुद्धेन मनसा साधु, सस्तारक गृहीतवान् ॥११ ॥

आत्महत्या-समाधिमरणयो. भेद·

आत्महत्या प्रकल्पन्ते, समाधिमरण जना ।
अज्ञानिनो न बुध्यन्ति, यदेतदात्मसाधना ॥१२ ॥
आत्महत्या तु सावेशा, रागरोषविमिश्रिता ।
समाधिमरण तावत्, समभावेन तज्जय ॥१३ ॥

दर्शनार्थिनामागमनम्

श्रुत्वा समाधिवृत्तान्त, भक्ता दूरत आगता ।
पक्तौ बद्धा नरा नार्यो, दर्शनाय समुत्सुका ॥१४ ।
सहस्रदशक नित्य, भक्ताना वा ततोऽधिक ।
धन्यममन्यताऽऽत्मान, सप्राप्य गुरुदर्शनम् ॥१५ ॥

देहात्मनोर्भेद-ज्ञानम्

इहामुत्रैषणात्यागी, तर्तु मृत्युमहोदधिं ।
न ह्यमुह्यत भक्तेषु सर्वान् क्षमामयाचत ॥१६ ॥
देहेऽनित्ये वसन्नात्मा, नानुभवति शाश्वत ।
किन्तु देहे वसन्नेव, पृथगात्मानमन्वभूत् ॥१७ ॥

समाधिमरणं श्रद्धाञ्जलिसमर्पणञ्च

दशमेऽहनि समाधेर्हि, देह त्यक्त्वाऽमरोऽभवत् ।
वृत्तान्तो प्रसृतो मृत्योराशु सुलभसाधनै ॥१८ ॥

सार्द्धलक्षाधिका प्राप्ता मानवास्तत्र सर्वत. ।
अतिम दर्शन कृत्वा श्रद्धांजलिं समार्पयन् ॥१९ ॥
समाधिमरण तादृक् , द्रष्टु प्राय सुदुर्लभम् ।
अतोऽपि राजनेतार, श्रद्धार्पणार्थमागता ॥२० ॥
प्रज्वालित शवस्तस्य, श्रावकैश्चन्दनार्चिभि ।
जयघोषेर्नभोऽगुञ्जत् , ख्याति निमाजमाप्तवत् ॥२१ ॥

नूतनाचार्योपाध्याययो· घोषणा

श्रद्धाञ्जलिसभामध्ये, हस्तिलेखो सुवाचित ।
आचार्यो रत्नवशस्य, हीराचन्द्रो भविष्यति ॥२२ ॥
उपाध्यायपदे भूत्वा, सघसचालने सदा ।
मानचन्द्रो मुनिस्तस्य, सहयोग करिष्यति ॥२३ ॥

आचार्यहस्ती विजयताम्

सम्यग्ज्ञाननिधिर्हस्ती, सम्यक्श्रद्धासमन्वित ।
मुक्तिपथे समारूढ, सम्यक्चारित्रपालक ॥२४ ॥
साधकाना कृते पन्था, प्रशस्तो तेन साधुना ।
जयस्तस्य भवेल्लोके, यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥२५ ॥

(१३)

आचार्य श्री गजेन्द्र गुणागान

(रचयिता-श्री हीरामुनि)

(तर्ज - जो भगवती त्रिशला तनय)

जो महासती रूपा तनय, केवल सुकुल के भान है।
दीक्षित हुए अजमेर मे, प्रिय नाम 'गज' गुणवान है ॥१ ॥
करुणार्द्र मन नवनीत सा (कोमल सरल), व्रत नियम मे चट्टान है।
वाणी मधुर लाती लहर, उपदेश पटु श्रुतवान है ॥२ ॥
शतदल प्रफुल्लित सा वदन, जीते मदन मतिमान है।
ज्ञानी प्रबल करणी अतुल, धर्मी जगत की शान है ॥३ ॥
आबाल ब्रह्मव्रती गुणी, सयम नियम के धाम है।
उन पूज्य हस्ती मुनीश को, मम कोटि- कोटि प्रणाम है ॥४ ॥
[इन पूज्य हस्ती मुनीश को, मेरे अनेक प्रणाम हैं ॥]

(१४)

गुणग्राम

श्री गुरु चरण सरोज मधुप हैं मुनिवर निर्मम,
हस्ती सम प्रतिवादि मान मर्दन हित हरिसम।
तीव्र जिन्हों का त्याग राग पै है सयम पर,
मननशील मन मुदित होत जिनके दर्शन कर।
लब्ध प्रतिष्ठित निज इष्ट के सेवक सच्चे पेलखो,
जीवन सु-धन्य शुभ नाम यह आद्याक्षर में देख लो ॥१॥

(१५)

वर्ष गाठ पर स्तुति

(श्री पुष्करमुनिजी म.)

आगम के ज्ञाता अरु विश्व में विख्याता मुनि,
प्रवचन दाता तेरे जनता का ठाट है।
सयम की साधना मे जप की आराधना में,
लीन रहे आठों याम समता सम्राट् हैं।
जैन धर्म ज्योतिर्धर पण्डित मण्डित वर,
पूज्य शोभाचन्द जी का दिपा रहा पाट है।
शासन की सेव कर चिरायु हो 'गजमुनि',
आचार्यवर तेरी आज 'वर्षगाठ' है।

(१६ जनवरी १९६५ पौषशुक्ला १४ सवत् २०२१ को जन्मतिथि पर प्रस्तुत)

(१६)

भव्य भावना

(मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म)

पेखो समुज्ज्वल साधना सर्वोच्च जिसकी श्रेष्ठतर।
आराधना त्रय-रत्न की पुनि देखलो है प्रबलतर॥
है शान्तिमय मुस्कान जिसके, राजती मुख पै सदा।
मौन-व्रती रहते निरर्थी झझटो से सर्वदा॥१॥
जो इच्छते उन्नति अहा! आचार और विचार की।
पुनि हैं बताते भावुकों की क्षीण-गति ससार की॥

जो मार का मद मार के बे - मार करते चार को।
लाचार कर दुर्भावना अपना रहे पुनि चार को ॥२॥
जिसकी अडिग आस्था अहा! मन सज्जनो के भा रही।
जो पिशुनता के प्रेमियो को त्रास देती है सही॥
निन्दादि विकथा, वञ्चना, शोधी मिले न अहा! जहा।
कारण यही उर ठानलो नही दम्भ तो फटके वहाँ॥३॥
अलमस्त है इतिहास-लेखन कार्य मे दिन-रात जो।
बिखरी हुई सामग्रियाँ सग्रह करे निज हाथ जो।
पुनि पूर्वजो का प्रेम-निधि हिय मे हिलोरे ले रहा।
वृत्तान्त गौरवता भरा जिसको सदैव सुहा रहा॥४॥
अध्यात्म - ज्ञानामृत भरी वानी सुहानी है घनी।
मन-मुदित भावुक भ्रमर होते पेखलो जिसको सुनी॥
हो, क्यो न कैसी भी परिस्थिति, ध्येय पै नहि ढावना।
होवे चिरायु गजेन्द्र-मुनि-वर, मिश्रि की यह भावना॥५॥

(आचार्य श्री की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती पर प्रस्तुत)

(१७)

पूज्य - पञ्चक

कृषकषाय मृदुता भरी, ध्याता ध्यान धुरीन्द्र।
साम्य भाव भावित सदा, गजगणि रूप सूरीन्द्र॥१॥
मद मच्छर मिथ्या परे, अतिशयवन्त यतीन्द्र।
शिव-दिव-लइल हरित रहै, गजगणि रूप सुरीन्द्र॥२॥
भव्य बोध बोधित सदा, कृदामोह खवीन्द्र।
मुदामान मर्दित यदा, ददा ज्ञान गणीन्द्र॥३॥
आतम तत्त्व अवलोकता, चित्तसमाधि पूर।
गणनायक सायक निबल, सबला सयम शूर॥४॥
अशुभाचार निवारणे, साध्यभाव भवीन्द्र।
रूप स्वरूप साधक गणि, हस्तीमल मुनीन्द्र॥५॥

(श्री रूपमुनि 'रजत', १२ ८ १९८९)

(१८)

सवैया

(तर्ज - सवैया नमूं श्री अरिहंत)

नमूँ सिरि गजइन्द्र हँस मुख सौम्य चन्द्र,
केवल रूपारा नन्द सूरत मोहन गारी है।
पच महाव्रताचार इन्द्रिय पाँच दमन हार,
समिति गुप्ति धार किरिया उद्धारी है ॥१॥
क्रोध की मिटाई झाल, मान माया दीनी टाल,
लोभ आड़ी बाधी पाल, बाल ब्रह्मचारी है।
ज्ञानी ध्यानी श्रद्धा (इष्ट) वान छत्तीस गुणा री खान,
आपरो जो धरे ध्यान, पीड़ा जावे सारी है ॥२॥

(१९)

गुरु गुण महिमा

जय बोलो गजेन्द्र गुरुवर की, सघ सचालक पदवीधर की ॥टेर॥
सती रूपा मा के नन्दन है, केवलचन्दजी कुल चन्दन है।
लघुवय में दीक्षित मुनिवर की ॥१॥जय॥
शोभाचन्द्र जैसे गुरु पाये, शीतलता चन्दन सी लाये।
प्राण रक्षा की थी फणिधर की ॥२॥जय॥
जो शासन के उजियारे है, श्रमणो मे सत निराले है।
महातपो धनी योगीश्वर की ॥३॥जय॥
स्वाध्याय का नाद गुजाया है, समभाव मे धर्म बताया है।
बरसे है धार सुधारस की ॥४॥जय॥
गुणियो की महिमा गावे जो, तीर्थंकर पद पावे वो।
मुक्ति पथ के उजियागर की ॥५॥जय॥
गुरु पच महाव्रत धारी है, कई भव्य आत्मा तारी है।
आचारनिष्ठ सकट हर की ॥६॥जय॥
सूरज सम निर्मल ज्योति ये, चन्दा सम निर्मल मोती ये।
कहे 'हीरा' धर्म दिवाकर की ॥७॥जय॥

(२०)

वन्दे मुनिवरम्

(५९ वी जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में)

(तर्ज - आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं..)

आओ भय्या तुम्हें कराएँ, झाकी गुरु भगवान की,
इन चरणो मे नमन करो, यहाँ बहती गगा ज्ञान की।
वन्दे मुनिवरम् वन्दे गुरुवरम् ॥टेर ॥

पच महाव्रत पालन करते पचाचार विहारी हैं।
निग्रह कीना पचइन्द्रिय का, समिति गुप्ति के धारी हैं।
नौ बाड़ो से ब्रह्म पालते, कैसी ममता मारी है।
क्षमा नम्रता सहज सरलता, उपशम गुण के धारी हैं।
गुण छत्तीस से शोभित होते, तेजस्वी गुणवान की ॥१ ॥इन ॥
वन्दे मुनिवरम्...

आठ सम्पदा के स्वामी हैं, सुनलो आज सुनाता हूँ।
स्वय पालते और पलवाते, प्रथमाचार बताता हूँ।
सूत्र अर्थ के ज्ञाता हैं जो, ओजस्वी तन पाता हूँ।
वाक् चतुरता भाषण शैली, सुनकर मोद मनाता हूँ।
प्यासी रहती जनता इनके, उपदेशामृत पान की ॥२ ॥इन ॥
वन्दे मुनिवरम्...

शास्त्र वाचना निधि पाचवी, भिन्न भिन्न समझाते है।
तीक्ष्ण मति ही तुच्छ वस्तु से, सार ग्रहण कर पाते है।
परवादी मत भजन करते, वाद जीत कर आते है।
साधक को जिससे साता हो, ऐसे काम कराते हैं।
नही लालसा, होती इनको, मान और अपमान की ॥३ ॥इन ॥
वन्दे मुनिवरम्...

सामायिक स्वाध्याय करो यह, सब दुख भजन हारा है।
भवसागर मे डूबे जन को, दिक् सूचक ध्रुव तारा है।
हर प्राणी को सभी समय मे, इसका एक सहारा है।
इतनी सी शिक्षा जो धारे, बेड़ा पार हमारा है।

सकट मे भी पाले आज्ञा, वीर प्रभु भगवान की ॥४ ॥
वन्दे मुनिवरम्......
छोड़ दिया घर बार जिन्होने , सब जग को घर माना है।
कहाँ रहेंगे कोई न जाने, इनका ठौर ठिकाना है।
दीपक की टिम टिम ज्योति क्या, सूरज को दिखलाना है।
इनका जीवन निरख निरख कर, अपना तेज बढ़ाना है।
गुरु कृपा से महिमा गाई, 'हीरा' ने भगवान की ॥५ ॥इन ।
वन्दे मुनिवरम्......

(२१)

धर्मचक्र के धारी

परम प्रतापी पूज्यराज ये धर्मचक्र के धारी हैं।
जैन जगत सिरताज गुरुवर शुद्ध बाल ब्रह्मचारी हैं ॥टेर ॥
त्रिभुवन मे छाया सुयश, अहा शुभ कर ललाम
जगतोद्धारक आप हैं, नाम काम अभिराम।
अल्प अवस्था में भी जो आचार्य सुपद को पाते हैं
जो चरण कमल को आते हैं, वे ज्ञानसुधा पी जाते हैं ॥१ ॥
ऐसी हस्ती आप हैं, और न कहीं दिखलाय
दर्शन से इक बार ही परमभक्त बन जाय।
पाप विनाशक सत्य उपासक, सर्व गुणों के धारी हैं
नर श्रेष्ठ हुए जिस पुण्य गोद से धन्य धन्य महतारी हैं ॥२ ॥
तीर्थराज गुरुराज हैं ज्ञान गग कर स्नान
सबको मिलता है नही ऐसा भाग्य महान।
इसी खुशी मे आओ हिलमिल दिल के ताले खोल दो
नभ गूज उठे गुरुराज की एक बार जय जय बोल दो ॥३ ॥

(२२)

कहाँ चले गए गुरुवर प्यारे

(तर्ज - उठ जाग मुसाफिर...)

स्वाध्याय की बीन बजा कर के, कहाँ चले गए गुरुवर प्यारे,
भक्तों के मन को मोहित कर, कहाँ चले गये.. ॥टेर ॥

जब जन्म-जन्म का पुण्य फला, श्री चरणो का सान्निध्य मिला,
सत्पथ पर थोड़े कदम चला, कहाँ चले गए....
शकाएँ हों, परीषह आते, सन्मार्ग से मन को मचलाते,
तब समाधान हम थे पाते, कहाँ चले गए....
नित सामायिक स्वाध्याय करो, जीवन मे मगल मोद भरो,
यह धर्म का मर्म बताकर के, कहाँ चले गए....
नरनारी दौड़े आते थे, मानो कोई नवनिधि पाते थे,
अनुपम गुरु मत्र सुना करके, कहाँ चले गए....
सथारा तेला सहित लिया फिर पडित मरण का वरण किया,
एक नया बना इतिहास यहाँ, कहाँ चले गए....
हम मोक्ष को लक्ष्य बना पावे, सुदृढ कदमो से बढ़ते जावे,
है यही भावना 'गौतम' की, कहाँ चले गए..

(२३)

गुरु की दिव्य-साधना

(तर्ज - बड़ी देर भई नन्दलाला)

गुरु 'हस्ती' दीन दयाला, जीवन था भव्य निराला
दिव्य साधना से जिनके अन्तर मे भया उजाला रे ॥टेर॥
कभी न उलझे मोह-माया मे, भौतिकता से दूर रहे
लघुवय मे ही सन्त बने और तप सयम मे शूर रहे।
बीस वर्ष की अल्पायु मे , पद आचार्य सभाला रे ॥गुरु॥
कोई न खाली हाथ लौटता द्वार आपके जो आता
सामायिक स्वाध्याय नियम के कुछ मोती वह पा जाता।
कई दुखी व्यसनी थे उनको व्यसन मुक्त कर डाला रे ॥गुरु॥
कही मिटाई फूट कही पर जीवो के बलिदान रुके,
कही किया निर्भय लोगो को, कही विरोधी आन झुके।
कही जुड़ी विद्वत् परिषद् तो कही धार्मिक शाला रे ॥गुरु॥
जिन शासन की रक्षा के हित, स्वाध्यायी तैयार किए
फिर से जागी नई चेतना, कई ऐसे उपकार हुए।
पल-पल याद करेगी जनता, कैसा जादू डाला रे ॥गुरु॥

अन्त समय निमाज में जाकर, अपना वचन निभाया था
तेला कर सथारे का इक, नव इतिहास बनाया था।
जैन धर्म की शान बढ़ी मुनि 'गौतम' जपता माला रे॥गुरु॥

(२४)

दुनिया मे नाम था

(तर्ज - सौ साल पहले...)

गुरुवर हस्ती का, दुनिया मे नाम था, दुनिया मे नाम था।
आज भी है और कल भी रहेगा।
क्या क्या सुनाये, वो जन-जन का राम था, जन-जन का राम था।
आज भी है और कल भी रहेगा॥टेर॥

वो आए थे सच्चे मसीहा महावीर के बनकर के
अनमोल दिये मोती हमे आगन से चुनकर के
स्वाध्याय सामायिक उनका पैगाम था, उनका पैगाम था.॥१॥आज भी॥
हमे शब्द नही मिलते जिनसे गुणगान करें उनका,
चमका जो दिवाकर सा तो क्या सम्मान करें उनका
गुणगान उनका घर-घर सुबह और शाम था, सुबह और शाम था॥२॥आज भी॥
कई वर्षो मे ऐसा , कभी कोई सन्त रत्न होता है
उपकार याद जिसके करे तो युवा बाल वृद्ध रोता है,
विचरे जहाँ-जहाँ धन्य वह मुकाम था, धन्य वह मुकाम था.॥३॥आज भी॥
गुरु दर्शन पाने को भक्त दौड़ के आते थे
तीरथ मेला रहता जहाँ कही आप चले जाते थे
'गौतम' की आस्था का वही एक धाम था, वही एक धाम था॥४॥आज भी॥

(२५)

प्रतिदिन करो

(तर्ज - सिद्ध अरिहन्त में मन रमाते चलो..)

हस्ती गुरुवर के उपदेश दिल में धरो।
सामायिक और स्वाध्याय प्रतिदिन करो॥टेर॥

विपुल वैभव न परिवार सग जायेगा
मनुज स्वाध्याय से ही सुपथ पायेगा

सामायिक से हृदय की विषमता हरो ॥सामा. ॥१ ॥
जगत-जजाल मे जिन्दगी जा रही
विकट अतिम घड़ी नित निकट आ रही
भटक अज्ञान में बाल ज्यो मत मरो ॥सामा ॥२ ॥
नेत्र हैं धन्य जो सत दर्शन करे
जीभ है धन्य वाणी से अमृत झरे
कान से शास्त्र सुन, ज्ञान का घट भरो ॥सामा. ॥३ ॥
'ज्ञान आत्म का गुण है' उन्होने कहा
श्रद्धा का रग बिन ज्ञान के कब रहा
करके स्वाध्याय श्रद्धा बहुत दृढ करो ॥सामा ॥४ ॥
आचरण के बिना ज्ञान सूना है ज्यो
आचरण भी अधूरा है बिन ज्ञान त्यो
शुद्ध कर आचरण ज्ञान, भव जल तरो ॥सामा. ॥५ ॥
कैसा अनमोल 'मोती' ये नर तन मिला
अब तो आत्मा को 'गौतम' परम पद दिला
त्याग दो दुर्व्यसन कर्म-रिपु से डरो ॥सामा ॥६ ॥

(२६)

गुरु हस्ती ने अलख जगाया

(तर्ज - बड़ी देर भई नन्दलाला)

गुरु हस्ती ने समझाया, स्वाध्याय करो फरमाया
गाव-गाव घर-घर सामायिक, ऐसा अलख जगाया रे ॥टेर ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र तप यही मोक्ष का मार्ग कहा,यही
है स्वाध्याय ज्ञान-दर्शन तो, सामायिक तप चरित महा, सामा
गहरा मन्थन कर आगम का, सार तत्त्व बतलाया रे ॥१ ॥
चाहे अगर समाज राष्ट्र गुण गरिमा से सम्पन्न बने, गरिमा
चाहे यदि सकट के बादल, छाए नही चहु ओर घने, छाएँ
सबसे सरल मार्ग सामायिक, अरु स्वाध्याय सुझाया रे ॥२ ॥
कभी न भूलेगे 'गौतम' इन गुरुवर के उपकारों को, गुरु
अन्तर्मन में झाक हटावे मन में भरे विकारों को, मन में
जिनशासन मोती चमकाने 'हीरा' पाट बिठाया रे ॥३ ॥

(२७)

तू भी गुरु सम बन जासी

(तर्ज- हरि भज हरि भज प्राणीड़ा)

गुरु भज, गुरु भज, गुरु भज, मनवा, गुरु भज्या गुरु धन पासी।
गुरु ने ध्याकर गुरु ने पाकर, तू भी गुरु सम बन जासी ॥टेर॥

सिद्ध प्रभु हैं सिद्ध शिला पर, कुण देख्या देखण जासी ।
गुरु चरणन की शरण लेय तो, सिद्ध शिला दौड़ी आसी ॥१॥
महाविदेह अरिहन्त विराजे, इण भव तो नही मिल पासी ।
गुरुदेव की कृपा हुई तो, तू खुद अरिहन्त बन जासी ॥२॥
प्रभु के रुठ्या गुरु शरण है, झट सुमार्ग बतलासी ।
गुरु रुठ्या नही ठौर जगत मे, गुरु तूष्या प्रभु मिल जासी ॥३॥
गुरु तात गुरु भ्रात गुरु ही देव, ओम गुरु जो ध्यासी ।
इण भव रिद्धि सिद्धि पग पग पासी, पर भव शिव सुख बरतासी ॥४॥
गुरु हस्ती मिलिया पुण्य योग, यो अवसर फिर कद आसी ।
'जीत' पकड़ले चरण गुरु का बिन तारिया नही तिर पासी ॥५॥

(२८)

परम दयालु गुरु महिमा

(तर्ज - चुप-चुप खड़े हो)

तारण तिरण सद्गुण के निधान है,
परम दयालु पूज्य गुरु गुणखान हैं॥टेर॥
सती रूपा माता देखो धन्य धन्य हो गई।
रतनो की राशि हमे खुशी खुशी दे गई॥
ओस वश केवलचन्द जी तात बुद्धिमान हैं॥१॥परम॥
नाम है गजेन्द्र प्यारा, चित्त को लुभावना,
लघुवय दीक्षा फिर, पूज्य पद पावना
शोभाचन्द्र गुरु मिले ज्ञान के निधान है॥२॥परम॥
बाल ब्रह्मचारी तेरी शान ही निराली है,
प्रवचन शैली, अद्‌भुत रस वाली है
सघ के प्रणेता, जिन शासन की शान हैं॥३॥परम॥

श्री पूज्य राज आप जहाँ कही जाते है,
जगल में मगल का दरश दिखाते है
जहाँ कही सुनो आज कीर्ति महान है ॥४ ॥परम ॥
चारों सघ मिल आज विनति सुना रहा
ज्ञान के प्रकाश हेतु दिल तड़फा रहा
आशीर्वाद मिले स्वामी होवे कल्याण है ॥५ ॥परम ॥

(२९)

श्रद्धा के सुमन

(तर्ज -महावीर तुम्हारे चरणों में)

आचार्य पूज्य के चरणों में श्रद्धा के कुसुम चढ़ाये हम ।
आदर्श आपके अनुपम से, अब जीवन सफल बनायें हम ॥टेर ॥

गुरु पच महाव्रत धारी है, अरु पचाचार विहारी है ।
पच समिति त्रिगुप्ति धारी है, वदन विधिवत् कर पाये हम ॥१ ॥
धन्य बाल ब्रह्मचारी ज्ञानी, तप मौन साधना महाध्यानी ।
जिन धर्म के रसिया अगवानी, नही वर्णन गुण कर पायें हम ॥२ ॥
'केवल' के नन्द दुलारे हो, शिव पथ के आप सितारे हो ।
सती रूप कवर के लाल हस्ती, जय विजय आपकी गाये हम ॥३ ॥
ओ रत्न वश शासक नायक, ओ धर्म धुरन्धर निर्यामक ।
आतम गुण मे अहनिश रमते, यह भाव वदना करते हम ॥४ ॥
उपदेशामृत जो धारेगे, भवसागर से तिर जायेंगे ।
नरकादि दुख नही पायेगे, शिव साधक समकित पाये हम ॥५ ॥
स्वाध्याय करो गुरुराज सदा, कहते भव बन्धन कट जाये ।
कहे 'राज मल्ल' इस जीवन मे, शासन सेवा कर पायें हम ॥६ ॥

(३०)

जैन जगत के तारे

(तर्ज - रिमझिम बरसे बादरवा..)

चम चम चमके भारत मे, जैन जगत के तारे।
गुरु हस्तीमल्ल जी प्यारे, गुरु हस्तीमल्ल जी प्यारे ॥टेर ॥

सभी दिशा में सुयश जिन्हों का छाया है२
अपरपार जिन्हों की देखो माया है२
ज्ञान प्रकाश दिखाकर के, मोह अंधियारा टारे ॥गुरु...
जन्म शेहर पीपाड़ नगर मे पाया है२
धन्य २ सती रूपकवर ने जाया है२
माँ की कूख दीपाई रे, जग मे प्रकटे सितारे ॥गुरु...
सयम ले दश वर्ष मे ज्ञान बढ़ाया है२
शोभाचार्य के शिष्य मेरे मन भाया है२
आतम गुण विकसाया रे, महिमा फूला से न्यारे ॥गुरु...
दक्षिण देश सतारा नगरी पावनी२
नाग की जीवन रक्षा की मन भावनी२
दुख सह शिक्षा देवे रे, कोई न किसी को मारे ॥गुरु...
नित्य नये उपदेश सुनाया करते हैं२
वचनों मे अमृत के झरने झरते है२
पी लो प्याला भर भर के ज्ञान का अमृत झारे ॥गुरु...
दो हजार तेरह मे मन की आश फली२
'मैना सुन्दर' आज निकाली मन रली२
निशदिन तुमको ध्याऊँ मैं, पूरो मनोरथ सारे ॥गुरु...

(३१)

गुरुदेव-वन्दना

(तर्ज - जय बोलो महावीर स्वामी की)

वन्दन करते हम पूज्यवर को, सघ नायक धर्म दिवाकर को ॥टेर॥

हस्ती की शक्ति निराली है, मुख पर सूरज सी लाली है ।
चमकीले ज्ञान प्रभाकर को ॥१॥

कलयुग मे सतयुग लाते हैं, काटो मे फूल बिछाते है ।
सुशीतल शान्ति सुधाकर को ॥२॥

गुरुवर की महिमा भारी है, ये अखण्ड बाल ब्रह्मचारी है ।
ज्योतिर्मय गुण रत्नाकर को ॥३॥

अमृत सी मीठी वाणी है, जन-जन की जो कल्याणी है ।

धन्य धन्य है कल्प तरुवर को ॥४ ॥

सामायिक पाठ पढाते हैं, स्वाध्याय संदेश सुनाते हैं ।

महती करुणा के सागर को ॥५ ॥

श्री लक्ष्मी माणक ज्ञानी है, अनमोल हीरा व्याख्यानी हैं ।

सब पूज्य संत अरु सतीवर को ॥६ ॥

हम ग्राम नगर से आये है, दर्शन कर सुख पाये हैं ।

पावन कर दो हमारे पुर को ॥७ ॥

(३२)

पूज्य हस्ती मुनि गुण गाओ

(५५ वीं जन्म - जयन्ती पर श्री हीरामुनिजी द्वारा रचित)

(तर्ज - यह पर्व पर्युषण आया)

पूज्य हस्ती मुनि गुण गाओ, यह जन्म जयन्ति मनाओ जी ॥टेर ॥

लघु वय मे कारज सारया , अजमेर बण्या अणगारा ।

रूपा नन्द ने नित्य ध्याओ जी ॥१ ॥

जोधाणे पूज्य पद पायो, सघ चारो के मन भायो ।

गणिवर बन धर्म दीपायो जी ॥२ ॥

है जप तप माही शूरा, आचार निष्ठ गम्भीरा ।

वन्दन कर कर्म खपाओ जी ॥३ ॥

शुद्ध मन से पूज्य गुण गाओ, दिन उगत ध्यान लगाओ ।

शान्ति अरु समता पाओ जी ॥४ ॥

जो चरण शरण में आवे, दुख शोक रोग मिट जावे ।

पगरज भी गर पाओ जी ॥५ ॥

स्वाध्याय सामायिक कीजे, मुक्ति का मार्ग ग्रहीजे ।

जीवन मे धर्म कमाओ जी ॥६ ॥

सेवक ने महिमा गाई, तप- त्याग करो भाई बाई ।

कर्मो का फद छुड़ाओ जी ॥७ ॥

(३३)

चारित्रवान गुरुदेव की महिमा

(तर्ज-देखो रे आदेश्वर बाबा..)

देखो देखो गुरु गजेन्द्र को, कैसा सयम धारा है ॥टेर॥
केवलचन्दजी के पुत्र कहाये, रूपा मा के दुलारा है।
धन वैभव और कुटुम्ब कबीला, लागा विष सम खारा है ॥१॥
हो इतिहास के तुम निर्माता, तप गुण तुमको प्यारा है।
ज्ञान ध्यान में रमण करत हो, क्रोध मान को मारा है ॥२॥
मुख मण्डल की छटा निराली, हसमुख सौम्य अपारा है।
पीड़ा जावे दर्शन करके, हर्षित भविजन सारा है ॥३॥
भक्त जनो की भीड़ लगी है मस्तक चरणो मे डारा है।
वाणी सुनते व्रत आचरते, करते सफल जमारा है ॥४॥
जीवो और जीने दो सबको, मत्र ही तारण हारा है।
अभयदान सम धर्म जगत मे, नहीं अन्य श्रेयकारा है ॥५॥
समय गोयम मा पमायए, ये आदर्श तिहारा है।
प्रतिपल कीमती वृथा न खोओ, तो उतरो भव पारा है ॥६॥
वैशाखी पूनम है आई, गाये गुण सुखकारा है।
चरण कमल रज, हीरा शुभ के, मन मे हर्ष अपारा है ॥७॥

(३४)

गणि गजेन्द्र गुणगान

(तर्ज - तुमको लाखों प्रणाम)

जग तारक गुरुदेव तुमको लाखो प्रणाम ॥टेर॥
वन्दन है नित्यमेव- तुमको...
मन है स्वच्छ गग की धारा, जीत लिया है आलम सारा,
काटे कर्म नित्यमेव -तुमको...
हस्ती पूज्य है दिव्य सितारे, यथा नामवत् गुण के धारे,
अप्रमाद की टेव -तुमको...
नरतन मुनिपन और है नेता, परम विचक्षण अद्भुत वेत्ता,
अति दुर्लभ है देव -तुमको...

मन अडोल है मेरु जैसा, देखा जग में त्यागी ऐसा,
सेवे सुर नर देव- तुमको...
वीर वाणी घर घर मे फैले, प्रभु भक्ति के नित हो मैले,
शिक्षा है अहरेव -तुमको...
पल पल क्षण व्यर्थ न खोओ, बीज धर्म के घर-घर बोओ,
करो ज्ञान स्वयमेव - तुमको ...
नगर भरतपुर विचरत आया, दो हजार बीस मे गाया,
जुग जुग जीवो गुरुदेव -तुमको...

(३५)

गुरु गुण महिमा

(तर्ज - चांदनी ढल जायेगी)

गुरु हस्ती गुणवान है जैन जगत की शान हैं,
बाल ब्रह्मचारी रे, वन्दना हमारी रे ॥टेर॥
केवलजी के बाल है, रूपा सती के लाल है,
धन्य महतारी रे, वन्दना हमारी रे ॥१ ॥गुरु ॥
देश मारवाड़ मे, शहर पीपाड़ मे,
हुए गुण धारी रे, वन्दना हमारी रे ॥२ ॥गुरु ॥
बाला पन आया है, शोभा गुरुवर पाया है।
महाव्रतधारी रे, वन्दना हमारी रे ॥३ ॥गुरु ॥
गुरुदेव ज्ञानी हैं, अमृत सी वाणी है,
सुनो नर नारी रे, वन्दना हमारी रे ॥५ ॥गुरु ॥
सामायिक व्रत पाल लो, स्वाध्याय का लाभ लो,
गिरा ये उच्चारी रे, वन्दना हमारी रे ॥६ ॥गुरु ॥
'गोविन्द' को तारोगे, पार भी उतारोगे,
आशा यही भारी रे, वन्दना हमारी रे ॥७ ॥गुरु ॥

(३६)

गुणरत्नाकर की गौरवगाथा

(तर्ज - जय बोलो महावीरस्वामी की.)

जय बोलो हस्ती गुरुवर की,

जिन शासन दिव्य दिवाकर की ॥टेर॥
पीपाड़ नगर में जन्म लिया
रूपा - केवल को धन्य किया
बोहरा परिवार प्रभाकर की ॥जय॥
लघु वय मे ही जग छोड़ दिया
मन को सयम से जोड़ लिया
'शोभा' के गुण रत्नाकर की ॥जय॥
आगम का गहरा ज्ञान किया
विद्वानो को बहुमान दिया
शीतलता थी सुर तरुवर की ॥जय॥
सामायिक लो स्वाध्याय करो
जीवन मे दिव्य प्रकाश भरो
जन-जन मे प्रेरणा पूज्यवर की ॥जय॥
घर-घर मे गुणगाथा होती
अर्पित है श्रद्धा के मोती
मुनि "गौतम" करुणा सागर की ॥जय॥

(३७)

तेरी वन्दना करे

(दिनाक २१ ४ ९१ को आचार्य भगवन्त के शरीर को वैकुण्ठी (माडी) मे बरन्डे मे रखते समय गाया गया गीत)

माँ रूपा के लाल तेरी वन्दना करे
केवल कुल की शान तेरी वदना करे ॥टेर॥

दुख का मारा आया कोई सुख उसे मिला,
लाया झोली खाली जो भी भरके वह चला,
ध्यान मग्न ज्ञान बाँटा, साधना करें ॥१ ॥वन्दना करे ॥
प्रभुजी अधीन आपके, पावन दयालु दीन,
हुए ज्योत मे मिला के ज्योत सथारा मे लीन,
मोक्ष मे ठण्डी नजर भक्तो पर धरें ॥२ ॥वन्दना करे ॥
पुण्य भाग्यशाली वह नगरी निमाज थी,

प्रभु मे बसे स्वय प्रभु यहाँ तीर्थ लहर थी,
रहे करोड़ो वर्ष नाम, कामना करे ॥३ ॥वन्दना करे ॥
हम अन्त मे झुकाते सिर बिछाके दो नयन,
खुद आये करने नाग, इन्द्रदेव भी नयन,
नित दर्श देना कमल मधुर चाहना करे ॥४ ॥वन्दना करे ॥

(३८)

हस्ती नटवर नागरियो

(तर्ज - चाँदी की दीवार न तोड़ी)

मॉ रूपा री कोख सराई केवल कुल रो टाबरियो।
नर सू नारायण बण कर चाल्यो हस्ती नटवर नागरियो ॥टेर ॥
जन्मे शहर पीपाड़ मे देवी - देव नहलायो हुलरायो,
घर-घर गीत बधाई सुणकर मा रो मनड़ो हुलसायो,
देख नक्षत्र पडित मुस्कायो बालक बण सी सावरियो ॥१ ॥
बाल उम्र वय दस मे बणियो शोभा गुरु रो बावरियो,
गुरु सेवा कर विनय भाव सू बणियो ज्ञान रो सागरियो,
पायो आचार्य पद बीसवे वर्ष बणियो सघ रो ठाकरियो ॥२ ॥
दीर्घकाल मे भारत भू पर ग्राम नगर विचरण करियो,
नगर बैराठ सथारा माही नाग प्रभु ने नमन करियो,
आगम रहस्य रो ज्ञाता बणियो, जीव सुशिव म्हारो सावरियो ॥३ ॥
पाली अन्तिम जन्म दिवस कर आया, नीमाज गुरु मन जचियो,
उत्कृष्ट भाव सथारो लीनो तब आकर प्रभु मे प्रभु बसियो,
धन्य भाग्य निमाज शहर रा, कर गयो म्हारो सावरियो ॥४ ॥
'हीरो' परख आचार्य बणाकर, उपाध्याय पद 'मान' धरियो,
तब 'नाग' देव और 'इन्द्र' देव आ, चरणो मे प्रभु नमन करियो,
'मधुर' थारे चरणो रो चाकर, पार कीजो भव सागरियो ॥५ ॥

(३९)

जय बोलो हस्ती पूज्यवर की

(तर्ज - जयबोलो महावीर स्वामी की)

जय बोलो हस्ती पूज्यवर की,
पूज्य शोभाचन्दजी के पट्टधर की ॥टेर ॥

माता रूपा के नन्दन हैं,
केवलचन्द जी कुल चन्दन हैं।
ब्रह्मचारी बाल यतीश्वर की, जय बोलो ॥१ ॥
बहु सूत्री सूत्र विचारक है,
समभाव के शुद्ध प्रचारक है,
इस परम शात योगीश्वर की, जय बोलो ॥२ ॥
शिष्य सब ही आज्ञाकारी हैं,
विद्वान तेज तप धारी है,
महिमामय जगत हितेश्वर की, जय बोलो ॥३ ॥
स्वाध्याय सघ के सर्जक हो,
जन जन मे ज्ञान गुण वर्धक हो,
जिन शासन धर्म दिवाकर की, जय बोलो ॥४ ॥
'गोविन्द' अरज गुरुवर करता,
श्रद्धा के सुमन अर्पण करता,
विश्वास है आस फले मन की, जय बोलो ॥५ ॥

ज्ञान के निधान हैं

उदीयमान सूर्य तुल्य सौम्य तेज पुज को ।
महान तीन रत्न से खिले हुये निकुज को ॥
विशाल भाल से सदैव जो प्रकाशमान हैं ।
नमो गणी गजेन्द्र जो कि ज्ञान के निधान हैं ॥१ ॥
पवित्र भू पीपाड के प्रदीप्त पूर्ण चन्द्र हैं ।
गजेन्द्र भव्य प्राणियो के प्राण औ मुनीन्द्र हैं ॥
टपक् टपक् टपक् रही , सुधा भरी गिरा सदा ।
सुमत्र मुग्ध हो रहे, गणीन्द्र से सभी मुदा ॥२ ॥
मुखारविन्द ओजपुज इदु सा चकासता ।
सहस्र भानु तुल्य दिव्य तेज है प्रभासता ॥
दयार्द्रभाव मात्र से विनष्ट कष्ट हो रहे ।

गजेन्द्र के सुदर्श से ही, पाप नष्ट हो रहे ॥३॥
सुमेरु सी अडोलता, समुद्र सी अगाधता ।
सुपाद पद्मरेख ही बता रही महानता ॥
अनत है असीम है, गुणानुवाद आपके ।
गजेन्द्र नाम जप से ढहे पहाड़ पाप के ॥४॥
जिनेश धर्मसघ के धुराग्रणी महारथी ।
सुभाग्य से हो सघ को मिले महान सारथी ॥
बढा रहे सुसघ को मुक्ति पथ पै सदा ।
प्रणाम है गजेन्द्र देव कोटि कोटिश मुदा ॥५॥
विभाव से स्वभाव मे रमा रहे विचार को ।
सुब्रह्म की हुताश से जला रहे विकार को ॥
सुज्ञान ध्यान में समस्त, काल को लगा रहे ।
सुज्ञान के प्रकाश से तमान्ध को भगा रहे ॥६॥
प्रभो तवैव नाम से, कठोर कर्म चूर हो ।
पढे तथा स्मरे सदा, समस्त दुख दूर हो ॥
कृपा कटाक्ष से वरे विमुक्ति की वधू वरा ।
गजेन्द्र नाम जाप से सुरालया बने छटा ॥७॥
सुशख नाद पूर पूर शान्तियुक्त क्रान्ति के ।
जगा दिया समग्र राष्ट्र और मसीह शाति के ॥
धरा धरेन्द्र मेरु से महोच्च पूज्य हस्ति भो ।
प्रगाढ नौ प्रकार की सभक्ति से प्रशस्ति हो ॥८॥
'धनजय' गजाग्रसिह पी रहे यशोसुधा ।
गजेन्द्रवर्य हस्ति की सुभक्ति से भावत मुदा ॥
जिनेन्द्र औ गजेन्द्र के प्रति पुनीत आसता ।
मिले हमे हठात् मिटे दुरन्त कर्म दासता ॥९॥

■

चतुर्थ खण्ड

कृतित्व खण्ड

प्रस्तुत [illegible] आचार्यप्रवर की साहित्य-साधना [illegible] से ज्ञात होता है कि आप उत्तम कोटि [illegible] साधक, प्रज्ञाशील, मनीषी, हृदयस्पर्शी प्रवचनकार, मर्मप्रकाशक आगम व्याख्याकार, मौलिक चिन्तक और जैन इतिहास के महान् प्रस्तोता थे।

द्वितीय अध्याय 'काव्य-साधना' में संकलित पदों, भजनों एवं प्रार्थनाओं के रस में निमग्न होने पर यह सहज ही बोध होता है कि आचार्यप्रवर का काव्यपक्ष कितना भावपूर्ण, सुग्राह्य, सरस एवं प्रभावी [illegible] आपने अध्यात्म, सामायिक, स्वाध्याय, देहात्म-बोध, समाज-एकता, कुव्यसन-त्याग, गुरु-भक्ति, [illegible] कर्माराधन आदि विविध विषयों पर [illegible] की रचना कर जन-जन को [illegible] किया है।

[illegible] 'मैं हूँ उस नगरी का भूप', [illegible] ने यह बोध बताया' आदि [illegible] अध्यात्मयोगी की श्रेणी में प्रति[illegible]

आचार्यप्रवर की साहित्य-साधना

(आचार्यप्रवर की कृतियों का परिचय)

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. आगमनिष्ठ चिन्तक एवं उच्च कोटि के साधक सन्त थे। आपके साधनानिष्ठ जीवन में ज्ञान एव क्रिया का अद्भुत समन्वय था। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग' के इस अद्भुत साधक ने समाज मे श्रुतज्ञान के प्रति विशेष जागृति उत्पन्न की। आपका चिन्तन था कि ज्ञान का सार क्रिया है एव क्रिया को जब ज्ञान की आख मिलती है तभी वह तेजस्वी बनती है। श्रुतज्ञान के प्रसार के लिये आपने एक ओर स्वाध्याय सघ की सगठना एव ज्ञान-भण्डारो की स्थापना की प्रेरणा कर ज्ञान के प्रति जन-जागरण की अलख जगाई, तो दूसरी ओर आगम-व्याख्या, आध्यात्मिक व शिक्षा-सस्कारप्रदायी भजनो एव अपने जीवन निर्माणकारी प्रेरक प्रभावक प्रवचनो के माध्यम से माँ भारती के भण्डार को समृद्ध करने मे विशिष्ट योगदान किया।

आप स्थानकवासी परम्परा की जिस रत्नसम्प्रदाय के तेजस्वी आचार्य थे, उसमें रचनाधर्मिता की सुदीर्घ परम्परा रही है। पूज्य श्री कुशलो जी म.सा. के परमाराध्य गुरुवर्य तपोधनी आचार्य श्री भूधरजी म.सा. उच्च कोटि के भक्त कवि थे। 'वे गुरु मेरे उर बसो' प्रभृति उनकी रचनाएँ गागर मे सागर सम भावप्रवण हैं। पूज्य श्री कुशलो जी म.सा. के गुरु भ्राता पूज्य श्री जयमलजी म.सा. उच्च कोटि के साधक रचनाकार थे। यह परम्परा जिन महाविभूति के नाम से प्रसिद्ध है, वे पूज्यपाद आचार्य श्री रत्नचन्दजी म.सा. अत्युच्च कोटि के फक्कड़ कवि थे। उनके द्वारा रचित 'आचार छत्तीसी' आदि अनेक रचनाएँ साधकों का पथ प्रशस्त कर उन्हें सयम के सच्चे स्वरूप व मानव देह धारण के लक्ष्य का भान कराती हैं। उनकी रचनाएँ 'रतनचन्द्र पद मुक्तावली' के नाम से प्रकाशित हो चुकी हैं तो उनके चाचा गुरु पूज्य श्री दुर्गादास जी महाराज की रचनाएँ 'दुर्गादास पदावली' के रूप में प्रकाशित हुई हैं। पूज्य आचार्य श्री रतनचन्दजी महाराज के पट्टधर आचार्य श्री हम्मीरमलजी महाराज के उपदेश व साधनामय व्यक्तित्व से प्रेरित हो प्रज्ञाचक्षु भक्त कविश्रेष्ठ श्री विनयचन्द जी कुम्भट ने 'विनयचन्द चौबीसी' जैसी महास्तुति की रचना की है। पूज्य आचार्य श्री रतनचन्दजी महाराज के सुशिष्य श्री हिम्मतरामजी महाराज, उनकी सुशिष्या महासती श्री जड़ावजी महाराज आदि उच्च कोटि के काव्य रचनाकार हुए हैं। आगे चलकर वादीमर्दन कनीराम जी महाराज ने 'सिद्धान्तसार' जैसे उच्च कोटि के सैद्धान्तिक ग्रन्थ के माध्यम से वैचारिक द्वन्द्व मे फसे कई सन्तों को भी स्थानकवासी परम्परा के मूल सिद्धान्तों मे दृढ किया। श्री सुजानमलजी महाराज की रचनाएँ 'सुजान पद वाटिका' के रूप में सकलित हैं। इसके अतिरिक्त भी परम्परा में अनेक सन्त कवि एव साध्वी कवयित्रिया हुई हैं, जिनकी रचनाएँ भक्त-हृदयो को छू लेती हैं।

युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने उत्कृष्ट सयम-साधना के साथ-साथ श्रुत साधना का गौरव उपस्थित किया। पूज्यप्रवर के लिये साहित्य-रचना प्रचार का नही, वरन् आचार मार्ग को परिपुष्ट करने, ज्ञानातिचार से बचने व भव-दुःख से सतप्त जन-जन तक वीरवाणी को पहुँचाने का माध्यम थी। आपकी रचनाओं में जीवन-निर्माण, सस्कारवपन एव आचार निष्ठा का ही बोध है। आपका लक्ष्य अपने आपको अत्युच्च कोटि के साहित्यसर्जक के रूप

मे प्रतिष्ठित करने का अथवा लोकैषणा का नही, वरन् जिनवाणी के पावन प्रवाह को आर्यधरा के कोने-कोने में पहुचाने का था। पर जब उन्हे प्रतीत हुआ कि आज का साधक आत्मोत्थान का अपना मूल लक्ष्य भूल कर मात्र साहित्य रचना एव अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठापित करने की ओर अग्रसर हो रहा है तो उन्होंने इससे विराम लेने मे भी कोई सकोच नही किया। साधना के पुरोधा इस महापुरुष ने जो कुछ अपनी मितवाणी द्वारा उच्चरित किया, जो कुछ अपनी कलम से आबद्ध किया, वही उच्च कोटि का साहित्य बन गया। ध्यान, साधना एव आत्मिक स्वरूप के चिन्तन से जो नवनीत प्राप्त हुआ, वह आपकी काव्य रचना के माध्यम से प्रकट हुआ। प्राच्य सस्कृति के प्रति गौरव एव श्रद्धा के धनी आचार्यप्रवर ने इतिहास का आलोड़न कर इतिहास की अनेक विस्मृत कड़ियो को ढूढा, अनेक विसगतियो का समाधान कर इतिहास का मौलिक स्वरूप प्रस्तुत कर सघ को अतीत के गौरव का भान कराते हुए अभिनव भविष्य की सरचना का आह्वान किया। बहुमुखी प्रतिभापुञ्ज आचार्यदेव की रचनाएँ मुख्यत पाँच रूपों में विभक्त की जा सकती हैं – १ आगमिक व्याख्या साहित्य २ प्रवचन साहित्य ३ इतिहास ४ काव्य-कथा ५ अप्रकाशित एव अनुपलब्ध रचनाएँ।

(अ) आगमिक व्याख्या-साहित्य

आगम-मनीषी आचार्यप्रवर का आत्म-जीवन तो आगम-दीप से आलोकित था ही, किन्तु वे उसका प्रकाश जन-जन तक पहुँचाने हेतु भी सन्नद्ध रहे। आचार्य श्री की दृष्टि आगम-ज्ञान को शुद्ध एव सुगम रूप मे सम्प्रेषित करने की रही। यही कारण है कि आचार्यप्रवर ने पूर्ण तन्मयता से आगमो की प्रतियो का सशोधन भी किया। उन्हे सस्कृत छाया, हिन्दी पद्यानुवाद, अन्वयपूर्वक शब्दार्थ एव भावार्थ से समन्वित किया। पद्यानुवाद का प्रयोग आचार्यप्रवर की मौलिक दृष्टि का परिचायक है।

सूत्र के प्रकाशन कार्य को साध्वाचार की दृष्टि से सदोष मानकर भी आचार्यप्रवर ने तीन उद्देश्यो से इस कार्य मे सहभागिता स्वीकार की। नन्दीसूत्र की प्रस्तावना मे स्वय आचार्य श्री ने इस सबध मे लिखा है - "पुस्तक मुद्रण के कार्य मे स्थानान्तर से ग्रन्थ-सग्रह , सम्मत्यर्थ पत्र-प्रेषण, प्रूफ-सशोधन व सम्मति प्रदान करना आदि कार्य करने या कराने पड़ते हैं। इस बात को जानते हुए भी मैंने जो आगम-सेवा के लिये इस अशत सदोष कार्य को अपवाद रूप से किया, इसका उद्देश्य निम्न प्रकार है–

१ साधुमार्गीय समाज मे विशिष्टतर साहित्य का निर्माण हो।

२ मूल आगमो के अन्वेषणपूर्ण शुद्ध सस्करण की पूर्ति हो और समाज को अन्य विद्वान् मुनिवर भी इस दिशा मे आगे लावे।

३ सूत्रार्थ का पाठ पढ़कर जनता ज्ञानातिचार से बचे।

इन तीनो मे से यदि एक भी उद्देश्य पूर्ण हुआ तो मैं अपने दोषों का प्रायश्चित्त पूर्ण हुआ समझूँगा।"

आचार्यप्रवर कृत यह उल्लेख उनकी आगम-निष्ठा को उजागर करता है। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि सन् १९८० के दशक मे आचार्य श्री ने लेखन-प्रकाशन के कार्य से विराम ले लिया था। आचार्यप्रवर द्वारा की गयी आगमिक व्याख्याएँ निम्नाङ्कित हैं-

(१) दशवैकालिक सूत्र (अवचूरि एवं भाषा टीका सहित)

श्रमणाचार की दृष्टि से आर्य शय्यम्भव द्वारा रचित दशवैकालिक सूत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आगम है। आचार्य श्री का जब सवत् १९९६ (सन् १९३९ ई.) में सातारा (महाराष्ट्र) मे चातुर्मास था तब 'दशवैकालिक सूत्र' का प्रकाशन सशोधित मूलपाठ, सस्कृत छाया, अवचूरि एव आचार्य श्री द्वारा लिखित 'सौभाग्य चन्द्रिका' नामक हिन्दी भाषा टीका के साथ हुआ। कार्य अतीव कठिन एव श्रमापेक्षित था। सूत्र का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन स्व. श्रेष्ठिचन्दन जैनागम ग्रन्थमाला के अन्तर्गत मोतीलाल जी मुथा के द्वारा शास्त्रोद्धार योजना मे कराया गया। ग्रन्थ-प्रकाशन के समय आचार्य श्री मात्र २९ वर्ष के थे और आगम-व्याख्या के क्षेत्र में उनका यह प्रथम कार्य था। भण्डारकर ओरियण्टल इस्टीट्यूट पूना में उपलब्ध अवचूरि सहित प्रति (सवत् १५१५) को आधार बनाकर अवचूरि की अन्य तीन प्रतियो से मिलान कर पाठ सशोधन का कार्य श्रमसाध्य था। मूल प्राकृत पाठ की संस्कृत छाया एव हिन्दी अनुवाद (सौभाग्य चन्द्रिका भाषा टीका) कर आचार्यप्रवर ने आगम-साहित्य के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान किया। उस समय इस प्रकार के प्रयत्न की बहुत माँग थी। तत्कालीन प्रमुख सन्तो एव विद्वानों की सम्मतियाँ और सुझाव भी मगाये गए जो सूत्र के प्रारम्भ मे प्रकाशित हैं। ग्रन्थ का प्रकाशन पत्राकार शैली मे हुआ है, जिसे जिल्द बन्ध भी कराया गया है।

आचार्यप्रवर ने इसकी भाषाटीका अपने पूज्य गुरुदेव श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के नाम पर लिखते हुए गुरु की कृपा को महत्त्व देकर विनम्रता का परिचय दिया है। जैसा कि भाषा टीका के अन्त में आचार्यप्रवर का कथन है—

है जानना सूत्रार्थ का गुरु की कृपा पर टिक रहा।
हठ से स्वय जो पढ़ लिया, वह तत्त्व से वञ्चित रहा॥
यह बात सच्ची मानकर, गुरुनाम से टीका रची।
गुरु ने सिखाई थी तथा जो बात मति से थी जची ॥१॥
इस बात को गाथानुगत, न्यूनाधिकों को छोड़कर।
मैंने लिखा है गुरु कथित, निज संस्मरण से जोड़कर॥
स्मृति ही हुई हो क्षीण या विपरीत तो चाहूँ यही।
विद्वान् मुनिवर सोचकर, समझें वही जो हो सही ॥२॥

जो कुछ पाया वह गुरु कृपा का ही प्रसाद है आपकी यह अन्तर्हृदय की भावना उपर्युक्त कथन से प्रकट होती है।

ग्रन्थ के अन्त में प्रत्येक अध्ययन से चुने हुए अर्धमागधी शब्दो की सस्कृत छाया, लिङ्ग एव उनका हिन्दी अर्थ दिया गया है, जिससे इसका महत्त्व बढ गया है। अन्त मे शुद्धिपत्र भी जोड़ा गया है।

दशवैकालिक के इस सस्करण पर तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज सा एव उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी महाराज सा ने लुधियाना (पजाब) से २३ मई १९४० को इस प्रकार भाव प्रेषित किये थे —

"दशवैकालिक सूत्र का इतना अधिक सुन्दर एव सफल संस्करण जैन ससार को देने के उपलक्ष्य मे आचार्य श्री हस्तीमलजी को हार्दिक धन्यवाद। आधुनिक सम्पादन पद्धति के सभी समुचित साधनो का उपयोग करके वास्तव में स्थानकवासी जैन समाज में प्रकाशन की एक नई दिशा स्थापित की गयी है। सौभाग्य चन्द्रिका टीका की भी अपनी एक खास विशेषता है। सरस, सरल और सुबोध भाषा के द्वारा सक्षेप में मूल का वास्तविक आशय प्रकट कर देना ही विशिष्ट लेखन कला है और इसमें आचार्य श्री की सफलता प्रशंसनीय है।"

दशवैकालिक सूत्र का यह सस्करण आज भी विद्वानों के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ का कार्य करता है। दशवैकालिक सूत्र महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयो मे अर्धमागधी के पाठ्यग्रन्थ के रूप में स्वीकृत था, अत इसका महाराष्ट्री अनुवाद ग्रन्थ के सम्पादक श्री अमोलक चन्दजी सुरपुरिया के द्वारा किया गया।

(२) नन्दीसूत्र

नन्दीसूत्र की गणना मूल सूत्रो में होती है। इसमें पचविध ज्ञानों का सुन्दर निरूपण हुआ है। आचार्यप्रवर को यह सूत्र अत्यन्त प्रिय था। वे प्रतिदिन रात्रि-शयन से पूर्व इसका पाठ करते थे।

'श्रीमन्नन्दीसूत्रम्' नाम से इस कृति का प्रकाशन सातारा से विक्रम सवत् १९९८ (सन् १९४२ ई.) में तब हुआ जब आचार्यप्रवर मात्र ३१ वर्ष के थे । नन्दीसूत्र की टीका से आचार्यप्रवर को तत्कालीन आचार्यों एव विद्वानों में महती प्रतिष्ठा मिली। प्रकाशक थे राय बहादुर श्री मोतीलाल जी मूथा। नन्दीसूत्र का यह सस्करण विविध दृष्टियों से अद्वितीय है। इसमें प्राकृत मूल के साथ सस्कृत छाया एवं शब्दानुलक्ष्यी हिन्दी अनुवाद दिया गया है। जहाँ विवेचन की आवश्यकता है वहाँ विस्तृत एव विशद विवेचन भी किया गया है। अनुवाद-लेखन मे आचार्य मलयगिरि एव हरिभद्रसूरि की वृत्तियों को आधार बनाया गया है, साथ ही अनेक उपलब्ध सस्करणों का सूक्ष्म अनुशीलन किया गया है। आवश्यक होने पर विद्वान् मुनियों से शका-समाधान भी किया गया है। आचार्यप्रवर ने जब नन्दी सूत्र का अनुवाद लिखा तब नन्दीसूत्र के कतिपय प्रकाशन उपलब्ध थे, परन्तु उनमे मूलपाठ के सशोधन का पर्याप्त प्रयत्न नही हुआ था। आचार्यप्रवर ने यह कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया।

नन्दीसूत्र के इस सस्करण की विद्वत्तापूर्ण भूमिका का लेखन उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने किया। आचार्य श्री ने नन्दीसूत्र की व्यापक तुलनात्मक प्रस्तावना लिखी। सूत्र के प्रकाशन का प्रबन्धन प दु खमोचन जी झा ने किया जो आचार्यप्रवर के शिक्षा-गुरु थे और आचार्यप्रवर की विद्वत्ता, प्रतिभा एव तेजस्विता से अभिभूत थे।

नन्दीसूत्र का यह सस्करण विद्वानो द्वारा बहुत समादृत हुआ। इसके पाँच परिशिष्ट हैं। प्रथम परिशिष्ट पारिभाषिक एव विशिष्ट शब्दो की व्याख्या पर है। द्वितीय परिशिष्ट मे समवायाग सूत्र मे वर्णित द्वादशागो का परिचय है। तृतीय परिशिष्ट मे नन्दीसूत्र के साथ अन्य शास्त्रों के पाठान्तरो की सूची है। चतुर्थ परिशिष्ट श्वेताम्बर एव दिगम्बर सम्प्रदायो की दृष्टि से ज्ञान का निरूपण करता है तथा अन्तिम परिशिष्ट मे नन्दीसूत्र मे प्रयुक्त शब्दो का कोश दिया गया है।

(३) प्रश्नव्याकरण सूत्र

नन्दीसूत्र के प्रकाशन के आठ वर्ष पश्चात् दिसम्बर १९५० ई मे प्रश्नव्याकरण सूत्र सस्कृत छाया, अन्वयार्थ, भाषा टीका (भावार्थ) एव टिप्पणियो के साथ पाली (मारवाड़) से प्रकाशित हुआ । इसका प्रकाशन सुश्रावक श्री हस्तीमलजी सुराणा पाली ने कराया।

प्रश्नव्याकरण सूत्र का यह सस्करण दो खण्डो मे विभक्त है। प्रथम खण्ड में पाँच आस्रवो का वर्णन है तो द्वितीय खण्ड मे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप पाँच सवरों का निरूपण है। परिशिष्ट में शब्द कोष, विशिष्ट स्थलो के टिप्पण, पाठान्तर सूची और कथा भाग दिया गया है। यह सूत्र-ग्रथ आचार्यप्रवर के विद्वत्तापूर्ण १७ पृष्ठो के प्राक्कथन से अलकृत है।

पाठान्तरों या पाठ-भेदों की समस्या प्रश्नव्याकरण मे नन्दीसूत्र से भी अधिक है। इसका अनुभव स्वय आचार्य श्री ने किया है। उन्होंने पाठ-भेद की समस्या पर प्राक्कथन मे उल्लेख करते हुए लिखा है-"आगम मदिर (पालीताणा) जैसी प्रामाणिक प्रति जो शिलापट्ट और ताम्रपत्र पर अकित हो चुकी है, वह भी अशुद्धि से दूषित देखी गई है।" आचार्यप्रवर ने पाठ-सशोधन हेतु अनेक प्रतियो का तुलनात्मक उपयोग किया है, जिनमे प्रमुख थी - अभयदेव सूरि कृत टीका, हस्तलिखित टब्बा , ज्ञान विमलसूरि कृत टीका एव आगम मदिर पालीताणा से प्रकाशित मूल पाठ। सशोधित-पाठ देने के बाद आचार्यप्रवर ने पाठान्तर सूची भी दी है, जिसमे अन्य प्रतियो मे उपलब्ध पाठ-भेद का उल्लेख किया है।

प्रश्नव्याकरण के जो पाठ-भेद अधिक विचारणीय थे , ऐसे १७ पाठो की एक तालिका बनाकर समाधान हेतु विशिष्ट विद्वानो या सस्थाओ को भेजी गई, जिनमे प्रमुख हैं-१ व्यवस्थापक आगम मदिर, पालीताणा २ पुण्यविजय जी , जैसलमेर ३ भैरोदान जी सेठिया, बीकानेर, ४ जिनागम प्रकाशन समिति, ब्यावर एव ५ उपाध्याय श्री अमर मुनि जी, ब्यावर। तालिका की एक प्रति 'सम्यग्दर्शन' में प्रकाशनार्थ सैलाना भेजी गई, किन्तु इनमे से तीन की ओर से पहुँच के अतिरिक्त कोई उत्तर नही मिला। सम्यग्दर्शन पत्रिका के प्रथम वर्ष के ग्यारहवे अक मे यह तालिका प्रकाशित हुई , किन्तु किसी की ओर से कोई टिप्पणी नही आई।

इस प्रकार साधन-हीन एव सहयोग रहित अवस्था मे भी आचार्यप्रवर ने अथक श्रम एव निष्ठा के साथ श्रुतसेवा की भावना से प्रश्न-व्याकरण सूत्र का विशिष्ट सशोधित सस्करण प्रस्तुत कर आगम-जिज्ञासुओ का मार्ग प्रशस्त किया।

(४) बृहत्कल्पसूत्र

श्री बृहत्कल्पसूत्र पर आचार्यप्रवर ने एक अज्ञात सस्कृत टीका का सशोधन एव सम्पादन किया है। प्राक्कथन एव बृहत्कल्प परिचय के साथ यह पाँच परिशिष्टो से अलकृत है। इस सूत्र का प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पुरातन कार्यालय त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर द्वारा कब कराया गया , इसका ग्रथ पर कही निर्देश नही है, किन्तु आन्तरिक विवरण से यह सुनिश्चित है कि इस सूत्र का प्रकाशन प्रश्नव्याकरण की व्याख्या के पूर्व अर्थात् सन् १९५० ई के पूर्व हो चुका था।

आचार्यप्रवर हस्ती की बृहत्कल्प की यह सस्कृत-टीका अजमेर के सुश्रावक श्री सौभाग्यमलजी ढड्ढा के ज्ञान-भण्डार से प्राप्त हुई जो सरक्षण के अभाव मे बड़ी जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे थी। आचार्यप्रवर के दक्षिण प्रवास के दौरान इसके सशोधन व सम्पादन का कार्य सम्पन्न हुआ। बृहत्कल्प के ये सस्कृत टीकाकार कौन थे, यह ज्ञात नही , किन्तु यह सकेत अवश्य मिलता है कि श्री सौभाग्यसागरसूरि ने इस सुबोधा टीका को बृहट्टीका से उद्धृत किया था। उसी सुबोधा टीका का सपादन आचार्य श्री ने किया।

बृहत्कल्प सूत्र छेद सूत्र है, जिसमें साधु-साध्वी की समाचारी के कल्प का वर्णन है। आचार्यप्रवर ने सम्पूर्ण कल्पसूत्र की विषय-वस्तु को हिन्दी पाठको के लिए सक्षेप में 'बृहत्कल्प परिचय' शीर्षक से दिया है जो बहुत उपयोगी एव सारगर्भित है। अत मे पाँच परिशिष्ट हैं। प्रथम परिशिष्ट मे अकारादि के क्रम से सूत्र के शब्दो का ३४ पृष्ठो में हिन्दी अर्थ दिया गया है। द्वितीय परिशिष्ट में पाठ-भेद का निर्देश है। तृतीय परिशिष्ट बृहत्कल्पसूत्र के विभिन्न प्रतियों के परिचय से सम्बद्ध है । चतुर्थ परिशिष्ट मे वृत्ति में आए विशेष नामों का उल्लेख है , जो

शोधार्थियो के लिए उपादेय है। पचम परिशिष्ट मे कुछ विशेष शब्दो पर सस्कृत भाषा मे विस्तृत टिप्पण दिया गया है।

यह सस्कृत टीका अनेक दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है। इसकी भाषा सरल, सुबोध एव प्रसाद गुण से समन्वित है, इसमे सूत्रोद्दिष्ट, तथ्यो का विशद विवेचन है। सस्कृत अध्येताओ के लिये यह टीका आज भी महत्त्वपूर्ण है। आचार्यप्रवर द्वारा सपादित यह सस्कृत टीका शुद्धता, विशदता एव सक्षिप्तता की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व रखती है। इसका सपादन आचार्यप्रवर के सस्कृत ज्ञान एव शास्त्रज्ञान की क्षमता को पुष्ट करता है।

(५) उत्तराध्ययन सूत्र

उत्तराध्ययन सूत्र जैन आगम-साहित्य का प्रतिनिधि सूत्र है। यह भगवान महावीर की अतिम देशना के रूप मे प्रख्यात है। इसकी गणना चार मूल सूत्रो मे होती है। छत्तीस अध्ययनो मे विभक्त यह आगम द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग एव धर्मकथानुयोग से समन्वित होने के कारण अत्यन्त समृद्ध एव सुग्राह्य है। वीतराग वाणी का रसास्वादन करने के लिये यह उत्तम आगम है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म सा द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र का यह ऐसा सस्करण उपलब्ध कराया गया, जिसमे मूल गाथाओ के साथ सस्कृत छाया, अन्वयार्थ भावार्थ, एव हिन्दी पद्यानुवाद भी प्राप्त है। सम्पूर्ण उत्तराध्ययन सूत्र तीन भागो मे विभक्त है, जो सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित है।

प्रथम भाग– इसमे एक से दस अध्ययनो का सकलन है। इस भाग मे जीवन-निर्माण के प्रचुर सूत्र उपलब्ध है। विनयशील बनने, परीषहो पर विजय प्राप्त करने, धर्म श्रवण कर उसे आचरण मे लाने, अप्रमत्त बनने, समाधिमरण अपनाने, क्षणिक विषय-सुखो मे अनासक्त रहने और समय का सदुपयोग करने आदि के सूत्र सहज उपलब्ध है। इस भाग मे प्रत्येक अध्ययन से सबधित कथाएँ भी दी गयी है। सस्कृत छाया, हिन्दी पद्यानुवाद, अन्वयार्थ-भावार्थ आदि इस ग्रथ को समझने और उसके मर्म तक पहुँचने मे सहायक है। प्रत्येक अध्ययन के प्रारम्भ मे उस अध्ययन का सार दिया गया है, जिससे पाठक पाठ्य विषय के प्रति पहले से ही जिज्ञासु एव जागरूक हो जाता है।

द्वितीय भाग –ग्यारह से बाईस अध्ययनो का विवेचन इस भाग मे हुआ है। इसमे बहुश्रुत की विशेषताएँ बताते हुये शिक्षा-प्राप्ति के बाधक एव साधक कारणो की चर्चा की गई है। हरिकेशीय अध्ययन मे चाडाल जाति मे उत्पन्न होने वाले हरिकेशबल मुनि के साधक-जीवन का प्रेरक वर्णन हुआ है। चित्त सम्भूतीय अध्ययन मे चित्त एव सम्भूत नामक भ्राताओ के पूर्व जन्मो का वर्णन करते हुये भोग की अपेक्षा त्याग का महत्त्व स्थापित किया गया है। इषुकार अध्ययन मे भृगु पुरोहित और उनके पुत्रो का वैराग्यपरक मार्मिक सवाद है।

पन्द्रहवे अध्ययन मे सद्भिक्षु का, सोलहवे अध्ययन मे ब्रह्मचर्य समाधि स्थान का, सतरहवें अध्ययन मे पाप श्रमण का, अठारहवे अध्ययन मे अच्छे श्रमण का, उन्नीसवे अध्ययन मे मृगापुत्र के वैराग्य का, बीसवे अध्ययन मे अनाथी मुनि एव राजा श्रेणिक के रोचक एव प्रेरक सवाद का, इक्कीसवे अध्ययन मे समुद्रपाल के गृह-त्याग और श्रमण जीवन का तथा बाईसवे अध्ययन मे रथनेमि की साधना का वर्णन किया गया है। आचार्यप्रवर के सान्निध्य मे तैयार हुए इस सस्करण से उत्तराध्ययन की विषयवस्तु एकदम स्पष्ट हो जाती है।

तृतीय भाग –प्रथम एव द्वितीय भाग की शैली के अनुसार ही तृतीय भाग में मूल गाथा की सस्कृत छाया, हिन्दी पद्यानुवाद, अन्वयार्थ, भावार्थ एव विवेचन दिया गया है। इसमे तेबीसवे केशीगौतमीय अध्ययन से लेकर

अंतिम छत्तीसवे अध्ययन जीवाजीव विभक्ति तक बहुत ही सुन्दर ढग से वर्णन हुआ है। चौबीसवे अध्ययन मे पाच समिति व तीन गुप्ति नामक अष्टप्रवचनमाता का, पच्चीसवें अध्ययन मे जय घोष और विजय घोष का सवाद, छब्बीसवे अध्ययन मे साधु-समाचारी का, सत्ताईसवे अध्ययन में दुर्विनीत शिष्य का, अट्ठाईसवे अध्ययन मे मोक्षमार्ग का तथा उनतीसवें अध्ययन मे अध्यात्म विषयक ७३ प्रश्नोत्तरो का वर्णन हुआ है, जो इस सूत्र के महत्त्व एव उपयोग को प्रतिपादित करता है। तीसवे अध्ययन मे आभ्यन्तर एव बाह्य तपो का, इकतीसवे अध्ययन में चारित्र का और बत्तीसवे अध्ययन में प्रमाद और अप्रमाद का अथवा वीतरागता का प्रतिपादन हुआ है। तैतीसवे अध्ययन मे अष्टविध कर्मो का, चौतीसवे अध्ययन में षड्विध लेश्याओ का और पैतीसवे अध्ययन मे अणगार मार्ग का तथा छत्तीसवे अध्ययन में जीवो और अजीवों का निरूपण हुआ है।

उत्तराध्ययन सूत्र के इस तृतीय भाग का प्रथम सस्करण १९८९ ई. मे प्रकाशित हुआ था।

(६) उत्तराध्ययन सूत्र - पद्यानुवाद

आचार्य श्री की यह भावना रही कि उत्तराध्ययन सूत्र का हार्द प्रत्येक व्यक्ति सरलतापूर्वक ग्रहण कर सके। इसीलिये उन्होने अपने सान्निध्य मे उत्तराध्ययन सूत्र का हिन्दी मे पद्यानुवाद तैयार कराया। इस कार्य में प शशिकातजी झा का विशेष सहयोग मिला। पद्यानुवाद सरल, सरस एव सुबोध है। कोई भी साधारण हिन्दी का ज्ञाता इस पद्यानुवाद के माध्यम से समस्त उत्तराध्ययन सूत्र की विषयवस्तु को अल्प समय मे ही जान सकता है। इस पुस्तक का द्वितीय सस्करण सन् १९९६ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित हुआ है।

(७) दशवैकालिक सूत्र (पद्यानुवाद सहित)

आधुनिक युग मे श्रावको एव श्रमणो को दशवैकालिक सूत्र का हार्द शीघ्र एव सरलता से ज्ञात हो सके, एतदर्थ आचार्य प्रवर ने इसके मूल पाठ को हिन्दी पद्यानुवाद , प्रत्येक शब्द के अन्वयपूर्वक अर्थ एव भावार्थ के साथ तैयार कराया। प्रत्येक अध्ययन के अन्त मे आवश्यक अशो या शब्दो पर विस्तृत टिप्पणियाँ भी दी गई। इस प्रकार यह सस्करण सामान्य एव विशिष्ट सभी पाठको के लिये उपयोगी बन गया है। हिन्दी पद्यानुवाद का एक प्रयोजन आम लोगो मे आगम के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी रहा है। दूसरी बात यह है कि इससे आगम का भाव सुगम हो जाता है। हिन्दी पद्यानुवाद आचार्यप्रवर के मार्गदर्शन मे प शशिकान्त जी झा द्वारा किया गया है। दशवैकालिक सूत्र के इस प्रथम सस्करण का प्रकाशन मई १९८३ ई मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर द्वारा किया गया। दशवैकालिक सूत्र का यह सस्करण बहुत लोकप्रिय हुआ, जिसकी निरन्तर मॉग रहती है एव आवृत्तियाँ निकलती रहती हैं। उत्तराध्ययन सूत्र की भाति दशवैकालिक सूत्र भी एक महत्त्वपूर्ण आगम है, जो लगभग सभी साधु-साध्वियो के द्वारा कठस्थ किया जाता है तथा श्रमण-जीवन के लिए इसका अध्ययन आवश्यक माना जाता है। दशवैकालिक सूत्र की गणना चार मूल सूत्रो मे होती है। दस अध्ययनो मे विभक्त यह आगम साध्वाचार की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसकी रचना आचार्य शय्यम्भव के द्वारा उनके अल्पवय पुत्र मनक को सक्षेप मे श्रमणाचार से परिचित्त कराने के लिए की गयी थी। इसमे षट्कायिक जीवो की रक्षा, पचमहाव्रतो के निरतिचार पालन, आहार-गवेषणा, विनय-समाधि, तप-समाधि आदि का विस्तृत प्रतिपादन हुआ है।

(८) अंतगडदसासुत्त

अन्तगडदसा सूत्र का वाचन पर्युषण पर्व के अवसर पर प्रतिदिन किया जाता है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल के माध्यम से अतगडदसाओ के दो सस्करण निकल चुके हैं। प्रथम सस्करण सन् १९६५ ई. मे तथा दूसरा सस्करण सन् १९७५ ई. मे प्रकाशित हुआ। प्रथम सस्करण मे प्राकृत मूल एव हिन्दी अर्थ दिया गया था तथा अन्त मे एक परिशिष्ट था, जिसमे विशिष्ट शब्दो का सरल हिन्दी अर्थ दिया गया था। द्वितीय संस्करण अधिक श्रम एव विशेषताओ के साथ प्रकाशित हुआ। इस सस्करण में कालम पद्धति अपना कर पहले प्राकृत मूल, फिर उसकी सस्कृत छाया तथा उसके सामने के पृष्ठ पर शब्दानुलक्षी हिन्दी अर्थ (छाया)तथा अतिम कालम में हिंदी भावार्थ दिया गया है। इन चारो को एक साथ पाकर नितान्त मद बुद्धि प्राणी को भी आगम ज्ञान प्राप्त हो सकता है। यह द्वितीय सस्करण विशेषत पर्युषण मे वाचन की सुविधा हेतु उपयोगी है। इसके द्वारा सस्कृत का यत् किञ्चित् ज्ञान रखने वाला पाठक भी मूल आगम का हार्द सहज रूप से समझ सकता है। अन्त मे प्रमुख शब्दो का विवेचनयुक्त परिशिष्ट भी इस ग्रन्थ की शोभा है।

आकार मे वृहत् होने के कारण पर्युषण पर्व की दृष्टि से फिर एक नया सस्करण तैयार हुआ जिसमे बाये पृष्ठ पर प्राकृत पाठ एव दाहिने पृष्ठ पर हिन्दी अर्थ दिया गया है। इसका तीन बार प्रकाशन हो चुका है। सपादन डॉ धर्मचन्द जैन ने किया है।

(आ) प्रवचन-साहित्य

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज सा 'गजेन्द्राचार्य' के नाम से विख्यात थे। इसलिए उनके द्वारा फरमाए गए अधिकाश प्रवचन 'गजेन्द्र मुक्तावली' एवं 'गजेन्द्र व्याख्यानमाला' की शृखला मे प्रकाशित हुए। कुछ प्रवचन 'आध्यात्मिक-साधना', 'आध्यात्मिक-आलोक', 'प्रार्थना-प्रवचन', 'पर्युषण-साधना' आदि पुस्तको के रूप मे भी प्रकाशित है।

उल्लेखनीय है कि आचार्यप्रवर के कतिपय व्याख्यान ही पुस्तक का रूप ग्रहण कर सके है। बहुत से प्रवचन अभी भी अप्रकाशित है तथा अधिकाश प्रवचनो का आशुलेखन भी नही हो सका था। वे प्रवचन तत्कालीन श्रोताओ को ही कर्णगोचर हो सके थे।

आचार्य प्रवर के प्रवचन आगमाधारित होते हुए भी सहज एव हृदयस्पर्शी है।

(१) गजेन्द्र मुक्तावली मुक्ता - भाग -१

आचार्य श्री के प्रवचनो की सम्भवत यह प्रथम पुस्तक है। इसका प्रकाशन सन् १९५० मे श्री इन्दरचन्द जी जबरचन्द जी हीरावत के द्वारा किया गया था। इसमे कुल ९ प्रवचन सकलित हैं—(१) सर्व - धर्म सहिष्णुता (२) दिल की दिवाली (३) सत्य महाव्रत (४) देश की दुर्दशा और उससे मुक्ति (५) धर्म और उसकी उपयोगिता (६) मनोजय के सरल उपाय (७) आत्मतत्त्व मीमासा (८) कारण विचार (९) जैन साधु की आधार शिला। आचार्य श्री के ये प्रवचन सारगर्भित रूप मे विषय का विवेचन करने के साथ पाठक को आध्यात्मिक जीवन-निर्माण हेतु प्रेरित करते है। गम्भीर चिन्तन-मनन-निदिध्यासन एव आचरण की कसौटी पर कसे हुए तथा लोक-हित के भावो से भरे हुए ये प्रवचन हृदय मे अदम्य उत्साह और स्फूर्ति का सचार करते हैं। आचार्य श्री सर्वधर्म-समभाव की अपेक्षा सर्वधर्म

सहिष्णुता को उपयुक्त मानते हैं। आचार्य श्री फरमाते हैं—"आज सार्वजनिक मतभेद और झगड़ों का कारण असहिष्णुता है। विचार भेद एव मतभेद होना एक बात है, पर उसके लिए द्वेष करना दूसरी बात है। आज से पहले भी जैन, वैष्णव, मुसलमान आदि अनेक मत तथा वल्लभ, शाक्त , शैव, रामानुज आदि विविध सम्प्रदाये थी, परन्तु उनमें विचार भेद होने पर भी सहिष्णुता थी। इसी से उनका जीवन शान्ति और आराम से व्यतीत होता था। गाधी जी ने अपने अनेक व्रतो में एक सर्वधर्म समभाव व्रत भी माना है। उसकी जगह सर्वधर्म सहिष्णुता को मान लिया जाए तो उनके मत से हमारी एकवाक्यता हो सकती है।" सत्य महाव्रत नामक प्रवचन मे आचार्य श्री फरमाते है कि सत्यवादियो की देव भी सहायता करते हैं। इसलिए सत्य दूसरा भगवान है। सत्यव्रत के पालन में भले ही कठिन साधना करनी पड़े और तत्काल कठोर दण्ड भी सहन करना पड़े फिर भी असत्य के रास्ते नही लगना चाहिए। आचार्य श्री ने स्थानाग मे वर्णित १० प्रकार के सत्यो का विवेचन करने के साथ इस प्रवचन मे १० प्रकार के वर्जनीय सत्य भी बताए हैं तथा सत्यव्रत के ५ दोषो का निवारण करने पर भी बल दिया है। उस समय भारतवर्ष मे अकाल का बोलबाला था। अत आचार्य श्री ने देश की दुर्दशा के सम्बन्ध मे प्रवचन करते हुए कर्त्तव्य पालन और पारस्परिक सहयोग की प्रेरणा की है। समाज मे व्याप्त विषमता पर भी आचार्य श्री ने ध्यान केन्द्रित किया है। आचार्य श्री फरमाते है कि अपने चारो ओर किसी भी प्राणी को दु खी नही होने देना, उनकी देखभाल करना और कोई सकट मे हो तो तत्काल उसकी सहायता करना यही सामान्य धर्म या पूजा है। धर्म के सम्बन्ध मे आचार्य श्री का मन्तव्य है कि शुद्ध आत्मस्वरूप की तरफ ले जाने वाले पवित्र चिन्तन, मनन और आचरण ही वास्तविक धर्म है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, निर्लोभता आदि उसके प्रमुख अङ्ग हैं। 'मनोजय के सरल उपाय' नामक प्रवचन में आचार्य श्री ने विरक्ति भाव को मुख्यता दी है। आपका फरमाना है कि जितना विरक्ति का अभ्यास बढ़ता जायेगा उतना ही मन का क्षेत्र सकुचित होता जायेगा और अन्त मे दृश्य जगत के भौतिक पदार्थ मात्र से विरक्त होकर यह जीव आत्म-रमण में लीन हो जायेगा, यही पूर्ण मनोजय है। भेदज्ञान से बाह्य पदार्थों को नश्वर और पर समझकर उनसे विरक्त रहना चाहिए, क्योंकि आत्म-स्वरूप ही अनुराग करने योग्य है। 'आत्म तत्त्वमीमासा' प्रवचन मे प्रश्नोत्तर शैली को अपनाया गया है। इसमे प्रतिपादित किया गया है कि आत्मा ही कर्म का कर्त्ता और भोक्ता है। यदि इस सिद्धान्त को नही माना जाए तो सर्वत्र अव्यवस्था हो जायेगी। आत्मा नित्य द्रव्य भी है, किन्तु वह नया शरीर धारण करने और जीर्ण शरीर को छोड़ने रूप पर्याय बदलता रहता है। आत्मा ज्ञान, क्षमा, सरलता, आदि अनन्त गुणो का पुञ्ज है। 'कारण विचार' नामक प्रवचन में विविध कारणो की चर्चा की गई है तथा उपादान और निमित्त दोनो प्रकार के कारणो का महत्त्व स्थापित किया गया है। 'जैन साधु की आधार शिला' नामक प्रवचन मे आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियो की वन्दनीयता के लिए आधारभूत पॉच नियमो को आवश्यक बताया है— (१) निन्दा त्याग (२) विकथा परित्याग (३) विभूषा और स्त्री संसर्ग-त्याग (४) उपशम भाव (५) असग्रह वृत्ति।

इस प्रकार आचार्य श्री गजेन्द्र के प्रवचनो की यह अद्‌भुत पुस्तक है जिसमे एक ही स्थान पर विविध विषयो का निरूपण करते हुए पाठक का सम्यक् मार्गदर्शन किया गया है। प्रवचनो का सम्पादन प शशिकान्त जी झा के द्वारा किया गया है।

(२) गजेन्द्र मुक्तावली भाग-२

आचार्य श्री के प्रवचनों की यह दूसरी पुस्तक 'सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल' द्वारा गुप्त द्रव्य सहायको के सहयोग से प्रकाशित हुई है। इसमें कुल ७ प्रवचन उपलब्ध हैं। (१) भौतिकवाद और धर्म (२) दु ख का मूल लोभ

(३) स्वभाववाद एव पुरुषार्थ (४) समय का महत्त्व (५) परम्परा और सुधारवाद (६) आत्मा ही अपना तारक है (७) अहिंसा पर तात्त्विक विचार। भौतिकवाद और धर्म के सबध मे विवेचन करते हुए आचार्य श्री भौतिकवाद को जन संघर्ष, वैर और द्वेष की भावना का कारण बताते है तो धर्म को आपसी स्नेह और शान्ति का साधन बताते है। आचार्य श्री कहते है कि धर्म की विलक्षण शक्ति के आगे भौतिक बल सदा से हार खाता आया है। आज धर्म के मुकाबले मे भौतिक तत्त्व को ऊचा बताया जा रहा है, लेकिन याद रखना चाहिए कि धर्म को भूलने पर मानवता की नीव डावाडोल हो उठेगी तथा स्वार्थलिप्सा सीमा का अतिक्रमण कर जाएगी। दु:ख का मूल लोभ को बताते हुए आचार्य श्री ने कहा है कि लोभ का उदय होने पर शान्ति, दया, करुणा और स्नेह बादल मे चाँद की तरह छिप जाते है। ससार की सारी सम्पदा और विपुल वैभव प्राप्त करके भी लोभी को सतोष नही होता। ससार मे आज तक जितने लोमहर्षक युद्ध या सहार हुए है उसका प्रमुख कारण लोभ ही है। लोभ से हृदय अशात, मन चचल, व्यवहार व व्यापार कृष्ण, भावना अशुभ, उद्देश्य मलिन, दृष्टि विषम, विचार कुत्सित और लक्ष्य अशुद्ध बन जाते हैं। लोभी मनुष्य बन्धु, मित्र और प्रिय कुटुम्ब की रत्ती भर भी परवाह नही रखता और जैसे-तैसे अर्थसग्रह मे प्रवृत्त होता है। लोभ के कारण ही आज की अदालतो मे भीड़ जमी रहती है। 'स्वभाववाद एव पुरुषार्थ' प्रवचन दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। पच समवाय मे काल, स्वभाव, नियति, कर्म और पुरुषार्थ की गणना होती है। स्वभाववादियों की मान्यता है कि ससार मे सुकृत और दुष्कृत दिखाई देते हैं, वे स्वभाव से ही होते हैं इनमे किसी के श्रम या पुरुषार्थ की आवश्यकता नही होती । सिह का हिसक स्वभाव जन्म से ही है। मयूरादि पक्षियो के पख स्वभाव से ही रग बिरगे है। यह स्वभाववाद एकान्त रूप से सही नही है। स्वभाव को ही कर्ता-धर्ता नही माना जा सकता। आत्मा का पुरुषार्थ इसमें मुख्य कारण है। इसी प्रकार काल, नियति और कर्म को भी कार्य का एकान्त कारण मानना सत्य से दूर है। पुरुषार्थ एव अन्य कारणो के सहयोग से ही कार्य सम्पन्न हुआ करते है। 'समय का महत्त्व' नामक प्रवचन मे अप्रमत्त होकर समय का उपयोग करने की प्रेरणा की गई है। आचार्य श्री फरमाते है - "अधिकतर लोगो का इस बात पर ध्यान नही जाता कि जीवन सग्राम मे समय का क्या महत्त्व है। यह जानते हुए भी कि मृत्यु अटल और निश्चित है, लोग इस ओर से बेखबर और बेफ्रिक बने रहते है। आवश्यक से आवश्यक काम को भी कल पर टालने की आदत सी बन गई है और यही प्रमाद मानव को उन्नत और गौरवशील बनने से रोकता ही नही, बल्कि भयकर पतन के गर्त मे गिराकर सर्वनाश कर देता है।" 'परम्परा और सुधारवाद' विषयक प्रवचन मे आचार्य श्री इस बात की ओर ध्यान केन्द्रित करते है कि परम्परावादी व्यक्ति अपनी रूढ़ि से चिपका रहना चाहता है और सुधारवादी प्राचीनता के नाम से ही चौंकता है। जबकि सत्य, शान्ति और लोक कल्याण के लिए दोनो का उचित समन्वय होना आवश्यक है। पुरानी होने से हर बात ऑख मूद कर मानने लायक नही होती और न नवीन होने से सब बाते बुरी होती है। सज्जनो को चाहिए कि उन दोनो मे परीक्षा कर एक को ग्रहण करे तथा दूसरे का परित्याग करे।

आत्मा ही स्वय अपना तारक है, इस सबध मे आचार्य श्री ने जैन धर्म की मान्यता को आगमिक उद्धरणो और कथानको के माध्यम से समझाते हुए कहा है कि हमारी दु ख-मुक्ति दूसरो के हाथ में नही है। सामान्य देव की कौन कहे, असख्य देवी-देवो का स्वामी इन्द्र भी हमे दु ख मुक्त नही कर सकता। हमारे भीतर ही वह शक्ति है जिससे हमारी मुक्ति हो सकती है। अहिसा पर तात्त्विक विचार करते हुए आचार्य श्री ने फरमाया है कि अहिंसा केवल परहित का ही नही स्वहित और आत्म-सन्तोष का भी प्रमुख कारण है। विधि और निषेध रूप से अहिंसा के दो पहलू है - जैसे ऐसा कोई काम मत करो जिससे जीवो की हिंसा हो - यह अहिंसा का निषेध रूप है और यतना

से उठो, बैठो, चलो, खाओ, पीओ, यह अहिंसा का विधि रूप है। पाँच समिति और तीन गुप्ति इसी विधि-निषेध को समझाने वाले शास्त्रीय सकेत है। आचार्य श्री ने अहिंसा के सम्बन्ध में उठने वाली शकाओ और अहिंसा के गलत तरीको का भी सकेत किया है। अहिंसा की साधना मे प्रवेश हेतु आचार्य श्री ने सयम, समता और तपस्या को प्रवेश द्वार बताया है। अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन करते हुए उन्होने बौद्धो द्वारा मान्य अहिंसा से जैन अहिसा का अन्तर बताते हुए कहा कि भगवान महावीर जहाँ षट्काय के जीव मात्र की हिंसा का निषेध करते हैं वहाँ बुद्ध केवल गतिशील, जगम प्राणियो की हिंसा का ही निषेध करते हैं। दूसरी बात यह है कि जैन धर्म में कृत, कारित और अनुमोदित रूप तीनो क्रियाओ का अहिंसा मे निषेध किया गया है, किन्तु बौद्धपरम्परा मे केवल अपने हाथ से नही मारना ही अहिंसा मान लिया गया है।

गजेन्द्र मुक्तावली के इस भाग का सम्पादन भी शशिकान्त जी झा के द्वारा किया गया है तथा प्राप्ति स्थान जिनवाणी कार्यालय, त्रिपोलिया , जोधपुर रहा है। पुस्तक पर प्रकाशनवर्ष का उल्लेख नही है।

(३) आध्यात्मिक साधना

अध्यात्मयोगी आचार्य श्री के प्रवचन आगमाधारित, अत्यन्त सहज, प्रेरणाप्रद, रोचक एव प्रभावशाली होते है। उनके प्रवचनो की एक पुस्तक 'आध्यात्मिक साधना' के नाम से प्रकाशित हुई थी।

नवम्बर एव दिसम्बर १९६२ मे आचार्यप्रवर के द्वारा उज्जैन एव रतलाम मे दिए गए प्रेरणाप्रद प्रवचनो मे से २० का सकलन इस पुस्तक मे हुआ है। १० प्रवचन उज्जैन के एव १० ही रतलाम प्रवास के है। आचार्य श्री के ये प्रवचन साधक, चिन्तक, स्वाध्यायी और सामान्य पाठक सभी के लिए मार्गदर्शक है। आचार्य श्री की प्रवचन शैली रोचक एव प्रभावशाली है। वे किसी शास्त्रीय विषय को प्रसिद्ध कथानक या प्रसङ्ग से इस प्रकार आगे बढाते हैं कि उससे मूल आगमिक भाव तो स्पष्ट होता ही है, किन्तु वर्तमान जीवन की समस्याओ एव उलझनो का भी समाधान प्राप्त होता है। उज्जैन मे दिए गए प्रवचनो मे साधना और श्रावक, भगवान पार्श्वनाथ, अहिंसा, कला एव ज्ञान, श्रावक की साधना, आहार-शुद्धि, जिनवाणी-ज्ञानगगा, आत्म-साधना आदि विषयो का सुन्दर विवेचन हुआ है। इसके अतिरिक्त निमित्त एव उपादान जैसे दार्शनिक विषय भी विवेचित हुए है। रतलाम के प्रवचनो मे स्वाध्याय को जीवन-निर्माण की शक्ति बताते हुए सच्चा ज्ञानानन्दी बनने की प्रेरणा की गई है। ज्ञान को आचार्य श्री ने मुक्ति का सोपान बताते हुए उसके आचरण पर भी बल दिया है। प्रवचनो के अन्य विषय इस प्रकार है - श्रावक और व्रत-साधना, समवसरण के नियम, साहित्य और ऐक्य भावना, द्रव्य मीमासा, सच्ची उपासना और पुण्य का सदुपयोग। आचार्य श्री ने इन प्रवचनो मे आनन्द और शिवानन्दा के प्रसङ्गो की चर्चा करते हुये श्रोताओ के लिये तात्त्विक बोध को सरल बना दिया है।

आचार्य श्री 'जीवन निर्माण की शक्ति स्वाध्याय' नामक प्रवचन मे फरमाते हैं- "जैन धर्म चैतन्य का आदर करने वाला है, भौतिक तत्त्व को वह केवल साधन रूप ही मानता है, आदरणीय तत्त्व तो चैतन्य को ही समझना चाहिए। पर चैतन्य मूर्ति विद्वान् मुनिराजो के सत्सग का सहारा समाज को क्वचित् और अल्पकाल का ही मिल सकता है। अत मुनिराजो के पीछे भी आप सबको अपनी साधना का स्वरूप ढीला नही पड़े ऐसा सोचना चाहिए। आनन्द यदि भगवान महावीर के चले जाने के बाद अपनी साधना का स्वरूप ढीला कर देता, तो क्या वह अवधिज्ञान पा सकता था? समाज के जिन लोगो ने ऊची-ऊंची डिग्रियाँ प्राप्त की है वे भी अगर स्वाध्याय का

सहारा नही लेगे तो क्या जीवन का निर्माण कर पाएगे? गहराई से विचारने पर यह अच्छी तरह मालूम होगा कि स्वाध्याय के सिवाय कोई अन्य सहारा नहीं है, जिससे जीवन को ऊचा उठाया जा सके। क्या गृहस्थ और क्या साधु, स्वाध्याय सबके लिए आवश्यक है।"

आचार्य श्री ने फरमाया है कि जैन धर्म को पाकर भी यदि रागद्वेष को शान्त नही कर सके तो कहाँ और कौनसी योनि में करोगे? एक प्रवचन 'कला और ज्ञान' मे आचार्य श्री फरमाते हैं - "खेद है कि आजकल हमारे भाई और बहिन १२ व्रतों के स्वरूप तो दूर की बात, उनका नाम तक भी नही जानते, क्योंकि हमारे समाज में धर्मशिक्षा का प्राय अभाव है। जब व्रतो के नाम और स्वरूप का ज्ञान ही नही हो तो फिर भला उनका धारण करना और पालन करना तो कल्पना की वस्तु हो जाती है।" "आहार-शुद्धि विचार-शुद्धि का मूल है, विचार-शुद्धि होने पर ही आचार शुद्धि सम्भव है। विचार शुद्धि के बिना आचार-शुद्धि बनावटी है, जो टिकाऊ नही होती। यदि आप लोक-लाज से या राजा के भय से या गुरुजनो की फटकार के भय से आचार शुद्ध रखते हैं, उसमे आपके मनोयोग का समर्थन नही है तो ऐसी आचार शुद्धि बालू के ढेर पर बने महल के समान है, जो न जाने कब ढह जाए।"

'निमित्त और उपादान' नामक प्रवचन मे आपने फरमाया है- "शरीर और सद्गुरु बाह्य साधन हैं, धृति, श्रद्धा आदि अन्तर के साधन हैं, बाह्य-आभ्यन्तर निमित्तो के साथ आत्मा के उपादान की अनुकूलता से सिद्धि प्राप्त होती है। केवल निमित्त और केवल उपादान से कार्य की सिद्धि नही हो सकती।"

आचार्य श्री के इन प्रवचनो का सम्पादन पण्डित शशिकान्त जी झा के द्वारा किया गया है तथा प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर के द्वारा सन् १९६५ में किया गया था।

(४) आध्यात्मिक आलोक

अध्यात्मयोगी आचार्य श्री का प्रवचन-साहित्य जीवन-निर्माण हेतु अनमोल निधि है। 'आध्यात्मिक आलोक' में मुख्यत आचार्यप्रवर द्वारा सन् १९६२ मे सैलाना चातुर्मास मे फरमाये गए प्रवचनो का सकलन है। प्रारम्भ मे ये प्रवचन चार खण्डो मे प्रकाशित हुए थे, किन्तु अब ये सब एक ही पुस्तक के अन्तर्गत दो खण्डो मे विभक्त है। प्रथम खण्ड मे ४५ प्रवचन है तथा द्वितीय खण्ड मे ३९ प्रवचन हैं, दोनो खण्डो के कुल मिलाकर ८४ प्रवचन हैं। सभी प्रवचन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है तथा पाठक को सत् तत्त्व का बोध कराते हुए उसे सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते है। भाषा एव शैली भी बहुत सधी हुई है। प्रत्येक प्रवचन नया सदेश लेकर उपस्थित होता है। साधना, दु ख-मुक्ति, अहिंसा, सदाचार, परिग्रह-परिमाण, विचार, ज्ञान का प्रकाश, भोगोपभोग नियन्त्रण, प्रमादजय, साधना के बाधक कारण, श्रद्धा के दोष, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अममत्व, शुभ-अशुभ, विकार-विजय, कर्मादान, सघ-महिमा, सामायिक, पौषधव्रत, निमित्त-उपादान, मानसिक सन्तुलन, स्वाध्याय आदि विभिन्न विषयो पर आचार्य श्री के प्रवचनो में उनके साधनाशील चिन्तन का नवनीत उपलब्ध है। प्रवचन का एक अश उद्धृत है-

"परिग्रह का दूसरा नाम 'दौलत' है, जिसका अर्थ है -'दो-लत' अर्थात् दो बुरी आदत। इन दो लतो मे पहली लत है —हित की बात न सुनना, दूसरी लत है- गुणी माननीय नेक सलाहकार और वन्दनीय व्यक्तियों को न देखना, न मानना। समष्टि रूप से यह कहा जा सकता है कि परिग्रह ज्ञानचक्षु पर पर्दा डाल देता है। जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अपना सही मार्ग निर्धारित नही कर पाता ।"-पृष्ठ १७

"जीवन मे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनो साधनाओ का सामजस्य आवश्यक है। जैसे पक्षी अपने दोनों

पखों के कुशल रहते ही ऊपर उड़ सकता एव स्वैर विहार कर सकता है, वैसे ही मानव जीवन के लिए उपर्युक्त दोनों प्रकार की साधना अपेक्षित है। फिर भी जीवन को ऊचा उठाने के लिए आध्यात्मिक साधना को प्रधान एव शारीरिक साधना को गौण रूप देना सुसगत है।"

'आध्यात्मिक आलोक' मे आनन्द श्रावक को माध्यम बनाकर श्रावक जीवन के लिए उपयोगी एव प्रेरक सन्देश दिया गया है। प्रसगत अनेक प्रेरक कथानकों का समावेश प्रवचनों की सरलता, रोचकता एव सुगमता में सहायक सिद्ध हुआ है।

(५) प्रार्थना प्रवचन

जैन दर्शन मे यह माना जाता है कि सभी जीव अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करते हैं तथा अरिहत, सिद्ध आदि देव भी किसी के कर्मों मे परिवर्तन नही कर सकते। अतएव प्रश्न उठता है कि तीर्थंकरों की प्रार्थना क्यो की जाए ? आचार्य श्री ने इस प्रकार के प्रश्नो का समाधान बहुत ही सुन्दर रीति से 'प्रार्थना प्रवचन' पुस्तक मे प्रस्तुत किया है। आचार्य श्री ने फरमाया है - "वीतराग भगवान के भजन से भक्त को उसी प्रकार लाभ मिलता है जिस प्रकार सूर्य की किरणो के सेवन से और वायु के सेवन से रोगी को लाभ होता है।" "वीतराग होने के कारण वे इस कामना को लेकर नही चलते कि अमुक प्रार्थी मेरी प्रार्थना कर रहा है, अतएव उस पर दया दृष्टि की जाए और उसे कोई बख्शीस दी जाए और जो प्रार्थना नही करता उसे दण्ड दिया जाए। ऐसा होने पर भी यह असदिग्ध है कि जो भक्त शान्तचित्त से वीतराग की प्रार्थना करते है, स्मरण करते हैं उन्हे जीवन मे अपूर्व लाभ की प्राप्ति होती है। वीतराग के विशुद्ध आत्म-स्वरूप का चिन्तन भक्त के अन्तःकरण मे समाधिभाव उत्पन्न करता है और उस समाधि भाव से आत्मा को अलौकिक शान्ति की प्राप्ति होती है। भक्त के हृदय में बहता हुआ विशुद्ध भक्ति का निर्झर उसके कलुष को धो देता है और आत्मा निष्कलुष बन जाती है।"

प्रार्थना वीतराग परमात्मा की ही क्यो की जाती है ? इसका मुख्य हेतु वीतरागता प्राप्त करना ही है। आत्मा के लिए परमात्मा सजातीय और जड़ पदार्थ विजातीय हैं। सजातीय द्रव्य के साथ रगड़ होने पर ज्योति प्रकट होती है और विजातीय के साथ रगड़ होने से ज्योति घटती है। चेतन का चेतन के साथ सम्बन्ध होना सजातीय रगड़ है और जड़ के साथ सम्बन्ध होना विजातीय रगड़ है। सजातीय मे भी अपनी चेतना की अपेक्षा अधिक विकसित चेतना के साथ रगड़ होगी तो विकास होगा और यदि कम विकसित या मुर्झायी हुई चेतना के साथ रगड़ होगी तो हमारा आत्मिक विकास नही होगा। अतएव हमारी प्रार्थना का ध्येय वे हैं जिन्होने अज्ञान का आवरण छिन्न भिन्न कर दिया है, मोह के तमस को हटा दिया है और जो वीतरागता व सर्वज्ञता की स्थिति तक पहुँच चुके हैं।

आचार्य श्री प्रार्थना का फल सक्षेप मे इस प्रकार प्रतिपादित करते है -'जैसे मथनी घुमाने का उद्देश्य नवनीत प्राप्त करना है उसी प्रकार प्रार्थना का उद्देश्य परमात्म-भाव रूप मक्खन को प्राप्त करना है।'

सम्पूर्ण पुस्तक प्रार्थना के विवेचन पर ही केन्द्रित है । इसमे कुल १६ प्रवचन हैं जिनमे 'प्रार्थना केन्द्र, प्रार्थना वर्गीकरण, तारतम्य , प्रार्थना कैसी हो, प्रार्थना का लक्ष्य, एकनिष्ठा, प्रभुप्रीति, प्रार्थना-प्रभाव, प्रार्थनीय कौन, निर्बल के बल राम, अन्तकरण के आईने को माजो, गुण-प्रार्थना, प्रार्थना का अद्भुत आकर्षण, आदर्श माता की आराधना, मन मेरु की अचलता, परदा दूर करो, जीवन का मोड़ इधर से उधर' आदि सम्मिलित हैं।

आचार्य श्री ने ये प्रवचन श्री अमरचन्द जी म.सा की सेवा में रहते हुए जयपुर मे प्रार्थना के समय फरमाए

थे।

(6) Concept of Prayer

प्रार्थना प्रवचन नामक पुस्तक का यह अंग्रेजी अनुवाद है। अनुवाद का कार्य आर सी भण्डारी और हिम्मत सिंह सरूपरिया द्वारा किया गया है। पुस्तक का प्राक्-कथन प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ डी एस. कोठारी ने लिखा है एव प्रकाशन सन् १९७४ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा किया गया है।

(७) गजेन्द्र व्याख्यानमाला - पहला भाग

गजेन्द्र व्याख्यानमाला के अब तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से सात भाग प्रकाशित हुए हैं। प्रथम भाग में सन् १९७५ के ब्यावर-चातुर्मास के समय पर्युषण-पर्वाधिराज के अवसर पर आचार्य प्रवर द्वारा फरमाये गये आठ दिनो के व्याख्यान सकलित है। प्रवचन सभी रोचक एव तात्त्विक बोध कराने वाले होने के साथ सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते हैं। दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, भक्ति, स्वाध्याय, दान और अहिंसा विषयो का सरल ढग से विवेचन हुआ है। तप का विवेचन करते हुए आपने फरमाया -

"तप की परीक्षा क्या ? तन तो मुर्झाया सा लगे, पर मन हर्षित हो उठे। शरीर से ऐसा लगे कि शरीर तप रहा है, पर मन हर्ष से प्रफुल्लित हो उठा है। यह कब होगा ? जब कि साधक चाहेगा कि मुझे भूख प्यास सहनी है, सर्दी गर्मी सहनी है, अमुक वस्तु का त्याग करना है, क्योकि मुझे इस तरह के अभ्यास के द्वारा अपनी आत्मा की अनत शक्ति को यथाशक्ति चमकाना है।"

हिंसा का विवेचन करते हुये फरमाया - "वस्तुत किसी प्राणी की हिसा करने वाला व्यक्ति न केवल दूसरे प्राणी की ही हिंसा करता है, अपितु वह उस हिसापूर्ण कृत्य द्वारा पहले अपनी स्वय की, अपने ज्ञान-दर्शन-चारित्र आदि आत्म गुणो की हिंसा करता है।"

स्वाध्याय को समाज धर्म बनाने पर बल देते हुये आचार्यप्रवर ने कहा - "आज जो घर-घर मे लड़ाई-झगड़े, मन मुटाव आदि विकृतियो के विविध रूप देखने को मिलते है, इन सारी विकृतियो का एक ही इलाज है—स्वाध्याय।"

(८) गजेन्द्र व्याख्यान माला - दूसरा भाग

सन् १९७३ के जयपुर चातुर्मास मे फरमाये गये प्रवचनो मे प्रारम्भिक तेरह दिनो के प्रवचन इसमे प्रकाशित हैं। प्रवचनो के विषय है- आत्मपरिष्कार, सन्त शरण, महान सन्त आचार्य श्री शोभा चन्द्र जी म सा., मोक्ष-मार्ग, सम्यक् ज्ञान, अध्यात्म-विज्ञान, साधना के ज्ञातव्य सूत्र, सिद्धि के सोपान, काल की लीला और रक्षणीय की रक्षा (रक्षा-बन्धन)। मोक्ष मार्ग पर दो और सम्यग्ज्ञान पर तीन प्रवचन सकलित है।

सभी प्रवचन जीवो को सम्यग्दिशा प्रदान करते है तथा स्वय सोचने के लिए तत्पर कर पाठक का पथ प्रदर्शन करते है। 'आत्म परिष्कार' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये प्रवचन का कुछ अश यहाँ उद्धृत है - "यदि अपनी आत्मशक्ति को विकसित करना है तो उस पर पड़ा हुआ जो मलबा है उसे साफ करना होगा। इस मलबे को हटाने का कार्य भी हमे स्वय को ही करना होगा। सहारे के रूप मे, मार्गदर्शक के रूप मे, शास्त्रो और सद्गुरुओ का सहयोग लिया जाता है। सद्गुरु और शास्त्र हमे मलबा कैसे दूर किया जाय, इसका उपाय बता सकते हैं। लेकिन वह

कचरा तो हमें स्वय को ही हटाना पड़ेगा।"

स्वाध्याय के लिये प्रेरणा करते हुए कहा - "सबसे पहले विचारों मे ज्ञान बल प्रवाहित होना चाहिये। ज्ञान बल प्राप्त होता है सत्सग से और स्वाध्याय से। आदमी को खाने के लिये समय मिलता है, कमाई के लिये अथवा आराम के लिये समय मिलता है, व्यवहार के लिये समय मिलता है, फिर स्वाध्याय के लिये समय क्यो नहीं मिलता। आज के दिमाग को ज्ञान चाहिये लेकिन तर्क के साथ, योग्यता के साथ मिलाया हुआ ज्ञान चाहिए। यह बिना स्वाध्याय के नही मिल सकता।"

व्रत के सम्बन्ध में आचार्यप्रवर ने फरमाया - "व्रत में समय की कीमत नही, उसमे कीमत है चित्त की। चित्त का मतलब है मन। मन कितना ऊँचा है, कितना विवेकशील है और कितना निर्मल है, मन की निर्मलता और मनोवृत्तियो की उच्चता के अनुपात के अनुसार ही क्रिया का महत्त्व बढ़ता है।"

(९) गजेन्द्र व्याख्यान माला - तीसरा भाग

यह भाग बालोतरा मे सन् १९७६ मे हुए चातुर्मास मे पर्युषण के अवसर पर प्रदत्त सात प्रवचनो का सकलन है। सवत्सरी से सम्बद्ध व्याख्यान को इसमे सम्मिलित नही किया गया, क्योंकि इस विषय पर सभी प्रमुख तथ्यो के साथ एक प्रवचन गजेन्द्र व्याख्यान माला के प्रथम भाग मे उपलब्ध है। अध्यात्म-साधना से परिपूत एव आत्मानुभूति से उद्भूत पतित पावनी पीयूष वाक् आचार्य श्री के प्रवचनो की विशेषता है । निराश एव निष्कर्मण्य बने मानव की धमनियो मे सम्यक् पुरुषार्थ का वेग उत्पन्न करने मे आचार्यप्रवर की वाणी सक्षम दिखाई देती है। गजेन्द्र व्याख्यान माला के इस तीसरे भाग मे सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप और दान का हृदयग्राही सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। व्याख्यानो मे सहजता भी है और पैनापन भी।

अपने एक प्रवचन मे आचार्य श्री ने फरमाया है कि सच्चा जैन लक्ष्मी का दास नही, अपितु लक्ष्मी का पति होता है। धन कदापि तारने वाला नही, केवल धर्म ही तारने वाला है।

अपने अन्य व्याख्यान मे आचार्य श्री कहते है कि अमीर व्यक्ति दान आसानी से दे सकता है, किन्तु सयम करना उसके लिए कठिन होता है। इसलिए दान तो ऊचा है गरीब का और त्याग, तप, सयम करना ऊंचा है अमीर का। "तपस्या की सफलता मे जिस प्रकार संयम सबल सहायक है उसी प्रकार प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य और स्वाध्याय ये चार चौकीदार जिस साधक के पास होते है उसकी तपस्या की सफलता असदिग्ध है।"

सम्पादन गजसिंहजी राठौड़ और प्रेमराजजी बोगावत ने किया है तथा प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर से किया गया है। इसका तीसरा सस्करण सद्य प्रकाशित हुआ है।

(१०) गजेन्द्र व्याख्यान माला - चतुर्थ भाग

सन् १९७७ के अजमेर चातुर्मास मे आचार्यप्रवर द्वारा फरमायी गयी अमृत-वाणी रूपी प्रवचन इस भाग मे सकलित हैं। सपादन पडित शशिकान्त जी झा ने किया है। प्रवचनों मे धर्म-साधना, साधना से सिद्धि, त्याग का महत्त्व, समय कम और मजिल दूर, आचार का महत्त्व, धर्म से उभय लोक कल्याण, आत्मोथान, वीतराग वचन का प्रभाव, वाणी की शक्ति, विश्वभूति समता के पथ पर, प्रगति का शत्रु प्रमाद, अशाति का मूल क्रोध और लोभ, आत्मरोग और ज्ञान गुटिका, कर्म दुःख का मूल, कषाय-विजय ही आत्म-विजय, असमाधि के मूल कारण से बचें,

कर्म प्रबल है' आदि शीर्षक उपलब्ध है।

'त्याग का महत्त्व' शीर्षक से प्रकाशित प्रवचन मे आपने फरमाया - "आनन्द भौतिक वस्तुओं के राग मे नही, त्याग में है, यह बात जब घट मे उतर जायेगी, मन मे समा जायेगी तब क्या कभी आपस मे किसी से झगड़ोगे ? तब क्या कभी बाप-बेटे मे लड़ाई होगी ? पड़ौसी-पड़ौसी से कलह होगे ? यदि यह राग का विष दिल और दिमाग से उतर गया तो दुनिया भर के सारे झगड़े कलह, अशाति और द्वेष न जाने कहाँ विलीन हो जायेंगे। जड़ मूल से कट जायेगे।"

धर्म के सम्बन्ध मे आचार्यप्रवर ने फरमाया - "धर्म के दो पाये हैं— एक आर्जव भाव और दूसरा मार्दव भाव, जिन्हें विनय और सरलता कहा गया है। विनय और सरलता जहाँ है उस कुटुम्ब मे, गाव मे, नगर मे, राष्ट्र और जाति मे धर्म टिक सकता है और जहाँ इनका अभाव है वहाँ धर्म नही रह सकता।"

'समय कम और मजिल दूर' नामक प्रवचन मे आचार्य प्रवर ने फरमाया - "मन, वाणी और काया के साधन जो प्राणी को मिले हैं उनकी प्रवृत्ति निरन्तर चलती रहती है, परन्तु इनकी प्रवृत्ति से कर्म काटने के बजाय कर्म बाधे जा रहे है। प्रश्न होता है कि इससे बचा क्यो नही जाता। तो इसका समाधान है कि अन्तर मे कर्म काटने का या मजिल पाने का सही दर्द नही जागा। जब तक प्रबल विरतिभाव जागृत नही हो तब तक कुछ नही होगा, क्योकि दर्द के बिना क्रिया होकर भी प्रमाद और कषाय के कारण असावधानी से बन्ध काटने के बदले बन्ध बढ़ाने वाली होगी।"

आचार्य प्रवर के समस्त प्रवचन जीवन को उन्नत बनाने वाले है।

(११) गजेन्द्र व्याख्यान माला -पाचवाँ भाग

इसका प्रथम प्रकाशन 'गजेन्द्र व्याख्यान मुक्ता' के नाम से इन्दौर के सेठ श्री सुगनमल जी भण्डारी के द्वारा अपने सुपुत्र स्व श्री गजेन्द्र सिह जी भण्डारी की पावन स्मृति मे जून १९८० में कराया गया था। गजेन्द्र व्याख्यान माला के इस भाग मे सन् १९७८ मे हुए इन्दौर चातुर्मास के २१ प्रवचनो का सकलन है। प्रवचनो के विषय स्वाध्याय, ज्ञान और भक्ति, आत्म जागरण, सद्आचार और सद्विचार, सयम, तप, बन्धन का मूल, आहार शुद्धि एव आचार-शुद्धि, दोष-परिमार्जन, सत-समागम, विवेकपूर्ण-प्रवृत्ति, परिग्रह-निवृत्ति, वास्तविक त्याग, आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक शिक्षण, शास्त्रधारी सैनिक आदि है। आचार्य श्री ने प्रवचनो मे इस बात को उभारा है कि आज लोगो का जीवन बाहर से टीप टाप दिखाई देता है, किन्तु भीतर से उनका जीवन सूखा-सूना है जिसे आध्यात्मिक रस और स्वाध्याय जैसे मार्गदर्शक की आवश्यकता है। आचार्य श्री ने इस बात को स्पष्ट किया है कि जीवन निर्वाह की शिक्षा पाया हुआ युवक मशीन के पुर्जे तो ठीक कर सकता है, किन्तु जीवननिर्माणकारी आध्यात्मिक शिक्षण के बिना वह अपना बिगाड़ा हुआ दिमाग ठीक नही कर सकता।

समाज-सुधार के लिए एव व्यक्ति-सुधार के लिए आध्यात्मिक ज्ञान एक अमोघ साधन है। एक प्रवचन मे आचार्य श्री कहते हैं कि अब ज्यादा भाषण देने का युग नही है, समय काम करने का है, युग बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। कम बोलने और ज्यादा करने से ही समाज आगे बढ़ सकता है। समाज को जागृत कर आगे बढ़ाने की ओर आचार्य श्री ने सकेत करते हुए कहा है कि आज अलख जगाने वालो की आवश्यकता है। आत्मशक्ति के सबध मे आचार्य श्री बताते है कि आत्मा की शक्ति मन की शक्ति से कई गुनी अधिक होती है और मन की

शक्ति विद्युत् की शक्ति से लाखो करोड़ो गुणा अधिक है । सभी व्याख्यान अत्यन्त प्रेरणास्पद एव सच्चे जीवन के मार्गदर्शक हैं।

(१२) गजेन्द्र व्याख्यानमाला - छठा भाग

सन् १९७९ मे आचार्य श्री के द्वारा जलगाँव चातुर्मास मे प्रदत्त प्रवचनो मे से इसमे २६ प्रवचन उपलब्ध है। इन प्रवचनो मे सस्कार निर्माण, आचार-शुद्धि और स्वाध्यायशीलता पर विशेष बल दिया गया है। कतिपय प्रवचन दशवैकालिक सूत्र, जम्बू स्वामी की त्याग-गाथा जैसे विषयो पर केन्द्रित हैं तो अधिकाश प्रवचनो मे दोष-परिमार्जन, ज्ञान और क्रिया , परिग्रह-निवारण, स्वाध्याय, धर्म-साधना, त्याग, धर्मशिक्षा, ममत्व विजय, बन्ध-मुक्ति की साधना जैसे विष्यो की चर्चा है। कुछ प्रवचन गजेन्द्र व्याख्यान माला के पाँचवे भाग और इस भाग मे समान भी हैं। प्रवचनो का सम्पादन डॉ हरिराम जी आचार्य, जयपुर ने किया है। सभी प्रवचन प्रवाहमय एव अन्तस् की गहराई से उद्‌भूत और स्वाभाविक हैं। सत का अनुभव भी इन प्रवचनो मे प्रकट हुआ है तो व्यक्ति और समाज की स्थिति के प्रति पीड़ा भी अभिव्यक्त हुई है। आचार्य श्री ने सत्सग और स्वाध्याय को जीवन का दीपक बताया है तथा बालक, युवा, महिला, पुरुष आदि सभी के योग्य चिन्तन प्रदान किया है। 'जहाँ ममत्व नही, वहाँ दु ख नही', नामक प्रवचन मे स्पष्ट कहा है कि ममता के विसर्जन से ही दु ख मिट सकता है। वे कहते हैं जहाँ ममत्व है वहाँ दु ख है। यदि ममत्व नही है तो हमे उस वस्तु का विनाश होने पर दु ख भी नही होता है। साधना के लिए सुकोमलता का त्याग आवश्यक है। महा-आरम्भ से पैदा होने वाले चमकीले और कोमल वस्त्र पहनना तथा आरामतलबी बनना नही छोड़ेंगे तो आरम्भ और परिग्रह कम नही हो सकेगे।

आचार्य श्री ने आहार-शुद्धि पर बल देते हुए कहा है कि आज ताजा खाने की एव घर मे खाने की रीति बन्द हो रही है, आज के लोग बाहर की चाट और भोजन मे अधिक रुचि लेने लगे हैं। यह आहार बिगड़ने का एक रूप है। आहार अशुद्ध होने पर विचार और आचार शुद्ध रहना कैसे सम्भव है। प्राचीन काल मे "उन्ना खाओ, उन्डा सोओ, पाव कोस मैदान मे जाओ" कहावत प्रचलित थी। एक अन्य प्रवचन मे ममत्व-विजय का उपाय बताते हुए आचार्य श्री ने कहा है —"ज्ञानी कहते हैं कि मानव दूसरो को देने के एक मिनट बाद ही उस वस्तु को परायी समझता है, तो देते से पहले ही क्यो नही समझता कि यह वस्तु मेरी नही है।" सभी प्रवचन अपने आप मे महत्त्वपूर्ण है।

(१३) गजेन्द्र व्याख्यान माला - सातवाँ भाग

पर्युषण, ज्ञान, अज्ञान और विज्ञान, चारित्र, तप, सयम, दान, दया, सामायिक, साधर्मी वात्सल्य, दु खमुक्ति आदि अनेक विषयो पर इस भाग मे २७ प्रवचन उपलब्ध है। इसका प्रथम प्रकाशन चेन्नई के सेठ श्री मोहनमल जी दुग्गड की स्मृति में दुग्गड प्रतिष्ठान के आर्थिक सहयोग से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के द्वारा किया गया था। विक्रम सवत् २०३७ सन् १९८० मे आचार्य श्री का चातुर्मास मद्रास नगर मे हुआ था। वहाँ फरमाए गए प्रवचनो की उपयोगिता को देखकर यह भाग प्रकाशित हुआ है।

इसमें कुल २७ प्रवचन हैं। कतिपय प्रवचनो के शीर्षक इस प्रकार हैं —(१) ज्ञान, अज्ञान और विज्ञान (२) चारित्र की महत्ता (३) सयम भव-भ्रमण नाशक (४) सुख का साधन . दान (५) सामायिक समत्व की साधना (६) जीवन की सार्थकता धर्मकरणी (९) शान्ति का मार्ग, आचार शुद्धि एव विचार शुद्धि (८) मन का माधुर्य साधर्मि -

वात्सल्य (९) आन्तरिक रमणीकता (१०) दुखमुक्ति के छ आयतन।

आचार्य श्री फरमाते हैं –"अशुभ मन, वचन और काया दण्ड के कारण हैं, दण्ड से अदण्ड में लाने वाली प्रवृत्ति का नाम सामायिक है। कर्म के कचरे को धोने और आत्मा को हल्का करने में सामायिक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।" एक प्रवचन मे आचार्य श्री ने फरमाया कि जैन धर्म जैसा ऊँचा धर्म पाकर आप हम पिछड़े रह गए तो इससे ज्यादा कोई आश्चर्य की बात नही होगी।

अन्य प्रवचन मे फरमाया–"दया के दो रूप है –१ द्रव्य दया २ भाव दया। द्रव्य दया के साथ यदि भावदया जुड़ जाए तो उसका फल कर्म का क्षय है। द्रव्य दया से शरीर का रक्षण तो होता है, किन्तु इससे जीवन पवित्र बनने, जीवन मे निर्मलता का निखार आने का निश्चय नही है, किन्तु भाव दया करके उससे जीवन को पवित्र बनाया जा सकता हैं।" 'धन का सदुपयोग सवितरण' मे आचार्य श्री ने फरमाया है –"आपके पास दुख से मुक्त होने की कुजी तो है, लेकिन उसको घुमाना नही आता, यही कारण है कि ससार के लाखो, करोड़ो, अरबो मनुष्य दुखी के दुखी रह जाते हैं।"

आचार्य श्री के प्रत्येक प्रवचन मे जीवन के उत्थान हेतु विचार उपलब्ध है। इनका जितना मनन किया जाएगा, उन पर चिन्तन-मनन कर आचरण मे उतारा जाएगा, उतना ही जीवन सुखी एव समुन्नत होगा।

(१४) पर्युषण साधना

आचार्यप्रवर के सन् १९७० के पूर्व के कुछ प्रवचन इस लघु पुस्तिका मे सगृहीत है। प्रवचन सहज स्वाभाविक एव प्रेरणाप्रद है। इसमे दर्शन, ज्ञान, सामायिक, तप, दान, सयम, शुद्धि और अहिंसा-साधना का विवेचन हुआ है। दर्शन-साधना विषयक प्रवचन का एक अश यहाँ उद्धृत है-

"आप लोग जैन धर्म पाये हुए है, अत सबके लिए सम्यक्त्व की पृथक् शिक्षा देने की आवश्यकता नही होनी चाहिए, किन्तु आज का मोहभरा व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन ऐसा विकृत हो गया है कि उसमें पद-पद पर मिथ्यात्व के आचार-विचार घर किए बैठे है। इसके प्रमुख कारण चार है-१ अज्ञानता २ भौतिक आकाक्षा ३ दैवी भय और ४ पड़ौसी समाज का असर।" सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'पर्युषण साधना' की तृतीयावृत्ति प्रकाशित की गई है।

(१५) आत्म-परिष्कार

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी मसा के प्रवचन आत्म-परिष्कार की दृष्टि से नितान्त महत्त्वपूर्ण है। उनके विशाल प्रवचन-साहित्य मे से कतिपय प्रवचन या उनके अश इस ५६ पृष्ठीय लघु पुस्तिका मे समाहित हैं, जो हृदय को छूते है, चिन्तन-मनन की प्रेरणा देते है तथा जीवन मे अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करते है। प्रवचनो के शीर्षक हैं–आत्म-परिष्कार, सन्त-शरण, महान् सन्त आचार्य श्री शोभाचन्दजी महाराज, मोक्षमार्ग आदि। प्रवचन का एक अश-"परिग्रह का मतलब केवल पैसा बढ़ाना और तिजोरी मे भरना ही नही है, बल्कि कुटुम्ब, परिवार, व्यापार, व्यवसाय आदि मे उलझे रहना भी परिग्रह है।"

पुस्तक का प्रकाशन - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर ने किया है।

(इ) इतिहास-साहित्य

(१) पट्टावली प्रबन्ध सग्रह

जैन इतिहास पर आचार्य श्री की यह प्रथम पुस्तक है। जैन इतिहास मे विशेषत लोंकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा को जानने की दृष्टि से यह कृति अत्यन्त उपयोगी एव महत्त्वपूर्ण है। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. इतिहास मार्तण्ड की उपाधि से अलकृत रहे हैं। उनके द्वारा इतिहास सामग्री के सकलन और लेखन का उच्च स्तरीय कार्य किया गया है। पट्टावली प्रबन्ध सग्रह मे लोकागच्छ की सात पट्टावलियाँ एव स्थानकवासी परम्परा की दस पट्टावलियाँ समृहीत हैं। ये पट्टावलियाँ जैन इतिहास पर विशेष प्रकाश डालती हैं। इनका निर्माण श्वेताम्बर जैन मुनियो ने किया है। पट्टावलियों को मुख्य रूप से दो भागो में बाटा जा सकता है - शास्त्रीय पट्टावली और विशिष्ट पट्टावली। कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र मे सुधर्मा स्वामी से देवर्धिगणि तक जो पट्टावली प्राप्त होती है वह शास्त्रीय पट्टावली है। गच्छभेद के पश्चाद्वर्ती पट्टावलियाँ विशिष्ट पट्टावलियो के नाम से कही जा सकती हैं। इन पट्टावलियो की अपनी अलग विशेषता होती है। इतिहास लेखन मे जिस प्रकार शिलालेख, प्रशस्तियाँ आदि उपयोगी हैं उसी प्रकार पट्टावलियो का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिलालेख एव प्रशस्तियो से केवल इतना ही बोध होता है कि किस काल में किस मुनि ने क्या कार्य किया। अधिक हुआ तो उस समय के राज्य शासन एव गुरु-शिष्यपरम्परा का भी परिचय मिल सकता है, किन्तु रास, गीत और पट्टावली उनके स्मरणीय गुणों, तप, सयम एव आचार का भी ज्ञान कराते है। पट्टावली मे अपनी परम्परा से सम्बन्धित पट्टपरम्परा का पूर्ण परिचय दिया जाता है। पट्टावलियो का निर्माण किंवदन्तियो और अनुश्रुतियो से नही हुआ है, इनके निर्माण मे तत्कालीन रास, गीत, सज्झाय और प्रशस्तियो का भी उपयोग होता है। श्रुति परम्परा के भेद से इनमे कदाचित् नाम एव घटना चक्र मे भिन्नता भी प्राप्त होती है। पट्टावली के द्वारा ही आचार्य परम्परा का क्रमबद्ध पूर्ण इतिहास प्राप्त होता है, जो इतिहास लेखन मे सहायक है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय की ओर से इस पट्टावली के प्रकाशन से पूर्व दो-तीन सकलन प्रकाशित हुए थे, परन्तु उनमे लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा की पट्टावलियो का व्यवस्थित सकलन नही हो पाया था। अत उस कमी की पूर्ति इस पट्टावली प्रबन्ध सग्रह द्वारा की गई है।

यह सकलन आचार्य श्री के द्वारा राजस्थान के विभिन्न ज्ञान-भण्डारों और गुजरात मे पाटन, खम्भात, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के ज्ञानभण्डारो का निरीक्षण करने का परिणाम है। इससे आचार्य श्री की इतिहास विषयक गवेषणात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। आचार्य श्री के इस अभियान का प्रारम्भ सवत् २०२२ मे बालोतरा चातुर्मास से हुआ। लोकाशाह के बाद की परम्परा के मुख्य स्रोत इस कृति के माध्यम से एक स्थान पर उपलब्ध हो सके हैं।

पुस्तक मे हस्तलिखित प्रतियो का मूल पाठ सुरक्षित रखा गया है। लोकागच्छ परम्परा के अन्तर्गत निम्नाकित सात पट्टावलियाँ संकलित हैं-

१ पट्टावली प्रबन्ध २ गणि तेजसीकृत पद्य पट्टावली ३. सक्षिप्त पट्टावली, ४ बालापुर पट्टावली ५ बड़ौदा पट्टावली ६ मोटा पक्ष की पट्टावली ७ लोकागच्छीय पट्टावली।

स्थानकवासी परम्परा के अन्तर्गत ये दस पट्टावलियाँ सकलित हैं- १ विनयचन्द्र जी कृत पट्टावली २ प्राचीन पट्टावली ३. पूज्य जीवराजजी की पट्टावली ४ खंभात पट्टावली ५. गुजरात पट्टावली ६ भूधरजी की पट्टावली ७

मरुधर पट्टावली ८ मेवाड़ पट्टावली ९ दरियापुरी सम्प्रदाय पट्टावली १० कोटा परम्परा की पट्टावली।

ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी और बोधगम्य बनाने की दृष्टि से प्रत्येक पट्टावली के पूर्व सक्षेप में उसका सारतत्त्व दे दिया गया है। लोकागच्छ परम्परा की प्रतिनिधि रचना 'सस्कृत पट्टावली प्रबन्ध' का हिन्दी अनुवाद पण्डित शशिकान्तजी झा ने तथा स्थानकवासी परम्परा की प्रतिनिधि रचना विनयचन्द्र जी कृत पट्टावली का सरलार्थ पण्डित मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज ने किया है। ये दोनों पट्टावलियाँ ही आकार में बड़ी हैं, शेष पट्टावलियाँ लघुकाय हैं।

इतिहास के विद्वानो और शोधार्थियो के लिए 'पट्टावली प्रबन्ध सग्रह', पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। इसमें कुछ पट्टावलियाँ सस्कृत मे हैं तो कुछ राजस्थानी या स्थानीय भाषाओ मे । कुछ पद्य मे हैं तो कुछ गद्य मे । पुस्तक का सम्पादन डा नरेन्द्र जी भानावत ने किया है। प्रस्तावना श्री देवेन्द्र मुनि जी के द्वारा एव भूमिका प्रसिद्ध विद्वान् श्री अगरचन्द जी नाहटा के द्वारा लिखी गई है। प्राक्कथन में सकलित पट्टावलियो का सारगर्भित अन्तरग परिचय देते हुए पट्टावलियो का महत्त्व उद्घाटित किया गया है।

प्रकाशन 'जैन इतिहास निर्माण समिति' जयपुर के द्वारा किया गया है।

(२) जैन आचार्य चरितावली

इस पुस्तक में भगवान् महावीर से लेकर आधुनिक युग के प्रमुख जैनाचार्यों की परम्परा और उनकी विशेषताओं को पद्य के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इतिहास बोध की दृष्टि से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। इतिहास का विषय प्राय· नीरस होता है, किन्तु आचार्यप्रवर ने पद्यबद्ध रूप मे जैनाचार्यों के चरित्र को गूथकर जन सामान्य के लिए सुग्राह्य एव रुचिकर बना दिया है। इसमे सक्षेप मे जैन परम्परा, सस्कृति एव धर्माचार्यो सम्बन्धी आवश्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पद्यबद्ध होने से रुचिशील भक्त श्रावक इसे कण्ठस्थ भी कर सकते है। विषय और भाव की स्पष्टता के लिए प्रत्येक पद्य का अर्थ भी साथ मे दिया गया है। इतिहास-जिज्ञासु इस ग्रन्थ का लाभ उठा सके, इस दृष्टि से अन्त के परिशिष्टों मे लोकागच्छ की परम्परा और धर्मोद्धारक श्री जीवराज जी म.सा., श्री धर्मसिंह जी म., श्री लव जी ऋषि, श्री हरजी ऋषि, श्री धर्मदास जी महाराज आदि से सम्बन्धित विभिन्न शाखाओ का विवरण भी दिया गया है। विद्वानो और शोधार्थियो की सुविधा के लिए शब्दानुक्रमणिका दी गई है जिसके द्वारा आचार्य, मुनि, राजा, श्रावक, ग्राम, नगर, प्रान्त, गण-गच्छ, शाखा, वश, सूत्र, ग्रन्थ आदि के सम्बन्ध मे सुगमता व शीघ्रता से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ग्रन्थ के लेखन मे धर्मसागरीय तपागच्छ पट्टावली, हस्तलिखित स्थानकवासी पट्टावली, प्रभुवीर पट्टावली और पट्टावली-समुच्चय आदि ग्रन्थो का उपयोग किया गया है। प्राचीन हस्तलिखित पत्रो एव आचार्य श्री की अपनी धारणा का भी इसमे सदुपयोग हुआ है। चरितावली का सर्वप्रथम प्रकाशन सन् १९७१ मे जैन इतिहास समिति जयपुर के द्वारा श्री गजसिंह जी राठौड़ के सम्पादन मे किया गया था। द्वितीय सस्करण सन् १९९८ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर द्वारा प्रकाशित किया गया है। द्वितीय सस्करण मे आचार्यों की परम्परा के परिशिष्ट मे अधुनायावत् हुए आचार्यों के नाम भी जोड़ दिए गए है।

(३) जैन धर्म का मौलिक इतिहास

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा ने जैन धर्म के इतिहास को प्रस्तुत करने का महान् कार्य किया है। जैन धर्म यूँ तो अनादिकालीन माना जाता है, किन्तु अवसर्पिणी काल के तीसरे आरक में हुए आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से

लेकर लोंकाशाह पर्यन्त का जैन इतिहास आचार्यप्रवर के द्वारा 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' नामक ग्रथ के चार भागो में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ प्रत्येक भाग का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

प्रथम भाग- प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर २४ वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख इस भाग मे हुआ है। इस भाग को 'तीर्थंकर खण्ड' नाम दिया गया है। इस भाग मे सभी तीर्थंकरों के पूर्वभव, उनकी देवगति की आयु, च्यवनकाल, जन्म, जन्मकाल, राज्याभिषेक, विवाह, वर्षीदान, प्रव्रज्या, तप, केवलज्ञान, तीर्थ स्थापना, गणधर, प्रमुख आर्या, साधु-साध्वी की सख्या एव तीर्थंकरो द्वारा किए गये विशेष उपकार का वर्णन हुआ है। आचार्य श्री ने इस ग्रन्थ के प्रारम्भ मे अपनी बात के अन्तर्गत यह उल्लेख किया है कि यह ग्रन्थ प्रथमानुयोग की प्राचीन आगमीय-परम्परा के अनुसार लिखा गया है। इसमे आचाराग सूत्र, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, समवायाग, आवश्यक सूत्र, आवश्यक निर्युक्ति, आवश्यक चूर्णि, प्रवचनसारोद्धार, सत्तरिसय द्वार और दिगम्बर परम्परा के महापुराण, उत्तरपुराण, तिलोयपण्णत्ति आदि प्राचीन ग्रन्थो का आधार रहा है। हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, आचार्य शीलाक द्वारा रचित महापुरिसचरिय, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण द्वारा रचित विशेषावश्यक भाष्य आदि ग्रन्थ भी इतिहास लेखन मे सहायक रहे है। मतभेद के स्थलो पर शास्त्रसम्मत विचार को ही प्रमुखता दी गई है।

जैन समाज मे, विशेषत श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज मे प्रामाणिक इतिहास की कमी चिरकाल से खटक रही थी । उसे आचार्य श्री ने इस ग्रन्थ का लेखन कर दूर किया एव जैन समाज और भारतीय इतिहास को महत्त्वपूर्ण अवदान किया।

इस खण्ड मे भगवान ऋषभदेव, भ अरिष्टनेमि, भ पार्श्वनाथ और भ महावीर के जीवन चरित्र और घटनाओ का विस्तार से वर्णन हुआ है। शेष २० तीर्थंकरो के सम्बन्ध मे सक्षिप्त जानकारी प्राप्त होती है।

चौबीस तीर्थंकरो मे अन्तिम तीन तीर्थंकर ऐतिहासिक युग के तीर्थंकर माने जाते हैं जबकि प्रारम्भ के २१ तीर्थंकर प्रागैतिहासिक काल मे गिने जाते हैं। तीर्थंकरों के साथ ही भरत एव ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के सम्बन्ध मे तुलनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। श्री कृष्ण के सम्बन्ध मे जैन दृष्टि से चिंतन किया गया है। वैदिक और जैन ग्रन्थो के आधार पर भ अरिष्टनेमि का वश परिचय दिया गया है। इस प्रकार ग्रन्थ मे जैन साहित्य के अतिरिक्त वैदिक और बौद्ध साहित्य से भी गवेषणा की गई है। ग्रन्थ सपादन के कार्य मे गजसिंह जी राठौड़ के अतिरिक्त श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री, प रत्न मुनि श्री लक्ष्मीचद जी म., प शशिकान्त जी झा और डा. नरेन्द्र जी भानावत का भी सहयोग रहा है। इस ग्रन्थ का प्रथम सस्करण सन् १९७१ मे प्रकाशित हुआ था। उसके अनन्तर इसके दो सस्करण और निकल चुके है। ग्रन्थ का सर्वत्र स्वागत किया गया है।

आचार्य श्री द्वारा निर्मित इस इतिहास ग्रन्थरत्न की अनेक मूर्धन्य विद्वानो ने भूरि-भूरि प्रशसा की है। कतिपय विद्वानो के अभिमत सक्षेप में निम्न प्रकार है-

१ जैन धर्म का यह तटस्थ और प्रामाणिक इतिहास है। **-पं. दलसुख भाई मालवणिया, अहमदाबाद**

२ जैन धर्म के इतिहास सम्बन्धी आधार-सामग्री का जो सकलन इसमे हुआ है, वह भारतीय इतिहास के लिए उपयोगी है। **-डॉ रघुवीर सिंह, सीतामऊ**

३ दिगम्बर एव श्वेताम्बर परम्परा के प्रसिद्ध पुरुषों के चरित्रो का इसमें दोहन कर लिया गया है। **- पं हीरालाल शास्त्री, ब्यावर**

४. इतिहास के अनेक नये तथ्य इसमे सामने आये हैं।- श्री अगरचन्द नाहटा, बीकानेर

५. चौबीस तीर्थङ्करों के चरित को तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है।- डॉ ज्योतिप्रसाद जैन, लखनऊ

६. इस इतिहास से अनेक महत्त्वपूर्ण नई बातो की जानकारी होती है।- डॉ के सी जैन, उज्जैन

७. जैन तीर्थङ्कर परम्परा के इतिहास को तुलनात्मक और वैज्ञानिक पद्धति से मूल्याकित किया गया है।

-डॉ नेमीचन्द जैन, इन्दौर

८ ऐतिहासिक तथ्यो की गवेषणा के लिए ब्राह्मण और बौद्ध साहित्य का भी उपयोग किया गया है।

-श्रमण, वाराणसी

९ फुटनोट्स के मूल ग्रन्थों के सन्दर्भ से यह कृति पूर्ण प्रामाणिक बन गई है।

१० इस ग्रन्थ मे शास्त्र के विपरीत न जाने का विशेष ध्यान विद्वान् लेखक ने रखा है।

- डॉ भागचन्द जैन भास्कर, नागपुर

द्वितीय भाग -- यह खण्ड केवली व पूर्वधर खण्ड के नाम से जाना जाता है। इस खण्ड मे भ. महावीर के निर्वाण के पश्चात् के १००० वर्षों का प्रामाणिक इतिहास निबद्ध हुआ है। इन्द्रभूति गौतम, आर्य सुधर्मा, आर्य जम्बू इन तीनो केवलियो के जीवन और उनके कृतित्व का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे वर्णन करने के पश्चात् श्रुत केवली आचार्यो, दस पूर्वधर आचार्यों और सामान्य पूर्वधर आचार्यो का ऐतिहासिक आधार पर वर्णन किया गया है। श्रुत केवली काल के आचार्य प्रभव स्वामी, आचार्य शय्यभव, आचार्य यशोभद्र स्वामी, सम्भूतविजय, आचार्य भद्रबाहु का परिचय दिया गया है। उनके अनन्तर आठवे पट्टधर के रूप मे आचार्य स्थूलभद्र तथा उनके अनन्तर पट्टधरो के रूप में आर्य महागिरि, आर्य सुहस्ती, वाचनाचार्य बलिस्सह, गुणसुन्दर, वाचनाचार्य स्वाति, श्यामाचार्य, षाडिल्ल समुद्र, मगू, नन्दिल और नाग हस्ती का वर्णन करते हुए इनके काल की विभिन्न घटनाओ और तत्कालीन अन्य आचार्यों यथा सुस्थित, आर्य इन्द्रदिन्न, कालकाचार्य, रेवती मित्र, सिंहगिरि, धनगिरि, अर्हद्दत्त, भद्रगुप्त, पादलिप्त, वृद्धवादी और सिद्धसेन, आर्य वज्रस्वामी, नागहस्ती का भी परिचय यथा प्रसग दिया गया है। यथाकाल चाणक्य, चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, सम्राट् अशोक, कलिगपति खारवेल, पुष्यमित्र शुग आदि राजाओ या राजनैतिक पुरुषो का भी निरूपण किया गया है। सामान्य पूर्वधर काल के अन्तर्गत वाचनाचार्य रेवती को भगवान् महावीर का १९ वा पट्टधर बताया गया है। उनके अनन्तर ब्रह्मद्वीपक सिंह, स्कन्दिल, हिमवन्त, क्षमाश्रमण, नागार्जुन, भूतदिन्न, दोहित्य, दूष्यगणि और देवर्धि क्षमाश्रमण का परिचय देते हुये तत्कालीन राजवश, धार्मिक स्थिति एव अन्य आचार्यो और उनके कार्यों का भी वर्णन किया गया है।

इस प्रकार जैन धर्म के मौलिक इतिहास का यह द्वितीय खण्ड गौतम गणधर से लेकर देवर्धिगणि क्षमाश्रमण तक की प्रमुख धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक घटनाओ का तथ्यपरक विवेचन करता है। आचार्य श्री ने भ महावीर के २७ पट्टधरो का इसमे क्रमिक इतिहास सजोया है। द्वादशागी के ह्रास एव विभिन्न वाचनाओं के सबध मे शोध पूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है। सम सामयिक धर्माचार्यों और राजवशो के इतिवृत्तो को भी प्रस्तुत किया गया है। जैन इतिहास की जटिल गुत्थियो का प्रामाणिक हल देते हुए भारतीय इतिहास विषयक कतिपय अधकार पूर्ण प्रकरणो पर नूतन प्रकाश डाला गया है। जैन परम्परा मे श्रमणी और श्राविकाओ के योगदान को भी रेखाकित किया गया है। इतिहास जैसे गूढ एव नीरस विषय का सरस, सुबोध एव प्रवाह पूर्ण शैली में आलेखन किया गया है। मतभेद के प्रसगो को उजागर करते हुए उनका समुचित समाधान गवेषणापूर्ण दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया

गया है। मौलिक इतिहास के प्रथम भाग की अपेक्षा द्वितीय भाग का लेखन अधिक श्रमसाध्य रहा होगा, इसमे सदेह नही। इस भाग का प्रथम सस्करण सन् १९७४ में वीर निर्वाण के २५०० वें वर्ष में जैन इतिहास समिति जयपुर से निकला था तथा अब तृतीय सस्करण प्रकाशित हो चुका है।

तृतीय भाग -वीर निर्वाण संवत् १००१ से १५०० तक के धर्माचार्यों और विभिन्न परम्पराओं का इस भाग मे विस्तृत वर्णन हुआ है। प्रारम्भ मे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के उत्तरवर्ती इतिहास से सम्बन्धित कतिपय अज्ञात तथ्यों का ऐतिहासिक दृष्टि से परिचय कराया गया है। इसके अनन्तर वीर निर्वाण से देवर्द्धि काल तक धर्म और श्रमणाचार की चर्चा की गई है और उसी क्रम में चैत्यवासी परम्परा, भट्टारक परम्परा और यापनीय परम्परा की विस्तार से चर्चा करते हुए इनके कार्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। इन परम्पराओ के प्रचार-प्रसार एव उत्कर्ष मे सहयोगी गग वंश, कदम्ब वश, राष्ट्रकूट वश आदि वशों की भी चर्चा की गई है। आगम के अनुसार जैन श्रमण एव श्रमणी के वेश तथा धर्म शास्त्र और आचार-विचार का भी निरूपण किया गया है। चैत्यवासी परम्परा का प्रारम्भ वीर निर्वाण की सातवी शताब्दी में और भट्टारक परम्परा का प्रारम्भ वीर निर्वाण की ग्यारहवी शताब्दी मे बताया गया है। भट्टारको की परम्परा श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो सम्प्रदायो मे चली। भट्टारको ने ग्रामानुग्राम विहार की परम्परा को त्याग कर चैत्यों, चैत्यालयो अथवा ग्राम नगर के बाहर स्थित घरो मे रहना प्रारम्भ कर दिया। श्वेताम्बर भट्टारको को श्री पूज्यजी और इनके आवासो को आश्रम, मन्दिर जी आदि नामो से और दिगम्बर परम्परा के सिंहासन पीठो को मठ, नसिया आदि नामो से जाना गया। प्रारम्भ मे यहॉ शिक्षण का कार्य होता था, किन्तु धीरे-धीरे इनके पास बड़ी धनराशि, आवास भूमि, कृषि भूमि आदि में वृद्धि होने लगी। अनेक शिक्षण सस्थान चैत्यवासी परम्परा, श्वेताम्बर भट्टारक परम्परा, दिगम्बर भट्टारक परम्परा और यापनीय परम्परा के लिए एक ओर वरदान सिद्ध हुए तो दूसरी ओर चारित्रिक अधःपतन के कारण भी बने। इन शिक्षण सस्थानो से न्याय, व्याकरण, साहित्य, जैन दर्शन , सस्कृत, प्राकृत अपभ्रश आदि के ज्ञाता विद्वान् तैयार हुए तो दूसरी ओर कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, पूजा विधान आदि भी प्रचलित हुए। ग्रन्थ मे इन परम्पराओ का गवेषणापूर्ण रोचक एव प्रेरक वर्णन हुआ है।

भगवान् महावीर के २८ वे पट्टधर आचार्य श्री वीरभद्र से लेकर ४७ वे पट्टधर आचार्य श्री कलशप्रभस्वामी तथा उनके युग की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक घटनाओ को इस ग्रन्थ मे क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही शुद्ध श्रमणाचार के क्रमिक ह्रास एव विकृति जन्य परम्पराओं, सम सामयिक धर्माचार्यो एव राजवशो का इतिवृत्त प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ भाग – इस भाग मे ४८ वे पट्टधर आचार्य उमणऋषि से लेकर ६३ वे पट्टधर आचार्य श्री रूपजी स्वामी एव उनके काल के धार्मिक, सामाजिक एव राजनैतिक इतिवृत्त का विवरण प्राप्त होता है। यह भाग मौलिक इतिहास के तृतीय भाग का पूरक ग्रथ है। इसमे लोंकाशाह की क्राति एव उनकी परम्परा का परिचय दिया गया है। अन्य भागो की तरह इतिहास का यह भाग भी गहन गवेषणा एव शोध के अनन्तर प्रकाशित हुआ है। पूर्व पीठिका के रूप मे ८० पृष्ठो मे भूले बिसरे ऐतिहासिक तथ्यो, धार्मिक क्रातियो और भारत पर मुस्लिम राज्य जैसे विषयो पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया गया है। कुमारपाल, अजय देव, खरतरगच्छ, उपकेश गच्छ, अचलगच्छ, तपागच्छ, बड़गच्छ आदि गच्छों का वर्णन किया गया है। आचार्य फल्गुमित्र, उद्योतनसूरि, जिनेश्वरसूरि अभयदेवसूरि (नवागी वृत्तिकार) जिनवल्लभसूरि, जिनदत्तसूरि, हेमचन्द्रसूरि आदि आचार्यो का परिचय भी इस ग्रथ मे उपलब्ध है। लोंकागच्छ की चर्चा करते हुए लोंकाशाह के ३४ बोल, ५८ बोल आदि का भी निरूपण हुआ है। एक पातरिया

(पोतियाबद) गच्छ की पट्टावली भी दी गई है। ८६८ पृष्ठों का यह भाग सर्वप्रथम १९८७ ई. में प्रकाशित हुआ था।

जैनधर्म का मौलिक इतिहास के अन्तिम दो भागो का आलेखन एवं सपादन श्री गजसिंह जी राठौड़ ने किया है।

विशालकाय जैन धर्म के मौलिक इतिहास के चारो भागों का प्रकाशन जैन इतिहास समिति लाल भवन चौड़ा रास्ता, जयपुर से हुआ है। अब पुन प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल , जयपुर द्वारा किया जा रहा है।

(४) ऐतिहासिक काल के तीन तीर्थंकर

इसमें अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ और भ. महावीर नामक अन्तिम तीन तीर्थंकरो का जीवन चरित्र और उनके काल की घटनाओं का ऐतिहासिक आधार पर वर्णन हुआ है। यह पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के प्रथम भाग का ही एक अश है। इसका प्रकाशन भी जैन इतिहास समिति जयपुर द्वारा ही किया गया है।

(ई) काव्य, कथा एवं अन्य साहित्य

(१) गजेन्द्र-पद-मुक्तावली

आचार्य श्री का काव्य-रचना पक्ष भी भावों की पारदर्शिता के कारण अत्यन्त समृद्ध एव लोकप्रिय है। आचार्य श्री के द्वारा जो काव्य रचना की गई है वह सम्पूर्ण रूप मे तो उपलब्ध नही है, किन्तु जो रचनाएँ उपलब्ध हो सकी हैं, उनमे से ७० पद्य रचनाएँ गजेन्द्र पद मुक्तावली के रूप मे प्रकाशित हैं। इनमे कुछ प्रार्थनाएँ हैं, कुछ आध्यात्मिक चेतना को स्फुरित करने वाले भजन और पद हैं तो कुछ काव्य सामायिक, स्वाध्याय, सेवा, गुरुगुण-गान और समाज चेतना से सम्बन्धित हैं। कतिपय रचनाएँ पर्युषण, रक्षाबन्धन, वर्षा ऋतु आदि पर्वों से भी सम्बद्ध हैं। 'जगत कर्त्ता नही ईश्वर' जैसी कुछ पद्य रचनाएँ दार्शनिक हैं तो "प्रतिदिन जप लेना" जैसी कतिपय रचनाएँ इतिहास और परम्परा बोध को समेटे हुए है। आचार्य श्री के काव्य को डॉ नरेन्द्र जी भानावत ने चार भागो मे विभक्त किया है—१ स्तुति काव्य २ उपदेश काव्य ३ चरित काव्य ४ पद्यानुवाद। स्तुति में भक्त अपने आराध्य के प्रति निश्छल भाव से अपने को समर्पित करता है। आचार्य श्री के आराध्य वीतराग प्रभु हैं, जो रागद्वेष के विजेता है। भगवान् ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ एव महावीर स्वामी की स्तुति करते हुए आचार्य श्री ने उनके गुणो के प्रति अपने आपको समर्पित किया है। वर्धमान महावीर की स्तुति करते हुए आचार्य श्री कहते है-

श्री वर्धमान जिन, ऐसा हमको बल दो
घट घट मे सबके, आत्मभाव प्रगटा दो। टेर।
प्रभु वैर-विरोध का भाव न रहने पावे।
विमल प्रेम सबके घट मे सरसावे।
अज्ञान मोह को, घट से दूर भगा दो ।।घट ।।१ ।।

आचार्य श्री को गुरु के समान और कोई उपकारी नजर नही आता, इसलिए गुरु-वन्दना करते हुए आचार्य श्री कहते हैं-

उपकारी सद्गुरु दूजा, नही कोई संसार।
मोह भंवर में पड़े हुए को, यही बड़ा आधार।।

उपदेशकाव्य के रूप मे 'गजेन्द्र पद मुक्तावली' मे अनेक रचनाएँ सगृहीत हैं यथा- "समझो चेतन जी अपना

रूप," "मेरे अन्तर भया प्रकाश", "मैं हूँ उस नगरी का भूप", "सतगुरु ने बोध बताया", "जीवन उन्नत करना चाहो", "घणो सुख पावेला", "शिक्षा दे रहा जी हमको", "सेवा धर्म बड़ा गम्भीर" आदि। इनमे अधिकाश रचनाएँ आत्मबोध का उपदेश देती हैं, कुछ रचनाएँ आत्मबोध और समाजबोध दोनों से जुड़ी हुई हैं। "हे उत्तमजन आचार", "साचा श्रावक तेने कहिए", "प्यारी बहनों समझो", "समझो समझो री माता", 'जिनराज भजो सब दोष तजो' आदि इसी प्रकार के भजन या पद है। आत्मबोध की दृष्टि से आचार्य श्री की अनेक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं, उनमे से एक की शब्दावली यहाँ प्रस्तुत है-

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नही अब मुझे किसी की आश ।।टेर।।
तन धन परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश।
पुद्गल को अपना कर मैंने, किया स्वत्व का नाश ।।१ ।।
रोग शोक नहिं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास
सदा शान्तिमय मैं हूँ मेरा, अचल रूप है खास ।।२ ।।

स्वाध्याय और सामायिक आचार्य श्री के प्रमुख दो उपदेश रहे हैं। स्वाध्याय को वे जन-जन के लिए आवश्यक मानते हैं-

स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।
घर घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो।

आत्म-ज्योति प्रकट करने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है तथा स्वाध्याय से ही ज्ञान सम्भव है, अत वे कहते है-

बिन स्वाध्याय ज्ञान नही होगा, ज्योति जगाने को
राग द्वेष की गांठ गले नही, बोधि मिलाने को ।।

जीवन का निर्माण करने के लिए जिस प्रकार स्वाध्याय उपयोगी है, उसी प्रकार सामायिक भी आवश्यक है-

अगर जीवन बनाना है, तो सामायिक तू करता जा।
हटाकर विषमता मन की, साम्यरस पान करता जा ।।
मिले धन सम्पदा अथवा, कभी विपदा भी आ जावे।
हर्ष और शोक से बचकर, सदा एक रग रहता जा ।।

सामायिक जीवन उन्नति का साधन है। जिस प्रकार तन की पुष्टि के लिए व्यायाम आवश्यक है उसी प्रकार मन के पोषण और आध्यात्मिक बल के लिए सामायिक आवश्यक है—

जीवन उन्नत करना चाहो, तो सामायिक साधना कर लो।
आकुलता से बचना चाहो, तो .. सा ।।टेर ।।
तन पुष्टि-हित व्यायाम-चला, मन पोषण को शुभ ध्यान-भला
आध्यात्मिक बल पाना चाहो, तो. .. ।।सा. ।।

महिलाओं को शिक्षित करने की दृष्टि से भी आचार्य श्री ने अनेक भजनों का निर्माण किया। कभी बहनो के रूप मे तो कभी माताओ के रूप में, सबोधित करते हुए उन्हे हितशिक्षा प्रदान की है-

थारो थारो री सोभागिन शील की चून्दड़ी जी ।।टेर ।।

झूठे भूषण मे मत राचो, शील धर्म को भूषण साचो।

राखो तन-मन से थे प्रेम, एक सत धर्म से जी ।।

कुछ भजन पर्वो से सम्बद्ध हैं, रक्षाबन्धन पर्व पर जीव की यतना करने का सदेश देते हुए आचार्य श्री फरमाते है-

जीव दया ही रक्षा भारी, मन मे बाधी जे।

इह भव पर भव पामे साता, अविचल पद लीजे ।।

दीपावली पर दीपक की तरह साधना रत रहने की प्रेरणा देते हुए आचार्य श्री फरमाते हैं-

दीपक ज्यो जीवन जलता है, मूल्यवान भाया रे जगत् में।

सत्पुरुषो का जीवन परहित, जलता शोभाया रे जगत् मे।

वर्षाऋतु मे धर्म की करणी करने के लिए प्रेरणा देते हुए आचार्य श्री फरमाते हैं-

जीव की जतना कर लीजे रे।

आयो वर्षावास धर्म की करणी कर लीजे रे।

दया धर्म को मूल समझ कर, समता रस पीजे रे ।।

आचार्य श्री ने अपनी काव्य-रचना मे मूलत आध्यात्मिक पक्ष को ही प्रस्तुत किया है। सामाजिक अनुष्ठानो, पर्वो और उत्सवो को भी आपने काव्य मे आध्यात्मिक रग दिया है। आचार्यप्रवर ने जीवन की विषमता को हटाकर समता रस का पान कराने के साथ आदर्श समाज के निर्माण का भी मार्ग प्रशस्त किया है।

अप्रकाशित पद्य-आचार्य श्री के अनेक पद्य अप्रकाशित है और वे इस समय अनुपलब्ध बने हुए है।

(२) स्वाध्याय - माला (प्रथम भाग)

पूज्य आचार्यप्रवर का स्वाध्याय पर विशेष बल था। आप स्वय भी स्वाध्याय करते थे तथा आगन्तुको को भी स्वाध्याय के लिए प्रेरित करते थे।

सन् १९४७ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का कार्यालय जोधपुर मे था। उस समय जैन कन्या बोधिनी के प्रथम एव द्वितीय भाग के प्रकाशन के पश्चात् तृतीय पुष्प के रूप मे स्वाध्याय-माला (प्रथम भाग) का प्रकाशन हुआ था। 'स्वाध्याय-माला' पुस्तक के इस भाग मे 'वीर जिनस्तव' (अभयदेवसूरि रचित) एव 'गौतम कुलक' नामक प्राकृत भाषा की कृतियो का शब्दार्थ, भावार्थ के साथ विवेचन उपलब्ध है। प्रत्येक गाथा का हिन्दी मे छायानुवाद भी दिया गया है। वीर जिनस्तव एव गौतमकुलक इस कृति के पूर्व अप्रकाशित थे। उन्हे पाण्डुलिपि से पूज्य आचार्यप्रवर ने विवेचन सहित तैयार किया था। पुस्तक के परिशिष्ट मे गौतम कुलक से सम्बद्ध १५ कथानक सक्षेप मे सरस भाषा मे दिए गए हैं। कथानको के शीर्षक है – १ सागरदत्त सेठ २ जम्बू स्वामी ३ धन्ना सेठ ४ कुण्डरीक ५ शालिभद्रजी ६ महात्मा गजसुकुमाल ७ महाराजा उदायी ८ अरणक श्रावक ९ बाहुबली १० मरीचि ११ भगवान मल्लिनाथ १२ कपिल ब्राह्मण १३ चित्त मुनि १४ सेठ सुदर्शन १५ अर्जुन माली।

पुस्तक में दोनो प्राचीन कृतियों का बहुत ही सुन्दर विवेचन हुआ है। तात्त्विक व्याख्या के उदाहरणों एव सूक्तिपरक उद्धरणो का भी प्रयोग हुआ है। बाद में आत्मा के सम्बन्ध मे शब्दार्थ सहित १४ गाथाएँ, बारह भावनाओं का विवेचन एव आध्यात्मिक प्रार्थनाएँ दी गई हैं। सामायिक में स्वाध्याय करने की अच्छी सामग्री से सुसज्जित यह पुस्तक निश्चय ही उस समय पाठकों के लिए पूर्णत उपयोगी एव प्रेरक सिद्ध हुई होगी। आज भी पुस्तक की उपयोगिता असदिग्ध है। इसके पुन प्रकाशन की आवश्यकता है। पुस्तक का सम्पादन श्री रत्नकुमार जी जैन 'रत्नेश' ने किया है।

(३) अमरता का पुजारी

इस पुस्तक मे रत्नवश के षष्ठ पट्टधर एव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के गुरुवर्य पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज साहब का जीवन-चरित्र है। पुस्तक का लेखन युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा के तत्त्वावधान मे विद्वान् पण्डित श्री दु खमोचन जी झा के द्वारा किया गया है तथा सम्पादन उनके सुपुत्र पण्डित शशिकान्त जी झा ने किया है। पुस्तक का प्रकाशन सवत् २०११ मे हुआ। लगभग २०० पृष्ठो मे ५७ प्रकरणो के माध्यम से लेखक ने आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा के जीवन का साहित्यिक रूप से सहज एव प्रभावी रेखाकन किया है। इस पुस्तक पर उपाध्याय कवि अमरमुनि जी म.सा की टिप्पणी इस प्रकार है-

"श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ के आदरणीय सहमत्री स्वनाम धन्य प मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज शत-सहस्रश धन्यवादार्ह हैं कि जिनके विचार प्रधान निर्देशन के फलस्वरूप जीवन चरित्र रूप यह सुन्दर कृति जनता के समक्ष आ सकी। सहमन्त्री जी की ओर से अपने महामहिम गुरुदेव के चरणो मे अर्पण की गई यह सुवासित श्रद्धाञ्जलि जैन इतिहास की सुदीर्घ परम्परा में चिर स्मरणीय रहेगी।"

"श्रद्धेय जैनाचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा के सुख्यात जीवन की पुनीत गाथा के कुछ अश सुन गया, बड़े चाव से, बड़े भाव से। सुन कर हृदय हर्ष से पुलकित हो उठा। कुछ विशिष्ट प्रसगो पर तो अन्तर्मन भावना की वेगवती लहरो में डूब-डूब सा गया।

विद्वान् लेखक की भाषा प्राजल है, पुष्ट है और है मन को गुदगुदा देने वाली। भावाकन स्पष्ट है, प्रभावक है और जीवन लक्ष्य को ज्योतिर्मय बना देने वाला है। भाषा और भाव दोनो ही इतने सजीव एव सप्राण हैं कि पाठक की अन्तरात्मा सहसा उच्चतर आदर्शों की स्वर्ण शिखाओ को स्पर्श करने लगती हैं।"

उपाध्याय कवि अमरमुनिजी की टिप्पणी का उपर्युक्त अश इस पुस्तक के प्रारम्भ मे उनके द्वारा लिखित 'अभिनन्दन' से उद्धृत है। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. का जन्म कार्त्तिक शुक्ला पचमी विक्रम सवत् १९१४ को जोधपुर मे हुआ था, दीक्षा माघ शुक्ला पचमी विक्रम सवत् १९२७ को जयपुर मे हुई थी, आचार्यपद फाल्गुन कृष्णा ८ वि. सवत् १९७२ को अजमेर में दिया गया था तथा ५६ वर्ष सयम पालने के पश्चात् स्वर्गवास जोधपुर मे श्रावण कृष्ण अमावस को वि.स १९८३ में हुआ था।

आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म अनेक गुणगणों से विभूषित थे। परमत-सहिष्णुता, वत्सलता, गम्भीरता, सरलता, सेवाभाविता, विनयशीलता, मर्मज्ञता, आगमज्ञता और नीतिमत्ता ये आचार्य श्री के प्रमुख गुण थे। उनके सबध मे निम्नाकित वचन सत्य था-

गुरु कारीगर सारिखा, टाकी वचन रसाल।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार॥

(४) सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी

पुस्तक के नाम से ही यह स्पष्ट है कि इसमे सिद्धान्तगत प्रश्नो के उत्तर निहित हैं। वस्तुत यह पुस्तक पर्युषण पर्वाराधन हेतु बाहर जाने वाले स्वाध्यायियो के आवश्यक ज्ञानवर्धन की दृष्टि से रचित है। प्रश्न सभी महत्त्वपूर्ण एव स्वाध्यायियो के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। इस पुस्तक के प्रथम सस्करण का सम्पादन श्री पारसमल जी प्रसून के द्वारा किया गया था। द्वितीय एव तृतीय सस्करण का सम्पादन श्री कन्हैयालाल जी लोढा ने किया है। वर्तमान उपलब्ध पुस्तक दो खण्डो मे विभक्त है। प्रथम खण्ड मे तात्त्विक, दार्शनिक एव वर्तमान युग से सम्बन्धित ३१ प्रश्नो के उत्तर है। द्वितीय खण्ड मे अन्तगड सूत्र का वाचन करते समय उठने वाले प्रश्न एव उनके समाधान हैं। सभी प्रश्नो का समाधान तर्कसम्मत एव युक्तियुक्त है। आधुनिक नवीन प्रश्नोत्तरो, को जोड़ देने से द्वितीय सस्करण की उपयोगिता बढ़ गई है। पुस्तक मे ससार, ईश्वर, जीव, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, पुरुषार्थ, क्रियाकाण्ड, अस्वाध्याय, अचित्त-जल, पौषध आदि के सम्बन्ध मे तथा दिगम्बर एव श्वेताम्बर मतभेद की भी विशद तात्त्विक चर्चा हुई है। अन्तगडदसा सूत्र के सबध मे अनेक प्रश्न पाठक के मन-मस्तिष्क मे उठते रहते हैं, उनमे से कुछ का तार्किक समाधान इस पुस्तक मे उपलब्ध होता है। जैसे-एक प्रश्न यह है कि अर्जुनमाली द्वारा की गई ११४१ मानव -हत्याओ का पाप अर्जुन को लगा या यक्ष को या अन्य किसी को। इसी प्रकार एक अन्य सैद्धान्तिक प्रश्न है - सम्यग्दृष्टि श्रावक के लिए धार्मिक दृष्टि से देवाराधना एव तदर्थ तपाराधना उचित है क्या ? इस प्रकार के अन्तगडसूत्र के तात्त्विक प्रश्नो का सम्यक् समाधान प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया गया है।

आचार्यप्रवर के मार्गदर्शन मे तैयार हुई यह पुस्तक न केवल स्वाध्यायियो के लिए, अपितु प्रत्येक जिज्ञासु के लिए ज्ञानवर्धक एव चिन्तन को नई दिशा देने वाली है। पुस्तक का द्वितीय सस्करण सवत् २०२९ मे एव तृतीय सस्करण स २०३७ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित कराया गया है।

(५) जैन स्वाध्याय सुभाषित माला

सुभाषितो का जीवन-उन्नयन मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी मसा द्वारा इसी दृष्टि से सस्कृत, प्राकृत एव हिन्दी भाषा के सुभाषित सकलित किए गए थे, जिनका प्रथम प्रकाशन सन् १९६८ मे हुआ था। अब द्वितीय सस्करण सन् १९९८ मे प्रकाशित हुआ है, जिसके अन्तर्गत ३३ विभिन्न विषयो पर सुभाषित सकलित हैं। सुभाषितों के विषय हैं - साधु महिमा, सज्जन स्वभाव, लोभ, सन्तोष, दान, क्रोध, सत्य, दया, सत्सग, परिग्रह, सन्मित्र, दुर्जन, तप, विद्या, वैराग्य, क्षमा, अहिंसा आदि।

(६) कुलक संग्रह

दान, शील , तप और भाव को मोक्ष के साधन रूप में निरूपित किया जाता है। इन साधनो मे प्रत्येक पर कुलक के रूप मे प्राकृत गाथाओ का सकलन प्राप्त होता है। ये कुलक किसी एक आचार्य द्वारा रचित हैं या सग्रह, स्पष्ट रूप से इस सबध मे कहना कठिन है, क्योकि इन कुलको के अन्त मे रचनाकार या समय का निर्देश नही है। भाषा शैली की दृष्टि से यह मध्यकालीन रचना प्रतीत होती है। आचार्यप्रवर श्री हस्ती ने दान, शील, तप और भाव

पर प्राप्त इन गाथाओ के महत्त्व का आकलन कर इनका हिन्दी अनुवाद एव विवेचन करने के साथ सम्बद्ध कथाओ का भी लेखन किया है। कथाओ के लेखन में अभिधान राजेन्द्र कोष, बोल सग्रह, सोलह सती और टीका ग्रन्थो का आलम्बन लिया गया है। दान कुलक में १८ गाथाएँ, शील कुलक में २० गाथाएँ, तप कुलक मे २० गाथाएँ तथा भाव कुलक मे १८ गाथाएँ हैं। प्रत्येक गाथा की हिन्दी मे छाया पद्य के रूप मे दी गई है, फिर उसके पश्चात् शब्दार्थ, भावार्थ और विशेषार्थ दिए गए हैं। इसमें आचार्य श्री के प्राकृत बोध और विवेचन वैशिष्ट्य का दिग्दर्शन होता है। पुस्तक मे कुल ४७ कथाएँ है, जिनमे दान कुलक की ८, शील कुलक की १६, तप कुलक की १३ और भाव कुलक की १० कथाएँ हैं। कथाओ का लेखन सक्षेप मे विषय को स्पष्ट करते हुए किया गया है। दान प्रकरण की कथाओं के शीर्षक इस प्रकार हैं—१ श्रेयास कुमार २ चन्दनबाला ३ रेवती ४ कयवन्ना ५ शालिभद्र ६ धन सेठ, ७ बाहुबली ८ मूलदेव। शील से सम्बन्धित कथाएँ इस प्रकार हैं- १ राजमती २ सुभद्रा ३ नर्मदा सुन्दरी ४ कलावती ५ शीलवती ६ सुलसा ७ स्थूलभद्र ८ वज्रस्वामी ९ सुदर्शन सेठ, १० सुन्दरी ११ सुनन्दा १२ चेलना १३ मनोरमा १४. अजना १५ मृगावती १६ अच्चकारिय भट्टा। तप प्रकरण की कथाओ के शीर्षक इस प्रकार हैं —१ बाहुबली २ गौतम गणधर ३ सनत्कुमार ४ दृढप्रहारी चोर ५ नन्दीसेन ६ हरिकेशी ७ ढढण कुमार ८ अर्जुनमाली ९ धन्ना मुनि १० महासती सुन्दरी ११ शिवकुमार १२ बलभद्र मुनि १३ विष्णु कुमार। भाव प्रकरण मे इन कथाओ को शामिल किया गया है- १ राजर्षि प्रसन्नचन्द्र २ मृगावती ३ इलापुत्र ४ कपिल मुनि ५ करगड मुनि ६ मरुदेवी ७ पुष्पचूला ८. स्कन्दक शिष्य ९ दर्दुर १० चण्डरुद्र।

कुलक सग्रह पुस्तक की उपयोगिता असदिग्ध है। इसके पूर्व 'स्वाध्याय पाठमाला' प्रथम भाग मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा 'गौतम कुलक ' का प्रकाशन किया गया था। प्रस्तुत पुस्तक मण्डल के द्वारा सन् १९६५ ईस्वी मे प्रकाशित की गई थी।

(७) पर्युषण पर्व पदावली

इस पुस्तक की रचना स्वाध्यायियो के द्वारा पर्युषण पर्वाराधन के अवसर पर धर्मोपदेश करने के लक्ष्य से की गई प्रतीत होती है। पुस्तक के दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड मे अतगड सूत्र के कथाभाग के क्रम से उसके भावो को प्रभावशाली रीति से प्रस्तुत करने वाले पद्यो का सकलन है। इसके अतिरिक्त इस खण्ड मे पर्युषण, क्षमा, सयम, धर्म, षट् कर्माराधन, स्वाध्याय, सामायिक, क्रोध-निषेध आदि की प्रेरणा देने वाले भजन या गीत भी सकलित है। इस प्रकार प्रथम खण्ड उपदेशपरक पद्यो से सुशोभित है। द्वितीय खण्ड मे कतिपय चरित्रात्माओ को प्रस्तुत करने वाले पद्यबद्ध चरित हैं। 'आदर्श चरित्रावली' नामक इस खण्ड मे द्रौपदी, इन्द्र और नमिराज सवाद, भृगु पुरोहित धर्मकथा, कान्हड कठियार कथा, मृगापुत्र और माता आदि के प्रेरणाप्रद जीवन-चरित्र हिन्दी भाषा मे सकलित है। पर्युषण के दिनो मे इनका चौपई के रूप मे उपयोग किया जा सकता है।

पुस्तक के प्रारम्भ मे पर्युषण के आठ दिनो और सवत्सरी की ऐतिहासिकता पर आचार्य श्री के द्वारा प्रामाणिक प्रकाश डाला गया है।

(३) अप्रकाशित / अनुपलब्ध साहित्य

आचार्य प्रवर के प्रकाशित एव उपलब्ध साहित्य का ही ऊपर परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त अनुपलब्ध एव अप्रकाशित साहित्य भी जानकारी में आया है, यथा —

(१) तत्त्वार्थ सूत्र (पद्यबद्ध)

वाचक उमास्वाति द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र श्वेताम्बर एव दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में मान्य ग्रन्थ है, जिसमें जैन दर्शन का सार आ गया है । आचार्यप्रवर ने तत्त्वार्थसूत्र को सस्कृत-पद्यों में ढालने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आपने इन पद्यो मे तत्त्वार्थसूत्र के सूत्रार्थ को ही ग्रहण नही किया, वरन् विवक्षित विषय को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है। तत्त्वार्थसूत्र मे दश अध्याय हैं, आपने ६७३ पद्यो में इन अध्यायों की विषयवस्तु को गूथा है। यह ग्रन्थ प्रकाशन की अपेक्षा रखता है। इसकी पाण्डुलिपि प्राप्त है।

(२) ध्यान सम्बन्धी पुस्तक

आचार्यप्रवर के निर्देशन मे ध्यानविषयक पुस्तक तैयार हुई थी, किन्तु न तो यह प्रकाशित हुई और न ही इसकी पाण्डुलिपि का अता-पता है।

(३) स्याद्वादमजरी

आपने स्याद्वादमजरी का हिन्दी विवेचन तैयार कराया था, किन्तु इस पुस्तक की भी पाण्डुलिपि कही खो गई है।

(४) मुक्ति सोपान

आपने जैनधर्म-दर्शन की जानकारी हेतु मुक्ति सोपान एक पुस्तक तैयार की थी, किन्तु यह अपूर्ण एव अप्रकाशित है।

(५) षड्दर्शनसमुच्चय

श्री राजशेखरसूरि विरचित षड्दर्शनसमुच्चय का आपने विवेचन तैयार कराया था। इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध है एव प्रकाशनाधीन है।

इनके अतिरिक्त आपकी दैनन्दिनियाँ भी साहित्य का ही रूप है। उनमे जो सारभूत वाक्य उपलब्ध हैं, वे जीवन के मार्गदर्शक है। उनमे ग्राम, नगर, श्रावक, विशेष घटना आदि की जानकारी भी उपलब्ध होती है। उपर्युक्त विवरण के अलावा भी आपका साहित्य सम्भव है, जो जानकारी मे न आ सका हो। यदि किसी को जानकारी हो तो सूचित करे।

■

काव्य - साधना

(आचार्य श्री की प्रमुख चयनित रचनाएँ)

(१)

श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रार्थना

(तर्ज- शिव सुख पाना हो तो प्यारे त्यागी बनो)

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति, सब मिल शान्ति कहो ॥टेर॥
विश्वसेन अचिरा के नदन, सुमिरन है सब दुख निकदन ।
अहो रात्रि वदन हो, सब मिल शान्ति कहो ॥१॥ॐ॥
भीतर शान्ति बाहिर शान्ति, तुझमे शान्ति मुझमे शान्ति ।
सबमे शान्ति बसाओ, सब मिल शान्ति कहो ॥२॥ॐ॥
विषय-कषाय को दूर निवारो, काम-क्रोध से करो किनारो ।
शान्ति साधना यो हो, सब मिल शान्ति कहो ॥३॥ॐ॥
शान्ति नाम जो जपते भाई, मन विशुद्ध हिय धीरज लाई ।
अतुल शान्ति उन्हे हो, सब मिल शान्ति कहो ॥४॥ॐ॥
प्रात' समय जो धर्मस्थान मे, शान्ति पाठ करते मृदु स्वर मे ।
उनको दुख नही हो, सब मिल शान्ति कहो ॥५॥ॐ॥
शान्ति प्रभु-सम समदर्शी हो, करे विश्व हित जो शक्ति हो ।
'गजमुनि' सदा विजय हो, सब मिल शान्ति कहो ॥६॥ॐ॥

(२)

सब जग एक शिरोमणि तुम हो

(तर्ज- बालो पाखा बाहिर आयो माता बेन सुनावे यूँ)

सतगुरु ने यह बोध बताया, नहिं काया नहिं माया तुम हो ॥
सोच समझ चहुँ ओर निहारो, कौन तुम्हारा अरु को तुम हो ॥१॥
हाथ-पैर नही, शिर भी न तुम हो, गर्दन, भुजा, उदर नही तुम हो ।
नेत्रादिक इन्द्रिय नही तुम हो, पर सबके सचालक तुम हो ॥२॥
अस्थि, मास, मज्जा नही तुम हो, रक्त, वीर्य, भेजा नही तुम हो ।

श्वास न प्राण रूप भी तुम हो, सबमें जीवनदायक तुम हो ॥३॥
पृथ्वी, जल, अग्नि नही तुम हो, गगन अनिल भी नहिं तुम हो ।
मन, वाणी, बुद्धि नही तुम हो, पर सबके सयोजक तुम हो ॥४॥
मात, तात, भाई नही तुम हो, वृद्ध नारी-नर भी नही तुम हो ।
सदा एक अरु पूर्ण निराले, पर्यायो के धारक तुम हो ॥५॥
जीव, ब्रह्म, आतम अरु हसा 'चेतन' पुरुष रूह तुम ही हो ।
नाम रूपधारी नहिं तुम हो, नाम वाच्य फिर भी तो तुम हो ॥६॥
कृष्ण, गौर वर्ण नही तुम हो, कर्कश, कोमल भाव न तुम हो ।
रूप, रग धारक नहिं तुम हो, पर सब ही के ज्ञायक तुम हो ॥७॥
भूप, कुरूप, सुरूप न तुम हो, सन्त, महन्त, गणी नहिं तुम हो ।
'गजमुनि' अपना रूप पिछानो, सब जग एक शिरोमणि तुम हो ॥८॥

(३)

आत्म-बोध

(तर्ज-गुरुदेव हमारा कर दो)

समझो चेतनजी अपना रूप, यो अवसर मत हारो ॥टेर॥
ज्ञान दरस-मय, रूप तिहारो, अस्थि-मास मय, देह न थारो ॥
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो ॥१॥समझो॥
पोपट ज्यू पिंजर बधायो, मोह कर्म वश स्वाग बनायो ।
रूप धरे हैं अनपार, अब तो करो किनारो ॥२॥समझो॥
तन-धन के नही, तुम हो स्वामी, ये सब पुद्गल पिड है नामी ।
सत् चित् गुण भण्डार, तू जब देखन हारो ॥३॥समझो॥
भटकत-भटकत नर तन पायो, पुण्य उदय सब योग सवायो ।
ज्ञान की ज्योति जगाय, भरम तम दूर निवारो ॥४॥समझो॥
पुण्य-पाप का तू है कर्त्ता, सुख-दुख फल का भी तूँ भोक्ता ।
तू ही छेदनहार, ज्ञान से तत्त्व विचारो ॥५॥समझो॥
कर्म काट कर मुक्ति मिलावे, चेतन निज पद को तब पावे ।
मुक्ति के मार्ग चार, जानकर दिल मे धारो ॥६॥समझो॥
सागर में जलधार समावे, त्यू शिवपद मे ज्योति मिलावे ।
होवे 'गज' उद्धार, अचल है निज अधिकारो ॥७॥समझो॥

(४)
जागृति-सन्देश
(तर्ज- जाओ जाओ रे मेरे साधु)

जागो जागो हे आत्मबधु मम, अब जल्दी जागो ॥टेर॥
अनन्त-ज्ञान श्रद्धा-बल के हो, तुम पूरे भडार ।
बने आज अल्पज्ञ मिथ्यात्वी, खोया सद् आचार ॥१॥जागो॥
कामदेव और भक्त सुदर्शन, ने दी निद्रा त्याग ।
नत मस्तक देवो ने माना, उनका सच्चा त्याग ॥२॥जागो॥
अजात-शत्रु भूपति ने रक्खा, प्रभु भक्ति से प्यार ।
प्रतिदिन जिनचर्या सुन लेता, फिर करता व्यवहार ॥३॥जागो॥
जग प्रसिद्ध भामाशाह हो गए, लोक चन्द्र इस बार ।
देश धर्म अरु आत्म धर्म के, हुए कई आधार ॥४॥जागो॥
तुम भी हो उनके ही वशज, कैसे भूले भान ।
कहाँ गया वह शौर्य तुम्हारा, रक्खो अपनी शान ॥५॥जागो॥
तन-धन-जीवन लगा मोर्चे, अब ना रहो अचेत ।
देखो जग मे सभी पथ के, हो गये लोग सचेत ॥६॥जागो॥
तन-धन-लज्जा-त्याग-धर्म का, कर लो अब सम्मान ।
'गजमुनि' विमल कीर्ति अरु जग का, हो जावे उत्थान ॥७॥जागो॥

(५)
अन्तर भया प्रकाश
(तर्ज- दोरो जैन धर्म को मारग)

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नही अब मुझे किसी की आस ॥टेर॥
काल अनत झूला भव वन मे, बधा मोह की पाश ।
काम, क्रोध, मद, लोभ, भाव से बना जगत का दास ॥१॥मेरे॥
तन-धन-परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश ।
पुद्गल को अपना कर मैंने, किया स्वत्व का नाश ॥२॥मेरे॥
रोग-शोक नहिं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास ।
सदा शान्तिमय मैं हूँ मेरा अचल रूप है खास ॥३॥मेरे॥
इस जग की ममता ने मुझको डाला गर्भावास ।

अस्थि-मास मय अशुचि देह मे, मेरा हुआ निवास ॥४ ॥मेरे ॥
ममता से सताप उठाया, आज हुआ विश्वास ।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश ॥५ ॥मेरे ॥
मोह मिथ्यात्व की गाठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश ।
'गजमुनि' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आस ॥६ ॥मेरे ॥

(६)

आत्म-स्वरूप

(तर्ज- दोरो जैन धर्म को मारग)

मै हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नही होती छाया धूप ॥टेर ॥
तारामडल की न गति है, जहाँ न पहुचे सूर ।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप ॥१ ॥मै ॥
मै नही श्याम-गौर तन भी हूँ, मै न सुरूप-कुरूप ।
नहिं लम्बा, बौना भी मै हूँ, मेरा अविचल रूप ॥२ ॥मै ॥
अस्थि-मास मज्जा नही मेरे, मै नहिं धातु रूप ।
हाथ, पैर, सिर आदि अग मे, मेरा नही स्वरूप ॥३ ॥मै ॥
दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप ।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप ॥४ ॥मैं ॥
श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप ।
निराबाध सुख मे भूलूँ मै, सद्चित् आनन्द रूप ॥५ ॥मैं ॥
शक्ति का भडार भरा है, अमल अचल ममरूप ।
मेरी शक्ति के सन्मुख नही, देख सके अरि भूप ॥६ ॥मै ॥
मैं न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप ।
'गजेन्द्र' निज पद को पहचाने, सो भूपो का भूप ॥७ ॥मै ॥

(७)

स्वाध्याय-सन्देश

तर्ज- (नवीन रसिया)

करलो श्रुतवाणी का पाठ, भविकजन मन मल हरने को ॥टेर ॥
बिन स्वाध्याय ज्ञान नही होगा, ज्योति जगानेको ।
राग-रोष की गाठ गले नही, बोधि मिलाने को ॥१ ॥कर लो ॥

जीवादिक स्वाध्याय से जानो, करणी करने को ।
बध मोक्ष का ज्ञान करो, भव भ्रमण मिटाने को ॥२॥कर लो॥
तुगियापुर में स्थविर पधारे, ज्ञान सुनाने को ।
सुज्ञ उपासक मिलकर पूछे, सुरपद पाने को ॥३॥कर लो॥
स्थविरो के उत्तर थे, सब जन मन हर्षाने को ।
गौतम पूछे स्थविर समर्थ है, उत्तर देने को ॥४॥कर लो॥
जिनवाणी का सदा सहारा, श्रद्धा रखने को ।
बिन स्वाध्याय न सगत होगी, भव दुःख हरने को ॥५॥कर लो॥
सुबुद्धि ने भूप सुधारा, भव जल तिरने को ।
पुद्गल परिणति को समझाकर धर्म दीपाने को ॥६॥कर लो॥
नित स्वाध्याय करो मन लाकर, शक्ति बढ़ाने को ।
'गजमुनि' चमत्कार कर देखो, निज बल पाने को ॥७॥कर लो॥

(८)

स्वाध्याय करो

(तर्ज- उठ भोर भई टुक जाग सही)

जिनराज भजो, सब दोष तजो, अब सूत्रो का स्वाध्याय करो।
मन के अज्ञान को दूर करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥टेर॥
जिनराज की निर्दूषण वाणी, सब सन्तो ने उत्तम जानी ।
तत्त्वार्थ श्रवण कर ज्ञान करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥१॥
स्वाध्याय सुगुरु की वाणी है, स्वाध्याय ही आत्म कहानी है ।
स्वाध्याय से दूर प्रमाद करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥२॥
स्वाध्याय प्रभु के चरणो मे, पहुचाने का साधन जानो ।
स्वाध्याय मित्र, स्वाध्याय गुरु, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥३॥
मत खेल-कूद निद्रा, विकथा, मे जीवन धन बर्बाद करो ।
सद्ग्रन्थ पढ़ो, सत्सग करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥४॥
मन-रजन नाविल पढ़ते हो, यात्रा विवरण भी सुनते हो ।
पर निज-स्वरूप ओलखने को, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥५॥
स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना हैं सद्ज्ञान बिना ।
घर-घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥६॥

जिन शासन की रक्षा करना, स्वाध्याय प्रेम जन मन भरना ।
'गजमुनि' ने अनुभव कर देखा, स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो ॥७॥

(९)
स्वाध्याय-महिमा

(तर्ज- ऐ वीरो उठो वीर के तत्त्वो को अपनावो)

हम करके नित स्वाध्याय, ज्ञान की ज्योति जगायेंगे ।
अज्ञान हृदय को धो करके, उज्ज्वल हो जायेगे ॥१॥
श्री वीर प्रभु के शासन को, जग मे चमकायेगे ।
सत्य, अहिंसा के बल को, जन-जन समझायेगे ॥२॥
घर-घर मे ज्ञान फैलायेगे, जीवादिक समझेगे ।
कर पुण्य-पाप का ज्ञान,सुगति पथ को अपनायेगे ॥३॥
श्रेणिक ने शासन सेवा की, जिन पद को पाएगे ।
हम भी शासन की सेवा मे, जीवन दे जायेगे ॥४॥
श्री लोकाशाह सम शास्त्र वाच कर,ज्ञान बढ़ायेगे ।
शासन सेवी श्री धर्मदास मुनि, के गुण गायेगे ॥५॥
देकर प्राणो को शासन की, हम शान बढ़ायेगे ।
सब प्रान्तो मे स्वाध्यायी जन, अब फिर दिखलायेगे ॥६॥

(१०)
जिनवाणी का माहात्म्य

(तर्ज- जावो - जावो ऐ मेरे साधु, रहो गुरु के सग)

कर लो कर लो, अय प्यारे सजनो, जिनवाणी का ज्ञान ॥टेर॥
जिसके पढ़ने से मति निर्मल, जगे त्याग तप भाव ।
क्षमा दया मृदु भाव विश्व मे, फैल करे कल्याण ॥१॥
मिथ्या-रीति अनीति घटे जग, पावे सच्चा भान ।
देव-गुरु के भक्त बने सब, हट जावे अज्ञान। ।२॥
पाप-पुण्य का भेद समझकर, विधियुत देवो दान ।
कर्मबध का मार्ग घटाकर, कर लेओ उत्थान ॥३॥
गुरुवाणी मे रमने वाला, पावे निज गुण भान ।
राय प्रदेशी क्षमाशील बन, पाया देव विमान ॥४॥

घर-घर में स्वाध्याय बढ़ाओ, तज कर आरत ध्यान ।
जन-जन की आचार शुद्धि हो, बना रहे शुभ ध्यान ॥५ ॥
मातृ-दिवस मे जोड़ बनाई (या) धर आदीश्वर ध्यान ।
दो हजार अष्टादश के दिन 'गजमुनि' करता गान ॥६ ॥

(११)

आह्वान

(तर्ज- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा)

ऐ वीरो ! निद्रा दूर करो, तन-धन दे जीवन सफल करो ।
अज्ञान अधेरा दूर करो, जग मे स्वाध्याय प्रकाश करो ॥टेर ॥
घर-घर मे अलख जगा देना, स्वाध्याय मशाल जला देना ।
अब जीवन में सकल्प करो, तन-धन दे जीवन सफल करो ॥१ ॥
चम्पा का पालित स्वाध्यायी, दरिया तट का था व्यवसायी ।
है मूल सूत्र मे विस्तारो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥२ ॥
स्वाध्याय से मन-मल धुलता है, हिंसा झूठ न मन घुलताहै ।
सुविचार से शुभ आचार करो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥३ ॥
अज्ञान से दुख दूना होता, अज्ञानी धीरज खो देता ।
सद्ज्ञान से दुख को दूर करो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥४ ॥
ज्ञानी को दुख नही होता है, ज्ञानी धीरज नही खोता है ।
स्वाध्याय से ज्ञान भण्डार भरो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥५ ॥
है सती जयन्ती सुखदायी, जिनराज ने महिमा बतलाई ।
भगवती सूत्र मे विस्तारो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥६ ॥
वीरो का एक ही नारा हो, जन-जन स्वाध्याय प्रसारा हो ।
सब जन मे यही विचार भरो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥७ ॥
श्रमणो ! अब महिमा बतलाओ, बिन ज्ञान, क्रिया सूनी गाओ ।
'गजमुनि' सद्ज्ञान का प्रेम भरो, तन धन दे जीवन सफल करो ॥८ ॥

(१२)

जीवन उत्थान गीत

(तर्ज- करने भारत का कल्याण-पधारे वीर.)

करने जीवन का उत्थान, करो नित समता रस का पान ॥टेर ॥

सामायिक की महिमा भारी, यह है सबको साताकारी ।
इसमे पापो का पचखान, करो नही आत्म गुणो की हान ॥१॥
नित प्रति हिंसादिक जो करते, त्याग को मान कठिन जो डरते ।
घड़ी दो कर अभ्यास महान, बनाते जीवन को बलवान ॥२॥
चोर केशरिया ने ली धार, हटाये मन के सकल विकार ।
मिलाया उसने केवलज्ञान, किया भूपति ने भी सम्मान ॥३॥
मन की सकल व्यथा मिट जाती, स्वानुभव सुख सरिता बह जाती ।
होता उदय ज्ञान का भान, मिलाते सहज शान्ति असमान ॥४॥
जो भी गये मोक्ष मे जीव, सबो ने दी समता की नीव ।
उन्ही का होता है निर्वाण, यही है भगवत् का फरमान ॥५॥
कहता 'गजमुनि' बारम्बार, कर लो प्रामाणिक व्यवहार ।
हटाओ मोह और अज्ञान, मिले फिर अमित सुखो की खान ॥६॥

(१३)
सामायिक का स्वरूप

(तर्ज-अगर जिनराज के चरणो में)

अगर जीवन बनाना है, तो सामायिक तू करता जा ।
हटाकर विषमता मन की, साम्यरस पान करता जा ॥ध्रुव पद॥
मिले धन-सम्पदा अथवा, कभी विपदा भी आ जावे ।
हर्ष और शोक से बचकर, सदा एक रग रखता जा ॥१॥
विजय करने विकारो को, मनोबल को बढ़ाता जा ।
हर्ष से चित्त का साधन, निरन्तर तू बनाता जा ॥२॥
अठारह पाप का त्यागन, ज्ञान मे मन रमाता जा ।
अचल आसन व मित भाषण, शान्त भावो मे रमता जा ॥३॥
पड़े अज्ञान के बन्धन, सदा मन को घुमाता है ।
ज्ञान की ज्योति मे आकर, अमित आनन्द बढ़ाता जा ॥४॥
पड़ा है कर्म का बधन, पराक्रम तू बढ़ाता जा ।
हटा आलस्य विकथा को, अमित आनद पाता जा ॥५॥
कहे 'गजमुनि' भरोसा कर, परम रस को मिलाता जा ।
भटक मत अन्य के दर पर, स्वय मे शान्ति लेता जा ॥६॥

(१४)
सामायिक-गीत
(तर्ज-नवीन रसिया)

कर लो सामायिक रो साधन, जीवन उज्ज्वल होवेला ॥टेर ॥
तन का मैल हटाने खातिर, नित प्रति न्हावेला ।
मन पर मल चहु ओर जमा है, कैसे धोवेला ॥१ ॥कर लो ॥
बाल्यकाल मे जीवन देखो, दोष न पावेला ।
मोह-माया का सग किया से, दाग लगावेला ॥२ ॥कर लो ॥
ज्ञान गग ने क्रिया धुलाई, जो कोई धोवेला ।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दाग को दूर हटावेला ॥३ ॥कर लो ॥
सत्सगत और शान्त स्थान मे, दोष बचावेला ।
फिर सामायिक साधन करने, शुद्धि मिलावेला ॥४ ॥कर लो ॥
दोय घड़ी निज-रूप रमण कर, जग बिसरावेला ।
धर्म-ध्यान मे लीन होय, चेतन सुख पावेला ॥५ ॥कर लो ॥
सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला ।
निज सुधार से देश, जाति, सुधरी हो जावेला ॥६ ॥कर लो ॥
गिरत-गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला ।
करत-करत अभ्यास मोह को, जोर मिटावेला ॥७ ॥कर लो ॥

(१५)
सामायिक-सन्देश
(तर्ज-तेरा रूप अनुपम गिरधारी, दर्शन की छटा निराली है)

जीवन उन्नत करना चाहो, तो सामायिक साधन कर लो ।
आकुलता से बचना चाहो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥टेर ॥
तन-धन परिजन सब सुपने है, नश्वर जग मे नही अपने हैं ।
अविनाशी सद्गुण पाना हो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥१ ॥
चेतन निज घर को भूल रहा, पर घर माया मे झूल रहा ।
सद्चिद् आनद को पाना हो, तो... सामायिक साधन कर लो ॥२ ॥
विषयो मे निज गुण मत भूलो, अब काम क्रोध मे मत झूलो ।
समता के सर में नहाना हो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥३ ॥

तन पुष्टि-हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ ध्यान भला ।
आध्यात्मिक बल पाना चाहो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥४॥
सब जग जीवो मे बधु भाव, अपनालो तज के वैर भाव ।
सब जन के हित में सुख मानो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥५॥
निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के सग हो ।
ससार मे पूजा पाना हो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥६॥
साधक सामायिक-सघ बने, सब जन सुनीति के भक्त बने ।
नर लोक मे स्वर्ग बसाना हो, तो...सामायिक साधन कर लो ॥७॥

(१६)

गुरु-भक्ति

(तर्ज-साता बरतेजी)

घणो सुख पावेला, जो गुरु वचनो पर प्रीति बढ़ावेला ॥टेर॥
विनयशील की कैसी महिमा, मूल सूत्र बतलावेला ।
वचन प्रमाण करे सो जन, सुख सम्पत्ति पावेला ॥१॥घणो॥
गुरु सेवा जौर आज्ञाधारी, सिद्धि खूब मिलावेला ।
जल पाये तरुवर सम वे, जग मे सरसावेला ॥२॥घणो॥
वचन प्रमाणे जो नर चाले, चिंता दूर भगावेला ।
आप मति आरति भोगे नित, धोखा खावेला ॥३॥घणो॥
एकलव्य लखि चकित पाडुसुत, मन मे सोचकरावेला ।
कहा गुरु से हाल भील भी, भक्ति बतलावेला ॥४॥घणो॥
देश भक्ति उस भील युवा की, वनदेवी खुश होवेला ।
बिना अगूठे बाण चले यो, बर दे जावेला ॥५॥घणो॥
गुरु कारीगर के सम जग मे, वचन जो खावेला ।
पत्थर से प्रतिमा जिम वो नर, महिमा पावेला ॥६॥घणो॥
कृपा दृष्टि गुरुदेव की मुझ पर, ज्ञान शान्ति बरसावेला ।
'गजेन्द्र' गुरु महिमा का नहि कोई, पार मिलावेला ॥७॥घणो॥

(१७)
देह से शिक्षा

(तर्ज- शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अति प्यारी)

शिक्षा दे रहा जी हमको, देह पिंड सुखदाई ॥टेर॥
दश इन्द्रिय अरु बीसो अग में, देखो एक सगाई ।
सबमे एक, एक मे सबकी, शक्ति रही समाई ॥१॥शिक्षा॥
ऑख चूक से लगता काटा, पैरो में दुखदाई ।
फिर भी पैर आँख से चाहता, देवे मार्ग बताई ॥२॥शिक्षा॥
सबके पोषण हित करता है, सग्रह पेट सदाई ।
रस कस ले सबको पहुँचाता, पाता मान बड़ाई ॥३॥शिक्षा॥
दिल सबके सुख-दुख मे धड़के, मस्तक कहे भलाई ।
इसी हेतु सब तन मे इनकी, बनी आज प्रभुताई ॥४॥शिक्षा॥
अपना काम करे सब निश्छल, परिहर स्वार्थ मिताई ।
कुशल देह के लक्षण से ही, स्वस्थ समाज रचाई ॥५॥शिक्षा॥
विभिन्न व्यक्ति अग समझलो, तन समाज सुखदाई ।
'गजमुनि' सबके हित सब दौड़े, दुख दरिद्र नश जाई ॥६॥शिक्षा॥

(१८)
सुख का मार्ग विनय

(तर्ज-रिषभजी मुझे बोल)

सदा सुख पावेला २ जो अहकार तज, विनय बढ़ावेला ॥सदा॥
अहकार मे अकड़ा जो जन, अपने को नही मानेला ।
ज्ञान-ध्यान-शिक्षा- सेवा, को लाभ न पावेला ॥१॥
विनयशील नित हसते रहता, रूठे मित्र मनावेला ॥
निज-पर के मन को हर्षित कर, प्रीत बढ़ावेला ॥२॥
विनय-प्रेम से नरपुर मे भी, सुरपुर - सा रग लावेला ।
उदासीन मुख की सूरत नही, नजर निहारेला ॥३॥
विनय धर्म का मूल कहा है, इज्जत खूब मिलावेला ।
योग्य समझ स्वामी, गुरु पालक मान दिलावेला ॥४॥
पुत्र-पिता से कुजी पावे, शिष्य गुरु मन भावेला ।

विनयशील शासक जन को भी, खूब रिझावेला ॥५॥
यत् किंचित् कर विनय गुरु का, 'गजमुनि' मन हर्षावेला ।
अनुभव कर देखो, जीवन-गौरव बढ़ जावेला ॥६॥

(१९)
वीर-वन्दना

(तर्ज- मन प्यारे- प्यारे नित रटना)

मन प्यारे नित प्रति (प्रतिदिन)रट लेना, वीर जिनेश्वर को ।
जगमग जग मे ज्योतिर्धर, वीर जिनेश्वर को ॥टेर॥
धन्य त्रिशलाजी के नदा, नृप सिद्धारथ कुल चन्दा ।
सुर नरपति वन्दन करते है ॥१॥वीर॥
शुभ चैत्र त्रयोदशी के दिन, अवतरे जगत हित श्रीजिन ।
त्रिभुवन के प्राणी गुण गाते ॥२॥वीर॥
प्रभु अधम उधारण आये, दीनो के प्राण बचाये ।
सब शीश झुकाते प्रमुदित हो ॥३॥वीर॥
श्रेणिक चेटक अरु कोणिक, थे भक्त कई जन पालक ।
भोजन भी करे वन्दन कर ॥४॥वीर॥
थे कामदेव अरु अरणक, कई अन्य भी निर्भय श्रावक ।
सुर वर को लज्जित कर गाते ॥५॥वीर॥
जो बधन मुक्ति चाहो, सुख-शान्ति की इच्छा हो ।
नित्य भाव सहित तुम भज लेना ॥६॥वीर॥
उत्साह मे गजमुनि (युवकों) आओ, अपना गौरव प्रगटाओ ।
वह भूत समय फिर दिखलाना ॥७॥वीर॥
जिनराज चरण का चेरा, मागू मै सुमति बसेरा ।
हो 'हस्ती' नित वदन करना ॥८॥वीर॥

(२०)
विदाई-सन्देश

(तर्ज- सिद्ध अरिहन्त मे मन रमा जायेगे)

जीवन धर्म के हित में लगा जायेगे,
महावीर का तत्त्व सिखा जायेगे ॥टेर॥

चाहे कहो कोई बुरा अथवा भला कहो,
पर हम कर्त्तव्य अपना बजा जायेंगे ॥१ ॥महावीर ॥
चाहे सुने कोई प्रेम से अथवा घृणा करे,
पर हम धर्म का तत्त्व बता जायेगे ॥२ ॥महावीर ॥
चाहे करो धन मे श्रद्धा या धार्मिक कार्य मे,
पर हम शान्ति का मार्ग जचा जाएगे ॥३ ॥महावीर ॥
अहमदनगर के श्रोताओ कुछ करके दिखलाना,
हम भी प्रेम से मान बढ़ा जाएगे ॥४ ॥महावीर ॥

(२१)

वीर-सन्देश

(तर्ज- लाखो पापी तिर गये, सत्सग के परताप से)

वीर के सन्देश को, दिल मे जमाना सीखलो ।
विश्व से हिंसा हटाकर, सुख से रहना सीख लो ॥टेर ॥
छोड़ दो हिंसा की वृत्ति, दुख की जड़ है यही ।
शत्रुता अरु द्रोह की, जननी इसे समझो सही ॥१ ॥
प्रेम मूर्ति है, अहिसा दिव्य शक्ति मान लो ।
वैर नाशक प्रीति वर्द्धक, भावना मन धारलो ॥२ ॥
क्रोध और हिंसा अनल से, जलते जग को देख लो ।
नित नये सहार साधन, का बना है लेख लो ॥३ ॥
परिणाम हिंसा का समझ लो, दुखदाई है सही ।
मरना अरु जग को मिटाना, पाठ इसका देख लो ॥४ ॥

(२२)

हित-शिक्षा

(तर्ज-आज रग बरसे रे)

घणो पछतावेला, जो धर्म-ध्यान मे मन न लगावेला ॥टेर ॥
रम्मत गम्मत काम कुतूहल, मे जो चित्त लुभावेला ।
सत्सगत बिन मूरख निष्फल, जन्म गमावेला ॥१ ॥घणो ॥
वीतराग की हितमन वाणी, सुणता नीद घुलावेला ।
रग-राग-नाटक मे सारी, रात बितावेला ॥२ ॥घणो ॥

मात पिता गुरुजन की आज्ञा, हिय मे नही जमावेला ।
इच्छाचारी बनकर हित की, सीख भुलावेला ॥३ ॥घणो ॥
यो तन पायो चिंतामणि सम, गया हाथ नही आवेला ।
दया-दान-सद्गुण सचय कर, सद्गति पावेला ॥४ ॥घणो ॥
निज आतम ने वश कर पर की, आतम ने पहचानेला ।
परमातम भजने से चेतन, शिवपुर जावेला ॥५ ॥घणो ॥
महापुरुषो की सीख यही है, 'गजमुनि' आज सुनावेला ।
गोगोलाव मे माह बदि को, जोड़ सुनावेला ॥६ ॥घणो ॥

(२३)

सेवा-धर्म की महिमा

(तर्ज- सेवो सिद्ध सदा जयकार)

सेवा-धर्म बड़ा गभीर, पार कोई विरले पाते हैं ।
विरले पाते है, बधुता भाव बढ़ाते है ॥(जगत का खार मिटाते हैं)
तन-धन-औषध-वस्त्रादिक से, सेवा करते है ।
स्वार्थ-मोह-भय-कीर्ति हेतु, कई कष्ट उठाते है ॥१ ॥
सेवा से हिंसक प्राणी भी, वश मे आते है ।
सेवा के चलते सेवक, अधिकार मिलाते है ॥२ ॥
नदिषेण मुनि ने सेवा की, देव परखते है ।
क्रोध-खेद से बचकर, मन अहकार न लाते है ॥३ ॥
धर्मराज की देखो सेवा, कृष्ण बताते हैं ।
क्रोड़ो व्यय कर अहभाव से, अफल बनाते है ॥४ ॥
द्रव्य-भाव दो सेवा होती, मुनि जन गाते है ।
रोग और दुर्व्यसन छुड़ाया, जग सुख पाते है ॥५ ॥
जीव-जीव का उपयोगी हो, दुःख न देते हैं ।
जगहित मे उपयोगी होना, विरला चाहते है । ('गजमुनि' चाहते हैं) ॥६ ॥

(२४)

उद्बोधन

(तर्ज- तेरा रूप मनोहर.)

ऐ वीर भूमि के धर्मवीर, जीवन निर्माण करो अब तो ॥टेर ॥

गामा* ने तन निर्माण किया, चहु ओर नाम मशहूर किया ।
आखिर तन जल के खाक हुआ, निर्माण करो अब तो ॥१॥
धनकोटि बनाया मुम्मण ने, रत्नो का बैल बना डाला ।
विध-विध कष्टो को सहकर भी, जब मरा चला नही धन तब तो ॥२॥
मुहम्मद ने गजनी मे देखो, धन लूट-लूट भडार भरा ।
अतिम दम भू पर सिसक पड़ा, जीवन धन-कोष भरो अब तो ॥३॥
रावण ने देश अधीन किया, प्रभुता के मद मे भूल गया ।
सुवरण की लका छोड़ गया, निजगुण साधन कर लो अब तो ॥४॥
हिटलर ने धाक जमाई थी, ससार विजय की ठानी थी ।
कर विश्वयुद्ध मे सर्व होम, जब चला समझ आई अब तो ॥५॥
शाली ने सब कुछ छोड़ दिया, धन्ना ने तन को गलादिया ।
जीवन निर्माण किया अपना, देखो सब अमर हुए वे तो ॥६॥
भौतिक निर्माण करो कुछ भी, सुखदायक भी दुख देगे कभी ।
जब नाश की घड़ी बतायेगे, कुछ कर न सकोगे तुम तब तो ॥७॥
बर्लिन पेरिस की सज्जा हो, सुरगण को भी जहा लज्जा हो ।
पल मे लय वह भी हो जाता 'गजमुनि' क्यो भूल करो अब तो ॥८॥

(२५)

सप्त व्यसन-निषेध

(तर्ज- होवे धर्म प्रचार)

है उत्तम जन आचार, सुनलो नरनारी
तू धार सके तो धार, शिक्षा हितकारी ॥टेर॥

१ जुआ-

जुआ खेलन बुरा व्यसन है, धन छीजे दुःख भोगे तन है ।
हारे राजकोष सब धन है, पाडव हारी नार ॥१॥शिक्षा॥
नल भूपति राज गवाया, दमयती सग अति दुःख पाया ।
बड़े बड़ों का मान विलाया, जाने सब ससार ॥२॥शिक्षा॥

२. चोरी-

चोर दड पाते नित देखो, राज समाज मे निंदा देखो ।
रहता नही भरोसा देखो, करे न कोई इतबार ॥३॥शिक्षा॥

*एक पहलवान

३. वेश्यागमन-

वेश्या और परस्त्री त्यागो, रावणकुल मे हुओ अभागो ।
सीता को लेकर वह भागो, हुआ सकल सहार ॥४॥शिक्षा॥

४ परस्त्रीगमन-

लपट तन-धन का बल खोवे, सुख की नीद कभी नही सोवे।
फल भुगतान की बेला रोवे, त्याग करो नरनार ॥५॥शिक्षा॥

५ मास-

मद्य-मास नही खाणो पीणो, दुर्व्यसनो से दूर हीरहणो ।
नशो भूलकर भी नही करणो, बुद्धि बिगाड़णहार ॥६॥शिक्षा॥

६. मद्य-

प्याली पी कई जन्म बिगाड़े, गली, नली मे पड़त निहाले ।
कुत्ते भी आकर मुह मारे, हसे बाल- गोपाल ॥७॥शिक्षा॥

७. तम्बाकू-

बीड़ी और तम्बाकू छोड़ो, कैंसर से मत नाता जोड़ो ।
धन-जन का है नाश करोड़ो, मन से दो दुत्कार ॥८॥शिक्षा॥
सब धर्मो का सार यही है, दुर्व्यसनो से लाभ नही है ।
व्यसन बिगाड़े जन्म सही है, होते जन बेकार ॥९॥शिक्षा॥

(२६)

सच्चा श्रावक

(तर्ज- प्रभाती)

साचा श्रावक तेने कहिये, ज्ञान क्रिया जो धारे रे ॥टेर॥
हिंसा-झूठ-कुशील निवारे, चोरी कर्म ने टाले रे ।
सग्रह बुद्धि, तृष्णा त्यागे, सतोषामृत पावे रे ॥१॥
द्रोह नही कोई प्राणी सग, आतम सम सब लेखे रे ।
पर दु ख मे दु खिया बन जावे, सब सुख में सुख देखे रे ॥२॥
परम देव पर श्रद्धा राखे, निर्ग्रन्थ गुरु ने सेवे रे ।
धर्म दया जिनदेव प्ररूपित, सार तीन को मन सेवे रे ॥३॥
श्रद्धा और विवेक विचारा, विमल क्रिया भव तारे रे ।
तीन बसे गुण जिन मे जानो, श्रावक साचा तेहने रे ॥४॥

(२७)

ईश्वर और सृष्टि विचार

(तर्ज- अगर जिनदेव के चरणों मे तेरा ध्यान हो जाता)

जगत-कर्त्ता नही ईश्वर, न्याय से शोध कर देखो ॥ध्रु.॥
न रागी है न द्वेषी है, चिदानद वीतरागी है ।
प्रपची वह न हो सकता ॥१॥न्या.॥
दयालु पूर्ण ज्ञाता है, अमित शक्ति का धर्त्ता है ।
जगत का खेल नही (क्यों) करता ॥२॥न्या॥
रूप अरु नाम नही जिसमे, नही इच्छा है कुछ बाकी ।
उसे क्या (नही कुछ) प्राप्त करना है ॥३॥न्या॥
ज्ञान आनद का सागर, विमल गुण का जो है आगर ।
जादूगर हो नही सकता ॥४॥न्या॥
विषम दुनिया की हालत का, शुभाशुभ कर्म कारण है ।
यह जड़ चैतन्य का मेला ॥५॥न्या॥
सुजन, दुर्जन, सबल, निर्बल, दु ख अरु सौख्य की छाया ।
कर्म की दृष्ट सब माया ॥६॥न्या॥
नाम, रूपादि की सृष्टि भरी है विविध दोषो से ।
पूर्ण निर्दोष है ईश्वर ॥७॥न्या॥

(२८)

सुशिक्षा

(तर्ज- होवे धर्म प्रचार)

तुम सुनो सभी नर - नार शिक्षा सुखदाई ।
यह करती जन्म सुधार, शिक्षा सुखदाई ॥टेर॥
तत्त्वात्त्व पिछाणे जासे, पुण्य-पाप को जाने जासे ।
सबको अपना जाने जासे, सुखी बने ससार ॥१॥शिक्षा॥
पढ़कर झूठ वचन जो छोड़े गाली से मन को नही जोड़े ।
भाग तमाखू मद तन तोड़े, तजे विज्ञ नर-नार ॥२॥शिक्षा॥
दुर्व्यसनों के पास न जावे,तन-धन-इज्जत खूब बचावे ।
पर धन पर नही चित्त लुभावे, ज्ञान पढ़े का सार ॥३॥शिक्षा॥

चोरी कभी न करना चाहे, धोखा दे नही नम्बर पावे ।
सादा जीवन मन को भावे, हरे ज्ञान कुविचार ॥४॥शिक्षा॥
आप्त जनो का आदर करना, सबमे मैत्री भाव बढ़ाना ।
शिक्षा से सुविचार फैलाना, यही ज्ञान सुखकार ॥५॥शिक्षा॥
धर्म जाति का (द्वेष)गर्व न करना, बधु भाव से वैर मिटाना।
तोड़-फोड़-हिंसा नही करना, ज्ञान बढ़ावे प्यार ॥६॥शिक्षा॥
ब्रह्म भाव से छात्र रहे सब,चोरी, हिंसा, व्यसन तजे सब।
झूठी फैशन दूर करे सब, सच्चा हो व्यवहार ॥७॥शिक्षा॥
ऐसी शिक्षा जो धारेगे, छात्र देश को पार करेगे ।
विद्यालय भी नाम वरेगे, सकट होगा पार ॥८॥शिक्षा॥
देव-गुरु के भक्त बनेगे, वृद्ध जनो का मान करेगे ।
छोटो से भी प्यार करेगे, कहते सत पुकार ॥९॥शिक्षा॥

(२९)

जिनवाणी की महिमा

(तर्ज- माड-मरुधर म्हारो देश)

श्री वीर प्रभु की, वाणी म्हाने प्यारी लागे जी ॥टेर॥
पचास्ति मय लोक दिखायो, ज्ञान नयन दिये खोल ।
गुण पर्याय से चेतन खेले,पुद्गल(माया) के झक झोल हो ॥१॥श्री॥
वाणी जाने ज्ञान की खानी, सद्गुरु का वरदान ।
भ्रम अज्ञान की ग्रन्थि गाले, टाले कुमति कुवान हो ॥२॥श्री॥
अनेकान्त का मार्ग बताकर, मिथ्यात्व दिया ठेल ।
धर्म-कलह का अन्त कराके, दे निज सुख की सेल हो ॥३॥श्री॥
त्रिपदी से जग खेल बतायो, गौतम को दियो बोध ।
दान-दया दम को आराधो, यही शास्त्र की शोध हो ॥४॥श्री॥
'गजमुनि' वीर चरण चित्त लाओ, पाओ शान्तिअपार ।
भव बधन से चेतन छूटे, करणी का यह सार हो ॥५॥श्री॥

(३०)

गुरु-महिमा

(तर्ज- कुंथु जिनराज तू ऐसा)

अगर ससार मे तारक, गुरुवर हो तो ऐसे हों ॥टेर॥
क्रोध ओ लोभ के त्यागी, विषय रस के न जो रागी ।
सूरत निज धर्म से लागी, मुनीश्वर हो तो ऐसे हो ॥१॥अगर॥
न धरते जगत से नाता, सदा शुभ ध्यान मन भाता ।
वचन अघ मेल के हरता, सुज्ञानी हों तो ऐसेहो ॥२॥अगर॥
क्षमा रस मे जो सरसाये, सरल भावो से शोभाये ।
प्रपचो से विलग स्वामिन्, पूज्यवर हो तो ऐसे हों ॥३॥अगर॥
विनयचन्द पूज्य की सेवा चकित हो देखकर देवा ।
गुरु भाई की सेवा के, करैय्या हो तो ऐसे हो ॥४॥अगर॥
विनय और भक्ति से शक्ति, मिलाई ज्ञान की तुमने ।
बने आचार्य जनता के, गुण सुभागी हो तो ऐसे हो ॥५॥अगर॥

(३१)

गुरु-विनय

(तर्ज- धन धर्मनाथ धर्मावतार सुन मेरी)

श्री गुरुदेव महाराज हमे यह वर दो२ ।
रग-रग मे मेरे एक शान्ति रस भर दो ॥टेर॥
मै हूँ अनाथ भव दुख से पूरा दुखियार ।
प्रभु करुणा सागर तू तारक का मुखिया ।
कर महर नजर अब दीन नाथ तव कर दो२ ॥१॥रग॥
ये काम - क्रोध- मद-मोह शत्रु हैं घेरे२,
लूटत ज्ञानादिक सपद को मुझ डेरे ।
अब तुम बिन पालक कौन हमे बल दो२ ॥२॥रग॥
मैं करू विजय इन पर आतम बल पाकर,२
जग को बतला दूँ धर्म सत्य हर्षाकर ।
हर घर सुनीति विस्तार करूँ वह जर दो२ ॥३॥रग॥
देखी है अद्भुत शक्ति तुम्हारी जग मे२

अधमाधम को भी लिये तुम्ही निज मग में ।
मै भी मागू अय नाथ हाथ शिर धर दो२ ॥४॥रग॥
क्यो सघ तुम्हारा धनी मानी भी भीरु२,
सच्चे मारग मे भी न त्याग गभींरू ।
सबमे निज शक्ति भरी प्रभो ! भय हर दो२ ॥५॥रग॥
सविनय अरजी गुरुराज चरण कमलनमे२,
कीजे पूरी निज विरुद जानि दीनन मे ।
आनद पूर्ण करी सबको सुखद वचन दो२ ॥६॥रग॥
गाई यह गाथा अविचल मोद करण मे२,
सौभाग्य गुरु की पर्व तिथि के दिन मे ।
सफली हो आशा यही-कामना पूरण कर दो२ ॥७॥रग॥

(३२)
बाल-प्रार्थना

विनय से करता हूँ नाथ पुकार, सभारो नैया की पतवार।
आज बनी है दशा हमारी, चिन्ता जनक अपार ॥१॥
पालक कभी सघ मे थे, करते कीट उद्धार ।
आज वहाँ मानव धर्मी की, भी नही होती सभार ॥२॥
पर हित करते दान हजारो, भाई के रखवार ।
आज कराते कमाई, होता नही उपकार ॥३॥
कलह शूर होकर करते है, नष्ट पुण्य बलसार ।
सुख शाति अरु कीर्ति गमाकर, होते है बेकार ॥४॥
ज्ञान दया के आकर हो तुम, विमल शाति भडार ।
बाल जीव हम सबके भी, मन करो शक्ति सचार ॥५॥

(३३)
भगवत् चरणो मे

(तर्ज - तू धार सके तो धार सयम सुखकारी)

होवे शुभ आचार प्यारे भारत में, सब करे धर्म प्रचार,
प्यारे भारत मे ॥टेर॥

धर्म प्राण यह देश हमारा, सत्पुरुषों का बड़ा दुलारा,
धर्मनीति आधार प्यारे ॥१॥
सादा जीवन जीए सभी जन, पश्चिम की नही चाल चलें जन,
सदाचार से प्यारे ॥२॥
न्याय नीति मय धधा चावे, प्रामाणिकता को अपनावे,
सब धर्मों का सार ॥३॥
मैत्री हो सब जग जीवो मे, निर्भयता हो सब जीवो मे,
भारत के सस्कार ॥४॥
हिंसा, झूठ न मन को भावे, सब सबको आदर से चावे,
होवे न मन मे खार ॥५॥

(३४)
शुभ कामना
(तर्ज- यही है महावीर संदेश)

दयामय होवे मगलाचार, दयामय होवे बेड़ा पार ॥
करे विनय हिलमिल कर सब ही, हो जीवन उद्धार ॥१॥दयामय॥
देव निरजन ग्रन्थ -हीन गुरु, धर्म दयामय धार ।
तीन तत्त्व आराधन मे मन, पावे शान्ति अपार ॥२॥दयामय॥
नर भव सफल करन हित हम सब, करे शुद्ध आचार ।
पावे पूर्ण सफलता इसमे, ऐसा हो उपकार ॥३॥दयामय॥
तन-धन-अर्पण करे हर्ष से, नही हो शिथिल विचार ।
ज्ञान धर्म मे रमे (लगे) रहे हम, उज्ज्वल हो व्यवहार ॥४॥दयामय॥
दिन-दिन बढ़े भावना सब की, घटे अविद्या भार ।
यही कामना 'गजमुनि' (हम सब) की हो,तुम्ही एक आधार ॥५॥दयामय॥

(३५)
दर्शनाचार

दर्शनाचार को शुद्ध रीति से पालो,
आत्म-शुद्धि हित दूषण पचक टालो ॥टेर॥
निश्शकित आचार प्रथम मन भाना २,
जिन वचनों में शका शील न रहना ।

सशयालु जन कार्य सिद्धि नही पाता २,
शकित मन नही इष्ट लाभ करवाता ।
निज दर्शन मे शका दूषण टालो ॥१॥
काक्षा दूषण दर्शन का पहचानो २,
निष्काक्षित होना ही सुखकर जानो ।
काक्षा से कूणिक ने जन्म गवाया २,
भक्ति पतित हो दुर्गति साज सजाया ।
सद्दर्शन शोधन हित काक्षा टारो ॥२॥
मिथ्यादर्शन या ऋद्धि मन भावे २,
काक्षा मोह के उदय अमित दु ख पावे ।
शास्त्र वचन पै शका कख निवारे २,
निष्काक्षित आचार दोष को टारे ।
जिनवाणी आराध शान्ति सुख पा लो ॥३॥
कामदेव ने काक्षा दूर निवारी २,
वीर प्रभु ने करी प्रशसा भारी ।
तन, धन, जन का नाश सामने देखा २,
पर नही किचित् भी मन मे आलेखा ।
सब मिलकर ऐसी गुण गाथा गा लो ॥४॥
विचिकित्सा दर्शन गुण का दूषण है २,
गुण प्रमोद सद्दर्शन का भूषण है ।
कर्म करत फल में शका नहिं आना २,
निर्वितिगिच्छा अग तीसरा माना ।
निस्सशय व्रत करो धैर्य मत डालो ॥५॥
आडम्बर मे बने मुग्ध जो मानव २,
चमत्कार मे बन जाता वह दानव ।
वीतराग को छोड़ भजे वह रागी २,
मूढ़ दृष्टि भव वन भटके वो अभागी ।
अमूढ़ दृष्टि हो निज स्वरूप सभालो ॥६॥
उपबृहण आचार पाचवा जानो२,
व्यक्ति का व्यक्तित्व गुणो से मानो ।

यथायोग्य गुण को दिपाना भाई २,
प्रोत्साहित जन गण होता सुखदाई ।
गुण ग्रहण की सभी प्रेरणा धर लो ॥७॥
अस्थिर मन से धर्म कभी नही होता २,
यथाशक्ति स्थिर भाव करो तुम भ्राता ।
द्रव्यभाव से स्थिरीकरण होता है२,
मुनि श्रावक का भिन्न रूप होता है ।
ज्ञान जगाकर भ्रान्त चित्त सभालो ॥८॥
राग मोह अरति से अस्थिर होवे २,
सेवा बोध सवेदन से दुख खोवे ।
धर्म प्रेम से दर्शन पुष्टि आवे२,
पथक से सेलक मुनि भान मिलावे ।
सेवा से धर्मी की अरति टालो ॥९॥
वत्सलता दर्शन मे सप्तम जानो २,
प्रीति भाव से त्याग करे नर छानो ।
धर्म समाज मे अस्थिरता है छाई२,
परिवर्तन का चक्र रहा मडराई ।
ज्ञान व्यवस्था से अब वृत्ति सुधारो २ ॥१०॥
दसण-नाण-चरित्र से धर्म दीपाना,
त्याग-तपस्या से शोभे व्रत नाना ।
प्रभावना के अग श्रेष्ठ पहचानो२
जनमानस मे बढ़े धर्म मति ठानो ।
दर्शन गुण को इह विधि भवि चमकालो ॥११॥
दर्शन की भित्ति पर व्रत शोभावे२,
कामदेव अरणक के सब गुण गावे ।
सुलसा की दृढ़ता जिनवर वीर सरावे २,
जयपुर में 'गजमुनि' यो भाव सुनावे ।
करो पुष्ट सद्दर्शन शिव पद पालो ॥१२॥

(३६)
स्त्री शिक्षा
(तर्ज- भज मन भक्तियुक्त भगवान)

प्यारी बहनों समझो धर्म मर्म को जग फैलाना है ॥टेर ॥
भावि कुल अरु देश की तुमको, धात्री बनना है ।
भावी (सकल) जगत मे शान्ति और सौजन्य बढ़ाना है ॥१ ॥प्यारी...
सादा वेष सभी को सुखकर, पाप घटाना है ।
आरम्भ होवे अल्प, ममत्व का रोग घटाना है ॥२ ॥प्यारी...
राजकुमारी चन्दनबाला, सीता बनना है ।
कर जीवन आदर्श, विश्व मे महिमा पाना है ॥३ ॥प्यारी...
चोर, जार छलियो से, अपना शील बचाना है ।
छोड़ो जग देखाव, इसी से, जग सुख पाना है ॥४ ॥प्यारी...
आजादी की चले हवा, स्वच्छद न बनना है ।
विमल बुद्धि से स्वय सत्य का मार्ग मिलाना है ॥५ ॥प्यारी...
राजतत्र और जातितत्र से, अब नहिं चलना है ।
होकर खुद निर्भीक, सत्य पथ डटकर रहना है ॥६ ॥प्यारी...
लालच-मद- अरु काम वासना से अब लड़ना है ।
'गजमुनि' बनकर वीर, धर्म की शान बढ़ाना है ॥७ ॥प्यारी...

(३७)
माता को शिक्षा
(तर्ज- नवीन रसिया)

समझो समझो री माताओ, पूजनीय पद तुम पाई हो ॥टेर ॥
ऋषभदेव और महावीर से, नर वर जाये हो ।
राम-कृष्ण तेरे ही -सुत हैं, महिमा छाई हो ॥१ ॥
जग तन वदत सब ही तुम पर, आश धरावे हो ।
युग-युग से तुम ही माता बन पूजा पाई हो ॥२ ॥
शील और संयम की महिमा, तुम तन शोभे हो ।
सोना-चादी-हीरक से, नही खान पूजाई हो ॥३ ॥
स्वेच्छाचारी बन मत, भद्रा नाम धराओ हो ।

भूलोचन कर चालो, चतुर होई बड़ाई हो ॥४॥
एकाकी पुरुषों के झुण्ड में, मत ना जाओ री ।
मधुर मद वचनों से पाओ, जगत बड़ाई हो ॥५॥
पद्मावती चन्दनबाला अरु, सीता हो गई हो ।
आन कान को भूल, आज मत करो हँसाई हो ॥६॥
कसो वस्त्र से निज तन को तुम, ज्ञान से मनसमझावो ।
'गजमुनि' कहे उच्च जीवन से, हो भलाई हो ॥७॥
(मेड़ता सवत् २००८)

(३८)

स्त्री-शिक्षा

(तर्ज - सीता माता की गोदी में)

पालो पालो री सोभागिन, बहनो धर्म को जी ॥टेर॥
बहुत समय तक देह सजाया, घर-धधा में समय बिताया।
निन्दा-विकथा ने छोड़, करो सत्कर्म को जी ॥१॥पालो...
सदाचार-सादापन धारो, ज्ञान ध्यान से तप सिणगारो ।
पर उपकार ही भूषण खास, समझो मर्म को जी ॥२॥पालो...
ये जर जेवर भार सरूपा, लुटेरा चोर जाति भय भूपा ।
दान-जप-तप मे भय न किसी का, नियम शुभ कर्म को जी ॥३॥पालो...
देवी अब यह भूषण धारो, घर सतति को शीघ्र सुधारो ।
सर्वस्व देय मिटावो, आज जग के भरम को जीं ॥४॥पालो...
धारिणी सीता-सी बन जाओ, प्रतापी वीर वश प्रगटाओ ।
'हस्ती' उन्नत कर दो,देश धर्म अरु सघ को जी ॥५॥पालो...

(३९)

स्त्री-शिक्षा

(तर्ज – सीता माता की गोदी मे)

धारो धारो री सोभागिन शील की चून्दड़ी जी २ ॥टेर॥
झूठे भूषण मे मत राचो, शील धर्म को भूषण साचो
राखो तन मन से थे प्रेम, एक सत धर्म से जी ॥१॥धारो॥
मस्तक देव गुरु ने नमजो,यही मुकुट शिर सच्चा समझो ॥

करने जिनवाणी का श्रवण, रत्नमय कुडलो जी ॥२॥धारो॥
जीव, दया और सतगुरु दर्शन, सफल करो इसमे निज लोचन ।
नथकर अटल नियम सू, धर्म प्रेम है नाक रो जी ॥३॥धारो॥
मुख से सत्य वचन प्रिय बोलो, जिन गुरु गुण मे शक्ति लगालो ।
भगिनी यही चूप है, अविनाशी सुखदायिनी जी ॥४॥धारो॥
सज्जन या दुर्बल जन सेवा, दीन की टहल घणी सुख देवा ।
भुजबल वर्धक रत्न-जटित, भुजबन्ध लो जी ॥५॥धारो॥

(४०)

महावीर-जन्मोत्सव

(तर्ज - अगर जिन देव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता)

श्री महावीर स्वामी का, जन्म हमको मुबारक हो
जन्म महावीर का हमको, मुबारक हो २,
पावनी भरत भूमि को, मुबारक हो २ ॥टेर॥
चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की, रात्रि वह मगला अब भी ।
जगादे वीर से नर को ॥१॥मुबारक॥
जगत मे सब तरफ हिंसा का, नगा नाच होता था ।
जन्मना आपका तब यह ॥२॥मुबारक॥
धर्म के नाम पर क्रोड़ो, मूक प्राणी बलि चढ़ते ।
बचाया आपने उनको ॥३॥मुबारक॥
सूक्ष्म जीवो की भी हिंसा, धर्म के नाम से करना ।
अज्ञानी पन कहा तुमने (प्रभु कहते) ॥४॥मुबारक॥
श्रवण कर वीर वाणी को, सकल प्राणी दया करना ।
भक्ति यह मुक्तिदा जानो ॥५॥मुबारक॥
सकल जग जीव सुखदायी, धर्म फरमायो जिनराई ।
उसी सद् धर्म को पाना ॥६॥मुबारक॥
सताना दीन जीवो को, परस्पर कलह फैलाना ।
धर्म के नाम धब्बो को मिटाना ही ॥७॥मुबारक॥
धन्य सिद्धार्थ महाराजा, मात त्रिशला है गुण खानि,
रतन तारक हुआ जिनसे ॥८॥मुबारक॥

धन्य वह आज की घड़ियां, धन्य वह वसुमती वसुधा ।
बचाया धर्म 'हस्ती' को ॥९ ॥मुबारक ॥

(४१)

वर्षाकाल मे जतना

(तर्ज- धर्म का मारग है बांका...)

जीव की जतना कर लीजे रे२,
आयो वर्षाकाल धर्म की करणी कर लीजे ॥टेर ॥
दया धर्म को मूल समझ कर, समता रस पीजे रे, समझकर२ ॥आयो ॥
नित वर्षे जल बिन्दु गगन से, जीव चले असराल ।
लीलण फूलण पाच रग की, चालो उनको टाल ॥१ ॥जीव ॥
खाने पीने की वस्तु का सग्रह नही कीजे ।
मिर्च, मसाले और दाल, बिन देखा मत लीजे ॥२ ॥जीव ॥
रात्रि-भोजन आदि अधाधुध सज्जन तज दीजे ।
चौमासा के पुण्य दिनो मे, हिंसा टालीजे ॥३ ॥जीव ॥
मुनिवर तज सचार काल, वर्षा मे स्थिर रहते ।
उत्तम श्रावक धर्मी भी नहिं, बिन मतलब भमते ॥४ ॥जीव ॥
(रामचन्द्र वनवास समय भी, पचवटी रहते) ॥४ ॥जीव ॥
असख्य जीव मल-मूत्र स्थान मे, ज्ञानी बतलाते ।
गली-नली को छोड़ दया हित, सूखे मे जाते ॥५ ॥जीव ॥
बिन छाने मति पीओ पानी, जीव-पिंड लो जान बधुवरजी ।
दिन प्रति दोनो समय निहाले, पाणी को मतिमान ॥६ ॥जीव ॥
जीव असख्य हुए भूमि पर, भटकत मर जावे ।
ताने ज्ञानी जीव दया हित, पौषध व्रत ठावे ॥७ ॥जीव ॥
पर्व समय का लाभ कमावन, आरम्भ तज देना रे ।
आज्ञापूर्वक निज गुण साधो, पाओ सुख चैना रे ॥८ ॥जीव ॥
दान, शील, तप, भाव आराधो, विमल भाव धरके रे, आराधो ।
'गजमुनि' सत्य समझकर सेवो, प्राणी सब जगके ॥९ ॥जीव ॥

(४२)

आचार्य-परम्परा

(तर्ज- सुज्ञानी जीवा)

प्रतिदिन जप लेना, त्यागी गुरुओ को भविजन भाव से ॥टेर ॥
महावीर के शासन भूषण, धर्मदास मुनिराय ।
परम प्रतापी धर्म प्रचारक, थे आचार्य महान हो ॥१ ॥प्रति ॥
शिष्य निन्नाणु हुए आपके, ज्ञान क्रिया मे शूर ।
धन्नाजी ने मरुभूमि से, किया कुमत को दूर ॥२ ॥प्रति ॥
पट्टधर भूधर पूज्य प्रतापी, शिष्य जिन्हो के चार ।
रघुपत, जयमल, जेतसिंह अरु कुशलचन्द्र लो धार हो ॥३ ॥प्रति ॥
रघुपत, जयमल, कुशलाजी के, हुआ शिष्य समुदाय ।
कुशल वश के पूज्यो का मैं, ध्यान करू-चितलाय हो ॥४ ॥प्रति ॥
गुमानचन्द्र और रत्नचन्द्र जी, शासन के शृगार ।
चाचा गुरु थे रत्नचन्द्र के, दुर्गादास अनगार हो ॥५ ॥प्रति ॥
चार बीस सवत्सर लग, रखने को सम्मान ।
रत्नचन्द्र गणिपद नही लीना, पूज्य दुर्ग को मान हो ॥६ ॥प्रति ॥
दुर्गादास के बाद रत्नमुनि, को दीना गण भार ।
गुरु गुमान की मर्यादा मे, गणपति थे सुखकार हो ॥७ ॥प्रति ॥
कुशल वश के पूज्य तीसरे, हमीरमल्ल मुनिराय ।
परम प्रतापी पूज्य कजोड़ी, महिमा कही न जाए ॥८ ॥प्रति ॥
पचम पूज्य बहुश्रुतधारी, विनय चन्द्र मुनिराज ।
शोभाचन्द्र जी पूज्य हुए छट्ठ, दमियों के सिरताज ॥९ ॥प्रति ॥
वादीमर्दन कनीरामजी, बालचन्द्र तपधार ।
चन्दन मुनिवर शीतल चन्दन, मुनित्रय थे सुखकार ॥१० ॥प्रति ॥
'गजेन्द्र' सब पूज्यो का अनुचर, करता उनका ध्यान ।
भाव सहित जो पढ़े भविक जन, पावे सौख्य निधान हो ॥११ ॥प्रति ॥

(४३)

पार्श्व-महिमा

तर्ज- (शिवपुर जाने वाले तुमको..)

पार्श्व जिनेश्वर प्यारा, तुमको कोटि प्रणाम २ ॥टेर॥
अश्वसेन कुल कमल दिवाकर, वामादे मन कुमुद निशाकर ।
भक्त हृदय उजियारा ॥१॥तुमको॥
जड़ जग में बेभान बना नर, आत्म तत्त्व नही समझे पामर ।
उनका करो सुधारा ॥२॥तुमको॥
तुम सम दूजा देव न भय हर, वीतराग निकलक ज्ञान धर ।
ध्यान से होवे अमरा ॥३॥तुमको॥
सकल चराचर सम्पत्ति अस्थिर, आत्म रमणता सदानद कर,
यही बोध है सुखकर ॥४॥तुमको॥
देव तुम्हारी सेवा मन भर, करे बने वह अजर-अमर नर ।
सदा लक्ष्य हो सब घर ॥५॥तुमको॥
(हो यह भावता सब घर)
भूल न तू धन मे ललचाकर, परिजन तन अरु धन भी नश्वर ।
पार्श्व चरण ही दिलधर ॥६॥तुमको॥
दुनिया मे मन नही लुभाकर, पार्श्व वचन का तो पालन कर ।
'गजमुनि' (हस्ती) विषय हटाकर ॥७॥तुमको॥

(४४)

पर्व पर्युषण आया

यह पर्व पर्युषण आया, सब जग मे आनद छाया रे ॥टेर॥
यह विषय कषाय घटाने, यह आतम गुण विकसाने ।
जिनवाणी का बल लाया रे, यह......
यह जीव रुले चहु गति में, ये पाप करण की रति मे ।
निज गुण सम्पद को खोया रे, यह......
तुम छोड़ प्रमाद मनाओ, नित धर्म ध्यान रम जाओ ।
लो भव-भव दुःख मिटाओ रे, यह......
तप-जप से कर्म खपाओ, दे दान द्रव्य फल पाओ ।

ममता त्यागो सुख पाओ रे, यह.....
मूरख नर जन्म गमावे, निन्दा विकथा मन भावे ।
इनसे ही गोता खाया रे, यह.....
जो दानशील आराधे, तप द्वादश भेदे साधे ।
शुद्ध मन जीवन सरसाया रे, यह.....
बेला, तेला और अठाया, सवर- पौषध करे मन भाया ।
शुद्ध पालो शील सवाया रे, यह.....
तुम विषय-कषाय घटाओ, मन मलिन भाव मत लाओ ।
निन्दा विकथा तज माया रे, यह.....
कोई आलस मे दिन खोवे, सतरज तास रमे या सोवे ।
पिक्चर मे समय गमाया रे, यह.....
सयम की शिक्षा लेना, जीवो की जयणा करना ।
जो जैन धर्म तुम पाया रे, यह.....
जन-जन का मन हरषाया, बालक गण भी हुलसाया ।
आत्म शुद्धि हित आया रे, यह.....
समता से मन को जोड़ो, ममता का बधन तोड़ो ।
है सार ज्ञान का पाया रे, यह.....
सुरपति भी स्वर्ग से आवे, हर्षित हो जिन गुण गावे ।
जन-जन को अभय दिलाया रे, - यह.....
'गजमुनि' निज मन समझावे, यह सोई शक्ति जगावे ।
अनुभव रस पान कराया रे, यह.....

(४५)

सामायिक शान्ति का द्वार

(तर्ज - जिया बेकरार है, हृदय की पुकार है)

सामायिक में सार है, टारे विषय बिकार है ।
करलो भैया सामायिक तो निश्चय बेड़ा पार है ॥टेर॥
भरत भूप ने काच महल मे, समता को अपनाया हो
विषय-विकार को दूर हटाकर, वीतराग पद पाया हो ।
मन को लीना मार है, पाया केवल सार है ॥करलो॥

मेतारज मुनि सामायिक कर, तन का मोह हटाया हो
प्रबल वेदना सहकर मुनि ने, केवल ज्ञान मिलाया हो ।
दिल में करुणा धार है, निज दुःख दिया विसार है ॥करलो॥
पुणिया ने नित सामायिक कर, काम क्रोध को मारा हो
न्याय नीति से द्रव्य मिलाकर, अपना किया गुजारा हो ।
वीर प्रभु दरबार है, धन्य हुआ अवतार है ॥करलो॥
इन्द्रिय वशकर शात स्थान मे, मौन सहित अभ्यास करो
ज्ञान ध्यान मे चित्त रमाकर, राग द्वेष का नाश करो ।
करना सबसे प्यार है, यही धर्म का सार है ॥करलो॥
अश मात्र भी जो सामायिक अपनाते नर नार है
वैर विरोध रहे नही जग मे, घर घर मगलाचार है ।
'गजमुनि' का आधार है, सुख शाति का द्वार है ॥करलो॥

(४६)

सकल्प

गुरुदेव चरण वन्दन करके, मै नूतन वर्ष प्रवेश करूँ ।
शम- सयम का साधन करके, स्थिर चित्त समाधि प्राप्त करूँ ॥१॥
तन, मन, इन्द्रिय के शुभ साधन, पग-पग इच्छित उपलब्ध करूँ ।
एकत्व भाव मे स्थिर होकर, रागादिक दोष को दूर करूँ ॥२॥
हो चित्त समाधि तन-मन से, परिवार समाधि से विचरूँ ।
अवशेष क्षणो को शासनहित, अर्पण कर जीवन सफल करूँ ॥३॥
निन्दा, विकथा से दूर रहूँ, निज गुण मे सहजे रमण करूँ ।
गुरुवेर वह शक्ति प्रदान करो, भवजल से नैया पार करूँ ॥४॥
शमदम सयम से प्रीति करूँ, जिन आज्ञा मे अनुरक्ति करूँ ।
परगुण से प्रीति दूर करूँ, 'गजमुनि' यों आतर भाव धरूँ ॥५॥

(अपने ७३ वे जन्मदिवस पर के.जी.एफ मे रचित)

(४७)

प्रभु प्रार्थना

(तर्ज - धन धर्मनाथ धर्मावतार सुन मेरी)

श्री वर्धमान जिन, ऐसा हमको बल दो ।

घट-घट मे सबके, आत्म भाव प्रगटा दो ॥टेर ॥
प्रभु वैर - विरोध का भाव न रहने पावे,
विमल प्रेम सबके घट मे सरसावे ।
अज्ञान मोह को , घट से दूर भगा दो ॥१ ॥घट ॥
ज्ञान और सुविवेक बढ़े हर जन मे,
शासन सेवा नित रहे सभी के मन मे ।
तन मन सेवा मे त्यागें, पाठ पढ़ा दो ॥२ ॥घट ॥
हम शुद्ध हृदय से करे तुम्हारी भक्ति,
सयुक्त प्रेम से बढ़े सघ की शक्ति ।
निस्वार्थ बधुता सविनय हमे सिखा दो ॥३ ॥घट ॥
चिरकाल सघ सहवास मे लाभ कमावे,
नही भेद भाव कोई दिल मे लावे ।
एक सूत्र मे हम, सबको दिखला दो ॥४ ॥घट ॥
चर स्थावर साधन भरपूर मिलावे,
साधना मार्ग मे नही चित्त अकुलावे ।
'गज' वर्धमान पद के, अधिकारी कर दो ॥५ ॥घट ॥

(४८)

गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे

जीवन धन आज समर्पित है, गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे ॥टेर ॥
यद्यपि मैं बधन तोड़ रहा, पर मन की गति नहीं पकड़ रहा ।
तुम ही लगाम थामे रखना, गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे ॥१ ॥
मन - मन्दिर मे तुम को बिठा, मै जड़ बधन को तोड़ रहा ।
शिव मदिर मे पहुँचा देना, गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे ॥२ ॥
मैं बालक हूँ नादान अभी, एक तेरा भरोसा भारी है ।
अब चरण-शरण मे ही रखना, गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे ॥३ ॥
अतिम बस एक विनय मेरी, मानोगे आशा है पूरी ।
काया छायावत् साथ रहे, गुरुदेव तुम्हारे चरणो मे ॥४ ॥

(४९)

सघ की शुभ कामना

(तर्ज लाखों पापी तिर गये)

श्री सघ मे आनन्द हो, कहते ही वन्दे जिनवरम् ॥टेर ॥
मिथ्यात्व निशिचर का दमन, कहते ही वन्दे जिनवरम्,
सम्यक्त्व के दिन का उदय, कहते ... ॥१ ॥
दिल खोल अरु मल दूर कर, अभिमान पहले गाल दो,
कल्याण हो सच्चे हृदय, कहते... ॥२ ॥
दानी दमी ज्ञानी बनें, धर्माभिमानी हम सभी,
बिन भेद प्रेमी धर्म के, कहते ... ॥३ ॥
सत्य, समता, शील अरु सतोष मानस चित्त हो,
त्यागानुरत मम चित्त हो, कहते... ॥४ ॥
शुभ धर्म सेवी से नही, परहेज अणुभर भी हमे,
सर्वस्व देवे सघ हित, कहते... ॥५ ॥
जिनवर हमें वर दो यही, सहधर्मी वत्सलता करे,
अनभिज्ञ को 'करी' बोध दे, कहलावे वन्दे जिनवरम् ॥६ ॥
(श्री सघ मे आनन्द हो, कहते ही वन्दे जिनवरम् ॥)

(५०)

पर्युषण - महिमा

(तर्ज - झण्डा ऊँचा रहे हमारा)

पर्युषण है पर्व हमारा, देह मुक्ति का है यह द्वारा ॥टेर ॥
अनतजीव का मुक्ति-विधाता, शान्ति सुधा सब जग बरसाता ।
आत्म शुद्धि का पाठ पढ़ाता, तभी बना जग का यह प्यारा ॥१ ॥
सुरपति इसमे पुण्य कमाते, मृत्युलोक भी पर्व मनाते ।
मुनिजन के मन सुन हर्षाते, सयमियो का परम आधारा ॥२ ॥
पाप ताप सताप मिटाता, मुद मगल सन्मति का दाता ।
जीव मात्र के हो तुम त्राता, निर्मल कर दो चित्त हमारा ॥३ ॥
युग-युग मे जो इसे मनावें, राग-द्वेष को दूर भगावे ।
दिव्य भाव की सपद पावें, आनन्द भोगेगा अब सारा ॥४ ॥

(५१)

भगवान तुम्हारी शिक्षा

जीवन को शुद्ध बना लेऊँ, भगवान् तुम्हारी शिक्षा से
सम्यग् दर्शन को प्राप्त करूँ, जड चेतन का परिज्ञान करूँ।
जिनवाणी पर विश्वास करूँ, भगवान तुम्हारी शिक्षा से ॥१॥
अरिहत देव निर्ग्रन्थ गुरु, जिन मार्ग धर्म को नही बिसरूँ ।
अपने बल पर विश्वास करूँ, भगवान तुम्हारी शिक्षा से ॥२॥
हिंसा असत्य चोरी त्यागूँ, विषयों को सीमित कर डालूँ ।
जीवन धन को नही नष्ट करूँ, भगवान् तुम्हारी शिक्षा से ॥३॥

(५२)

सच्ची सीख

(तर्ज - वीर प्रभु के गुण नित्य गाये जा)

जिन्दगी है सघ की, सेवा मे लगाए जा ।
वीर के चरणो मे प्यारे दिल को रमाएजा ॥टेर॥
गुरु मात गुरु तात, गुरु सच्चे जानो भ्रात ।
आत्म शाति पाने हेतु ध्यान तूँ लगाए जा ॥१॥
धन दारा के त्यागी है,जो,विश्व मे विरागी है जो ।
सत्य के अनुरागी उनका मान बढ़ाये जा ॥२॥
काम क्रोध मोह लोभ, विश्व मे बढ़ाते क्षोभ ।
गुरु का प्रताप पाय, दोषो को हटाए जा ॥३॥
देव है परोक्ष आज, गुरु उनका करते काज ।
प्रत्यक्ष परमेश गुरुदेव ही मनाए जा ॥४॥
पूज्य शोभाचद से , विश्व मे हुए मुनिद ।
'गजमुनि' गुरुजी को शीष नमाए जा ॥५॥

(५३)

कौमी हमदर्दी

(तर्ज -लाखो पापी तिर गये सत्सग के प्रताप से)

(भाइयो) जैनिओ ! कौमी हमीयत आप अब तो सीख लो।
रसभरी प्याली मुहब्बत की, पिलाना सीख लो ॥टेर॥

जातिया करती तरक्की, देश में सब देख लो ।
धर्म बन्धु से मुहब्बत, का सबक अब सीख लो ॥१॥
आपका कोई भी भाई हो नही भूखा कही ।
मूर्खता को भी निशा जग से मिटाना सीख लो ॥२॥
है इसी मे आपकी इज्जत व इसमे शान है ।
कौमी खिदमत के बहादुर अब तो होना सीख लो ॥३॥
देव गुरु और धर्म की सेवा में तन अर्पण करो ।
है भला इसमे ही अब दिल को जमाना सीख लो ॥४॥
खर्चते धन रग से उत्सव दिखाने के लिये ।
पर दुख भजन के लिए कुछ भी तो देना सीख लो ॥५॥
भूख से पीड़ित हजारों बधु छोड़े धर्म को ।
धर्म मे भी शर्म आती दुख छुड़ाना सीख लो ॥६॥
दर्द होता देख के 'गजमुनि' पराये हाल को ।
पर न जो उफ भी करे उनको जगाना सीख लो ॥७॥

(५४)

षट् कर्म की साधना

(तर्ज - धनधर्मनाथ धर्मावतार सुन मेरी)

कहे मुनीश्वर सुनो बाई अरु भाई
षट् कर्माराधन की करो कमाई ॥टेर॥
अमूल्य नर भव पुण्य योग से पाया २,
सफल करो, मत फसो जगत की माया ।
नश्वर है सब ठाठ एक दिन जाना २
ऐसा कर लो कार्य न हो पछताना ॥
शास्त्र वचन को धार, तजो प्रभुताई... ॥१॥षट्...
देव गुरु अरु धर्म-तत्त्व त्रय जानो२,
सब शास्त्रों का सार यही पहिचानो ।
शक्ति सहित तीनों को जो आराधे२,
श्रेणिक नृप सम तीर्थंकर पद साधे ॥
प्रथम कर्म (कर्त्तव्य)देव भक्ति मन भाई ॥२॥षट्...

देव वही जो राग रोष से हीना२,
कनक कामिनी विजय करन प्रवीना ।
गुण वर्धन की उज्ज्वल भक्ति जानो २,
वीतरागता मय प्रभु है यह मानो ॥
निरवद्य भक्ति ही सबको सुखदाई... ॥३ ॥षट्...
अर्जुन माली ने की जिनवर की भक्ति २
सेठ सुदर्शन ने बतलाई शक्ति ।
उसी जन्म मे कर्म काट शिव पाया२,
सच्ची पूजा का फल यो शास्त्र सुनाया ॥
प्रभु भक्ति बिन देते जन्म गवाई... ॥४ ॥षट्...
कर्म दूसरा गुरु सेवा दिल धरलो२,
महाव्रती ज्ञानी मुनि वदन करलो ।
असग्रही सात्विक जीवन के धारी २,
शान्त जितेन्द्रिय बिना स्वार्थ उपकारी ॥
ऐसे गुरु ही भव जल देत तिराई... ॥५ ॥षट्...
प्रात समय मे मुनि दर्शन नित करना२,
चवदे भेदे प्रतिलाभी दुख हरना ।
सयम में उपकारक सेवा करिये२,
भूल कभी उन्मार्ग साख नही भरिये ॥
सद्गुरु ही भव जल से देत तिराई... ॥६ ॥षट्...
बलभद्र मुनि की मृग ने की थी सेवा २,
शुभ योग कल्प पचम का बन गया देवा ।
राय प्रदेशी को केशी ने तारा २,
नास्तिक था भरपूर बड़ा हत्यारा ॥
गुरु वचनो से उसने सुर गति पाई... ॥७ ॥षट्...

(५५)

गुरु वन्दना

(तर्ज - आओ आओ अय मेरे साधु)

आओ आओ अय प्यारे मित्रों ! गुरु दर्शन को आओ ॥

प्रात उठ मगलमय प्रभु का, निर्मल ध्यान लगाओ ।
भवभव के उपकारी सद्गुरु, उनको सीस नमाओ ॥१ ॥
कनक कामिनी के जो त्यागी, इन्द्रिय विषय विरागी ।
कर्म बध छेदन के हेतु, उनकी सेवा बजाओ ॥२ ॥
गुरु मुख देखे दु.ख टाले सब, होवे मगलाचार ।
सुर तरु सम सेवो नितभविजन, सुख शाति दातार ॥३ ॥
उपकारी सद्गुरु सम दूजा, नही कोई ससार ।
मोह भवर मे पड़े हुए को, यही बड़ा आधार ॥४ ॥
क्रोध लोभ से दूर हटाकर, देते हमें बचाय ।
इसीलिए कहता है 'गजमुनि', गुरु शरणा लो जाय ॥५ ॥

(५६)

सच्ची सीख

(तर्ज - आवो आवो ऐ मेरे साधु,)

गाओ गाओ अय प्यारे गायक, जिनवर के गुण गाओ ॥टेर ॥
मनुज जन्म पाकर नही कर से, दिया पात्र मे दान।
मौज शौक अरु प्रभुता खातिर, लाखो दिया बिगाड़ ॥१ ॥
बिना दान के निष्फल कर हैं, शास्त्र श्रवण बिन कान।
व्यर्थ नेत्र मुनि दर्शन के बिन, तके पराया गात ॥२ ॥
धर्म स्थान मे पहुँचि सके ना, व्यर्थ मिले वे पाव।
इनके सकल करण जग में, है सत्सगति का दाव ॥३ ॥
खाकर सरस पदार्थ बिगाड़े, बोल बिगाड़े बात।
वृथा मिली वह रसना, जिसने गाई न जिन गुण गात ॥४ ॥
सिर का भूषण गुरु वन्दन है, धन का भूषण दान।
क्षमा वीर का भूषण, सबका भूषण है आचार ॥५ ॥
काम मोह अरु पुद्गल के है, गायें गान हजार।
'गजमुनि' आत्म रूप को गाओ, हो जावे भव पार ॥६ ॥

(५७)

रक्षा-बन्धन

(तर्ज – जीव की जतना कर.)

जीव की रक्षा कर लीजे रे२
रक्षा बन्धन पर्व भाव से सच्चा पा लीजे ॥टेर॥
जीव दया ही रक्षा भारी, मन में बाधीजे ।
इह भव पर भव पामे साता, अविचल पद लीजे ॥१॥जीव॥
रक्षा बाधे बहन भाई के, पुरजन के भूदेव ।
ज्ञान-सूत्र से बाधे गुरुजन, जन्म मरण छीजे ॥२॥जीव॥
शील सूत्र सतवती बाधे, ज्यू सुभद्रा नार ।
सुर, नर, दानव रक्षा बल से, चरण नमे रीझे ॥३॥जीव॥

(५८)

चातुर्मास काल

(तर्ज - सुनलो भव प्राणी)

वर्षा ऋतु आई मुनिवर कीधा है बद विहार जी ।
आतम शान्ति का, करलो विचार जी ॥टेर॥
भूमि पर हरियाली छाई, जल थल हो गये एक ।
जिनवाणी बरसे है हृदय पर, धर्म बीज धर नेक ॥१॥वर्षा॥
विषय कषाय घटाय प्रेम से, नियम करो मन धार ।
धर्म क्रिया मे आलस अरू, मत लाओ बेदरकार ॥२॥वर्षा॥
श्रावक की आदर्श जीवनी, शिक्षा दे हितकार ।
धन दारा से ममत्व घटाकर, सद् व्यय करना सारजी ॥३॥वर्षा॥
सामायिक पौषध निशि भोजन, त्याग अरू यत्न विशेष ।
खान-पान आरभ कार्य मे, है यह कर्तव्य लेश जी ॥४॥वर्षा॥
जीवन के मलिनाचारो की मन से करना शुद्धि ।
योग्य क्षेत्र मे ही सम्पति को, बोने की हो बुद्धि ॥५॥वर्षा॥
पुण्योदय या इतर हेतु से, सन्धि मिली नवीन ।
सदुपयोग कर लाभ उठावे, तो है पुरुष प्रवीण जी ॥६॥वर्षा॥

सतारा के (धार्मिक) सात्त्विक बधु, करो धर्म उद्योत ।
फिर से चमको हिन्द सितारे, बढ़े जैन धर्म की ज्योतजी ॥७ ॥वर्षा ॥
रत्नवंश सौभाग्य गुरुपद - कज सेवी गज इद ।
हार्दिक भाव सुनाये तुमको (लेके)शरण वीर जिनन्दजी ॥८ ॥वर्षा ॥
(सतारा चातुर्मास सवत् १९९६ के अवसर पर)

(५९)

महावीर स्तुति

(तर्ज - सेवो सिद्ध सदा जयकार)

ध्याओ शासनपति महावीर, इससे होवे मगलाचार ॥टेर ॥
क्षत्रियकुल मे जन्म लिया प्रभु, धन धन वृद्धि अपार ।
राज्य विभव सब त्यागे आपने, योग लिया स्वीकार ॥१ ॥ध्याओ ॥
काम, क्रोध, मद षड् रिपुओ का, किया विजय सुखकार ।
सकल चराचर के ज्ञायक बन,बोध दिया हितकार ॥२ ॥ध्याओ ॥
विजया अपराजिता देवी मिल, सेव करे त्रिकाल ।
वर्द्धमान का ध्यान धरे नित,जो घर हर्ष अपार ॥३ ॥ध्याओ ॥

(६०)

पार्श्वनाथ स्तुति

(तर्ज - तुमको लाखो प्रणाम)

वामाजी के नन्दन, तुम हो मेरे आधार ॥ध्रुव ॥
काशी देश जन्म प्रभु लीना, अश्वसेन कुल उन्नत कीना ।
मम मन मदिर रहना, तुम हो... ॥१ ॥
जग मे अन्य पदार्थ नाना, उनमे नही आनन्द पिछाना ।
जीवन हित धर लीना, तुम हो... ॥२ ॥
साधन से शासन हित करना, इसी कामना में हो मरना ।
तन मन अर्पण करना, तुम हो... ॥३ ॥
सफल बनू निज हित साधन मे, यही आशा तुमसे है मन मे ।
लीन हू तेरी लगन में, तुम हो ... ॥४ ॥
चैत्र कृष्ण तिथि तव सुमिरण में, संघोन्नति ही बसी धुनन मे ।
'हस्ती' मगन मनन में, तुम हो... ॥५ ॥

(६१)

माता- पद

(तर्ज - महावीर भगवान तुमको लाखों प्रणाम)

मरुदेवीजी माता जग में अमर हुई ॥टेर॥

ऋषभदेव सा सुत देकर के, सच्चा सुख सबको दिखला के ।
बनी मुक्ति अधिकारी ॥१॥जग॥

चैत्र बदी अष्टमी तिथि जाए, ऋषभदेव सा सुत मन भाए ।
जग जननी पद पाई ॥२॥जग॥

भरत बाहुबली पौत्र हुए सौ, सूर्य वश का मूल हुआ सो ।
मा की महिमा छाई ॥३॥जग॥

सहस्त्र पीढ़िया देखी जिसने, रोग शोक नही पाया उसने ।
पूर्ण दया अवतारी ॥४॥जग॥

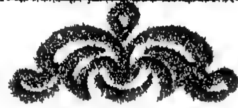
तन, धन सम्पत्ति सब सुख पाया, अन्त समय में केवल पाया ।
चढ़े भाव की श्रेणी ॥५॥जग॥

मरुदेवी सी बनलो बहना, पाओगी तुम भी सुख चैना ।
तज मिथ्या जजाल ॥६॥जग॥

माता का दिन खूब मनाती, अपना जननी पद विसराती ।
आज भटकती नारी ॥७॥जग॥

पंचम खण्ड

परिशिष्ट



प्रथम चार खण्डों में अविभक्त सामग्री का समावेश इस खण्ड में किया गया है। इसमें चार परिशिष्ट हैं– 1. चरितनायक की साधना में सहयोगी प्रमुख साधक महापुरुष 2. चरितनायक के शासनकाल में दीक्षित सन्त–सती 3. कल्याणकारी संस्थाएँ और 4. आचार्यप्रवर के 70 चातुर्मास : एक विवरण।

प्रथम परिशिष्ट में पूज्य चरितनायक के गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी म.सा., शिक्षा गुरु स्वामीजी श्री हरखचन्द जी म.सा., संघ–व्यवस्थापक श्री सुजानमल जी म. सा., शासन सहयोगी श्री भोजराजजी म.सा. एवं पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. के योगदान का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। द्वितीय परिशिष्ट में चरितनायक के शासनकाल में दीक्षित होकर साधना में निरतिचार रूप से संलग्न रहने वाले प्रमुख सन्त–सतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। तृतीय परिशिष्ट में उन कल्याणकारी संस्थाओं का परिचय है जो चरितनायक के शासनकाल में सुज्ञ, विवेकशील एवं जागरूक श्रावकों द्वारा उपकार की भावना से स्थापित की गई हैं। अन्तिम परिशिष्ट में चरितनायक पूज्य गुरुदेव के 70 चातुर्मासों की सारिणी है, जिसमें शासनकाल की प्रमुख घटनाओं एवं गच्छ के संतों के चातुर्मासों की भी सूचना संकलित है।

चरितनायक की साधना में प्रमुख सहयोगी साधक महापुरुष

चरितनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के व्यक्तित्व-निर्माण एव साधना में जिन महापुरुषो का सहयोग रहा है, उनकी कुछ चर्चा ग्रन्थ के आमुख में की गई है। यहाँ पर चरितनायक के गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. प्रमुख सहयोगी सन्तों माता महासती रूपकँवर जी एव उनकी गुरुणी महासती बड़े धनकवरजी म.सा का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

- पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा.

"गुरु कारीगर सारखा, टांकी वचन रसाल।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार॥"

जीवन के कुशल शिल्पी जिन महासाधक ने अपनी गुरु-गभीर शिक्षा-दीक्षा से बालक हस्ती के जीवन को घड़ कर उन्हे जन-जन का आराध्य गुरु, रत्नत्रय का देदीप्यमान रत्न व जिनशासन का दिव्य दिवाकर बनाने का महनीय कार्य किया, उनका नाम है पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा.।

आपका जन्म जोधपुर निवासी श्रेष्ठिवर्य श्री भगवानदास जी चामड़ की धर्मशीला धर्मपत्नी पार्वती देवी की रत्नकुक्षि से वि.स. १९१४ कार्तिक शुक्ला पचमी को हुआ। सौभाग्य पंचमी को जन्म होने से आपका नाम शोभाचन्द्र (सौभाग्यचन्द्र) रखा गया।

बालक शोभा को अध्ययन हेतु पाठशाला भेजा गया, पर आपमे बाल्य सुलभ चचलता से अधिक गभीरता थी। आप बचपन से ही एकान्त प्रिय थे। अध्ययन में मन लगता न देख कर पिता ने आपको व्यापार मे जोड़ दिया, पर जिन्हें रत्नत्रय की आमदनी इष्ट हो, वे भला सासारिक द्रव्यार्जन मे कहाँ अटकते।

शुभ सयोगवश एव आपके असीम पुण्योदय से पूज्यपाद आचार्य कजोड़ीमल जी म.सा. का पदार्पण हुआ। आपके धीर-वीर-गम्भीर व्यक्तित्व, साधनानिष्ठ जीवन व पीयूषपावन वाणी ने बालक शोभा को सदा-सदा के लिये अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। आचार्य श्री के सान्निध्य से शोभा के वैराग्य सस्कार सुदृढ होते गये। माता-पिता ने बहुत समझाया, सयम के परीषहों का भान कराया, पर सच्चे विरागी को कौन बाधे रख सकता है। अतत वि.स. १९२७ माघ शुक्ला पचमी का सुप्रभात आया, जब बालक शोभा ने सयम-जीवन स्वीकार कर अपने आपको सदा-सदा के लिये पूज्य कजोडीमलजी म.सा. को समर्पित कर दिया। अब आपके दो ही लक्ष्य थे —गुरु-सेवा व ज्ञानाभ्यास। गुरु-सेवा करते हुए आपने शास्त्रों का अच्छा ज्ञान कर लिया, साथ ही सस्कृत व व्याकरण का भी पूरा अभ्यास कर लिया।

वि.स. १९३६ मे पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. के स्वर्गारोहण के पश्चात् आपने अपने आपको गुरुभ्राता पूज्य श्री विनयचन्दजी म. सा की सेवा में समर्पित कर दिया। आपका पूज्य आचार्य श्री विनयचदजी म.सा. के प्रति सहज समर्पण, अनुपम श्रद्धा-भक्ति देख कर हर कोई आगन्तुक आश्चर्य चकित रह

जाता।

सेवा व समर्पण की आप प्रतिमूर्ति थे। नयन-ज्योति मद होने से पूज्य आचार्य श्री विनयचदजी म.सा. को १४ वर्षों तक जयपुर स्थिरवास विराजना पड़ा, तब उनकी अहर्निश जो सेवा आपने की वह जिनशासन के इतिहास मे सदा स्वर्णाक्षरों में अकित रहेगी। रात्रि में पूज्य श्री अगर करवट भी बदलते तो आहट मात्र से ही आप जाग जाते। निद्रा के क्षणों में अप्रमत्त भाव से सेवा हेतु सजगता का आपने अनुपम आदर्श उपस्थित किया।

वि.स. १९७२ में पूज्य आचार्य श्री विनयचद जी म.सा के महाप्रयाण के बाद चतुर्विध सघ द्वारा अजमेर में फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को आपको इस गौरवशाली परम्परा के आचार्य पद पर अधिष्ठित किया गया। आचार्य के रूप में आपने अपनी अमिट छाप छोड़ी व सहस्रो व्यक्तियों को धर्म से जोड़ कर उन्हे सस्कार प्रदान किये। एक सम्प्रदाय के आचार्य होकर भी असाम्प्रदायिकता, सभी के साथ स्नेह आपकी अनूठी विशेषता थी। उस समय के मारवाड़ी भक्त समुदाय में एक मात्र कोट्यधिपति सेठ सोहनमलजी सा. चोरड़िया (मालिक अगरचन्द मानमल, मद्रास) के नौ वर्षीय दत्तक पुत्र श्री मोहनमलजी व उनके माता-पिता द्वारा निवेदन करने एव स्वय मागे जाने पर भी आपने पूर्व गुरु आम्नाय पलटाने से स्पष्ट इनकार कर दिया। यह आपकी निस्पृहता का अनुपम उदाहरण है।

यही नही भक्तो मे कौन आया, नही आया, इससे भी आप सर्वथा निरपेक्ष थे। सदा स्वाध्याय व साधना में लीन अप्रमत्त जीवन के आप साकार स्वरूप थे। स्वय चरितनायक ने अनेको बार आपका स्मरण करते हुए फरमाया "मेरे गुरुदेव ने कभी टेका नही लिया। उनके जीवन का मूलमत्र था - सरलता और अप्रमत्तता।"

अपने शिष्यो को किस प्रकार गढ़ना, इसमे आप निष्णात थे। कुशल शिल्पी की भाँति आपने अपने शिष्यो की विशेषताओं को किस प्रकार विकसित किया, इसका साक्षात् उदाहरण हम बालक मुनि हस्ती के जीवन से देख सकते हैं। आप अपने शिष्यों से आगम अध्ययन के साथ ही सस्कृत, प्राकृत व व्याकरण मे निष्णात बनाने हेतु सदा यत्नशील रहते। आप फरमाया करते-

"घाल गले मे गूदड़ी, निश्चय माडे मरण।
गो ची पु लि नित करे, तब आवे व्याकरण॥"

आचार्य श्री स्वाध्याय, साधना व क्षण-क्षण के उपयोग के प्रति सजग थे। आप नित्य प्रति उत्तराध्ययन सूत्र का पूर्ण स्वाध्याय किया करते। उत्तराध्ययन सूत्र आपको निजनामवत् कठस्थ था, यहाँ तक कि पीछे के क्रम से भी पूरा उत्तराध्ययन सूत्र फरमा देते। अठाई जैसा तप होने पर भी आप प्रवचन फरमाते व आवश्यक होने पर स्वय गोचरी भी पधार जाते। सहजता, सरलता, अल्हड फक्कड़पन, सेवा, साधना व स्वाध्यायरतता जैसी अनेक विशेषताएँ आपकी जीवन-शैली का मानो अगभूत हो गई।

आपने जिन महापुरुषो को दीक्षा प्रदान की, वे हैं —साधना की प्रतिमूर्ति श्री सागरमलजी म.सा., श्री लालचदजी म.सा., चरितनायक श्री हस्तीमलजी म.सा., श्री चौथमलजी म.सा एव श्री बडे लक्ष्मीचन्दजी म.सा। आपके शासनकाल में १६ महासतियों की दीक्षा हुई - (१) महासती श्री केवलकुवरजी (२) महासती श्री झमकू जी (३) महासती श्री किशनकवरजी (४) महासती श्री रूपकवरजी (५) महासती श्री अमृतकवरजी (६) महासती श्री केवलकवरजी (७) महासती श्री धूलाजी (८) महासती श्री सज्जनकंवरजी (९) महासती श्री सुगनकंवरजी (१०) महासती श्री छोगाजी (महामन्दिर वाले) (११) महासती श्री विसनकवरजी (१२) महासती श्री रतनकवरजी (१३) महासती श्री चैनकंवरजी (१४) महासती श्री हुलासकवरजी (१५) महासती श्री सुवाजी (१६) महासती श्री धूलाजी।

जीवन के कुशल शिल्पकार आचार्य भगवन्त शिष्यों में छिपी प्रतिभा को पहिचानने में कितने निष्णात थे, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप द्वारा बालक मुनि हस्ती को अपना उत्तराधिकारी आचार्य मनोनीत किये जाने से मिलता है। आप जैसा महापुरुष ही मात्र ५ वर्ष के सयम-पर्याय वाले व १५ वर्ष की वय वाले शिष्य में रही विराट् आत्मा का अनुभव कर इस गुरुतर दायित्व के लिये यह साहसिक मनोनयन कर सकता था।

अनेक ग्राम-नगरों को जीवनपर्यन्त अपने विचरण-विहार व साधना से पवित्र पावन करने वाले महापुरुष को स्वास्थ्य की कमजोरी से वि.स. १९७९ माघ शुक्ला पूर्णिमा से जोधपुर में अपना स्थिरवास स्वीकार करना पड़ा। आपके स्थिरवास विराजने से जोधपुर नगर मानो तीर्थधाम ही बन गया। अपने सयम सौरभ से ५६ वर्षों तक सघ को सुरभित कर अमरता का पुजारी यह महापुरुष वि.स. १९८३ श्रावण कृष्णा अमावस्या को सथारा-समाधिपूर्वक अमरलोक के लिये महाप्रयाण कर गया।

- स्वामीजी श्री हरखचन्दजी म.सा.

जिन महापुरुष ने बालक हस्ती में निहित प्रतिभा को पहिचाना कि यह बालक दीक्षा लेकर भविष्य मे शासन का आधार बन सकता है। ऐसी सूझ-बूझ के धनी, शासन हित-चिन्तन में सदा निरत रहने वाले महापुरुष का नाम है स्वामी जी श्री हरखचन्दजी म.सा (श्री हर्षचन्दजी म.सा)।

आप पूज्य आचार्य श्री विनयचदजी म.सा के आचार्य काल में दीक्षा लेने वाले प्रथम महापुरुष थे। सयमधनी इन महापुरुष ने गुरु भगवतों की सेवा करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना में लगा दिया। जिनशासन सदा जयवन्त रहे, रत्नसघ परम्परा का गौरव सदा वर्धमान हो व यह परम्परा महापुरुषो की सयम-साधना की सौरभ से सदा सुवासित रहे, इस ओर आप सदा सचेष्ट रहे।

छः सात वर्षीय अबोध बालक हस्ती के अतर मे रहे हुए वैराग्य बीज को विकसित करना, अपने हृदय का असीम स्नेह उडेल कर उन्हें ज्ञानाराधना हेतु प्रेरित करना आप जैसे महापुरुषो का ही उपकार था। आपने बालक हस्ती के साथ ऐसा आत्मीय सबध स्थापित किया कि बालक हस्ती सदा आपकी सेवा में ही ज्ञान सीखने में लगा रहता। जैसे एक गोवत्स सदा अपनी माँ से लगा रहता है, कुछ वैसा ही स्नेह आकर्षण इन वयोवृद्ध महापुरुष मे बालक हस्ती को नज़र आया।

वैराग्य अवस्था मे ही बालक हस्ती को (मात्र नौ-दस वर्ष की वय मे ही आपने कितना सुयोग्य बना दिया, इसके लिये पूज्य आचार्य श्री शोभाचदजी म.सा के जीवन चरित्र 'अमरता का पुजारी' मे वैरागी हस्ती का परिचय देते हुए लिखा गया है - "होनहार बीरवान के होत चीकने पात"। अतएव शीघ्र ही आप मुनि श्री हर्षचन्दजी म के उपदेश, वचनों और सयम के अनुकूल शिक्षाओं से साधु-जीवन के सर्वथा योग्य बन गये। मुनि श्री हर्षचन्दजी म. ने अजमेर में रहते हुए आपको पच्चीस बोल, नवतत्त्व, लघुदडक, समिति-गुप्ति, व्यवहार सम्यक्त्व, श्वासोच्छ्वास, ९८ बोल और भगवती एव पन्नवणा के मिला कर २५-३० थोकड़े, वीर-स्तुति, नमिप्रव्रज्या और दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का अभ्यास करा दिया था। सस्कृत में शब्द रूपावली भी पूरी कठस्थ करा दी गई। "

वैरागी हस्ती के अध्ययन क्रम के उल्लेख से स्वामीजी की अनेक विशेषताएँ स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती हैं कि आप थोकड़ों के गहन ज्ञाता, आगम प्रेमी, एक कुशल शिक्षा-गुरु एव बालक हस्ती के सच्चे संरक्षक थे, जिन्होंने एक कुशल माली की भांति बालक हस्ती के जीवन-उपवन में शिक्षा व सस्कारों का बीज वपन किया।

बाबाजी श्री हरखचन्दजी महाराज संयम के प्रति जागरूक होने के साथ आत्म-नियन्त्रण एवं अप्रमत्तता के सजग साधक थे । वे ओढ़ने के लिये मात्र अपने पास ढाई हाथ लम्बी एक चद्दर रखते, जिसमें पूरे पैर फैलाये नहीं जा सकते थे। उनका नियम था कि पैर फैलाकर नहीं सोना, पैर फैलाने से दुगुनी नींद आएगी। इस प्रकार से साधनाशील स्वामीजी द्वारा रत्नवंश परम्परा पर किये गए उपकार से हम सब उपकृत एवं श्रद्धावनत हैं। वि.सं. १९७९ के अजमेर वर्षावास में संथारा-समाधिपूर्वक इस महापुरुष ने समाधिमरण प्राप्त कर परलोक गमन कर दिया।

• शासन सहयोगी श्री सुजानमल जी म.सा.

जिन महापुरुष ने लघुवय मनोनीत आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के वयस्क होने तक अन्तरिम काल में उनके प्रतिनिधि रूप मे महिमाशाली रत्नवंश-परम्परा का कुशल नेतृत्व किया, वे थे—स्वनामधन्य स्वामी जी श्री सुजानमलजी म.सा।

आपका जन्म रत्ननगरी जयपुर के प्रतिष्ठित श्रेष्ठिवर्य सुश्रावक श्री मालीरामजी पटनी की धर्मशीला धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती दाखीबाई की कुक्षि से वि.स १९३८ आसोज कृष्णा नवमी को हुआ। बचपन से ही निसर्ग से प्राप्त व सत समागम से विकसित वैराग्यसस्कार पुष्ट होते गये व वि.स १९५१ चैत्र शुक्ला दशमी को १३ वर्ष की अल्पायु में आपने नागौर मे तपस्वी श्री बालचन्दजी म.सा के मुखारविन्द से भागवती श्रमण दीक्षा अंगीकार की।

नवदीक्षित मुनिश्री ने प रत्न श्री चन्दनमलजी म.सा. की सन्निधि मे रहकर श्रुतज्ञान का अभ्यास किया, साथ ही अनेको थोकड़े भी कठस्थ किये। सगीत की ओर आपकी विशेष अभिरुचि थी। महीने मे आप कम से कम चार उपवास सयम-जीवन के प्रारम्भ से ही किया करते। प्रवचन कला में आप कुशल थे।

आपने जोधपुर, पीपाड़, जयपुर, पाली, ब्यावर, भोपालगढ़, नागौर, अजमेर, रीया, किशनगढ़, रतलाम, उदयपुर, अहमदनगर, सतारा, गुलेदगढ़, लासलगाव, उज्जैन आदि विभिन्न ग्राम-नगरो मे वर्षावास कर जिनवाणी की पावन सरिता प्रवाहित की। आपने अपने जीवन मे सम्प्रदाय के तीन आचार्यों बहुश्रुत आचार्य श्री विनयचन्दजी म.सा., परम पूज्य आचार्य श्री शोभाचदजी म.सा. एव चरितनायक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा और तपस्वी शिरोमणि श्री बालचदजी म.सा., चन्दन सम शीतल श्री चन्दनमल जी म.सा प्रभृति महापुरुषो की सेवा की।

परम पूज्य आचार्य श्री शोभाचद जी म.सा. के देवलोक गमन के समय चतुर्विध सघ ने आप जैसे वय व दीक्षा स्थविर महामुनि के नेतृत्व मे ही यह निर्णय लिया कि पूर्वाचार्य शोभाचदजी म.सा. के आदेशानुसार मुनिश्री हस्तीमलजी म.सा हमारे सघ के भावी आचार्य होगे। पर मुनि हस्ती की उम्र अभी साढे १५ वर्ष की थी, वे स्वय भी अध्ययन के लिए पर्याप्त समय चाहते थे और अभी दायित्व सभालने के अनिच्छुक थे, अत शासन सभालने के लिये स्वाभाविक तौर पर सबकी दृष्टि आपकी ओर ही थी। लगभग चार वर्ष तक आपने कुशलतापूर्वक सम्प्रदाय की सारणा, वारणा, धारणा एव सरक्षण का दायित्व सभाला। मनोनीत आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज को शासन सभालने मे सर्वथा सक्षम पाकर आपने अपना अभिप्राय सहवर्ती सतो एव चतुर्विध सघ के समक्ष रखा। तदनुसार वि.स १९८७ वैशाख शुक्ला तृतीया को जोधपुर में आचार्य पद महोत्सव नियत हुआ।

नियत दिन अक्षय तृतीया के दिवस पर चतुर्विध सघ की साक्षी व हजारो की जनमेदिनी की उपस्थिति में आपने व श्री भोजराज जी म ने स्वर्गीय आचार्य श्री शोभाचद जी म.सा. की पूज्य पछेवडी किशोरवय मुनि श्री हस्तीमलजी म को ओढाई तो सभी मानो मत्रमुग्ध अपलक दृष्टि से यह नयनाभिराम प्रसग देखते रह गये। उस

समय आपने फरमाया जिसका कुछ अश इस प्रकार था—"यशस्विनी रत्नसघीय - परम्परा के षष्ठ पट्टधर स्वनामधन्य प्रात. स्मरणीय श्रद्धेय आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज को स्वर्गस्थ हुए आज ३ वर्ष ९ मास और ३ दिन पूरे होने जा रहे हैं। मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज ने अध्ययन का समय मागा था। चतुर्विध संघ ने मुनि श्री की दूरदर्शिता और श्लाघनीय विवेकपूर्ण इच्छा को बहुमान देकर इन्हें अध्ययन का अवसर दिया और सघ-संचालन की व्यवस्था का दायित्व मुझे सौंपा। मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज अपना अध्ययन सम्पन्न कर सुयोग्य विद्वान् बन गये हैं। इनके सर्वविदित विनय, विवेक, वाग्वैभव, प्रत्युत्पन्नमतित्व, विलक्षण प्रतिभा, कुशाग्रबुद्धि, क्रियापात्रता, अथक श्रमशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, मार्दव, आर्जव, निरभिमानता आदि गुणो पर हम सबको गर्व है। ये सुयोग्य आचार्य के सभी गुणों से सम्पन्न हैं। हम सब इन्हे आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की सम्प्रदाय के सातवें पट्टधर के रूप में आचार्यपद पर प्रतिष्ठित करते हैं। ये वय से भले छोटे हैं, किन्तु गुणो एव पद से बहुत बड़े हैं। मुझे भी आपकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना है और आप सब सन्त-सतियो तथा श्रावक-श्राविकाओं को भी ऐसा ही करना है।"

आपके उद्बोधन से आपकी लघुता, उदारता, सरलता के साथ ही सघनायक के प्रति सर्वतोभावेन समर्पण व समादर की भावना परिलक्षित होती है।

स्वामीजी महाराज सरलता के भडार थे। उनका कण-कण सरलता के मधुर रस से व्याप्त था। मन, वाणी और काय की त्रिवेणी मे सरलता सदा प्रवाहित होती रहती थी। वे कृत्रिमता से कोसो दूर थे। उनके हृदय मे जो कुछ भी होता, रसना से वही प्रकट हो जाता। दोनो मे अनुपम अद्वैत था। उनका अन्तर सर्वथा स्वच्छ, निर्मल व निर्विकार था। पुराण पुरुष होते हुए भी उनके विचारों में सहज उदारता व अद्भुत सजीवता थी। वे जपी, तपी और स्पष्टवादी सत थे। आप जैसा सोचते, वही बोलते व करते। मन, वचन व कर्म मे अद्भुत साम्य था। आपके जीवन की यही विशेषता व हृदय की सरलता आपके तीखे स्पष्ट वचनो को भी मृदु बना देती। आपका व्याख्यान जोशीला व प्रेरणाप्रद होता। आपकी वाणी मे ओज, गाभीर्य व परिणाम की मधुरिमा थी। ७० वर्ष से ऊपर की वय मे भी आपमे तरुणों सा उत्साह व सयम मे अद्भुत पराक्रम परिलक्षित होता था। भक्तजन आपको आदर से 'बाबाजी महाराज' के सबोधन से सबोधित करते थे।

आपका अन्तिम समय जोधपुर व विशेषत काकरिया बिल्डिंग में व्यतीत हुआ। आपकी इच्छा थी कि अन्तिम समय मे पूज्य श्री (हस्तीमल जी म.सा.) का सान्निध्य-लाभ मिले। आपको अपनी भावनानुसार पूज्य आचार्यदेव का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

वि.स २०१० माघ कृष्णा चतुर्दशी को पिछली रात्रि में सथारापूर्वक इस महायोगी ने समाधिमरण प्राप्त किया।

• सेवाव्रती साधक श्री भोजराज जी म.सा.

दीक्षा, वय और अनुभव में वृद्ध होकर भी जिन महापुरुष ने अपने लघुवय आचार्य की पूर्ण श्रद्धा व समर्पण भाव से सेवा की तथा अध्ययन काल में सरक्षकवत् मातृतुल्य सेवा की, वे महापुरुष थे—सेवाव्रती साधक श्री भोजराज जी महाराज साहब।

आपका जन्म वि.सं. १९४४ में आसोप-खिवसर के मध्य स्थित ललाव गाव के जाट परिवार मे हुआ। शुभ संयोगवश आप नौकरी हेतु भोपालगढ़ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री मोतीचन्द जी चोरड़िया के परिवार में आये। जहाँ सहज ही आपको संत-समागम का स्वर्णिम सुअवसर प्राप्त हुआ। महापुरुषों का समागम भव-भव के बन्धन काटने

का मार्ग प्रशस्त कर देता है। आपके भी वैराग्यसस्कार विकसित हुए। वि.स. १९५७ में महासती जी श्री सिद्धू जी ने जोधपुर मे संथारा ग्रहण किया। महासती जी के दीर्घकालीन सथारे के समय दर्शनार्थ भोपालगढ़ के भाई-बहिनों के साथ आप भी जोधपुर गए। वही आपको पडित मुनि श्री चन्दनमलजी म.सा के दर्शन व उपदेश श्रवण का सुअवसर मिला। सेठानी जी श्रीमती सोनी बाई जी की अनुमति से आप पडितमुनि श्री के सान्निध्य में रहे, जहाँ आपने साक्षरता व प्रारभिक धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। पडित मुनि श्री की सेवा में शिक्षा व सस्कार पाकर आपका वैराग्य दृढ़ से दृढतर बनता गया। मात्र १४ वर्ष की वय मे वि.स. १९५८ आषाढ कृष्णा पचमी को सेठों की रीया मे आपने स्वामीजी श्री चन्दनमल जी म.सा. का शिष्यत्व स्वीकार कर भागवती श्रमण दीक्षा अगीकार कर ली।

दीक्षा लेकर आपने सयम-साधना के साथ गुरु भगवतो व शासन की सेवा को अपना लक्ष्य बना लिया। आप उन विरल साधकों में से एक हैं जिन्होंने तीन-तीन आचार्यों (आचार्य श्री विनयचदजी महाराज, आचार्य श्री शोभाचद जी महाराज एवं चरितनायक आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज) की सेवा की।

३७ वर्ष का आपका सयम-पर्याय सेवा का पर्याय समझा जा सकता है। लघुवय आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज जब स्थडिल पधारते तो आप सम्मानार्थ साथ पधारते व आग्रहपूर्वक स्थडिल की पातरी भी हाथ मे लेने में सकोच नही करते। अध्ययनरत लघुवय आचार्य श्री जब कमरे मे अध्ययन करते तो आप मानो प्रहरी बन बाहर विराजते व भक्त समुदाय को बाहर से ही मौन दर्शन करने का सकेत करते। आप भिक्षाचरी के विशेषज्ञ सत थे। किनके लिए क्या आवश्यक व उपयोगी है, इसका सदा सतर्कता से ध्यान रखते। लघुवय आचार्य श्री व अन्य अध्ययनरत सतो के लिये बौद्धिक रूप से क्या उपयोगी, साथ ही विकार भाव जागृत ही न हो, ऐसे हित मित पथ्यकारी आहार की गवेषणा करने का सदा खयाल रखते। वस्तुत एक कुभकार जैसे मिट्टी के बर्तनो को घड़ने मे अदर हाथ रख कर चोट करता है, माता जैसे स्नेह, ममत्व व हित भाव से शिशु को बड़ा करती है कुछ वैसा ही योगदान आचार्य हस्ती के जीवन-निर्माण मे आपका रहा। आपको अगर आचार्य हस्ती की धाय मा की उपमा दे दी जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

इन्द्रियो पर आपका बड़ा नियन्त्रण था। गिनती की कुछ चीजो के सिवाय लगभग सभी मिष्ठान्नो के त्यागी थे। जो अच्छी से अच्छी वस्तु भिक्षा मे मिलती, उसे वे साथी सन्तो को दे देते। आपने समस्त हरी सब्जी का भी त्याग कर दिया था। महीने मे पाच दिन के सिवाय आपको चार विगय का त्याग था।

आचार्य श्री के दक्षिण प्रवास की ओर विहार मे भी आप उनके साथ थे। रतलाम मे वि.स. १९९४ फाल्गुन शुक्ला एकादशी को आपने सलेखना सथारा स्वीकार कर द्वादशी को प्रात ५ बजे ब्रह्मवेला मे अपना अन्तिम मनोरथ पूर्ण कर महाप्रयाण कर दिया। बहुत कम ऐसे महापुरुष होते है जो दूसरो के निर्माण मे अपने अस्तित्व को भी समर्पित कर देते हैं। ऐसे ही महापुरुष थे स्वामी जी भोजराजजी महाराज।

• पं. रत्न श्री बडे लक्ष्मीचन्दजी म.सा

रत्नसघ रूपी हार की बहुमूल्य मणि, मर्मज्ञ शास्त्रवेत्ता, आगम रसिक, शोधप्रिय इतिहासज्ञ एव विशुद्ध श्रमणाचार के पालक और प्रबल समर्थक थे प रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा.। सवत् १९६५ मे मारवाड़ के हरसोलाव ग्राम मे श्री बच्छराजजी बागमार की धर्मपत्नी श्रीमती हीराबाई की कुक्षि से जन्मे लूणकरण जी अल्पायु मे पिताश्री का वियोग होने पर विक्रम सवत् १९७९ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को १४ वर्ष की वय मे मुथाजी के मदिर, जोधपुर मे पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य मे भागवती दीक्षा अगीकार कर 'मुनि लक्ष्मीचन्दजी'

बन गए। आपको प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओ का विशेष ज्ञान था। आप सत्य बात कहने में स्पष्ट रहते थे। भीतर और बाहर से आप एक थे। सरल एव भद्रिक प्रकृति के सन्त थे। लम्बे कद एव सुडौल देह के धनी पण्डितरत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा ने लगभग ५६ वर्षों की सुदीर्घ अवधि तक अनन्य निष्ठा के साथ श्रमण धर्म का पालन करते हुए अनेक हस्तलिखित एव प्राचीन ग्रन्थो का अनुशीलन कर स्थानकवासी परम्परा के विशिष्ट कवियो, तपस्वियो, साध्वियो आदि के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्री रतनचन्द्र पद मुक्तावली, सुजानपद सुमन वाटिका, तपस्वी मुनि बालचन्द्रजी , सन्त-जीवन की झाकी आदि अनेक कृतिया आपके परिश्रम से प्रकाश मे आ सकी। परम्परा के सन्त-सतियो का जीवन चरित्र, जो सहज उपलब्ध नही था, उसे श्रमपूर्वक खोजकर आपने समाज के सामने रखा। 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' के लेखन मे भी आपका सहयोग सराहनीय रहा।

सन्त-सतियों के विद्याभ्यास मे आपकी गहन रुचि थी और समय-समय पर आप उनको पढ़ाया भी करते थे। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा के सतीर्थ्य होते हुए भी आपने जिस निष्ठा एव समर्पण से उनकी आज्ञा मे अपना सर्वस्व अर्पित किया, वह साधको के लिए प्रेरणापुज के रूप मे स्मरणीय रहेगा। आप एक प्रकार से आचार्यदेव के दक्षिण हस्त थे।

लगभग २ वर्ष जोधपुर मे स्थिरवास विराजित रहने पर आपके सुशिष्य श्री मानचन्द्र जी म.सा (वर्तमान उपाध्याय प्रवर) ने आपकी तन, मन से सेवा कर अनूठा आदर्श उपस्थित किया। काल धर्म को प्राप्त होने के १० दिन पूर्व पाट से गिर जाने के कारण आपकी गर्दन की हड्डी टूट गई थी , जिसके अनन्तर आपने देह की विनश्वरता को जानकर आचार्यप्रवर की स्वीकृति मिलने पर आलोचना प्रायश्चित्तपूर्वक चित्त को समाधि मे लगा लिया और पौष शुक्ला १० सवत् २०३५ दिनाक ७ जनवरी १९७९ को प्रात ५ ३० बजे आप जोधपुर मे देवलोक गमन कर गए। व्याख्यान स्थगित रखकर आचार्यप्रवर एव सन्त-मण्डल ने इन्दौर मे आपको श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

- महासाधिका महासती श्री बड़े धनकवर जी म.सा.

जिनशासन उन्नयन मे सत भगवतो के साथ ही महासतीवृन्द का महिमाशाली योगदान रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि याकिनी महत्तरा ने हरिभद्रसूरि को प्रेरित कर जिन-धर्मानुयायी ही नही, मोक्ष-मार्गानुयायी बनाया जो आगे चलकर जिनशासन के युगप्रधान प्रभावक आचार्य बने। अनेकों महासतियो के उपकार के प्रसग जैन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठो पर अकित हैं। रत्नवश परम्परा को भी समय-समय पर सयम की उत्कट आराधिका महासतियो ने अपनी जीवन-ज्योति, सयम-साधना व ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना से समृद्ध किया है। ऐसी ही एक महासाधिका का नाम है महासतीश्री बड़े धनकवर जी म.सा।

महासतीश्री बडे धनकवर जी म.सा. मे ज्ञान-क्रिया का मणिकाचन सयोग था। महाव्रतों के निरतिचार पालन व सयम के प्रति आप सजग रहते। सयम-जीवन मे सहज समझे जाने वाले दोष भी न लग पाये, इस ओर आप सदा सचेष्ट रहते।

क्रिया के साथ-साथ ही महासतीजी सदा ज्ञान-साधना मे रत रहते। स्वय ज्ञान-ध्यान मे रत रहना व दूसरो को प्रेरित करना, उन्हें ज्ञानदान देना, आपके जीवन का लक्ष्य था। रूपकवर बाई व उनके एकाकी पुत्र हस्ती के हृदय मे वैराग्य बीज का पोषण कर उन्हें सयम-ग्रहण हेतु प्रेरित करने का प्राथमिक श्रेय आपको ही है। बालक हस्ती व उनकी मा को संयम की ओर प्रेरित कर आपने जिनशासन एव रत्नसघ की महती सेवा की। महासती जी श्री

रूपकंवर जी ने आपकी नेश्राय मे ही दीक्षा अंगीकार कर अपने जीवन को सार्थक किया।

आपका जन्म सुरपुरा (देशनोक जिला बीकानेर) के श्रेष्ठिवर्य श्री जसरूपमलजी गोलेछा की धर्मशीला धर्मपत्नी श्रीमती नानी बाई की कुक्षि से हुआ। वय प्राप्त होने पर आपका विवाह देशनोक निवासी श्री हजारीमलजी भूरा के साथ सम्पन्न हुआ।

जीवन सासारिक सुखोपभोग और ऐश्वर्य के साथ व्यतीत हो रहा था, पर 'गहना कर्मणो गति' यौवनावस्था में ही आपका यह सुख सुहाग काल के क्रूर पजों से न बच सका।

महापुरुषों के जीवन में आई विपत्तियाँ भी कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर देती है। आपके पुण्योदय से आपको ज्ञान-क्रिया की धनी महासतीजी मल्लाजी म.सा. का सान्निध्य मिला। महासतीजी के दर्शन, उपदेश सान्निध्य से आपको ससार की असारता व विनश्वरता का बोध हुआ और आपने नागौर मे महासतीजी का शिष्यत्व स्वीकार कर भागवती श्रमणी-दीक्षा अंगीकार कर अपने आपको सदा के लिये समर्पित कर दिया। गुरुणी जी म सा. की सेवा में रहकर आपने शास्त्रों व थोकड़ो का अच्छा अभ्यास किया।

वृद्धावस्था मे आपका स्थिरवास भोपालगढ़ मे हुआ। दीर्घकाल तक आपके वहाँ विराजने से अनेक बहिनो ने सामायिक, प्रतिक्रमण व थोकड़ों का अभ्यास किया। भोपालगढ़ की बहिनों को धर्म-सस्कार देने व उन्हें ज्ञान-ध्यान सिखाने मे आपका महनीय उपकार रहा है। वि.स. २००८ के फाल्गुन मास मे भोपालगढ़ में ही आपका महाप्रयाण हो गया।

- महासती श्री रूपकवर जी म.सा.

'स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपम जननी प्रसूता।'

इस विश्व मे लाखों माताएँ पुत्र को जन्म देकर अपने आपको सौभाग्यशाली समझती हैं, पर ऐसी माताएँ विरल होती हैं, जो लाखो भक्तो की असीम आस्था के केन्द्र जिनशासन के देदीप्यमान रत्न सत-शिरोमणि आचार्य हस्ती जैसे पुत्र रत्न को जन्म देती हो। शासन प्रभावक आचार्यो को जन्म देने वाली माताओं मे भी आप जैसी माताएँ विरल होती हैं, जो स्वय अपने पुत्र की कल्याण-कामना एव उसके आत्म-हितार्थ उसे सयम-ग्रहण हेतु प्रेरित करे, और स्वय भी दीक्षा लेकर सच्चा आदर्श प्रस्तुत करे।

रूपकुवर का जन्म पीपाड़ निवासी राजमान्य श्रेष्ठिवर्य श्री गिरधारीलालजी मुणोत की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती चन्द्राबाई की रत्नकुक्षि से हुआ। भरे-पूरे परिवार मे आपका लालन-पालन हुआ। यौवन मे प्रवेश होते ही आपका विवाह पीपाड़ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री दानमलजी बोहरा के सुयोग्य सुपुत्र श्री केवलचदजी बोहरा के साथ सम्पन्न हुआ। सासूमाँ नौज्याबाई की छत्रछाया में पति के सग आपका वैवाहिक जीवन सासारिक सुखों से व्यतीत हो रहा था। किन्तु प्रकृति को यह मजूर नही था, उसे तो आपको शासन आधार को पुष्ट करने का निमित्त बनाना था। पुण्यात्मा आपके गर्भ मे आई , परिवार में हर्षोल्लास छा गया, भावी जीवन की मधुर कल्पनाएँ परिजनों व आप दम्पती के मन मे अगडाइया लेने लगी, पर अल्पकाल मे ही पतिवर्य का दुःखद निधन हो गया। इससे आपको ससार से विरक्ति हो गई। परन्तु गर्भ में आशा का प्रसून पलने से और बाद मे बालक के लालन-पालन के कारण दीक्षा का योग नही बन पाया। कतिपय वर्षो पश्चात् प्लेग की महामारी से भरे पूरे पैतृक परिवार के सदस्यों के असामयिक निधन ने आपके जीवन को झकझोर दिया तथा ससार की अनित्यता एव अशरणता का साक्षात् अनुभव

हुआ। इससे आपका वैराग्य भाव अधिक सुदृढ हो गया। बालक हस्ती भी नाना के परिवार पर महाकाल के साये को देखकर ससार की नश्वरता व असारता का नैसर्गिक बोध पा गए। प्रयत्न करने पर भी जो सत्य समझ में नही आता, चरितनायक के हृदय मे सहजता से अकित हो गया। उनके वैराग्य का पोषण करने में माता रूपकंवरजी का भी योगदान रहा।

महासती मदालसा ने तो अपने पुत्रों को झूला झुलाने के साथ सस्कार दिये, पर माँ रूपा ने तो अपने सस्कार अपने शिशु को गर्भावस्था से ही देने प्रारभ कर दिये। ब्रह्मचर्य एव ससार के स्वरूप का भान जैसे सस्कार आपसे गर्भ में ही पाकर बालक हस्ती मुनि हस्ती बन कर, अखड ब्रह्मचारी व भेद-विज्ञान का सच्चा ज्ञाता बना। बालक हस्ती को जन्म देकर माँ निहाल हो गई। आपने बालक के लालन पालन के साथ ही सुसस्कारो की सीख भी दी व छह वर्ष की उम्र मे ही उनके समक्ष सयम की भावना व्यक्त करते हुए उन्हे भी इस ओर आकृष्ट व प्रेरित किया। धन्य है माँ रूपा! जिन्होंने अपने पुत्र को मोह-ममता की शिक्षा देने की बजाय उसके आत्म-कल्याण का चिन्तन किया।

महासती श्री बड़े धनकवर जी मसा का सान्निध्य पाकर रूपकवर का वैराग्य और अपने पुत्र को जिनशासन को समर्पित करने का निश्चय दृढ़ दृढ़तर होते गए। परिजनो की आज्ञा मे अवरोध होने पर उन्होने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए स्पष्ट कह दिया—"मैं हस्ती की माँ हूँ, मैं उसे दीक्षा की अनुमति प्रदान करती हूँ।" इससे बालक हस्ती की दीक्षा का मार्ग प्रशस्त हो गया। परिजनो के पास भी रोकने का कोई कारण नही बचा। विलम्ब का हेतु नही रहने से परिजनो ने अन्तत रूपकवर को भी दीक्षा की अनुमति प्रदान कर दी।

वि स १९७७ माघ शुक्ला द्वितीय द्वितीया को आपने अजमेर मे रत्नवश के आचार्य पूज्य श्री शोभाचद जी मसा के मुखारविन्द से अपने पुत्र बालक हस्ती के साथ दीक्षा अगीकार कर महासती श्री धनकवर जी मसा का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। दीक्षा के उपरान्त आपने अपने आपको पूर्णत गुरुणी माता की सेवा मे व रत्नत्रय की साधना मे समर्पित कर दिया। आपकी सरलता के कई उदारहण पूज्या महासती वृन्द सुनाते-सुनाते गद्गद् हो जाती हैं।

आपकी सर्वोपरि विशेषता मोह पर प्रबल विजय है। २२ वर्षों के सयम-पर्याय मे आपने अपने पुत्र आचार्य हस्ती से कभी विशेष बात नही की। आचार्य श्री स्वय फरमाते थे कि मै तो उस माता का पुत्र हूँ, जिसने दीक्षा लेने के पश्चात् कभी पाँच मिनट भी मुझसे बात नही की। इससे महासती रूपकवर के सयम-जीवन मे निष्ठा एव निर्मोह भावना का बोध होता है। वे मोक्षमार्ग की सच्ची पथिक बनकर आत्म-भावो मे स्थिर होने मे ही अपना कल्याण मानती थी। पुत्र के आचार्य बनने का उन्हे कोई गर्व नही था। निरभिमानता, निस्पृहता एव सरलता से उन्होने अपनी सयम-साधना को निरन्तर आगे बढ़ाया। सयम-जीवन का पालन करते हुए साध्वी रूपकवर चरितनायक के मोहविजय मे निमित्त बनी।

गुरुणी जी मसा. के भोपालगढ़ स्थिरवास विराजने पर आपका भी लम्बे समय तक भोपालगढ़ विराजना हुआ और भोपालगढ़ में ही आपने बाईस वर्ष की सयम-पर्याय के साथ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ सवत् १९९५ को देवलोक के लिये प्रयाण कर दिया।

धन्य है माँ रूपा को जिन्होंने बालक हस्ती को जिनशासन को समर्पित किया। धन्य है महासती रूपा को जिन्होंने अनासक्त रह कर सयम-साधना का सच्चा स्वरूप उपस्थित किया। जब-जब भी आचार्य हस्ती का स्मरण किया जायेगा, माँ रूपकवर का नाम समादर व श्रद्धा के साथ याद किया जाता रहेगा।

■

परिशिष्ट - द्वितीय

चरितनायक के शासनकाल में दीक्षित सन्त-सती

युगमनीषी अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा के शासनकाल मे ३४ सन्तो एव ५१ सतियो ने दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। यहाँ पर प्रमुख सन्तों एव सतियो का सक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

(अ) प्रमुख सन्तवृन्द का परिचय

• श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा.

सेवाभावी श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का जन्म वि.स १९६२ की माघ कृष्णा सप्तमी को मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के अन्तर्गत 'महागढ' नामक ग्राम मे श्री पन्नालालजी की सस्कारशीला धर्मपत्नी श्रीमती अचरजकवरजी की कुक्षि से हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा जब वि.स १९८८ के आषाढ माह मे महागढ पधारे तो दर्शन-प्रवचन एव सत्सग-सेवा से प्रभावित होकर लक्ष्मीचन्दजी के मन मे वैराग्यभाव जाग उठा। इसी वर्ष आचार्यप्रवर के रामपुरा चातुर्मास मे उन्होने श्रावक के १२ व्रत अगीकार किए और श्रद्धा-भक्ति के कारण गुरुदेव की सेवा मे रहने का क्रम निरन्तर बढ़ता गया। आपकी प्रबल भावना से एव सुश्रावक श्री रतनलालजी नाहर, बरेली के समझाने से आपके चाचा श्री इन्द्रमलजी चौहान आदि स्वजनो ने अनुमति प्रदान कर दी और वि.स १९८९ की आषाढ कृष्णा पचमी के शुभ मुहूर्त मे मुमुक्षु लक्ष्मीचन्दजी ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से उज्जैन मे भागवती दीक्षा अगीकार की। दीक्षोत्सव के समय चतुर्विध सघ की विशाल उपस्थिति थी। दीक्षा में उज्जैन के गुरुभक्त सुश्रावक श्री लक्ष्मीचन्दजी चोरड़िया का सराहनीय योगदान रहा। दीक्षा के अनन्तर आपने तपश्चरण और शास्त्राध्ययन के साथ समर्पण, विनय एव वैयावृत्त्य को जीवन का अग बनाया। आप अपने पूज्य गुरुदेव की शारीरिक चेष्टा मात्र से ही समझ लेते कि गुरुदेव को क्या अभीष्ट है, एव वैयावृत्त्य मे जुट जाते। आपको थोकड़ो का गहन ज्ञान था तथा आगन्तुक भक्तो को थोकड़ों का ज्ञान कराने मे आपकी विशेष अभिरुचि थी। आप गोचरी के विशेषज्ञ सन्त थे। आचार्यप्रवर के आप प्रथम शिष्य थे। अपनी सहज हित-भावना एव अगाध सेवा-भक्ति के कारण आप सन्तो के मध्य 'धाय माँ' के रूप मे आदृत हुए।

आपके अधिकाश चातुर्मास आचार्यप्रवर के सान्निध्य मे ही हुए। भोपालगढ़ (सवत् २०२८), आलनपुर (सवत् २०३१), जोधपुर (सवत् २०३२), महागढ (सवत् २०३५) एव बल्लारी (सवत् २०३८) के चातुर्मास ही आपके स्वतत्र चातुर्मास थे, जो ज्ञानवर्धन की दृष्टि से सर्वथा सफल रहे।

मधुरभाषी एव आचारनिष्ठ सन्त का दक्षिण भारत की पदयात्रा के समय वि.स २०३८ की पौष शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार ९जनवरी १९८२ को रात्रि मे ३ बजकर २०मिनट पर बीजापुर (कर्नाटक) मे आकस्मिक हृदयाघात होने से स्वर्गवास हो गया। आपने लगभग पचास वर्ष सयम-पर्याय का पालन किया।

• श्री माणकचन्द जी म.सा.

भजनानन्दी श्री माणकमुनिजी म.सा. का जन्म वि.स १९६७ फाल्गुन शुक्ला षष्ठी को मध्यप्रदेश के धार जिलान्तर्गत नालछा ग्राम में हुआ। आपके पिता श्री हजारीमलजी काकरेचा तथा माता श्रीमती धनकवरजी थीं।

माता-पिता के धार्मिक सस्कार आपको विरासत में मिले। दीक्षा के पूर्व आपका नाम 'मागीलाल' था। आपने आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी मसा. के मुखारविन्द से वि.स २००० आषाढ शुक्ला द्वितीया को खाचरोद (म.प्र.) में भागवती दीक्षा अगीकार की। आपकी दीक्षा में श्री हीरालालजी नांदेचा-खाचरोद का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। बड़ी दीक्षा के पश्चात् आपका नाम 'मुनि माणकचन्दजी' रखा गया।

आप वैराग्योत्पादक एव सारगर्भित भजनो को तन्मय होकर गाते व सुनते थे, इसीलिये आपको 'भजनानन्दी' के नाम से भी जाना गया।

अधिकाश चातुर्मासो में आप आचार्यप्रवर की सन्निधि मे रहे। उदयपुर (सवत् २००१), जोधपुर (सवत् २००६), पीपाड़ (सवत् २००७), मेड़ता (सवत् २००८) एव जोधपुर (सवत् २००९) के चातुर्मास आपने स्वामीजी श्री सुजानमलजी मसा के सान्निध्य में , विजयनगर (सवत् २०१२) का चातुर्मास बड़े लक्ष्मीचन्दजी मसा के सान्निध्य मे, जोधपुर (सवत् २०३२) का चातुर्मास श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी मसा के सान्निध्य मे तथा शेरसिंह जी की रीया (सवत् २०२७) और जयपुर (सवत् २०३१) का चातुर्मास स्वतन्त्र रूप से किया।

आपका अन्तिम चातुर्मास विक्रम सवत् २०३२ मे घोड़ो का चौक जोधपुर मे श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी मसा के सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ। यहाँ आपने जीवन का अन्तिम समय निकट जानकर सलेखनापूर्वक सथारा ग्रहण कर लिया। यह सथारा बहुत ही उत्कृष्ट रहा। ३५ दिनो तक सथारा चला। सथारे की अवधि मे आपके चेहरे पर प्रसन्नता, समता एव शान्ति देखते ही बनती थी। अनेक परम्पराओ एव धर्मों के लोगो ने आकर आपके दर्शन-वन्दन कर अपने आपको धन्य-धन्य माना। आत्म-विजय की यह अनुपम साधना थी। आचार्यप्रवर गुरुदेव ने भी बाड़मेर से उग्रविहार करते हुए जोधपुर पधारकर साधना मे साज दिया। विक्रम सवत् २०३२ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी ९ मार्च १९७६ मगलवार को सायकाल समाधिपूर्वक नश्वर देह का त्याग कर आप स्वर्गगमन कर गए।

आपके ३५ दिनो के सथारे की स्मृति मे जोधपुर के श्रद्धालु भक्तो ने घोड़ो के चौक मे 'श्री वर्धमान जैन रिलीफ सोसायटी' नामक सस्था प्रारम्भ की, जो वर्धमान हास्पिटल के माध्यम से आज भी निरन्तर सभी प्रकार के रोगियो का उपचार करने मे सक्रिय है।

- श्री जयन्तलालजी म.सा.

बाबाजी श्री जयन्तलालजी मसा का जन्म विस १९५३ मार्गशीर्ष कृष्णा पचमी को पीपाड़ शहर में हुआ। पिता श्री दानमलजी चौधरी तथा माता श्रीमती गुलाबकवरजी से आपको धार्मिक सस्कार प्राप्त हुए।

आपने ५६ वर्ष की वय में विस २००९ मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को पाली-मारवाड़ मे पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी मसा. के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पश्चात् आपका नाम जालमचन्दजी से 'जयन्तमुनि जी' कर दिया गया। बाबाजी मसा. के नाम से विश्रुत श्री जयन्तमुनि जी म.सा. का सयम-जीवन साधना, सेवा और वैयावृत्त्य हेतु समर्पित था। सयम मे आपका प्रबल पुरुषार्थ प्रेरणादायी था। आप सरल, सयमनिष्ठ और सहनशील व्यक्तित्व के धनी थे। आपके अधिकतर चातुर्मास आचार्य भगवन्त के सान्निध्य मे हुए। टोंक (संवत् २०१७), मेड़ता (सवत् २०२१), भोपालगढ़ (सवत् २०२५), जोधपुर (सवत् २०२६), थांवला (सवत् २०२७) के चातुर्मास प. रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी मसा के सान्निध्य में हुए। सवत् २०३२ से आपने जोधपुर मे स्थिरवास विराजकर अपनी साधना को आगे बढाया।

मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी वि.स २०३९ को ३०वर्ष की निरतिचार सयम-पर्याय का पालन करते हुए आपने इस नश्वर देह का त्याग कर समाधिमरण का वरण किया।

• श्री सुगनचन्दजी म.सा

सरलात्मा श्री सुगनचन्दजी म.सा का जन्म लाडपुरा मे वि.स १९६९ भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को हुआ। आपके पिता श्री चुन्नीलालजी खटोड़ तथा माता श्रीमती अलोलबाईजी थी। आपने वि.स २०१० ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को लाडपुरा मे आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा से भागवती दीक्षा अगीकार की। आप थोकड़ो के ज्ञाता एव सरल मनस्वी सन्त रत्न थे। सयम मे प्रतिपल जागरूकता आपके जीवन मे झलकती थी। थोकड़े सीखने-सिखाने मे आपकी विशेष रुचि थी।

वि.स २०२० ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी को जाजीवाल (जोधपुर) मे भीषण गर्मी एव लू के कारण आपका असामयिक देहावसान हो गया। मारणान्तिक उपसर्ग आने पर भी आप विचलित नही हुए।

• श्री श्रीचन्दजी म.सा

तपस्वी श्री श्रीचन्दजी म.सा का जन्म दक्षिण भारत के कावेरीपट्टम मे वि.स१९९३ में हुआ। आपके पिता श्रीबकट स्वामीजी नायडू तथा माता श्रीमती राजम्मादेवीजी थी। आप भोपालगढ़ नरेश के यहाँ रसोइया के रूप में कार्यरत थे। तदनन्तर जैनरत्न छात्रालय मे आ गए। वहाँ पर आचार्य श्री के दर्शन कर आप अत्यन्त प्रभावित हुए एव दीक्षा लेने का भाव जागृत हो गया। राजपूत कुल के होते हुए भी आपने अपना खानपान एव आचार-विचार साध्वाचार के अनुरूप ढाला । नवकार मन्त्र से आपने ज्ञानाराधन प्रारम्भ किया। अपने अटल सकल्प से आपने परिजनों से आज्ञा प्राप्त कर वि.स २०१६ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी को जयपुर मे आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा के मुखारविन्द से श्रमण दीक्षा अगीकार कर अपने जीवन की दिशा ही बदल ली।

तमिलभाषी होने से आपको हिन्दी , सस्कृत एव प्राकृत सीखने मे कठिनाई हुई। परन्तु आपने अथक परिश्रम कर बहुत से शास्त्रों का ज्ञान कर लिया। आपके ओजस्वी प्रवचन एव बुलन्द आवाज से युक्त स्तवन श्रोताओ को बहुत प्रभावित करते थे। आपने 'निर्ग्रन्थ भजनावली' के रूप मे भजनो, स्तोत्रो एव प्रार्थनाओ का सकलन भी किया। आपने १८ वर्षो तक आडा आसन नहीं किया। पूर्व सचित कर्मरज को हलका करने की भावना से आमने तप का मार्ग चुना एव पचोले-पचोले की तपस्या कर कर्म-निर्जरा की। इसी कारण आप 'तपस्वी' के नाम से जाने गए। राजस्थान के पोरवाल एव पल्लीवाल क्षेत्रो मे आचार्यप्रवर के स्वाध्याय एव सामायिक के सन्देश को ग्राम-ग्राम पहुँचाकर विशेष शासन प्रभावना की।

आचार्यप्रवर की सन्निधि के अतिरिक्त जोधपुर (सवत् २०२६), शेरसिंह जी की रीया (सवत् २०२७), भोपालगढ (सवत् २०२९), जयपुर (सवत् २०३१), जोधपुर (सवत् २०३२), अजीत (सवत् २०३३) के चातुर्मास विभिन्न वरिष्ठ सन्तो के सान्निध्य मे हुए। आलनपुर (सवत् २०३४) , गगापुर सिटी (सवत् २०३५), भरतपुर (सवत् २०३६) एवं सिन्धनूर (सवत् २०३८) में आपके स्वतन्त्र चातुर्मास हुए, जो अतीव प्रभावशाली रहे। २३ वर्षों तक निर्मल रूप से सयम का पालन करने के अनन्तर वि.स २०३९ पौष शुक्ला तृतीया को इन्दौर में सथारापूर्वक आपने समाधिमरण का वरण किया।

• श्री मगनमुनिजी म.सा.

सेवाभावी श्री मगनमुनिजी म.सा का जन्म वि.स.१९६२ माघ शुक्ला एकादशी को जोधपुर मे हुआ। आपके पिता श्री सोनराजजी मुणोत तथा माता श्रीमती अमरकवरजी मुणोत थी।

आपने ५८ वर्ष की उम्र में भरे पूरे परिवार को छोड़कर वि.स.२०२० वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को जोधपुर मे मानचन्द्र जी म.सा. के साथ जैन श्रमण दीक्षा अगीकार की। आप शान्त, दान्त, सेवाभावी एव तपस्वी सन्त थे। थोकड़े सीखने-सिखाने मे आपकी विशेष रुचि थी। लगभग ९ वर्ष के सयम-जीवन में सभी ८ चातुर्मास पूज्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य मे किए। जोधपुर मे अचानक आपका स्वास्थ्य नरम हो गया। सन्तो ने बड़ी लगन से सेवा की। आचार्यप्रवर ने मगलपाठ सुनाया, पच्चक्खाण कराये। किन्तु श्वास की गति एकदम रुक जाने से फाल्गुन कृष्णा द्वादशी शुक्रवार सवत् २०२८ को आप ससार से विदा हो गए।

• उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

पद, परिचय एव प्रतिष्ठा की अभिलाषा जिनको छू ही न पाई , सेवा, स्वाध्याय एव समर्पण ही जिनके जीवनादर्श है, ऐसे सरल, विरल सतरत्न तथा भक्तो के सहज आकर्षण के केन्द्र का नाम है श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर प रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा। आपका जन्म वि.स. १९९१ माघकृष्णा चतुर्थी के दिन सूर्यनगरी, जोधपुर में श्रद्धानिष्ठ समर्पित सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया की धर्मशीला धर्मपत्नी श्रीमती छोटाबाई जी सेठिया की कुक्षि से हुआ।

बाल्यकाल से ही सन्त-समागम व प्रवचन-श्रवण का सुखद सयोग पाकर आपके पूर्वसस्कार वर्धमान हुए तथा आपके हृदय मे असार ससार से विरक्ति के अकुर प्रस्फुटित हो गए। परम पूज्य आचार्य भगवत पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा एव पण्डित रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा के पावन सान्निध्य से आपके वैराग्य सस्कार पल्लवित-पुष्पित हुए एव आपका सयममार्ग पर बढ़ने का निश्चय दृढ़तर होता गया। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ मे शिक्षण कार्य आपके इस निश्चय मे और अधिक सहायक बना। छह भाइयो और तीन बहिनों के भरे पूरे परिवार के मोह-बधन को तोड़कर वि.स २०२० वैशाखशुक्ला त्रयोदशी को जोधपुर मे आपने परमपूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा के मुखारविन्द से भागवती श्रमण-दीक्षा अगीकार कर मोक्षमार्ग मे अपने कदम बढ़ाये।

सासारिक सुखो के प्रलोभन व परिजनो के स्नेह बधन को भेद कर विरले महापुरुष ही मोक्षमार्ग मे अग्रसर हो पाते हैं। इस दुर्लभ सयमधन, 'ज्ञानदर्शनचारित्र' के साकार स्वरूप गुरु भगवन्तो का सान्निध्य पा आपने अपना समग्र जीवन ही ज्ञानार्जन, गुरुचरणो में समर्पण एव निरतिचार सयमपालन हेतु समर्पित कर दिया। आगमों के तलस्पर्शी ज्ञान के साथ ही थोकड़ो के गहन ज्ञान से आप शीघ्र ही जिज्ञासुओ की श्रद्धा के केन्द्र बन गये। निर्मल सयम-साधना, उत्कृष्ट वैय्यावृत्य, सहज सरलता व निरभिमानता से आप श्रमणवरेण्यो के भी स्नेह पात्र बन गये। विरले ज्ञानी महापुरुष ही अग्लान सेवा का आदर्श उपस्थित कर पाते हैं। आपके जीवन मे यह दुर्लभ मणिकाचन सयोग सहज दृष्टिगोचर होता है। सुदूर क्षेत्रो के विचरण, प्रवास में व्यक्तित्व के सहज निखार व प्रसिद्धि कोई भी आकर्षण आपको बाध न सका। जब भी वृद्ध स्थविर सतों की सेवा करने व उन्हें सम्हालने का अवसर आया, आप सदा तत्पर रहे। प रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा. एव बाबाजी श्री जयन्तमुनि जी म.सा, की जिस अतिशय उत्साह, समर्पण व श्रद्धा भाव से आपने सेवा की, वह रत्नवश के स्वर्णिम इतिहास का गौरवशाली अध्याय है। श्री

जयन्तमुनि जी म.सा. को खड़े-खड़े जब अशुचि आ जाती , तो उसे भी आपने अग्लान भाव से हाथों से उठाकर साफ किया।

आपकी ज्ञान गरिमा, सयमनिष्ठा व तपपूत व्यक्तित्व ने श्रद्धेय गुरु भगवन्तो को भी आकर्षित किया। परमपूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म सा ने भावी शासनव्यवस्था हेतु परमपूज्य श्री हीराचन्द्र जी म सा. का आचार्य पद पर मनोनयन करने के साथ आपको उपाध्याय मनोनीत किया। निमाज मे वि.स २०४८ वैशाख शुक्ला नवमी सोमवार दिनाक २२ अप्रेल १९९१ को आप सघ द्वारा विधिवत् 'उपाध्याय' पद पर प्रतिष्ठित किये गये। रत्नवश की इस यशस्विनी परम्परा मे आप प्रथम उपाध्याय है।

आपके जीवन की सरलता, निरभिमानता, सयम की दृढ़ता, आनन पर सहज स्मितता एव मधुर व सुगम प्रवचन शैली सहज ही भक्तजनो को श्रद्धावनत कर देती है। आप सदैव स्वाध्याय, ध्यान एव चिन्तन-मनन मे लीन रहते है, आपके चिन्तनपरक, आगमिक, सारगर्भित एव प्रभावक प्रवचनो से श्रोतागण सहज ही त्याग प्रत्याख्यान की ओर प्रेरित होते है। आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व मे भक्तजन 'चौथे आरे की बानगी' का अनुभव करते हैं। आपके प्रतिदिन दोपहर मे १२ से २ बजे तक तथा कृष्णपक्ष की दशमी को पूर्ण मौन रहता है।

पूज्य चरितनायक ने आपकी योग्यता एव प्रतिभा को देखकर अहमदाबाद और दिल्ली जैसे वृहत् क्षेत्रो मे स्वतन्त्र चातुर्मास प्रदान किए , जिनमे ज्ञानक्रिया का सुन्दर रूप देखकर वहा के श्रावक अत्यन्त प्रभावित हुए। दिल्ली के श्रावक तो कहने लगे—जब मानचन्द्र जी म सा ज्ञान-क्रिया मे इतने ऊचे है तो इनके गुरुदेव कैसे होगे। दिल्ली का शिष्टमण्डल सवाईमाधोपुर में पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर इतना प्रमुदित हुआ मानो भगवान के दर्शन किए हो। उपाध्याय पद पर आरोहण के पश्चात् आपके जोधपुर, (सवत् २०४८) मदनगज (सवत् २०५५), जलगाव (सवत् २०५७) तथा धुलिया (सवत् २०५८) मे श्रद्धेय आचार्यप्रवर के साथ चातुर्मास रत्नवश की यशस्विनी परम्परा की गौरव गरिमा को आगे बढ़ाने वाले रहे तथा भीलवाडा (सवत् २०४९), कोटा (सवत् २०५०), कवलियास (सवत् २०५१), पाली (सवत् २०५२), कोसाना (सवत् २०५३), जयपुर (सवत् २०५४), सवाईमाधोपुर (सवत् २०५६), तथा होलानाथा (सवत् २०५९) के स्वय के चातुर्मास आपके साधनातिशय, निर्मल निरतिचार सयम निष्ठा, निरभिमानता प्रभृति आत्म-गुणो की छाप जन-मानस पर अकित करने मे सफल रहे। उपाध्यायप्रवर प्रशान्तात्मा, पडितप्रवर एव सरलमना सन्त है।

• आचार्यप्रवर आगमज्ञ प रत्न श्री हीराचन्द्र जी म सा.

व्यक्तित्व मे 'हीरे' सी चमक व दमक और सयम मे 'हीरे' सी दृढ़ता, श्रमणो मे कोहिनूर 'हीरे' के समान देदीप्यमान, श्रमणवरेण्य का नाम है प रत्न श्री हीराचन्द जी म सा।

आपका जन्म वि स १९९५ चैत्र कृष्णा अष्टमी 'आदिनाथ जयन्ती' के पावन दिन १३ मार्च, १९३९ को मरुधरा के धर्मप्रधान क्षेत्र पीपाड़ शहर में अनन्य धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी गाधी की धर्मशीला सहधर्मिणी श्रीमती मोहिनीबाई जी गाधी की रत्नकुक्षि से हुआ। धर्मनिष्ठ माता-पिता व धर्म-गुरुओ से आपको सत्सस्कार विरासत मे ही प्राप्त हुए। आपका बचपन नागौर मे बीता। बचपन में ही छोटी बहिन के आकस्मिक देहावसान से आपको ससार की विनश्वरता का बोध हुआ तथा आपके बाल मन मे वैराग्य अकुर का वपन हुआ, जो पूज्य गुरु भगवतो के पावन समागम से पल्लवित होता रहा। परम पूज्य आचार्य हस्ती के सवत् २०१३ के बीकानेर चातुर्मास मे उनके दिशा निर्देशन में आपका व्यवस्थित अध्ययन प्रारम्भ हुआ। गुरुदेव के पावन सान्निध्य व

अध्ययन से आपका दीर्घकालिक वैराग्य परिपुष्ट होता गया तथा आपने सयम ग्रहण का दृढ निश्चय पूज्य माता-पिता व परिजनों के समक्ष व्यक्त किया। स्नेह-बधन को तोड़कर अपने युवा पुत्र को सदा के लिए सयममार्ग पर बढ़ने हेतु समर्पित कर देना आसान नही है, पर सस्कारशीला माता व धर्मनिष्ठ पिता श्री ने आपके दृढ़ निश्चय व परिपुष्ट वैराग्य को देखकर दीक्षा हेतु अनुमति प्रदान की। परम पूज्य भगवन्त के सवत् २०२० के पीपाड़ वर्षावास मे कार्तिक शुक्ला षष्ठी को श्रमण दीक्षा अगीकार कर आपने अपने आपको गुरु चरणों में समर्पित कर दिया।

परम पूज्य आचार्य हस्ती के सान्निध्य की शीतल छाव मे आपका श्रमण जीवन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना व विविध गुणो के अर्जन से निरन्तर निखरता गया। पूज्यपाद की सेवा मे आपने आगमो व थोकड़ो के तलस्पर्शी ज्ञान के साथ ही सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी व गुजराती भाषाओ एव ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया। प्रकाण्ड पाडित्य, गहन आगमिक अध्ययन, धाराप्रवाह ओजस्वी प्रवचन शैली एव गुरु चरणो मे सर्वतोभावेन समर्पण से आपका व्यक्तित्व प्रभावी बनता गया। वि स २०२० मे दीक्षित होकर वि स २०४७ तक पूज्यपाद के महाप्रयाण तक वि.स २०४४ के नागौर चातुर्मास अतिरिक्त आपने सभी चातुर्मास उन महामनीषी के चरणो में ही कर शासन की महती प्रभावना की।

सयमनिष्ठा, सघ ऐक्य भावना, गहन आगम-चिन्तन, सेवा व समर्पण भावना आदि विविध गुणो तथा आपकी शासन-सचालन प्रतिभा को दृष्टिगत रख कर पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती ने अपने लिखित सकेत मे आपको अपना उत्तराधिकारी भावी आचार्य मनोनीत कर सघ पर महान् उपकार किया। सूर्यनगरी जोधपुर मे वि स २०४८ ज्येष्ठ कृष्णा पचमी रविवार दिनाक २ जून १९९१ को चतुर्विध सघ द्वारा विधिवत् चादर अर्पण कर आपको महनीय रत्नवश परम्परा के अष्टम पट्टधर के रूप मे प्रतिष्ठापित किया गया। आज आप अपनी यशस्विनी परम्परा के गौरव को वृद्धिगत करते हुए चतुर्विध सघ का कुशलतापूर्वक सचालन कर रहे हैं।

परमपूज्य आचार्य श्री आकर्षक व्यक्तित्व एव विराट् कृतित्व के धनी प्रज्ञापुञ्ज मनीषी साधक हैं। आचार्य पद की आठो सम्पदाओ से सम्पन्न आचार्यप्रवर पचाचार को पालने व पलवाने मे 'हीरे' की भाति दृढ़ है, तो आगम रहस्यो के तलस्पर्शी ज्ञाता है। गौरवर्ण, दीर्घनेत्र, प्रशस्त भाल, सौम्यकान्ति व मनमोहक आकृति के आचार्यप्रवर का व्यक्तित्व भक्तो व दर्शको को बरबस अपने चुम्बकीय आकर्षण मे बाध लेता है। आपकी ओजस्वी वाणी मे की गई आगमिक व्याख्या श्रोताओ पर अनूठा प्रभाव छोड़ने मे सक्षम है। प्रत्युत्पन्नमति आचार्यप्रवर ने अपने पूज्यपाद गुरुदेव के 'सामायिक स्वाध्याय' के सदेश के प्रचार-प्रसार के साथ ही समाज व राष्ट्र को व्यसनमुक्ति का अभिनव सदेश दिया है। उनके प्रभावक प्रवचनों व सुबोध शैली मे की गई आपकी पावन प्रेरणा से हजारो लोगो ने व्यसन त्याग कर अपना जीवन पवित्र व निर्मल बनाया है। रात्रि-भोजन त्याग, सस्कार सम्पन्न परिवार, व्रतग्रहण एव ब्रह्मचर्य-पालन आपकी प्रभावी प्रेरणाएँ हैं।

आचार्यपद ग्रहण के पश्चात् आपने राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के सैकडो क्षेत्रो मे हजारो किलोमीटर का पाद विहार कर जिनशासन की महती प्रभावना की है। जोधपुर (स २०४८), बालोतरा (सवत् २०४९), जयपुर (स २०५०), जोधपुर (स. २०५१), विजयनगर (स २०५२), अजमेर (स २०५३), पीपाड़शहर (स २०५४), मदनगज (स २०५५) नागौर (स २०५६), जलगाव (स २०५७) , धुलिया (स २०५८), मुम्बई (स २०५९) आदि क्षेत्रो मे किये गये सफल चातुर्मासों से अभिनव धर्मक्रान्ति का सदेश देश के कोने-कोने में फैले भक्त समुदाय को प्रभावित करने में सक्षम रहा है। आपके शासनकाल मे ६ सन्तो व ३२ महासतियों की दीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी

हैं। ज्ञान क्रिया के अनुपम सगम, प्रवचन प्रभाकर, आगम-रत्नाकर आचार्यप्रवर साम्प्रदायिकता व निन्दा विकथा से कोसों दूर हैं।

• श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा.

प रत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी मसा का जन्म जोधपुर जिले के काकेलाव ग्राम मे विस २०१२ पौष शुक्ला द्वितीया को श्री रामबगस जी पुरोहित की भाग्यशालिनी धर्मपत्नी श्रीमती तीजाबाई की कुक्षि से हुआ।

आपने जयपुर शहर मे विस२०२८ वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार दिनाङ्क २ मई १९७१ को भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होकर आपने पूर्ण मनोयोग से आगमो तथा थोकड़ो का अध्ययन किया। निरन्तर अभ्यास से आपके प्रवचन ओजपूर्ण एव प्रभावशाली बन गये थे। आपके मुखमडल पर सयम का तेज चमकता था। आप स्पष्ट एव निर्भीक वक्ता थे। गुरु एव सघ के प्रति समर्पण आपमे जबरदस्त था।

लगभग २५ वर्ष के सयमी जीवन मे आप श्री ने मण्डावर (सन् १९८४), नागौर (सन् १९८५), कोटा (१९८६), हिण्डौन (१९८८) सवाई माधोपुर (१९९०), मेड़ता (१९९१) मे स्वतन्त्र चातुर्मास कर जिनशासन की विशिष्ट छाप छोड़ी। नागौर चातुर्मास मे एक साथ १०८ तप-साधको ने अठाई तप अगीकार किया, जिनमें स्थानकवासी, तेरापथी एव मन्दिरमार्गी सब सम्मिलित थे। पल्लीवाल क्षेत्र मे आप माधवमुनिजी के रूप मे जाने गए। आपके सयमी एव ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक जैनेतर बन्धु भी आपके भक्त बन गए।

आपने प्रथम और अन्तिम दोनो चातुर्मास भोपालगढ़ मे किए। अन्तिम चातुर्मास के पूर्व ब्रेन ट्यूमर हो जाने से आपके शरीर मे बहुत अधिक वेदना रहती थी। उपचार से कुछ समय राहत महसूस हुई, परन्तु विस२०५२ के भोपालगढ़ चातुर्मास मे फिर वेदना बढ़ गयी। वेदना के समय आपने पूर्ण समाधिभाव बनाये रखने की जागरूकता रखी। अन्त मे सेवारत तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी मसा ने कार्तिक शुक्ला अष्टमी मगलवार को सागारी सथारा तथा कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी रविवार दिनाक ५ नवम्बर १९९५ को प्रात १०१५ बजे यावज्जीवन सथारा सघ की साक्षी से करा दिया। आपने दोनो हाथ जोड़कर सथारे के प्रत्याख्यान स्वीकार किये। मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी बुधवार १५ नवम्बर १९९५ को १६ दिवसीय तप सथारे के साथ ही आपने साय ४ बजकर ५५ मिनट पर नश्वर देह का त्याग कर दिया।

• श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी मसा का जन्म विस २०११ श्रावण शुक्ला नवमी को महामदिर जोधपुर मे हुआ। आपको धर्मनिष्ठ पिता सुश्रावक श्रीमान् पारसमलजी सा लोढा तथा माता तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती सोहनकवरजी लोढा से धर्मभावना के सुसस्कार जन्म से अधिगत हुए। आपने स्नातक (B Com) तक का व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया। आपका घरेलू नाम श्री तखतराजजी लोढा था।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से आपने विस २०३२ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी २४ मई १९७५ को स्टेडियम मैदान, जोधपुर मे श्रमण धर्म की पावन प्रव्रज्या अगीकार की। दीक्षित होने पर आपका नाम 'महेन्द्रमुनिजी' रखा गया। दीक्षित होकर गुरु-सेवा मे रहते हुए आपने थोकड़ो व आगमों का गहन अभ्यास प्रारम्भ किया, फलत कुछ ही वर्षो मे आपने दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, सुखविपाक, आचाराग, उत्तराध्ययन आदि अनेक आगम तथा थोकड़े कण्ठस्थ कर लिये।

आपमे सेवा का गुण कूट-कूट कर भरा है। आपने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी मसा की खूब सेवा की। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी मसा की सेवा मे समर्पित है। सेवा तो मानो आपके साधक जीवन का लक्ष्य है । इगित मात्र से सबकी सेवा में जुट जाना आपके साधक-जीवन की विशेषता है। आपके चातुर्मास प्राय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मसा एव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्दजी मसा के साथ हुए हैं। सवत् २०४१ का चातुर्मास आपने पडितरत्न मानचन्द्रजी मसा के सान्निध्य मे अहमदाबाद किया।

सेवा के साथ तपस्या करने मे भी आप आगे रहते हैं। प्रवचन एव चर्चा के मध्य विषयवस्तु के प्रतिपादन मे भी निपुण है। शान्त एव सौम्य चेहरा, आपकी सेवा-भावना तथा सयम की सजगता को प्रतिबिम्बित करता है।

• श्री गौतममुनिजी म.सा.

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी मसा का जन्म जोधपुर जिले के पालासनी ग्राम मे विस२०१९ पौष शुक्ला षष्ठी को धर्मपरायण सुश्रावक श्री जावतराजजी आबड़ की धर्मनिष्ठ धर्मसहायिका श्रीमती शान्तादेवीजी आबड़ की कुक्षि से हुआ।

आपने लगभग ३ वर्ष के वैराग्य के अनन्तर आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से पालासनी मे ही विस २०३४ माघ शुक्ला दशमी १७ फरवरी १९७८ शुक्रवार को श्रमणधर्म अगीकार किया। दीक्षा के समय आपकी आयु मात्र १५ वर्ष थी। आपने दीक्षा ग्रहण कर अपने पिताश्री की भावना को भी साकार किया। आपके पिताश्री की भावना थी कि एक पुत्र दीक्षा अगीकार करे तो वे सहर्ष आज्ञा प्रदान कर देगे।

दीक्षा लेकर आपने हिन्दी एव सस्कृत भाषाओ के ज्ञान के साथ थोकड़ो एव शास्त्रो का अभ्यास किया। प्रार्थना एव भजनो की रचना करने मे आप सिद्धहस्त कवि है। गायनकला मे आपकी विशेष दक्षता है। आपकी मधुर कण्ठकला सहज ही लोगो को प्रभावित करती है। आपकी प्रवचन शैली बहुत सरल, सरस एव हृदयस्पर्शी है। स्वतन्त्र चातुर्मास एव विचरण के दौरान आपने अपने सारगर्भित, प्रवाहपूर्ण, आगमपोषित एव रोचक प्रवचनो से जन-मानस पर अमिट प्रभाव छोड़ा है । आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी मसा एव उपाध्यायप्रवर प रत्न श्री मानचन्द्रजी मसा के महाराष्ट्र प्रवास के दौरान आपने मारवाड़ मे सराहनीय भूमिका अदा की है। आपमे सेवा की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है। आपने पीपाड़ मे वयोवृद्ध श्री राममुनिजी मसा की जो दत्तचित्त होकर सेवा की वह सदैव स्मरणीय रहेगी।

ईस्वी सन् २००० के पाली, सन् २००१ के पीपाड़ और सन् २००३ के पालासनी चातुर्मास मे आपने वृद्ध सन्तों की सेवा के साथ प्रवचन-प्रार्थना आदि सभी दायित्वो का अत्यन्त कुशलतापूर्वक निर्वहन किया एव मारवाड़ मे अपनी प्रतिभा से बड़े सन्तो की कमी नही खलने दी।

• श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.

सेवाभावी एव थोकड़ों के ज्ञाता श्री नन्दीषेणजी मसा का दीक्षापूर्व नाम महावीर प्रसाद था। आपका जन्म सवाईमाधोपुर में धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रामनिवासजी जैन की धर्मपरायणा धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबदेवीजी जैन की कुक्षि से विस २०१६ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया ८ जून १९५९ को हुआ। आपकी दीक्षा ग्रहण करने की उत्कट भावना थी। आप गुरुचरणो मे कतिपय वर्ष वैरागी रहे। परिजनो से आज्ञा प्राप्त करने एव दीक्षा नियत करने में सैलाना के धर्मनिष्ठ उदारमना भक्त श्रावक श्री प्यारचन्द जी राका की निर्णायक भूमिका रही। मन्दसौर मे पूज्य

गुरुदेव के श्रीमुख से ज्येष्ठ शुक्ला १० सवत् २०३५ दिनाक १६ जून १९७८ को आपने भागवती दीक्षा अगीकार कर साधना-मार्ग में चरण बढाए।

आपने दीक्षा लेकर थोकड़ो का गहन अभ्यास किया। आप भाई-बहिनो को सामायिक-प्रतिक्रमण के साथ थोकड़े सिखाने में विशेष रुचि रखते हैं। आपने वर्णमाला पर आधारित प्रश्नों, दोहो आदि का अनूठा सकलन एव निर्माण किया है। आप सेवाभावी एव तपस्वी सन्त है। आप पोरवाल क्षेत्र के गौरव व सघ के प्रति समर्पित आत्मार्थी सन्त हैं।

- **श्री प्रकाशमुनिजी म.सा**

तपस्वी सन्त श्री प्रकाशमुनि जी मसा का जन्म सूर्यनगरी-जोधपुर मे विस १९९१ माघ शुक्ला द्वादशी १५ फरवरी १९३५ शुक्रवार को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्रीमान् पारसमलजी भण्डारी तथा माता श्रीमती मानकॅवरजी भण्डारी से आपको धार्मिक सस्कार प्राप्त हुए।

आपने अपनी धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्री, भाई-बहिन आदि परिजनो को छोड़कर विस२०३७ माघ शुक्ला पचमी (बसन्त पचमी) दिनाङ्क ९ फरवरी १९८१ को बैगलौर मे आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा ग्रहण की।

समर्पित भाव से सयम जीवन का निरतिचार पालन करने मे सलग्न मुनिश्री ने तप को साधना का प्रमुख अग बनाया। विस २०४१ के अहमदाबाद चातुर्मास मे आपने मासखमण तप किया। आप सेवा एव तपस्या मे आगे रहते है तथा नियमित स्वाध्याय करते हैं।

- **श्री प्रमोदमुनिजी म सा.**

तत्त्वचिन्तक एव जैन सिद्धान्त मर्मज्ञ श्री प्रमोद मुनि जी मसा. का जन्म विस२०१७ आषाढ कृष्णा द्वितीया शनिवार दिनाक ११ जून १९६० को अपने नाना श्री उमरावमलजी सेठ के यहाँ जयपुर मे हुआ। अलवर निवासी आपके पिता धर्मनिष्ठ श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री सूरजमलजी मेहता एव माता सुश्राविका श्रीमती प्रेमकुमारीजी आपको जन्म देकर धन्य हुए। सबसे छोटे पुत्र होने के कारण आपका लालन-पालन बहुत लाड़प्यार से हुआ।

आप प्रारम्भ से ही प्रतिभासम्पन्न छात्र रहे। आपको नैतिक एव धार्मिक सस्कार विरासत मे मिले। परिणामस्वरूप आपने व्यावहारिक शिक्षण मे जहाँ B Com L L B, एव C A इन्टर किया, वही धार्मिक क्षेत्र मे सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि भी कण्ठस्थ कर लिये। आप विद्यार्थी जीवन मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओ मे आपकी सक्रिय भूमिका रही। आपने प्रमुख स्वाध्यायी के रूप मे पर्युषण पर्व पर अनेक ग्राम-नगरो को लाभान्वित किया। उस समय आपकी व्याख्यान शैली, साधना एव योग्यता से प्रभावित होकर आपको कई सघो ने अभिनन्दन-पत्र भेट किए।

आपने २३ वर्ष की युवावस्था मे आचार्य श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से जयपुर शहर में मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी विस २०४० दिनाक १५ दिसम्बर १९८३ को भागवती दीक्षा अगीकार कर आपने जीवन को उच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर कर दिया।

दीक्षित होकर आपने थोकड़े, आगम, इतिहास, सस्कृत, प्राकृत आदि का गहन अध्ययन प्रारभ किया। आज

आप रत्नसघ के देदीप्यमान सन्त रत्न हैं। विस२०५२ के चातुर्मास में भोपालगढ़ मे आपने परत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा की अग्लान भाव से प्रमुदित होकर अनूठी सेवा की एव उनके सलेखना-सथारा पूर्वक समाधिमरण मे जो अनुपम योगदान किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। विस २०५४ के जयपुर चातुर्मास मे अपनी ससारपक्षीय माताश्री के सथारापूर्वक समाधिमरण मे भी आपने निर्मोह भाव से अनूठा सहयोग प्रदान किया। आप ज्ञान-ध्यान सीखने-सिखाने में विशेष तत्परता रखते है। आपके आगमाधारित तत्त्वज्ञान से गर्भित, सरस एव ओजस्वी प्रवचन विशेष प्रभावोत्पादक होते है। आपकी सन्निधि मे जो भी बैठता है, उसे जीवन मे आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है। आगम, कर्मग्रन्थ एव तत्त्वज्ञान के आप मर्मज्ञ सन्त हैं तथा निरन्तर तथ्यान्वेषण करते रहते हैं। प्रतिभा, वैराग्य एव साधना के आप सगम है तथा अप्रमत्त पुरुषार्थी सन्त है।

• श्री दयामुनिजी म.सा.

थोकड़ो के ज्ञाता श्री दयामुनिजी का जन्म सूर्यनगरी जोधपुर मे विस१९७६ कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री माणकराजजी सिंघवी तथा माता सुश्राविका श्रीमती मानकवरजी थी।

आपका सासारिक नाम दुलेहराज जी सिघवी था। राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग मे जैसलमेर, पाली आदि स्थानो पर कार्यरत रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आचार्यप्रवर की प्रेरणा से आप तत्त्वज्ञान सीखने लगे। गहन रुचि के कारण आपको कई थोकड़ो का अभ्यास हो गया। आपने गृहस्थ मे रहकर श्रावक के व्रतो का पालन किया। अनेक वर्ष तक पर्युषण पर्व मे बाहर क्षेत्रो मे जाकर स्वाध्यायी के रूप मे सेवाएँ भी दी।

आपने ६५ वर्ष की अवस्था मे अपनी धर्मपत्नी की आज्ञा लेकर विस२०४१ माघ शुक्ला दशमी ३१ जनवरी १९८५ को जोधपुर के रेनबो हाउस मे आचार्य श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप थोकड़ो के विशेष ज्ञाता थे। आप सरल स्वभावी एव गुणग्राही सन्त थे। अनवरत स्वाध्याय मे रत रहते थे। आपको स्तोक, भजन आदि मे गहन रुचि थी।

१० वर्ष का सयम पालकर विस २०५१ मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी को भोपालगढ़ मे आपने सथारापूर्वक समाधि-मरण का वरण किया।

• श्री राममुनिजी म.सा

सरलस्वभावी श्री राममुनिजी मसा का जन्म विस१९७६ द्वितीय श्रावण शुक्ला सप्तमी को राजस्थान के पल्लीवाल क्षेत्र मे हुआ। आपके पिताश्री रामकुमारजी जैन तथा माता श्रीमती झत्थीबाई थी। गृहस्थ मे रहकर व्रतों का एव श्रावक की प्रतिमाओ का पालन करने के कारण आप 'त्यागी जी' के नाम से जाने जाते थे।

आपने ६७ वर्ष की उम्र मे विस.२०४३ माघ शुक्ला दशमी ८ फरवरी १९८७ को अपनी धर्मपत्नी के विद्यमान होने पर भी उनकी आज्ञा से पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी मसा से जोधपुर में भागवती दीक्षा ग्रहण कर दुष्कर सयम-साधना मे पुरुषार्थ किया। वयोवृद्ध श्री राममुनिजी मसा ने 'पाछल खेती नीपजे, तो भी दारिद्र्य दूर' कहावत को चरितार्थ किया। आप सरल, सौम्य एव अल्पभाषी थे तथा स्वाध्याय में निरत रहते थे।

पीपाड़ के अन्तिम चातुर्मास मे मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी मसा ने आपकी खूब सेवा-सुश्रूषा की। वि.स २०५४ वैशाख शुक्ला दशमी १७ मई १९९७ को आपने संथारे के साथ समाधिमरण का वरण किया।

• श्री कैलाशमुनिजी म.सा

आपका जन्म वि स २०१८ श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री शुभलालजी सा सिंघवी तथा माता सुश्राविका श्रीमती उच्छबकवरजी सिंघवी ने बाल्यावस्था से ही आपको सत्सस्कार प्रदान किए।

अपनी दादीजी के सथारापूर्वक समाधिमरण को देखकर आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आपने वि स २०४३ माघ शुक्ला दशमी रविवार ८ फरवरी १९८७ को २५ वर्ष की युवावस्था मे आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा. के मुखारविन्द से जोधपुर मे भागवती दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षित होकर आपने सयम का सजगता से पालन किया। अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ भी की। युवावर्ग को धर्म मे जोड़ने मे आपकी अहभूमिका रही।

गर्मी के कारण लू के प्रकोप से अचानक स्वास्थ्य बिगड़ जाने से वि स २०४८ ज्येष्ठ कृष्णा नवमी शुक्रवार दिनाक ७ जून १९९१ को जोधपुर मे आपका असामयिक देहावसान हो गया।

(ब) प्रमुख साध्वीवृन्द का परिचय

• साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दर कवर जी म.सा.

जिनका नाम, व्यक्तित्व एव साधनामय जीवन तीनो ही सुन्दर, ऐसी महासती श्री सुन्दरकवर जी म सा का जन्म वि स १९६७ मे श्री भुजबल जी राजपूत की धर्मपत्नी श्रीमती केशरबाई की कुक्षि से हुआ। आपके पिताजी रतलाम नरेश की सेवा मे कार्यरत थे।

बचपन से ही आप श्रेष्ठिवर्य श्री चादमलजी मुणोत रियावालो की धर्मपत्नी की सेवा मे थे। सेवा, सरलता, विनय एव आपके सुन्दर सलोने व्यक्तित्व ने सेठानी सा को आकर्षित कर लिया व उन्होने मातृवत् आपका सरक्षण कर आपको धर्म सस्कार प्रदान किये। सेठानी सा उन्हे बराबर सत-सतियो के दर्शन व समागम हेतु साथ ले जाती। महापुरुषो के पावन दर्शन व सत समागम से आपके मन मे प्रसुप्त वैराग्य सस्कार जागृत हुए और आपने महासती छोगाजी म सा के चरणो मे अपने आपको समर्पित करने का दृढ निश्चय किया। पूज्या महासती जी से ज्ञान-ध्यान सीख कर आपने अपने धर्मपिता श्रेष्ठिवर्य श्री चॉदमलजी व उनकी धर्मशीला सहधर्मिणी की आज्ञा प्राप्त कर वि स १९८३ कार्तिक शुक्ला १५ को १६ वर्ष की वय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार कर सयम-मार्ग मे अपने कदम बढाए।

श्रमणी दीक्षा अगीकार कर आपने पूज्या गुरुणी मैया की अहर्निश सेवा करते हुए उनसे शास्त्रो व थोकड़ो का अच्छा अभ्यास किया। आपने गुरु-भगिनी महासती जी श्री केवलकवर जी म सा की भी अनुपम सेवा की। पूज्या गुरुणी जी व गुरु भगिनी जी म सा की सेवा मे आपका लम्बे समय तक अजमेर विराजना रहा। इसके अनन्तर आपका विचरण विहार मुख्यत मारवाड़ व मेरवाड़ मे रहा। आपके विचरण विहार से मुख्यत जयपुर, जोधपुर, ब्यावर, अजमेर, पाली, मदनगज, भोपालगढ़, थावला, अहमदाबाद, मसूदा आदि क्षेत्र लाभान्वित रहे।

आपका स्वभाव मधुर, हृदय सरल, व्यक्तित्व विनम्र तथा वाणी प्रभावी थी। जैन जैनेतर जो भी इस दिव्यमूर्ति महासाध्वी के दर्शन करता, प्रभावित हुए बिना नही रहता। इन बाल ब्रह्मचारिणी महासती जी के जीवन के पोर पोर मे धर्म व सयम रमा था। बड़ों की ही नही वरन् छोटी महासतियो की सेवा या वैय्यावृत्य करने मे भी आप सदा

आगे रहती। आपके इन आत्मिक गुणो से समूचा चतुर्विध सघ आपसे प्रभावित था। विस २०३१ के सवाई माधोपुर चातुर्मास मे भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के अवसर पर परमपूज्य युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी मसा ने आपको 'प्रवर्तिनी' पद से विभूषित किया। आपका सघनायक के प्रति समर्पण व साध्वी समुदाय के प्रति वात्सल्य भाव अनूठा था। अपनी सहज वात्सल्यपूर्ण शैली मे प्रत्येक आगन्तुक को जीवन-निर्माण, समर्पण, सेवा व संघ-निष्ठा की प्रेरणा देने मे आप निष्णात थीं।

वृद्धावस्था व शारीरिक अशक्यता के कारण विस २०३५ मे जोधपुर सघ के अतिशय अनुरोध पर आपका जोधपुर स्थिरवास विराजना हुआ। तपपूत महासतीवर्या के विराजने से वर्द्धमान भवन, पावटा धर्मस्थानक तीर्थधाम बना रहा। पुण्यनिधान इन महासतीवर्या के दर्शन व मागलिक-श्रवण हेतु प्रतिदिन सैंकडो भाई-बहिन नियमित रूप से उपस्थित होते। विस २०४२ चैत्र कृष्णा त्रयोदशी दिनाक ७ अप्रेल, १९८६ को रात्रि मे ६० वर्ष की सुदीर्घ सयम-साधना व ७ वर्ष के स्थिरवास के पश्चात् आपका सलेखनापूर्वक महाप्रयाण हुआ।

- महासती श्री चूनाजी म.सा

आपका जन्म थाँवला (नागौर) मे हुआ। आप श्री चुन्नीलालजी आबड़ की सुपुत्री थी। आपने विस १९८३ को अजमेर मे महासती श्री भीमकवरजी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की एव निरतिचार सयम का पालन किया।

२७ वर्ष तक सयमनिष्ठ जीवन के अनन्तर विस २०१० भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को अजमेर मे आपका स्वर्गवास हो गया।

- महासती श्री धूलाजी म सा.

आपका जन्म पीपाड़ शहर मे हुआ। आपके पिता श्री छोटमलजी गाँधी तथा माता श्रीमती सुन्दरबाई थी।

आपके पति श्री मूलचन्दजी कटारिया का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी।

आपने विस १९८४ के वैशाख माह मे हरमाड़ा मे महासती श्री राधाजी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

१५ वर्ष के श्रमणी-जीवन के अनन्तर विस १९९९ मे महामदिर-जोधपुर मे आपका स्वर्गवास हो गया।

- महासती श्री स्वरूपकँवरजी म.सा.

आपका जन्म जोधपुर मे विस. १९४६ वैशाख कृष्णा तृतीया को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्रीमान् इन्द्रमलजी कोठारी तथा माता श्रीमती जीवनकँवरजी थी। आपका विवाह जोधपुर के श्री सावतराजजी बागरेचा के साथ हुआ।

आपके पति का आकस्मिक निधन हो जाने से आप ससार से विरक्त हो गयी तथा विस १९९१ माघ शुक्ला पचमी को महासती श्री अमरकवरजी मसा (बड़े) की निश्रा में भागवती दीक्षा ग्रहण की। विस २०२९ आषाढ कृष्णा अष्टमी को घोड़ो का चौक, जोधपुर मे आपका समाधिमरण हो गया।

• साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा.

सरलता, सहिष्णुता, सहजता, सहृदयता, सात्विकता व सतोषवृत्ति की साकार प्रतिमा महासती श्री बदनकवर जी मसा. का जन्म वि स १९६६ आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को भोपालगढ़ के पास 'गारासणी' ग्राम मे वहाँ के कामदार श्रेष्ठिवर्य श्री मोतीलालजी चतुरमुथा की धर्मशीला सहधर्मिणी श्रीमती सुन्दरबाई की कुक्षि से हुआ।

बालिका बदनकवर की बाल-क्रीडाएँ सामान्य बालक-बालिकाओ से विशिष्ट थी। बचपन मे भी मुख वस्त्रिका बॉधना, पूँजनी रखना और छोटी-छोटी कटोरियो के पातरे तथा रुमाल की झोली बनाकर आहार बहरने जाना इत्यादि क्रीडाओ मे आपको बहुत आनन्द आता। माता-पिता की लाड़ प्यार भरी शीतल छाव मे आपका लालन-पालन हो रहा था कि क्रूरकाल के क्रूर पजो ने पिताश्री का साया असमय ही छीन लिया। छह वर्ष की अबोध बालिका 'बदन' को असार ससार के स्वरूप का परिचय मिल गया। पूरा परिवार ननिहाल भोपालगढ़ आ गया। १३ वर्ष की वय मे आपका भोपालगढ़ निवासी प्रतिष्ठित श्रावक श्री धीगड़मलजी कोचर मेहता (बागोरिया वाले) के सुपुत्र श्री बख्तावरमल जी के साथ परिणय हुआ। सभी 'बदन' के भाग्य की सराहना कर रहे थे, धर्मानुरागी सुसस्कारी कोचर परिवार भी 'बदन' सी वधू पा प्रसन्नचित्त था, पर 'होनी' को कुछ ओर ही मजूर था। पुन काल का प्रकोप हुआ और बदन के सौभाग्य सिन्दूर श्री बख्तावरमलजी को झपट चला। बदनकॅवर हतप्रभ रह गई। अश्रुधारा की जगह उसने उसी दिन मौन साध ली।

पति के वियोग को सयम-सयोग का निमित्त मानकर ससार की असारता का साक्षात् अनुभव कर आपने मन ही मन दीक्षा लेने का सकल्प कर लिया। परिजन दीक्षा देने को सहमत नही थे, पर आपकी निर्भीकता व दृढ़ता के आगे सबको निरुत्तर होना पड़ा। अजमेर की बहिन चम्पाजी से आपने अक्षर ज्ञान प्रारम्भ किया। सरल, सौम्य, भद्रिक सत श्री लाभचन्दजी मसा एव दृढ सयमी महासती श्री अमरकवर जी मसा के पावन सान्निध्य से आपकी वैराग्य भावना और अधिक बलवती हो उठी। आप प्रारम्भ से ही निर्भीक व दृढ निश्चय की धनी थी। अजमेर साधु-सम्मेलन मे जाकर आपने आरम्भ-समारम्भ व सचित्त-त्याग जैसे कई त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार कर लिये। आपने वैराग्यावस्था मे सामायिक, प्रतिक्रमण, कई बोल थोकड़े व ढाले कठस्थ करते हुए अध्ययन क्रम चालू रखा।

वि स १९९१ माघ शुक्ला पचमी को सिंहपोल जोधपुर मे परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी मसा के मुखारविन्द से व पूज्या महासती जी श्री अमरकवर जी मसा के निश्रा मे आपकी भागवती श्रमण दीक्षा सम्पन्न हुई।

दीक्षा लेकर जीवन लक्ष्य पर आप अप्रमत्त भाव से आगे बढ़ने लगी। ज्ञान, दर्शन, चारित्र का विकास ही अब आपका जीवन लक्ष्य था। जीवन के प्रारम्भ मे शिक्षा न पाने के कारण भले ही शाब्दिक विद्वत्ता कम रही हो, पर 'ज्ञानस्य फल विरति' की सच्ची विद्वत्ता का पाठ आपने बखूबी पढ़ा। सयमधर्म मे आपकी अटूट आस्था थी, सरलता ही जीवन का आभूषण था, पूज्या गुरुणी श्री अमरकवर जी मसा एव महासती श्री केवलकवर जी मसा के पावन सान्निध्य मे आपका सयम जीवन निखरा। उन्होने आपके जीवन मे उच्च सस्कार व सयम निष्ठा कूट-कूट कर भरी। महासती द्वय का पावन साया भी कुछ अरसे तक ही बना रहा व सघाड़े का दायित्व आपको सभालना पड़ा।

महासती श्री बदनकवर जी मसा सहज पुण्यशालिता की धनी थे। बचपन मे मॉ-बाप का अतिशय दुलार, दीक्षा-जीवन मे पूज्या गुरुणी जी व महासती श्री केवलकवर जी मसा का शीतल सान्निध्य व बाद मे गुरुणी भगिनियो व शिष्याओ का समादरपूर्ण सहयोग व समर्पण आपको प्राप्त हुआ। आपने जीवन मे कभी प्रवचन नही

दिया, पर आपके उत्कट आत्मिक गुणों के आगे भक्त जन सहज ही झुक जाते। आप प्रारम्भ से ही निर्भीक व अनुशासनप्रिय थी। गॉव-गाँव नगर-नगर मे पाद-विहार कर आपने जिनवाणी का प्रचार-प्रसार किया। प्रपञ्चो से आप बिल्कुल विरक्त रही।

पूज्या प्रवर्तिनी महासती जी श्री सुन्दरकवर जी मसा के महाप्रयाण के अनन्तर आपके दीक्षा दिवस १ फरवरी १९८६ को परमपूज्य आचार्य भगवन्त ने आपको 'प्रवर्तिनी' पद प्रदान किया। सरल, सौम्य, अनुशासनप्रिय महासती जी मसा ने साध्वी प्रमुखा एव प्रवर्तिनी के इस प्रतिष्ठित दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। गाभीर्य, धैर्य, वात्सल्य, सरलता जैसे अनेक गुणो की धनी महासती जी के आनन पर सदा प्रसन्नता छाई रहती व अपनी आत्मीयता से आप सभी को प्रभावित करती। आपका जीवन स्फटिक सा स्वच्छ निर्मल था। उपालम्भ देना आपके स्वभाव मे ही नही था। लाग लपेट से आप कोसो दूर थी। शारीरिक अस्वस्थता के कारण पिछले कई वर्ष आपका जोधपुर स्थिरवास विराजना हुआ। ८५ वर्ष की आयु मे परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द जी मसा के मुखारविन्द से आश्विन कृष्णा पचमी रविवार दिनाक २५ सितम्बर ८४ की अपराह्न आपने तिविहार सथारा व २६ सितम्बर ९४ की प्रात आचार्यप्रवर से जीवनपर्यन्त चौविहार सथारा के प्रत्याख्यान कर अपने अन्तिम मनोरथ को सिद्ध करते हुए उसी दिन इस नश्वर देह का समाधिपूर्वक त्याग कर देवलोकगमन किया।

• महासनी श्री हरकवरजी म सा. (छोटे)

आपका जन्म किशनगढ़ मे विस१९५१ आषाढ शुक्ला चतुर्दशी को हुआ। आप श्री समरथमलजी नाहर की सुपुत्री थी। आपके पति श्रीमान् तेजकवरजी बोहरा का आकस्मिक निधन हो जाने से आप ससार से विरक्त हो गयी। आपने विस१९९३ भाद्रपद शुक्ला पचमी को अजमेर मे महासती श्री धनकवरजी मसा(बड़े) की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

२५ वर्षों का सयमनिष्ठ जीवन जीने के अनन्तर विस२०१८ श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को किशनगढ मे आपने समाधि-मरण को प्राप्त किया।

• महासती श्री अमरकवरजी म.सा. (छोटे)

आपका जन्म किशनगढ़ मे विस १९६० माघ शुक्ला चतुर्थी को हुआ। आपके पिता श्री हीरालालजी बोहरा तथा माता श्रीमती धापूबाईजी थी। आपके पति श्री मगराजजी बड़मेचा का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आपने विस १९९३ माघ शुक्ला त्रयोदशी को किशनगढ मे महासती श्री राधाजी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

विस २०१५ फाल्गुन शुक्ला षष्ठी को ब्यावर मे आपका स्वर्गवास हो गया। आपने २२ वर्ष तक निरतिचार सयम का पालन किया।

• महासती श्री फूलकवरजी म.सा.

आपका जन्म बारणी (जोधपुर) मे वि.स १९६३ भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को हुआ। आपके पिता श्री भीकमचन्दजी भण्डारी तथा माता श्रीमती सिरेकवरजी थी। आपका विवाह जोधपुर के श्री पृथ्वीराजजी भसाली के साथ हुआ। गृहस्थ अवस्था मे आपकी धार्मिक रुचि बहुत अच्छी थी, अत आपने अपने पति की आज्ञा लेकर वि.स

१९९४ मार्गशीर्ष शुक्ला पचमी को महामदिर-जोधपुर मे महासती श्री हुलासकँवरजी म सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

३५ वर्षों तक सयम का पालन कर आपने वि स २०२९ श्रावण शुक्ला द्वितीया को घोड़ो का चौक जोधपुर में समाधिमरण को प्राप्त किया।

- **साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी श्री लाडकवर जी म.सा.**

साध्वीप्रमुखा महासती श्री लाडकवर जी म सा का जन्म पुण्यधरा पीपाड़ शहर मे धर्मप्रेमी सुश्रावक श्रीमान् फतेहराजजी मुणोत की धर्मसहायिका सहधर्मिणी श्रीमती बदनबाईजी की कुक्षि से हुआ। बचपन से ही माता-पिता एव सतसती-समागम से आपकी धर्माभिरुचि व धर्म सस्कार पुष्ट होते रहे।

योग्यवय होने पर आपका श्री जुगराज जी भण्डारी, महामन्दिर (जोधपुर) के साथ परिणय हुआ। अल्पकालिक वैवाहिक जीवन के उपरान्त ही पतिदेव श्री जुगराजजी भण्डारी का असामयिक निधन हो गया। यौवन की दहलीज पर खड़ी लाडकँवर को ससार के सच्चे स्वरूप, सासारिक सुखो की असारता व क्षण भगुरता का बोध हुआ और बाल्यकाल से प्राप्त धर्माभिरुचि वैराग्य भाव मे परिणत हो गई। १६ वर्ष की लघुवय मे परमपूज्य आचार्य हस्ती की अनुज्ञा से वि स १९९५ माघ शुक्ला त्रयोदशी को श्रमणी जीवन अगीकार कर आप महासती श्री अमरकवर जी म सा की शिष्या बनी।

श्रमणी दीक्षा अगीकार कर आपने गुरुणी मैय्या के चरणो मे रहकर धार्मिक ज्ञान से अपने सयम जीवन को समृद्ध किया। सेवाभाव, सरलता, निस्पृहता, दृढ़ आचार निष्ठा, उच्च समर्पण भाव की बेमिसाल प्रतिमा महासती जी म सा ने दीक्षा लेने के साथ ही शिष्या नही बनाने व नवीन वस्त्र न पहिनने का नियम लेकर निस्पृहता व त्यागवृत्ति का अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया। सेवा व वैय्यावृत्य की धनी महासती श्री लाडकवर जी म सा ने महासती श्री स्वरूप कुवर जी म सा., महासती श्री धनकँवर जी म सा., महासती श्री किशन कवर जी म सा (खीवसर वाले), महासती श्री ज्ञानकवर जी म सा., महासती श्री वृद्धिकवर जी म सा., प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवर जी म सा प्रभृति महासतीवृन्द की पूर्ण निष्ठा, कुशलता व अग्लान भाव से सेवा कर अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया।

आपके ६४ वर्षीय सयम-जीवन मे ३६ वर्षावासो का लाभ जोधपुर को मिला। इसके पीछे भी आपकी सेवा भावना व वैय्यावृत्य की कुशलता ही प्रमुख कारण थे। सुदीर्घ काल तक एक ही स्थान पर विराजने पर भी आप व्यक्तिगत मोह-ममत्व से सदा दूर रहे। श्रावक-श्राविकाओ को कभी भी कोई उपालम्भ न देकर सदा स्वय अपनी धर्म-साधना व आत्म-चिन्तन मे ही लीन रहना व आगन्तुको की धर्मप्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना आपके जीवन की विशेषता थी। स्वय प्रवचन प्रवीण होते हुए भी छोटी सतियो को आगे बढाने हेतु उन्हे प्रवचन के लिए आप प्रोत्साहित व प्रेरित करते रहते थे। आपने अपनी गुरु भगिनियो की तो सेवा की ही, अनेक सतियो को सयमनिष्ठा व दृढ़ आचार पालन की दृष्टि से उन्हे घड़ने का भी महनीय कार्य कर शासन की प्रभावना की। सेवाकार्य मे आपने अपने स्वास्थ्य की भी कभी परवाह नही की।

पूज्यपाद आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म सा ने वि स २०४६ मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी ९ दिसम्बर, १९८९ को आपको उपप्रवर्तिनी पद से विभूषित किया। पूज्या प्रवर्तिनी महासती श्री बदन कवर जी म सा के स्वर्गारोहण के पश्चात् वि स २०५१ आश्विन शुक्ला दशमी १४ अक्टूबर, १९९४ को आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म सा द्वारा

आपको प्रवर्तिनी पद से सुशोभित किया गया।

अन्तिम वर्षो मे स्वास्थ्य प्रतिकूल होने पर भी आप सदा समभाव मे रहकर साधनाशील रहती थी। १४ नवम्बर २००२ को जोधपुर में ही पूर्ण समाधिभाव व सथारे के साथ रात्रि मे लगभग ११४५ बजे आपका महाप्रयाण हो गया।

• महासती श्री उगमकवरजी म सा.

आपका जन्म जोधपुर मे हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री सज्जनराजजी भसाली तथा माता श्रीमती कुवरीबाईजी थी। आपके पति श्री सुखलालजी बाफना का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी।

आपने विस १९९७ मार्गशीर्ष शुक्ला पचमी को भोपालगढ़ मे महासती श्री धनकवरजी म सा (बड़े) की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की तथा सयमी जीवन में सद्‌गुणो का अर्जन किया।

विस २००१ मे नागौर शहर मे आपका स्वर्गगमन हो गया।

• महासती श्री धनकवरजी म सा. (सबसे छोटे)

आपका जन्म जोधपुर मे विस१९५६ के पौष माह मे हुआ। आपके पिता श्रीमान् भागचन्दजी मूथा तथा माता श्रीमती सिरेबाईजी थी।

आपके पति श्री मनोहरमलजी सिंघवी का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आपने विस१९९८ आषाढ शुक्ला द्वितीया को जोधपुर मे महासती श्री राधाजी म सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

३० वर्षों तक सयम पालन कर विस २०२८ मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी को घोड़ो का चौक जोधपुर मे आपने समाधिमरण को प्राप्त किया।

• साध्वीप्रमुखा महासती श्री सायरकवरजी म.सा

सरलहृदया महासती श्री सायरकवरजी म सा का जन्म मद्रास मे विस १९८३ की फाल्गुन शुक्ला दशमी को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्रीमान् रिड़मलजी भण्डारी तथा माता सुश्राविका श्रीमती जतनबाईजी से आपको बचपन से ही धार्मिक सस्कार प्राप्त होते रहे, जिसके कारण आप सन्त-सतियो के दर्शन-वन्दन एव प्रवचन-श्रवण का यथायोग्य लाभ लेती रहती थी।

बीकानेर निवासी श्रीमान् शिवकरणजी मेहता खजाची के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। कुछ समय पश्चात् ही आपके पतिदेव का आकस्मिक निधन हो जाने से आपने ससार की असारता को अच्छी तरह समझ लिया तथा परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मसा. के मुखारविन्द से विस २००३ की माघ शुक्ला त्रयोदशी को बारणी खुर्द मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार कर श्रमणी-जीवन को अपना पथ बनाया। आपने श्रद्धेया महासती श्री बदनकवर जी म सा की सेवा में रहकर अपना ज्ञान-ध्यान त्याग-तप आगे बढ़ाया। आपकी मधुरता, विनम्रता एव वात्सल्य भावना आगन्तुक श्रोताओं को सहज ही प्रभावित कर लेती है। आप स्वभाव से सरल, सहिष्णु एव भद्रिक महासती हैं तथा सम्प्रति महासती मण्डल में सबसे वरिष्ठ होने से साध्वी प्रमुखा है। आपका विचरण क्षेत्र निमाज,

ब्यावर, पीपाड़, पाली, भोपालगढ, मदनगज, जोधपुर, नागौर, जयपुर, सैलाना, अजीत, भीलवाड़ा, बालोतरा, इन्दौर, बीजापुर, यादगिरी, पाचोरा, गुलाबपुरा, धनोप, अजमेर, दुन्दाड़ा, नीमच आदि मुख्य रूप से रहे हैं।

आपके ससार पक्ष मे छोटी बहिन मैनाजी जो कि वर्तमान मे शासन प्रभाविका परमविदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी मसा के नाम से रत्न सघ मे ख्यात नामा महासती है, की दीक्षा भी आपके साथ ही सम्पन्न हुई थी।

• शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म सा.

शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी मसा का जन्म दृढधर्मी, प्रियधर्मी, सुश्रावक श्रीमान रिड़मलजी भण्डारी की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती जतनकवरजी भण्डारी की कुक्षि से मद्रास शहर मे विस१९९१ मे आषाढ शुक्ला द्वितीया को द्वितीय पुत्री के रूप मे हुआ। परिवार जनो ने प्रेम से 'मैना' नाम रखा।

विरासत मे प्राप्त पैतृक सस्कारो के कारण 'मैना' जी की बचपन से ही धार्मिक भावना उच्चता की ओर बढ़ने लगी थी। आपकी दृढ़ वैराग्य भावना के कारण माता-पिता ने कठिन परीक्षाओ के पश्चात् आपको अपनी बड़ी बहन के साथ दीक्षित होने की आज्ञा प्रदान की। माघ शुक्ला त्रयोदशी स २००३ के शुभ मुहूर्त मे बारणी खुर्द ग्राम मे आपकी भागवती दीक्षा आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी मसा के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। गुरुणीजी प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवरजी मसा की नेश्राय मे आपने ज्ञानाराधन से अपनी योग्यता मे वृद्धि की।

महासती श्री मैनासुन्दरीजी मसा बाल ब्रह्मचारिणी होने के साथ प्रारभ से ही कुशाग्र बुद्धि की धनी रही। आपने प्राकृत, सस्कृत, आगम, थोकड़े, इतिहास आदि का गहन अध्ययन किया। आपने निष्ठा एव लगन से अपनी प्रवचन शैली को बहुत प्रभावोत्पादक बना लिया। सयम की निर्मलता बनाये रखने के साथ आपने जिनशासन की विशिष्ट प्रभावना की और आज भी कर रही है। इसी कारण आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मसा ने आपको 'शासन प्रभाविका' के पद से अलङ्कृत किया।

आपकी वाणी में ओज एव प्रवचनो मे सरसता रहती है। जैन धर्म के सिद्धान्तो के प्रतिप्रादन मे आप विशेष निपुण है। आपकी वाणी से प्रभावित होकर कई बहनो ने श्रमण जीवन अगीकार किया है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र ,कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश आदि अनेक प्रान्तो मे विचरण के साथ आपके चातुर्मासो का सौभाग्य निमाज, ब्यावर, पीपाड़, पाली, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जयपुर, सैलाना, भीलवाड़ा, भोपालगढ़, अजमेर, टोक, चौथ का बरवाड़ा, बीजापुर, गजेन्द्रगढ, बैगलौर, मद्रास, रायचूर, मुम्बई, जलगाँव, कानपुर, मेड़ता, कोटा, उज्जैन आदि क्षेत्रो को प्राप्त हुआ।

आपके प्रभावोत्पादक प्रवचनो से स्वाध्यायी वर्ग तथा अन्य भाई-बहिन भी लाभान्वित हो सके, इस लक्ष्य से पर्युषण के प्रवचनो के सग्रह रूप मे 'पर्युषण पर्वाराधन' पुस्तक का प्रथम प्रकाशन लगभग २० वर्ष पूर्व हो गया था। आपके अनेक प्रवचन जिनवाणी एव स्वाध्याय शिक्षा पत्रिकाओ मे भी प्रकाशित हुए है। आपकी अब तक अनेक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमे दुर्लभ अग चतुष्टय, पर्युषण पर्वाराधन, पथ की रुकावटे, शिवपुरी की सीढियाँ, सुजान ज्योति आदि प्रमुख है। ।

• महासती श्री उमरावकवर जी म सा.

आपका जन्म वि.स १९६७ मे पीपाड़ शहर मे हुआ। आपके पिता श्री कनकमलजी भण्डारी तथा माता

श्रीमती ओटीबाईजी थी। आपका विवाह श्री माणकमलजी सिंघवी के साथ हुआ। आपके पति का आकस्मिक निधन हो जाने के पश्चात् आप ससार से विरक्त हो गयी तथा वि स २०४४ ज्येष्ठ कृष्णा सप्तमी को जोधपुर मे महासती श्री अमरकवर जी म सा (छोटे) की निश्रा मे आपने भागवती दीक्षा अगीकार की।

२२ वर्ष तक सयम का पालन कर आपने वि स २०२६ पौष कृष्णा चतुर्थी (या पंचमी) को घोड़ो का चौक जोधपुर में समाधि-मरण को प्राप्त किया।

- **महासती श्री सन्तोष कवर जी म.सा**

सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकवरजी म.सा का जन्म अजमेर जिलान्तर्गत मसूदा ग्राम मे सुश्रावक श्री धनराजजी राका की धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्राबाई जी राका की कुक्षि से विक्रम सवत् १९८७ मे हुआ। पुत्री का नाम 'सन्तोष' रखा गया। माता-पिता ने धार्मिक सस्कारो से समृद्ध बनाने मे उल्लेखनीय योगदान किया।

सन्तोषजी का विवाह ब्यावर के सोनी परिवार मे हुआ। परन्तु कुछ समय पश्चात् ही पतिदेव का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से वैराग्य हो गया। दृढ वैराग्य भावना से आपने महासतीजी श्री छोटा धनकवर जी म सा की निश्रा मे अजमेर शहर मे वि स २००७ ज्येष्ठ शुक्ला पचमी को भागवती दीक्षा अगीकार कर सयम का पथ अपनाया। आपने प्रवचन-साहित्य, ढाले, चौपाई आदि का अभ्यास किया। आपकी सन्तोषवृत्ति, सरलता व मधुर वाणी आगन्तुक दर्शनार्थियो को आज भी आकर्षित करती है। आप सयम धर्म का निर्मल पालन कर रही हैं। विक्रम सवत् २०१६ से आपको प्रवर्तिनी महासती श्री सुदरकवर जी म सा की सेवा मे रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आपके सर्वाधिक चातुर्मास जोधपुर में हुए। जोधपुर के अलावा निमाज, पीपलिया, बर, मसूदा, विजयनगर, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ, अहमदाबाद, पाली, भोपालगढ, थावला, नसीराबाद, बड्डू, जावला, गोविन्दगढ, पीह, हरमाड़ा, मेड़ता सिटी , गोटन, धनारीकला आदि स्थानो को भी आपके चातुर्मास प्राप्त हुए।

आपने जोधपुर के पावटा स्थानक मे सवत् २०३५ से २०४३ तक रहकर प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकवर जी म सा., महासती श्री इचरजकवर जी म सा आदि की अग्लान भाव से सेवा की।

- **महासती श्री ज्ञानकवर जी म.सा.**

आपका जन्म पाली मे वि स १९७० की चैत्र शुक्ला दशमी को हुआ। आप श्री गुलाबचन्दजी वैद की सुपुत्री थी। आपके पति श्री माणकचन्दजी सुकलेचा का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी तथा वि स २००९ मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को पाली में प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवर जी म सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

२८ वर्षों तक सयम का पालन कर आपने वि स २०३७ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीय अष्टमी को घोड़ो का चौक, जोधपुर मे समाधिमरण को प्राप्त किया।

- **महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा.**

शान्तस्वभावी महासती श्री शान्तिकवरजी म सा. का जन्म जोधपुर जिलान्तर्गत भोपालगढ़ तहसील के बड़ा अरटिया ग्राम मे श्रीमान् सिरेमल जी कर्णावट एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भवरबाईजी की आत्मजा के रूप में हुआ।

आपके माता-पिता ने आपका विवाह भोपालगढ निवासी श्री भवरलाल जी काकरिया के साथ सम्पन्न किया। किन्तु असमय में ही आपके पतिदेव का निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। फलस्वरूप आपने महासती श्री हरकवर जी म.सा. (बड़े) की निश्रा मे पाली मे विक्रम स २००९ मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को भागवती दीक्षा ग्रहण कर ली।

आपने अपने नाम को सार्थक करते हुए शान्तिपूर्वक जीवन जीते हुये ज्ञान, ध्यान व तप-त्याग मे अपने जीवन को आगे बढ़ाया। शान्तस्वभावी होने के साथ आप तपस्विनी महासती है। वृद्धावस्था मे भी तप मे विशेष पुरुषार्थ प्रकट करने के कारण आपको आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा ने 'तपस्विनी' पद से अलङ्कृत किया है। आप पिछले अनेक वर्षो से पर्युषण के दिनो मे अठाई तप करती रही है तथा मासखमण जैसे दीर्घकालीन तप भी अनेक बार किए है। वि.स २०५१ के पुष्कर चातुर्मास मे आपने मासखमण की तपस्या की। इसके पश्चात् २०५२ के अलीगढ (रामपुरा) चातुर्मास मे, २०५४ के हिण्डौन चातुर्मास मे और २०५५ के धनोप चातुर्मास मे भी मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न की। २०५३ के अलवर चातुर्मास मे २४ उपवास तथा २०५६ के नागौर चातुर्मास मे १८ उपवास की तपस्या सम्पन्न की।

आप प्राय श्रावण व भाद्रपद माह मे एकान्तर तप भी करती रहती है। सयम और तप की आराधना मे आपके बढ़ते हुए कदम आज भी सबके लिये प्रेरणा स्रोत है।

आपने अब तक मुख्य रूप से तिलोरा, आलनपुर, जयपुर, किशनगढ, मदनगज, धनोप, पुष्कर, मेड़ता सिटी, अरटिया, पालासनी, जोधपुर, भोपालगढ, अजमेर, नागौर, आगूँचा, सरवाड़, हीरादेसर, भरतपुर, अजमेर, पीपाड़शहर, नसीराबाद, अलीगढ, अलवर, हिण्डौन सिटी आदि स्थानो पर चातुर्मास किये है। आपकी शान्त एव सौम्य मुखमुद्रा आगन्तुको को सयम-मार्ग मे बढ़ने की विशेष प्रेरणा प्रदान करती है।

- **महासती श्री सुगनकवर जी म सा**

आपका जन्म वि.स १९६६ कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को आगूँचा (भीलवाड़ा) मे हुआ। आपके पिता श्री हरकचन्द जी राका व माता श्रीमती झमकूबाई जी थी। श्री मोतीसिह जी कोठारी-कनकपुर वालो के साथ आपका विवाह हुआ। परन्तु वैवाहिक जीवन अधिक समय तक नही चल सका। असमय मे ही आपके पति का स्वर्गवास हो जाने से आपको ससार की असारता का बोध हो गया।

आपने वि.स २०१६ माघ शुक्ला पचमी को अपने जन्म-स्थान मे ही महासती जी श्री हरकवर जी म.सा (बड़े) की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपने वि.स २०४५ कार्तिक कृष्णा अष्टमी १ नवम्बर १९८८ मगलवार को पुष्यनक्षत्र के योग मे लगभग ४३० घण्टे के सथारा पूर्वक मेड़तासिटी मे समाधिमरण को प्राप्त किया।

- **महासती श्री इचरजकँवर जी म सा.**

आपका जन्म वि.स १९७४ आषाढ कृष्णा एकम को जोधपुर मे हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री मिलापचन्दजी मुणोत तथा माता श्रीमती कल्याणकवरजी मुणोत थी।

आपका विवाह अजमेर निवासी श्री मोहनलालजी नवलखा के साथ हुआ। आपने अपने पतिदेव से आज्ञा

प्राप्त कर वि.स २०१८ पौष शुक्ला द्वादशी को अजमेर मे प्रवर्तिनी महासती श्री सुदरकँवर जी म.सा. की निश्रा में भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपने वि.स २०३५ से २०४३ तक पावटा स्थानक, जोधपुर मे स्थिरवास किया। अन्त मे आपने वि.स. २०४३ फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी मगलवार ३ मार्च १९८७ को प्रात ६ बजकर ५ मिनट पर सथारापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया।

• महासती श्री वृद्धिकंवर जी म.सा.

आपका जन्म डॉगरा ग्राम मे हुआ। पिता श्री केसरीमल जी तथा माता श्रीमती सोनीबाई जी से आपको सत्सस्कार प्राप्त हुए। आपका विवाह श्री मदनलाल जी कर्णावट के साथ हुआ। आपके पति का आकस्मिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आप श्री त्रिलोकचन्दजी सचेती, मद्रास की बहिन थी।

आपने वि स २०१९ मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को सैलाना मे प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवर जी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा ग्रहण की।

१६ वर्ष का सयम पालन कर आपने विस २०३५ चैत्र कृष्णा पचमी को घोड़ो का चौक, जोधपुर मे समाधिमरण को प्राप्त किया।

• महासती श्री तेजकवर जी म सा.

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकवरजी मसा का जन्म रत्नसघ के प्रसिद्ध सुश्रावक श्री उमरावमल जी सेठ जयपुर की धर्मपत्नी श्रीमती सज्जनकवर जी की कुक्षि से विस १९९६ ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया को हुआ। सेठ परिवार प्रारम्भ से ही धार्मिक सस्कारो से ओतप्रोत रहा है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी मसा जहाँ भी विराजते, आपके पिताश्री प्रत्येक पूनम को वहाँ जाकर अवश्य ही दर्शन-वन्दन का लाभ लेते थे। इस कारण आपके पिताश्री पूनमिया श्रावक जी के नाम से प्रसिद्ध थे। आपकी माताश्री भी धर्मपरायण आदर्श श्राविका थी। प्रारम्भ से ही आपके घर-परिवार मे धार्मिक वातावरण होने से आपकी धर्म-भावना निरन्तर बढ़ने लगी।

आपने शासनप्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी मसा की प्रेरणा से जयपुर शहर मे विस २०२० माघ शुक्ला द्वितीया को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के समय आपका नाम तेजकवर से बदलकर महासती श्री निर्मलावती जी मसा रखा गया, किन्तु आप महासती श्री तेजकवरजी मसा. के नाम से ही प्रसिद्ध है।

आपने अपनी गुरुणी जी की आज्ञा मे रहकर थोकड़ो एव शास्त्रो का अच्छा अभ्यास किया। आज आप व्याख्यात्री महासती के रूप मे रत्न सघ मे प्रसिद्ध है।

आपने अब तक भीलवाड़ा, भोपालगढ़, जयपुर, जोधपुर, कोसाना, बिलाड़ा, गुलाबपुरा, बालोतरा, अजीत, बीजापुर, यादगिरी, पाचोरा, पाली, अलवर, हरमाड़ा, रूपनगढ़, खोह, गगापुर सिटी, पीपाड़ शहर, अहमदाबाद, मुम्बई, हैदराबाद, रायचूर, जलगाव, कजगॉव, तोंडापुर आदि स्थानो पर चातुर्मास किये है।

आपकी वाणी मे विशेष मिठास है, जिसके कारण श्रोतागण आपसे विशेष प्रभावित रहते हैं।

• महासती श्री रतनकवर जी म.सा.

व्याख्यात्री महासती श्री रतनकवरजी मसा का जन्म गीजगढ निवासी प्रियधर्मी सुश्रावक श्रीमान् कुन्दनमलजी चोरड़िया की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती रूपवती जी चोरड़िया की कुक्षि से वि.स १९९६ श्रावण शुक्ला पचमी को हुआ। माता-पिता ने बचपन मे ही आपको धार्मिक सस्कारों से सिंचित किया।

आपकी धार्मिक रुचि दिनोंदिन बढ़ती रही। जब आपको शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी मसा का पावन सान्निध्य मिला तो आपकी वैराग्य भावना पुष्ट होने लगी। परिणामत जयपुर में विस २०२४ वैशाख शुक्ला षष्ठी को आपने जैन भागवती दीक्षा अगीकार की।

गुरुणीजी के पूर्ण अनुशासन मे रहते हुए आपने आगम-शास्त्रो एव थोकड़ो का गहन अध्ययन प्रारभ किया। त्याग-तप एव सेवा के क्षेत्र मे भी अपने चरण आगे बढाये। वर्तमान मे आप व्याख्यात्री महासती जी के रूप में जिनशासन की प्रभावना मे निर्मल सयम-पालन के साथ तत्पर है।

आपने जयपुर मे रहकर अपने से कनिष्ठ एव अस्वस्थ महासती श्री चन्द्रकला जी मसा की प्रमुदित भावो से सेवा की है, जो प्रशसनीय है।

आपने अब तक मुख्य रूप से जयपुर, जोधपुर, भोपालगढ, अजमेर, बिलाड़ा, गुलाबपुरा, ब्यावर, चौथ का बरवाड़ा, टोक, बीजापुर, गजेन्द्रगढ, बैगलोर, मद्रास, रायचूर, बालकेश्वर (मुम्बई), जलगाँव, पाली, सवाई माधोपुर , हिण्डौन, कानपुर, कोटा, उज्जैन, अहमदाबाद आदि क्षेत्रो मे चातुर्मास किये है।

आपके प्रवचन ओजस्वी एव सरस होते है। युवावर्ग को धर्म से जोड़ने मे आपकी सदैव सक्रिय भूमिका रहती है।

• महासती श्री सुशीलाकवर जी म.सा

विदुषी महासती श्री सुशीलाकवरजी मसा का जन्म सूर्यनगरी जोधपुर के सुश्रावक श्रीमान् भेरूसिहजी मेहता की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती उगमकवरजी मेहता की कुक्षि से वि.स २००९ मे वैशाख कृष्णा त्रयोदशी को हुआ।

माता-पिता एव परिजनो ने अपने धार्मिक सस्कारो से आपका पालन-पोषण किया। बचपन से ही आप घोड़ो के चौक स्थानक मे सन्त-सतियो की सेवा मे अपने माताजी के साथ आती रहती थी।

जब आपको शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी मसा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ तो आपके धार्मिक सस्कार एव वैराग्य भावना बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप आपने सरदार स्कूल जोधपुर मे विस २०२६ की ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी को श्रमणी दीक्षा अगीकार की तभी से आप सुशीलाकवर जी मसा के रूप मे जानी जाती हैं।

आपने हिन्दी, सस्कृत, आगम, थोकड़े आदि का बहुत अच्छा अध्ययन किया। आपकी वाणी मे ओज एव माधुर्य है। आपके प्रवचन सरल एव सरस होने से श्रोताओ के लिये विशेष प्रभावोत्पादक होते हैं।

आपने अब तक कोसाणा, अजमेर, जोधपुर, बिलाड़ा, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा, ब्यावर, चौथ का बरवाड़ा, टोंक, इन्दौर, जयपुर, यादगिरी, बीजापुर, पाचोरा, भरतपुर, भोपालगढ, टाटोटी, किशनगढ, सवाई माधोपुर, दूणी, खण्डप, मसूदा, खेरली, पाली, केकड़ी , देई, करही , धुळे, ताहराबाद आदि स्थानों पर चातुर्मास सम्पन्न किये है।

आप विदुषी व्याख्यात्री महासती के रूप मे रत्न सघ मे विश्रुत है। आपने महिलाओ, युवतियो एव युवको मे

विशेष धार्मिक प्रेरणा फूकी है। आप निष्ठापूर्वक जिनशासन सेवा में समर्पित हैं।

- **महासती श्री सूरजकवर जी म.सा.**

आपका जन्म नागौर जिले के सुरसरो गाव मे विस १९६६ की चैत्र शुक्ला पचमी को हुआ। आपके पिता श्री शुभकरणजी सोनी तथा माता श्रीमती जड़ावबाईजी थी।

आपका विवाह श्री मोहनलाल जी सुराणा के साथ हुआ। आपके पति का स्वर्गवास हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आपने प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकँवरजी मसा की निश्रा मे विस २०२९ माघ शुक्ला त्रयोदशी को भागवती दीक्षा अगीकार की। आप 'भखरी वाले' महाराज के नाम से प्रसिद्ध थी।

आपने विस २०५६ कार्तिक शुक्ला नवमी दिनाङ्क १७ नवम्बर १९९९ को साय ५५० बजे अजमेर मे सागारी सथारा ग्रहण किया तथा इसी रात्रि को ७२५ बजे यावज्जीवन चौविहार त्याग रूप सथारा के प्रत्याख्यान ग्रहण कर लिये। ११ दिन तक आपका सथारा पूर्ण चेतन अवस्था मे चला। अन्त मे विस २०५६ मार्गशीर्ष कृष्णा पचमी, शनिवार २७ नवम्बर १९९९ को प्रात १०१५ पर समाधिमरण को प्राप्त हुए।

- **महासती श्री सरलकवर जी म.सा.**

आपके पिता श्री फूलचन्दजी लूकड तथा माता श्रीमती मगनबाईजी थी। माता-पिता ने आपका नाम सज्जन कवर जी रखा। आपका विवाह श्री मगराज जी खिवसरा जोधपुर के साथ सम्पन्न हुआ। पति के निधन से आपको ससार से विरक्ति हो गयी।

आपने विस २०३३ चैत्र शुक्ला नवमी गुरुवार दिनाङ्क ८ अप्रेल १९७६ को महासती श्री शान्तिकवर जी मसा की निश्रा मे भोपालगढ मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। विस २०४२ के अजमेर चातुर्मास मे आपने मासखमण की दीर्घ तपस्या की।

विस २०४५ प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा मगलवार ३१ मई १९८८ को नागौर मे ६ घण्टे के सथारापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त हुए।

- **महासती श्री सौभाग्यवती जी म सा.**

व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी मसा का जन्म जोधपुर जिले के भोपालगढ कस्बे मे विक्रम सवत् २०१४ की वैशाख शुक्ला तृतीया को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री मुकनचन्दजी काकरिया थे तथा माता सुश्राविका श्रीमती गुटियाबाई है। आपने विस २०३३ चैत्र शुक्ला नवमी, गुरुवार को भोपालगढ मे प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवर जी म.सा. की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की। दीक्षा के पूर्व आपका नाम सोहनकवर था, दीक्षोपरान्त आपका नाम 'महासती श्री सौभाग्यवतीजी' रखा गया। किन्तु आपको अनेक श्रद्धालु सोहनकवरजी म.सा. के नाम से ही जानते है। दीक्षित होकर आपने आगम-शास्त्रो, थोकड़ो एव सस्कृत भाषा का गहन अध्ययन किया।

घोड़ों का चौक स्थानक मे अनेक वर्ष रहकर आपने अपनी गुरुणी जी प्रवर्तिनी श्री बदनकवरजी म.सा की खूब सेवा की। पावटा स्थानक में प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवर जी मसा की सेवा मे आप अहर्निश सलग्न रही।

आपके ओजस्वी एव धारा प्रवाह प्रवचन बड़े ही प्रभावशाली होते हैं। आपकी वाणी मे गाभीर्य एव माधुर्य

है।

• महासती श्री मनोहरकवर जी म.सा

आपका जन्म अजमेर के चगेरिया कुल मे विस २०१५ की पौष कृष्णा पचमी दिनाक ३१ दिसम्बर १९५८ को हुआ। आपके पिता श्री कवरीलाल जी चगेरिया तथा माता श्रीमती भवरीबाई है।

आपने १८ वर्ष की आयु मे वि.स २०३३ चैत्र शुक्ला नवमी को भोपालगढ मे प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दर कवर जी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होने के पश्चात् आपने थोकड़ों एव शास्त्रो का अध्ययन किया। आप सेवाभावी मधुरभाषी व्याख्यात्री महासती हैं। वर्तमान मे आप वयोवृद्धा महासती श्री सन्तोषकवर जी मसा की निश्रा मे विचरण कर रही हैं।

• महासती श्री राजमती जी म.सा.

आपका जन्म विस १९७६ आसोज शुक्ला नवमी ३ अक्टूबर १९१९ को देवली की छावनी मे हुआ। आपके पिता श्री सुपातरचन्द जी भण्डारी तथा माता श्रीमती सदाबाई जी भण्डारी थी।

आपका विवाह सघ के प्रमुख कार्यकर्ता जोधपुर निवासी सुश्रावक श्रीमान् विजयमल जी कुम्भट के साथ हुआ। श्रीमान् कुम्भट सा. का सघ-सेवा मे उल्लेखनीय योगदान रहा। कुम्भट सा का असामयिक निधन हो जाने से आपको ससार से विरक्ति हो गयी। आपने विस. २०३३ फाल्गुन शुक्ला द्वादशी को जोधपुर मे प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवर जी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप बहुत ही सरलस्वभावी महासती थी।

२२ वर्षों तक सयम का पालन कर आपने अन्त मे विस २०५५ ज्येष्ठ कृष्णा नवमी, बुधवार २० मई १९९८ को साय ५.१५ बजे पावटा स्थानक जोधपुर मे सथारापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया।

• महासती श्री कौशल्यावती जी म.सा.

आपका जन्म थावला जिला नागौर मे विस २०१९ माघ कृष्णा पचमी को हुआ। आपके पिता का नाम श्री पन्नालालजी कटारिया तथा माता का नाम श्रीमती कमला देवी है।

आपने १५ वर्ष की वय मे प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकवर जी मसा की निश्रा मे विस २०३४ माघ शुक्ला दशमी को पालासनी (जोधपुर) मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने थोकड़े, शास्त्र एव सस्कृत भाषा का अभ्यास किया। आपके प्रवचन सरल एव प्रभावशाली होते हैं। वर्तमान मे आप महासती श्री सन्तोष कवर जी म.सा की निश्रा मे विचर रहे हैं।

• महासती श्री सोहनकवर जी म सा

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकवरजी म.सा का जन्म बारणी खुर्द (जोधपुर) मे वि.स २०१७ श्रावण कृष्णा चतुर्दशी को हुआ। आपके पिता श्री उदाराम जी भाटी एव माता श्रीमती दाखी बाई हैं।

आपने १७ वर्ष की आयु मे वि.स २०३४ माघ शुक्ला दशमी को पालासनी (जोधपुर) मे महासती श्री शान्तिकवर जी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने थोकड़ो का अभ्यास किया। आपके प्रवचन सरल एवं प्रभावी होते हैं।

• महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा.

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभाजी मसा. का जन्म विस २०१७ ज्येष्ठ शुक्ला नवमी ४ जून १९६० को भोपालगढ़ में हुआ। आपका विद्यालयीय अध्ययन चेन्नई में हुआ। आपके पिता धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् रिखबचन्दजी काकरिया समर्पित श्रावक रत्न थे। माता श्रीमती पिस्ताकवर जी ने पुणे मे १२ मई २००३ को श्रमणी दीक्षा अगीकार कर सयम पथ मे चरण बढ़ाए है।

आपने २१ वर्ष की युवावस्था मे वि.स २०३८ वैशाख शुक्ला षष्ठी ९ मई १९८१ शनिवार को रायचूर (कर्नाटक) मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने आगमों, थोकड़ो एव संस्कृत भाषा का अच्छा अध्ययन किया। आप मधुरभाषी एवं व्याख्यात्री महासती हैं।

• महासती श्री चन्द्रकला जी म.मा

आपका जन्म भोपालगढ़ मे विस २०२० मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री भवरलाल जी हुण्डीवाल हैं तथा माता सुश्राविका श्रीमती उमराव बाई थी।

आपने १८ वर्ष की युवावस्था मे शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की निश्रा मे विस २०३८ वैशाख शुक्ला षष्ठी को रायचूर मे भागवती दीक्षा अगीकार की। दीक्षित होकर आपने थोकड़ो एव शास्त्रो का अभ्यास किया। आप मारवाड़ी तर्ज के धार्मिक भजनो को सुमधुर स्वर मे गाती हैं। सरल-स्वभावी दृढमनोबली महासतीजी पर लगभग ७ वर्ष पूर्व मकान की छत गिर जाने से रीढ की हड्डी पर गहरी चोट आई, किन्तु आपने धैर्य एव साहस से काम लिया। अभी भी आप चलने मे पूर्ण समर्थ नही हुई हैं, अभ्यास जारी है। तथापि आप सवत् २०५७ के जयपुर चातुर्मास के पश्चात् स्वय कुछ दूर चलकर एव श्रद्धालु श्राविकाओं के द्वारा उठायी गई डोली से जोधपुर पधारे हैं तथा अपनी गुरुणीजी शासन प्रभाविका महासतीश्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सान्निध्य में हैं।

• महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.

व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी मसा का जन्म नागौर मे विस २०१९ माघ शुक्ला नवमी को हुआ। आपके पिता श्री मागीलाल जी सुराणा तथा माता श्रीमती ज्ञानबाई जी हैं।

आपने २० वर्ष की युवावस्था मे वि.स २०३९ वैशाख शुक्ला तृतीया, सोमवार दिनाक २६ अप्रेल १९८२ को जोधपुर मे तपस्विनी महासती श्री शान्तिकवर जी मसा. की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप बालक-बालिकाओ में धार्मिक सस्कार डालने हेतु प्रयत्नशील रहती हैं तथा व्याख्यात्री सती हैं।

• महासती श्री विमलावती जी म.सा.

आपका जन्म बारणी खुर्द में वि.स २०२० वैशाख शुक्ला तृतीया को हुआ। आपके पिता श्री मगलसिंह जी भाटी तथा माता श्रीमती गीता बाई हैं।

आपने १९ वर्ष की युवावस्था में वि.स २०३९ की वैशाख शुक्ला तृतीया २४ अप्रेल १९८२ को प्रवर्तिनी

महासती श्री सुन्दरकवर जी म.सा. की निश्रा मे जोधपुर में भागवती दीक्षा अगीकार की। आप सेवाभावी महासती हैं।

• महासती श्री शान्तिप्रभा जी म सा

आपका जन्म इदौर मे वि.स २०१६ भाद्रपद शुक्ला एकादशी को हुआ। आपको पिता श्रीमान् इन्द्रचन्द जी मेहता तथा माता श्रीमती चचल बाई से बचपन मे ही सुदृढ धार्मिक सस्कार प्राप्त हुए।

आपने २३ वर्ष की यौवनावस्था मे वि.स २०३९ पौष शुक्ला पचमी १९ जनवरी १९८३ को जानकी नगर, इदौर मे सरलहृदया महासती श्री सायरकवर जी म सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपकी आवाज स्पष्ट एव बुलन्द है तथा प्रभावी प्रवचन करती है। आप सेवाभावी एव व्याख्यात्री महासती है।

• महासती श्री ज्ञानलता जी म सा

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म सा का जन्म काचीपुरम (तमिलनाडु) मे वि.स २०२१ भाद्रपद शुक्ला द्वितीया ८ सितम्बर १९६४ को हुआ। आपके पिता श्री पारसमलजी बोहरा तथा माता श्रीमती छोटी बाई है।

आपने १९ वर्ष की युवावस्था मे वि स २०४० मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी सोमवार १९ दिसम्बर १९८३ को शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म सा की निश्रा मे मद्रास मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपकी प्रवचन शैली सरल, सरस एव प्रभावोत्पादक हैं। आपने थोकड़ो एव शास्त्रो का बहुत अच्छा अध्ययन किया है। बजरिया सवाईमाधोपुर, गगापुर सिटी आदि के चातुर्मास आपके नेतृत्व मे सफल रहे है।

• महासती श्री दर्शनलता जी म सा.

आपका जन्म वि स २०२३ को शिरगुप्पा (रायचूर) मे हुआ। आपके पिता श्री धनराज जी वेदमूथा तथा माता श्रीमती कान्ताबाईजी वेदमूथा थी।

आपने १७ वर्ष की युवावस्था मे वि.स २०४० मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी को शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म सा की निश्रा मे मद्रास मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आप सेवाभावी महासती है। आपने सरल हृदया महासनी श्री सायरकवर जी म सा की सेवा मे रहकर उनकी अच्छी सेवा की है तथा अभी शासन प्रभाविका जी एव महासती चन्द्रकला जी की सेवा मे सन्नद्ध है।

• महासती श्री चारित्रलता जी म सा

आपका जन्म फाजिलाबाद (सवाई माधोपुर) मे विस २०२६ फाल्गुन शुक्ला एकम ८ मार्च १९७० को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्रीमान् प्रभुदयालजी जैन तथा माता श्रीमती ताराबाईजी हैं।

आपने १४ वर्ष की वय मे विस २०४० मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी को शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की निश्रा मे मद्रास मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने थोकड़ो एव अनेक शास्त्रो का अध्ययन किया। आप मधुरभाषी एव सेवाभावी महासती है।

• महासती श्री नि:शल्यवतीजी म.सा.

व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवती जी म.सा का जन्म जोधपुर मे वि.सं २०१६ आसोज कृष्णा त्रयोदशी १ अक्टूबर १९५९ को हुआ। आपके पिता धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भँवरलालजी सुराणा थे तथा माता श्रीमती किरणदेवीजी हैं।

आपने २५ वर्ष की युवावय मे वि.स २०४१ चैत्र शुक्ला षष्ठी शनिवार ७ अप्रेल १९८४ को महासती श्री सायरकवरजी म.सा की निश्रा मे नागौर मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपने थोकड़ो एव अनेक शास्त्रों का अच्छा अध्ययन किया। आपके प्रवचन सरल एव प्रभावशाली होते है। अभी आपने मसूदा एव जरखोदा मे दो नवदीक्षिता साध्वियो के साथ अत्यन्त सफल चातुर्मास किया है। इसके पूर्व आपके लगभग सभी चातुर्मास गुरुणीजी के साथ सम्पन्न हुए।

• महासती श्री सुश्री प्रभाजी म.सा

आपका जन्म खाराबेरा (जोधपुर) मे वि.स २०२३ आसोज शुक्ला नवमी १५ अक्टूबर १९६६ को हुआ। आपके पिता श्रीमान् भवरलालजी चौपड़ा एव माता श्रीमती बिदामकवरजी हैं।

आपने १८ वर्ष की आयु मे वि.स २०४१ मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी बुधवार २८ नवम्बर १९८४ को जोधपुर में प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकवरजी म.सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने अनेक थोकड़े एव शास्त्रो का अभ्यास किया। आपके प्रवचन सरल एव प्रभावी होते हैं। आप अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने मे निरन्तर सन्नद्ध है।

• महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.

आपका जन्म मद्रास (चैन्नई) मे वि.स २०१९ मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीया-बुधवार १४ नवम्बर १९६२ को हुआ। आपके पिता धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् रिखबचन्दजी काकरिया का स्वर्गवास हो गया है तथा माता सुश्राविका श्रीमती पिस्ताकवरजी ने १२ मई २००३ को पुणे मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की है।

आपने २२ वर्ष की युवावस्था मे वि.स २०४१ माघ शुक्ला दशमी को जोधपुर मे विदुषी महासती श्री सुशीलाकवरजी म.सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने अनेक थोकड़े, शास्त्र व सस्कृत भाषा का अच्छा अध्ययन किया। आप मधुर-भाषी एव सेवाभावी महासती हैं।

• महासती श्री इन्द्राप्रभाजी म.सा.

आपका जन्म भनोखर (अलवर) मे वि.स २०२१ श्रावण कृष्णा एकादशी ४ अगस्त १९६४ को हुआ। आपके पिता सुश्रावक श्री रतनलालजी जैन तथा माता श्रीमती सूरजदेवीजी थी।

आपने २० वर्ष की युवावस्था मे वि.स २०४१ माघ शुक्ला दशमी को जोधपुर मे विदुषी महासती श्री सुशीलाकवरजी म.सा. की निश्रा में भागवती दीक्षा अगीकार की। दीक्षित होकर आपने अनेक थोकड़ों एव शास्त्रो का अभ्यास किया। आप शान्त-स्वभावी एव सेवाभावी महासती हैं।

• **महासती श्री शशिप्रभाजी म.सा.**

आपका जन्म सहाड़ी (अलवर) में वि.स २०२५ आसोज शुक्ला पचमी को हुआ। आपके पिता श्री स्वरूपचन्दजी जैन तथा माता श्रीमती सुशीलादेवीजी हैं।

आपने १६ वर्ष की आयु में विस २०४१ माघ शुक्ला दशमी को जोधपुर मे महासती श्री सुशीलाकवरजी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा ग्रहण की।

सात वर्ष तक सयम पालन कर अन्त मे आपने वि.स २०४८ की आसोज शुक्ला तृतीया को घोड़ों का चौक जोधपुर मे सथारापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया।

• **महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा**

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी मसा का जन्म हिण्डौन सिटी मे विस २०२७ वैशाख शुक्ला तृतीया को हुआ। आपके पिता श्री मनोहरलालजी जैन तथा माता श्रीमती किरणदेवीजी है।

आपने १४ वर्ष की उम्र मे विस २०४१ माघ शुक्ला दशमी को जोधपुर मे विदुषी महासती श्री सुशीलाकवरजी मसा. की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने थोकड़े एव अनेक शास्त्रो का अध्ययन किया। वर्तमान में आप विदुषी एव व्याख्यात्री महासती श्री तेजकवरजी (निर्मलावती जी) मसा के सान्निध्य मे हैं तथा सवत् २०५८ मे आपने सेन्धवा (मप्र) मे और २०५९ मे लासूर स्टेशन मे बहुत ही सफल स्वतन्त्र चातुर्मास किए हैं।

• **महासती श्री सुमनलताजी म.सा.**

आपका जन्म भोपालगढ मे विस २०१८ मे कार्तिक शुक्ला एकादशी को हुआ। आपके पिता श्रीमान् जवरीलालजी मुणोत तथा माता श्रीमती सुरजीबाई है।

आपने २५ वर्ष की युवावय मे विस २०४३ वैशाख शुक्ला षष्ठी को पाली-मारवाड़ मे महासती श्री तेजकवरजी मसा (निर्मलावती जी मसा) की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आप सेवाभावी एव व्याख्यात्री महासती हैं।

• **महासनी श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.**

आपका जन्म नागौर मे विस २०२५ मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी २८ नवम्बर १९६८ को हुआ। आपके पिता श्रीमान् मागीलालजी सुराणा तथा माता श्रीमती ज्ञानबाई जी हैं।

आपने १८ वर्ष की वय मे विस २०४३ वैशाख शुक्ला षष्ठी को पाली-मारवाड़ में तपस्विनी महासती श्री शान्तिकवर जी मसा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने अनेक थोकड़ो एव शास्त्रो का अध्ययन किया है।

• **महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा**

आपका जन्म महुआ, मण्डावर रोड़ (करौली) मे हुआ। आपके पिता श्री मदनमोहनजी जैन तथा माता श्रीमती

शकुन्तलाजी जैन हैं।

आपने वि.सं. २०४६ वैशाख शुक्ला सप्तमी को मदनगज (किशनगढ़) मे महासती श्री तेजकवरजी म.सा (श्री निर्मलावतीजी म.सा.) की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आपकी थोकड़े सीखने-सिखाने में विशेष रुचि है।

- महासती श्री शशिकलाजी म.सा.

आपका जन्म रायचूर (कर्नाटक) मे वि.स. २०२४ मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया, रविवार दिनाक १९ नवम्बर १९६७ को हुआ। आपके पिता श्री पुखराजजी बाफना तथा माता श्रीमती उमरावकवरजी हैं। आपके माता-पिता वर्तमान मे मद्रास मे निवास करते हैं।

आपने २२ वर्ष की आयु मे वि.स. २०४६ माघ शुक्ला षष्ठी गुरुवार १ फरवरी १९९० को पीपाड़ शहर मे शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

दीक्षित होकर आपने अनेक थोकड़ो एव शास्त्रो का अध्ययन किया है।

- महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा

आपका जन्म गगापुर सिटी (सवाईमाधोपुर) मे वि.स. २०३२ मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्थी को हुआ। आपके पिता श्री मनोहरलालजी जैन पल्लीवाल तथा माता श्रीमती पुष्पादेवी है।

आपने १४ वर्ष की आयु मे वि.स. २०४६ माघ शुक्ला षष्ठी गुरुवार १ फरवरी १९९० को शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा की निश्रा मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

आप सेवाभावी एव शान्त स्वभावी महासती है।

■

परिशिष्ट – तृतीय

कल्याणकारी संस्थाएँ

(आचार्यप्रवर के शासनकाल में सजग एवं विवेकशील श्रावकों द्वारा संस्थापित)

युगमनीषी, युगप्रभावक, करुणासागर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. जैन जगत् के दिव्य दिवाकर, रत्नसघ के देदीप्यमान नक्षत्र एव भक्त-समुदाय के महनीय भगवन्त थे। (आपका जीवन ही प्रेरणा एव हर वचन प्रमाण था। निरतिचार सयम साधक उन महासन्त ने न तो किसी सस्था के लिए प्रत्यक्ष प्रेरणा दी, न ही किसी सस्था के नाम अथवा सचालन से अपने आपको जोड़ा। वे अनूठे महासाधक तो सघनायक होकर भी सघ के प्रति मोह-आसक्ति से परे थे।) ऐसे निस्पृह महामनीषी महापुरुष भला सस्थाओ से क्यो बधते?

उन युगमनीषी ने भले ही किसी प्रेरणा को सस्थागत स्वरूप नही दिया, पर उनके श्रद्धालु भक्तो के मानस पटल पर उनके वचन प्रेरणापुज बन गए। महिमाशाली गुरुदेव के साधक-व्यक्तित्व का उनके भक्त-समुदाय पर कैसा अनूठा प्रभाव, भगवन्त के श्रद्धानिष्ठ श्रावक भी कितने सुज्ञ, जागरूक एव विवेकशील कि सस्थाओ के गठन व उनके सम्यक् सचालन मे कभी श्रद्धेय गुरु भगवन्तो को जोड़ने की न तो कोई अपेक्षा की, न ही ऐसी कोई बालचेष्टा की। श्रद्धेय गुरुदेव के सुज्ञ भक्त भी उन करुणानिधान की पावन प्रेरणा के ही तो अग है। भक्तो ने समय-समय पर सघ-सगठन, सघ-सेवा तथा प्राणिमात्र के कल्याण व सेवा की भावना से कई सस्थाओ का गठन एव सचालन किया। यह भी उन महामनस्वी पूज्य आचार्यदेव के स्वर्णिम शासनकाल का स्वर्णिम अध्याय है, इसी दृष्टि से पूज्य भगवन्त के शासनकाल मे गठित सस्थाओ का परिचय दिया जा रहा है—

(अ) ज्ञानाराधन हेतु गठित सस्थाएँ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ, जोधपुर

श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, जयपुर

श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाव

श्री सागर जैन विद्यालय, किशनगढ़

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

आचार्य श्री शोभाचन्द्र ज्ञान भण्डार, जोधपुर

श्री जैन रत्न पुस्तकालय सिंहपोल, जोधपुर

श्री जैन रत्न पुस्तकालय, घोड़ो का चौक, जोधपुर

जैन इतिहास समिति, जयपुर

श्री महावीर जैन रत्न ग्रन्थालय, जलगाव

श्री अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद, जयपुर

श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय सघ, बैंगलोर

श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय सघ, इन्दौर

श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला , इन्दौर

श्री जैन रत्न जवाहर लाल बाफना कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय, भोपालगढ़

श्री कुशल जैन छात्रावास, जोधपुर

श्री महावीर जैन पाठशाला योजना, जलगाव

श्री वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला, नागौर

अनेक ग्राम नगरो मे धार्मिक पाठशालाओ का सचालन

अनेक ग्राम/नगरो मे पुस्तकालयो की स्थापना

(आ) साधना-आराधना हेतु गठित सस्थाएँ

अखिल भारतीय सामायिक सघ, जयपुर

साधना विभाग, जोधपुर

(इ) सघ उन्नयन हेतु गठित सस्थाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ, जोधपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद, जोधपुर

विभिन्न ग्राम नगरो मे श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ की स्थानीय /क्षेत्रीय शाखाओ का निर्माण

(ई) समाज-सेवा के उद्देश्य से गठित सस्थाएं

श्री अमर जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी, जयपुर

श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर

श्री महावीर जैन हॉस्पिटल, जलगाव

श्री भूधर कुशल धर्म-बन्धु कल्याण कोष, जयपुर

बाल शोभा सस्थान, जोधपुर

स्वधर्मी सहायता कोष, जलगाँव

श्री महावीर रत्न कल्याण कोष, सवाईमाधोपुर

श्री महावीर जैन कुशल सेवा समिति, बैंगलोर

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के दिवगत होने के पश्चात् गठित सस्थाएँ

१. श्री जैन रत्न छात्रावास, पाली-मारवाड़

२. आचार्य श्री हस्ती मेडिकल रिलीफ सोसायटी, सवाई माधोपुर

३ अ भा श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

४ आचार्य श्री हस्ती नि शुल्क होम्योपैथी चिकित्सालय, किशनगढ़

५ आचार्य श्री हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड योजना, जलगाँव

६ गजेन्द्र निधि ट्रस्ट, मुम्बई

७ गजेन्द्र फाउण्डेशन , मुम्बई

८ शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत वात्सल्यनिधि, मुम्बई

(अ) ज्ञानाराधन हेतु गठित संस्थाएँ

• **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,** बापू बाजार, जयपुर ३०२००३ फोन न ०१४१-२५६५९९७

परमप्रतापी महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म सा की स्वर्गवास शताब्दी के पुनीत अवसर पर विक्रम सवत् २००२ मे ज्ञान और साधना की विभिन्न प्रवृत्तियो के सचालन हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना हुई। प्रारम्भ मे इसका कार्यालय जोधपुर मे था, फिर कुछ वर्षों मे ही जयपुर स्थानान्तरित हो गया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

१ जिनवाणी मासिक पत्रिका का प्रकाशन - जैन धर्म-दर्शन, सस्कृति, इतिहास एव आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो की वाहक 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका का विगत ६० वर्षों से निरन्तर प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका के प्रकाशन की रूपरेखा आचार्यप्रवर के लासलगाव चातुर्मास सवत् १९९९ मे प दुखमोचन जी झा के निर्देशन मे तैयार हुई तथा प्रकाशन का शुभारम्भ श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ से पौष शुक्ला पूर्णिमा सवत् १९९९ तदनुसार जनवरी १९४३ में हुआ। तदनन्तर अक्टूबर १९४८ से इसका प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के जोधपुर कार्यालय से श्री विजयमलजी कुम्भट एव श्री माधोमलजी लोढा की व्यवस्था एव देखरेख मे हुआ। सवत् २०११ मे आचार्यप्रवर का चातुर्मास जयपुर मे था। श्रावको ने जोधपुर की अपेक्षा प्रदेश की राजधानी जयपुर में अधिक सुविधा को दृष्टिगत रखकर जिनवाणी कार्यालय जयपुर मे स्थानान्तरित कर दिया। उसके पश्चात् अगस्त १९५४ से यह पत्रिका जयपुर स्थित सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। जयपुर के सर्व श्री उमरावमल जी सेठ, श्री सिरहमल जी बम्ब, श्री पूनमचन्दजी बडेर, श्री उग्रसिंह जी बोथरा, श्री नथमलजी हीरावत, श्री टीकमचन्दजी हीरावत के साथ समाज के अनेक महानुभावों ने इसके नियमित सचालन मे प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग प्रदान किया। प्रारम्भ मे यहा श्री भवरलाल जी बोथरा ने कुशलतापूर्वक जिनवाणी का कार्य सम्हाला। न्यायमूर्ति श्री इन्द्रनाथजी मोदी, न्यायमूर्ति श्री सोहननाथ जी मोदी की प्रेरणा सदा बनी रही।

प्रारम्भिक अवस्था मे जिनवाणी मासिक पत्रिका को प्रतिष्ठित करने का दायित्व बहुत बड़ा था, परन्तु श्रावकों के धैर्य एव निष्ठा ने विघ्नबाधाओं एव विपदाओं का दृढता से सामना किया। परिणामस्वरूप यह पत्रिका सन्

१९४३ से निरन्तर प्रकाशित हो रही है। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी का विशिष्ट स्थान है। पत्रिका की मुख्य विशेषता है कि यह सभी सम्प्रदायों की भावनाओं का आदर करते हुए एक सकारात्मक एव नई सोच प्रदान करती है। इसमें प्रकाशित सामग्री बाल, युवा एव वृद्ध सभी को सजीव चिन्तन प्रदान करती है। नवम्बर - दिसम्बर १९५५ का दीपावली विशेषाङ्क , मई १९५६ का भीनासर सम्मेलन विशेषाङ्क प्राचीन प्रसिद्ध विशेषाङ्क रहे। जिनवाणी पत्रिका के अब तक १६ विशेषाक प्रकाशित हो चुके है– स्वाध्याय विशेषाक (सन् १९६४), सामायिक विशेषाङ्क (१९६५), तप-विशेषाङ्क (१९६६), श्रावकधर्म विशेषाङ्क (१९७०), साधना विशेषाङ्क (१९७१), ध्यान विशेषाङ्क (१९७२), जैन संस्कृति और राजस्थान (१९७५), कर्मसिद्धान्त-विशेषाङ्क (१९८४), श्रावक धर्म और समाज विशेषाङ्क (१९८५), अपरिग्रह विशेषाङ्क (१९८६), आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा श्रद्धाजलि अक (१९९१), आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. व्यक्तित्व एव कृतित्व (१९९२), अहिंसा विशेषाङ्क (१९९३), सम्यग्दर्शन विशेषाङ्क (१९९६), क्रियोद्धार चेतना अङ्क (१९९७), जैनागम-साहित्य विशेषाङ्क (२००२) ।

जिनवाणी पत्रिका के प्रथम सम्पादक डॉ फूलचन्दजी जैन 'सारङ्ग' थे। श्री चम्पालालजी कर्नावट, श्री केशरी किशोरजी नलवाया, श्री चादमलजी कर्णावट, श्री पारसमलजी प्रसून , प. रतनलालजी सघवी, श्री.शान्तिचन्द्रजी मेहता, श्री मिट्ठालाल जी मुरड़िया, प शशिकान्त जी झा आदि विभिन्न विद्वानों के सम्पादकत्व में विकसित इस पत्रिका का दिसम्बर सन् १९६७ से नवम्बर सन् १९९३ तक कुशल सम्पादन हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार एव जैन धर्म के विद्वान डॉ नरेन्द्र जी भानावत के हाथो हुआ। इस अवधि मे पत्रिका को अच्छी लोकप्रियता एव प्रतिष्ठा मिली। डॉ. (श्रीमती) शान्ता जी भानावत का भी सम्पादन मे पूर्ण सहयोग मिला। अक्टूबर १९९४ से इस पत्रिका का सम्पादन डॉ धर्मचन्द जैन, एसोशिएट प्रोफेसर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर कर रहे हैं। जिनवाणी पत्रिका के प्रचार-प्रसार मे श्री दौलतरूपचन्दजी भण्डारी, श्री देवराजजी भण्डारी का योगदान उल्लेखनीय रहा। श्री मोतीलालजी मुथा सतारा, श्री गुलराज जी अब्बाणी जोधपुर, श्री केवलमलजी लोढा जयपुर एव श्री सरदारचन्दजी भण्डारी जोधपुर ने भी अच्छा सहयोग प्रदान किया। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री विमलचन्द डागा, जयपुर पत्रिका के सुचारु सचालन में समर्पित भाव से सन्नद्ध हैं।

प्रारम्भ मे यह पत्रिका २४ एव फिर ३२ पृष्ठो में प्रकाशित होती थी। अब ८० पृष्ठो मे प्रकाशित इस पत्रिका में प्रवचन, निबन्ध-विचार, आगम-परिचय, कथा, कविता, प्रेरक-प्रसग आदि विविध रचनाओ के अतिरिक्त साहित्य-समीक्षा, सम्पादकीय एव समाचार-स्तम्भ भी नियमित रूप से उपलब्ध रहते हैं। पत्रिका की वर्तमान में स्तम्भ सदस्यता ११०००/- रुपये, सरक्षक सदस्यता ५००० रुपये, एव आजीवन सदस्यता ५०० रुपये है। विदेश मे आजीवन सदस्यता १०० डालर मे प्रदान की जाती है।

(२) स्वाध्याय शिक्षा का प्रकाशन - यह द्वैमासिक पत्रिका प्राकृत, सस्कृत एव हिन्दी भाषा मे प्रकाशित लेखो के माध्यम से स्वाध्यायियो और जिज्ञासुओ के ज्ञानवर्धन मे सहायक सिद्ध हुई है। इस पत्रिका का लक्ष्य प्राकृत एव सस्कृत भाषा का अभ्यास बढ़ाना भी है।

पत्रिका का प्रारम्भ सन् १९८६ में श्री श्रीचन्द सुराना सरस के सम्पादन में हुआ तथा १९८९ से इसके सम्पादन का कार्य डॉ धर्मचन्द जैन ने सम्हाला। इस पत्रिका के अब तक ४५ अंक प्रकाशित हो चुके हैं तथा १९ वा अक 'आचार्य श्री हस्तीमलजी म. स्मृति अक' के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसमें प्राकृत, सस्कृत एव हिन्दी लेखो के अतिरिक्त सघ की विभिन्न सस्थाओं का परिचय भी दिया गया है। स्वाध्याय-शिक्षा पत्रिका ने विद्वद्वर्ग एव

स्वाध्यायी-वर्ग में लोकप्रियता अर्जित की है। इसका ४५ वा अक 'जैनागम-विशेषाङ्क' सर्वत्र समादृत हुआ है।

(३) साहित्य प्रकाशन – आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा का सत्साहित्य के स्वाध्याय पर विशेष बल था। सत्साहित्य मनुष्य का सच्चा मार्गदर्शक होता है। वह मनुष्य को बाहरी चकाचौंध, विषम वासनाओं एव आसक्ति से दूर रखकर समता, शान्ति एवं आत्म बल का सचार करता है। इसी लक्ष्य से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा साहित्य का प्रकाशन किया जाता है।

मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य मे प्रमुख है—उत्तराध्ययन सूत्र (सस्कृत छाया, हिन्दी-विवेचन एव पद्यानुवाद सहित)-तीन भाग, दशवैकालिक सूत्र (सस्कृत छाया, हिन्दी-विवेचन एव पद्यानुवाद सहित), अतगडदसा सूत्र, आध्यात्मिक आलोक, गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग १-७, उपमिति भवप्रपच कथा, अहिंसा विचार और व्यवहार, अपरिग्रह विचार और व्यवहार, जैनागम के स्तोक रत्न, जैनदर्शन आधुनिक दृष्टि, जैन आचार्य चरितावली, सम्यग्दर्शन शास्त्र और व्यवहार, निर्ग्रन्थ भजनावली, रत्नवश के धर्माचार्य, पथ की रुकावटे, जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल, पर्युषण पर्वाराधन, सकारात्मक अहिंसा, व्रत-प्रवचन सग्रह, हीरा प्रवचन-पीयूष आदि। जैन धर्म का मौलिक इतिहास के चारो भागो का भी प्रकाशन अब मण्डल द्वारा किया जा रहा है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल द्वारा प्रकाशित साहित्य की आजीवन सदस्यता राशि मात्र १००० रुपये है।

(४) जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, जयपुर का सचालन - जैन विद्या के विद्वान् तैयार करने की दृष्टि से यह सस्था सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा जयपुर मे सचालित है, जिसमे आवास एव भोजन की नि शुल्क व्यवस्था है तथा धार्मिक व शास्त्रीय अध्ययन के साथ विश्वविद्यालय एव महाविद्यालय के व्यावहारिक शिक्षण का भी प्रावधान है। (विशेष परिचय अलग से दिया गया है)

(५) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ का सचालन सन्त-सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो मे स्वाध्यायी भेजकर पर्युषण पर्वाराधन कराने का महत्त्वपूर्ण कार्य स्वाध्याय सघ द्वारा सञ्चालित किया जाता है। विभिन्न प्रकार के शिविरो एव प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के माध्यम से स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाता है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की यह एक प्रमुख प्रवृत्ति है। (विशेष परिचय अलग से दिया गया है)

(६) आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान आदि तीन सम्मान - मण्डल द्वारा तीन प्रकार के सम्मान प्रतिवर्ष दिये जाते है।

(अ) **आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान** - यह विद्वानो को उनकी श्रेष्ठकृति के आधार पर दिया जाता है।

(ब) **विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान**-यह सम्मान प्रतिवर्ष एक विशिष्ट स्वाध्यायी को दिया जाता है।

(स) **युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान** - यह सम्मान शोध, साधना एव सेवा के क्षेत्र मे प्रतिभाशाली युवा को प्रदान किया जाता है।

सम्मान के लिए नामो का चयन निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाता है। आचार्य श्री हस्ती स्मृति-सम्मान के मुख्य निर्णायक प्रोफेसर कल्याणमल जी लोढा है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विकास मे न्यायमूर्ति स्व श्री इन्द्रनाथ जी मोदी, स्व. श्री सिरहमलजी बम्ब, न्यायमूर्ति स्व श्री सोहननाथ जी मोदी, स्व श्री श्रीचन्दजी गोलेछा, स्व श्री उमरावमलजी ढड्ढा, श्री नथमलजी हीरावत, श्री डी. आर. मेहता, डॉ सम्पतसिंह जी भाण्डावत, श्री मोफतराज जी मुणोत, स्व. श्री सिरहमलजी नवलखा, श्री

कनकमलजी चोरड़िया, श्री पूनमचन्दजी बडेर, श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, स्व. श्री मोतीचन्दजी कर्णावट, स्व. श्री सज्जननाथजी मोदी, श्री चैतन्यमलजी ढड्ढा, श्री चेतनप्रकाशजी डूगरवाल, श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, श्री विमलचन्दजी डागा, श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी , श्री पद्मचन्दजी कोठारी, श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी, श्री प्रकाशचन्द जी डागा आदि की सेवाऐं सदैव उल्लेखनीय एव प्रशसनीय है।

- **श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ,** घोड़ों का चौक, जोधपुर

आचार्यप्रवर का यह दूरदर्शी चिन्तन था कि सन्त-सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो मे पर्युषण के आठ दिनो मे धर्माराधन कराने वाले ऐसे स्वाध्यायी तैयार हो जो सूत्रवाचन, प्रतिक्रमण, प्रवचन या भजन-गायन आदि मे निष्णात होने के साथ साधनाशील जीवन जीते हो। आचार्य श्री के इस चिन्तन का ही मूर्त रूप है श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ, जोधपुर। सवत् २००२ मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत स्वाध्यायियो को पर्युषण मे धर्माराधन कराने हेतु ग्रामानुग्राम भेजने की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई, जिसमें सर्वप्रथम पॉच स्थानो पर स्वाध्यायियों को भेजा गया।

सवत् २०१५ तक यह प्रवृत्ति शैशवावस्था मे चलती रही। सवत् २०१६ मे स्वाध्याय प्रवृत्ति को सुदृढ रूप से सचालित करने हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय सघ, जोधपुर की स्थापना की गई। स्वाध्याय सघ के अन्तर्गत पर्युषण-सेवा के साथ धार्मिक शिक्षण-शिविर, धार्मिक पाठशाला आदि के कार्यक्रम भी जुड़े।

स्वाध्याय-सघ के उन्नयन मे श्री सरदारचन्दजी भण्डारी, श्री पदमचन्दजी मुणोत, श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, श्री सम्पतराजजी डोसी का सयोजक के रूप मे तथा श्री चचलमलजी चोरड़िया एव श्री अरुणजी मेहता का सचिव के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान मे रिखबचन्दजी मेहता इसके सचिव एव श्रीमती सुशीलाजी बोहरा सयोजक है।

स्वाध्याय-सघ की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं —

(१) पर्युषण सेवा - देश एव विदेश के उन क्षेत्रो मे जहा सन्त एव महासती वृन्द का चातुर्मास न हो, पर्युषण काल मे वहा पर धर्माराधन हेतु स्वाध्यायियों को भेजना स्वाध्याय-सघ की प्रमुख प्रवृत्ति है। वर्तमान में इस सघ मे ८३० स्वाध्यायी है जिनमे से लगभग ४०० स्वाध्यायी प्रतिवर्ष पर्युषणसेवा प्रदान कर रहे हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी है जो व्यावहारिक जगत मे न्यायाधिपति, सी ए, इजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, व्याख्याता, अध्यापक आदि प्रतिष्ठित पदो पर कार्यरत हैं। देश के विभिन्न प्रान्तों के साथ विदेश मे भी स्वाध्यायी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

(२) स्वाध्याय-प्रशिक्षण शिविर - स्वाध्यायी तैयार करने एव उनमे ज्ञानवृद्धि करने हेतु स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो का समय-समय पर आयोजन किया जाता है।

(३) स्थानीय शिविर - प्रत्येक ग्राम एव नगर में स्वाध्याय तथा सामायिक का शंखनाद करने एव आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करने हेतु स्थानीय स्तर पर धार्मिक एव नैतिक शिक्षण शिविरो का आयोजन किया जाता है।

(४) धार्मिक पाठशाला - बालक-बालिकाओं को नैतिक एव धार्मिक दृष्टि से सुसस्कारित करने के उद्देश्य से इस सस्था द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर धार्मिक पाठशालाओं का सचालन मुणोत फाउण्डेशन मुम्बई के आर्थिक

सौजन्य से किया जाता है।

(५) धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम - स्वाध्यायियों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर ज्ञानवर्धन एव सदाचरण की प्रेरणा प्रदान करने तथा जन साधारण को सामायिक व स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़ने के लिये समय-समय पर प्रचार-प्रसार यात्राओं का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम सन् १९८७ से निरन्तर चल रहा है।

(६) स्वाध्यायी परीक्षा - स्वाध्यायियो द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्याकन करने हेतु षड्वर्गीय स्वाध्यायी परीक्षाएँ वर्ष १९९३ से विभिन्न केन्द्रो पर आयोजित होती थी। अब दो वर्षों से ये परीक्षाएँ अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के अन्तर्गत प्रारम्भ की गई हैं।

स्वाध्याय-सघ के द्वारा पत्राचार पाठ योजना, आगम-आराधना प्रोत्साहन योजना एव अर्धमूल्य पर साहित्य-वितरण जैसे कार्यक्रम भी सचालित किए जाते हैं। मण्डल से प्रकाशित 'स्वाध्याय शिक्षा' पत्रिका स्वाध्याय सघ के लक्ष्य को ही पूरा करती है।

स्वाध्याय सघ जोधपुर की सम्प्रति ५ शाखाएँ हैं—

१ सवाईमाधोपुर - इस शाखा की स्थापना सन् १९७४ मे हुई। पोरवाल क्षेत्रीय शाखा सवाई माधोपुर का देश मे महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमे लगभग १५० स्वाध्यायी हैं।

इस शाखा के सयोजक का कार्य श्री रूपचन्दजी जैन बजरिया एव श्री चौथमलजी जैन अध्यापक ने कुशलतापूर्वक वहन किया। वर्तमान मे श्री पदमचन्दजी जैन इसके सयोजक हैं।

२ उदयपुर - मेवाड़ क्षेत्र के स्वाध्यायियो को सक्रिय एव सगठित बनाने हेतु सन् १९७५ मे मेवाड़ शाखा उदयपुर का शुभारम्भ हुआ। श्री फूलचन्दजी मेहता प्रारम्भ से ही इस साखा के सयोजक है तथा इस शाखा मे लगभग ८० स्वाध्यायी है।

३ अलवर - पल्लीवाल क्षेत्र के स्वाध्यायी पहले पोरवाल क्षेत्र की शाखा सवाई माधोपुर के अन्तर्गत क्रियाशील थे, किन्तु कार्याधिक्य को देखते हुए सितम्बर १९८२ मे पल्लीवाल क्षेत्रीय शाखा का शुभारम्भ अलवर मे वीरपिता श्री सूरजमल जी जैन के सयोजकत्व मे किया गया। इस शाखा के सक्रिय स्वाध्यायी ३२ है तथा वर्तमान में सयोजक श्री छगनलाल जी जैन हैं।

४ जलगाव - आचार्यप्रवर के सन् १९७९ के जलगाव चातुर्मास मे ८ जुलाई १९७९ को महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय सघ, जलगाव की स्थापना हुई। प्रारम्भ से ही इसके सयोजक श्री प्रकाशचन्दजी जैन हैं। इस शाखा के सक्रिय स्वाध्यायी लगभग १४० हैं।

५ जयपुर - जयपुर क्षेत्र की शाखा का प्रारम्भ सन् १९८३ मे हुआ, जिसमे अभी ४५ स्वाध्यायी हैं। इस शाखा के सयोजक के रूप मे श्री केवलमल जी लोढा एव श्री हीराचन्दजी हीरावत की सेवाएँ प्रशसनीय रही। वर्तमान मे श्री राजेन्द्र जी पटवा शाखा के सयोजक हैं।

• **श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय,** भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज)

जोधपुर जिले के प्रमुख धार्मिक क्षेत्र बडलू (वर्तमान नाम भोपालगढ़) की भूमि उर्वरा रही है, जहाँ महाप्रतापी क्रियोद्धारक आचार्यप्रवर श्री रत्नचदजी म सा. ने क्रियोद्धार किया। विगत दो सौ वर्षों से भी अधिक समय से यह पावन भूमि रत्नवश परम्परा के आचार्य भगवतो के प्रति पूर्णत समर्पित रही है एव रत्नवंश की श्रावक-परम्परा में व

चतुर्विध सघ की सेवा में यहाँ के श्रावक समुदाय का अग्रगण्य योगदान रहा है।

इसी ग्राम मे 'श्री जैन रत्न विद्यालय' रूपी कल्पवृक्ष की स्थापना १५ जनवरी १९२९ को हुई जहाँ से अद्यावधि सहस्रों छात्रों ने शिक्षा व सस्कार प्राप्त कर भारत के कोने-कोने मे अपना, अपने गुरुजनो व इस विद्यालय का नाम उज्ज्वल किया है। विद्यालय का स्नातक होना ही अपने आप मे प्रमाण-पत्र बन गया, ऐसी प्रभावी यहाँ की शिक्षा व दृढ़ सस्कार रहे हैं।

विद्यालय श्री जैन रत्न पौषधशाला भवन मे सचालित है, जिसके लिये ३४००० वर्ग गज से भी अधिक जमीन भोपालगढ़ के शिक्षाप्रेमी महामहिम महाराजाधिराज श्री कानसिंह जी साहिब द्वारा प्रदान की गई। भवन निर्माण मे उदारमना सुश्रावक श्री भीकमचन्दजी विजयराजजी सा काकरिया, शिक्षाप्रेमी क्रान्तिकारी विचारो के धनी श्री राजमलजी लखीचदजी ललवानी (जामनेर) का प्रमुख योगदान रहा। विद्यालय के विकास मे सर्वश्री सूरजराजजी बोथरा, श्री किशनचन्दजी मुथा, श्री जालमचन्दजी बाफना, श्री गजराजजी ओस्तवाल, श्री मोतीलालजी मुथा (सतारा), श्री लालचदजी मुथा (गुलेजगढ़) , श्री जबरचदजी छाजेड़, श्री आनन्दराजजी सुराणा (जोधपुर), श्री इन्द्रमलजी गेलड़ा (मद्रास), श्री इन्द्रचन्दजी ललवाणी (नाचणखेड़ा), श्री विजयमलजी कुम्भट (जोधपुर), श्री रतनलालजी नाहर (बरेली) , श्री रतनलाल जी बोथरा , श्री पारसमलजी बाफना , श्री सायरचन्दजी काकरिया, श्री सुगनचन्दजी काकरिया, श्री सुगनचन्दजी ओस्तवाल, श्री रिखबराजजी कर्णावट, श्री अनराजजी बोथरा, श्री मूलचन्दजी बाफना, श्री अनराजजी काकरिया, श्री किस्तूरचन्दजी बाफना आदि सुज्ञ श्रावकगण की महनीय भूमिका रही है। वर्तमान मे विद्यालय का कुशल सचालन अध्यक्ष के रूप में श्रीमान् सूरजराजजी ओस्तवाल सभाल रहे हैं।

पण्डित श्री भीकमचन्दजी विद्यालय के प्रथम प्रधानाध्यापक थे। तदनन्तर श्री सूर्यभानुजी भास्कर, श्री रतनलाल जी सघवी, श्री फूलचन्दजी जैन सारग, श्री चन्द्र ईश्वरदत्तजी शास्त्री, श्री केशरीकिशोरजी नलवाया, श्री विश्वप्रकाशजी बटुक, श्री देशनाथजी रेला, श्री चादमलजी कर्णावट, श्री पारसमलजी प्रसून आदि की सेवाए सराहनीय रही। वर्तमान मे श्री राणीदानजी भाकर के प्रधानाध्यापकत्व में विद्यालय अग्रसर है।

विद्यालय मे शिक्षा के साथ सस्कार, साहित्य व धर्म का समुचित ज्ञान छात्रो को प्राप्त होता रहा है। यहाँ के छात्र शिक्षा के साथ सदा साहित्यिक एव सामाजिक गतिविधियो से जुड़े रहे हैं। व्यावहारिक शिक्षा के साथ साथ पाथर्डी बोर्ड से धार्मिक परीक्षाओ व हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से हिन्दी की परीक्षाओ के आयोजन की विद्यालय मे सदा व्यवस्था रही है।

विद्यालय सम्प्रति माध्यमिक विद्यालय के रूप में गतिमान है। बाहर के छात्रो के आवास व भोजन की व्यवस्था हेतु 'जैन रत्न छात्रावास' विद्यालय के एक अग के रूप मे सचालित है। विद्यालय का परीक्षा परिणाम लगभग शत प्रतिशत रहता है। यहाँ के कई स्नातकों ने उच्च शिक्षा मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर विद्यालय का मान बढ़ाया है। सास्कृतिक गतिविधियों में पारगत यहाँ के कई स्नातक सघ के कार्यकर्ताओ व स्वाध्यायी श्रावको के रूप में समाज की महनीय सेवा कर रहे हैं।

विद्यालय परिवार रत्नवश परम्परा के श्रावकों द्वारा सचालित विभिन्न सस्थाओ से सदा अभिन्न रूप से जुड़ा रहा है। इसी प्रागण में आचार्य भगवन्त श्री रत्नचदजी म.सा. की शताब्दी मनाई गई। उस अवसर पर 'सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल' की स्थापना हुई। जैन जगत की अग्रगण्य पत्रिका 'जिनवाणी' का विद्यालय सस्थापक है व कई वर्षों तक इसका सचालन यहीं से होता रहा, ग्राम्य क्षेत्र में प्रकाशन सबधी असुविधाओं के मद्देनजर इसे जोधपुर व फिर

जयपुर स्थानान्तरित कर दिया गया। स्वाध्याय सघ के स्थापना-काल से ही सर्वप्रथम स्वाध्यायी बनने वालो मे यहाँ के स्नातक श्री रिखबराजजी कर्नावट हैं तो सघ-सरक्षक माननीय श्री चादमलजी सा कर्नावट, सघ के वर्तमान अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना , रत्नवशीय शासनसेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, श्री प्रसन्नचद जी बाफना आदि इसी विद्यालय के गौरवशाली स्नातक है।

• श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर

सस्कृत, प्राकृत , दर्शन व न्याय के ज्ञाता जैन धर्म-दर्शन के मर्मज्ञ विद्वानो की कमी दूर करने के महान् लक्ष्य से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल के अन्तर्गत, जयपुर मे १६ नवम्बर १९७३ को इस सस्थान की स्थापना की गई एव इसके अधिष्ठाता पद का महनीय दायित्व जैन धर्म एव दर्शन के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् श्री कन्हैयालालजी लोढा को सौंपा गया।

यह एक आवासीय शिक्षण सस्थान है, जहाँ प्रतिभाशाली छात्रो के लिये जैनधर्म, दर्शन, प्राकृत व सस्कृत भाषा के अध्ययन, आवास व भोजन की समीचीन व्यवस्था है, साथ ही छात्रो का भविष्य सुरक्षित रहे, इस हेतु वे राजस्थान विश्वविद्यालय की स्नातक एव स्नातकोत्तर परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर सके, ऐसा प्रावधान है। सस्थान मे अब तक ९० छात्रो ने प्रवेश लिया है जिनमे से ५० छात्रो ने धार्मिक-शिक्षण मे विशेष योग्यता अर्जित की है। वर्तमान मे सस्थान मे ११ छात्र अध्ययनरत हैं। सस्थान के छात्र अहमदनगर पाथर्डी की विशारद से आचार्य तक धार्मिक परीक्षाएँ तथा समता भवन, बीकानेर की परीक्षाएँ अच्छे अको से उत्तीर्ण करते रहे हैं। अब सस्थान का अपना पाठ्यक्रम है। यहाँ छात्रो की दिनचर्या एव अनुशासन पर पूरा ध्यान दिया जाता है। सस्थान का प्रारम्भ रामललाजी के रास्ते स्थित बड़ी गुवाड़ी मे हुआ था, जो सन् १९७७ में बजाजनगर मे अ भा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के पूर्व अध्यक्ष श्री लाभचन्दजी लोढा के द्वारा अपने लघु भ्राता श्री विजयमलजी लोढा की स्मृति मे निर्मित भवन (साधना-भवन) मे स्थानान्तरित हो गया।

सस्थान के प्रतिभाशाली स्नातको मे डॉ धर्मचन्द जैन (सम्प्रति एसोशियेट प्रोफेसर-सस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर), श्री गौतमचन्द जैन (जिला रसद अधिकारी), श्री जम्बूकुमार जैन (लेखाकार राजस्थान सरकार), श्री पारसमल चौधरी (सीए) , श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन (व्याख्याता), श्री अशोक कुमार जैन (श्रम निरीक्षक), श्री अशोक कुमार जैन (निजी सहायक), श्री पवनकुमार जैन (आरपीएस), श्री सुशील कुमार जैन (व्याख्याता), श्री हेमन्त कुमार जैन (व्याख्याता) आदि प्रमुख है। यहाँ से निकले कई छात्र सीए हैं। सस्थान के विकास मे उदारमना सुश्रावक श्री इन्दरचन्दजी हीरावत, प्रखर चिन्तक श्री श्रीचन्दजी गोलेछा, सघ-सरक्षक श्री नथमलजी हीरावत, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, माननीय श्री डीआर मेहता सा का विशिष्ट सहयोग व मार्गदर्शन रहा है। वर्तमान मे वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती शान्ता जी मोदी का मार्गदर्शन प्राप्त है। श्री जम्बू कुमार जी जैन एव श्री सुशील कुमार जी जैन अपनी अध्यापन सेवाएँ दे रहे है।

• श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, भीकमचन्द नगर, पिप्राला रोड, जलगाँव

सम्राट् सम्प्रति ने देश-विदेश मे जिन-धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु अपने विपुल वैभव का उपयोग कर जिन शासन की महती प्रभावना की। युगमनीषी इतिहास मार्तण्ड, परम पूज्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के जलगाव वर्षावास में यह इतिहास बोध प्राप्त कर कर्मशील जनप्रिय राजनेता एव उदारमना श्रीमन्त श्रेष्ठिवर्य श्री

सुरेश दादा जैन के मन मे एक तरग उठी- मुझे परम पूज्य आचार्य भगवन्त जैसे गुरु मिले, मै भी कोई ऐतिहासिक कार्य कर जिन शासन की सेवा करू। आचार्य भगवन्त के प्रति पूर्ण समर्पित अनन्य गुरुभक्त इस जुझारू व्यक्तित्व के सकल्प का ही परिणाम था — २५ अक्टूबर १९७९ को इस विद्यापीठ की स्थापना ।

विद्यापीठ की स्थापना के मुख्य उद्देश्य थे-

१ जैनधर्म-दर्शन के विद्वान् तैयार करना।

२ धार्मिक पाठशालाओ के सचालन व धर्म-प्रचारार्थ सेवा देने वाले अध्यापक तैयार करना।

३ पर्युषण पर्वाराधन कराने वाले सुयोग्य स्वाध्यायी तैयार करना।

विद्यापीठ में इस समय दो योजनाओ के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है।

(१) न्यूनतम दसवी उत्तीर्ण छात्रो को ४ वर्ष तक विद्यापीठ मे रखकर धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था है। अध्येता छात्रों के लिये भोजन एव आवास की नि शुल्क व्यवस्था के साथ ही माहवार छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है। अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात् समाज सेवा मे सर्विस की गारण्टी भी प्रदान की जाती है।

(२) अशकालिक धार्मिक अध्ययन के इच्छुक छात्रो को कक्षा सात से प्रवेश दिया जाता है। इन छात्रो के लिये नियमित शैक्षणिक अध्ययन के साथ प्रतिदिन २ घण्टे धार्मिक शिक्षण आवश्यक है।

विद्यापीठ मे अध्येता छात्रों के लिये दोनो समय प्रार्थना, दैनिक सामायिक एव साप्ताहिक व पाक्षिक प्रतिक्रमण करना आवश्यक है, रात्रि भोजन एव जमीकन्द का उपयोग निषिद्ध है। प्रति रविवार जलगाव मे विराजित सन्त-सती वृन्द के दर्शन करना भी छात्रो के लिये आवश्यक व्यवस्था है।

विद्यापीठ के माध्यम से अभी तक २०विद्वान् अध्यापक तैयार हो चुके है, जो देश के विभिन्न भागो मे समाज को अपनी सेवाए दे रहे है। सस्थान मे अभी १२ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है । सस्थान का सम्पूर्ण व्ययभार स्थापना काल से ही उदारमना श्रीमन्त श्रावक श्री सुरेश दादा जैन द्वारा ही वहन किया जा रहा है। सुदीर्घकाल से श्री प्रकाशचन्दजी जैन इसके प्राचार्य के रूप मे अपनी महनीय सेवाएँ दे रहे है।

- **श्री सागर जैन विद्यालय,** किशनगढ

प्रात स्मरणीय आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म सा के सुशिष्य दृढ़ आत्मबली प्रशान्तात्मा श्रद्धेय श्री सागरमलजी म सा के ५९ दिवसीय सथारा की स्मृति मे श्री सागर जैन विद्यालय, किशनगढ़ की स्थापना हुई, जो सम्प्रति उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप मे कार्यरत है। विद्यालय मे लगभग ३५० छात्र अध्ययनरत हैं। शिक्षा के साथ सस्कारो के बीजारोपण हेतु विद्यालय मे प्रतिदिन नवकार मत्र के पठन व प्रार्थना से ही शैक्षणिक कार्य प्रारभ होता है।

- **आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार,** लालभवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर

परम पूज्य आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से वि.स २०१६ मे लालभवन स्थित पुरातन हस्तलिखित ग्रथो को सभाल कर सुव्यवस्थित किया गया। हस्तलिखित ग्रन्थ एव पुरातत्त्व सामग्री जैन इतिहास की एक अनमोल थाती व पीढियो की धरोहर है जिसे संभालना आवश्यक है , इस पुनीत भावना से पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्म-दिवस पर जयपुर के श्रद्धालु भक्तगण ने सवत् २०१६ मे इस सामग्री को एक व्यवस्थित रूप देते हुए इस ज्ञान

भडार की स्थापना की एव इसका नामकरण रत्नवश परम्परा के पचम पट्टधर बहुश्रुत आगममहोदधि आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री विनयचदजी म.सा (जिनका सुदीर्घ अवधि तक जयपुर स्थिरवास विराजना रहा) की स्मृति मे किया गया। सुश्रावक श्री सोहनमलजी कोठारी ने अपनी निःस्वार्थ महनीय सेवाएं देकर ज्ञान-भण्डार को व्यवस्थित करने मे अप्रतिम योगदान किया। उनके स्वर्गस्थ होने के पश्चात् श्री श्रीचन्दजी गोलेछा एव तदनन्तर श्री नथमलजी हीरावत इसकी व्यवस्था देखते रहे है। श्री बाबूलालजी जैन वर्तमान में इसके व्यवस्थापक हैं।

भडार मे इस समय लगभग २५००० ग्रथो का विशाल सग्रह है। ये ग्रथ १२ वीं शती से लेकर १९ वी शती के कालखण्ड को अपने मे समेटे हुए हैं। इनमे कुछ ताड़पत्र, भोजपत्र व सचित्र ग्रथ भी हैं, जो अपना विशेष महत्त्व रखते है। व्यक्तिगत सग्रहो से प्राप्त ग्रन्थो से भण्डार की समृद्धि होती रही। भडार के सग्रहालय के मुख्य तीन विभाग हैं—

१- हस्तलिखित ग्रन्थागार

२- अलभ्य चित्रावली

३- दुर्लभ प्रकाशित ग्रन्थ

इस ज्ञान भण्डार मे विभिन्न धर्म-दर्शन, इतिहास, सस्कृति आदि से सम्बद्ध लगभग ८५०० प्रकाशित पुस्तके उपलब्ध है, जिनके अध्ययन का लाभ विश्वविद्यालय के शोधार्थी छात्र भी लेते रहते हैं। जयपुर शहर मे यह अपने आपमे विशिष्ट पुस्तकालय है। इस ज्ञानभण्डार के निदेशक डॉ नरेन्द्र जी भानावत के निर्देशन मे सूचीपत्र का प्रकाशन भी हुआ है।

• **आचार्य श्री शोभाचन्द्र ज्ञान भण्डार**, जोधपुर

जोधपुर के घोड़ो का चौक स्थित इस ज्ञान भण्डार मे हस्तलिखित ग्रन्थो, पाण्डुलिपियो एव पुट्ठो का अच्छा सग्रह है। इसका कार्य श्री कवरराज जी मेहता देख रहे हैं।

• **श्री जैन रत्न पुस्तकालय**, सिंहपोल, जोधपुर

इसकी स्थापना वि स १९९० आषाढ कृष्णा तृतीया को की गई। यह पुस्तकालय सिंहपोल स्थानक मे सचालित है। पुस्तकालय का सिहपोल स्थित भवन रियाँ वाले सेठ श्री घनश्यामदास जी की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती मोहनकवरजी द्वारा बनवा कर भेट किया गया।

इस पुस्तकालय की स्थापना के उद्देश्य निम्नाकित रहे—

(१) ज्ञान-वृद्धि हेतु आगम-साहित्य एव विभिन्न उपयोगी ग्रथ उपलब्ध करवाना।

(२) जैन धर्म व दर्शन की पुस्तको का सग्रह करना तथा समाज मे जैन धर्म के अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ाने का प्रयास करना।

(३) सामयिक उपयोगी साहित्य का निर्माण एव प्रकाशन करना।

पुस्तकालय मे आगम एव उनकी टीकाओ के अतिरिक्त न्याय, व्याकरण, काव्य, अलकारशास्त्र, नाटक, चरित्र, स्तोत्र, धार्मिक-कथानक, पुराण आदि से सम्बद्ध साहित्य उपलब्ध है। प्राचीन उच्च स्तरीय ग्रन्थ इस पुस्तकालय की निधि हैं। पुस्तकालय के सचालन मे सुश्रावक श्री रिखबचन्दजी सिंघवी की उल्लेखनीय सेवाएँ सुदीर्घकाल तक

प्राप्त हुई। वर्तमान में श्री सोहनलालजी सकलेचा इसका कार्य देख रहे हैं।

• **श्री जैन रत्न पुस्तकालय,** घोडो का चौक, जोधपुर

घोडो का चौक स्थित श्री जैन रत्न पुस्तकालय का शुभारम्भ सवत् २००२ मे हुआ था । यह पुस्तकालय बहुत ही समृद्ध एव सेवा मे समर्पित है। सन्त-सतियो एव जिज्ञासुओ के लिये यह नियमित रूप से खुला रहता है। पुस्तकालय मे लगभग २५००० पुस्तकें हैं जिनमे आगम, टीकाए, प्रवचन साहित्य के साथ जैन धर्म-दर्शन विषयक सभी सम्प्रदायो के विविध ग्रन्थ उपलब्ध है तथा नया साहित्य भी आता रहता है।

जैन समाज की प्रमुख पत्र-पत्रिकाए यहाँ नियमित रूप से आती हैं। पुस्तकालय का कार्य प्रारम्भ से ही वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री सरदारचन्दजी भण्डारी सम्पूर्ण निष्ठा, कर्तव्यपरायणता एव सेवाभाव से देख रहे हैं। व्यापार से निवृत्ति लेने के पश्चात् आप प्रात १० बजे से अपराह्न ४ बजे तक पुस्तकालय को ही अपना समय देते हैं। यह पुस्तकालय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ , जोधपुर द्वारा सचालित है।

हिण्डौन , गगापुर, सवाई माधोपुर, बजरिया, पीपाड़ सिटी, पाली मारवाड़, खेरली, नदबई, भोपालगढ, नागौर, किशनगढ, अजमेर, पावटा जोधपुर आदि स्थानो पर भी सघ मे पुस्तकालय चल रहे हैं, जिनकी स्थानीय श्रावक-श्राविकाओ एव चातुर्मास व शेषकाल मे विराजित सन्त-सतियो के लिए महती उपयोगिता है।

• जैन इतिहास समिति, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर

युगमनीषी, इतिहास मार्तण्ड, परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा के वि.स २०२२ के बालोतरा चातुर्मास के अवसर पर सन् १९६६ मे जैन इतिहास-ग्रन्थो के प्रामाणिक प्रणयन हेतु इस समिति का निम्न उद्देश्यो को लेकर गठन किया गया :-

(i) प्रारम्भिक काल से लेकर अद्यतन जैन-परम्परा के प्रामाणिक इतिहास का लेखन एव प्रकाशन

(ii) पुरातन ऐतिहासिक सामग्री का सकलन

(iii) अज्ञात एव सदिग्ध ऐतिहासिक वृत्तो का अन्वेषण एव प्रकाशन।

समिति का पजीकरण राजस्थान सरकार के राजस्थान सस्था पजीकरण अधिनियम १९५८ के अन्तर्गत सन् १९७४ मे हुआ। ग्यारह सदस्यीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री इन्द्रनाथजी मोदी, मत्री श्री सोहनमल जी कोठारी, सहमत्री श्री सिरहमलजी बम्ब एव कोषाध्यक्ष श्री पूनमचन्दजी बडेर थे। श्री श्रीचन्दजी गोलेछा एव श्री नथमलजी हीरावत के मार्गदर्शन मे यह समिति सुचारु रूपेण कार्य करती रही है। श्री इन्दरचन्दजी हीरावत के देहावसान के अनन्तर श्री पारसचन्दजी हीरावत समिति के अध्यक्ष बने एव मत्री पद का दायित्व श्री चन्द्रराजजी सिंघवी ने सम्हाला।

समिति द्वारा अब तक निम्नाङ्कित ग्रन्थों का प्रकाशन किया जा चुका है-

(i) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग १

(ii) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग २

(iii) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग ३

(iv) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग ४

(v) जैन आचार्य चरितावली

(vi) ऐतिहासिक काल के तीन तीर्थंकर।

- **श्री महावीर जैन रत्न ग्रन्थालय,** जलगाँव

जैन धर्म-दर्शन के विद्यार्थियों को सभी सम्बन्धित पुस्तके एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ३० नवम्बर १९८२ को आचार्य श्री की सत्प्रेरणा से इस ग्रन्थालय की स्थापना की गई जिसमे जैन धर्म व साहित्य सम्बन्धी करीब २००० पुस्तके सगृहीत है, इसका उपयोग अधिकाशतया साधु-साध्वियो के द्वारा किया जाता है। यह ग्रन्थालय रतनलाल सी बाफना जैन स्वाध्याय भवन में चालू है। इसका सम्पूर्ण खर्च समाज रत्न श्री सुरेश कुमार जी जैन द्वारा वहन किया जाता है।

- **श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद्,** सी-२३५ए, दयानन्द मार्ग, तिलकनगर, जयपुर

आचार्यप्रवर के इन्दौर चातुर्मास मे १२ नवम्बर १९७८ को 'श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद' की स्थापना हुई, जिसके उद्देश्य निम्न प्रकार थे-

१ अखिल भारतीय स्तर पर पुरानी एव नई पीढी के जैन विद्वानो को सगठित करना।

२ जैन विद्या के अध्ययन, अध्यापन, अनुसन्धान, सरक्षण-सवर्धन, लेखन-प्रकाशन, प्रचार-प्रसार आदि मे सहयोग देना।

३ जैन विद्या में सलग्न विद्वानो, श्रीमन्तो, कार्यकर्ताओ एव सस्थाओ मे पारस्परिक सम्पर्क एव सामजस्य स्थापित करना।

४ जैन विद्या में निरत विद्वानो एव सस्थाओ के हितो की रक्षा करना एव उन्हे यथाशक्य सहयोग देना।

५ जैन धर्म-दर्शन, इतिहास के सम्बन्ध मे प्रचलित भ्रान्तियो का निराकरण करना।

६ अन्य ऐसे कार्य करना जो इस परिषद् के उक्त उद्देश्यो की सम्पूर्ति मे सहायक हो।

इस परिषद् के माध्यम से मुख्य रूप से स्थानकवासी परम्परा के विद्वानो का एक मच उभरकर आया। परिषद् के द्वारा देश के विभिन्न प्रान्तो मे अनेक सगोष्ठियाँ आचार्य श्री के सान्निध्य मे आयोजित की गई। इन गोष्ठियो में स्थानकवासी विद्वानो के अतिरिक्त अन्य जैन-जैनेतर विद्वानो को भी आमन्त्रित किया गया।

परिषद् के स्थापना काल से ही जिनवाणी के मानद् सम्पादक डॉ नरेन्द्र जी भानावत ने महामन्त्री का दायित्व सम्हाला और इसे व्यापक रूप देते हुये परिषद् के माध्यम से विभिन्न प्रवृत्तियो का सचालन किया, यथा-

(१) सगोष्ठिया का आयोजन - परिषद् ने सन् १९७९ से सन् १९९३ तक अजमेर, इन्दौर, जलगाव, मद्रास, रायपुर, जयपुर, आबूपर्वत, कलकत्ता, भोपालगढ, पीपाडशहर, कानोड, कोसाणा, पाली, जोधपुर आदि स्थानो पर कुल २० सगोष्ठियाँ आयोजित की, जिनमे बाल सस्कार, युवा पीढी,समाज सेवा, स्वाध्याय, वृद्धावस्था जैन आगम, सामायिक, पत्रकारिता, श्रावक धर्म, अपरिग्रह, धर्म, समता-साधना, कर्मसिद्धान्त , जैन सिद्धान्त प्रचार-प्रसार, अहिंसा, पर्यावरण आदि विषयो पर चर्चा की गई।

(२) ज्ञान प्रसार पुस्तकमाला (ट्रेक्ट योजना) - 'कुआ प्यासे के पास जाये' इस भावना से ज्ञान प्रसार

पुस्तकमाला के अन्तर्गत १०१ रुपये में १०८ ट्रेक्ट पुस्तके देने की योजना बनाई गई जो बहुत लोकप्रिय हुई। डॉ भानावत के रहते इस योजना में विभिन्न विषयों पर ८७ ट्रेक्ट पुस्तिकाएँ प्रकाशित हो गई थी।

(३) आचार्य श्री रत्नचन्द्र स्मृति व्याख्यानमाला -इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ इन्दरराज बैद, डॉ महेन्द्रसागर प्रचण्डिया, डॉ दयानन्द भार्गव एव डॉ रामचन्द्र द्विवेदी के व्याख्यान हुए।

जैन दिवाकर व्याख्यानमाला मे डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, स्वामी श्री आत्मानन्द जी एव डॉ लक्ष्मीमलजी सिंघवी के व्याख्यान हुए और अगरचन्द नाहटा स्मृति व्याख्यानमाला मे एक ही व्याख्यान डॉ गणेशदत्त त्रिपाठी का हो सका।

(४) जैन विद्या प्रोत्साहन छात्रवृत्ति - इस योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों मे एम ए के स्तर पर ऐच्छिक रूप मे जैन दर्शन विषय लेकर अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओ मे प्रत्येक को ५०० रुपये की छात्रवृत्ति देने का प्रावधान किया गया।

(५) अन्य कार्य - जैन धर्म एव दर्शन से सम्बद्ध विषयो पर परिषद् की ओर से निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। जैन दर्शन और साहित्य पर पीएच.डी करने वाले युवा शोध कर्मियों को सम्मानित किया गया। परिषद् ने दो सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ किए। - (१) जैन सस्था सर्वेक्षण और (२) स्थानकवासी जैन साहित्य सर्वेक्षण।

वर्तमान मे परिषद् के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी लोढा एव महामत्री डॉ सजीव जी भानावत हैं।

- **श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय सघ,** ६१, नगरथ पेट, बैंगलोर

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी मसा का समग्र जीवन सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा हेतु समर्पित रहा। आपके दक्षिण प्रवास के समय कर्नाटक प्रान्त मे इस संस्था की स्थापना निम्नाङ्कित उद्देश्यो से हुई-

(१) समाज मे सस्कारों का सृजन करना (२) बाल-युवा पीढ़ी मे धर्म की विशुद्ध जानकारी के साथ श्रद्धा जागृत करना (३) पूज्य सत-सतीवृन्द के चातुर्मास लाभ से वचित क्षेत्रो मे सुयोग्य स्वाध्यायी बधुओ को भेजकर पर्वाधिराज पर्युषण साधना सम्पन्न करवाना। सम्प्रति लगभग ५०क्षेत्रो मे इस सघ के माध्यम से स्वाध्यायी बधु अपनी सेवाए प्रदान कर रहे है। सघ के माध्यम से स्वाध्यायियो के ज्ञान-वर्द्धन हेतु माह के अन्तिम रविवार को स्वाध्यायी सगोष्ठी एव वर्ष मे दो बार तीन दिवसीय स्वाध्यायी शिविरो का आयोजन किया जाता है। सघ पुस्तकालय के सचालन एव हिन्दी तथा कन्नड़ भाषा मे सत्साहित्य प्रकाशन करते हुए कर्नाटक प्रान्त मे धर्म-प्रचार के महान कार्य मे सलग्न है।

- **श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय सघ,** महावीर भवन, इमली बाजार, इदौर

परम पूज्य आचार्य भगवन्त जहाँ भी पधारे, सामायिक-स्वाध्याय का बिगुल बज उठा। आपके मध्यप्रदेश मे विचरण के समय सामायिक एव स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार के पवित्र उद्देश्य से इस सस्था की स्थापना हुई। संस्था की स्थापना के निम्नाङ्कित उद्देश्य रहे-

१- पूज्य सत-सतीवृन्द के चातुर्मास लाभ से वचित क्षेत्रो मे पर्युषण-पर्वाराधन हेतु स्वाध्यायी सदस्यो को भेजना।

२- आध्यात्मिक शिक्षण-शिविरो का आयोजन करना।

३- विभिन्न क्षेत्रो मे स्वाध्याय शालाओ की स्थापना करना।

४- सामायिक-स्वाध्याय का प्रचार-प्रसार करना।

सघ के माध्यम से प्रतिवर्ष ४०-५० स्वाध्यायी बन्धु विभिन्न ग्राम-नगरो में पर्युषण -सेवा का लाभ ले रहे हैं। साथ ही सघ द्वारा प्रतिवर्ष स्वाध्याय प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया जाता है। विशेष गौरव की बात यह है कि अभी तक सघ के माध्यम से पर्युषण पर्वाधिराज की आराधना मे सेवा देने वाले ८ स्वाध्यायी भाई - बहिन जैन श्रमण-दीक्षा अगीकार कर मुनिव्रत धारण कर चुके है।

• **श्री महावीर जैन स्वाध्यायशाला,** महावीर भवन इमली बाजार, इन्दौर

बालवय मे दीक्षित परम पूज्य आचार्य भगवन्त का बालक -बालिकाओ को सुसस्कारित करने पर विशेष जोर रहा। आपश्री की मान्यता थी कि यही वह उम्र है जिसमें दिये गये सस्कार जीवन भर अमिट रहते है। आपके इन्दौर चातुर्मास की उल्लेखनीय उपलब्धि रही – इस स्वाध्यायशाला की स्थापना। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चो व युवाओ मे धार्मिक रुचि जागृत कर उन्हे सुसस्कृत बनाना है।

इस स्वाध्यायशाला मे विगत २२ वर्षों से नियमित रूप से प्रात ८ से १०-३० बजे तक, अपराह्न ३ से ४ बजे तक व साय ६ ३० से ७ ३० बजे तक धार्मिक अध्ययन का क्रम चालू है। अब तक सैकड़ो छात्र-छात्राएँ सामायिक, प्रतिक्रमण, थोकड़ो, स्तोत्रो का अभ्यास कर चुके है। अनेक युवा उत्तराध्ययन , दशवैकालिक , अन्तकृताग सूत्र आदि आगमो का अध्ययन कर चुके है।

सस्था द्वारा विगत आठ वर्षों से त्रैमासिक ग्रीष्मकालीन धार्मिक-शिक्षण का आयोजन किया जाता है। प्रति रविवार सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय एव प्रार्थना का कार्यक्रम अनवरत चालू है। बालक-बालिका ही नही, श्रावक-श्राविका भी सस्था से जुड़े हुए हैं। परम पूज्य आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकागण धुलण्डी व रगपंचमी पर विगत कई वर्षो से रग न खेल कर सामूहिक स्वाध्याय एव पाच-पाच सामायिक की आराधना कर एक आदर्श उपस्थित कर रहे है। दीपावली पर आतिशबाजी न करने वाले छात्रो को पुरस्कृत कर उन्हे हिंसा से विरत करने का प्रयास किया जा रहा है।

• **श्री जैन रत्न जवाहरलाल बाफना कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय,** भोपालगढ

महाप्रतापी क्रियोद्धारक जैनाचार्य परम पूज्य १००८ श्री रत्नचन्द्रजी म सा की पावन-स्मृति मे सचालित श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ के कार्यकर्ताओ ने विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती १५ जनवरी १९७९ के अवसर पर कन्या पाठशाला की स्थापना के द्वारा बालिकाओ मे शिक्षा व सस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया। इस भावना को मूर्त रूप प्रदान किया भोपालगढ के ही मूल निवासी अनन्य गुरुभक्त लब्धप्रतिष्ठ सुश्रावक श्री जवाहरलालजी बाफना के सुपुत्रगण उदारमना श्री भवरलालजी, सज्जनराजजी, कल्याणमलजी, अनूपकुमारजी बाफना ने , जिन्होने अपने द्वारा सचालित श्री जे जे चेरिटेबल ट्रस्ट इन्दौर एव जलगाव के माध्यम से कन्या पाठशाला हेतु भवन बनवा कर समर्पित किया। यही नही वरन् उनके द्वारा नियमित रूप से इसके सचालन हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

वर्तमान में यह विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में बालिकाओं को शिक्षा प्रदान कर रहा है। सम्प्रति यह विद्यालय श्री जैन रत्न विद्यालय परिवार के एक अग के रूप मे कार्यरत है तथा इसे शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में १४ शिक्षक कार्यरत हैं तथा लगभग २२५ छात्राएँ अध्ययन कर रही हैं।

- **श्री कुशल जैन छात्रावास,** पोलो प्रथम, पावटा, जोधपुर

रत्नवश परम्परा के मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्दजी म.सा की द्विशताब्दी का आयोजन क्रियोद्धार भूमि भोपालगढ़ में परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा के पावन सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ।

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ के छात्र आगे अध्ययन हेतु आवास, भोजन एव सुयोग्य सचालक का कुशल सरक्षण प्राप्त कर उच्च शिक्षा व सुसस्कारो से सम्पन्न बने, इस पुनीत लक्ष्य से इस छात्रावास को प्रारभ करने का निर्णय इस पावन प्रसग पर लिया गया।

सस्थान के ट्रस्टीगण उदारमना समाजसेवी श्री सायरचन्दजी काकरिया, श्री रतनलालजी बाफना, श्री रिखबचदजी बाफना, श्री भवरलालजी बाफना, श्री मूलचदजी बाफना एव उनके परिजनो के सहयोग से सस्थापित एव सचालित इस छात्रावास का पावटा, जोधपुर मे अपना विशाल भवन है, जहाँ ३५ छात्र शिक्षणरत है।

छात्रावास मे दसवी कक्षा उत्तीर्ण छात्रो को प्रवेश दिया जाता है, छात्रो के आवास व भोजन की सुन्दर व्यवस्था है, साथ ही सुयोग्य गृहपति का सरक्षण भी प्राप्त है। छात्रावास मे रहने वाले सभी छात्रो के लिए दैनिक प्रार्थना, प्रतिदिन सामायिक एव प्रति सप्ताह सत-सती दर्शन अनिवार्य है।

- **श्री महावीर जैन पाठशाला योजना,** जलगाव

जलगाव जिले के गावो मे बच्चो मे धार्मिक सस्कारो का बीजारोपण करने के उद्देश्य से धार्मिक पाठशालाओ के सचालन का कार्य आचार्यप्रवर के रायचूर चातुर्मास मे श्री मानमल जी ललवाणी की मौन साधना के उपलक्ष्य मे उनके सुपुत्र श्री ईश्वरलालजी ललवाणी द्वारा प्रारम्भ किया गया, जो निरन्तर प्रगतिशील है। अब तक इस योजना के माध्यम से करीब २००० विद्यार्थी सामायिक, प्रतिक्रमण , पच्चीस बोल आदि के जानकार बन चुके हैं। सभी विद्यार्थियो की वर्ष मे एक बार परीक्षको की उपस्थिति मे एक ही दिन एक ही समय परीक्षा आयोजित की जाती है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियो को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। प्रत्येक पाठशाला का प्रतिमाह निरीक्षण करने हेतु श्री हीरालाल जी मडलेचा को नियुक्त किया हुआ है। योजना का सम्पूर्ण खर्च मै राजमल लखीचन्द द्वारा वहन किया जाता है।

(आ) साधना-आराधना हेतु गठित संस्थाएँ

आचार्य भगवन्त सम्यक् ज्ञान के साथ सम्यक् क्रिया पर विशेष रूप से बल देते थे, अत सामायिक-साधना का उस महापुरुष का आह्वान आबाल-वृद्ध सबको आकर्षित करता था। हजारो हजार भक्त नित्य प्रति सामायिक साधना से जुड़े । गाव गांव, नगर नगर और महानगरों मे "कर लो सामायिक रो साधन, जीवन उन्नत होवेला" की गूज जिह्वा तक ही नही व्यवहार मे परिलक्षित हुई। श्रावक और साधु के बीच साधक एक कड़ी के रूप में रहें, आचार्य भगवन्त के इस चिन्तन को साधना विभाग द्वारा तैयार साधकों से पूरा करने का प्रयास हुआ। दया-संवर, उपवास-पौषध की प्रवृत्ति गाव-गाव और घर-घर मे जागृत हो, साथ ही आयबिल आराधना केन्द्र चलें, आचार्य

भगवन्त की इस प्रेरणा से साधक श्रावक-श्राविकाओ का मनोबल बढ़ा। साधना-आराधना मे गठित सस्थाओ का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

• **अखिल भारतीय सामायिक सघ,** घोड़ो का चौक, जोधपुर

आचार्यप्रवर का सामायिक-साधना पर बहुत बल था। आप फरमाते थे कि सामायिक-साधना जीवन के उन्नयन का मूल आधार है। घर-घर मे इसका प्रचार होना चाहिए। आपके प्रवचनो से प्रभावित होकर सुज्ञ श्रावको ने सवत् २०१६ मे अखिल भारतीय सामायिक सघ की स्थापना की। प्रारम्भ मे इसका कार्य श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी ने देखा तथा बाद मे कई वर्षो तक श्री राजेन्द्र जी पटवा ने इसका सचालन किया। सम्प्रति इसके सयोजक श्री नवरतनमल जी डोसी है। सामायिक सघ के प्रमुख कार्य है-

१ अधिक से अधिक सामायिक साधक तैयार करना।

२ सदस्यो को सामायिक साधना हेतु प्रेरित करना।

३ पुस्तकालय एव वाचनालय खोलना।

४ साहित्य एव सामायिक के उपकरण वितरित करना।

सामायिक-सघ के सदस्यो की तीन श्रेणिया रखी गई-

१. **नैष्ठिक सदस्य**- धर्मस्थान मे प्रतिदिन सामायिक साधना करने वाले।

२. **साधारण सदस्य** - माह मे कम से कम चार दिन धर्मस्थान मे सामायिक-साधना करने वाले।

३ **प्रेमी सदस्य** - प्रतिदिन २० मिनट धार्मिक पुस्तको का स्वाध्याय करने वाले।

सामायिक सघ के सदस्य सप्त कुव्यसन के त्यागी होने के साथ नैतिक जीवन जीते है। उनकी जीवन शैली अहिंसक होती है तथा कुरीतियो को प्रोत्साहित नही करते।

साधना-विभाग, घोडा का चौक, जोधपुर

साधना की गतिविधियो को प्रोत्साहित करने हेतु साधना - विभाग का प्रारम्भ हुआ, जिसका सचालन साधनानिष्ठ श्रावक प्रो चादमल जी कर्णावट, उदयपुर ने किया तथा अब श्री सम्पतराजजी डोसी, जोधपुर इसका कार्य देख रहे हैं।इस विभाग के द्वारा साधना-शिविरो का आयोजन किया जाता है एव साधना की ओर गतिशील बनने के लिये श्रावको को प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है।

(इ) सघ-उन्नयन हेतु गठित सस्थाएँ

आचार्यप्रवर सम्प्रदायवाद से परे थे, किन्तु सम्प्रदाय को सघहित मे सहायक मानते थे। सम्प्रदाय की गौरव गरिमा निरन्तर विकसित हो, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर श्रावक सघ, श्राविका-मण्डल और युवक परिषद् का गठन किया गया। इन सस्थाओ का सगठन सघ-उन्नयन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

• **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ,** घोडा का चौक, जोधपुर, दूरभाष ०२९१-६३६७६३

रत्नवशीय श्रावको ने निर्मल सयम-साधक, दृढ प्रतिज्ञ, परम्परा के मूलपुरुष, पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी म.सा. से

लेकर प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.के शासनकाल तक स्व-प्रेरित सघ व्यवस्था का गौरव बनाए रखा। आचार्य भगवन्त सघ को प्रमुखता देने वाले युग पुरुष रहे। उस महापुरुष की सघ के प्रति अटूट आस्था देखकर श्रावको के मन में सघ-व्यवस्था को और अधिक सक्रिय, सक्षम और सगठित बनाने की भावना जगी और विक्रम सवत् २०३२ में ब्यावर (राजस्थान) में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ की औपचारिक रूप से स्थापना की गई।

सघ-स्थापना के पश्चात् सघ-उद्देश्यो की पूर्ति मे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना से सघ-सदस्य इसकी प्रवृत्तियो के पोषण और कार्यक्रमो के क्रियान्वयन मे सतत सक्रिय हैं। सघ के प्रमुख उद्देश्यों मे श्रद्धा व विवेक के साथ ज्ञान-दर्शन-चारित्र का रक्षण एव वृद्धि करना, अध्यात्मप्रेमी बन्धुओ की वात्सल्य भाव से सेवा व सहायता करना, त्यागानुरागी - वैरागी भाई-बहिनो को सहयोगपूर्वक आगे बढ़ाना, चतुर्विध सघ की सार-सभाल एव सहयोग करना , चतुर्विध संघ की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करना, सघ में सचालित नैतिक व आध्यात्मिक प्रवृत्तियो को बढ़ावा देना, महापुरुषों के जन्म-दीक्षा-पुण्य तिथि एव विशिष्ट प्रसगो को साधनापूर्वक मनाना, सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन एव समाज-सुधार के लिए आवश्यक कार्य करना, सामायिक-स्वाध्याय का प्रचार-प्रसार करना, निर्व्यसनता-शाकाहार सदाचारमय जीवन शैली का प्रचार-प्रसार करना, भारतीय प्राच्य सस्कृति एव आगम-साहित्य का रक्षण, प्रकाशन एव विक्रय करना, प्राकृत - सस्कृत आदि प्राचीन भाषाओ के अध्ययन-अध्यापन एव अनुसधान की व्यवस्था करना, अध्यात्म-साधना एव रत्नत्रय आराधना के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, साधक - व्यक्तित्व का निर्माण करना, हस्तलिखित ग्रन्थो, कलात्मक कृतियो, पुरातत्त्व व ऐतिहासिक वस्तुओं का सग्रह करना तथा उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना, सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विकास हेतु नैतिक व आध्यात्मिक पाठशालाओ, स्वाध्याय केन्द्रो, महाविद्यालयो एव उच्च अध्ययन केन्द्रों की स्थापना करना, मानव-सेवा, जीवदया, समाज-सेवा और पारमार्थिक कार्य करना सम्मिलित है।

सामायिक-स्वाध्याय, साधना और सेवा के विविध सोपानो के साथ सघ मे ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना के कार्यक्रम सुव्यवस्थित चलें तथा सघ-सदस्यो मे परस्पर प्रेम-मैत्री सहयोग की भावना और आत्मीयता बढ़े, इसका पूरा ध्यान रखा जाता है।

सघ की रीति-नीति का निर्धारण सघ-संरक्षक एव शासन सेवा समिति के सदस्य करते हैं जिसे कार्यकारिणी और साधारण सभा के अनुमोदन के पश्चात् मूर्त रूप दिया जाता है। सघ व्यवस्था के लिए अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष , उपाध्यक्ष, महामंत्री, अतिरिक्त महामंत्री, कोषाध्यक्ष, सह-कोषाध्यक्ष , मत्री, सहमत्री, क्षेत्रीय प्रधान एव कार्यकारिणी सदस्य देश भर मे फैले सघ-सदस्यो में धर्म के सस्कार जगाने, ज्ञान-क्रिया के समन्वय के साथ उन्हे आध्यात्मिक क्षेत्र मे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते है। महापुरुषो के जन्म, दीक्षा एव पुण्य-प्रसगो पर साधना-आराधना के सामूहिक कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति से सकल जैन समाज गुरु हस्ती के सामायिक स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन - त्याग सन्देशों को जीवन व्यवहार में आत्मसात् करने हेतु अग्रसर हैं। सम्प्रदाय मे रहते हुए सम्प्रदायवाद का पोषण नही किया जाता और 'गुरु एक, सेवा अनेक' की उक्ति जीवन - व्यवहार मे साकार करते हुए सघ समाजहितचिन्तन में सक्रिय है। गुणग्राहकता के दृष्टिकोण के कारण सघ-सदस्यो की वृत्ति मे किसी की निन्दा - आलोचना का भाव नही है। अत रत्नवशीय श्रावक-श्राविकाओ का वर्चस्व सकल जैन समाज पर है। हमारे सघ मे प्रखर वक्ता है, प्रबुद्ध चिन्तक हैं और प्रतिभा की कमी नही है, इन सब विशेषताओं के कारण हमारा प्रभाव सर्व

विदित है और हमें इस पर गर्व है।

सघ का प्रधान कार्यालय घोडो का चौक , जोधपुर (राजस्थान) मे है। सघ-व्यवस्था की दृष्टि से प्रधान कार्यालय देश भर में फैले ग्यारह क्षेत्रीय कार्यालयो, इकत्तीस शाखा कार्यालयों व विभिन्न ग्राम नगरो व महानगरों मे स्थापित सम्पर्क सूत्रो के माध्यम से कार्य सचालित करता है। आचार्यप्रवर , उपाध्याय प्रवर आदि सत-सतीवृन्द के विचरण-विहार, प्रवास, चातुर्मास, स्वास्थ्य-समाधि एव विशिष्ट आयोजनों की जानकारी समय-समय पर सघ कार्यालय द्वारा दी जाती है। सघ द्वारा समय-समय पर क्षेत्रीय एव राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं जिससे सघ की एकता-एकरूपता पुष्ट होती है और सघहित मे सार्थक निर्णय भी किये जाते हैं।

सघ की विभिन्न प्रवृत्तियो के सचालन के लिए वित्तीय आधार के रूप मे आल इण्डिया श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ ट्रस्ट, चेन्नई, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी सघ पारमार्थिक ट्रस्ट इन्दौर, गजेन्द्र निधि मुम्बई , श्री गजेन्द्र फाउण्डेशन मुम्बई एव श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत वात्सल्य निधि सस्थाओ का सहयोग प्राप्त है।

ज्ञान-दर्शन-चारित्र की उन्नति, सगठन व सघ सदस्यों मे वात्सल्य, सेवा आदि लक्ष्यो से गठित अनेक सस्थाओं का सचालन सघ के सरक्षण/अन्तर्गत किया जा रहा है। प्रमुख सस्थाओ का परिचय इस अध्याय मे अलग से दिया गया है।

चुनाव नही, चयन सघ-सचालन की मुख्य विशेषता रही है। सघ-सचालन मे न्यायाधिपति श्री सोहननाथ जी मोदी, श्री लाभचन्दजी लोढा, श्री नथमलजी हीरावत, डॉ सम्पतसिंह जी भाडावत, श्री मोफतराजजी मुणोत एव श्री रतनलालजी बाफना ने अध्यक्ष पद को सुशोभित किया है। कार्याध्यक्ष के रूप मे डॉ सम्पतसिंह जी भाण्डावत, श्री रतनलालजी बाफना, श्री सायरचन्दजी काकरिया व श्री कैलाशचन्दजी हीरावत ने अपनी महनीय भूमिका का निर्वहन किया है। सघ महामत्री के रूप में श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना , श्री माणकमलजी भण्डारी, श्री किरोड़ीमलजी लोढ़ा, श्री जगदीशमलजी कुम्भट, श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना व श्री अरुण जी मेहता ने अपनी विशिष्ट सेवाएँ दी हैं।

सघ-सरक्षक एव शासन सेवा समिति के साथ विविध ट्रस्टो के ट्रस्टीगण एव सघ की सहयोगी सस्थाओ के अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष, सचिव, सयोजक आदि के सहयोग से सघ व सघ की सहयोगी सस्थाओं का सामजस्य तो बना रहता ही है, सार्थक चिन्तन से प्रवृत्तियो का पोषण और कार्यक्रमो का क्रियान्वयन भी सफल होता है।

सघ सदस्यो मे गुरु हस्ती के सामायिक - स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग सदेश की अमिट छाप है। सघ-सदस्यो का गुरु के प्रति समर्पण है और सेवा मे यह सघ एक आदर्श सघ के रूप मे अपनी पहचान रखता है, जिस पर सदस्यो को गर्व है।

• अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर

रत्नवशीय श्रावको की भाति सघ-सेवा मे श्राविकाओ का महत्वपूर्ण स्थान है। श्राविकाएँ श्रद्धा-भक्ति मे, त्याग-तप मे और सेवा-धर्म की साधना मे अग्रणी रहती है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ की सहयोगी सस्था के रूप मे श्राविका-मण्डल का पुनर्गठन २४ सितम्बर १९९४ को सूर्यनगरी जोधपुर मे किया गया। इससे पूर्व यह भगवान महावीर श्राविका समिति के रूप मे सक्रिय थी।

श्राविका-मण्डल बच्चो को सस्कारित करने के साथ पारिवारिक सघर्ष घटाने और आपसी प्रेम स्थापित करने का प्रयत्न करता है। सघ-सेवा और सत-सेवा के साथ जरूरतमद बहिनों को सहयोग करने मे एव धार्मिक कार्यक्रम

आयोजित करने में श्राविका-मण्डल की अह भूमिका है। ज्ञानाभ्यास में मण्डल की सक्रियता से पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन एव परीक्षाओं के सफल आयोजनों से श्राविका मण्डल का कार्य विस्तृत हुआ और सघ ने शिक्षण-व्यवस्था को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रूप में स्वीकार कर श्राविका सघ द्वारा प्रारम्भ किए गए पाठ्यक्रम को अपनाया। स्वाध्याय-सेवा, आयबिल-आराधना और जीवदया के क्षेत्र मे श्राविका-मण्डल की तत्परता अनुकरणीय है।

श्रावक सघ की भाति श्राविका-मण्डल के अध्यक्ष का चुनाव तीन वर्ष पश्चात् होता है और कार्याध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महासचिव , सचिव, कोषाध्यक्ष सहित कार्यकारिणी का गठन किया जाता है। श्राविका-मण्डल देशभर मे फैली श्राविकाओ को स्थानीय शाखाओ से सयुक्त कर सामायिक, स्वाध्याय, प्रार्थना, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा और समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण के शिविर आयोजित कर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के कार्यों मे सहयोग करता है। सामाजिक कुरीतियो के निकन्दन मे श्राविका-मण्डल की सक्रियता से अहिंसक जीवन शैली की ओर बहिनो का आकर्षण बढ़ा है। भ्रूण हत्या जैसे जघन्य और निन्दनीय कार्य की रोकथाम मे श्राविका-मण्डल का विशेष योगदान है।

वर्तमान मे श्राविका-मण्डल का मुख्यालय घोड़ो का चौक, जोधपुर मे स्थित है और मण्डल के तत्वावधान मे लगभग ४० शाखाएँ और २० सम्पर्क सूत्र कार्यरत हैं। अध्यक्ष के रूप मे डॉ सुषमा जी सिंघवी के बाद से श्रीमती विमला जी मेहता अपनी सेवाएँ दे रही है।

श्राविका मण्डल समय-समय पर कार्यकारिणी- बैठक मे कार्यक्रमो की रूपरेखा निर्धारित करता है और कार्यक्रमो के क्रियान्वयन मे सघ व सघ की सहयोगी सस्थाओ के साथ सामजस्य बनाकर एक कड़ी के रूप मे सेवाएँ देता है।

- **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्**, घोडो का चौक, जोधपुर

युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती युवा शक्ति मे भविष्य की आशा रखते थे। जीवन के सध्याकाल मे आचार्य भगवन्त ने प्रेरणा के माध्यम से युवको को सघ-सेवा, सत-सेवा एव स्वय के जीवन-निर्माण की दिशा मे सक्रिय किया। आचार्य भगवन्त की भावना को ध्यान मे रखकर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ ने २१ नवम्बर १९९१ को जोधपुर मे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की स्थापना की।

युवक परिषद् अपनी स्थापना से सगठित इकाई के रूप मे सघ की सहयोगी सस्था का उत्तरदायित्व निर्वहन कर रही है। बच्चो एव युवको मे धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक सस्कार सृजित करने, उन्हे निर्व्यसनी बनाने, भ्रातृत्व भावना के साथ 'हम सब है भाई-भाई, हममे नही हो जुदाई' का आदर्श स्थापित करने, सघ-सेवा, सत-सेवा और स्वय के जीवन-निर्माण मे आगे आने के लिये युवको को निरन्तर प्रेरित करती है। सामायिक-स्वाध्याय और चतुर्विध सघ की सेवा युवक - परिषद् के मुख्य उद्देश्य हैं। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु युवक परिषद् अपनी स्थापना से राष्ट्रीय स्तर पर चतुर्विध सघ-सेवा, सामायिक-स्वाध्याय, स्वधर्मी-वात्सल्य एव समाज-सेवा, धार्मिक-शिक्षण व नैतिक सस्कार जैसे कार्यक्रम हाथ में लेकर उनकी सफल क्रियान्विति की ओर निरन्तर आगे बढ़ रही है।

व्यक्ति-व्यक्ति का जीवन आदर्श और प्रेरणादायी बने, इस लक्ष्य से सामायिक, स्वाध्याय, निर्व्यसनता, तप, सयम, शिक्षा, खेलकूद, समाज-सेवा जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले युवारत्नो को प्रेरित-प्रोत्साहित कर

व्यक्तिगत स्तर पर कुछ मानदण्डो के साथ एव शाखा स्तर पर स्वस्थ स्पर्धा हेतु प्रतिवर्ष वार्षिक अधिवेशन मे उल्लेखनीय कार्य करने वाले युवारत्नों को और सर्वश्रेष्ठ शाखा को सम्मानित किया जाता है।

सघ की भाति युवक परिषद् परामर्शदाताओं से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर, क्षेत्रीय स्तर एव स्थानीय स्तर पर समय-समय पर शिविर-प्रशिक्षण-कार्यक्रम आयोजित कर स्वाध्याय सेना के लिये स्वाध्यायी तैयार करती है। नियत समय पर कार्यकारिणी एव प्रतिनिधि सभाओ के माध्यम से कार्यों की समीक्षा और भावी कार्यक्रमों का निर्धारण किया जाता है।

प्रत्येक तीन वर्ष के कार्यकाल के पश्चात् परिषद्-अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है। कार्यकारिणी मे कार्याध्यक्ष उपाध्यक्ष, महासचिव, सचिव, कोषाध्यक्ष कार्यक्रम प्रभारी, क्षेत्रीय प्रधान के साथ कार्यकारिणी सदस्यो का मनोनयन किया जाता है। परिषद् पूर्व निदेशको की सेवाएँ स्थायी आमन्त्रित सदस्यो के रूप मे लेकर उनके अनुभवो से लाभ उठाने का प्रयास करती है और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ की छत्रछाया में अपने कार्यक्रमो का क्रियान्वयन करती है। सघ-सरक्षक मण्डल के सयोजक , सघाध्यक्ष, सघ कार्याध्यक्ष, सघ महामत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष, मत्री, स्वाध्याय सघ के सयोजक, सचिव व श्राविका मण्डल के अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष महासचिव जैसे पदाधिकारियो के मार्गदर्शन एव प्रेरणा से युवक परिषद् अपने उद्देश्यो की पूर्ति मे सक्रिय भूमिका निभाती आ रही है। युवक परिषद् अध्यक्ष के रूप मे श्री अमिताभ जी हीरावत, श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री विनयचन्दजी डागा ने सेवाए दी। अब सन् २००० से अनिलजी बोहरा अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

युवक परिषद् का राष्ट्रीय कार्यालय घोडो का चौक जोधपुर मे स्थित है और समस्त पत्राचार कार्यालय द्वारा किया जाता है। युवक परिषद् ने स्वाध्यायी तैयार करने का सकल्प लिया, उसे पूरा किया और आज पढ़े लिखे एव विशिष्ट पदो पर कार्यरत युवक स्वाध्यायी-सेना के सिपाही के रूप मे अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। जिनवाणी का व्यापक प्रचार-प्रसार हो इस भावना से भगवान महावीर २६०० वे जन्म-कल्याणक वर्ष मे 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के २६०० से अधिक सदस्य बनाने का सकल्प सघनता से सम्पन्न किया। सघ आर्थिक रूप से सबल हो, इस पुनीत कार्य मे युवारत्न बन्धुओ ने जोधपुर श्रावक सम्मेलन मे गजेन्द्र निधि के ८१ आजीवन सदस्य बनाने का कार्यक्रम हाथ मे लिया, जिसकी क्रियान्विति मे युवक परिषद् की सक्रियता प्रेरणादायी है।

(ई) समाज-सेवा के उद्देश्य से गठित सस्थाएँ

सेवा को आचार्य भगवन्त सबके लिये करणीय मानते थे। सघ-सेवा, सन्त-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा, दीन-दुखी, निर्धन और असहाय की सेवा के साथ करुणा की भावना से प्राणिमात्र की सेवा के प्रेरक आचार्य भगवन्त ने सेवाधर्म की साधना मे आबाल-वृद्ध और जैन-जैनेतर जन समुदाय को प्रेरित किया, परिणाम स्वरूप व्यक्ति-व्यक्ति मे सेवा के भाव विकसित हुए। सेवाभावना से गठित सस्थाओ का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

- **श्री अमर जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी,** चौड़ा रास्ता, जयपुर

जयपुर मे समतामूर्ति श्री अमरचन्दजी म सा के सथारा पूर्वक स्वर्गवास की स्मृति मे सन् १९६१ में श्री अमर जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी की स्थापना की गयी। रोगी का दुख दूर करने की प्रेरणा से प्रारम्भ यह सस्था अब विशालवृक्ष की भाति समाज-सेवा मे सलग्न है। इस सस्था के अन्तर्गत अमर जैन अस्पताल, चौड़ा रास्ता मे सचालित है तथा डिस्पेन्सरी मोतीसिंह भोमियो के रास्ते मे चल रही है। अमर जैन अस्पताल अनुभवी एव योग्य

चिकित्सको की सेवाओं के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। इसमे वातानुकूलित आधुनिकतम उपकरणो से सुसज्जित आपरेशन थियेटर, आई.सी.यू., ७५ शय्याओं से युक्त मेडिकल वार्ड, सर्जिकल वार्ड, गाइनी वार्ड, एक्सरे, ई.सी.जी., निदान केन्द्र , सोनोग्राफी, गेस्ट्रोएण्टोलाजी आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आर्थिक स्थिति से कमजोर व्यक्तियों के उपचार, औषधि, आपरेशन, प्रसव आदि की नि.शुल्क व्यवस्था है। अशक्त एव असहाय रोगियो को दवा-बैंक से नि:शुल्क दवा वितरित की जाती है।

जयपुर में अमर जैन रिलीफ सोसायटी मानव-समाज मे सेवा का बहुत बड़ा कार्य कर रही है तथा निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है।

• **श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी,** घोड़ो का चौक, जोधपुर

रत्नवश परम्परा के महापुरुषो की साधना जन-मानस पर अनूठी छाप छोड़ती रही है। मनसा-वचसा -कर्मणा साधना की एकरूपता इस परम्परा की विशिष्ट विशेषता है। परम्परा के अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन की अन्तिम वेला मे सुदीर्घ सथारो के माध्यम से समाधिमरण प्राप्त कर मरण-वरण का आदर्श जैन-जैनेतर समाज के समक्ष जीवन्त किया है। साधक शिरोमणि परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा के भजनान्दी सुशिष्य श्री माणकमुनि जी म.सा ने घोड़ो का चौक स्थानक, जोधपुर मे वर्ष १९७६ मे ३५ दिनो का सुदीर्घ सथारा किया, जिसकी स्मृति आज भी भक्तो के हृदय मे अक्षुण्ण है।

'नर नारायण बन जायेगा' के इस साधक की साधना की पावन स्मृति स्वरूप श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसाइटी की स्थापना हुई। सोसाइटी द्वारा घोड़ो का चौक, जोधपुर मे वर्द्धमान अस्पताल का नियमित सचालन किया जा रहा है।

यह सोसाइटी एक स्वयसेवी पजीकृत सस्था है । विगत २६ वर्षो से रोग पीड़ित मानवता की सेवा मे सलग्न वर्धमान अस्पताल अनुभवी चिकित्सको की सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है। अस्पताल मे सामान्य चिकित्सक (फिजिशियन), सर्जन, वात रोग विशेषज्ञ, स्त्री-रोग विशेषज्ञ, दत-रोग विशेषज्ञ, रोग-निदान विशेषज्ञो की सेवा प्राप्त है। प्रात एव सायकालीन आउट डोर के साथ ही आपातकालीन सेवा एव रात्रिकालीन सेवा भी उपलब्ध है। अस्पताल के पास अपना वातानुकूलित शल्यचिकित्साकक्ष एव रोगनिदान के आधुनिक उपकरण उपलब्ध है।

जन सामान्य के साथ-साथ प्राथमिकता से भावनापूर्वक निर्दोष चिकित्सा-सेवा श्रमण-श्रमणियो को उपलब्ध कराना यहाँ के कार्यरत चिकित्सक व कर्मचारीगण अपना सौभाग्य समझते हैं। रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष सेवानिवृत्त न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढा, उपाध्यक्ष श्री पूरणराजजी अब्बाणी, मन्त्री श्री धनपतजी सेठिया एव कोषाध्यक्ष श्री नरपतराजजी चौपड़ा हैं।

इस चिकित्सालय मे प्रतिवर्ष लगभग ४० हजार रोगियों का पजीकरण होता है।

• **श्री महावीर जैन हॉस्पिटल,** जलगॉव

मानव सेवा के उद्देश्य से आचार्य श्री के सन् १९८२ के चातुर्मास मे श्री कुशल जैन सेवा समिति के अन्तर्गत महावीर जैन हॉस्पिटल शुरु किया गया, जो आज अपनी चार शाखाओ के माध्यम से केवल एक रुपये शुल्क पर रोगियों को सभी दवाइयाँ मुफ्त उपलब्ध करवा रहा है। इस समय चारों शाखाओं में प्रतिदिन २५० रोगी स्वास्थ्य

लाभ प्राप्त करते हैं। हास्पिटल के पास ७ लाख रुपये का स्थायी फण्ड है। श्री सुरेश दादा जैन, श्री भवरलाल जी जैन, श्री रतनलाल सी बाफना व श्री दलीचद जी जैन इसके प्रमुख ट्रस्टी हैं।

• **श्री भूधर कुशल धर्म-बन्धु कल्याण कोष,** बडेर भवन, तख्तेशाही मार्ग, जयपुर

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की पावन दीक्षा के मगलमय प्रसग पर दिनाक १५ दिसम्बर १९८३ को स्वधर्मी वात्सल्य के पुनीत लक्ष्य से अनन्य गुरु भक्त सुश्रावकगण सर्वश्री इन्दरचन्द जी हीरावत, श्री पूनमचन्दजी बडेर एव श्री कैलाश चन्द जी हीरावत के सत्प्रयासों से एक सार्वजनिक प्रन्यास के रूप मे इस कोष की स्थापना की गई। यह प्रन्यास आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के तहत अनुदानो की कर-मुक्ति हेतु पजीकृत है। वर्तमान मे कोष के पास ५५ लाख रुपये से अधिक का ध्रुवकोष है एव इसके द्वारा प्रतिवर्ष २६५ परिवारों को ७ लाख ७० हजार रुपये की प्रतिमाह सहयोग राशि उपलब्ध कराई जा रही है।

• **बाल शोभा संस्थान,** पुराना अनाथालय भवन, बागर चौक, जोधपुर

सेवा अहिंसा का विधेयात्मक रूप है। परम श्रद्धेय आचार्यदेव के अनन्य भक्त, सेवा धर्म के पर्याय कुशल प्रशासक, विनिमय एव प्रतिभूति बोर्ड के चेयरमेन जैसे गौरवशाली पद से सेवानिवृत्त श्री देवेन्द्र राजजी मेहता आई ए. एस के सकल्प एव प्रेरणा का परिणाम है— बाल शोभा सस्थान, जिसमे मातृ पितृ विहीन बालको का ममता, प्यार, दुलार एव वात्सल्य के साथ लालन-पालन किया जाता है।

इस सस्थान की स्थापना १५ अगस्त १९८७ को ४ बालको के प्रवेश से की गयी। आज इसमें ८७ बालक हैं। सस्थान एक स्वयसेवी रजिस्टर्ड सस्था है जो बिना किसी भेदभाव, क्षेत्र, धर्म, जाति आदि के इन बालको के नि:शुल्क आवास, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा व शिक्षा की सुचारु रूपेण व्यवस्था कर रही है। स्थापना काल से ही सस्थान का सचालन करने वालो मे प्रमुख समाज सेविका श्रीमती सुशीला जी बोहरा अग्रगण्य है।

• **स्वधर्मी सहायता कोष ,** जलगांव

समाज के गरीब भाई-बहिनो की सहायता करने के लिये इस कोष की स्थापना श्री सुरेश कुमारजी जैन द्वारा प्रदत्त ३ लाख ४२ हजार की राशि से की गयी थी, जिसके माध्यम से जरूरतमन्दो को ३० प्रतिशत कम मूल्य पर राशन उपलब्ध कराया जाता है तथा आर्थिक-व्यवस्था के लिये बिना ब्याज ऋण दिया जाता है। अब तक १५० भाइयो को बिना ब्याज करीब ६ लाख रु. के ऋण दिये जा चुके है।

• **श्री महावीर रत्न कल्याण कोष ,** सवाईमाधोपुर

अपने स्वधर्मी भाई-बहिनो की सार-सभाल एव समय-समय पर अपेक्षित सहयोग प्रदान करना श्रावक का कर्तव्य है। इसी पवित्र भावना से परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त के १९८८ के वर्षावास मे इस कोष की स्थापना हुई।

सस्था वर्तमान मे अनेक परिवारो को मासिक सहयोग प्रदान कर उनकी आवश्यकताए पूरी करने का प्रयास कर रही है।

नोट — पूज्य आचार्यप्रवर के महाप्रयाण के अनन्तर गठित सस्थाओं का परिचय यहाँ स्थानाभाव से नही दिया जा रहा है। ■

आचार्यप्रवर के ७० चातुर्मास : एक झलक

क्र. सं.	विक्रम संवत्	ईसवीय सन्	चातुर्मास स्थल	सन्त-नामावली एवं अन्य चातुर्मास	विशेष विवरण
१	१९७८	१९२१	अजमेर	१ आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द जी म.सा., २ मुनि श्री हरखचदजी ३ मुनि श्रीलाभचदजी ४ मुनि श्री सागरमलजी ५ मुनि श्री लालचन्दजी ६ मुनि श्री हस्तीमलजी ७ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा-७ **नागौर** — १ मुनि श्री सुजानमलजी, २ मुनि श्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचन्दजी जी - ठाणा ३	पौष शुक्ला चतुर्दशी सवत् १९७७ को अजमेर में चरितनायक की दीक्षा। साथ मे मुनि श्री चौथमलजी, माता महासती श्री रूपकवरजी एव महासती अमृतकवरजी की भी उसी दिन दीक्षा। प्रथम चातुर्मास अजमेर में ही विशेष विनति पर।
२	१९७९	१९२२	जोधपुर	१ आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्दजी म.सा. २ मुनि श्री सुजानमलजी ३ मुनि श्री भोजराजजी ४ मुनि श्री अमरचन्दजी ५ मुनि श्री लाभचन्दजी ६ मुनि श्री सागरमल जी ७ मुनि श्री हस्तीमलजी ८ मुनि श्री चौथमलजी, ठाणा -८ **अजमेर** - १ मुनि श्री हरखचन्द जी, २ मुनि श्री लालचन्दजी ठाणा २	१ पूज्य श्री हरखचदजी म.सा. का भाद्रपद कृष्णा अमावस को स्वर्गवास हो जाने पर मुनि लालचदजी अकेले रह जाने से वे अजमेर से जोधपुर पधार गये। २ मुनि श्री लक्ष्मीचदजी (बड़े) की दीक्षा जोधपुर मे स्थित मुथाजी के मदिर में अगहन (मार्गशीर्ष) शुदि पूनम सवत् १९७९ मे हुई। इनके साथ ही महासती छोगाजी (लोढ़ण जी) एव किशनकवर जी की दीक्षा सम्पन्न हुई। इससे पूर्व वैशाख माह में महासती सज्जनकवर जी एव सुगनकवर जी की दीक्षा सिंहपोल, जोधपुर में सम्पन्न।
३	१९८०	१९२३	जोधपुर	१ आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्दजी म.सा. २ मुनि श्री सुजानमलजी ३ मुनि श्री भोजराजजी ४ मुनि श्री अमरचन्दजी ५ मुनि श्री लाभचदजी ६ मुनि श्री सागरमलजी ७ मुनि श्री लालचदजी ८ मुनि श्री हस्तीमलजी ९ मुनि श्री चौथमलजी १० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ठाणा-१०	माघ पूर्णिमा सवत् १९७९ से आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा द्वारा जोधपुर के मोती चौक स्थित पेटी के नोहरे में स्थिरवास।
४	१९८१	१९२४	जोधपुर	" "	पूज्य श्री शोभाचन्दजी म. सा. का श्रावण कृष्णा अमावस्या रविवार सवत् १९८३ को स्वर्गवास। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्दजी म.सा के सकेतानुसार चरितनायक का आचार्यपद हेतु चयन, किन्तु उन्हें उनकी अभिलाषा के अनुसार अभी अध्ययन का समय दिया गया। स्वामी जी श्री सुजानमलजी महाराज को सघ-व्यवस्थापक और श्री भोजराज जी महाराज को परामर्शदाता बनाया गया। कार्तिक पूर्णिमा सवत् १९८३ को महासती सुन्दरकवर जी की अजमेर मे भागवती दीक्षा। महासती चूना जी की दीक्षा भी अजमेर में ही।
५	१९८२	१९२५	जोधपुर	" "	
६	१९८३	१९२६	जोधपुर	" "	

७	१९८४	१९२७	पीपाड़	१ मुनि श्री भोजराजजी जी २ मुनि श्री हस्तीमलजी ३ मुनि श्री चौथमलजी ४ मुनि श्री लक्ष्मीचदजी ठाणा-४ **पाली** – १ श्री सुजानमलजी म सा. २ मुनि श्री अमरचन्दजी जी ३ मुनि श्री लाभचन्दजी ४ मुनि श्री सागरमलजी ५ मुनि श्री लालचन्दजी ठाणा-५	वैशाख माह में पीपाड़ निवासी महासती धूला जी की दीक्षा महासती श्री भीमकवर जी की निश्रा में सम्पन्न। **पीपाड़** - भोजराजजी म का यह चौमासा सतों के ज्ञानार्जन की दृष्टि से हुआ। **पाली** - नारेलों का भखार में चातुर्मास, प्रवचन मकान के प्रागण में ।
८	१९८५	१९२८	किशनगढ	१ श्री सुजानमलजी म.सा, २ मुनि श्री भोजराजजी, ३ मुनि श्री अमरचदजी ४ मुनि श्री लाभचन्दजी ५ मुनि श्री सागरमलजी ६ मुनि श्री लालचन्दजी ७ मुनि श्री हस्तीमलजी ८ मुनि श्री चौथमलजी ९ मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ठाणा-९	मुनि श्री सागरमलजी म. सा का श्रावण बदि १३ सवत् १९८५ में ५९ दिन का सथारापूर्वक स्वर्गवास हुआ।
९	१९८६	१९२९	भोपालगढ	श्री सुजानमलजी म सा २ मुनि श्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचदजी ४ मुनि श्री हस्तीमलजी ५ मुनि श्री लक्ष्मीचदजी ठाणा-५ **अजमेर** – १ मुनि श्री लाभचन्दजी, २ मुनि श्री लालचन्दजी ३ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा-३	
१०	१९८७	१९३०	जयपुर	१ श्री सुजानमल जी म सा २ मुनि श्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचद जी ४ मुनि श्री लाभचदजी, ५ मुनिश्री लालचदजी ६ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ७ मुनि श्री चौथमलजी, ८ मुनि श्री लक्ष्मीचदजी ठाणा८	अक्षय तृतीया सवत् १९८७ को मुनि श्री हस्तीमलजी म.सा को जोधपुर मे सवाईसिंह जी की पोल मे चतुर्विध सघ की उपस्थिति मे स्थानक मे आचार्य पदवी प्रदान की गई।
११	१९८८	१९३१	रामपुरा (मालवा)	१ मुनि श्री भोजराजजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा (चरितनायक) ३ मुनि श्री लालचन्दजी ठाणा ३ **रायपुर** (झालरापाटन के पास) - १ मुनि श्री सुजानमलजी २ मुनि श्री अमरचन्दजी ३ मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ठाणा ३ **मन्दसौर (मालवा)** - १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	
१२	१९८९	१९३२	रतलाम (मालवा)	१ श्री सुजानमल जी म सा २ मुनि श्री भोजराजजी , ३ मुनि श्री अमरचन्दजी ४ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा, ५ मुनि श्री बड़े लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ठाणा ६ **खाचरोद** – १ मुनि श्री लाभचदजी २ मुनि श्री लालचदजी ३ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा ३	**रतलाम** – महागढ़ निवासी छोटे लक्ष्मीचदजी म की दीक्षा उज्जैन मे आषाढ़ कृष्णा ५ सवत् १९८९ को सम्पन्न। अजमेर साधु सम्मेलन मे पधारते समय केकड़ी में हुए शास्त्रार्थ मे विजय से यश-कीर्ति।

१३	१९९०	१९३३	जोधपुर	१ श्री सुजानमलजी म. सा. २ मुनि श्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचन्दजी, ४ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ५ मुनि श्री लक्ष्मीचंजी ६ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ठाणा-६ **भोपालगढ**– १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री लालचन्दजी, ३ मुनि श्री चौथमलजी	सवत् १९९०को बृहत्साधु सम्मेलन चैत्र शुक्ला १०को अजमेर में शुरु हुआ। चरितनायक के साथ स्वामीजी श्री भोजराजजी म एव श्री चौथमलजी म. भी प्रतिनिधि। आचार्यश्री आत्मारामजी म के साथ संयुक्त चातुर्मास। व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म., श्री रामलाल जी म, मुनि श्री हेमचन्दजी म आदि भी यहाँ ही थे।
१४	१९९१	१९३४	पीपाड़	१ श्री सुजानमलजी म सा २ मुनिश्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचन्द जी ४ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ५ मुनि श्री प लक्ष्मीचद जी६ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ठाणा -६ **गगराणा – मारवाड़** १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री लालचन्दजी ३ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा-३	महासती श्री सुगनकवर जी का ५२ दिन का सथारा महामन्दिर मे भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को पूर्ण हुआ। माघ शुक्ला पचमी को जोधपुर मे महासती श्री स्वरूपकवर जी एव महासती श्री बदनकवर जी की भागवती दीक्षा सम्पन्न।
१५	१९९२	१९३५	पाली	१ श्री सुजानमलजी म सा. २ मुनि श्री भोजराज जी ३ मुनि श्री अमरचदजी ४ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ५ मुनि श्री प बड़े लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ठाणा -६	
१६	१९९३	१९३६	अजमेर	" "	महासती हरकवर जी की दीक्षा द्वितीय भाद्रपद शुक्ला ५ को सम्पन्न। माघ शुक्ला १३ को किशनगढ मे महासती अमरकवर जी (छोटे) की दीक्षा। मुनि श्री दर्शन विजयजी से शास्त्रार्थ अजमेर मे। महासती श्री राधा जी, धनकवरजी, छोगा जी आदि विराजमान। स्थान - ममैयो का नोहरा
१७	१९९४	१९३७	उदयपुर	१ श्री सुजानमल जी म.सा २ मुनि श्री भोजराजजी ३ मुनि श्री अमरचदजी ४ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ५ मुनि प बड़े लक्ष्मीचदजी, ६ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ७ मुनि श्री लालचदजी ठाणा-७	सवत् १९९४ फाल्गुन शुक्ला ११ को मुनिवर्य श्री भोजराज जी म.सा का देहावसान रतलाम में (स्थान - ओसवाल न्याती नोहरा) महासती फूलकवर जी की महामन्दिर मे मार्ग शीर्ष शुक्ला पञ्चमी को भागवती दीक्षा।
१८	१९९५	१९३८	अहमदनगर	१ श्री सुजानमलजी म सा २ मुनि श्री अमरचदजी ३ आचार्यश्री हस्तीमलजी म सा, ४ मुनि श्री प बड़े लक्ष्मीचदजी ५ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री लालचदजी ठाणा ६	महासती लाडकवर जी की माघ शुक्ला १३ सवत् १९९५ को महामन्दिर, जोधपुर में श्रमणी दीक्षा।
१९	१९९६	१९३९	सतारा (महाराष्ट्र)	१ श्री सुजानमलजी म सा २ मुनि श्री अमरचदजी ३ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ४ मुनि श्री प बड़े लक्ष्मीचदजी ५. मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री लालचदजी म ७ मुनि श्री जोरावर मल जी ठाणा -७	बारणी निवासी जोरावर मल जी (जालमचन्द्रजी) की दीक्षा सातारा में आश्विन शुक्ला १३ सवत् १९९६ में सेठ मोतीलाल जी मुथा के सहयोग से सम्पन्न। महासती श्री अमरकवर जी का कार्तिक शुक्ला १ को जयपुर मे स्वर्गवास। कार्तिक शुक्ला ९ को महासती लालकवर जी म.सा का सिंहपोल मे देवलोक गमन।
२०	१९९७	१९४०	गुलेजगढ (कर्नाटक)	" "	मार्गशीर्ष शुक्ला पचमी को भोपालगढ में महासती उगमकंवर जी की दीक्षा।

२१	१९९८	१९४१	अहमदनगर	१ श्री सुजानमलजी म.सा. २ मुनि श्री अमरचन्दजी ३ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ४ मुनि प. लक्ष्मीचदजी ५ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री जोरावरमलजी ठाणा६	महासती धनकवर जी म.सा. (सबसे छोटे) की आषाढ शुक्ला २ को जोधपुर में भागवती दीक्षा।
२२	१९९९	१९४२	लासलगॉव (नासिक)	१ श्री सुजानमलजी म.सा. २ मुनि श्री अमरचन्दजी ३ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ४ मुनि प. लक्ष्मीचदजी ५ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ठाणा ५ यहाँ आपके प्रवचनामृत से चातुर्मास के पूर्व समाज में मन-मुटाव दूर हुआ।	महासती श्री धूलाजी म.सा. का महामन्दिर-जोधपुर में स्वर्गारोहण । मार्गशीर्ष शुक्ला ११ सवत् १९९९ को भोपालगढ़ में चरितनायक की माताश्री महासती रूपकवर जी म.सा. का स्वर्गारोहण।
२३	२०००	१९४३	उज्जैन	१ श्री सुजानमलजी म.सा. २ मुनि श्री अमरचदजी ३ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ४ मुनि प. श्री लक्ष्मीचदजी ५ मुनि छोटे लक्ष्मीचन्दजी ६ नवदीक्षित मुनि माणकचद जी ठाणा -६	श्री माणकचन्दजी म. की दीक्षा आषाढ़ शुक्ला २ सवत् २००० को खाचरोद में सम्पन्न।
२४	२००१	१९४४	जयपुर	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ मुनि छोटे लक्ष्मीचदजी ठाणा ३ **उदयपुर** - १ श्री सुजानमलजी म.सा. २ मुनि प. लक्ष्मीचदजी ३ मुनि श्री माणकचदजी ठाणा ३	मुनि श्री इन्द्रमलजी के शिष्य मुनि मोतीलाल जी व मुनि लालचदजी ठाणा २ का भी चातुर्मास था।
२५	२००२	१९४५	जोधपुर	१ श्री सुजानमलजी म.सा. २ मुनि श्री अमरचदजी ३ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., ४ मुनि प. लक्ष्मीचदजी ५ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री माणकचदजी ठाणा-६	महासती श्री पानकवर जी म.सा. का श्रावण कृष्णा २ को पीपाड़ में समाधिमरण।
२६	२००३	१९४६	भोपालगढ	" "	महासती श्री सायरकवर जी एव महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा. की माघ शुक्ला १३ सवत् २००३ को बारणी ग्राम में श्रमणी दीक्षा।
२७	२००४	१९४७	अजमेर	" "	ज्येष्ठ शुक्ला ७ को महासती श्री उमरावकवर जी म.सा. की भागवती दीक्षा। महासती श्री छोगाजी म.सा., बड़े राधा जी म.सा. आदि सतीमण्डल का चातुर्मास भी अजमेर में ही।
२८	२००५	१९४८	ब्यावर	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. २ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ३ मुनि श्री माणकचदजी ठाणा-३ **पाली**—१ श्री सुजानमलजी म.सा., २ मुनि श्री अमरचन्दजी, ३ मुनि प. श्री लक्ष्मीचदजी ठाणा-३	अगहन सुद २ मु. लाभचदजी एव चौथमल जी सवत् २००५ में शामिल। महासती बदनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास भी ब्यावर मे।

२९	२००६	१९४९	पाली मारवाड	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ४ मुनिश्री रतनजी ठाणा -४ **जोधपुर** --१ मुनि श्री सुजानमलजी २ मुनि प लक्ष्मीचदजी ३ मुनि श्री माणकचदजी **भोपालगढ**--१ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	मुनि श्री रतनजी पजाब से आए एव पूर्व श्रद्धा के कारण साथ रहे।
३०	२००७	१९५०	पीपाड़	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ४ मुनि श्री रतनजी ठाणा-४ **जोधपुर**--श्री सुजानमलजी म.सा., २ मुनि श्री प लक्ष्मीचदजी ३ मुनि श्री माणकचन्दजी ठाणा-३ **पुष्कर** -- १ मुनि श्री लाभचदर्जी, २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा-२	स्थविरा महासती श्री तीजा जी म.सा. का चैत्र मास में घोड़ो का चौक, जोधपुर में स्वर्गवास। महासती श्री सतोषकवर जी म.सा. की ज्येष्ठ शुक्ला ५ संवत् २००७ को अजमेर में दीक्षा। फाल्गुन शुक्ला २ को महासती श्री बड़े धनकवर जी म सा का भोपालगढ में स्वर्गारोहण।
३१	२००८	१९५१	मेड़ता	१ मुनि श्री अमरचदजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ४ मुनि श्री रतनजी ठाणा-४ **जोधपुर**--१ श्री सुजानमल जी म सा २ मुनि प लक्ष्मीचदजी, ३ श्री माणकमुनि जी ठाणा-३ **अजमेर** -- १ मुनि श्री लाभचदजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा-२	
३२	२००९	१९५२	नागौर	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ४ मुनि श्री रतनजी ठाणा ४ **जोधपुर** १ श्री सुजानमल जी म सा २ मुनि प लक्ष्मीचदजी ३ मुनि श्री माणकचन्द जी ठाणा-३ **मदनगज** -- १ मुनि लाभचदजी २ मुनि चौथमलजी ठाणा-२	वैशाख शुक्ला ३ सवत् २००९ से प्रारम्भ सादड़ी सम्मेलन मे प्रतिनिधित्व। पूज्य श्री जयमलजी म सा की सम्प्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी म.का सथारा आषाढ शुक्ला ३ को जोधपुर में सम्पन्न। बाद में चरितनायक श्री उग्र विहार करके नागौर पधारे। मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को पाली में मुनि श्री जयन्त लाल जी म सा, महासती श्री शातिकवर जी म सा एव महासती श्री ज्ञानकवर जी म.सा. की भागवती दीक्षा। १७ जनवरी (माघ शुक्ला २) से ३० जनवरी १९५३ तक सोजत में मत्री मुनिवरों के सम्मेलन मे विचार-विमर्श में सक्रिय भूमिका।
३३	२०१०	१९५३	जोधपुर	१ मुनि श्री अमरचदजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचद जी ४ श्री माणक मुनि जी ५ मुनिश्री जयतजी ६ मुनिश्री सुगनचंद जी ठाणा ६ **सरदारपुरा (जोधपुर)** - १ श्री सुजानमलजी म.सा २ प मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ३ मुनि श्री रतनजी **सादड़ी** १ मुनि श्री लाभचदजी, २ मुनि श्री चौथमलजी म. ठाणा-२	ज्येष्ठ शुक्ला १० सवत् २०१० को लाडपुरा में मुनि श्री सुगनचन्द जी म एव महासती जड़ावकवर जी की भागवती दीक्षा। भाद्रपद शुक्ला सप्तमी सवत् २०१० को महासती श्री चूनाजी म सा का समाधिमरण। माघ कृष्णा चतुर्दशी को स्वामी जी श्री सुजानमल जी म सा का जोधपुर में स्वर्गारोहण।

				जोधपुर में चरितनायक का चातुर्मास उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. प्रधानमंत्री श्री आनन्द ऋषि जी म.सा., व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म.सा., कवि श्री अमरचन्दजी म.सा., प रत्न श्री समर्थमल जी म.सा., बाबाजी श्री पूर्णमल जी म.सा आदि सत-वरेण्यो के साथ हुआ।	
३४	२०११	१९५४	जयपुर	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ प श्री लक्ष्मीचन्दजी म ४ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म. ५ मुनि श्री माणकचन्द जी ६ मुनि श्री रतनजी ७ मुनि श्री जयत जी ८ मुनि श्री सुगनजी ठाणा -८ **सोजत सिटी**–१ मुनि श्री लाभचद जी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	महासती श्री जसकवरजी आदि सती- मण्डल भी जयपुर विराजित ।
३५	२०१२	१९५५	अजमेर	१ मुनि श्री अमरचदजी २ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ४ मुनि श्री रतन जी ५ मुनि श्री जयन्तजी ६ श्री सुगनमुनि जी ठाणा ६ **विजयनगर** – १ प लक्ष्मीचदजी २ श्री माणकमुनि जी ठाणा २ **डेहण (वन्दर)** – १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	मुनि श्री आनन्दऋषिजी के सम्प्रदाय के मुनि श्री पुष्पऋषि जी, मुनि श्री हिम्मतऋषिजी का भी चातुर्मास चरितनायक की सेवा मे । २ महासती श्री धनकवर जी ठाणा ३ का चातुर्मास भी अजमेर मे। महासती श्री राजकवर जी एव जतनकवर जी की क्रमश कार्तिक शुक्ला १० एव मार्गशीर्ष कृष्णा १२ को दीक्षा। २६ मार्च से ६ अप्रेल तक भीनासर सम्मेलन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका। १ अप्रेल १९५६ चैत्र शुक्ला २०१३) को श्रमण सघ मे उपाध्याय मनोनीत।
३६	२०१३	१९५६	बीकानेर	१ मुनि श्री अमरचदजी २ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ४ श्री माणकमुनि जी ५ श्री जयन्तमुनि जी ६ श्री सुगनमुनि जी ठाणा ६ **भीनासर-गगासर**–१ मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी २ मुनि श्री रतनजी ठाणा २ **माटूगा मुम्बई** – मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	स्थविरा महासती श्री छोगाजी म सा का आषाढ कृष्णा ४ सवत् २०१३ को अजमेर मे स्वर्गारोहण। कोटा सम्प्रदाय के मुनि रामकुमार जी ठाणा ३, उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म के बड़े सन्त श्री पन्नालालजी म ठाणा ५ का चातुर्मास भी बीकानेर मे था। महासती श्री बदनकवरजी, लाडकवर जी आदि का चातुर्मास भी यहा ही था।
३७	२०१४	१९५७	किशनगढ़	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ चरितनायक श्री हस्तीमलजी म सा ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी, ४ श्री माणकमुनि जी ५ श्री जयन्त मुनि जी ६ श्री सुगनमुनिजी ठाणा ६ **अजमेर** – १ मुनि प श्री लक्ष्मीचदजी म, २ श्री रतनमुनिजी ठाणा २ **दादर-बम्बई**– १ मुनि श्री लाभचदजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	मुनि श्री पन्नालालजी के शिष्य श्री हगामीलाल जी ठाणा १ साथ मे थे।

३८	२०१५	१९५८	दिल्ली	१ मुनि श्री अमरचदजी २ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ४ श्री माणकमुनि जी ५ श्री जयन्तमुनि जी, ६ श्री सुगनमुनिजी **कांदला** – १ प श्री लक्ष्मीचन्दजी म. २ श्री रतनमुनिजी ठाणा २ सादड़ी (साण्डेराव), १ मुनि श्री लाभचन्दजी, २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	**दिल्ली** - मुनि श्री पन्नालालजी म के शिष्य श्री हगामीलाल जी म ठाणा १ सेवा में। प मुनि श्री प्रेमचद जी, श्री रोशनलाल जी म. सेवा में। स्थानक सब्जी मडी । हगरी निवासी बौद्ध धर्म के विद्वान् फैलिक्स बैली जैन सिद्धान्तों की विशेष जानकारी के लिए उपस्थित। माघ शुक्ला ६ को ब्यावर में महासती श्री धनकवर जी (छोटे) का एव फाल्गुन शुक्ला ६ को महासती श्री अमरकवर जी का समाधिमरण।
३९	२०१६	१९५९	जयपुर	१ मुनि श्री अमरचन्दजी २ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ३ प लक्ष्मीचन्दजी ४ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ५ श्री माणकमुनि जी ६ श्री जयन्तमुनि जी, ७ श्री सुगन मुनि जी ८ श्री रतनमुनि जी ९ श्री श्री चदजी म ठाणा ९ **अजमेर** १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा -२	मुनि श्री श्रीचन्द जी म.सा. की दीक्षा ज्येष्ठ शुक्ला ११ स २०१६ को जयपुर में। महासती श्री बदनकवर जी, श्री लाडकवर जी, श्री मैनासुन्दरी जी म आदि सती-मण्डल का चातुर्मास भी जयपुर मे।
४०	२०१७	१९६०	अजमेर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा २ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ३ श्री माणक मुनि जी ४ श्री सुगनमुनि जी ५ मुनि श्री श्रीचन्दजी ठाणा -५ **टोक** – १ मुनि प लक्ष्मीचन्दजी २ श्री रतनमुनि जी ३ श्री जयन्त मुनि जी ठाणा ३ **भोपालगढ़** – १ मुनि लाभचदजी २ मुनि चौथमलजी म ठाणा २	स्वामी मुनि श्री अमरचन्दजी म का स्वर्गवास आषाढ़ कृष्णा ३ सवत् २०१७ को जयपुर मे। महासती श्री सुगनकवर जी म.सा. आगूचा (भीलवाड़ा) में माघ शुक्ला ५ को भागवती दीक्षा।
४१	२०१८	१९६१	जोधपुर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा. २ प श्री लक्ष्मीचन्दजी म ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ४ मुनि श्री माणकचन्द जी ५ मुनि श्री रतनजी, ६ मुनि श्री जयन्तजी ७ मुनि श्री सुगनचन्दजी ८ मुनि श्री श्रीचन्दजी ठाणा ८ **मदनगंज** – १ मुनि श्री लाभचदजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	**जोधपुर** – महासतीजी श्री गोगाजी म आदि का स्थिरवास, घोड़ों का चौक, जोधपुर मे । पूज्य श्री का चातुर्मास सिंहपोल मे। पौष शुक्ला १२ को अजमेर में महासती श्री इचरजकवर जी म.सा. की भागवती दीक्षा। श्रावण कृष्णा १३ को किशनगढ़ में महासती छोटा हरकवर जी म.सा. का स्वर्गवास।
४२	२०१९	१९६२	सैलाना (मालवा)	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म. सा २ पडित रत्न मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ३ मुनि श्री माणकचन्दजी ४ मुनि श्री जयन्तजी ५ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ६ मुनि श्री रतनजी ७ मुनि श्री सुगनजी ८ मुनि श्री श्रीचन्दजी ठाणा८ **जोधपुर**– १ मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	महासती श्री बदनकवर जी म.सा आदि ठाणा का चातुर्मास सैलाना मे ही। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा सवत् २०१९ को महासती श्री हुलासकवर जी म.सा. का जोधपुर मे स्वर्गवास। मार्गशीर्ष शुक्ला १० को सैलाना में महासती श्री वृद्धिकवर जी म.सा की भागवती दीक्षा।

४३	२०२०	१९६३	पीपाड़	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा. २ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ३ मुनि श्री माणकचन्दजी ४ मुनि श्रीजयत जी ५ श्री मगनमुनि जी ६ मुनि श्री मानचन्दजी ७ मुनि श्री हीराच द जी ठाणा७ **पाली** - १ प रत्न मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी २ मुनि श्री रतनजी ३ मुनि श्री श्रीचन्दजी ठाणा ३ **जोधपुर** - मुनि श्री लाभचन्दजी २ मुनि श्री चौथमलजी ठाणा २	वैशाख शुक्ला १३ सवत् २०२० को श्री मगनमुनिजी एव श्री मानचन्द्र जी म.सा की जोधपुर के हाई स्कूल प्रागण में दीक्षा। मुनि श्री सुगनचन्द जी म.सा.का ज्येष्ठ शुक्ला १० सवत् २०२० को जाजीवाल में स्वर्गवास। पीपाड़ में मुनि श्री हीराचन्द्र जी म.सा की कार्तिक शुक्ला ६ सवत् २०२० को श्रमण दीक्षा। माघ शुक्ला द्वितीया सवत् २०२० को महासती श्री तेजकवर जी म.सा की जयपुर मे भागवती दीक्षा।
४४	२०२१	१९६४	भोपालगढ	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा. २ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म., ३ श्री माणकमुनि जी ४ श्री रतन मुनिजी ५ श्री श्रीचद जी म ६ श्री मगन मुनि जी म. ७ श्री हीरामुनिजी म ठाणा७ **मेड़ता** — १ प लक्ष्मीचन्दजी म २ श्री जयन्तमुनि जी म. ३ श्री मानमुनि जी म	
४५	२०२२	१९६५	नागौर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी ३ श्री माणकमुनि जी ४ श्री जयन्त मुनि जी ५ श्री श्रीचदजी म ६ श्री मगनमुनि जी ७ श्री हीरामुनि जी ठाणा ७ **कोसाणा** — १ प लक्ष्मीचदजी म २ श्री रतनमुनि जी ३ श्री मानमुनि जी म ठाणा ३	इस चातुर्मास में श्रावक सघ में विशेष धर्मध्यान की वृद्धि हुई और इतिहास निर्माण समिति की योजना बनी, कार्य प्रारम्भ हुआ और आचार्य श्री के उपदेश से सिंवाची पट्टी का वर्षों से उलझा हुआ झगड़ा समाप्त हुआ तथा समाज में एकता का सचार हुआ।
४६	२०२३	१९६६	अहमदाबाद	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ प रत्न श्री लक्ष्मीचन्द म., ३ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म ४ श्री माणकमुनि जी, ५ श्री रतनमुनिजी ५ श्री जयन्त मुनि जी ७ श्री श्रीचन्दजी म. ८ श्री मगनमुनि जी म ९ श्री मानमुनि जी म १० श्री हीरामुनि जी ठाणा १०	स्थानक बुधा आश्रम, आगम मदिर में विराजे। महासती जी श्री सुन्दर कवर जी म ठाणा ३ स्थानकवासी सोसायटी मे चातुर्मासार्थ विराजे।
४७	२०२४	१९६७	जयपुर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ प रत्न श्री लक्ष्मीचदजी म. ३ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ४ श्री माणकमुनि जी म ५ श्री जयन्त मुनि जी ६ श्री श्रीचन्दजी म ७ श्री मगनमुनि जी ८ श्री मानमुनिजी ९ श्री हीरामुनिजी ठाणा ९	वैशाख शुक्ला ६ सवत् २०२४ को महासती श्री रतनकवर जी म सा. का जयपुर में श्रमणी जीवन में प्रवेश। महासती श्री बदनकवरजी म., श्री लाडकवर जी म., श्री मैनासुन्दरी जी म. आदि ठाणा का भी चातुर्मास जयपुर। सवत् २०२४ की मार्गशीर्ष कृष्णा २ को चरितनायक ने श्रमण सघ से पृथक् होने की घोषणा आदर्शनगर जयपुर में की।
४८	२०२५	१९६८	पाली	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. २ छोटे लक्ष्मीचन्दजी म ३ श्री माणकमुनि जी ४ श्री श्रीचदजी म. ५ श्री मगनमुनिजी म ६ श्री हीरामुनि जी ठाणा ६ **भोपालगढ़** — १ प रत्न श्री लक्ष्मीचदजी म. २ श्री जयन्तमुनि जी ३ श्री मानमुनि जी ठाणा३	स्थान - सुराणा मार्केट, पाली महासती श्री सुन्दरकवरजी म सा आदि सतीवृन्द का चातुर्मास भी पाली में ही था।

४९	२०२६	१९६९	नागौर	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी जी म ३ श्री माणकमुनि जी ४ श्री मगनमुनिजी ५ श्री हीरामुनिजी ठाणा ५ **जोधपुर** — प रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म २ प श्री लाभचदजी म ३ श्री चौथमलजी म ४ श्री मानमुनिजी ५ श्री जयन्तमुनि जी ६ श्री श्रीचदजी म ठाणा ६	महासती श्री सुशीला कवर जी म.सा. की ज्येष्ठ शुक्ला ६ सवत् २०२६ को जोधपुर में श्रमणी दीक्षा। जोधपुर के सरदारपुरा स्थित कोठारी भवन में श्री लाभचदजी म स्थिरवास विराजित थे। प लक्ष्मीचद जी म अस्वस्थता के कारण यहाँ विराजे। महासती श्री सुन्दरकवरजी म.सा का चातुर्मास भी जोधपुर मे । मुनि श्री लाभचदजी म का आसोज कृष्णा ६ को स्वर्गवास। मुनि श्री शीतलचन्दजी की दीक्षा माघ शुक्ला १३ को पावटा, जोधपुर मे।
५०	२०२७	१९७०	मेडता सिटी	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म, ३ मुनि श्री चौथमलजी ४ श्री मगनमुनि जी ५ श्री हीरामुनिजी ६ श्री शीतल मुनि जी ठाणा ६ **थांवला**— १ प श्री लक्ष्मीचन्दजी २ श्री जयन्त मुनि जी ३ श्री मानमुनिजी **रीयां (सेरसिंह जी की)** १ श्री माणकमुनि जी २ श्री श्रीचदजी म ठाणा-२ माघ शुक्ला प्रतिपदा से सप्तमी तक (२७जनवरी से २ फरवरी १९७१ तक, अजमेर मे शोभागुरु की दीक्षा शताब्दी एव आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती पर साधना-समारोह)	स्थानक महावीर भवन। श्री जयमल जैन छात्रावास में महासती श्री हरकवरजी स्थिरवास ठाणा ४ से, श्री किशनकवर जी म ने मासखमण की तपस्या की। वयोवृद्ध श्री जयन्तीलाल जी म की अस्वस्थता के कारण चातुर्मास के बाद भी थावला विराजे और आचार्य श्री मेड़ता से विहार कर थावला पधारे।
५१	२०२८	१९७१	जोधपुर	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा २ प श्री लक्ष्मीचन्दजी म , ३ प श्री चौथमलजी म ४ श्री श्रीचदजी म ५ श्री मानमुनि जी म सा ६ श्री माणकमुनि जी म सा. ७ श्री जयतमुनि जी ८ श्री हीरामुनि जी ९ श्री शीतल मुनि जी ठाणा९ **भोपालगढ**—१ मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचद जी २ श्री मगनमुनि जी, ३ श्री शुभमुनि जी ठाणा ३	श्री शुभमुनि जी म सा की दीक्षा जयपुर शहर मे स २०२८ वैशाख शुक्ला ५ को सम्पन्न। फाल्गुन कृष्णा द्वादशी सवत् २०२८ को श्री मगनमुनिजी का जोधपुर में स्वर्गवास (ठाणा २ श्री माणकमुनि जी म, श्री जयन्तमुनि जी म. सरदारपुरा में कोठारी भवन में) महासतियाँ जी म श्री बदनकवर जी, लाडकवर जी म. आदि ठाणा १२ का चातुर्मास भी जोधपुर घोडो का चौक में।
५२	२०२९	१९७२	कोसाणा	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा. २ श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म ३ श्री माणक मुनि जी ४ श्री जयन्तमुनि जी ५ श्री हीरामुनि जी ६ श्री शुभ मुनि जी ठाणा ६ **पाली** - १ श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म २ श्री मानमुनिजी ३ श्री शीतलमुनि जी **भोपालगढ** - १ श्री चौथमलजी म २ श्री श्रीचदजी म ठाणा २	प्रथम वैशाख शुक्ला पचमी को बड़े हरकवरजी म सा का मेड़ता सिटी मे स्वर्गारोहण । आषाढ कृष्णा ८ को महासती श्री स्वरूपकवरजी का जोधपुर में स्वर्गगमन। श्रावण शुक्ला २ को महासती श्री फूलकवरजी म.सा. का स्वर्गगमन। माघ शुक्ला त्रयोदशी को भखरी मे बसन्त मुनिजी एव महासती सूरज कवर जी की दीक्षा।

५३	२०३०	१९७३	जयपुर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री बड़े लक्ष्मीचदजी म. ३ श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म ४ श्री माणक मुनि जी, ५ मुनि श्री चौथमलजी, ६ श्री जयत मुनि जी, ७ मुनि श्री श्रीचदजी, ८ श्री मानमुनिजी, ९ श्री हीरामुनि जी, १० श्री शीतलमुनि जी, ११ श्री शुभमुनि जी, १२ श्री बसत मुनि जी ठाणा-१२	माघ शुक्ला पचमी को आगरा में चपकमुनि जी की दीक्षा। भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण वर्ष तप-त्याग के साथ मनाने की प्रेरणा।
५४	२०३१	१९७४	सवाई माधोपुर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा, २ श्री जयत मुनि जी, ३ श्री हीरा मुनि जी, ४ श्री शीतलमुनि जी, ५ श्री शुभमुनि जी, ६ श्री बसत मुनि जी म सा ठाणा ६ **विजयनगर** १ श्री बडे लक्ष्मीचदजी, २ मुनि श्री चौथमलजी, ३ श्री मानमुनिजी ठाणा-३ **आलनपुर (सवाईमाधोपुर)** १ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी, २ श्री चपकमुनि जी ठाणा-२ **जयपुर** १ श्री माणक मुनि जी, २ श्री श्रीचदजी म ठाणा-२	महासती श्री सुन्दर कवर जी म सा. 'प्रवर्तिनी' पद से अलकृत।
५५	२०३२	१९७५	ब्यावर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री चौथमलजी म, ३ श्री हीरामुनि जी ४ श्री शीतलमुनि जी, ५ श्री शुभमुनि जी ६ श्री चपकमुनिजी ७ श्री ज्ञान मुनि जी ८ श्री महेन्द्र मुनि जी ठाणा ८ **हरसोलाव** - १ श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म २ श्रीमानमुनिजी ३ श्री बसतमुनि जी ठाणा ३ **जोधपुर** - १ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म २ श्री माणकमुनि जी ३ श्री जयति मुनि जी ४ श्रीश्रीचदजी म ५ श्री भद्रिकमुनि जी ठाणा ५	वैशाख शुक्ला १३ को सवत् २०३२ श्री भद्रिक मुनि जी द्वारा सयम जीवन अगीकृत। वैशाख शुक्ला १४ को सवत् २०३२ को स्टेडियम मैदान, जोधपुर में श्री ज्ञान मुनि जी एव श्री महेन्द्र मुनि जी की प्रव्रज्या। फाल्गुन शुक्ला ८ को श्री माणक मुनि जी म सा का जोधपुर मे ३५ दिवसीय सथारे के साथ महाप्रयाण।
५६	२०३३	१९७६	बालोतरा	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म ३ श्री हीरामुनिजी ४ श्री शीतलमुनि जी ५ श्री चपक मुनि जी ६ श्री महेन्द्र मुनि जी ठाणा ६ **गोटन** - १ श्री बडे लक्ष्मीचदजी म २ श्री मानमुनिजी ३ श्री भद्रिक मुनि जी म सा ठाणा ३ **जोधपुर** - १ श्री चौथमलजी म २ श्री जयतमुनि जी ३ श्री शुभ मुनि जी ठाणा ३ **अजीत** - १ श्री ज्ञान मुनिजी २ श्री श्रीचदजी म ३ श्री बसतमुनि जी ठाणा ३	चैत्र शुक्ला ९ सवत् २०३३ को भोपालगढ मे महासती श्री सरलकवर जी, श्री सौभाग्यवती जी एव श्री मनोहरकवर जी म सा का श्रमणी जीवन मे प्रवेश। फाल्गुन शुक्ला १२ को महासती श्री राजमती जी म सा की जोधपुर मे दीक्षा।
५७	२०३४	१९७७	अजमेर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म ३ श्री हीरामुनिजी ४ श्री महेन्द्र मुनि जी म ठाणा ४ **जोधपुर** - १ श्री बडे लक्ष्मीचदजी म. २ श्रीजयतमुनि जी ३ श्री मानमुनिजी ४ श्री शुभमुनिजी ठाणा ४	माघ शुक्ला १० सवत् २०३४ को पालासनी में श्री गौतम मुनि जी म सा का सयम-जीवन में प्रवेश।

				दुंदाड़ा १ श्री चौथमलजी म. २ श्री बसतमुनि जी ३ श्री ज्ञानमुनिजी ठाणा ३ **आलनपुर** - १ श्री श्रीचन्दजी म. २ श्री भद्रिमुनिजी म. ठाणा २ **कालना** - १ श्री शीतलमुनिजी २ श्री चम्पकमुनिजी ठाणा २	
५८	२०३५	१९७८	इन्दौर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा २ श्री हीरा मुनि जी , ३ श्री शीतल मुनि जी, ४ श्री शुभ मुनि जी ५ श्री महेन्द्र मुनि जी ६ श्री गौतम मुनि जी ठाणा ६ **जोधपुर** - १ श्री बड़े लक्ष्मी चदजी म. २ श्री जयत मुनि जी ३ श्री मानमुनि जी ४ श्री बसत मुनि जी ठाणा ४ **महागढ** - १ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म., २ श्री चपक मुनि जी ३ श्री नन्दीषेण मुनि जी ठाणा ३ **नागौर** १ मुनि श्री चौथमलजी २ श्री ज्ञान मुनि जी ठाणा २ **गगापुर सिटी** १ श्री श्रीचदजी म. २ श्री भद्रिक मुनि जी म.सा ठाणा २	सवत् २०३५ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को श्री नदीषेण मुनि जी की दीक्षा मन्दसौर में सम्पन्न। प श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा एव युवाचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. का सयुक्त चातुर्मास, घोडो के चौक जोधपुर में। पौष शुक्ला दशमी सवत् २०३५ को जोधपुर में प रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचदजी म.सा का स्वर्गवास।
५९	२०३६	१९७९	जलगाव	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी ३ श्री हीरामुनिजी ४ श्री शीतलमुनि जी ५ श्री महेन्द्र मुनि जी ६ श्री गौतम मुनि जी ७ श्री नन्दीषेण मुनि जी ठाणा७ **जोधपुर** १ मुनि श्री चौथमलजी २ श्री जयतमुनि जी ३ श्री मानमुनि जी ४ श्री बसत मुनि जी ५ श्री ज्ञान मुनि जी ठाणा ५ **भरतपुर** १ श्री श्रीचदजी म. २ श्री शुभ मुनि जी ३ श्री चपकमुनि जी ४ श्री भद्रिकमुनि जी ठाणा ४	
६०	२०३७	१९८०	मद्रास	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा २ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म ३ श्री श्रीचदजी म. ४ श्री हीरामुनिजी ५ श्री शीतलमुनि जी ६ श्री शुभमुनि जी ७ श्री चपक मुनिजी ८ श्री महेन्द्र मुनि जी ९ श्री गौतम मुनि जी १० श्री नन्दीषेण मुनि जी ठाणा १० **जोधपुर** १ श्री जयतमुनि जी २ श्री मानमुनि जी ३ श्री बसत मुनिजी ४ श्री ज्ञान मुनि जी ठाणा४	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी सवत् २०३७ को जोधपुर मे श्री चौथमलजी म.सा. का स्वर्गवास। इसी माह की नवमी को महासती श्री ज्ञानकवर जी म.सा का जोधपुर मे स्वर्गगमन। माघ शुक्ला पचमी सवत् २०३७ को बैंगलोर में श्री प्रकाश मुनि जी म.सा, श्री धन्ना मुनि जी म.सा आदि की भागवती दीक्षा।

६१	२०३८	१९८१	रायचूर	१ आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री हीरामुनिजी, ३ श्री शीतल मुनिजी ४ श्री महेन्द्र मुनि जी ५ श्री गौतम मुनि जी ६ श्री नन्दीषेण मुनि जी ७ श्री धन्ना मुनिजी ठाणा ७ **बल्लारी** - १ श्री छोटे लक्ष्मीचदजी म २ श्री शुभमुनि जी ३ श्री चपकमुनिजी ४ श्री प्रकाशमुनि जी ठाणा ४ **जोधपुर** - १ श्री जयतमुनि जी २ श्री मानमुनिजी ३ श्री बसत मुनिजी ४ श्री ज्ञान मुनिजी ठाणा ४ **सिन्धनूर** - १ श्री श्रीचदजी म. २ श्री गणेश मुनि जी ३ श्री जम्बू मुनि जी ठाणा ३	वैशाख शुक्ला ६ सवत् २०३८ को रायचूर (कर्नाटक) में महासती श्री सरलेश प्रभाजी एव महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. की भागवती दीक्षा। २०३८ पौष शुक्ला १५ को बीजापुर में छोटे लक्ष्मीचदजी म.सा. का स्वर्गवास।
६२	२०३९	१९८२	जलगाव	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., २ श्री श्रीचदजी म ३ श्री हीरामुनिजी, ४ श्रीशीतल मुनि जी, ५ श्री चपकमुनि जी, ६ श्री महेन्द्र मुनि जी, ७ श्री गौतम मुनि जी, ८ श्री नन्दीषेण मुनि जी ९ श्री धन्नामुनि जी ठाणा ९ **जोधपुर** - १ श्री जयतमुनि जी, २ श्री मानमुनिजी ३ श्री शुभ मुनिजी ४ श्री बसत मुनि जी ५ श्री ज्ञान मुनि जी ६ श्री प्रकाश मुनि जी ठाणा ६	वैशाख शुक्ला ३ को महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एव महासती श्री विमलावतीजी म.सा. की जोधपुर में श्रमणी दीक्षा। मार्गशीर्ष शुक्ल ६ को जोधपुर मे जयती मुनि जी म.सा. का स्वर्गवास। पौष शुक्ला ३ को श्री श्रीचदजी म.सा. का इन्दौर मे स्वर्गवास। महासती श्री शातिप्रभा जी म.सा. की इन्दौर में पौष शुक्ला पचमी को भागवती दीक्षा।
६३	२०४०	१९८३	जयपर	१ पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री मान मुनि जी ३ श्री हीरामुनिजी ४ श्री शीतल मुनि जी ५ श्री शुभमुनि जी ६ श्री बसन्त मुनि जी, ७ श्री चम्पक मुनि जी ८ श्री ज्ञान मुनि जी ९ श्री महेन्द्र मुनि जी १० श्री गौतम मुनिजी ११ श्री नन्दीषेण मुनि जी १२ श्री प्रकाश मुनि जी, १३ श्री धन्ना मुनिजी ठाणा १३	मार्गशीर्ष शुक्ला १० सवत् २०४० को श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. की दीक्षा जयपुर मे सम्पन्न। मद्रास में मार्गशीर्ष शुक्ला १४ को महासती श्री ज्ञानलताजी, दर्शनलताजी, चारित्रलताजी की भागवती दीक्षा महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा. द्वारा सम्पन्न।
६४	२०४१	१९८४	जोधपुर	१ पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री हीरामुनिजी, ३ श्री शीतल मुनि जी, ४ श्री ज्ञान मुनिजी, ५ श्री गौतम मुनिजी ६ श्री नन्दीषेण मुनि जी, ७ श्री प्रमोद मुनिजी ८ श्री हरीश मुनिजी ठाणा ८ **अहमदाबाद** - १ श्री मानमुनिजी २ श्री महेन्द्र मुनि जी ३ श्री प्रकाश मुनिजी ४ श्री धन्ना मुनिजी ठाणा ४ **महुआ** - १ श्री शुभ मुनि जी २ श्री बसत मुनि जी ३ श्री चपक मुनि जी ठाणा ३	चैत्र शुक्ला ६ सवत् २०४१ को नागौर मे श्री हरीशमुनि जी एव महासती श्री निःशल्यवतीजी ने भागवती दीक्षा अगीकार की। मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी को महासती नलिनीप्रभा जी एव सुश्री प्रभाजी (सुशीला जी) म.सा. की दीक्षा। माघ शुक्ला दशमी ३१ जनवरी १९८५ को श्री दयामुनिजी, महासती विनयप्रभाजी, इन्दिराप्रभाजी, शशिप्रभा जी एव मुक्तिप्रभाजी म.सा. ने श्रमणी जीवन मे प्रवेश किया।
६५	२०४२	१९८५	भोपालगढ़	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., २ श्री हीरामुनिजी, ३ श्री बसत मुनि जी, ४ श्री महेन्द्र मुनिजी, ५ श्री धन्नामुनि जी, ६ श्री प्रमोद मुनिजी ठाणा ६	

				पाली - १ श्री मानमुनि जी , २ श्री ज्ञान मुनि जी, ३ श्री प्रकाश मुनिजी, ४ श्री हरीश मुनिजी, ५ श्री दया मुनिजी ठाणा ५ **सवाईमाधोपुर** - १२ श्री शीतलमुनि जी , १३ श्री नन्दीषेणमुनि जी ठाणा २ **नागौर**- १ श्री शुभमुनि जी, २ श्री चंपकमुनिजी, ३ श्री गौतममुनिजी ठाणा ३	
६६	२०४३	१९८६	पीपाड़ सिटी	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री हीरामुनिजी , ३ श्री शीतलमुनिजी, ४ श्री बसंत मुनिजी, ५ श्री चंपकमुनिजी , ६ श्री ज्ञान मुनिजी, ७ श्री महेन्द्र मुनिजी, ८ श्री गौतम मुनि जी, ९ श्री धन्नामुनिजी, १० श्री दयामुनि जी ठाणा १० **विजयनगर** १ श्री मानमुनिजी, २ श्री प्रकाश मुनिजी, ३ श्री प्रमोद मुनिजी म.सा. ठाणा ३ **कोटा** १ श्री शुभेन्द्र मुनिजी, २ श्री नन्दीषेणजी, श्री हरीशमुनिजी ठाणा ३	वैशाख शुक्ला षष्ठी को महासती श्री सुमनलताजी म.सा. एवं महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. की पाली में श्रमणी दीक्षा। माघशुक्ला १० को श्रीराममुनि जी एवं श्री कैलाशमुनि जी का श्रमण-जीवन में प्रवेश।
६७	२०४४	१९८७	अजमेर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री शीतलमुनिजी, ३ श्री शुभेन्द्र मुनिजी ४ श्री चंपक मुनिजी ५ श्री गौतम मुनिजी ६ श्री धन्ना मुनिजी ठाणा ६ **जयपुर** - १ श्री मानमुनिजी २ श्री प्रकाशमुनिजी ३ श्री प्रमोद मुनिजी ४ श्री राम मुनिजी ठाणा ४ **नागौर** - १ श्री हीरा मुनिजी , २ श्री बसंत मुनिजी ३ श्री महेन्द्रमुनि जी, ४ श्री हरीश मुनिजी , ५ श्री कैलाश मुनिजी ठाणा ५ **जोधपुर** - १ श्री ज्ञान मुनिजी २ श्री नन्दीषेण जी ३ श्री दया मुनिजी ठाणा३	माघ शुक्ला १० को श्री अर्हद्दास मुनिजी की महावीर नगर जयपुर में दीक्षा।
६८	२०४५	१९८८	सवाई माधोपुर	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा २ श्री हीरामुनिजी ३ श्री चंपकमुनिजी, ४ श्री महेन्द्रमुनिजी, ५ श्री धन्ना मुनिजी, ६ श्री प्रमोद मुनिजी, ७ श्री कैलाश मुनिजी ८ श्री अर्हद्दास मुनि जी ठाणा ८ **दिल्ली** - १ श्री मानमुनिजी २ श्री गौतममुनिजी ३ श्री प्रकाशमुनिजी ४ श्री हरीश मुनि जी ठाणा ४ **जयपुर** - १ श्री शीतलमुनिजी २ श्री बसन्तमुनिजी ३ श्री ज्ञानमुनिजी ४ श्री दयामुनिजी ठाणा ४ **हिण्डौन सिटी** - १ श्री शुभेन्द्र मुनि जी २ श्री नन्दीषेण मुनिजी ३ श्री राममुनिजी ठाणा ३	

६९	२०४६	१९८९	कोसाना	१ पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री हीरामुनिजी ३ श्रीबसंतमुनिजी ४ श्री महेन्द्र मुनिजी ५ श्री गौतम मुनिजी ६ श्री कैलाश मुनिजी ७ श्री अर्हद्दास जी ठाणा ७ **ब्यावर** १ श्री मानमुनिजी २ श्री शुभ मुनिजी, ३ श्री प्रकाश मुनि जी ४ श्री प्रमोद मुनिजी ५ श्री दया मुनिजी ठाणा ५ **बूंदी** - १ श्री शीतल मुनि जी २ श्री धन्नामुनिजी ठाणा २ **अलीगढ़ (टोंक)** - १. श्री चपक मुनि जी २ श्री नन्दीषेण जी ठाणा २ **किशनगढ़** - १ श्री ज्ञानमुनि जी २ श्री हरीश मुनिजी ३ श्री राम मुनि जी ठाणा ३	वैशाख शुक्ला ७ सवत् २०४६ को महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. की मदनगज में दीक्षा। माघ शुक्ला षष्ठी को महासती शशिकला जी एव विनीतप्रभाजी म.सा. की पीपाड़ में श्रमणी-दीक्षा।
७०	२०४७	१९९०	पाली	१ पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. २ श्री मानमुनिजी, ३ श्री हीरामुनिजी ४ श्री बसत मुनिजी ५ श्री महेन्द्र मुनि जी ६ श्री गौतम मुनि जी ७ श्री नदीषेण मुनि जी ८ श्री प्रकाश मुनि जी ९ श्री राममुनिजी १० श्री कैलाश मुनि जी ११ श्री अर्हद्दास मुनिजी ठाणा ११ **सवाईमाधोपुर** – १ श्री शुभमुनिजी , २ श्री प्रमोद मुनिजी, ३ श्री हरीशमुनिजी ठाणा ३ **शेरसिंहजी की रीया** १ श्री ज्ञानमुनिजी, २ श्री दया मुनिजी ठाणा २	पूज्य चरितनायक द्वारा निमाज (राज.) में प्रथम वैशाख कृष्णा १० सवत् २०४८ को तेले की तपस्या एव त्रयोदशी शुक्रवार को १२४५ बजे तिविहार सथारा स्वीकार। प्रथम वैशाख शुक्ला ८ रविवार को पुष्य नक्षत्र के योग मे रात्रि ८ २१ बजे सलेखना-सथारापूर्वक समाधिभावो में इसी दिन अपराह्न ४ बजे अगीकृत चौविहार सथारे के साथ महाप्रयाण।

नोट - विशेष विवरण हेतु जीवनी-खण्ड द्रष्टव्य है।

सविनय

सश्रद्धा

समर्पण

धन्यवाद-साधुवाद

अध्यात्मयोगी, चारित्र-चूडामणि, प्रतिपल स्मरणीय, परमाराध्य पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म सा. इस युग के प्रभावशाली युगमनीषी आचार्य रहे हैं। उनसे लाखों श्रद्धालु भक्त जीवन-निर्माण की दृष्टि से उपकृत हुए हैं। वे एक सम्प्रदाय के आचार्य होकर भी जन-जन के हृदय में विराजित महापुरुष थे। गुरुदेव के विचार, आचार एवं साधना सबके लिए प्रेरणासागर हैं, इसी विचार को केन्द्र में रखकर "**नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं**" ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है।

ग्रन्थ के लेखन एव सम्पादन का कार्य विद्वद्वर्य डॉ धर्मचन्द जी जैन एव सम्पादक मण्डल के सदस्यगण सर्व श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, डॉ. (श्रीमती) मजुला जी बम्ब एव डॉ (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी के सुयोग्य हाथों से हुआ है। सम्पादक-मण्डल के स्तुत्य सत्कार्य की मुक्तकण्ठ से प्रशसा करते हुए हमारी ओर से एव अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आचार्य भगवन्त की जीवनी व्यक्तिगत स्तर पर प्रकाशित करवाने के लिए सघ-सेवी श्रावक उत्सुक थे, पर आचार्य श्री हस्ती जीवन-चरित्र प्रकाशन समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना का यह सुझाव था कि गुरु हस्ती के उपकारो से हम सब उपकृत रहे हैं, अत जीवनी प्रकाशन में जो भी सहयोग करना चाहे उनका सहर्ष समान सहयोग स्वीकार किया जाना चाहिए। सघ स्तर पर इस प्रस्ताव को स्वीकार कर गुरुभ्राताओं से निवेदन किया गया कि वे अपने नाम प्रकाशन सहयोगी के रूप में दें। जोधपुर, जयपुर, मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, जलगाव आदि विभिन्न क्षेत्रो के गुरुभ्राताओं के नाम सहर्ष प्राप्त हुए है। हम सहयोग प्रदान करने वाले सभी गुरुभ्राताओं का हार्दिक साधुवाद-धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

परमपूज्य गुरुदेव के अनन्य श्रद्धानिष्ठ, सघनिष्ठ सम्पादक-मण्डल द्वारा ग्रथित-सम्पादित "**नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं**" को आपके कर-कमलो में सौंपते हुए हमें प्रमोद का अनुभव हो रहा है। स्वाध्यायमनीषी महापुरुष की इस जीवनी का स्वाध्याय श्रद्धालुओं व पाठकों के जीवन में परिवर्तन का पाथेय बने, यही मगल भावना है।

मोफतराज मुणोत	कैलाशचन्द हीरावत	सुमेरसिंह बोथरा	नवरतन डागा	पारसचन्द हीरावत
सयोजक-सरक्षक मण्डल	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामत्री	कोषाध्यक्ष

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक

सविनय सश्रद्धा समर्पण

- अमृतलाल भवरलाल श्रीमती कातादेवी चन्दूलाल कटारिया–पीपाड वाले–नागपुर
- अमरमल मनोजकुमार सुराना–बीकानेर
- अमरमल, शातिमल, नरेन्द्रमल राजेन्द्रमल, सुरेन्द्रमल मेहता–जोधपुर
- अमरचन्द बादलकंवर हुक्मीचन्द प्रकाश मेहता–ब्यावर
- अमरचन्द कमलकिशोर आनन्द भरत राजेन्द्र बोहरा–पीपाड़शहर
- अमरचन्द–अनोपकवर अनिल–अलका आयुष्य समकित दुधेडिया–अजमेर
- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल–शाखा मुम्बई
- अनिल–लता अकुश मेहता–मुम्बई
- अनिलकुमार बाबेल–मुम्बई
- अरविन्दकुमार, विजयकुमार पकजकुमार, उत्सव, उमग, रितिक बाफना–जलगाव
- अशोक, अभिषेक मीता कर्नावट–मुम्बई
- अशोक, मुकेशकुमार गुन्देचा–मुम्बई
- अशोककुमार, शैलभकुमार हीरावत–जयपुर
- अशोककुमार, आशीषकुमार बोहरा–जयपुर
- अजय–श्राविका सजलि, सखी मुणोत–मुम्बई
- अजीतकुमार मूथा–मुम्बई
- अजीतकुमार अमितकुमार बिरानी–जयपुर
- अनराज–कुसुमलता सुमतिचन्द–पदमा शीतल सिद्धार्थ कोचर मेहता–जोधपुर
- अनुज–साक्षी मुणोत–मुम्बई
- आयचुकीदेवी गौतमचन्द नवरत्नमल सुमेरचन्द प्रसन्नचन्द बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- आरती–लाभचन्द सौरभ लोढा–जयपुर
- आनन्दकवर–शातिदेवी, उम्मेदमल नरेन्द्रकुमार आदेश लुणावत जैन–जोधपुर–मुम्बई
- बकटलाल, प्रशान्तकुमार विकास काकरिया–मुम्बई
- बशीलाल प्रमोदकुमार भागचन्द शातिचन्द गौतमचन्द कोचेटा–किशनगढ
- बशीलाल, पन्नालाल राजेन्द्रकुमार, विजयकुमार निलेशकुमार बोथरा–जलगाव
- बाडीदेवी चदनमल सिरेमल मागीलाल रमेश राजेश महेन्द्र चौपडा (लाधाणी) पचपदरा–पाली
- बादलचन्द नीलमचन्द गौतमचन्द बाघमार –कोसाना–चैन्नई
- बादलचन्द–चम्पादेवी कातिलाल–इन्दुमति प्रवीण विनय, कमलेश बाफना–जोधपुर
- बादलचन्द प्रमोद, विरेन्द्र–सुशीला मनीष कर्नावट–जयपुर
- बस्तीमल–भवरीदेवी सुमेरमल ज्ञानेन्द्र प्यारेलाल, आनन्द धर्मेन्द्र बाफना–भोपालगढ–जोधपुर
- बदनकवर कैलाशमल–सुशीला, नकुल नम्रता सिघवी–दिल्ली
- बच्छराज नेमीचन्द–लीलादेवी रावलचन्द–शकुतलादेवी श्रीमाल–बाडमेर–जोधपुर
- बुधमल पदमचन्द चैनराज मृगेशकुमार कोठारी खिवसरा–कणक्काकमचतरम–अहमदाबाद–चैन्नई

- बुद्धिप्रकाश–इन्द्रा नरेन्द्र–मजू महेन्द्र–सगीता जैन–कोटा
- बजरगलाल महावीरप्रसाद सुबाहुकुमार हेमन्तकुमार जैन–सवाईमाधोपुर
- बिशनचन्द दलपतराज किशोरकुमार सुभाषचन्द मिलापचन्द सदीप छाजेड़ मूथा–कोसाना– हैदराबाद
- बिदामकवर सज्जनराज हरीश साखला–बैंगलौर
- भवरीबाई सुनीलकुमार रमेशकुमार महेशकुमार ललवाणी–चिन्तादरी पेट–चैन्नई
- भवरीबाई ललिताबाई महावीरचन्द राजेश राकेश ललवाणी –चिन्तादरी पेट–चैन्नई
- भवरीदेवी–त्रिलोकचन्द, मोहनलाल अभयकुमार सजय कोठारी–जयपुर
- भवरलाल महेन्द्रकुमार राजेश मुकेश कर्नावट–कोलकाता
- भवरलाल प्रकाशचन्द सुरेशचन्द कैलाशचन्द सागरमल शातिलाल दुधेड़िया–मेडतासिटी–पाडी–चैन्नई
- भवरलाल प्रेमचन्द शातिलाल श्रीकुमार कुशल सदीप अकित लोढ़ा–कानपुर
- भवरलाल सम्पतराज अशोक दलपत बसन्त राजेश डॉ सुनील विमल चौधरी–पीपाड़–दिल्ली
- भवरलाल–पानकवर जवरीलाल मिठालाल महावीरचन्द राजेन्द्र–ललिता, रजत तनु कुम्भट–जोधपुर
- भवरलाल कुन्दनमल करणमल नरेश मुणोत–मुम्बई
- भवरलाल हीरालाल चोरडिया जैन–जलगाव
- भवरलाल पदमचन्द सुरेशचन्द राकेश राहुल जिनेन्द्र बाफना–जलगाव
- भवरलाल नवरत्नमल राकेशकुमार विक्रमकुमार गौरव मोहित नमन बाघमार–चैन्नई
- भीकमचन्द हस्तीमल विमल अशोक विनोद, राहुल सुराणा–नागौर–बैंगलोर–कोलकाता
- भभूतराज सूरजराज, दीपक मेहता–जयपुर
- भरतप्रकाश दीपकप्रकाश महावीर ऋषभ अनुज ओस्तवाल–मेडता सिटी
- भोपालचन्द राजेन्द्र महेन्द्र पगारिया–बैंगलोर
- भोपालचन्द प्रेमचन्द चचलचद धनपतचद राजेन्द्रचद महेन्द्रचद सेठिया –जोधपुर
- भागचन्द हेमेश उन्नत उपनेश सेठ –जयपुर
- भागचन्द राजेश दिनेश नवलखा –जयपुर
- प्रो चान्दमल–हुक्मकवर आनन्द–सुनीता सूर्यप्रकाश–माया प्रवीण–सगीता कर्नावट–उदयपुर
- छतरचन्द–बिलमकवर, आनन्द–शशि प्रकाश–प्रभा अरूण–सुनीता अमित कुणाल प्रियका हर्ष मेहता
- चचलमल–रतन अशोक–काजल अनन्त प्रद्युम चोरडिया–जोधपुर
- चम्पालाल चेतनप्रकाश शातिलाल डूगरवाल–बैंगलोर
- चम्पालाल चन्द्रकान्त धनेश मोहित श्रेणिक गाधी–इचलकरजी
- चादमल–झमकूबाई कोठारी–अलसूर बैंगलोर
- चुन्नीलाल सुभाष विमल, दिनेश ललवानी–जयपुर
- चैनरूपचन्द दीपचन्द, कमलकिशोर, विजयराज बाफना–गोटन–जलगाव
- चैनीबाई पुखराज प्रकाशचन्द राजेन्द्र कोठारी–मुम्बई

- चैनराज इन्जिनियर प्रवीणकुमार डॉ गणतन्त्र योग नील खुश मेहता–पाली
- चन्दनमल सोहनलाल बुधमल सम्पतराज राजेन्द्रकुमार बाघमार–मैसूर
- चन्दनमल–शातिदेवी, दिनेश–निर्मला मनीष–निर्मला लोढ़ा जोधपुर
- चन्दनमल अमरचन्द हरकचन्द सोहनराज सुरेन्द्र नरेन्द्र, वेंकट श्रेष्ठ सदावत मेहता–जोधपुर
- चन्द्रसिंह, सरदारसिंह, ताराचन्द, रीतेश, आशीष बोथरा–जयपुर
- चन्द्रा–अमरचन्द मुणोत–मुम्बई
- चन्द्रलेखा–सुभाष, जितेन्द्र कोठारी–मुम्बई
- चान्दमल, चैतन्यमल, नेमीचन्द ढड्ढा–जयपुर
- धर्मचन्द–शकुतला हीरावत सजय–मुम्बई
- धर्मचन्द–चचल अनुज शरद बोथरा–मुम्बई
- धर्मचन्द सुरेशकुमार गौरव गौतम जैन–जयपुर
- धींगड़मल–तारादेवी भवरलाल–शशिकला भैरूलाल नरेश मोहित बाठिया–जोधपुर
- धीरेन्द्रराज, सजय मेहता–जयपुर
- धापीबाई–पारसमल, अमित रोहित मोहित अकित, अक्षय रक्षित चिराग अरिहन्त कोठारी–चैन्नई
- धनपत–स्नेहलता डोसी जगदीश–मीना सिघवी मोहनकौर नवनीत जैन–जोधपुर
- धनराज–मनोहरकुवर चौथमल–किशनकुवर प्रसन्नमल, रगरूपमल दीपक अलकेश अभिषेक फोफलिया–जोधपुर
- दिनेशकुमार सुरेन्द्र विक्रमकुमार सचिन हुण्डीवाल–भोपालगढ–चेन्नई
- दिलीपकुमार–मजू जैन –दिल्ली वाले –मुम्बई
- दीपचन्द–धनीदेवी पृथ्वीराज अमृतलाल, पारसमल गुलेच्छा–जोधपुर
- दीपचन्द–किरणकवर पन्नालाल बादलचन्द राजेन्द्र कुम्भट–जोधपुर
- दलीचन्द सुरेशकुमार पुनमल्ली कवाड–चैन्नई
- दलजीत–सुनीता, प्रज्ञा यश बिरानी–मुम्बई
- फूलचन्द सज्जनराज रमेशचन्द उम्मेदराज राजकुमार विमलचन्द बाघमार–कोसाना–पीपाड–चैन्नई
- घमण्डीचन्द सायरचन्द पदमचन्द मदनचन्द गौतमचन्द शातिचन्द भागचन्द काकरिया–जोधपुर
- घेवरचन्द–रतनबाई धीरज अभय कमल विमल अक्षय प्रेम सजय नाहर–भोपाल
- गुप्त–मुम्बई
- ज्ञानचन्द श्रीमती चन्द्रकान्ता राहुल बोथरा–मुम्बई
- ज्ञानचन्द–सन्तोष बम्ब–मुम्बई
- ज्ञानचन्द पकजकुमार बालिया–जयपुर
- वैद्य गोपाललाल–कमलाबाई धर्मेन्द्र जितेन्द्र विनोद सजय जैन–अलीगढ रामपुरा (टोक)
- गणेशमल चचलराज विनायकिया मेहता–अहमदाबाद
- गुलराज–रतनकवर गोपालराज–शाति अबानी–जोधपुर
- गुलाबचन्द मिलापचन्द कैलाशचद प्रकाशचद विनयचद बोथरा –जयपुर

- गुलाबचन्द भंवरलाल, कवरलाल, जवाहरलाल, कमलकिशोर निलेश स्नेहील सघवी–जलगाव
- हीराचन्द, अरूणकुमार, अजीतकुमार जरगड़–जयपुर
- हरकचन्द नितीनकुमार ओस्तवाल–पूना
- हरकचन्द–सुआबाई, सुगनचन्द–कमलादेवी भवरलाल प्रकाशचन्द सुभाषचन्द दिलीप भण्डारी–जोधपुर
- हरीचन्द अनिल, सरिता, अकित हीरावत–मुम्बई
- होशियारचन्द–इन्द्रकवर, लखपतचन्द–मधु, नवनीत अमित अकित भण्डारी–जोधपुर
- हस्तीमल महेन्द्र ललित यशवन्त ऋषभ मनीष गोलेच्छा–गिरी–ब्यावर
- हुक्मीचन्द विनोदकुमार सतोषचन्द विपुल डोसी–बैंगलोर
- हेमकुमार हेमन्त, सरमान्त सचेती–मुम्बई
- हगामीलाल अरूण धारीवाल–मुम्बई
- इन्दरमल मनीष कुमार सुराना–बीकानेर
- इन्दरचन्द (महेन्द्रचन्द) शातिलाल रेखचन्द कमलचन्द चौधरी –पीपाडसिटी–चिन्तादरी पेट, चैन्नई
- इन्दरचन्द राजकुमार दिनेशकुमार सुराणा–चैन्नई
- इन्द्रकवर इन्द्रमल लखपत विजय विनय भण्डारी–जयपुर
- इन्द्रमल ताराचन्द प्रकाशचन्द सुरेशचन्द कमलेश मुणोत–मुम्बई
- इन्द्रा–सुमतिचन्द, हेमन्त कोठारी–जयपुर
- इन्द्राबाई हेमराज विनोदकुमार सोंलकी–कोयम्बटूर
- जिनेन्द्रकुमार–विनयकुमारी अजेन्द्रकुमार–आशा निधि ऋद्धि जैन–दिल्ली
- जयन्ती प्रसाद सजय राजीव जैन शाहदरा–दिल्ली
- जवरीमल अशोककुमार महावीरचन्द श्रीमती सूरजादेवी सूर्यकला पुष्पादेवी बाघमार–चैन्नई
- जवरीलाल पारसमल सम्पतलाल बाबूलाल तपस्वीलाल मदनलाल बाघमार–जबलपुर
- जवरीलाल प्रकाशचन्द दिलीपकुमार ज्ञानचन्द हेमराज लूणिया–पल्लीपट
- जवरीलाल–पारसकवर मीठालाल महावीर, राजेन्द्र राकेश ऋतिक कुम्भट–जोधपुर
- जवरीलाल–चन्द्रादेवी, प्रसन्नचन्द ज्ञानचन्द सुभाषचन्द–लाडकवर विकास गुन्देचा–जोधपुर
- जवतराज, धनराज, सज्जनराज, रगरूपमल, ज्ञानचद नरपतचद जसवतराज डागा–जोधपुर
- जबरचन्द बस्तीमल, मागीलाल चोरडिया –लवेराकला–चैन्नई
- जीतमल नदलाल केसरीमल रिखबचन्द नीमेश रूणवाल–बीजापुर
- जोधराज, बसन्तकुमार विशालकुमार सुराना–बेगलार
- जसराज–रतनकवर आनन्द चन्द्रशेखर अभिनव प्राजल चौपडा–जोधपुर–जयपुर
- जसवतराज–सरदारकवर दलपतराज, पृथ्वीराज, न्यायमूर्ति प्रकाश राजेश अशोक, उमेश टाटिया–जोधपुर
- जवाहरलाल हसराज भरतकुमार अनिलकुमार अखिल अक्षय निखिल यश जय बोहरा–इचलकरजी
- जवाहरलाल लालचन्द प्रकाश सुभाष अनूप करण मूथा –गुलेजगढ़ वाले–अहमदनगर
- जवाहरलाल, प्रेमचन्द सुरेशकुमार राजेन्द्रकुमार बाघमार –कोसाना वाले–कानपुर–चैन्नई

- जवाहरलाल, अनूपकुमार–प्रकाशकवर, सजयकुमार–सुनीला, शिवानी बाफना –इन्दौर
- जुगराज पारसमल शातिलाल, सजय, अरविन्द दीपक राहुल कवाड़–पाली
- खीमराज, केसरीमल, रूपकुमार मोहनराज मदनराज धर्मेशकुमार चौपड़ा –पाली–बालोतरा–जोधपुर
- खेमचन्द नरपतचद अनिल चन्द्रशेखर कमला सिघवी–जयपुर
- कचन डागा–जयपुर
- कचनकुमारी, ममता, अनिता भण्डारी–निमाज–बेगलोर
- कचनदेवी–कन्हैयालाल सुरेश, मधु मेहता–मुम्बई
- कमलाबाई मानमल हेमलता सुराना–चैन्नई
- कमलाबाई सागरमल सुरेशचन्द गौतमचन्द बाफना–बैंगलोर
- कमलादेवी दुलीचन्द ललितकुमार अरूणकुमार सुनीलकुमार बाघमार –कोसाना–चैन्नई
- कमलादेवी, चेतन, वीरेन्द्र, पीयूष ढड्ढा–जयपुर
- करोडीमल, उमरावमल श्रीपाल, चिराग सुराना–नागौर–चैन्नई
- कातिलाल–विमला, कल्पेश सुरेन्द्र हितैष चौधरी (चोरडिया)–धुलिया
- कान्तिलाल शान्तिलाल राजेन्द्रकुमार लूकड–पचपदरा–पाली
- कौशल्या सम्पतराज अरविन्द अभिषेक आरती हृदय ऋषभ सिघवी–बैंगलोर
- कान्ता, अशोक कुमार भण्डारी–चैन्नई
- कस्तूरचन्द सुशीलकुमार सुनिलकुमार अभिषेक ऋषभ बाफना–जलगाव
- कुसुम–रतनचन्द मनोज मनीष कोठारी–जयपुर
- कुसुम शरदकुमार स्पनेश गोलेच्छा–जयपुर
- कुन्दनमल–राजाबाई पारसमल–अमृतकवर देवेन्द्र–प्रीतल गिड़िया–जोधपुर
- केवलमल प्रतापसिह प्रेमसिह प्रवीणकुमार, विनोदकुमार लोढा–जयपुर
- केवलचन्द विजयराज सुरेश अमित गुलेच्छा–जोधपुर
- कैलाशचन्द पुखराज भसाली–जोधपुर–बैंगलोर
- कैलाशचन्द अविनाश, अतुल कोठारी–जयपुर
- कैलाशचन्दजी भण्डारी–मुम्बई
- कनकमल दशरथमल दौलतमल धनपतमल गौतमचन्द रगरूपमल चोरडिया–चैन्नई
- कनकराज, प्रवीण, महेन्द्र अशोक शेखर गजेन्द्र रविन्द्र कुम्भट–जोधपुर
- कन्हैयालाल छगनमल फतेहचन्द सुभाषचन्द दलपतराज बसन्त मूथा–पीपाडशहर
- कल्याणमल अरूणकुमार अशोक शरदकुमार बाफना–इन्दौर
- किशोरमल चचलमल चन्दनमल चम्पकमल नरेन्द्रकुमार सुराना–बीकानेर
- किशनलाल सुरेशचन्द प्रीयेश भण्डारी–बैंगलोर
- किशनलाल ओस्तवाल एण्ड सन्स–भोपालगढ़–चैन्नई
- किस्तूरचन्द सुनीलकुमार साहिल सुकलेचा–जयपुर

- प्रो कल्याणमल सुरेशमल लोढ़ा–कोलकाता–मुम्बई
- लीलाबाई–दलीचन्द जैन –जलगाव
- लाभचन्द सुभाष आरती, सौरभ लोढ़ा–जयपुर
- लाडकवर–अनराज काकरिया –भोपालगढ़–चैन्नई
- लाडकवर देवेन्द्रराज मेहता–जयपुर
- लालराज गजराज जितेन्द्र चौधरी–मुम्बई
- लालचन्द अनिलकुमार जरगड–जयपुर
- लूणकरण–सुशीला सज्जन–विमला विजय–अनु विकास लोढ़ा–कानपुर
- लूणकरण, रावलचन्द–चम्पादेवी भवरलाल स्वरूप सतीश चेतन चौपड़ा–जोधपुर
- बी मदनलाल–मैनाबाई सुमेरचन्द दिनेशचन्द महावीरचन्द बैद –चैन्नई
- मजूदेवी अनोपचन्द पकजकुमार सदीपकुमार बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- मगराज नगराज–लीला,हुकमराज कमल–स्नेह,प्रदीप–चन्द्रा सजय–सुनीता अनुपम–दीपाली खिवसरा मेहता–जोधपुर
- मगलचन्द धर्मीचन्द राजेन्द्रकुमार भसाली–गिरी–चैन्नई
- महेन्द्रकुमार ज्ञानचन्द विजयकुमार रेड–बैंगलोर
- महेन्द्रराज हिमानी बढेर–मुम्बई
- मीठालाल कमला जितेन्द्र गौतम सिद्धार्थ मोहित मधुर–बालोतरा
- मीना–सुधीर मेहा मनन गोलेच्छा–जयपुर
- माणकराज हरकराज–लीलादेवी नरेन्द्र महेन्द्र, राजेन्द्र सुराणा–जोधपुर
- माणकराज अर्जुनराज सुरेश कुलदीप जयदीप सन्नी मेहता–जोधपुर
- माणकचन्द जवाहरलाल रतनलाल महावीरचन्द नेमीचन्द गौतमचन्द कर्नावट–चैन्नई
- माणकचन्द–सूरजकवर मनमोहनराज–चचल दिलखुशराज–वसन्ती मेहता पीपाड़ वाले–मुम्बई
- माणकचन्द, सदीपकुमार सुदीपकुमार कर्नावट–जयपुर
- मागीलाल गौतम राजेन्द्र जितेन्द्र, नितेश अभिषेक सुमति विनोद निखिल नमन कटारिया–पीपाड़शहर
- मागीलाल महेन्द्रकुमार कुणाल गाधी–पाली
- मोहनलाल कैलाशचन्द श्रीपाल शाति महावीर कमल विनोद देशलहरा –अरटिया खुर्द–सिकन्द्राबाद
- मोहनलाल पारसमल सुशीलकुमार आनन्दकुमार बोहरा–तिरुवन्नामलाई
- मोहनलाल सुमेरचन्द मूलचन्द सुनीलकुमार सिद्धार्थ हर्षित चोरडिया –इन्दौर
- मोहनलाल–कविताबाई, जवाहरलाल मोतीलाल, बिजयराज सोहनलाल–अलसूर बैंगलोर
- मोहनलाल–पतासीबाई हस्तीमल, महेन्द्र बुधमल जिनेन्द्र पवन शीतल बोहरा –रतकुडिया–पीपाड़
- मोहनलाल बशीलाल भवरलाल धनराज अनन्तिलाल हनुमानचन्द लुणावत –जोधपुर
- मोहनलाल प्रसन्नचन्द, प्रकाशचन्द नवलखा–जयपुर
- मोफतराज–शरदचन्द्रिका पराग–मोनिका, साची, शुभिका मुणोत–मुम्बई
- मोतीचन्द, मनोज, सुभाष नवलखा–मुम्बई

- मोतीलाल प्रकाशचन्द–उगमकवर कमला गौरव कर्नावट–जोधपुर
- मोतीलाल–मोहिनीदेवी धनपतराज–चन्दा बुधराज अकित अकुर बागरेचा मेहता–पीपाड़शहर
- मदनलाल मोहनलाल हेमलता मेहुल साखला–मुम्बई
- मदनलाल पारसमल शातिलाल महावीर नितीन नीरज बोथरा–बीजापुर
- मदनलाल–पुत्तलदेवी पदमचन्द–शातिदेवी सुरेशचन्द–इन्द्रादेवी बाफना–भोपालगढ
- मदनलाल–शशिकला गौरव सुनीता ललवानी–मुम्बई
- मनमोहनचन्द–कचनदेवी प्रमोद–उषा रौनक प्रतिभा बाफना –कानपुर
- मनसुखलाल अशोककुमार राजेशकुमार गुगलिया –लोनावना
- मूलराज–केसरकवर मजू–स्व नरेन्द्रराज शानु–सदीप धारीवाल–जोधपुर
- मूलचन्द नन्दलाल दिलीप राजेश प्रदीप भण्डारी–ब्यावर
- मूलचन्द प्रदीप जयदीप, हिमाशु, नमन जैन–हिण्डौनसिटी
- मिश्रीमल–सीतादेवी नरपतराज–सतोष महीपत गजेन्द्र चौपडा–जोधपुर
- मिलापचन्द पदमचन्द अजीत अशोक शीतल नवनीत अकित अमित सुमित समकित खाबिया–इचलकरजी
- पी मागीलाल हरीशकुमार कवाड–पुनमल्ली–चैन्नई
- श्रीमती माणककवर हिम्मतसिह गलुण्डिया मेमोरियल ट्रस्ट–जयपुर
- डॉ मजुला आलोक मेहुल बम्ब–जयपुर
- निर्मल मनोज, अनुज जैन–मुम्बई
- निर्मला प्रकाशमल पुत्र स्व श्री जीतमलजी सुराणा–बड़ौदा
- नितिका–मनीषकुमार अश्वर्या आर्या ललवानी–जलगाव
- निर्भयमल, विजयमल उर्मिला जैन–मुम्बई
- निरजनलाल मुकेश राजेश मनोज पकज जैन–हिण्डौनसिटी
- नृसिहमल सोहनमल राजेश अजय सजय मेहता–जोधपुर
- नृसिहमल अभयमल–कमला रमेश सुनील सदीप दीपक मेहता–जोधपुर
- नदलाल–मधु, शगुन शशाक हीरावत–मुम्बई
- नीरज–पूर्णिमा सलौनी भण्डारी–मुम्बई
- नरेशकुमारजी लोढ़ा–मुम्बई
- नरेन्द्र–मजू मेहता–जयपुर
- नरेन्द्र–सुजाता, श्रेयास हीरावत–मुम्बई
- नवरत्नमल लक्ष्मीचन्द भण्डारी–ब्यावर
- नवरतनमल–अनिला कोठारी–मुम्बई
- नेमीचन्द धनरूपचन्द अमितकुमार आनन्दकुमार मेहता–बैंगलोर
- नेमीचन्द–शशिबेन जितेन्द्र, जयचन्द चन्द्रिका राका–मुम्बई
- नेमीचन्द नीलमचन्द चोरडिया–मुम्बई–जलगाव

- नेमीचन्द, ममता, पायल, निधि, निकिता बोथरा–मुम्बई
- ओमप्रकाश महावीर नवरतन ओस्तवाल–गोटन
- ओमप्रकाश दिप्तेशचन्द कचनदेवी प्रिया सौरभ मेहता–चैन्नई
- प्रभुदयाल कैलाशचन्द नरेन्द्रकुमार विमल निर्मल दिनेश जैन–हिण्डौनसिटी
- प्रेमचन्द–निर्मला अजय आलोक हीरावत–मुम्बई
- पिस्ताबाई धर्मीचन्द हसराज अशोककुमार बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- पृथ्वीराज प्रेमचन्द कवाड़–पुनमल्ली–चैन्नई
- पी एम आलोक शेखर, कमल चोरडिया–चैन्नई
- पारस शिखर लीला विनोद रश्मि कीर्तिदेव सुराना–चैन्नई
- पारसबाई किरणकुमारी विजयालक्ष्मी हीराकवर लतादेवी हुण्डीवाल–भोपालगढ–चैन्नई
- पारसकवर–मजू, दीपक, दर्शन, प्रसन्नचन्द भण्डारी–कोरम्मगला बेंगलोर
- पारसकवर–रतनराज, गौतमचद, प्रकाशचद अशोक अनेष दिलीप भण्डारी–पीपाड
- पारसमल–मनभरदेवी विमलचन्द जीतमल कुशलचन्द ढाबरिया–अजमेर
- पारसमल–सुशीला विमलकुमार–सीमा राकेशकुमार–रेखा चोरड़िया–उज्जैन
- पारसमल–जसकवर, सिरेहमल सायरमल सुरेश रमेश दिनेश रेड–जोधपुर
- पारसमल घीसूलाल राजेश बम्ब–मुम्बई
- पारसमल शातिलाल, महावीर अशोक, सिद्धार्थ, आकाश अभिषेक आशीष, यश काकरिया भोपालगढ–जलगाव
- पारसमल सुरेशकुमार नरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार विमलकुमार खिवसरा कोठारी –रणसीगाव–चैन्नई
- पारसचन्द–शकुन्तला सुमित–मुम्बई
- पार्श्वकुमार, दिलीपकुमार हर्ष मेहता –मुम्बई
- पोपटलाल ललितकुमार कुणाल ओस्तवाल –पूना
- पदमराज अमित आशीष बाघरेचा मेहता –बैंगलोर
- पदमदेवी–नथमल, अभिताभ हीरावत –जयपुर
- पदमचन्द–मजू कोठारी –जयपुर
- पदमचन्द–रतनीदेवी प्रदीप, रजनी एकता श्वेता मेहता (पीपाड)–जोधपुर
- पदमचन्द, प्रदीपकुमार, अक्षय मेहता–मुम्बई
- पदमचन्द सुभाषचन्द मनोजकुमार अभिषेक जय कटारिया–पीपाड़
- पुष्पाकवर प्रकाशमल ज्योतिकवर सुरेशमल पवित्राकवर, कैलाशमल दुगड–चैन्नई
- पुष्पादेवी–चन्द्रराज सिघवी–जयपुर
- पुखराज कवाड–चैन्नई
- पुखराज राजेन्द्र अनिल सुराणा–कवलियास
- पुखराज–प्रेमकुमारी जोरावरमल–कमला, पूरणराज–लीला प्रवीण–रेखा, प्रशान्त–श्वेता प्राजल अबानी–जोधपुर
- पुखराज–सायरकवर, प्यारेलाल बाबूलाल प्रकाशचन्द बुधमल कोठारी खिंवसरा–रणसीगाव–चैन्नई

- पुखराज–सुगनीदेवी, मोफतराज–शरदचन्द्रिका मुणोत–मुम्बई
- पुखराज, प्रकाशचन्द, रमेशचन्द, पदमचन्द विशाल, अक्षित बाघमार–चैन्नई
- पुखराज प्रशान्त पारख –मुम्बई–जलगाव
- पूनमचन्द, कुसम श्वाति, अनुराग हीरावत–मुम्बई
- पूनमचन्द, हरीशचन्द बढेर–जयपुर
- प्रकाशबाई यशवन्तराज ललितकुमार भरतकुमार दिनेशकुमार पवनकुमार साखला–बैंगलोर
- प्रकाशचन्द राकेशकुमार विमल सुनील कमल गाधी–थावला–सूरत
- प्रकाशचन्द शातिलाल महावीरचन्द लोढ़ा–नाडसर–बैंगलोर
- प्रकाशचन्द–सुशीला लोढा –कोठी वाले–जयपुर
- प्रकाशचन्द, श्रेयासकुमार ढड्ढा–जयपुर
- प्रमोदकुमार, विवेककुमार मोहनोत–जयपुर
- प्रमिला– उत्तमचन्द अनुराग भण्डारी–बैंगलोर
- प्रमिलादेवी–गणपतराज, हेमन्तकुमार उपेन्द्रकुमार बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- प्रसन्नचन्द–प्रसन्नदेवी गाग –मुम्बई
- प्रदीपकुमार, हेमन्तकुमार कोठारी–जयपुर
- प्रतीक ललितकुमार कानमल बालिया–बैंगलोर
- प्रेमकवर मिलापचन्द अनिल सुनील सुशील मोहित बुरड –ब्यावर
- प्रेमाबाई–भीकमचन्द जैन–जलगाव
- प्रेमचन्द धर्मेन्द्रकुमार प्रेरित चपलोद जैन–गीजगढ विहार, जयपुर
- प्रेमचन्द प्रकाशचन्द कैलाशचन्द विमलचन्द डागा–जयपुर
- प्रेमचन्द अशोक अनिल अरूण सजय गोखरू–जयपुर
- प्रेमलता–सिरहमल विनयचद, हीराचन्द विनीत नवलखा–जयपुर
- रूचि–अमरीश ललवानी–जलगाव
- रूपचन्द सोहनलाल सम्पतराज सज्जनराज धारीवाल–पाली
- रिखबराज, अजीतकुमार बच्छावत–जयपुर
- रिखबचन्द–मीनू लोढा–जयपुर
- रिखबचन्द–श्रीमती केवलकवर वीरेन्द्र मानेन्द्र जिनेन्द ओस्तवाल–जोधपुर
- रिखबचन्द–रतनकवर, हुक्मीचन्द नेमीचन्द पुखराज गणपतराज पारख–जोधपुर
- रिखबचन्द, राजीव–अजलि आदिती अवनी मेहता–जोधपुर
- रिखबराज छाजेड–मुम्बई
- रितेश, अभिलाषा हीरावत–मुम्बई
- राधेश्याम कुशलचन्द पदमचन्द अशोककुमार गौरव जैन–सवाईमाधोपुर
- रायचन्द–शशि, रितेश क्षितिज हीरावत–मुम्बई

- रामदयाल उम्मेदचन्द लालचन्द नमोकार मोहनलाल धनराज रूपित जैन–सवाईमाधोपुर
- रामलाल झूमरलाल शातिलाल रतनलाल अमृतलाल गौतमचन्द कवाड–पीपाड़
- राजकवर, चन्द्रराज–प्रेमलता सजय–आशा अरिष्ठ–श्रेयास सिघवी –जोधपुर
- राजकुमार–रतनलाल बाफना–जलगाव
- राजमल, मनोज कवाड़–मुम्बई
- राजीव सुराना–मुम्बई
- राजेश–सुधा, उमग खुशाली गोलेच्छा–मुम्बई
- राजेशकुमार सुरेशकुमार जैन–जलगाव
- राजेन्द्र–सुधा बाफना–मुम्बई
- राजेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र कर्नावट–मुम्बई
- राजेन्द्र अमोलक देवबाला भण्डारी–मुम्बई
- राजेन्द्रकुमार महावीरचन्द सिद्धार्थ गौरव अभिनन्दन जिनेन्द्र बाफना–जलगाव (भोपालगढ़)
- राजेन्द्रकुमार महेन्द्रकुमार गजेन्द्रसिह डागी–किशनगढ
- राजेन्द्रकुमार सुरेश मेहता–मुम्बई
- रतनकवर–प्रशान्त कर्नावट–जयपुर
- रतनमल–कमला अनिल मेहता–शिवाकाशी
- रतनादेवी–सुरेशकुमार जैन–जलगाव
- रतनचन्द अशोक राजेश अभिषेक वीर भसाली–मुम्बई
- रतनलाल मानिकलाल जवाहरलाल नाहर–बरेली वाले–इन्दौर
- रतनलाल चुन्नीलाल बाफना–जलगाव–भोपालगढ
- रतनलाल प्रेमराज गाधी–थावला
- रुपासती महिला मण्डल–पीपाडशहर
- शकरलाल पुष्पा–ईश्वरलाल मनीषकुमार, अमरीश ललवानी–जलगाव
- शकुन्तला–प्रकाशमल प्रदीप दिलीप रोहित भरत भण्डारी–चैन्नई
- शकुन्तला–प्रकाशचन्द हीरावत–जयपुर
- शाता–स्व सिद्धेश्वरनाथ मधु–प्रदीप प्रखर मोदी –जयपुर
- शीला–प्रकाशचन्द प्रशान्त कोठारी –जयपुर
- शातिदेवी, देवेन्द्र–शशि भण्डारी –मुम्बई
- शातिदेवी, सुरेशचन्द दिलीपचन्द पदमचन्द अमित गौरव पीयूष सुराणा–चैन्नई
- शातिलाल किशनलाल पदमचन्द मनोजकुमार अमितकुमार प्रवीण यश सेठिया–चैन्नई
- शातिलाल–राजश्री शुचि सकुल कर्नावट–मुम्बई
- शातिलाल, मुकेश, राजेश अजय निलेश ललवानी–जलगाव
- शोभागमल–कपूरीदेवी डॉ धर्मचन्द ऋषभचन्द, टीकम विनोद मुदित अकित कोविद जैन–अलीगढ (टोक)

- शैलेशकुमार, सुरेशकुमार जैन–जलगाव
- शिवनाथमल–अनोपकवर, सुमेरमल–लीला, सुरेश–चाद, सुशील–सरिता भण्डारी –जोधपुर
- सिद्धार्थ–रतनलाल बाफना–जलगाव
- सिद्धार्थ अरूण खींचा–जयपुर
- श्रीमती सूरजबाई हस्तीमल भसाली चेरीटेबल ट्रस्ट शूले–बैंगलोर
- श्रीचन्द हस्तीमल नेमीचन्द श्रीपाल निखिल अकित अरिहन्त डोसी–मेडता
- सदीप–प्रीति वेदान्त अरणक कोठारी–मुम्बई
- सजय–मजू, सुकृत शीविका साराश कोठारी–मुम्बई
- सम्पतबाई–रेखचन्द उज्ज्वला–पदमचन्द ललितकुमार गजेन्द्रकुमार बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- सम्पतराज महावीरचन्द विमलचन्द अशोककुमार बसन्तकुमार मरलेचा –बैंगलोर
- सम्पतराज प्रकाशचन्द उमरावमल स्वरूपचन्द बाफना–जोधपुर–सूरत
- सम्पतराज, मोहनलाल अमृतलाल गौतमचन्द एस मेहता–मुम्बई
- सम्पतराज छोटमल–लाडकवर नबरतन–सुमन पारस–सीमा पुनीत नितिन नितिश डागा–जोधपुर
- सम्पतचन्द शीतलचन्द सूरजचन्द शम्भुचन्द सदीप कुलदीप सिघवी–जोधपुर
- सरिता प्रेमचन्द मोहित कुमार बाघमार –कोसाना–चैन्नई
- सहजमल–मधुबाई मेवाराम–शातिबाई अशोक भूपेन्द राजेश बाठिया–जोधपुर
- सरोज–नरेन्द्रकुमार साड–जयपुर
- सरोजबाई सुगनचन्द मूथा–बैंगलोर
- सरदारमल महावीर गौतम जिनेन्द्र सुराना–दुर्ग
- सरदारमल नवरतनमल मुणोत चेरीटेबल ट्रस्ट–मुम्बई
- सरदारमल–उमरावकवर कैलाशमल–डॉ बिमला सनिल–रागिनी सौरभ भण्डारी –जोधपुर
- सरदारसिह–कमला कर्नावट–मुम्बई
- सायरबाई माणकचन्द हसराज काकरिया –विजयपुरा–बैंगलोर
- सायरचद–जतनकवर किशोरचद महावीरचद कुशलचद राजकुमार बाफना–जोधपुर
- सायरचन्द–जतनकवर नन्दकिशोर–नीरा सिद्धार्थ बाफना–मुम्बई
- सोहनमल–अकलकवर, नरपतमल–पुष्पा दीपक राजेन्द्र लोढा–जोधपुर
- सोहनराज गौतमचन्द उम्मेदराज प्रेमचन्द अजीतराज हुण्डीवाल–भोपालगढ–चैन्नई
- सोहनराज पृथ्वीराज सूरजकरण सुरेशकुमार लाडेशकुमार सिद्धकुमार श्रेणिककुमार राका–जोधपुर
- सोहनलाल–विजयकवर सुनीलकुमार निहालचन्द शाति रवि राहुल नाहर –पाली
- सोहनलाल महावीरचन्द अर्पित बोथरा–जलगाव
- सोनराज–उमरावकवर भवरलाल जौहरीलाल किस्तूरचन्द प्रकाशचन्द–हैदराबाद -जोधपुर–ब्यावर–चैन्नई
- सौभागमल बहादुरमल नवीन डागा–बीकानेर
- सौभागमल सुमेर सुनील नीरज लोढा–जयपुर

- सौरभ गौरव गौतम गणेशमल सुगनमल भण्डारी –निमाज–बैंगलोर
- सोलेश्वरनाथ–अकलकवर जिनेन्द्र रविन्द्र कविन्द्रकुमार निलेश कल्पेश विपुल, राही मोदी–जोधपुर
- सुधीरकुमार अनुपम अनुरूप लोढ़ा –जयपुर
- सुमेरमल–कचनदेवी, मनोज–सुनीता, राजेश–मीनाक्षी शुभम, ऋतिक मनन काकरिया –भोपालगढ़
- सुमेरचन्द पदमचन्द रिखबचन्द लीलमचन्द नाहर–बैंगलोर
- सुमेरचन्द किशोरचन्द–उषाकिरण कमल कैलाश अनुराग अबानी–जोधपुर
- सुरेश पकज महिपाल रतन बोहरा–इचलकरजी
- सुरेशचन्द शैलेश कोठारी –जयपुर
- सुरेन्द्र–ऋतु, सिद्धान्त यश अरिहन्त कोठारी –मुम्बई
- सुरेन्द्रकुमार सुमतकुमार जैन –मुम्बई
- सुशीलकुमार–ललिता विनोदकुमार–कमला राजेन्द–सुनीता मनोज राहुल मयक डोसी –पाली
- सुशीलकुमार राहुलकुमार बाफना –जलगाव
- सुशीला पत्नी स्व पारसमल सुधा–अनिल राजुल पूर्वा आशीष बोहरा–जोधपुर
- सुनील आदिती हीरावत –मुम्बई
- सुन्दरसलूदेवी चन्दनमल पारसमल विजयेन्द्र रमेश दिलीपकुमार पीतलिया –हैदराबाद
- सुगनचन्द रतनलाल राका –अजमेर
- सुगनचन्द–भवरीदेवी मूलचन्द प्रसन्नचन्द सिद्धराज नवरतनमल बाफना–जोधपुर
- सुगनचन्द–गगादेवी मूलचन्द–मैनादेवी दिलीप शातिलाल, श्रीचन्द, कुशल नीरज अरिहन्त लुणावत–जोधपुर
- सज्जनराज मजू गौरव दीपिका जैन–दिल्ली
- सज्जनराज ज्ञानचन्द बोहरा –विल्लीपुरम
- सज्जनराज सम्पतराज श्रीमती राजकवर श्रेणिकराज सुनीलकुमार भण्डारी –बीजापुर
- सज्जनराज उत्तमचन्द धर्मचन्द अशोककुमार ज्ञानचन्द भण्डारी –बीजापुर
- सज्जनराज महेन्द्रकुमार राजेशकुमार बाफना–जलगाव
- सज्जनदेवी मिश्रीमल सागरमल नागरमल छाजेड–चैन्नई
- सूरतराज, प्रेमकवर, अशोक विरदराज, निर्मला सुराणा–जयपुर
- सूरजमल–प्रेमकुमारी क्रान्तिचन्द कमलचन्द, मनीष मेहता–अलवर
- सूरजराज–सायरकवर प्रसन्नचन्द पुनवानचन्द हस्तीमल लिलमचन्द शातिलाल ओस्तवाल–भोपालगढ़
- डॉ सम्पतसिह–श्रीमती नलिनी, सदीप–बिन्दु, सचिन, श्रेयास भाण्डावत–जोधपुर
- जस्टिस श्रीकृष्णमल डॉ सुरेन्द्रमल जस्टिस राजेन्द्रमल लोढ़ा–जोधपुर
- थानचन्द नारायणचन्द–विमला कैलाश भूपेश मेहता–जोधपुर
- तीजादेवी भवरलाल चम्पालाल पुखराज सुगनचन्द राजेश सदीप बोथरा–हीरादेसर–चैन्नई
- तारादेवी–रतनलाल बाफना–जलगाव
- तेजकवर, सुमन ज्ञानचन्द, विनय, विवेक कोठारी –जयपुर

- ताराचन्द–पारस नौरतन कुशल टीकम राजेन्द्र धर्मचन्द विनोद नवनीत मेहता–जोधपुर
- टीकमचन्द, राजीव हीरावत –मुम्बई
- उम्मेदमल इन्द्रमल सुरेन्द्र, नरेन्द्र धनराज राजेन्द्र कमल जैन–चौथ का बरवाड़ा
- उम्मेदनाथ भण्डारी –एडवोकेट–जयपुर
- उमरावबाई भवरलाल दुलीचन्द बुधमल सालेचा बोहरा–कोसाना–चैन्नई
- उमरावमल विनोदकुमार अशोककुमार सेठ–जयपुर
- उर्मिला–श्रीचन्द विमलचन्द, पकज, पीयूष गोलेच्छा –जयपुर
- उर्मिला, मनाली, उगरसिह, सुमेरसिह, उपेन्द्र सकल्प बोथरा –जयपुर
- उदयराज सम्पतराज नवरतनमल–शाति प्रेमचन्द अजय डोसी–जोधपुर
- उदयराज, गौतमराज शातिलाल, विजयराज दिनेशचन्द सुराना –चैन्नई
- उत्तमचन्द, पुखराजकवर ढड्ढा –जयपुर
- उगमकवर झूमरमल राजेन्द्रकुमार किशोरकुमार कुणाल बाघमार–कोसाना–चैन्नई
- उगमचन्द कल्याणचन्द महावीरचन्द मन्नूलाल मुणोत –भोपालगढ–चिन्तादरी–चैन्नई
- विमला आनन्द कपिल सध्या चोरडिया –चैन्नई
- विमला–कैलाशचन्द धर्मेन्द्र, धीरेन्द्र हीरावत –मुम्बई
- विमलचन्द रिखबचन्द सुभाषचन्द श्रेणिक अशोक धोका –मैसूर
- विमलचन्द विनयकुमार मनीष रोहित मरलेचा –बैंगलोर
- विमलचन्द–सुनीता हीरावत विनीत सुमित –मुम्बई
- विजयकुमार–सुनीता, जश निशका चोरडिया –मुम्बई
- विजयमल–पुष्पा सुषमा–आशा–प्रवीणा–सुनीता–सुमन–अमीता डॉ शशाक दिव्याशु गाग –जयपुर
- विजयराज आनन्द, धनपत सुरेश भसाली–मुम्बई
- विजयराज तातेड–मुम्बई
- विजयानन्दिनी–राजेन्द्रकुमार मलारा–जलगाव
- विजयचन्द, हरीशचन्द निर्मलकुमार लोढा–जयपुर
- विनीत विनस विनम्र हीरावत–मुम्बई
- विनोदकुमार सिद्धार्थकुमार बाफना–जलगाव
- विजयकुमार निर्मलकुमार दिलीप जितेन्द सुराना–कोलकाता
- वन्दना–विनयचंद विनम्र कोठारी–जयपुर
- वल्लभकवर महावीरमल अनिलकुमार अपूर्व अर्पित भण्डारी–बैंगलोर
- झणकारमल मोतीलाल मूथा–मुम्बई
- झणकारमल सिद्धरूपमल राकेश–अनिता सिद्धार्थ–निशा मेहता–जोधपुर

